॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

५८

त्रिविक्रमभट्टविरचिता

नल-चम्पूः

अथवा

दमयन्तीकथा

'सुधा'-संस्कृत-हिन्दीटीकाद्वयोपेता

व्याख्याकारः—

पं० परमेश्वरदीन पाण्डेयः

... ए० (संस्कृत-हिन्दी) साहित्याचार्य, साहित्यरत्न:

नाहिल, शाहजहाँपुर

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी

मूल्य २५-००

॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

५४

त्रिविक्रमभट्टविरचिता

नल-चम्पूः

अथवा

दमयन्ती-कथा

'सुधा'-संस्कृत-हिन्दीटीकाद्वयोपेता

व्याख्याकारः—

पं० परमेश्वरदीन पाण्डेयः

एम० ए० (संस्कृत-हिन्दी) साहित्याचार्यः, साहित्यरत्नः

नाहिल, शाहजहाँपुर

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी

THE

CHAUKHAMBA SURBHARATI GRANTHAMALA

54
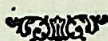
NALA-CAMPŪ

OR

DAMAYANTĪ KATHĀ

OF

TRIVIKRAMA BHATTA

Edited with

'SUDHA' SANSKRIT & HINDI COMMENTARIES

By

Sri Pt. Parameshwardin Pandey

M. A. (Sanskrit-Hindi), Sahityacharya, Sahityartna

Nahil, Shahjahanpur

CHAUKHAMBA SURBHARATI PRAKASHAN

VARANASI

© CHAUKHAMBA SURBHARATI PRAKASHAN

(Oriental Booksellers & Publishers)
K. 37/117, Gopal Mandir Lane
Post Box No. 129
VARANASI 221001

First Edition
1981

Price Rs. { First Ucchvas 7-00 / 1-2 Ucchvas 10-00 / 1-5 Ucchvas 20-00

Also can be had of
CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN
(Oriental Booksellers & Publishers)
CHOWK (Behind The Benares State Bank Building)
Post Box No. 69
VARANASI 221001

प्राक्कथन

अद्यावधि उपलब्ध समस्त चम्पू-काव्यों में 'नल-चम्पू' का सर्व-प्रथम स्थान है। साहित्यिक दृष्टि से सर्वोत्तम होने के साथ ही इसका कथानक अत्यन्त लोक-प्रिय भी है। ऐतिहासिक ग्रन्थ 'महाभारत' के वन-पर्व में नल-दमयन्ती-कथा का सुन्दर वर्णन मिलता है। परवर्ती कवि हर्ष की 'नैषधीयचरित', लक्ष्मीधर की 'नल-वर्णन-काव्य', श्रीनिवास दीक्षित की 'नैषधानन्द' आदि रचनायें इसी आख्यान का आश्रय लेकर हुई हैं। कविवर श्रीत्रिविक्रमभट्ट ने अपनी सभङ्गश्लेषात्मक-शैली में इसी कथा को चम्पू-काव्य के रूप में प्रस्तुत किया है। निःसन्देह महाकवि त्रिविक्रमभट्ट के 'नल-चम्पू' में निहित भाव-गम्भीर्य तक पहुँचना अति दुष्कर कार्य है।

संस्कृत-वाङ्मय में नल-चम्पू की उत्कृष्टता के कारण ही इसका न्यूनाधिक भाग विभिन्न विश्वविद्यालयों की संस्कृत-विषयक स्नातकोत्तर उपाधि कक्षाओं में पाठ्य-ग्रन्थ के रूप में शासन द्वारा स्वीकृत किया गया है। यद्यपि 'नलचम्पू' पर चण्डपाल, गुण विनयमणि, दामोदरभट्ट तथा नागदेव आदि कतिपय विद्वानों की प्राचीन टीकायें उपलब्ध हैं तथापि उनमें किसी भी टीका द्वारा छात्रों की आवश्यकता पूर्ण नहीं हो पाती है। प्रस्तुत सुधा-संस्कृत-हिन्दी-टीका द्वारा सरलतम पद्धति से इसकी दुरूहता को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त चम्पूसाहित्येतिहास, चम्पूकाव्य-वर्गीकरण, कथा-वस्तु, उच्छ्वास सारांश तात्कालिक विधान, पात्र-चरित्र-चित्रण आदि अन्यान्य सामग्री का समावेश भी कर दिया गया है जिनके लिए पाठकों को इतस्ततः भटकना पड़ता था। आशा है सुधा-टीकायुक्त किरातार्जुनीय (सर्ग ४ से ८), रत्नावली चारुदत्त, अभिषेक (नाटक) तथा शुकनाशोपदेश (कादम्बरी कथा-भाग) संस्करणों के समान ही 'नल-चम्पू' का संस्करण भी पाठकों को सन्तुष्ट करने में सहायक सिद्ध हो सकेगा।

सुधा-टीका-युक्त 'नलचम्पू' संस्करण प्रस्तुत करने में जिन महानुभावों की कृतियों से सहयोग लिया गया है, मैं सबका हृदय से आभारी हूँ। मुख्यतया चण्डाल कृत 'विषमपद-प्रकाश' को ही आधार मानकर इसकी रचना की गई है। इसके लेखन-कार्य में मेरे कनिष्ठात्मज आयुष्मान् अवनिकुमार पाण्डेय एम० ए०, शास्त्री ने भी सराहनीय योग प्रदान किया है।

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन के अध्यक्ष महोदय भी धन्यवाद के पात्र हैं जिनकी प्रेरणा से इसका लेखन-कार्य पूर्ण हो सका है।

शमिति।

नाहिल, (शाहजहाँपुर) }
२६-८-८० }

—परमेश्वरदीन पाण्डेय

प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य की धारा वैदिक-काल से ही अजस्र गति से प्रवाहित होती रही है। सम्पूर्ण साहित्यशास्त्र तथा काव्य दो रूपों में मिलता है। किसी विषय का क्रमबद्ध गहन-विवेचन शास्त्र कहलाता है। शास्त्र कालान्तर में पुरातन हो सकता है। परन्तु रागात्मक साहित्य रूप में काव्य नित्य नूतन वना रहता है। रमणीय अर्थ प्रतिपादन करने वाला काव्य-पुरुष शब्द तथा अर्थ रूपी आत्मा का निवास होता है जिसके प्राण ध्वनि, गुण माधुर्य ओज तथा प्रसाद, श्रृङ्गार अलङ्कार, आचरण रीतियों द्वारा प्रकट होते हैं। काव्य दृश्य तथा श्रव्य दो प्रकार का होता है। दृश्य-काव्य के अन्तर्गत रूपक उपरूपक आदि गिने जाते हैं। श्रव्यकाव्य को प्रबन्ध तथा मुक्तक एवम् प्रबन्ध को भी महाकाव्य तथा खण्ड काव्य में विभक्त किया गया है। श्रव्य काव्य के लिए गद्य पद्य तथा मिश्र शैलियां अपनाई जाती हैं। मिश्र शैली के अग्निपुराण में दो भेद कहे गये हैं—"ख्यात तथा प्रकीर्ण। यथा—मिश्रवपुरिति ख्यातं प्रकीर्णमिति च द्विधा (३३७, ३८) इति।" मिश्र अर्थात् गद्य पद्यमय काव्य के करम्भक, विरुदावली जयघोषणा आदि अनेक विभेद भी कहे गये हैं। इसी गद्य पद्यमय मिश्र शैली में लिखा प्रवन्ध चम्पू काव्य कहलाता है।

चम्पू शब्द स्त्री प्रत्ययान्त चुरादि गण की चपि धातु से 'उ' प्रत्यय लगाकर "चम्पयति चम्पतीति वा चम्पूः" व्युत्पन्न किया जाता है। परन्तु इस व्याख्या से चम्पू शब्द का वास्तविक अर्थ नहीं निकलता है। गति के गमन-ज्ञान-प्राप्ति तथा मोक्ष अर्थ हैं तदनुसार मोक्ष-सहोदर आनन्द प्राप्त कराने वाली श्रव्यकाव्य की मिश्रशैली चम्पू कहलाती है। हरिदास भट्टाचार्य के मतानुसार–"चमत्कृत्य पुनाति सहृदयान् विस्मितीकृत्य प्रसादयति इति चम्पूः" अर्थात् गद्य पद्य युक्त प्रवन्ध काव्य की वह शैली जो सुपाठक के हृदय में चमत्कार उत्पन्न कर विस्मित करती तथा पवित्र करती है, चम्पू कहलाती है। द्वादश शताब्दी के हेमचन्द्राचार्य ने अपने काव्यानुशासन में साङ्का तथा सोच्छ्वासा चम्पू काव्य को माना है। इनके मतानुसार चम्पू काव्य में अङ्क तथा उच्छ्वास होने अनिवार्य हैं। परन्तु कतिपय चम्पूकाव्य ऐसे भी उपलब्ध हुये हैं जिनमें अङ्क अथवा उच्छ्वास होना अनिवार्य नहीं है यतः विभिन्न कवियों ने अपने चम्पू काव्यों में उच्छ्वास के स्थान पर स्वेच्छया अध्याय-विभाजन का नामोल्लेख किया है।

इस प्रकार अतिव्याप्ति तथा अव्याप्ति दोषों से रहित चम्पू काव्य की आज तक कोई स्थिर परिभाषा नहीं हो सकी है। वस्तु, नायक, रस, छन्द एवं वर्णन-शैली आदि अनेक विशिष्टताओं से युक्त होने के कारण मिश्रशैली में प्रबन्ध काव्य की उत्कृष्ट कृति 'चम्पू' कहलाती है—"गद्य पद्यमयं श्रव्यं सम्बन्धं बहुवर्णितम्। सालङ्कृतैः रसैः सिक्तं चम्पू काव्यमुदाहृतम्॥" इति। सारांश में गद्यपद्य मिश्रित श्रव्य प्रबन्ध काव्य वर्णन-प्रधान अलङ्कार-बहुल सरस होनेपर चम्पू काव्य कहलाता है। गद्य-पद्यमय होकर भी पञ्चतन्त्रादि ग्रन्थों तथा दानपत्रादि को 'चम्पू काव्य नहीं माना जा सकता है यतः वह प्रबन्ध काव्य न होकर मुक्तक काव्य की श्रेणी में आते हैं।

गद्य पद्य तथा मिश्र तीनों शैलियों में रचनाओं का आरम्भ वैदिक काल से ही हो चुका था। कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तरीय, मैत्रायणी तथा कठ तीनों संहिताओं में यह शैलियां स्पष्टरूप से प्रयुक्त की गई हैं। ऐतरेय ब्राह्मण (अध्याय ३३) का हरिश्चन्द्रोपाख्यान उपर्युक्त मिश्र शैली का ही उत्कृष्टतम उदाहरण है—"हरिश्चन्द्रो ह वैधस, ऐक्ष्वाको राजाऽपुत्र आस। तस्य शतं जाया बभूवुः। तासु पुत्रं न लेभे। तस्य ह पर्वतनारदौ गृह ऊषतुः। स ह नारदं पप्रच्छ इति।"

उपर्युक्त उपाख्यान परवर्ती मिश्र शैली में मुक्तक न होकर चम्पू काव्य शैली का ही उदाहरण है। उपनिषदों में प्रश्न, मुण्डक तथा कठ भी इसी मिश्र शैली की रचनाये हैं—ॐ उशन् ह वै

वाजश्रवसः सर्ववेदसं ददौ। तस्य ह नचिकेता नाम पुत्र आस। (१।१।१) केनोपनिषद् का तृतीय चतुर्थखण्ड यक्षोपाख्यान जो केवल गद्य में है, प्रथम खण्ड का गद्यात्मक तृतीय मन्त्र अपनी एक विशेषता रखता है—न तत्र चक्षुर्गच्छति न वाग्गच्छति नो मनो न विद्मो न विजानीमो···। इसी मन्त्र का विस्तार पद्य में किया गया है—यद्वाचानभ्युदितं येन वागभ्युद्यते। तदेव ब्रह्मत्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ॥ १ ॥ ४ ॥ कठोपनिषद् का यम नचिकेतोपाख्यान गद्य से ही आरम्भ होता है—ॐ उशन् ह वै वाजश्रवसः सर्ववेदसं ददौ। तस्य ह नचिकेता नाम पुत्र आस। तं ह कुमारं सन्तं दक्षिणासु नीयमानासु श्रद्धा आविवेश सोऽमन्यत ॥ १ ॥ १ ॥ १–२ ॥

पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा: निरिन्द्रियाः।
अनन्दा नाम ते लोकास्तान् स गच्छति ता ददत् ॥ १ ॥ १ ॥ ३ ॥

स हो वाच पितरं तत कस्मै मां दास्यसि इति। द्वितीयं तृतीयं तं होवाच मृत्यवे त्वां ददामीति ॥ २ ॥ १ ॥ ४ ॥

प्रबन्ध शैली में किया गया कथा का आरम्भ कठोपनिषद् के प्रमुख-पात्र नचिकेता के अन्तर्द्वन्द्व से होता है—

बहूनामेमि प्रथमो बहूनामेमि मध्यमः।
किं स्विद्यमस्य कर्तव्यं यन्मयाऽद्य करिष्यति ॥ १ ॥ १ ॥ ५ ॥

इस प्रकार वेदों ब्राह्मण-ग्रन्थों से उपनिषदों तथा अग्निपुराण से होती हुई यह परम्परा पौराणिक जीवन्धर आदि चम्पू काव्यों तक दिखलाई पड़ती है। वेदाङ्ग काल में सभी ग्रन्थ सूत्र शैली में ही लिखे गये। यह सूत्र इतने सूक्ष्म होने लगे थे कि कवित्व का नाम तक नहीं रह गया। लौकिक संस्कृत में वाङ्मय का अभ्युदय होते ही गद्य का ह्रास होने लगा। इस काल में गद्य केवल व्याकरण तथा दर्शन तक ही सीमित रह गया जो कि अत्यन्त दुरूह एवं नीरस और प्रसाद-गुणहीन था। ईसा की प्रथमशताब्दि में लिखा गया अवदानशतक गद्य पद्यमय मिश्र शैली की रचना है। दण्डी के पूर्व गद्य की अलङ्कार युक्त दुरूह रचनायें शिलाओं तथा ताम्रपत्रों पर ही लिखी जाती थीं। लौकिक संस्कृत साहित्य में गद्यशैली का सर्वप्रथम स्वरूप हरिषेण कृत 'समुद्र गुप्तप्रशस्ति' में मिलता है। इस प्रकार चतुर्थ शताब्दी में चम्पू काव्य का भी गणेश हो चुका था। यद्यपि इस समय तक चम्पूकाव्य से भिन्न गद्य पद्य मय शैली के तीन पृथक् स्वरूप भी बन चुके थे—१–नीति उपदेश तथा कथात्मक, २–पौराणिक एवम् ३–दृश्यकाव्यात्म रूप। परन्तु इनकी गद्य-पद्य शैली में परस्पर अत्यन्त भिन्नता थी। गद्यभाग में न समास-गाढता थी और न अलङ्कार,प्रचुरता ही। इनका पद्यभाग अधिकांश सूक्तियुक्त तथा उपदेशात्मक था। दण्डी, सुबन्धु तथा बाणभट्ट के गद्य काव्य और सोमदेव, हरिचन्द्र, भोजादि गद्य-पद्य मय काव्यों की रचनायें होने के पश्चात् पूर्ववर्ती शैली में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हो सका, उनमें कवित्व तथा अलङ्कारिता का सर्वथा अभाव ही बना रहा। ईसा की चतुर्थ शताब्दी तथा पञ्चम शताब्दी में गद्य एवं पद्य शैली में लिखे गये शिला-लेखों तथा प्रशस्ति-पत्रों के अनेक सुन्दरतम उदाहरण देखने को मिलते हैं। वत्स भट्टि (४७३ ई०) की मन्दसोर प्रशस्ति, मौखरी-नरेश ईशान वर्मन् के आश्रित कवि रवि शान्ति (५५५ ई०) की हरहा-प्रशस्ति आदि उत्तम-गद्य शैली के ही रूप बने रहे, कोई उत्कृष्ट चम्पू-काव्य नहीं लिखा जा सका।

ईसा की दशम शताब्दी के पूर्वार्द्ध से पूर्व तक यद्यपि कालिदास अश्वघोष, भारवि, भट्टि, माघ तथा रत्नाकर आदि सुप्रसिद्ध कवि तथा अन्यान्य नाटककार अपनी रचनायें कर चुके थे परन्तु चम्पू काव्य का कोई भी उत्कृष्ट ग्रन्थ सामने नहीं आ सका था। विविध दान पत्र शिला लेखादि मिश्र शैली के मुक्तक रूप को ही अधिक स्पष्ट करते रहे। सप्तम शताब्दी के चन्द्रगिरि का शिलालेख चम्पू काव्य के उस पूर्वरूप को उपस्थित करता है जिसको जैन चम्पू काव्यों, जीवन्धर, पुरुदेव आदि में अपनाया गया—

जितम्भगवता श्रीमद् धर्मतीर्थविधायिना। वर्धमानेन सम्प्राप्तसिद्धि सौख्यामृतात्मना ॥ १ ॥
लोकालोकद्वयाधारम्वस्तुस्थास्नु चरिष्णु वा। सम्बिदालोकशक्तिः स्वाव्यश्नुते यस्य केवला ॥ २ ॥
जगत्यचिन्त्यमाहात्म्यपूजातिशयमीयुषः। तदनु श्री विशालायां जयत्यद्य जगद्धितम् ॥ ३ ॥
तस्य शासनमव्याजं प्रवादिमतशासनम्।

अथ खलु सकलजगदुदयकरणोदितनिरतिशयगुणास्पदीभूतपरमजिनशासनसरः समभिवर्धित-भव्यजनकमलविकसनवितिमिरगुणकिरण सहस्रमहोतिमहावीरसवितरि परिनिवृते भगवत्परमर्षि··· ॥

दशमशताब्दी के पूर्वार्द्ध में त्रिविक्रम भट्ट द्वारा लिखा गया सर्वप्रथम महत्व-पूर्ण चम्पूकाव्य नल चम्पू मिलता है। यहीं से चम्पूकाव्य का विधिवत् निर्माण आरम्भ हुआ। यद्यपि दशमशताब्दि से पन्द्रहवीं शताब्दी तक नलचम्पू (९१५ ई०) यशस्तिलकचम्पू (९५९ ई०) रामायणचम्पू (१०१८ ई०) भोजप्रबन्ध (एकादश शताब्दी) उदयसुन्दरी कथा (१०६० ई०) पुरुदेव चम्पू (१३ वीं शताब्दी तथा अनन्त भट्ट कृत भारतचम्पू एवम् भागवत चम्पू (१५वीं शताब्दी) आदि सीमित चम्पू काव्यों की रचना हो सकी जिनमें अधिकांश का रचना-स्थल दक्षिण भारत बना। पन्द्रहवीं शताब्दी से अठारहवीं शताब्दी तक के मध्यकाल में चम्पू काव्यों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई। अब तक प्राप्त चम्पू काव्यों की संख्या डा० छविनाथ त्रिपाठी के 'चम्पू काव्य का आलोचनात्मक एवम् ऐतिहासिक अध्ययन' के अनुसार २४५ हैं जिनमें कुछ प्रकाशित एवं शेष अब तक अप्रकाशित हैं।

वर्ण्य वस्तु के आधार पर सम्पूर्ण चम्पूकाव्य का निम्न प्रकार से वर्गीकरण किया जा सकता है:—

१–रामायण पर आधारित। २–महाभारत पर आधारित। ३–पुराणों पर आधारित। ४–जैन ग्रन्थों पर आधारित। ५–महापुरुषों के जीवनवृत्त पर आधारित। ६–यात्राप्रबन्धात्मक। ७–देवताओं तथा महोत्सवों पर आधारित। ८–दार्शनिक। ९–काल्पनिक।

१—रामायण पर आधारित—

क—संक्षिप्त रामकथा वाले चम्पूकाव्य—१–रामायण चम्पू (३)। ४–अमोघराघवच०। ५–काकुत्स्थविजय। ६–रामचन्द्र चम्पू (२)। ८–रामकथा सुधोदय। ९–रामचर्यामृत। १०–रामाभ्युदय। ११–रामचम्पू। १२–अभिनव रामायण (२) १४–राघवचम्पू कुल १४–चम्पू काव्य।

ख—काण्ड विशेष कथा वाले चम्पू—१–उत्तररामचरित। २–उत्तरचम्पू (८)। ९–सीताविजय। १०–सीताचम्पू। ११–रामायण युद्ध काण्ड (४)। कुल १४ काव्य।

ग—हनुमान् के चरित्र पर आधारित—१–मारुति विजय। २–आंजनेय विजय। ३–हनुमदापातान। ४–चूडामणिचम्पू। कुल ४। २–महाभारत पर आधारित क–पूर्ण कथा वाले—१–भारत चम्पू (२)। ३–भारतचम्पू तिलक। ४–भारतचरितचम्पू। ५–अभिनव भारतचम्पू। कुल ५। ख—आंशिक कथा वाले—१–राजसूय प्रबन्ध। २–पांचाली स्वयंवर। ३–सुभद्राहरण। ४–नलायणी चरित। ५–कौन्तेयाष्टक। ६–दूतवाक्य। ७–किरातचम्पू। ८–द्रौपदी परिणय। ९–शंकरानन्दचम्पू। १०–कर्णचम्पू। ११–वक वध। १२–पञ्चेन्द्रोपाख्यान। १३–अश्वमेधचम्पू। १४–किरातार्जुनीय चम्पू। कुल १४। ग—उपाख्यानों पर आधारित—१–नलचम्पू। २–वसुचरित्र चम्पू। ३–मत्स्यावतार प्रबंध। ४–शिव विलास। ५–दमयन्ती परिणय। ६–सत्यसन्ध चरित। ७–हरिश्चन्द्र चरित। ८–कुवलयाश्व विलास। कुल ८ काव्य।

३–पुराणों पर आधारित—क–भागवत के आश्रयी—१–भागवतचम्पू। (४) ५–रुक्मिणी परिणय (२)। ७–आनन्द वृन्दावन (२)। ९–गोपालचम्पू (४)। १३–पंचकल्याणचम्पू। १४–मन्दारमरन्दचम्पू। १५–माधवचम्पू। १६–नृगमोक्षचम्पू। १७–आनन्दकन्दचम्पू। १८–भैष्मीपरिणय। १९–मद्रकन्या परिणय। २०–कालिन्दीमुकुन्दचम्पू। २१–सत्राजिती

परिणय । २२–यादव शेखरचम्पू । २३–कृष्णचम्पू (२) । २४-२५–बालभागवतचम्पू । २६–आनन्द दामोदर । २७–वृन्दावन विनोद । २८–वासुदेवानन्दिनी । २९–गजेन्द्रचम्पू । ३०–प्रणयी माधव । ३१–गंगावतरण । ३२–भागीरथीचम्पू । ३३–गंगाविलास । ३४–गंगा गुणादर्श । कुल ३४ चम्पू काव्य ।

ख—हरिवंशपुराण पर आधारित—१–पारिजात हरण । २–बाणासुर विजय । ३–उषा परिणय । ४–अनिरुद्ध चम्पू । ५–सुदर्शनचम्पू । ६–शंबरासुर विजय । ७–यादवचम्पू । कुल ७ ॥

ग—शिवपुराण पर आधारित—१–कल्याण वल्ली कल्याण । २–कल्याण चम्पू । ३–कुमार-भार्गवीय । ४–कुमाराभ्युदय । ५–कुमार विजय । ६–कुमार सम्भव (३) । ९–त्रिपुर विजय । १०–दक्षयाग । ११–पार्वतीपरिणय । १२–वल्लीपरिणय । १३–वीरभद्र विजय । १४–गौरी परिणय । १५-पार्वती स्वयंवर । १६–शिवचरित्रचम्पू । १७–नीलकण्ठ विजय । १८–मीनाक्षीपरिणय । १९–मीनाक्षी कल्याणचम्पू ।

घ–देवीभागवत पर आधारित–१–चिन्तामणि विजय । २ जगदम्बाचम्पू ।

ङ–नृसिंहपुराण पर आधारित–१–नृसिंहचम्पू (३) ।

च–ब्रह्मपुराण पर आधारित–१–पुरुषोत्तमचम्पू । २ स्वाहा सुधाकरचम्पू । ३

छ–मार्कण्डेय पुराण पर आधारित १. मदालसाचम्पू (२) । ३ शिवचरितचम्पू । ४ दत्तात्रेय चम्पू ।

ज–स्कन्दपुराण पर आधारित–२ लक्ष्मीश्वरचम्पू (२) ।

झ–हयग्रीवतन्त्र पर आधारित–१ हयवदनविजय ।

४–जैनग्रन्थों पर आधारित–१ जीवन्धरचम्पू (४) । ५ पुरुदेवचम्पू । ६ भरतेश्वराभ्युदय । ७ यशस्तिलक चम्पू । ८ समरादित्य कथा ।

५–जीवनवृत्त पर आधारित क–१ आचार्य दिग्विजय । २ जगद्गुरु दिग्विजय । ३ शंकर-चम्पू । ४ शंकराचार्यचम्पू । ५ शंकर मन्दारसौरभ । ६ नाथ मुनिविजय । ७ रामानुजचम्पू । ८ वेदान्ताचार्य विजय । ९ यतिराज विजय । १० आनन्दकन्दचम्पू । ११ गोदापरिणय । १२ जैनाचार्य विजय । कुल १२ ।

ख–ऐतिहासिक पुरुष–१ आनंदरंग विजय । २ कृष्ण विजय । ३ कृष्णराजाभ्युदय ४ कृष्ण प्रभावोदय । ५ कृष्णराज कालोदय । ६ कृष्णराजेन्द्रयशो विलास । ७ गुणेश्वरचरित ८ चोलचम्पू । ९ प्रतापचम्पू । १० भारतचम्पू । ११ भोजप्रबंध । १२ भोसल वंशावली । १३ महीसुराभिवृद्धि । १४ महीसुर देशाभ्युदय । १४ मानभूपालचरित । १५ मृगयाचम्पू । १६ रघुनाथ विजय । १७ राज-शेखर चरित । १८ वरदम्बिका परिणय । १९ विशाखकीर्ति विलास । २० विशाखातुलाप्रबन्ध । २१ विशाखासेतु यात्रा वर्णन । २२ वीरचम्पू । २३ वीरभद्रदेवचम्पू । २४ श्रीकृष्ण रामाभ्युदय । २५ श्रीकृष्ण नृपोदय प्रबन्ध । २६ शंकर चेतोविलास । २७ शालिवाहन कथा । २८ शाहराजसभा सरोवर्णिनी । २९ धर्मविजय । ३० सुमतीन्द्रजय घोषणा । ३१ किशोरचरित । ३२ चन्द्रशेखर चरित । ३३ रथशेखर चरित ३४ श्रीकृष्णचम्पू (व्यापारी) । कुल ३४ ।

६. यात्रा प्रबन्धात्मक–१ कविमनोरंजकचम्पू । २ केरलाभरण । ३ चित्रचम्पू । ४ विबुधा-नन्दप्रबन्ध । ५ यात्राप्रबंधचम्पू । ६ विश्वगुणादर्शचम्पू । ७ वैकुण्ठविजयचम्पू (२) श्री निवास मुनि यात्रा विलास । १० श्रुतकीर्तिविलासचम्पू । कुल १० । ७–देवताओं तथा महोत्सवों पर आधारित–१ अश्वत्थ क्षेत्रयाग । २ इन्दिराभ्युदय । ३–कृष्णविलासचम्पू । ४ गोरीमायूर माहात्म्य । ५ जप्येशोत्सवचम्पू । ६ दिव्यचाप विजय । ७ पद्मनाभ चरित । ८ पद्मावती परिणय । ९ बाणायुधचम्पू । १० भद्राचलचम्पू । ११–भिल्लकन्या परिणय । १२ मार्गसहायचम्पू । १३ यदुगिरिभूषण । १४ लक्ष्मणचम्पू । १५ व्याघ्रालयेशाष्टमी महोत्सव । १६ वज्रमुक्तिविलास । १७ वर-

दाभ्युदय । १८ विरूपाक्ष महोत्सव । १९ वेंकटेशचम्पू । २० श्रीनिवासचम्पू । २१ श्रीनिवासविलास । २२ स्यानन्दूर वर्णन । २३ सम्पत्कुमार विलास । कुल २३ ।

८ दार्शनिक चम्पूकाव्य १ तत्वगुणादर्श । २ विद्वन्मोदतरंगिणी । कुल २१ ।

९–काल्पनिक कथा पर आधारित—१ उदयसुन्दरी कथा । २ कोटि विरह । ३ यमुना वर्णन ४ विक्रमसेन चम्पू । ५ सारावती जलपात वर्णन । कुल ५ ।

इनके अतिरिक्त कतिपय चम्पू काव्य मिश्र रूप में हैं । इन सबको मिलाकर सम्प्रति उपलब्ध चम्पूकाव्य संख्या २४५ हो जाती है ।

कालक्रम की दृष्टि से चम्पू काव्यों को चार भागो में विभक्त कर सकते हैं–१ दशम शताब्दी से १५ वीं शताब्दी प्रथमचरण २ सोलहवीं से सत्रहवीं शताब्दी तक द्वितीय चरण । सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से १८ वीं शताब्दी तक तृतीय चरण तथा १९ वीं शताब्दी से चतुर्थ चरण ।

कवि परिचय

उपलब्ध प्रकाशित तथा अप्रकाशित समस्त चम्पू काव्यो में नलचम्पू अथवा दमयन्ती कथा सर्वप्रथम तथा साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण कृति है । इसके रचयिता श्री त्रिविक्रमभट्ट का जन्म शाण्डिल्यगोत्रीय कर्मनिष्ठ ब्राह्मण परिवार में हुआ था । इनके पिता नेमादित्य या देवादित्य तथा पितामह श्रीधर थे ।

क्रतुक्रियाकाण्डशौण्डस्य शाण्डिल्यनाम्नो महर्षेवंशः ॥ (नल च० प्र० उ०)

तेषां वंशे विशदयशसां श्रीधरस्यात्मजोऽभूद्देवादित्यः स्वमतिविकसद् वेदविद्याविवेकः ।
उत्कल्लोलां दिशि दिशि जनाः कीर्तिपीयूषसिन्धुं यस्याद्यापि श्रवणपुटकैः कूणिताक्षाः पिबन्ति ।
…………तस्मादस्मि सुतो जातः जाड्यपात्रं त्रिविक्रमः ॥ (न० च० पु० उ० २०)

यह हैदराबाद के मान्यखेट नरेश राष्ट्रकूटवंशीय इन्द्रराज के राजसभा पंडित थे । बड़ौदा के निकट नौसारी ग्राम में प्राप्त हुये ताम्रपत्र लेख के अनुसार इन्द्रराज का राज्याभिषेक कृष्णगंगा के संगम पर स्थत कुरुण्डक ग्राम में फाल्गुन शुक्ल ७ विक्रम सम्वत् ९७२, (२४ फरवरी ९१५ ई० में हुआ था । धारावाड़ के ह्यत्तित्तूर ग्राम में प्राप्त हुये अन्य अभिलेख के अनुसार भी इन्द्र राजा का राज्याभिषेक काल सम्वत् ९७२ का उत्तरार्द्ध (९१५–१६ ई० ही) सिद्ध होता है । यह अभिलेख इन्द्रराज तृतीय के किसी महासामन्त द्वारा ९१६ ई० में लिखाया गया था । इन्द्रराज तृतीय ने अपने पट्टबन्धोत्सव पर बहुत सा दान पुण्य किया था जिसकी प्रशस्ति लिखने वाले नेमादित्य पुत्र त्रिविक्रम भट्ट ही थे । गुजरात के वगुम्रा नामक ग्राम में प्राप्त अभिलेख जो कि ९१४ ई० (शक ८३६ का लिखा हुआ है इसे भी नेमादित्य पुत्र त्रिविक्रमभट्ट ने इन्द्रराज तृतीय की प्रशस्ति में लिखा था ।

इस प्रकार अन्यान्य प्रमाणों के आधार पर नलचम्पू के रचयिता त्रिविक्रमभट्ट दशम शताब्दी का पूर्वार्द्ध में ही सिद्ध होता है । गुजरात से प्राप्त एक अन्य श्लोक में भी यही दिखलाया गया है—

श्रीत्रिविक्रमभट्टेन नेमादित्यस्य सूनुना । कृताशस्ता प्रशस्तेयमिन्द्रराजांघ्रिसेविना ॥

नलचम्पू के षष्ठ उच्छ्वास के श्लोक को भोजराज कृत सरस्वतीकण्ठाभरण में उद्धृत किये जाने से त्रिविक्रम भट्ट का सरस्वती कण्ठाभरण के रचयिता धाराधीश राजा के पूर्ववर्ती होना सिद्ध होता है । जिनका १०१५-१०५५ कार्यकाल रहा है । बम्बई से प्रकाशित 'नलचम्पू' की भूमिका में दी गई किम्वदन्ती के अनुसार 'नलचम्पू' के अधूरेपन पर प्रकाश पड़ता है :—

वेदविद्याविवेक सकल शास्त्रार्थतत्वज्ञ देवादित्य नाम के राजपण्डित रहते थे जिनके त्रिविक्रम नामक जाड्यपात्र (महामूर्ख) पुत्र हुआ । कदाचिद् कार्यवश एक दिन विद्वान् देवादित्य के किसी दूसरे गांव को चले जाने के उपरान्त राज-सभा में आकर किसी विद्वान् ने अपने सभा पण्डित से शास्त्रार्थ कराने अथवा विजय पत्र दिये जाने का आग्रह किया । राजाने तत्काल घर से देवादित्य को बुलाने भेजा । घर से बाहर देवादित्य को गया सुनकर राजा ने उनकी अनुपस्थिति में उनके

पुत्र को ही शास्त्रार्थ करने हेतु बुला लिया। इस स्थिति में मूर्ख त्रिविक्रम ने सरस्वती देवी की बड़ी स्तुति की। मां भारती ने उसके पिता के वापस न आने तक के लिए उसके मुख में वास करने का वरदान दे दिया। तदनुसार शास्त्रार्थ में विजयी होकर त्रिविक्रम राजपुरस्कृत हो घर लौट आये तथा पिता के वापस लौटने तक सरस्वती मां के लाभ उठाने के लिए नलचम्पू की रचना आरम्भ की परन्तु इसका सप्तम उच्छ्वास समाप्त होते ही देवादित्य घर आ गये तथा वरदान के अनुसार मुख से सरस्वती वास समाप्त हो जाने पर नलचम्पू सप्तम उच्छ्वास से आगे न लिखा जा सका, अपूर्ण ही रह गया।

इन्द्रराज तृतीय को युवराज पद पर रहते हो इनके पिता की मृत्यु हो गई थी तथा उन्होंने अपने पितामह कृष्णराज द्वितीय से ही राज्याधिकार प्राप्त किया था, ऐसा इतिहास ग्रन्थों में मिलता है। इससे त्रिविक्रम भट्ट का केवल इन्द्रराज तृतीय का ही राजसभा पण्डित न होकर कृष्णराज का भी सभापण्डित होना प्रतीत होता है। डा० भाऊ दा ने नासिक के समीप प्राप्त ताम्रलेख से प्रसिद्ध ज्योतिर्विद् भास्कराचार्य को त्रिविक्रमभट्ट की ही छठी पीढ़ी में होना सिद्ध किया है। (विद्यापति भास्कर-गोविन्द-प्रभाकर मनोरथ-महेश्वर-भास्कराचार्य।) :—

शाण्डिल्यवंशे कविचक्रवर्ती त्रिविक्रमोऽभूत्तनयोऽस्य जातः।
यो भोजराजेन कृताभिधानो विद्यापतिर्भास्करभट्टनामा ॥ १६ ॥

तस्माद् गोविन्द सर्वज्ञो जातो गोविन्दसन्निभः। प्रभाकरसुतस्तस्मात् प्रभाकर इवापरः ॥ १७ ॥
तस्मान्मनोरथो जातः सतां पूर्णमनोरथः। श्रीमान् माहेश्वराचार्यस्ततोऽजनि कवीश्वरः ॥ १८ ॥
तत्सूनुः कविवृन्दवन्दितपदः सद्वेद विद्यालता कन्दः कन्दरिपुप्रसादितपदः सर्वज्ञविद्यासदः। यच्छिष्यैः सह कोऽपि नो विवदितुं दक्षो विवादी क्वचित् श्रीमान्भास्करकोविदः समभवत्सत्कीर्ति-पुण्यान्वितः ॥ १९ ॥

त्रिविक्रमभट्ट की रचनायें

कवि श्री त्रिविक्रम भट्ट को 'मदालसा चम्पू' तथा 'नलचम्पू' दो चम्पू ग्रन्थों का रचयिता माना जाता है। मदालसा चम्पू एक प्रणय गाथा है। इसके नायक कुवलयाश्व तथा नायिका मदालसा है। इन दोनों की प्रणय-लीला का वर्णन मार्कण्डेय पुराण के अध्याय १८ से २१ तक में वर्णित है। कुवलयाश्वचरित, पातालकेतु का वध, मदालसा परिणय मदालसा वियोग, कुवलयाश्व का नागराज गृह-गमन तथा मदालसा की पुनः प्राप्ति इस चम्पू की मुख्य घटनाये हैं।

काव्य सौष्ठव की दृष्टि से अद्यावधि उपलब्ध समस्त चम्पू काव्यों में सर्वश्रेष्ठ रचना में नलचम्पू का प्रथम स्थान माना जाता है। इसका कथास्रोत महाभारत के वन पर्व का नलोपाख्यान है। इसमें सात उच्छ्वास हैं जिनमें नल का दमयन्ती के पास पहुँच कर इन्द्र आदि लोकपालों के सन्देश भेजने मात्र पर्यन्त कथा का वर्णन है। यद्यपि नलोपाख्यान की दमयन्ती परित्याग आदि मार्मिक कथा का भाग इसमें नहीं आ सका है जिससे ग्रन्थ के अपूर्ण होने वाली बात का और भी अनुमान किया जा सकता है। 'नलचम्पू' में सरस रमणीय प्रसादगुण युक्त श्लेष का बाहुल्य है। सभङ्गश्लेप प्रधान चम्पूकाव्य क होना स्वयं मानकर पाठकों को उद्वेग न करने की सम्मति कवि देता है—

वाचः काठिन्यमायाति भङ्गश्लेपविशेषतः।
नोद्वेगस्तत्र कर्त्तव्यो यस्मान्नैको रसः कवेः ॥ न० च० १-१६ ॥

कवियों की अकुशलता पर व्यङ्ग्य करते हुये कवि कहता है—

अप्रगल्भाः पदन्यासे जननीरागहेतवः। सन्त्येके बहुलालापाः कवयो बालका इव ॥ न० च० १.१६

कवि की अद्भुत मनोहारिणी कल्पना हठात् मर्मज्ञ पाठक के हृदय को आकृष्ट कर लेती है—

उदयगिरिगतायां प्राक्प्रभापाण्डुतायामनुसरति निशीथे शृङ्गमस्ताचलस्य।

जयति किमपि तेजः साम्प्रतं व्योममध्ये सलिलमिव विभिन्नं जाह्नवं यामुनं च ॥ न० च० १।१

त्रिविक्रमभट्ट की दृष्टि से कवि का काव्य तथा धनुर्धारी का बाण एक सा ही कार्य करता है—

किं कवेस्तेन काव्येन किं काण्डेन धनुष्मता ।
परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः ॥ न० च० १।५।

श्लेष युक्त अनुप्रास तथा यमक की अनुपम छटा नलचम्पू में देखते ही बनती है—

यः शृङ्गारं जनयति नारीणां नारीणाम्, यः करोत्याश्रितस्य नवं धनं नवन्धनम् यो गुणेषु रज्यते नरमणीनां न रमणीणाम्, यस्य च नमस्याग्रहारेपु श्रूयते नलोपाख्यानं न लोपाख्यानम् ॥ न० च० द्वि० उ० ॥

इसमें ३३ पुरुष, २९ स्त्रियाँ तथा १ किन्नर-मिथुन कुल मिलकर ६३ पात्र हैं जिसके निषधाधिपति नल नायक तथा कुण्डिनपुर के राजा भीम की पुत्री दमयन्ती नायिका है। प्रबन्धपटुता, काव्यसौष्ठव तथा प्रगाढ पाण्डित्य की दृष्टि से यह सर्वोत्कृष्ट चम्पू काव्य है।

नलचम्पू काव्य की कथा-वस्तु

नलचम्पू की कथावस्तु महाभारत पर आधारित है। यद्यपि इसी कथा-वस्तु को लेकर अनेक कवियों ने विभिन्न रचनायें कीं परन्तु त्रिविक्रम भट्ट ने अपनी एक नवीन विचार धारा को ही नलचम्पू काव्य द्वारा प्रस्तुत किया है। नलचम्पू के जिस कथा भाग पर अवसान होता है वह दुःखान्तक है। पर कवि ने अपनी विशिष्ट वर्णन शैली द्वारा उसकी दुःखान्तता को भी सुखान्तता में परिणत कर दिया है।

प्रथम उच्छ्वास

कवि त्रिविक्रमभट्ट भूतभावन भगवान् शिव तथा कवियों के वाग्विलास की प्रशंसा कर जगद् के उद्भवस्थल कामदेव एवम् युवतियों के नेत्र विभ्रम की सर्वोत्कृष्टता का समर्थन करते हैं। विबुधानन्द मन्दिर रसान्तर प्रौढ सरस्वती के प्रवाह की वन्दना कर वह दौर्जनी-संसद को लोगों को नमस्कार कर लेने की सलाह देते हैं। कवि अपने श्लिष्ट वाग्वैदग्ध्य द्वारा रामायणी एवम् महाभारती कथाओं की प्रशंसा करता हुआ व्यास को प्रणाम कर सभङ्ग श्लेष की दुरूहता से पाठकों को उद्वेजित न होने को कहता है। तदनन्तर अपने शाण्डिल्य गोत्रीयवंश, आर्यावर्त देश का वर्णन कर उसकी तुलना स्वर्गलोक से करता है। पुनः निषध्य नगरी खलवृन्दकन्दलदावानल सदृश नल, सालङ्कायनसूनु महामन्त्री श्रुतशील के वर्णनान्तर एक दिन राजा का मृगयावनपालक कुञ्जर सदृश किसी कराल काल वदन कोल के आ जाने का समाचार निवेदन करता है, कोल लीला-सरोवर को मथ कर अस्त व्यस्त कर देता है। विप्लवकारी वराह की सूचना पाकर राजा सेनापति बाहुक के साथ आखेट सामग्री साथ लेकर घोड़े पर सवार हो यमदूत के समान चल देता है। वन में प्रवेश करते ही व्याध सेना वनस्थली को व्यथित कर देती है। शराघात के वन्य पशु इधर-उधर भागने तथा धड़ाधड़ भूमि पर गिरने लगते हैं। चिरकाल तक पराक्रम प्रदर्शन करने के अनन्तर सम्राट् नल राघव की राक्षसेन्द्र रावण पर विजय के समान सूकर पर विजय प्राप्त करते हैं।

आखेट श्रम से क्लान्त राजा एक साल वृक्ष के नीचे विश्राम करने लगते हैं इसी बीच एक दुर्बल पथिक हाथ में भिक्षापात्र लिए वहीं आ जाता है तथा राजा के असामान्य सौन्दर्य को देखकर उस के महापुरुष होने का निश्चय करता है। वह राजा को सम्बोधित कर कहता है—कामविजयिन् आपका मङ्गल हो।

राजा साश्चर्य शिर उठाकर पथिक का अभिनन्दन करता हुआ कहता है—कहिये तीर्थयात्रिन्! कहां से आगमन हो रहा है, क्या गन्तव्य है? बैठिये। थोड़ा विश्राम कर कुछ सुनाइये। आकस्मिक दर्शन के कारण आशंका न करें, प्रथम बार भी रत्न देखे जाने पर वह अपनी सुन्दर कान्ति नहीं छिपाते हैं। पथिक बोला—हे अपूर्वकौतुककथाकर्णनरसिक! सुनिये—सम्पूर्ण संसार में कमनीयता

के लिए विख्यात दक्षिण दिशा में स्त्री एवं पुरुष रत्नों का सागर विदर्भ देश है जहां शूलपाणि-शिव से अलंकृत कैलासश्री को भी तिरस्कृत करने वाला 'श्रीशैल' पर्वत है जहां फूलों से सम्पन्न गोदावरी तट पर सुरासुरों से पूजित स्वामि कार्तिकेय के दर्शनार्थ मैं गया। वहां से वापस आने पर किसी वटवृक्ष के नीचे मार्ग-श्रम से थका विश्राम करते हुये मैंने एक आश्चर्य देखा कोई अत्यन्त सुन्दरी राजकुमारी प्रौढ सखियों से घिरी आकर उसी वट वृक्ष के नीचे बैठ गई। चामरों से वायु किये जाने के कारण उसकी अलकवल्लरी नाँच रही थी। अधमुंदी आंखे करके सरस राग से गाने वाले गन्धर्वों की कण्ठकन्दरा से निकलने वाली संगीत लहरी में वह दत्तचित्त थी। सम्प्रति जिस प्रकार आप मुझसे दक्षिण दिशा की बात पूछ रहे हैं उसी प्रकार वह भी किसी उत्तर दिशाके पथिक से कुछ पूछती हुई थोड़ी देर तक वहीं बैठी रही और मैं भी उस पथिक द्वारा किसी उत्तरी दिशा के प्रशंसनीय सम्राट् का वर्णन सुनने लगा—'वे आंखें धन्य हैं जो उस काम विजयी नृपति के मुख मण्डल को देखकर तृप्त होती है तुम मन्मथ मञ्जरी होते वह युवा तुम्हारे अनुकूल भृङ्ग है। तुम दोनों के मिलन से विधि की रचना का संकलन सफल हो जायेगा। पता नहीं वह कौन पुण्यात्मा था जिसके वर्णन मात्र ने उस अनिंद्यसुन्दरी को पुलकित कर दिया। आश्चर्यचकित, निश्चेतन मैं भी उस सुन्दरी से पूछने का आग्रह न कर सका कि वह कौन थी और कहां से आई थी! उसके चले जाने पर भी मैं ग्रहग्रस्त सा अंधा-मौन-मूर्च्छित जैसा बहुत देर तक उसी वटवृक्ष के नीचे बैठा रहा। जिस प्रकार उस सुन्दरी राजकुमारी को देखकर मेरी दक्षिण की यात्रा सफल हो गई थी उसी प्रकार आज सौन्दर्य मूर्ति आपको देखकर मैं कृतकृत्य हो गया हूँ। "अब मुझे जाने की आज्ञा दीजिये' यह कहकर पथिक चुप हो गया। पथिक की बातें सुनकर राजा सोचने लगा—

निश्चित ही वह देश स्त्री-रत्नों का आकार तथा पथिक भी यथार्थ वक्ता है। क्योंकि विधाता का व्यापार ही विचित्र रचना का है। खेद हैं कि मैं उस रूप-सम्पत्ति को न देख सका जिसके सुनने मात्र से मेरा उच्च मनोबल गिरता जा रहा है। मुझे तो उसके श्रवण मात्र से ज्वर के बिना ही अस्वस्थता, आत्मसमर्पण के बिना ही परवशता, आंख कान के ठीक होते हुये भी अन्धता, बधिरता छा रही है। इस प्रकार सज्जनों पर भी दुर्जन जैसा व्यापार करने वाले कामदेव को नमस्कार है। यह सोचकर अपने अङ्गों से आभूषण उतार कर देते हुये राजा ने उसे अभीष्ट स्थान को जाने की अनुमति दे दी तथा स्वयं भी अपने व्याध परिजनों के साथ वह अपने राजभवन को चल दिया परन्तु उसी क्षण से उसकी मानस पर्णकुटीर में उस सुन्दरी के प्रति कामाग्नि धधकने लगी। उसके वर्षा कालीन दिन दमयन्ती का वृत्तान्त जानने वाले पथिक जनों से पूछते ही पूछते व्यतीत होने लगे।

द्वितीय—उछ्वास

वर्षा काल समाप्त हो गया। शरद् ऋतु के आगमन पर स्वागत करने के लिए भ्रमर तथा हंसों ने गीत गाने आरम्भ कर दिये। राजा ने समीपवर्त्ती वन में घूमते हुये एक दिन किन्नर युगल द्वारा स्पष्ट गाये जा रहे तीन श्लोक सुने। राजा उनकी गति लहरी सुनकर उत्कण्ठा से विह्वल होकर उद्यान की ओर चल दिया। उद्यान में पहुँचते ही वनपालिका ने अत्यन्त कौतुक से भङ्गश्लेषोक्ति कुशलता के साथ वन विनोद के स्थान दिखलाये। उसने कहा देव! देवराज इन्द्र को भी आनन्दित करने वाले इस उद्यान की क्या क्या विशेषतायें वर्णन करूँ। खिले हुये पेड़ों के सदृश बातपर उभड़ते हुये बादलों जैसे काले भौंरे तथा ध्वनि करता हुआ मयूर शनैः शनैः पंखों को तरलित कर रहा है। इस क्रीडापर्वत पर मृगों के बीच किन्नरी मधुर गीत गाती है जिसे सुनकर किसका मन प्रसन्न नहीं हो उठता है। राजा ने उसके उक्ति वैचित्र्य से प्रसन्न होकर वनपालिका को अपने शरीर पर से आभूषणों को उतार कर उसे पुरस्कृत किया तदनन्तर सर्वर्तुनिवास नामक वन में उसने घूमना आरम्भ किया। इसी समय वहाँ सहसा श्वेत कमल सदृश शुभ्र पंखों वाले राजहंस आ उतरे। राजा सपरिजन निर्निमेष नयनों से उन हंसों को देखने लगा तथा इधर उधर भागते हुये हंसों को पकड़ने का प्रयत्न करने लगा। अन्ततः सुन्दरता से विचरण करते हुये पंख फड़-

फड़ाते मन्द पदविन्यास करने वाले उन हंसों में से एक को राजा ने पकड़ लिया। हाथों में आते ही हंस मधुरता से बजाई गई रजतघर्घरी की ध्वनि जैसे घर्घर स्वर से 'स्वस्ति' शब्द कह कर राजा की स्तुति करने लगा। राजा ने भी हंस की निर्भीकता तथा स्वर माधुरी से उसे किसी देवता का अवतार समझ कर हंस का स्वागत किया तथा कुशल क्षेम पूछी। इतने में दूर से राजा के द्वारा हंस को पकड़े हुये देखकर हंसपत्नी मधुर स्वर से कहने लगी—हे राजन्! मुक्ताहार परिच्छद एकान्त विचरक सारसों आदि के साथ जल में रहने वाला हंस कहीं बाँधा जाता है जिसे कमलवन प्रिय है। राजा भी श्लिष्ट उक्तियों द्वारा हंस पत्नी को उत्तर देने लगा। हंस ने इस प्रकार अपनी पत्नी को कटुव्यङ्ग्यों द्वारा पीडित करने के लिए राजा को मना किया। इसी बीच अन्तरिक्ष मण्डल से अत्यन्त स्पष्टाक्षरों में मनोरम वाणी सुनाई पड़ी—हे राजीवपत्राक्ष, राजन्! शीघ्र यह हंस छोड़ दो, यह तुम्हारे लिए दमयन्ती को तुम्हारी ओर आकृष्ट करने में दूत बनेगा। राजा आकाशवाणी सुन सोचता हुआ एक छायादार लता मण्डप में शीतल शिला तट पर बैठकर हंस से कहने लगा—मैत्री सात कदम भी साथ रहने पर हो जाती हैं। आपमें मैत्री करने योग्य सत्पुरुष वाले सभी लक्षण विद्यमान हैं। अतः निःशङ्क होकर कहो—दमयन्ती कौन, किसकी पुत्री, कैसी तथा कहां रहने वाली है। राजा की उत्कण्ठायुक्त जिज्ञासा जानकर हंस कहने लगा देव! उस सौन्दर्य लता की वार्ता सुनिये—

गंगा तथा गोदावरी जल से दुरित दावानल को दूर करने वाला सभी देशों में श्रेष्ठ दक्षिण देश है। उसी देश के वैदर्भ मण्डल को अलंकृत करने वाला कुंडिन नाम का नगर है जिसके समीप ही गंगा का उपहास सा करती हुई पुण्यसलिला पयोष्णी नदी बहती है। उस नगरी में राजा भीम हैं जिनकी पटरानी प्रियङ्गुसुन्दरी अपनी सुन्दरता के लिए विख्यात है। एकदिन सन्तानहीन राजा भीम तथा प्रियङ्गुमञ्जरी रानी—वरदा नदी के पवित्र तट पर विहार करते हुये अपने बच्चे को पेट से चिपटाये वानरी को देखा। उसे देखकर सन्तानहीन दम्पति का मन व्यग्र हो उठा। दोनों ने अम्बिकापति महेश्वर की सन्तानप्राप्ति हेतु आराधना करने का विचार किया। उधर भगवान् भुवनभास्कर दिनभर परिक्रमा करने के कारण थक कर विश्राम करने वारुणी (पश्चिम) दिशा को प्रस्थान कर रहे थे। राजा भीम सहित रानी प्रियङ्गुमञ्जरी ने भगवान् शिव को प्रणाम कर अपने राजभवन को प्रस्थान किया तथा चन्द्रमा की आह्लादकारिणी किरणों के दशो दिशाओं में फैलजाने पर रानी—प्रियङ्गुमञ्जरी भगवान् शिव के चरण कमलों में मन लगाये हुये पवित्र कुशों की शय्या पर लेट कर गाढ़ निद्रा में डूब गई।

तृतीय उच्छ्वास

उषः काल में सोती हुई रानी प्रियङ्गुमञ्जरी स्वप्न देखने लगी—सकल सुरासुर वर्ग द्वारा वन्दितचरणकमल, तथा विष्णु द्वारा स्तुति किये गये त्रिलोचन शिव ने हाथ में कपाल तथा त्रिशूल, शरीर पर भस्म, कानों में कुवलय तथा शिर पर मन्दाकिनी गंगा धारण किये हुये भवानी जी को साथ लिये हुये चन्द्र मण्डल से उतर कर प्रियङ्गुमञ्जरी! यह मञ्जरी लो। डरो मत। प्रातःकाल मेरी आज्ञा से दमनक नामक महामुनि आयेंगे और वही तुम पर अनुग्रह करेंगे"। यह कह कर मादक सुगन्धयुक्त-पारिजात मञ्जरी पकड़ा दी। रानी ने भी स्वप्न में ही स्वीकार कर उन्हें प्रणाम किया। इतने में मङ्गल वाद्य बजने लगे। रानी ने उठकर भगवान् सूर्य को प्रणाम किया। गीत वाद्यध्वनि से निद्रामुक्त होकर राजा भी प्रातःकृत्य से निवृत्त हो पुरोहित के साथ रानी को देखने अन्तःपुर में प्रविष्ट हुये तथा रानी को अत्यन्त प्रसन्न वदन देखकर प्रसन्नता का कारण पूछा। रानी ने स्वप्न का सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया। राजा ने भी स्वप्न में शक्तिधारी स्वामि कार्तिकेय तथा मङ्गलमूर्ति गणेश को लिए हुए भगवती पार्वती के साथ भगवान् शिव के दर्शन की बात बतलाई तथा पुरोहित जी से एक से स्वप्नों के फल का विचार करने के लिए प्रार्थना की। उसने भी समस्त राजचक्रचूडामणि अपत्य के भावी जन्म को बताकर प्रशंसा की। इसी अवसर पर प्रसाद

के प्रासाद, साधुता के सिन्धु महान् तेजस्वी कोई मुनि तरुण अर्क मण्डल से अवतीर्ण हुये। राजा ने मुदित मन उठकर उन्हें प्रणाम किया। मुनि बोले—चिरञ्जीविन्। हम शिव जी की आज्ञा से ही यहाँ आये हैं। आप शीघ्र ही सागरजलतरङ्गमाला से अलंकृत, सर्वप्रशंसनीय असामान्य कन्यारत्न प्राप्त करेंगे।

पुत्रार्थिनी प्रियङ्गुमञ्जरी 'कन्या-रत्न' के वरदान को सुनकर अतीव दुखी हुई। तथा श्लेषात्मक वचनों द्वारा मुनि को बुरा भला कहने लगी। तपस्वी द्वारा कर्मानुसार ही शुभाशुभ फल प्राप्त होने की बात समझाये जाने पर प्रियङ्गुमञ्जरी अपराध के लिए क्षमा मांगती हुई उन्हें बहुमूल्य आभूषण उतार कर देने लगी परन्तु मुनि को अपने लिए अनुपयोगी बताकर अपना कमण्डलु उठा नील गगन में उड़ गये। कालक्रम से रानी प्रियङ्गुमञ्जरी ने गर्भ धारण किया। लावण्य परमाणुपुञ्ज गर्भ से रानी सुशोभित होने लगी। उपयुक्त समय पर प्रियङ्गुमंजरी ने उसी प्रकार कन्या रत्न को जन्म दिया जैसे पृथ्वी ने पुण्यतीर्थ को। नामकरण संस्कार के दिन राजा ने दमनक मुनि द्वारा वरदान दिया जाना स्मरण कर उसका नाम दमयन्ती रखा। शैशवोचित बाल क्रीडाओं द्वारा पिता को आनन्दित करती हुई कन्या सबको आश्चर्य चकित करने लगी। बड़े होकर शीघ्र ही उसने वीणा, वादन, शलाका लेखक, प्रबन्धालोचन चिकित्सा आदि समस्त कार्यों में परमप्रवीणता प्राप्त करली। उसका अत्यन्त सौन्दर्य स्वर्णमयी शिलासदृश उल्लसित हो उठा।

यह सुनकर राजा नल ने उसकी कथा से प्रसन्न होकर हंस से पूछा—उसकी वयः सन्धि का वृत्तान्त बतलाओ। हंस कहने लगा देव ! जिसके समस्त अङ्ग सर्वदेवमय हैं, उसका वर्णन मैं अकेला पक्षी क्या कर सकूँगा। उसकी दृष्टि सुतारा, कटाक्ष सकाम, हाथ पांव सुकुमार, मुस्कराहट सुधा कान्ति तथा सकल अङ्ग भोग सौन्दर्ययुक्त दिखलाई पड़ने लगे। ऐसा लगता जैसे विधाता ने उसे नक्षत्रमयी बनाया हो। अधिक क्या—भगवान् शिव की आराधना करने वाला वह पुरुष उत्कृष्ट पुण्यों का मूल ही होगा जो उस दुर्लभ कन्यारत्न को प्राप्त करेगा। यह कह कर हंस चुप हो गया।

चतुर्थ-उच्छ्वास

हंस की बातें सुनकर राजा नल आश्चर्य चकित होकर अनुमान करने लगा—प्रायः यह वही सुन्दरी है जिसकी चर्चा मैंने पथिक द्वारा सुनी थी। उसने कुछ सोचकर पुनः हंसते हुये हंस से कहा—"वयस्य ! मैं सुनने योग्य सब सुन चुका। अब नित्यक्रिया का समय हो चुका है। अतः हम समयोचित कार्य में लग रहे हैं, आप भी अब मनोरम क्रीडा सरोवर में विहार करें। हे वनपालिके। तुम भी इसके कमल क्रीड़ा से निवृत्त होने पर मेरे पास इसे ले आना।" यह कहकर राजा राजभवन को चला गया। इधर हंस भी 'कृत कमल क्रीड़ा' इत्यादि कहे हुये राजा के वाक्य का स्मरण कर कमलक्रीडोपरान्त राजहंसवर्ग के साथ ही आकाश में उड़ गया। शीघ्र ही वह राजहंस समुदाय विदर्भदेश के अलङ्कार कुण्डिन नगर में पहुँच कर राजभवन के निकट कन्यान्तःपुर के उद्यान क्रीडा सरोवर में उतर पड़े। शीघ्रता से सरोवर तट पर विहार करने की अभ्यासिनी कन्यकान्तःपुर की कन्याओं ने भागकर दमयन्ती को बताया और उसने आकर चञ्चल चरणों तथा चञ्चुओं के प्रहार कमलकन्दों पर प्रहार करने वाले हंसों को पकड़ने का सखियों को आदेश दिया तथा स्वयं भी चञ्चल कंकण की मनोरम ध्वनियुक्त मणिबंध वाले करपल्लव से उस राजहंस को लीलापूर्वक उठा लिया। पकड़े जाने पर हंस ने चित्त चमत्कारी अलौकिक सौन्दर्य युक्त दमयन्ती को पहिचान कर उसे दीर्घायु तथा सुखिनी होने का आशीर्वाद दिया कि द्रष्टव्य स्वरूप वाले विशाल नयनों वाले राजा नल को पतिरूप में प्राप्त करो।

दमयन्ती हंस की संस्कृत-वाणी सुनकर आश्चर्य चकित हो सोचने लगी—"कदाचित् यह उन्हीं नल के विषय में कह रहा है जिसके सम्बन्ध में मैंने गौरी महोत्सव में जाते समय पथिक

द्वारा सुना था।'' उसने पूछा—कन्दर्प दर्प-दावानल यह नल कौन है, कहिये। उस हंस ने भी—"सावधान होकर सुनिये" कहकर इस प्रकार कहना आरंभ किया—

निषेध देश के राजा वीरसेन हैं जिनकी शरच्चन्द्रिका के समान यशोराशिरूप राजहंसों ने चारो समुद्रों के तटों को चिह्नित कर दिया है। एक बार उन्होंने सन्तान कामना से भगवान् अम्बिकापति की उपासना की। समय बीतने पर रानी गर्भवती हुई। उसने सौम्यग्रहों के उच्च-स्थान पर होने पर प्रभापुञ्ज से समस्त तेजः पुञ्ज को तिरस्कृत करने वाले तथा अपने अरुण किरण पल्लव से कमल कान्ति को उल्लसित करने वाले सूर्यमंडल जैसे कान्तिमान् पुत्र को जन्म दिया। सूतक दिवस व्यतीत होने पर ब्राह्मणों ने उसका नल नाम प्रतिष्ठित किया। क्रमशः चूड़ाकरणादि संस्कार हो जाने पर वह अनायास ही समस्त विद्याओं का पारंगत हो गया है। उस राजपुत्र के समान ही शील अवस्था विद्या तथा अन्य समस्त गुणों से युक्त अद्वितीय हृदय मंत्री सालङ्कायन का पुत्र श्रुतशील मन्त्री और मित्र है।

एक दिन राजा वीरसेन मन्त्री सालङ्कायन सहित अपनी राज्य सभा में बैठे थे, नल ने सभा में आकर अपने पिता वीरसेन को प्रणाम किया किन्तु सालंकायन मन्त्री को नहीं किया। उसके इस अविनय से तिलमिलाकर सालङ्कायन इस प्रकार प्रणय, परुषाक्षरों में कहने लगे—राजकुमार! राजहंस होकर भी 'अहम्' स्वरूप मोहवान् मत बनो। सुविपम मेघवर्ती अस्थिर विद्युद् विलास रूपी तरुणाई में आकर विनय को भूल मत जाओ। जड़ता छोड़कर स्वभाव से मधुर बनो। स्त्रियों तथा श्री का विश्वास मत करो। आयुष्मन् लोभ नहीं करना चाहिये। वृद्धि पाकर गुणों से द्वेष नहीं करना चाहिये। वत्स! चित्तको स्वच्छन्द मत बनाओ.........इत्यादि। वीरसेन ने सालङ्का-यन का समर्थन किया।

राजा ने अनुकूल समय पर मौहूर्तिकों के परामर्श से नल का राज्याभिषेक कर दिया। सालङ्का-यन मन्त्री ने भी उन्हें कनक दण्डयुक्त राजछत्र धारण कराया। मुनिजनों ने वेदों के प्रशस्त मन्त्रों का उच्चारण करते हुये उठकर शिरपर अक्षत छोड़ते हुये आशीर्वाद दिये एवं मंगल-काम-नायें कीं। कुछ समय व्यतीत होने पर युवराज नल से एक दिन राजा ने कहा—'आयुष्मन्! तुम्हें देखा, पूछा, आलिंगित किया, क्षमा किया तथा अभद्र बातें भी की हैं" यह कहकर उन्हें गोद में बिठाकर अश्रुधारा बहाते हुए नल के शिर को सूंघ कर पत्नी सहित राजा ने वन को प्रस्थान किया। राज्य छोड़कर राजा के चले जाने पर प्रजा ने करुण-क्रन्दन किया। युवराज नल भी आंसू बहाते हुये हा पिताजी! कहकर विलाप करने लगे।

यह सुनकर दमयन्ती सोचने लगी—ओह, महानुभाव स्नेही तथा सहृदय प्रतीत होते हैं। अतः सर्वथा प्रीतिपात्र हो सकते हैं।'' वह पुनः पूछने लगी—हां हंस! इसके आगे क्या हुआ? राजहंस ने कहा—सुन्दरोदरि! इस समय परिजन कुछ कुछ मनोविनोद द्वारा पिता के वियोग से उत्पन्न क्लेश को भुलावा देते हुए भगवान् शंकर के चरण-कमलों में ध्यान लगाकर व्यतीत कर रहे हैं।

पञ्चम उच्छ्वास

जब राजा हंस निषधराज का वर्णन कर चुप हो गया तो दमयन्ती के हृदय में कथाश्रवण कर स्वाभाविक अनुराग जाग पड़ा। उसकी आन्तरिक मन्मथव्यथा को देख, संकेत ज्ञान में चतुर हसोड़ परिहासशीला नाम की सखी दमयन्ती पर कटाक्ष करती हुई राजहंस से वार्तालाप करने लगी—महा-नुभाव! आपतो ऐसी कथा कह गये हैं जिससे हम लोगों को तृप्ति ही नहीं हो रही है। कृपया पुनः इस कथा सुधा रस का पान कराइये। उसने कहा—सुन्दरि! समस्त स्त्रियों के हृदय प्रासाद में प्रतिष्ठापित प्रतिमा वाले उन (नल) की और क्या प्रशंसा की जाय। इस संसार सागर में दो स्त्री पुरुष रत्न उत्पन्न हुये हैं—नारियों में रत्न आप (दमयन्ती) तथा पुरुषरत्न वह (नल)। अतः हे कुरंगशावनयने! तुम उस पृथ्वीपति (नल) के ही योग्य हो, यह मैं कह चुका हूँ। अच्छा,

अब जा रहा हूँ तुम्हारा कल्याण हो। हां—तुम्हें किसी योग्य दूत को वहां भेज देना चाहिए। जाने के लिए उद्यत परिहासशीला पुनः कहने लगी—महानुभाव! जिस प्रकार तुमने अनुरागालाप से इनके प्रेमाङ्कुरण किया है वैसे ही उनसे भी उत्सुकता उत्पन्न करने वाली बातें कहनी चाहिये। इतने पर दमयन्ती अपनी सखी से कहने लगी—"सखि! अकारण बन्धु से क्या निवेदन करना है" हे कल्याणबन्धो, मित्र! पुनः दर्शन दीजियेगा। लीजिये—यह हारलता आपके प्रिय (नल) के लिए उपहार तथा स्मृति नाटक का सूत्रधार बनेगी।" यह कह दमयन्ती ने अपने गले से अपनी प्रिय मुक्तावली उतार कर हंस के गले में पहना दी। "हे सुन्दरि! मुक्तावली के बहाने उस (नल) के समक्ष आपका वर्णन का भार मुझे स्वीकार है।" यह कहकर हंस अन्य पक्षियों के साथ उड़ गया। इधर दमयन्ती ने नल के चिन्तन में खाना-पीना बोलना-सोना आदि सब भुला दिया।

वे राजहंस भी वन-पर्वत-नगर-गांव आदि लांघते कुछ दिनों में निषधनगरी के उद्यान में पहुँच गये और स्वच्छन्दता से विचरण करने लगे। उनमें से एक राजहंसी को क्रीडातडाग के बीच पङ्कजों में विचरण करते देखकर सरोवर पालिका ने जाकर राजा (नल) को सरोवर में राजहंसों के आने का समाचार कह सुनाया। इतने में ही शरद् ऋतु की मूर्ति जैसी वनपालिका ने हंसों को साथ लेकर प्रवेश करके राजा को बतलाया कि उत्कण्ठा उत्पन्न करने वाली यह वही हंस है। राजा ने सरसिका का साधुवाद कर जाने की अनुमति दी तथा सामने प्रसन्नतासे बैठे हंस को निर्निमेष देखते हुये स्वागत किया। उसे हाथ से उठाकर सस्नेह स्पर्श किया। हंस ने एक चरण से अपनी गर्दन में से मुक्तावली उतार कर दमयन्ती की बाहुलता के समान गले में पहनने के लिए राजा से आग्रह किया। राजा ने दोहरी की गई उस मुक्तावली को बड़ी उत्कण्ठा से देखा तथा पहन लिया। वह बहुत देर तक पक्षी से अनेक प्रकार वार्तालाप करता हुआ बैठा रहा। प्रहर समाप्ति सूचक नगाड़े की ध्वनि सुन राजहंस को बिना अनुमति से न जाने के लिए कहकर राजा स्वयं दैनिक कृत्य करने उठ खड़ा हुआ।

कदाचित् प्रभात होते ही सुन्दर पंखों वाले राजहंस कदम्ब के साथ धीरे-धीरे हंस ने राजभवन में राजा के पास आकर अपने प्रस्थान करने का समाचार सुनाया तथा राजा की अनुमति पाकर अभीष्ट स्थान को चला गया। तदनन्तर व्याकुल भूपाल की दक्षिण दिशा के लोगों के प्रति स्वाभाविक प्रीति रहने लगी। दमयन्ती भी हंस-दर्शन के दिन से लेकर कामव्यथा से पीडित रहने लगी। नाचना उसकी आंखोंमें खटकने लगा। कर्पूरजलसिक्त कमलदलों से बनी शय्या पर भी वह निरन्तर करवटें बदली रहतीं। दोनों एक दूसरे के गुणों की ही चर्चा करते रहते! इधर शृङ्गार रसकी राजधानी दमयन्ती की तरुणता को देखकर विदर्भराज भीम ने अपने मन्त्रियों के परामर्श से उसका स्वयं स्वयंवर करने का निश्चय किया तथा शीघ्र ही चारों ओर राजाओं को इसकी सूचना हेतु दूतों को भेज दिया। स्वयं दमयन्ती ने एक वृद्ध ब्राह्मण को स्वयंवर की सूचना नल को देनें के लिए भेजा। महाराज भीम का निमन्त्रण पाकर राजा नल ने बड़े सजधज से स्वयम्वर में भाग लेने के लिए विदर्भ देश को प्रस्थान किया। अनेक गिरिग्रामो, सरिताओं, वनों को पारकर विन्ध्याचल की रमणीयता देखता हुआ नर्मदा नदी के मनोरमतट पर पड़ाव डालकर ठहर गया। श्रुतशील तथा राजा अनेक प्रकार के प्रमोदालाप कर ही रहे थे कि उनकी दृष्टि आकाश से उतरते हुये एक पुरुष पर पड़ी। उस व्यक्ति ने आकर नल मे निवेदन किया कि उनके स्वागतार्थ इन्द्रादि लोकपाल आ रहे हैं। राजा यह सुनकर ससम्भ्रम उठकर पैदल ही कुछ कदम उनकी ओर को बढ़ा। इतने में कानों पर पारिजात मञ्जरी चढ़ाये हुये अन्य लोकपालों के साथ देवराज इन्द्र पूर्व दिशा से अवतरित हुये। इन्द्र के संकेत से कुबेर ने विदर्भराज भीम के द्वारा किये जा रहे दमयन्ती स्वयंवर में भाग लेने जाने का समाचार सुनाया। नल से दूत बनकर कुंडिन नगर पूर्व पहुँचने के लिए भी लोकपालों ने निवेदन किया जिससे दमयन्ती इन्द्रादि देवताओं में से किसी लोकपाल को अपना पति वरण कर सकें। अत्यन्त असमंजस में पड़े राजा नल ने देवताओं का यह प्रस्ताव स्वीकार कर

लिया। अत्यन्त चिन्तातुर नल को और भयातुर परिजनों को देखकर श्रुतशील ने नल को समझाया—आप निश्चित रहें, दमयन्ती देवताओं का वरण नहीं करेगी। वह सर्वथा आप पर अनुरक्त है। आप अपने प्रयत्न में शिथिल न होवें।

इस प्रकार सान्त्वना दिये जाने पर भी नल को शान्ति नहीं मिल सकी। वह मन्त्री श्रुतशील के साथ एकान्त विहार के लिए निकल गया। इतने में उसने सरोवर में किरातकामिनियों को स्नान करते देखा। वह उनके क्रीडा-कौतुक को बड़े आनन्द से देखता रहा। श्रुतशील ने नल का ध्यान हटाकर रेवातट की सुन्दरता दिखलाने के लिए आकृष्ट किया। लीला-विहार वाले इस रेवातट पर राजहंस रमण कर रहे थे। चकोर कमल की कलियों को चुन रहे और चकवा भ्रमरवर्ग से डर रहे थे। श्रुतशील द्वारा प्रेरित राजा नल शबरकामिनियों की ओर से अपना मन हटाकर सुषमा स्थल रेवातट पर आकर सोचने लगा। इतने में सन्ध्या हो गई अतः परिजनों के साथ राजा शिविर की ओर लौट आया परन्तु विषादवश अपने नित्यकृत्य संध्यावन्दनादि को भी भूल गया। ऐसे अवसर पर स्मरण कराने के लिए किन्नर मिथुन गान करने लगे। राजा नल ने भी आह्निक-संध्यावन्दन किया, शिवजी के चरणकमल की सेवा कर मधुर वीणा के पञ्चमस्वर से अनुगत गीत श्रवण सुख से वहीं वह रात्रि व्यतीत की।

षष्ठ उच्छ्वास

तदनन्तर तिमिरमलिन आकाश में प्रातःकालीन पौ फटते ही प्राभातिक भेरी ध्वनि होने लगी। वैतालिक ने राजा को जगाने के लिए स्तुति पाठ किया। अनेक प्रकार प्रस्थान कोलाहल के उठते ही राजा ने उठकर शौचस्नानादि क्रियाओं से निवृत्त होकर भगवान भुवनभास्कर को प्रणाम किया। तदनन्तर भगवान् नारायण की स्तुति कर अपनी सेना सहित स्वयं विजयी गजेन्द्र पर आरूढ़ होकर प्रस्थान किया। उन्होंने निरन्तर तपस्या में लगे ब्रह्मर्षियों द्वारा पूजित शिव-लिंगो से घिरी समुद्र की दूसरी राजपत्नी, मेकल नाम पर्वत की पुत्री नर्मदा को पार किया। फिर विकसित, पल्लवित अंकोल, सल्लकी, साल, अजुन कदम्ब, खैर करञ्ज अञ्जन अशोक आदि वृक्षों से व्याप्त, मृगों के प्रियस्थान, स्वर्ग सदृश पवित्र अरण्य को पारकर विन्ध्याटवी में पहुँचे। इस प्रकार हंसध्वनि युक्त नदों करेणुओं से युक्त रेणुस्थलों सुनीर तथा अगवृक्षों से युक्त वन पर्वतों, गांवों को पारकर ऐसे स्थल पर पहुँचे जहाँ उत्कण्ठित राजहंस समूह कमलों को चूम रहा था। वहीं पर वृक्ष की छाया में थके विश्राम करते हुए एक पथिक को उन्होंने देखा। पथिक ने राजा को देखते ही मनोरम शब्दों में आशीर्वाद दिया।

राजा ने सम्मुख प्रवाहित नदी का पथिक से परिचय पूछा। पथिक ने भानुसुता राजा सम्वरण की भार्या, पाप-विनाशिका यमुना नदी का वर्णन किया जिसके तट के पुष्पों से सुगन्धित वायु द्वारा नचाये गये कमल पत्र रूप पंखों से कम्पित मधुर जल का पानकर लोग एक बार अमृत को भी भूल जाते हैं। उसने अपना नाम पुष्कराक्ष संदेशवाहक बताया। पथिक पुष्कराक्ष ने कहा कि मुझे विशालाक्षी दमयन्ती ने आपका समाचार लाने के लिए भेजा है। जिस मार्ग से आप वहां पहुँचेगे, राजकुमारी उसी ओर सामने की खिड़की में बैठकर आपकी प्रतीक्षा करेगी। यहां से थोड़ी ही दूर पर दमयन्ती द्वारा भेजा हुआ, ऊंचे साल सर्ज अर्जुन आदि वृक्षों के नीचे घूमता हुआ पयोष्णी नदी के तट पर किन्नर मिथुन मिलेगा। उसने राजा के समक्ष भोजपत्र पर दमयन्ती द्वारा लिखी चिट्ठी निकाल कर रखी। राजा ने बड़ी उत्सुकता से उसे पढ़ा—"नैषध, नल होकर भी तुम मेरे लिए अनल हो गये हो। मानरूप सागर से भरे हुये अबलाओं के मानस को इस प्रकार ग्रहण करना तुम जैसों का धर्म नहीं है। दैव भी दुर्बल को ही सताता है। न जाने कब कुण्डिननगर की भूमि आपके चरण कमलों से अलंकृत होगी।"

प्रणयपत्र की सुधाधारा से राजा नल का मानस लहराने लगा। उसने मृदु मुस्कराते हुये कहा—पुष्कराक्ष! यह राजपुत्री सर्वथा प्रशंसनीय है। उसने उत्कण्ठित होकर दमयंती के सम्बन्ध

में पुष्कराक्ष से अनेकों प्रश्न पूछे। पुष्कराक्ष भी उसकी उत्कण्ठा को अपने उत्तरों द्वारा और भी उद्दीप्त करने लगा। दोपहर हो जाने के कारण पयोष्णी नदी के तट पर पड़ाव डाल दिया गया और स्वयं भी पुष्कराक्ष से सूचित आधे मार्ग में ही थके हुये किन्नर मिथुन को देखने की इच्छा से मृगया के व्याज से कुछ प्रामाणिक परिजनों को साथ लेकर विचरण करने लगा। उसने एक पर्वत की शिला सन्धि पर अपने प्रियतम को निमित्त कर गाती हुई किन्नरी को देखा। पुष्कराक्ष ने आगे बढ़कर उस किन्नर से कहा—"सुन्दरक देखते नहीं, महाराज नल तुम्हारी आँखों के सामने है"। उसने सुन्दरक तथा विहंग वागुरिका नाम से किन्नर मिथुन का राजा से परिचय कराया। किन्नर मिथुन ने राजा नल को प्रणाम किया।

सुन्दरक ने नामाङ्कित अङ्गुलीयक (अंगूठी) तथा सुन्दर लाल रेशमी वस्त्रों का जोड़ा निकाल कर राजा को दिया। राजा ने भी मनोरम अङ्गुलीयक तथा वस्त्र युगल को सस्नेह स्वीकार कर कहा—"सुन्दरक ! मैं देवी के नाम से ही मुद्रित तथा उनके प्रेम से ही आच्छादित हूँ यह मुद्रिका तथा वस्त्रयुगल पुनरुक्तमात्र हैं। दमयन्ती का सन्देश मात्र ही 'कर्णपूर' आभूषण हैं। आप जैसे प्रेमी परिजनों को भेजकर देवी ने क्या नहीं भेज दिया है।"

भगवान् विवस्वान् ने पश्चिम अस्ताचल को प्रस्थान किया। मन्दराचल के लाल धूलि-पटल की लालिमा रूप सन्ध्या राग उमड़ पड़ा। पूर्वदिशा में वन के वृद्ध मयूर के गर्दन की रोमपंक्ति के के समान अन्धकार फैलने लगा। परिजनों के साथ राजा शिविर को वापस लौट आये। दैनिक कृत्य के पश्चात् सब ने सुगन्ध युक्त गरम पौष्टिक सामिष घी में बने रसमय भोजन को किया। कर्पूरखण्ड मिश्रित ताम्बूल खाकर—सुन्दरक को कुछ मधुर गायन करने का आदेश दिया तथा स्वयं मृदु मणिमय पर्यङ्क पर सुख से आसीन हुये। किन्नरमिथुन गान्धार-पञ्चम-राग स्थानक हृदया-कर्षक कानों में अमृतवर्षा करने वाला गीत गाने लगा। इसी अवसर पर वैतालिक ने गीत की प्रशंसा की। किन्नरयुवक ने गीत की तुलना दमयन्ती से की थी उसकी दृष्टि में दमयन्ती तथा तात्कालिक गीत में बहुत सी समानतायें थी। विहंगवागुरा ने गीत में अनेक दोषों तथा दमयन्ती में अनेक गुणों की उद्भावना की। उत्कण्ठापूर्ण वातावरण में रात्रि व्यतीत हुई।

प्रभात होते ही दैनिक कृत्य से निवृत्त हो उत्तम कोटि के अश्व सैन्य और परिजनों से परिवृत राजा नल ने प्रस्थान कर दिया। मार्ग में राजा ने एक विशाल हाथी देखा जो रमणेच्छा से रसिकतया आंखें निमीलित कर करेणुका की चाटुकारिता कर रहा था। "मोदयुक्त अनुरागी गज दम्पति के क्रीडा-विलास में विघ्न नहीं डालना चाहिये" यह कहकर उसे छेड़ा नहीं किन्तु राजा स्वयम् अत्यन्त विह्वल हो उठा। मार्ग में इसी प्रकार अन्य भी उद्दीपक दृश्य दिखलाई पड़े। विन्ध्याटवी के मनोरम दृश्य देखते हुये आगे चलकर राजा ने पुष्कराक्ष से व्यग्र होकर कुण्डिन नगर की दूरी पूछी। वह बोला—"देव ! हम लोग अब आ चुके हैं।" यह वीरों से युक्त वरदा तट पर महाराष्ट्र देश है जहां दक्षिण की सरस्वती विदर्भा नदी बहती हैं। यह कामदेव के उद्यान जैसे बगीचों, परिपक्व शालिवाले खेतों कमल वनों से सुशोभित जलाशयों से युक्त स्वर्ग की विडम्बना करने वाला यही कुण्डिन नगर है"। मत्त कलहंसों से युक्त दोनों (वरदा तथा सरस्वती) नदियों के सङ्गम तट पर सेना का पड़ाव डाल दिया गया। सैनिकों के पांवों से उठी हुई धूल ने राजा नल के आगमन की सूचना कुण्डिननगरवासियों को दी।

शिविर में सैन्य तथा परिजनों के सुव्यवस्थित हो जाने के कुछ समय पश्चात् कुण्डिननगर से थोड़ी ही दूर पर दण्ड पाशिक की ऊँची आवाज सुनाई पड़ी। वह घोषणा कर रहा था—"निषधदेश के सम्राट् आ चुके हैं अतः राजमार्ग चन्दन जल से सींच दिये जायें, पुष्पयुक्त तोरण पताकायें फहरा दी जायें। घर घर प्राङ्गणों में धान्य युक्त जलपूर्ण कुम्भ स्थापित किये जायें। विविध वस्त्राभूषणों से विभूषित [illegible] बाहर निकलें तथा कुलवधुयें

भगवान् शिव की कृपा से स्वर्गलोक से अवतरित अनङ्ग के सदृश सुन्दर महाराज नल के दर्शनों से कृतार्थ हो।

सप्तम उच्छ्वास

इस प्रकार निरन्तर उच्चस्वर से दण्डपाशिक की घोषणा हो ही रही थी कि सोने की जंजीर धारण किये पदानुकूल वेषधारी प्रतीहार ने आकर प्रणाम कर सविनय निवेदन किया—"देव मंगल-वेष धारण किये पुष्प फलाक्षत पूर्ण स्वर्णपात्र लिये मन्त्र पाठ करते हुये ब्राह्मण तथा कुण्डिनपुर के नागरिक एवं पुराङ्गनाएँ ये आपके दर्शनार्थ द्वार पर प्रतीक्षा कर रही हैं। विदर्भराज भी दर्शनार्थ समीप ही आ रहे हैं।" यह सुन राजा ने तुरन्त आगे बढ़कर विदर्भ राजा को सस्वागत लाने के लिए दौवारिक को आदेश दिया। उसने भी वैसा ही किया। प्राङ्गण के निकट भीमभूपाल के आते ही निषधराज ने सामन्तों के साथ कतिपय पद आगे बढ़कर उनका स्वागत किया। प्रसन्नता से दोनों ने बाँहे फैलाकर एक दूसरे का आलिंगन किया। कुशलप्रश्नानन्तर विदर्भराज ने निषधाधिपति से कहा कि हमारे महान् पुण्य से आपका यहां आगमन हुआ है। आपके सङ्ग-सुखामृत से हमारा संसारचक्र-भ्रमण सफल हो गया है।" यह कहकर अतिथि-सत्कार किया। भीम की नम्रता एवम् आत्मसमर्पण पर राजा नल मुग्ध हो गये। कुछ समय पश्चात् विदर्भराज बड़े सन्तोष के साथ राजभवन वापस आये। दमयन्ती की भेजी गई कुबड़ी तथा नारी परिचारिकायें नल के पास विविध उपहार ले गईं जिन्हें नल ने अति पुरस्कृत किया। पर्वतक बौने पुष्कराक्ष तथा किन्नर मिथुन को भी राजा ने पुरस्कार दिये तथा उन सबको दमयन्ती के पास भेज दिया तथा स्वयं माध्याह्निक कर्म करने में लग गये। इतने में दमयन्ती द्वारा भेजे गये पाचकों ने सैनिकों आदि सबको सुरुचिकर भोजन करवाया। इस प्रकार राजा दमयन्ती के पाचन कौशल की प्रशंसा करते करते अतृप्त ही बने रहे। इतने में प्रतिहार से अनुमति पाकर पर्वतक ने प्रवेश किया। वह निवेदन करने लगा—महाराज यहां से जाकर मैंने स्वर्ग से भी मनोरम मार्गों चौराहों को पार कर सुन्दर भवनों को देखते हुए उस राजभवन में प्रवेश किया जो सरस पीतमंजरी युक्त आम्रोद्यान से परिवृत था। मणिवाजिशालाओं में सुन्दर बँधे घोड़े हिनहिना रहे हैं। ऊँचे शिखर मंगल ध्वज तोरणों से सुशोभित हैं। कमलपंक्तियुक्त विनोद वावलियां आलान युक्त हाथियों के समूह, परिचारक परिचारिकायें, कवि, गायक, वादक आदि से सुशोभित राजभवन में सुवर्ण और कुङ्कुम मालायें लटकाई गई हैं। रत्नों का तो वह निलय है।

दमयन्ती का वर्णन करते हुये उसने कहा—"महाराज! उस बाला के निर्माण में विधाता ने अपना समस्त कौशल ही लगा दिया। आपके दूत रूप में मुझे वहां उपस्थित जानकर राजकुमारी ने मेरा बड़ा सत्कार किया। कुशल पृच्छा के अनन्तर मैंने आपका उपहार उन्हें समर्पित किया जिसे उन्होंने सानन्द स्वीकार कर लिया। वार्तालाप में पुष्कराक्ष ने कह दिया—देवि! यद्यपि महाराजा नल आप पर सर्वथा अनुरक्त हैं तथापि वह इन्द्रादि लोकपालों के दूत बनकर उन्हीं में से किसी को वरण करने के लिए आप से निवेदन करने आये हैं जब पुष्कराक्ष के कथन का मैंने समर्थन किया तो राजकुमारी अतीव व्यग्र हो उठी। चिन्तामग्न मौन होकर मेरे चलने पर वह केवल कुछ हाथ उठाकर ही रह गई, कुछ कह न सकीं। इस विषण्ण दशा में मुझे न तो कोई उपहार ही दिया और न वह कुछ और पूछ या कह सकीं। केवल चञ्चल दृष्टि से अपने कर-कमल को उठाकर मुझे जाने की अनुमति दे दी।"

इतने में अवसर पाठक ने संध्या होने की सूचना दी। उदयाचल की गिरि गुफाओं से निकले अन्धकाररूप हाथियों को धकेलता हुआ पूर्व में दूध के फेन के समान उज्ज्वल चन्द्रमारूप सिंह निकल आया, चांदनी से सरावोर समस्त नगर श्वेतद्वीप-सा प्रतीत होने लगा। उत्कण्ठा से व्याकुल निषधराज ने इन्द्रादि दिग्पालों द्वारा सौंपे अतिदुष्कर कार्य की अत्यन्त संकट-दशा को सोचा—अब

मुझे क्या करना चाहिए क्या नहीं ? वह अकेले ही पैदल निकल पड़े तथा कुछ ही क्षणों में कैलासकूट जैसे अट्टालक भोग भव्य भीम भूपाल के भवन के पास पहुँच कर 'पुरन्दर वरदान' से अदृश्यमान रूप कन्यकान्तःपुर में प्रविष्ट हो गया। कस्तूरी कर्पूरमिश्रित सुगन्धित पवन तथा सखियों की गीत ध्वनि से अनुमान कर राजा दमयन्ती वाले महल की ओर गया। दमयन्ती की सहेलियाँ उसका मनोविनोद कर रही थीं। दमयन्ती के सम्मुख पहुँचते ही उसने अपना रूप सर्वदृश्य बना लिया। अपने समक्ष कन्या गृह में राजा नल को खड़ा देखकर दमयन्ती तथा उसकी सहेलियाँ सभी निर्निमेष दृष्टि से उस को देखने लगीं। उनका हृदय काँप उठा, अङ्गों में रोमांच हो आया। दमयन्ती उसके मुख को वारवार देखकर सोचने लगी—"वह युवती अवश्य ही अत्यन्त भाग्यशालिनी होगी जो इसके गले में मुक्तामाल सदृश अपनी भुजाओं को फैलाकर आलिङ्गन करेगी। विधातः तात ! इसे बनाने के कारण शायद आपका भी परिश्रम धन्य हो गया है। और क्या कहें, हे पृथ्वी मातः ! तुम भी वन्दनीय हो जिसका यह पति है।

विहंगवागुरा को पहिचानने के कारण राजा नल ने उससे कहा कि तुम्हारी स्वामिनी का कैसा आचरण है कि जो अभ्यागत के साथ स्वागत आलाप से भी व्यवहार नहीं कर रही है ? उसने कहा—"स्वामिनी ने लज्जावनतमुख तुम्हारे चरणकमलों को अपने नेत्रोत्पल में रख लिया, कांपते हाथों के कंकण ध्वनि से स्वागत किया तथा स्तनयुगल रूपी मङ्गल दो घटों से युक्त द्वारवाले हृदय में प्रवेश किया है। अतः आप जैसे अतिथि के लिए मेरी इस सखी ने क्या क्या नहीं किया है ? आप घबराहट के साथ उठकर इसके द्वारा समर्पित सुन्दर मणिमय आसन पर बैठें। दूसरों के मुख से आप दोनों ने एक दूसरे के सम्बन्ध में सुना है अब आप दोनों की आंखे अन्योन्य दर्शन का आनन्दानुभव प्राप्त करें। सखी के इस प्रकार कहने पर दोनों शीघ्रता से सखियों द्वारा पोंछे गये स्फटिक तथा प्रवाल निर्मित पलंगो के बीच बैठ गये। उत्सुकता से स्तब्ध लज्जा से संकुचित एक दूसरे को देखते ही दोनों के हृदयों में सभी रस उमड़ पड़े। सखियों के कहने पर अर्घ देने के लिए उद्यत दमयन्ती को राजा नल ने हँसते हुये मना कर दिया। फिर मन में कुछ सोचते हुये उसने दमयन्ती से इन्द्रदेव का सम्पूर्ण आदेश सप्रसङ्ग सुना डाला।

कुछ मुस्कराहट से स्निग्ध नम्रमुखी दमयन्ती प्रियम्वदिका सखी से अन्य बातें करने लगी। नल भी लोकपालो में श्रेष्ठ इन्द्र को वरण कर स्वर्ग-सुख भोगने की बात राजकुमारी को समझाने लगा जिसे सुनकर जंगली हथिनी के समान दमयन्ती ने सहन न कर शिर को कुछ कम्पित कर, मन को थोड़ा कर निःश्वास छोड़कर दूसरी ओर देखना आरम्भ किया। उसके मुख-कमल पर मलिनता छा गई। तब विचारचतुर प्रियम्वदिका कहने लगी—"देव ! सब कुछ सुन लिया है, देवताओं का आदेश समझ लिया है। किन्तु यह स्वतन्त्र नहीं है। प्राणियों की प्रवृत्ति तथा निवृत्ति ईश्वर की इच्छा से होती है। अङ्गनाजनों का यह अनुराग विचारपूर्वक नहीं चलता है। अनुराग में कोई विशेष गुण कारण नहीं बनता है।"

इस प्रकार अनेक विद्योपाख्याननिपुण प्रियम्वदिका के साथ समयोचित हास्यसुधास्निग्ध, शठताशून्य, कठोरताविहीन, प्रियतायुक्त बातें करते हुये राजा नल दमयन्ती से यह कहते हुये पलंग से उठ खड़े हुए—"कन्यका-गृह में अधिक समय तक ठहरना ठीक नहीं है।" प्रथमोत्थित लज्जावनत सखीवृन्द सहित दमयन्ती के साथ दो तीन डग चलकर—'अब कष्ट न करें, सुख से ठहरें' यह कहकर राजा अपने पड़ाव की ओर चला गया तथा शिविर में शिरीषकुसुमसदृश कोमल शय्या पर लेटकर सोचने लगा—उस मृगनयनी का नव-मिलन के अवसर पर प्रसन्नता से रोमाञ्चित, कौतुक से विकसित, शृङ्गारभावसे सालस, लज्जाभार से नम्र रमणीयमुख क्या फिर दिखलाई पड़ेगा ! वह सुन्दरी न आँखों से ओझल हो रही है न तो रात ही व्यतीत हो रही है और न नींद ही आ रही है। मदन प्रहार करने लगा है। दुःखियों के विनाश की बहुत सी सामग्री सामने आती जा रही है।

इस प्रकार चिन्तातुर, आंसू बहाते हुए पलक बन्द कर भगवान् शिव के चरणों में चित्त लगाकर राजा नल ने वह सम्पूर्ण रात्रि जगते जगते ही व्यतीत कर दी।

नलचम्पू का कथा-स्रोत

इसकी कथा का मूल स्रोत महाभारत के वनपर्वका नलोपाख्यान है। यह आख्यान अतिप्राचीन-काल से हो कवियों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र रहा है। इस पर कवि हर्ष ने नैषधीयचरितम्, लक्ष्मीधर ने नलवर्णन-काव्य, श्रीनिवास दीक्षित ने नैषधानन्द जैसे प्रमुख काव्यों भी रचनाएँ कीं। वैसे इसके आश्रित नल-विक्रम, विधिविलासिता, दमयन्तीपरिणय आदि अन्य भी अनेकानेक ग्रन्थों का निर्माण किया गया। इस प्रकार नलचम्पू की कथा अतिप्राचीन एवं पौराणिक है। इसमें सात उच्छ्वास हैं जिनमें सरस, रमणीय, प्रसादगुण-युक्त श्लेष का बाहुल्य है। इसकी शैली सुबन्धु की श्लिष्ट शैली से भी दुरूह है। यद्यपि गुणविनयगणि, दामोदरभट्ट तथा नागदेव आदि की नलचम्पू पर अनेक संस्कृत टीकाएँ की गईं तथापि त्रयोदश शताब्दी का चण्डपाल कृत 'विषमपदप्रकाश' टीका अधिक प्रसिद्ध है।

नलचम्पू की काव्यगत विशेषताएँ—कविश्रीत्रिविक्रमभट्ट स्वभाव से रसानुगुणी थे किन्तु तत्कालीन प्रभाव से वह मुक्त नहीं थे। प्रसादगुण अभीष्ट होने पर भी वह बाण के शब्द-जाल तथा सुबन्धु के श्लेषमय पदविन्यास से अधिक प्रभावित हुए। अतः इनकी रचना रस-प्रधान तथा भाव-प्रधान घटनाओं से उठकर चमत्कार-प्रधान-सूक्तियों एवं पाण्डित्य-प्रधान पद-बन्धों वाली बन गई। कवि स्वयं कह बैठा—किं कवेस्तेनकाव्येन किं काण्डेन धनुष्मता। परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः॥ अर्थात् धनुर्धारी के बाण के समान कवि का वही काव्य समाज में आदृत हो सकता है जो अपने चमत्कार से दूसरे के हृदय को मुग्ध कर सके तथा लोग उसकी प्रशंसा शिर हिला-हिलाकर कर सकें। पदन्यास पर कवि ने विशेष ध्यान देते हुए अप्रगल्भ कवियों की निन्दा की—अप्रगल्भाः पदन्यासे जननीरागहेतवः। सन्त्येके बहुलालापाः कवयो बालका इव॥ (न० च० १.६) नलचम्पू में पद पद पर अर्थगुरुता एवं मृदुतापूर्ण श्लेषपूर्ण सूक्तियां दिखलाई पड़ती हैं। नलचम्पू जैसा उत्तम श्लेषप्रयोग संस्कृत-साहित्य में अन्यत्र कहीं भी उपलब्ध नहीं होता है, यद्यपि कवि ने अतीव सरल शैली द्वारा सभङ्ग श्लिष्ट रचना की तथापि वह कहीं कहीं अत्यन्त दुरूह बन गई। कवि ने अपने काव्य में शृङ्गाररस के विप्रलम्भ को सुसज्जित करने के लिए उद्दीपन सामग्री का यथास्थान रोचक प्रयोग किया है। छोटे-छोटे श्लोकों में श्लिष्टपदों की चमत्कारपूर्ण योजना में यह पर्याप्त सफल रहे हैं—पर्वतभेदिपवित्रं जैत्रं नरकस्य बहुमतङ्गहनम्। हरिमिव हरिमिव हरिमिव वहति पयः पश्यत पयोष्णी॥ (न० च० ६.२९) पर्वतों को तोड़कर बहने वाला, नरक से बचाने वाला पवित्र पयोष्णी-जल वज्रधारी इन्द्र, नरकासुरविजेता विष्णु तथा बहुमतङ्ग संहारक सिंह जैसा कवि मानता है। चक्रधरं विषमाक्षं कृतमदकल राजहंसं संचारम्। हरिहरविरञ्चि सदृशं भजत पयोष्णीतटं मुनयः॥ (न० च० ६.३२) पयोष्णी के तट को ही भगवान् विष्णु, शिव तथा विरञ्चि के समान मानकर ऋषियों मुनियों को वहाँ यम-नियम साधन करने का वह सुझाव देता है। बहुलक्षणा सुधावन्तो दृश्यन्तेऽन्तः प्रचुराः प्रासादाः बहिश्च वारणेन्द्राः॥ (न० च० १) निषधानगरी के भीतरी भाग बहुल क्षंण (पर्याप्त भूमि वाले) सुधावन्त (चूने से पुते, प्रचुर प्रासादों वाले तथा बाह्य भाग बहुलक्षण) (विविध सुन्दर लक्षणों से युक्त) सुधावन्त (अच्छे दौड़ाक) वारणेन्द्रों वाले दिखलाई पड़ते हैं।

कवि की अद्भुत कल्पना ने तो उसे 'यामुन-त्रिविक्रम' नाम ही दे डाला—उदयगिरिगतायां प्राक्प्रभापाण्डुतायामनुसरति निशीथे भृङ्गमस्ताचलस्य। जयति किमपि तेजः साम्प्रतं व्योममध्ये सलिलमिव विभिन्नं जाह्नवं यामुनं च॥ (न० च० ६.१) त्रिविक्रम को परिसंख्या तथा विरोध का तो कवि सम्राट् ही माना गया है—अव्ययभावो व्याकरणोपसर्गेषु न धनिनां धनेषु, दानविच्छित्ति-

रुन्माद्यत्करिकपोलमण्डलेपु, न त्यागिगृहेषु, भोगभङ्गो भुजङ्गेपु, न विलासिलोकेपु, स्नेहक्षयो विरमत्प्रदीपपात्रेपु, न प्रतिपन्नजनहृदयेपु ॥ (न० च० प्र० उ०)

अनुप्रास तथा यमक की भी अनुपम छटा देखते ही बनती है—यः श्रृङ्गारं जनयति नारीणाम्, नारीणाम्, यः करोत्याश्रितस्य नवं धनं, न बन्धनम्, यो गुणेपु रज्यते न रमणीनाम्, नरमणीनाम्, यस्य च नमस्याहारेष श्रूयते नलोपाख्यानं, न लोपाख्यानम् ॥ (न० च० ३०१२) राजा नल नारियों के श्रृङ्गार को उत्पन्न करता है, शत्रुओं को नहीं, जो आश्रित को नूतन धन से पुरस्कृत करता है उनका बन्धन नहीं बनता। जो उत्तम पुरुषों के गुणों पर ही अनुरक्त होता है, रमणियों पर मुग्ध नहीं होता तथा जिस नल की कहानी पूज्य लोगों के यहाँ सुनी जाती है, किसी अच्छी कहानी के वृत्तान्त का लोप नहीं सुना जाता है। श्रृङ्गार रस के साथ ही वीर, रौद्र, करुण, भयानक तथा हास्य रसों की भी सुन्दर योजना इनके चम्पू काव्य में देखते ही बनती है।

कवि ने अपनी अलौकिक कल्पना-तूलिका से स्वाभाविक चित्रणों पर ऐसा रंग चढ़ाया है कि वह परम्परागत कवियों के वर्ण्य-विषय होकर भी सर्वथा नूतन प्रतीत होते हैं–रक्तेनाक्तं विनिहितमधो-वक्त्रमेतत्कपालं तारामुद्राः किमु कलयता कालकापालिकेन। सन्ध्यावध्वाः किमु विलुठिता कौङ्कुमी शुक्तिरेवं शंकां कुर्वञ्जयति जलधावर्द्धमग्नार्कबिंबम् ॥ (न० च० ५।७६) "क्या कालकापालिक रुधिर भरे कपाल को नीचे उलटकर तारक मुद्राओं को धारण कर रहा है सन्ध्यावधू की कुङ्कुम-भरी शुक्ति क्या उलट गई है। समुद्र में अधडूवा सूर्यबिम्ब इन शङ्काओं को उत्पन्न कर रहा है।" इसी से मिलती जुलती कल्पना नैषधीयचरित में भी देखने को मिलती है—ऊर्ध्वार्पितन्युब्जकटाह-कल्पे यद्व्योम्नि दीपेन दिनाधिपेन। न्यधायि तद्भूममिलद्गुरुत्वं भूमौ तमः कज्जलमस्खलत् किम्। (नै० च० २२।३१) ॥

इस प्रकार त्रिविक्रमभट्ट की श्लेषयुक्त रमणीयतर चित्रण शैली अपनी मौलिक देन है। उनकी कृति में रस, वस्तु अलङ्कार का एक अद्भुत सम्मिश्रण है जो कि संस्कृत-कवि-कदम्ब में उन्हें अति सम्मानजनक श्रेणी में प्रतिष्ठित करने में सिद्ध हुआ है।

नलचम्पू में सामाजिक-विधान

कवि की कृति दर्पण होती है। उसकी रचना में तात्कालिक वातावरण स्पष्टरूप से परिलक्षित होता है। अर्थात् वह अतीत में अपने वर्तमान को प्रतिविम्बित करता है। पुराण-प्रसिद्ध नलोपाख्यान अत्यन्त प्रसिद्ध है जिसे त्रिविक्रम ने एक नया रूप देकर प्रस्तुत किया है। कवि ने नलचम्पू के माध्यम से राष्ट्र-कूट-हिन्दू-संस्कृति तथा तत्कालीन समाज का चित्रण किया है। देश में राजतन्त्र था। वंशानुक्रम से राजा मौहूर्तिकों द्वारा निर्दिष्ट शुभ मुहूर्त्त पर सुशिक्षित योग्य राजकुमार को गंगा, गोदावरी, नर्मदादि पवित्र नदियों के जल से अभिषिक्त कर राज्यभार युवराज को सौंपकर वृद्धावस्था में अन्तिम जीवन वन में व्यतीत करता था। विद्या-वय-शील तथा अन्य समस्त गुणों से निष्णात उच्च वर्ण (प्रायः ब्राह्मण ही) का मन्त्री होता था जिसकी मन्त्रणा से राज्य-कार्य संचालित होता था। मन्त्री राजा की स्वच्छन्दता पर रोष भी प्रकट करता था जिससे राजा सन्मार्ग पर प्रवृत्त होकर कार्य निर्वहण कर सके। समाज में वेदपाठी विद्वान् ब्राह्मणों द्वारा यज्ञादि करने कराने का विधान था। ब्राह्मण सत्यवादी, निश्छल, त्यागी तथा तेजस्वी होते थे वे सिर मुंडाते थे। राज्य-व्यवस्था के लिए सेना रहती थी। चतुरङ्गिणी सेना में सैनिकों का मुख्य अस्त्र धनुर्बाण तथा खड्ग थे। सैन्यप्रयाण-काल में उन्मत्तों जैसा सैनिकों द्वारा आचरण कर तीर्थस्थलों, यज्ञस्थलों, यज्ञस्तम्भों तथा उद्यानों आदि का विनाश न करने की उद्-घोषणा राजा द्वारा की जाती थी। गैरिक रक्त तथा शुभ्रवर्ण के पट-मण्डपों से सैन्य-शिविर बनाये जाते थे। आखेट सैन्य में कुत्तों का भी समुदाय रहता था।

राजकन्यायें स्वयंवर विधि से पतिवरण करती थीं जिसका आयोजन किया जाता था। विशिष्ट-अतिथियों के स्वागत के लिए राजपथ चन्दन तथा अन्य सुगन्धित जल से छिड़के जाते थे। तोरण

वन्दनवारों, ध्वजपताकाओं से घर नगर सजाने की प्रथा थी। द्वारों तथा घर के प्राङ्गणों में शुभावसरों पर मंगलजलकलश स्थापित किये जाते थे तथा नगरांगनायें वस्त्राभरणों से अलंकृत हो दधि, दूर्वादल, अक्षत, पुष्प, फलादि मङ्गलद्रव्यों से थाल सजाकर मंगलगीत गाती थीं। लोग अपनी योग्यतानुसार वेषभूषा रखते थे। अश्वारोही चुस्त वस्त्र पहनते तथा कटिभाग पर विशेष प्रकार की पेटी बांधते थे। शिर पर वस्त्र बांधने की प्रथा थी। पगड़ी बांधी-जाती थी। कुण्डलहार, कंकण, अंगुलीयक मुख्य आभूषण थे। उत्तरीय वस्त्र भी लोग डालते थे। सामान्य वस्त्रों के अतिरिक्त चीनांशुक पट्टांशुक रेशमी वस्त्र भी पहने जाते थे। काजल लगाने, बड़े-बड़े मोतियों के हार पहनने, कस्तूरी से पत्र-रचना करने, त्रिपुण्ड लगाने व भस्म धारण करने की भी प्रथा थी। ग्राम्य स्त्रियाँ कर्णिकार मालाओं से अपनी वेणियां सजातीं, जौ चावल के चूर्ण में तज वगुच आदि मिला उवटन करतीं, अंगराग के लिए हल्दी का लेप करतीं तथा लाख के कङ्कण पहनती थीं। लोगों को चित्रकला का ज्ञान था। भित्तियों पर चित्र बनाये जाते थे। काठ की पट्टियों पर चित्र बनाकर घर सजाये जाते थे। वीणा, मृदङ्ग, नगाड़ा तथा झाल और वंशी उस युग के मुख्य वाद्य थे। षड्ज-मध्यम गांधार तथा पञ्चमस्वर आदि का लोगों को अच्छा ज्ञान था।

लोग त्रिकाल संध्या करते थे। सूर्य भगवान् के अतिरिक्त शङ्कर स्वामिकार्तिकेय नारायण की उपासना की परम्परा थी। कुमारिकायें गौरीपूजन करतीं थीं। लोग दान देते थे। बलिवैश्वदेव को करने, गोग्रास देने, ब्राह्मणों को भोजन कराने की भी प्रथा थी पेय आस्वाद्य आलेह्य तथा आलेख्य चार प्रकार के भोज्य पदार्थ सेवन किये जाते थे। घी डालकर पकाये तण्डुलों के अतिरिक्त दाल मधु-दुग्ध दधि फल शाक आदि के षड्रस, पदार्थों का उपयोग किया जाता था। लोगों की मांस खाने में रुचि नहीं थी। पाकविज्ञान अत्युन्नत दशा में था।

नलचम्पू में भौगोलिक विधान

इसमें तत्कालीन विभिन्न प्रसिद्ध जनपदों, नगरों, पर्वतों तथा नदियों का वर्णन मिलता है। दक्षिण देश से सुपरिचित होने के कारण उसने इस भाग का सविस्तार वर्णन किया है आर्यावर्त, महाराष्ट्र जनपद, कुण्डिनपुर, निषधा नगरी, वरदा, गोदावरी पयोष्णी नदियां, श्री शैलविन्ध्याचलादि पर्वत कवि के प्रमुख वर्ण्य रहे हैं।

आर्यावर्त्त—आर्यों की प्रतिष्ठा के अनुकूल उपदेशों का भव्य भवन आर्यावर्त है। मनुस्मृति में इसकी स्थिति वतलाई है—आसमुद्रात्तु वै पूर्वात् आसमुद्राच्च पश्चिमात्। तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्तं विदुर्बुधाः॥ अर्थात् समुद्र के पूर्वी तट से लेकर पश्चिमी तट तक हिमालय पर्वत से दक्षिण तथा विन्ध्याचल से उत्तर का समस्त भूभाग आर्यावर्त कहलाता है। वशिष्ठधर्मसूत्र १-८-९ के अनुसार यह आदर्श (विनशन सरस्वती नदी के लोप का स्थान) के पूर्व कालक वन (प्रयाग) के पश्चिम तथा विन्ध्याचल के उत्तर और हिमालय के दक्षिण का भूभाग है। गुप्तकाल में यह कुमारी द्वीप के नाम से प्रसिद्ध था। पुराणों में आर्यावर्त को भारतवर्ष का ही पर्याय माना गया है। कुछ भी हो, आर्यावर्त सदा सर्वदा से आर्यों की संस्कृति तथा सभ्यता का केन्द्र रहा है।

महाराष्ट्र—इसकी स्थिति वरदा तट पर बतलाई गई है जिसके समीप विदर्भा नदी बहती है।

कुण्डिननगर—यह विदर्भ की राजधानी थी। त्रिविक्रम ने इसका वर्णन करते हुए लिखा है—देशानां दक्षिणो देशस्तत्र वैदर्भमण्डलम्। तत्रापि वरदातीरमण्डलं कुण्डिनं पुरम्॥ न० च० २-२८ अर्थात् देशों में महान् दक्षिणदेश, उसमें भी रमणीय विदर्भ (वरार) है जिसमें वरदातीर को अलंकृत करने वाला कुण्डिन नगर है। नागपुर के पं० राजेश्वर मनोहर काटे के मतानुसार विदर्भ के बुल्ढाना जिले का लोणार नामक गांव ही प्राचीन कुण्डिनपुर है। अधिकांश लोगों के विचार से वरार में सुखती जिले का कौडिन्यपुर कुण्डिन नगर रहा होगा। यह वर्धा नदी के तट पर है। विदर्भ में विदर्भा नदी के किनारे का एक क्षेत्र ऐसा है जिसमें वरदा नामक एक स्रोत है जिसे भोगवती गंगा कहते हैं। लोणार इसी वरदा स्रोत के तट पर स्थित है। गंगा की तीन

धाराओं में भोगवती की धारा पृथ्वी के नीचे बहती है। किंवदन्ती है कि महाराज नन्द को वरदान देने के कारण इसका नाम वरदा पड़ा था। यह धारा प्रयाग से लोणार तक भीतर ही भीतर प्रवाहित है। लोणार के अति प्राचीन कुण्ड की उत्पत्ति ज्वालामुखी के आघात से हुई थी। कुण्डिन नाम भी कुण्ड से सम्बन्धित है। त्रिविक्रम ने भी वरदा के साथ नदी का प्रयोग कहीं नहीं किया हैं—वरदा, वरदातट, वरदातीर ही कहा है जबकि विदर्भा के वर्णन में उन्होंने—'वहति विदर्भा नदी यत्र', 'तेषां विदर्भा नदी' ही कहा है।

नलचम्पू के अनुसार कुण्डिन नगर के पश्चिम में भार्गव का आश्रम था—'यस्य च पश्चिम देशे..........भगवतो भार्गवस्याश्रमः।'' न० च०-२ ॥ यह आश्रम लोणार के निकट अब भी भग्नावशेष रूप में खड़ा है जिसकी छत में बलराम रुक्मी का युद्ध-दृश्य खुदा है। इस प्रकार कुण्डिन नगर की प्रामाणिकता अद्यावधि विवादास्पद ही बनी हुई है।

निषधा नगरी—त्रिविक्रम ने आर्यावर्त में ही पुरुषोत्तम के निवास योग्य निषध जनपद में निषधापुरी की अवस्थिति मानी है—तस्य विषयमध्ये निषधो नामास्ति जनपदः प्रथितः। तत्र पुरी पुरुषोत्तम-निवासयोग्याऽस्ति निषधेति ॥ न० च० प्र० उ० २९ ॥ लैसेन ने निषध को वरार के उत्तर-पश्चिम सतपुड़ा की पहाड़ियों में स्थित माना है। वरणेस ने भी इसे मालवा के दक्षिण में माना है।

वरदा—अधिकांश विद्वानों के मतानुसार आधुनिक वर्धा नदी को ही वरदा मानते हैं परन्तु कदाचित् त्रिविक्रम की वरदा नदी न होकर वरदा स्रोत ही रही होगी। उसे ही श्रीगंगा भोगवती माना जाता है जिसका विवेचन कुण्डिन नगर के साथ किया जा चुका है।

गोदावरी—इसका उद्गम ब्रह्मगिरि से है जो कि नासिक से २० मील की दूरी पर 'त्र्यम्बक' नामक गांव के पास है।

पयोष्णी—यह दक्षिण भारत में कुण्डिनपुर के पास बहती थी। इसका वर्तमान नाम पूर्णा है।

श्रीशैल—दक्षिण में कैलास पर्वत की रमणीयता को भी तिरस्कृत करने वाला यह पर्वत है संभवत विंध्याचल के दक्षिण ही कोई पर्वत श्रेणी इस नाम से प्रसिद्ध रही होगी।

प्रमुख-पात्र—चरित्र-चित्रण

नल—त्रिविक्रमभट्ट के इस चम्पूकाव्य का नायक निषध देश का राजा धीरललित नल है जिसकी तुलना में लोकपालों का दिव्य वैभव भी दमयन्ती को तुच्छ दिखलाई पड़ता है। उसकी विमल कीर्ति दूर देशान्तरों में भी फैली है। एकदिन महाराज नल एक पथिक द्वारा दक्षिण के कुण्डिननगर के राजा भीम की पुत्री दमयन्ती की आंशिक ख्याति सुनकर उस पर अनुरक्त हो जाते हैं। परन्तु उनकी यह अनुरक्ति विषयासक्ति की उद्दामता की द्योतक नहीं बनती है क्योंकि जिस दमयन्ती की अलौकिक सुन्दरता तथा कीर्ति को सुनकर इन्द्रादि देवता मुग्ध हो सकते हों उसकी ओर मनुष्य का आकृष्ट होना स्वाभाविक ही है। दमयन्ती की अलौकिक सुन्दरता पर मुग्ध इन्द्रादिलोकपाल भी उसे पाने के लिए लालायित हो उठते हैं। इधर दमयन्ती के स्वयंवर के सन्देश को सुनकर राजा नल उसमें भाग लेने जब चलता है उसी समय मार्ग में इन्द्रादि दिग्पाल भी मिल जाते हैं और नल से दमयन्ती के पास दूत बन कर जाने के लिए कहते हैं। देवोत्तमों का दौत्यकर्म पुरुषोत्तम नल स्वीकार कर लेता है परन्तु उसकी मनःस्थिति बड़ी दयनीय बन जाती है किन्तु नल अपने धैर्य से विचलित नहीं होता है। एक ओर मदन अपने बाणों से नल को आहत करता है तो दूसरी ओर लोकपालों की अनुल्लंघनीया आज्ञा उसे बेचैन कर देती है। स्वार्थ और परार्थ के इस अन्तर्द्वन्द्व में परार्थ की विजय होती है नल उनकी आज्ञा शिरोधार्य कर देवताओं के अदृश्यत्व वरदान से दमयन्ती के अन्तःपुर में प्रवेश करता है तो एक बार पुनः उसका मनुष्यत्व जागृत हो उठता है। निखिल-सुख-सदन दमयन्ती को देखकर वह अपने को कृतार्थ मानने लगता है। वह मदन पीड़ा से व्यग्र हो उठता है किन्तु इतने पर भी नल अपनी उद्दाम स्वार्थ-प्रवृत्ति पर विजय पाता है। वह अपने ऊपर पूर्णरूप से दमयन्ती को भी अनुरक्त देखकर अपने कर्त्तव्य का पालन

करता हुआ पुरन्दर के आदेश को दमयन्ती के समक्ष कह देता है—'लोलाक्षि ! लोकपाल मेरे मुंह से तुम्हें चुनते हैं।"

नल दमयन्ती को मर्त्यलोक के स्वल्प सुखों का पात्र नहीं मानता है—"अभूमिरसि मर्त्यलोक-स्तोकसुखानाम्"। उसका देवत्व मनुष्यत्व को पराजित कर देता है तथा वह स्वर्ग के देवताओं के लिए दुर्लभ होकर भी सुलभ दमयन्ती की कामना त्याग कर देव कार्य करना ही अपना परम कर्तव्य समझता है। यह नल की वास्तव में धैर्य-पराकाष्ठा है। इस प्रकार इस चम्पूकाव्य का नायक नल वास्तव में धीर-ललित, उत्कृष्ट गुणों से सम्पन्न महान् पुरुष है।

दमयन्ती—विश्वविश्रुत सुन्दरी दमयन्ती जिसकी लावण्य-सुधा का पान करने के लिए इन्द्रादि लोकपाल भी लालायित हो जाते हैं, नलचम्पू की मुग्धा नायिका है। बाल्यकाल में ही वह अनेक विद्याओं तथा कलाओं में निपुणता प्राप्त कर लेती है। सर्वप्रथम किसी पथिक द्वारा राजा नल की अनुपम कीर्ति सुनकर अनुरक्त हो जाती है परन्तु वह अपनी शालीनता को शिथिल नहीं होने देती है। वह नल के शब्दों में अखिल विश्व की सुन्दरता की अधिदेवता है तथा एकमात्र नल पर अनुरक्त है। परन्तु अपने कुलाचार के निर्वाह में वह बड़े धैर्य तथा संयम से काम लेती है। कहीं तो दमयन्ती सर्वदेवमयी दिखलाई पड़ती है तो कहीं वह नक्षत्रमयी बन जाती है। किन्नर युवक नल के समक्ष उसका वर्णन करने में उसकी तुलना वेद-विद्या से करने लगता है—वेद विद्योपमा-देवी मनोहरपदक्रमा। उद्योतिता पुराणाङ्ग-मन्त्रब्राह्मण-शिक्षया॥ न० च० ५।५३॥ वर्णन करते समय हंस भी दमयन्ती की पवित्रता को ही प्रधानता देता है। नलके द्वारा सप्रपञ्च पुरन्दर का आदेश कहे जाने पर भी दमयन्ती व्यग्रता से शालीनता की निरन्तर रक्षा करती रहती है—"वधा खलु गुरवो देवाश्च बिभेमि तेभ्योऽहम्"॥ वह अत्यन्त क्लेश से दूसरी ओर देखने लगती है। इस प्रकार दमयन्ती की विद्या-कला में प्रवीणता, एकमात्र नलानुरक्तता के साथ ही उसके पुण्य कर्मों की निपुणता तथा कुलाचार निर्वाह पवित्रता के प्रतीक हैं।

वीरसेन—अपनी विमल कीर्ति से सम्पूर्ण सुरासुर वर्ग के कानों को भर देने वाले, कामदेव के समान कमनीय शरीर वाले अत्यन्त प्रभावशाली, निषध राज्य के पालक, महान् पराक्रमी राजा वीरसेन प्रकृत काव्य के नायक राजा नल के पिता थे। इनकी मनोवृत्ति अतीव उदार तथा आज्ञा अखण्डनीय थी। वह रमणियों के जितने रमणीक थे शत्रुओं के लिए उतने ही भयानक भी थे। पर-दाराओं में अनासक्त वीरसेन वार्तालाप से विनम्र तथा शरणागत की रक्षा करने वाले थे। निरुपम रूपराशि से युक्त रूपवती इनकी प्रधान पत्नी थी। भगवान् शिव की आराधना से प्राप्त सूर्य-मण्डल की प्रभा के समान तेजस्वी पुत्र नल को युवराज योग्य समझ कर अपने मंत्रियों से परामर्श कर वीरसेन ने राज्यभार सौंप दिया तथा रानी सहित कुलधर्मानुसार वन में तपस्या करने चले गये। इस प्रकार राजा वीरसेन का विद्वान्, बुद्धिमान दूरदर्शी होना तो सिद्ध होता ही है वह बड़ी धार्मिक प्रवृत्ति वाले भी थे। प्रजा उनमें अतीव अनुरक्त थी। यद्यपि अपने इकलौते पुत्र नल से अत्यन्त प्रेम था तथापि कालक्रम से राज्यभार का मोह त्यागकर, पुत्र, मन्त्रिपरिषद् एवं प्रजा-वर्ग के करुण क्रन्दन की परवाह किये बिना ही वीरसेन का वन को चले जाना उनके दृढप्रतिज्ञ होने तथा धर्मवीर होने का प्रतीक है।

भीम—यह विदर्भ देश के सम्राट् प्रकृत काव्य की नायिका दमयन्ती के पिता हैं। चिरकाल तक सन्तान न होने पर अपनी रानी प्रियङ्गुमञ्जरी सहित भगवान् शिव की आराधना से एक-मात्र दमयन्ती को कन्या के रूप में पाते हैं। यह स्वयं लावण्य की पुण्य-प्रतिमा, पुरन्दर के समान अति प्रख्यात, तेजस्वी, धीरता के आधार तथा वीरों में अग्रणी हैं। यह नारियों के श्रृङ्गार हैं शत्रुओं के नहीं, आश्रितों को नवधन से युक्त कर देते हैं बन्धन युक्त नहीं तथा यह उत्तम पुरुषों के गुणों पर अनुरक्त होते हैं रमणियों पर नहीं—"यः श्रृंगारं जनयति नारीणां नारीणाम्।, यः करोत्या-

श्रितस्य नवं धनं न बन्धनम्।, यो गुणेषु रज्यते नरमणीनाम् न रमणीनाम्॥" यह अतिथि-वत्सल, उदाराशय तथा आसेतु विन्ध्याचल समस्त दक्षिण देश के शासक हैं।

श्रुतिशील—राजा वीरसेन के प्रधानामात्य सालङ्कायन के पुत्र नल के मित्र तथा मन्त्री हैं। स्वभाव, अवस्था, विद्या तथा अन्य समस्त गुणों में यह नल के समान ही हैं। यह नल के सब प्रकार से सहायक हैं। प्रजा की रक्षा तथा सुख-सुविधा का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व इन्हीं पर है। कुण्डिननगर की यात्रा में भी श्रुतिशील नल के साथ ही रहते हैं। इन्द्रादि लोकपालों के दौत्य कर्म को स्वीकार करने के अनन्तर जब नल अत्यन्त व्याकुल हो जाते हैं तब यही उन्हें अनेक उक्तियों द्वारा धैर्य बँधाते हैं—किं देवेन न श्रुतम् अमृतमन्थनावसरे सुरासुरकरपरिवर्त्यमान मन्दर-मन्थाननिर्घोष···॥ न० च०॥ ५॥ "देवताओं की तो यह प्रकृति ही है देखो अमृत पान के लिए ललचा कर देवता भगवान् विष्णु से ही लड़ बैठे। फिर लक्ष्मी के लिए देवता आपस में लड़ते झगड़ते रहे और उसने वैकुण्ठवासी भगवान् विष्णु के कण्ठ में जयमाला डाल दी। तुम अधीर मत बनो। निःसन्देह दमयन्ती देवताओं को वञ्चित कर तुम्हारा ही वरण करेगी।" इत्यादि। वह नल को अनुचित मार्ग पर चलने से रोकने का भी प्रयास करता है—विकलयति कलाकुशलं हसति शुचिं पंडितं विडम्बयति। अधरयति धीरपुरुषं क्षणेन मकरध्वजो देवः॥ न० च० ५-६६॥ वास्तव में श्रुतिशील, प्रज्ञावान् मन्त्री, सुहृदय मित्र तथा हितचिन्तक के रूप में उत्तम चरित्रवान् पात्र है।

प्रियङ्गुमञ्जरी—विदर्भदेश के राजा भीम की शृङ्गार का आगार, रमणीयता की पताका, खिली हुई यौवनश्री अन्तःपुर की कुलाङ्गनाओं में प्रमुख रानी तथा दमयन्ती को जन्म देनेवाली है। स्वप्न में भगवान् शिव का दर्शन पाने के पश्चात् चिरकाल से अपत्य कामना किये हुये उसे पुत्र होने का विश्वास था परन्तु दमनक मुनि शिव के वरदानानुसार उसे जब कन्या होने की बात बतलाते हैं तो रानी प्रियङ्गुमंजरी अत्यन्त अधीर हो उठती है क्योंकि उसे अपने वीर पुत्र होने का ही विश्वास है। वह क्रुद्ध होकर निन्दा तथा स्तुति-युक्त वचनों में कहने लगती है—"अलमनेन तापसहितेन कन्यावरप्रदानेन"॥ न० च० ३॥ अर्थात् ताप सहित इस कन्या उत्पन्न होने के वरदान को रहने दीजिये। परन्तु उसके रोषयुक्त कथन को श्लिष्ट भाषा में कहने से प्रियङ्गुमञ्जरी का अति बुद्धिमती व्यवहारकुशलिनी तथा मृदुभाषिणी होना सिद्ध होता है। वह तत्क्षण—"महर्षे मर्षणीयोऽयमेकस्त्यक्तकुलवधू-धर्मो नर्मापराधः"॥ न० च० ३॥ हे महर्षे। कुलवधुओं के विरुद्ध यह नम्रतापूर्ण किया गया मेरा एक अपराध क्षमा करने की कृपा करें।" कहकर क्षमा भी माँग लेती है। अर्थात् कुलवधु-धर्म की अच्छी जानकार भी है। रानी की यह नम्रता उसके उत्तम चरित्र में और भी निखार देती है।

प्रियम्वदिका—यह दमयन्ती की अत्यन्त शिष्ट, मृदुभाषिणी तथा सुख दुःख में सदा सहयोग देने वाली प्रिय सखी है। यद्यपि काव्य में यह अत्यल्प काल के लिए सामने आती है पर उतने में ही उसकी प्रत्युत्पन्नमति होने की छाप सहृदयों के मानस पटल पर पड़े बिना नहीं रहती है। नल के द्वारा दमयन्ती से सप्रपंच पुरन्दर का आदेश कहे जाने पर जब राजपुत्री अत्यन्त खिन्न तथा स्तब्ध हो जाती है तो प्रियंवदा बड़ी चतुरता से नल को समझाती है कि राजकुमारी स्वतन्त्र नहीं है। प्राणियों की प्रवृत्ति तथा निवृत्ति ईश्वरेच्छा से होती है तथा रमणीजनों का अनुराग विचारपूर्वक नहीं चलता है—"देव! श्रुतं श्रोतव्यम्, अवधारितो देवादेशः। किंतु न स्वतन्त्रेयम्। ईश्वरेच्छाय प्रवृत्तिनिवृत्त्यो यतः प्राणिनाम्, अनालोचनगोचरश्चायमनुरागोऽङ्गना-जनस्य" उसका कहना है कि प्रेम में किसी विशेष गुण का बन्धन आवश्यक नहीं होता है किसी का किसी से भी अनुराग हो सकता है—

भवति हृदयहारी क्वापि कस्यापि कश्चिन्न खलु गुणविशेषः प्रेमबन्धप्रयोगे।
किसलयति वनान्ते कोकिलालापरम्ये विकसति न वसन्ते मालती कोऽत्र हेतुः॥

न० च० ७-४७॥

इस प्रकार प्रियम्वदिका अपने वाक्चातुर्य से श्रुतिशील के अनन्तर सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

हंस—इस काव्य में हंस की भी दूत के रूप में प्रमुख भूमिका रही है। वैसे प्राचीनकाल से ही मनुष्येतर प्राणियों का दूत बनाया जाना मिलता है। ऋग्वेद की सरमा नामकी देवशुनी, वाल्मीकि रामायण में हनुमान् वानर तथा कालिदास के मेघदूत में मेघ दूत के रूप में हमारे सामने आते हैं परन्तु नलचम्पू अथवा दमयन्ती कथा में हंस का चरित्र, स्वरूप की अपेक्षा दूत रूप में अधिक उत्तम निखरता है। दमयन्ती उसे निष्कारण वत्सल निरपेक्ष पक्षपाती कहकर उसके महत्त्व को स्वीकार करती है। उसके लिए स्वाभाविक स्नेहयुक्त हंस के प्रेम तथा सौहार्द्र की समता किसी अन्य से नहीं की जा सकती है। वह समर्पित कार्य को बड़े मनोयोग और निष्ठा के साथ करता है। जब दमयन्ती अपने गले की मुक्तावली हंस के गले में नल को समर्पित करने के लिए पहना देती है तो वह भी सहर्ष कहता है—"सुन्दरि ! सोऽयं स्कन्धीकृतो मया मुक्तावलीच्छलेन तस्य पुरो भवद्वर्णनभारः" ॥ न० च० ५ ॥ हे सुन्दरि ! मैंने यह मुक्तावली के बहाने नृप नल के समक्ष आपके वर्णन करने का भार अपने कन्धे पर रख लिया है। इतना ही नहीं, हंस राजा नल के लिए भी अकारण वत्सल तथा अनिमित्त मित्र बन जाता है। दिव्यवाणी के अनुसार वह हंस से दमयन्तीविषयक अनेक पूछ ताछ करने लगता है—"केयं दमयन्ती, कस्य सुता, कीदृग्रूपम्, कुत्र सा वसति" । न० च० २ ॥ और हंस दमयन्ती का इस प्रकार नल के समक्ष वर्णन करता है कि नल की दमयन्ती के प्रति और भी उत्कण्ठा बढ़ जाती है। इस प्रकार नल और दमयन्ती दोनों को स्नेहसूत्र में बाँधने के लिए हंस विशेष माध्यम बन जाता है। वस्तुतः हंस जितना दमयन्ती के लिए प्रिय और पवित्र है उससे अधिक राजा नल के लिए भी ॥

दमनक मुनि—अन्य नलोपाख्यानों से विशेषता रखने वाले दमनक मुनि की कल्पना त्रिविक्रमभट्ट की बुद्धि की देन है। रानी प्रियङ्गुमञ्जरी और राजा भीम के हृदयों में बन्दर के बच्चे को देखकर सन्तान कामना प्रबल हो उठती है। एतदर्थ पति की अज्ञानुसार रानी प्रियङ्गु-मञ्जरी भगवान् शिव की आराधना करती है। स्वप्न में रानी तथा राजा दोनों को भगवान् शिव के दर्शन होते हैं जिसके अनन्तर ही रानी के गर्भधारण करने से दोनों को पुत्र होने का विश्वास हो जाता है। इसी अवसर पर दमनक मुनि राजभवन में आते हैं और शिवजी के वरदान से उन्हें कन्यारत्न प्राप्त होने का आशीर्वाद सुनाते हैं। वह अत्यन्त स्पष्टवादी तथा निर्भीक हैं। कन्या होने के आशीर्वाद से जब रानी उनसे रुष्ट हो जाती हैं तब भी मुनि अपने सहज शान्त स्वभाव से उसी प्रकार उत्तर दे देते हैं—दोपाकरमुखि किं मामुपालभसे। प्रायः प्राणिनामीशः शम्भुरेव शुभाशुभं कर्मालोक्य तुलाधर इव तुलितं फलमुपकल्पयति ॥ यद्यावद्यादृशं येन कृतं कर्म शुभा-शुभम्। तत्तावत्तादृशं तस्य फलमीशः प्रयच्छति" ॥ न० च० ३-१७ ॥ इस प्रकार दमनक मुनि की त्रिविक्रम कवि की कल्पना घटनाक्रम में दिव्यता के स्थान पर स्वाभाविकता ला देती है।
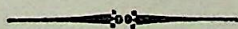
नलचम्पू में प्रयुक्त वृत्त

प्रथम उच्छ्वासः

१—मालिनीवृत्त—न न म य य युतेयं मालिनी भोगिलोकैः। छन्द में नगण, नगण, मगण तथा दो यगण क्रमशः आने पर मालिनी वृत्त होता है।

श्लोक सं०—१,२,३२,५०,५१,६४। कुल ६ श्लोक।

२—अनुष्टुप्—श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम्।
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः॥

अनुष्टुप् श्लोक में चारो चरणों में पञ्चमवर्ण लघु, तथा षष्ठ वर्ण गुरु होता है। प्रथम . तृतीय चरण में सप्तम वर्ण गुरु तथा द्वितीय एवम् चतुर्थ में लघु होता है।

श्लोक सं०—३,४,५,६,७,८,९,१०,११,१२,१३,१४,१६,१७,१८,२०,२१,२२,२३,२४,२५,२६, २७,२८,३१,३३,३६,४२,५९। कुल २९ श्लोक।

३—शार्दूलविक्रीडित—सूर्याश्वैर्मसजस्ततः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्॥

श्लोक में मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण और गुरु क्रमशः आने पर शार्दूलविक्रोडित वृत्त होता है।

श्लोक सं०—१५,३४,३५,४०,४१,४४,४५,४६,४७,४८,५२,५३,५४,५५,५६,५८,६०,६१,६२, ६३। कुल २० श्लोक।

४—मन्दाक्रान्ता—मन्दाक्रान्ताम्बुधि रसनगैर्मोभनौ गौ ययुग्मन्॥

श्लोक में क्रमशः मगण, भगण, नगण गुरु, गुरु तथा दो यगण आने पर मन्दाक्रान्ता वृत्त कहलाता है।

श्लोक सं०—१९। केवल एक श्लोक।

५—आर्या—यस्याः पादे प्रथमे द्वादशमात्रा तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या॥

जिस श्लोक के प्रथम तथा तृतीय चरण में द्वादश मात्रायें, द्वितीय चरण में अष्टादश मात्रायें तथा चतुर्थ चरण में पञ्चदश मात्रायें हों वह आर्यावृत्त कहलाता है।

श्लोक सं०—२९, ३०। कुल दो श्लोक

६—उपजाति—उपेन्द्रवज्रा अथ इन्द्रवज्रा एतद् द्वयं यत्र हि सोपजातिः॥

श्लोक सं०—३७, ३८। कुल दो श्लोक।

७—शालिनी—मात्तौगौ चेच्छालिनी वेद लोकैः॥

श्लोक सं०—३९। केवल एक श्लोक।

८—द्रुतविलम्बित—द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ॥

श्लोक में क्रमशः नगण भगण, भगण, और रगण होने पर द्रुत-विलम्बित वृत्त होता है।

श्लोक सं०—४३। केवल एक श्लोक।

९—शिखरिणी—रसैः रुद्रैश्छिन्नाः यमनसभलागाः शिखरिणी॥

जिस श्लोक में क्रमशः यगण, मगण, नगण, सगण, भगण, लघु तथा गुरु हों वह शिखरिणी वृत्त कहलाता है।

श्लोक सं०—४९। केवल एक श्लोक।

१०—स्रग्धरा—म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुतं स्रग्धरा कीर्तितेयम्॥

श्लोक में क्रमशः मगण, रगण, नगण तथा तीन यगण होने पर स्रग्धरा वृत्त कहलाता है।

श्लोक सं०—५७। केवल एक श्लोक।

द्वितीय उच्छ्वासः

१—**अनुष्टुप्**—१,२,३,७,८,१०,१४,१८,१९,२१,२२,२३,२४,२५,२६,२८,३१,३२,३३,कुल १९ श्लोक।

२—**मालिनी**—४,६,९,११,१३,३९। कुल ६ श्लोक।

३—**उपजाति**—५। केवल एक श्लोक।

४—**आर्या**—१२,१५,१६,१७। कुल ४ श्लोक।

५—**उपेन्द्रवज्रा**—उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ॥

श्लोक में जगण, तगण, जगण तथा दो गुरु क्रमशः आने पर उपेन्द्रवज्रा वृत्त कहलाता है।

श्लोक सं०—२०। केवल एक श्लोक।

६—**इन्द्रवज्रा**—स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः॥

तगण, तगण, जगण और दो गुरु क्रमशः श्लोक में होने पर इन्द्रवज्रा वृत्त कहलाता है।

श्लोक सं०—२७। केवल एक श्लोक।

७—**शार्दूलविक्रीडित**—२९,३०,३४,३५,३६,३७,३८। कुल ७ श्लोक।

तृतीय उच्छ्वासः

१—**अनुष्टुप्**—१,२,४,५,९,१०,११,१२,१३,१४,१५, १६,१७,२०, २३,२४, २५,२६, २७,२८ कुल २० श्लोक।

२—**वसन्ततिलका**—३। केवल एक श्लोक।

३—**शार्दूलविक्रीडित**—६,७,३०,३१,३२,३३,३४। कुल ७ श्लोक।

४—**मालिनी**—८,१८,२१,३५। कुल ४ श्लोक।

५—**आर्या**—१९। केवल एक श्लोक।

६—**स्रग्धरा**—२२। केवल एक श्लोक।

७—**पुष्पिताग्रावृत्तम्**—अयुजि नयुग रेफतो यकारो युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा॥ २९, केवल एक श्लोक।

चतुर्थ उच्छ्वासः

१—**अनुष्टुप्**—१,२,३,६,८,१०,११,१२,१३,१४,१७,१९,२०,२९,३०। कुल १५ श्लोक।

२—**स्रग्धरा**—४,१६। कुल दो श्लोक।

३—**आर्या**—५। केवल एक श्लोक।

४—**शार्दूलविक्रीडित**—७,९,२१,२७,३१। कुल ५ श्लोक।

५—**इन्द्रवज्रा**—१५। केवल एक श्लोक।

६—**वंशस्थ**—१८,२८। केवल दो श्लोक।

७—**मालिनी**—२२,२३। कुल दो श्लोक

८—**शिखरिणी**—२४,२५,२६। कुल ३ श्लोक।

पञ्चम उच्छ्वासः

१—**मालिनी**—१,८,९,१५,३३,५०,५१,५२,६१,७०,७२,७३,७७। कुल १३ श्लोक।

२—**शार्दूलविक्रीडित**—२,५,१६,१७,१८,२०,२१,२५,३१, ३२,३४,३६,३७,३८, ४९,५७,५८, ५९,७१,७४,७५। कुल २१ श्लोक।

३—अनुष्टुप्—३,४,१३,१९,२२,२३,२४,२६,२७,२९,३०,४५,४६,४७,५३,६०। कुल १६ श्लोक।

४—आर्या—६,७,४३,४४,५५,५६,६६,६७, । कुल ८ श्लोक।

५—वसन्ततिलका—१०,११,१२,५४,६४,६५,६८। कुल ७ श्लोक।

६—स्वागता वृत्तम्—स्वागता रभनगैर्गुरुणा च ॥ १४,६२। कुल दो श्लोक।

७—स्रग्धरा—३५,७६। कुल दो श्लोक।

८—मन्दाक्रान्ता—३९। केवल एक श्लोक।

९—शिखरिणी—४८। केवल एक श्लोक।

१०—पुष्पिताग्रा—२८,४०,४१,४२,५९,६८। कुल ६ श्लोक।

१०—द्रुतविलम्बित—६३। केवल एक श्लोक।

षष्ठ उच्छ्वासः

१—मालिनी—१,१२,४४,४५,४७,५४,५५,५६,५८,७३,७५,७६,७७,८०। कुल १४ श्लोक।

२—शार्दूलविक्रीडित—२,१६,२२,२३,६१,६२,६९,७०,७१,७२। कुल १० श्लोक

३—अनुष्टुप्—३,१४,२१,४६,४८,४९,५०,५१,५२,५३,५७। कुल ११ श्लोक।

४—पृथ्वीवृत्तम्—जसौ जसयला वसुग्रहयतिश्च पृथ्वो गुरुः॥ ४,५,६,७,८,९,१०,११। कुल ८ श्लोक।

५—आर्या—२९,३१,३२,३३,३४,३५,३७,३८,३९,४०,४१,४२,४३,६३,६५,६६ । कुल १६ श्लोक।

६—वसन्ततिलका—१३,१८,६४। कुल ३ श्लोक।

७—इन्द्रवज्रा—१५,२६। केवल दो श्लोक।

८—स्रग्धरा—१७,२७,७८,७९। कुल ४ श्लोक।

९—उपेन्द्रवज्रा—१९,३०। कुल दो श्लोक।

१०—शिखरिणी—२४। केवल एक श्लोक।

११—उपजाति—२८। केवल एक श्लोक।

१२—पुष्पिताग्रा—२०। केवल एक श्लोक।

१३—मन्दाक्रान्ता—२५,६०,६७। केवल ३ श्लोक।

१४—पृथ्वीवृत्त—३६। केवल एक श्लोक।

१५—द्रुतविलम्बित—७४। केवल एक श्लोक।

सप्तम उच्छ्वासः

१—शार्दूलविक्रीडित—१,२,३,४,६,८,९,१०,११, १२,१३,१५, १६,१८,२४,३१,३६,३७,३८,३९,४१,४३,४५,४८,५०। कुल २५ श्लोक।

२—आर्या—५,७,१९,२०,२१,२३,३५,४९। कुल ८ श्लोक।

३—अनुष्टुप्—१४,२९,३०,३४,४४,४६। कुल ६ श्लोक।

४—शिखरिणी—१७,२५,३२। कुल ३ श्लोक।

५—वसन्ततिलका—२२,४०। केवल २ श्लोक।

६—स्रग्धरा—२६। केवल एक श्लोक।

७—मालिनी—२७,४२,४७। कुल ३ श्लोक।

८—मन्दाक्रान्ता—२८। केवल एक श्लोक।

९—पृथ्वीवृत्त—३३। केल एक श्लोक।

सूक्तियाँ

प्रथम उच्छ्वासः

अगाधान्तः परिस्पन्दं विबुधानन्दमन्दिराम् ॥ ३ ॥
करोति कस्य नाह्लादं कथा कान्तेव भारती ॥ १३ ॥
काचोऽप्युच्चैर्मणीयते ॥ ८ ॥
कान्तेत्युन्नतचेतसोऽपि कुरुते नाम्नैव निम्नं मनः ॥ ६१ ॥
ते धन्या न्यपतन्येषां कन्दर्पसदृशे दृशः ॥ ४६ ॥
नैको रसः कवेः ॥ १६ ॥
वेत्ति विश्वम्भरा भारं गिरीणां गरिमाश्रयम् ॥ १८ ॥
महनीयाः महानुभावाः भवन्ति ॥
युवजनोन्मादिनी यौवनश्रीः ॥ ४७ ॥
सर्वंसहाः सूरयः ॥ १५ ॥
सौख्यस्यायतनं भवन्ति रसिकाः कन्दर्पशास्त्रं स्त्रियः ॥ ५५ ॥

द्वितीय उच्छ्वासः

इह स्थितः सर्वजगज्जयाय धनुः श्रमं पुष्पशरः करोति ॥ ५ ॥
कुलीनमनुकूलं च कलत्रं कुत्र लभ्यते ॥ २२ ॥
केदारेषु विनिःस्पृहाः ॥ २ ॥
क्रुद्धोलूककदम्बकस्य पुरतः काकोऽपि हंसायते ॥ ३४ ॥
सान्द्राचन्द्रमसो न कस्य कुरुते चित्तभ्रमं चन्द्रिका ॥ ३६ ॥
संसारसुखसर्वस्वं प्राणिनां हि प्रियो जनः ॥ २१ ॥
शुभ्रान् विभ्रमकारिणः शशिकरान् पश्यन्न को मुह्यति ॥ ३७ ॥

तृतीय उच्छ्वासः

केनेन्दुः शिशिरीकृतः ॥ १४ ॥
चित्ते वाचि क्रियायां च साधूनामेकरूपता ॥ १५ ॥
प्रायः प्राणिनामीशः शम्भुरेव शुभाशुभकर्मालोक्य तुलाधर इव तुलितं फलमुपकल्पयति ॥
श्लाघ्यः शिल्पपरिश्रमः ॥ २६ ॥

चतुर्थ उच्छ्वासः

अनार्यसंगता स्त्री श्रीश्च कं न प्रतारयति ॥
अविनीतोऽग्निरिव दहति ॥
अविभवः पुरुषः मेष इव कम्बलस्योपयोगं गच्छति ॥
तृप्यते केन वानन्दकन्दे कान्ताकथानके ॥ २ ॥
धैर्यं धामवतां धनम् ॥ ३ ॥
मुखरतां न शंसन्ति साधवः ॥

पञ्चम उच्छ्वासः

अधरयति धीरपुरुषं क्षणेन मकरध्वजो देवः ॥ ६६ ॥
केन याच्यन्ते चन्द्रचन्दनसज्जनाः परोपकाराय ॥ ५ ॥
को वान्योऽपि विलीयते न सरसः सीमन्तिनीसंगमे ॥ ५६ ॥
छलयति मदनपिशाचः पुरुषं हि मनागपि स्खलितम् ॥ ६७ ॥
तिरयति स्वातन्त्र्यं प्राणिनां परपरिग्रहः ॥
नह्येकतलेन तालिका वाद्यते ॥
बलीयान् परतो विधिः प्रमाणम् ॥
विधेरिव वामभुवामचिन्त्यानि चरितानि भवन्ति ॥
हृदयतृणकुटीरे दीप्यमाने स्मराग्नावुचितमनुचितं वा वेत्ति कः पण्डितोऽपि ॥ ५० ॥
हृद्यं किमुद्वेगिनाम् ॥ १७ ॥

षष्ठ उच्छ्वासः

उन्मादयति यूनो मनो युवतीनां यौवनश्रीः ॥
कुलवधूनां सेवको लोक एषः ॥ ५४ ॥
निपतति किल दुर्बलेषु दैवम् ॥ २० ॥
हृदयं ग्राम्या हरन्ति स्त्रियः ॥ ७० ॥

सप्तम उच्छ्वासः

अनालोचनगोचरश्चायमनुरागोऽङ्गनाजनस्य ॥
कार्येण कारणविशेषगुणोऽनुमेयः ॥ २२ ॥
दग्धोविधिर्विधत्ते न सर्वं गुणसुन्दरं जनं कमपि ॥ २१ ॥
न खलु गुण-विशेषः प्रेमबन्धप्रयोगे ॥ ४७ ॥
न खलु पारिजातमञ्जरी जरठपवनप्रेङ्खोलनायासं सहते ॥
नानाभङ्गिभिरिन्द्रजालसदृशं दैवं हि चित्रीयते ॥ ६ ॥
वीणायां वाद्यमानायां वेदोद्गारो न रोचते ॥ ४६ ॥
शृङ्गाररङ्गशाला हरति न बाला मनः कस्य ॥ २० ॥
स्मरापस्मारोऽयं भ्रमयति दृशं घूर्णयति च ॥ १७ ॥

संक्षिप्त विषयानुक्रम

प्रथम उच्छ्वास

द्वितीय उच्छ्वास

तृतीय उच्छ्वास

चतुर्थ उच्छ्वास

पञ्चम उच्छ्वास

षष्ठ उच्छ्वास

१३ किन्नर मिथुन के साथ राजा नल का शिविर की ओर प्रस्थान ।
१४ शिविर में किन्नरमिथुन द्वारा दमयन्तीवर्णन विषयक गीत तथा रात्रि-विश्राम ।
१५ प्रभात वर्णन, आगे जाते समय मार्ग में प्रियानुरक्त हाथी को नल द्वारा देखा जाना ।
१६ हस्ती वर्णन ।
१७ विन्ध्याचल वर्णन ।
१८ विदर्भा नदी, विदर्भ-प्रजा तथा अग्रहार भूमि वर्णन ।
१९ ग्राम्यस्त्रियों द्वारा नल चित्राङ्कन ।
२० शाकवाटिका, उद्यान, वरदा, विदर्भा संगम वर्णन ।
२१ सैन्य-शिविर-वर्णन ।
२२ कुण्डिनपुर में नलागमन सम्बन्धी हर्षोल्लास ।

सप्तम उच्छ्वास

१ नल-समीप विदर्भराज आगमन तथा कुशल क्षेम पृच्छा ।
२ विदर्भराट् द्वारा विनम्रता-प्रदर्शन ।
३ विदर्भराट् द्वारा राजभवन प्रस्थान तथा नल की उत्सुकता ।
४ दमयन्ती द्वारा कुवड़ी, नारी किरात कन्याओं से उपहार नल के पास भेजना ।
५ सविस्मय नल द्वारा उपहार स्वीकृति तथा कुशल पृच्छानन्तर कन्याओं का दमयन्तीभवन प्रस्थान ।
६ नल द्वारा पर्वतक, पुष्कराक्ष तथा किन्नर मिथुन को दमयन्ती के पास भेजना ।
७ ससैन्य नल का मध्याह्न भोज-वर्णन ।
८ दमयन्ती के पास से पर्वतक का प्रत्यागमन ।
९ पर्वतक द्वारा कन्यकान्तःपुर सहित दमयन्ती वर्णन ।
१० पर्वतक द्वारा दमयन्ती की नल तथा देवदूत विषयक विषण्णता का वर्णन ।
११ सन्ध्या वर्णन ।
१२ चन्द्रोदय वर्णन ।
१३ इन्द्र के वर प्रभाव से नलका अदृश्य कन्यकान्तःपुर-प्रेक्षण तथा स्वगत वर्णन ।
१४ कन्यकान्तःपुर में नल का प्रत्यक्ष होना, ससखी दमयन्ती का विस्मय करना ।
१५ नल वागुरिका सम्वाद ।
१६ नल दमयन्ती का अन्योन्य दर्शन ।
१७ नल द्वारा इन्द्रसन्देश कथन, दमयन्ती की देवताओं के प्रति अनिच्छा प्रकट करना ।
१८ नल द्वारा देव-वैभव वर्णन ।
१९ दमयन्ती की विषण्णता, प्रियम्वदिका द्वारा नल को प्रत्युत्तर ।
२० नलका दमयन्ती भवन से प्रस्थान ।
२१ उत्कण्ठित नल का हरचरणसरोज ध्यान में रात्रि यापन ।

पात्र-परिचय

पुरुष-पात्र

नल : नायक, निषधदेश के राजा वीरसेन के पुत्र।
वीरसेन : निषधराज, नायक नल के पिता।
सालङ्कायन : मन्त्री प्रथम वीरसेन के तदनन्तर नल के।
श्रुतशील : नलमन्त्री, सालङ्कायन पुत्र
मौहूर्तिक : ज्योतिषी राजा वीरसेन के ज्योतिषी।
पथिक-२ : उत्तर तथा दक्षिण दिशाओं से आये हुये पृथक् पृथक्।
पर्वतक : नल का सेवक
प्रतीहार : ,,
प्रस्ताव पाठक : ,,
मृगया वनपालक : ,,
वैतालिक :
बाहुक : नल का सेनापात
भद्रभूति : दौवारिक
भीम : कुण्डिनपुर के राजा, दमयन्ती के पिता।
पुरोधा : राजा भीम के पुरोहित
पुष्कराक्ष : दमयन्ती का दूत
सुन्दरक : दमयन्ती का किन्नर
सोमशर्मा : स्वयंवर निमन्त्रण के लिए उत्तर को जाने वाला ब्राह्मण
हंस : दमयन्ती को लुभाने वाला नल का दूत।
इन्द्र कुबेर यम वरुण: लोकपाल-दमयन्ती के वरण के इच्छुक।
पुरुष : लोकपालों का अनुचर।
ब्रह्मर्षि : नल का अभिषेक करने के लिये आये।
मनि : पयोष्णी तट के तपस्वी।
अवसर पाठक : भीम तथा नल के सेवक।

स्त्री-पात्र

दमयन्ती	: नायिका कुण्डिननरेश भीम की पुत्री ।
प्रियंगुमंजरी	: दमयन्ती की माता कुण्डिन की राजमहिषी ।
कक्कोलिका, कलिका, चकोरी, चङ्गी, चन्दना, चन्द्रप्रभा, चन्दवदना, चन्दी, चम्पा, मालती, दन्दिनी, परिहासशीला, प्रियम्वदिका, लवङ्गी, गौरी, सुन्दरी	दमयन्ती की चेटियाँ ।
विहङ्ग वागुरिका	: दमयन्ती की किन्नरी ।
मज्जनकामिनियाँ	: राजा भीम की सेविकाएं ।
किरात कामिनियाँ	: नर्मदातटवासिनी ।
गोपी	: विदर्भातीरचारिणी ।
रूपवती	: नल की माता राजा वीरसेन की रानी ।
लवङ्गिका	: नल की सरोवररक्षिका ।
सारसिका	: नल की वनपालिका ।
हंसी	: हंस की पत्नी ।

॥ श्रीः ॥

महाकवित्रिविक्रमभट्टविरचितः

नलचम्पूः

'सुधा'-संस्कृत-हिन्दीटीकाद्वयोपेतः

प्रथम-उच्छ्वासः

जयति गिरिसुतायाः कामसंतापवाहि-
न्युरसि रसनिषेकश्चान्दनश्चन्द्रमौलिः।
तदनु च विजयन्ते कीर्तिभाजां कवीना-
मसकृदमृतबिन्दुस्यन्दिनो वाग्विलासाः ॥ १ ॥

अन्वयः—गिरिसुतायाः कामसन्तापवाहिनि उरसि चान्दनः रसनिषेकः चन्द्रमौलिः जयति। तदनु च कीर्तिभाजाम् कवीनाम् असकृत् अमृतविन्दुस्यन्दिनः वाग्विलासाः विजयन्ते ॥ १ ॥

सुधा—शरदिन्दुनिभां शुभ्रां शुभ्रवस्त्रैरलङ्कृताम्।
कलहंसकृतावासां वरदां शारदां नुमः ॥

तत्रादौ विचित्रपदपंक्तिसरित्पाथोवीचिसंघट्टः कविश्रीस्त्रिविक्रमभट्टः प्रतिपादनीय सर्वरसकथोपक्रमे सर्वरसात्मकं परमेश्वरं शङ्करमेव प्रणुवन् आह—जयति गिरिसुतायाः इति।

जयतीति। गिरिसुतायाः—गिरेः=पर्वतस्य हिमालयस्य सुता=जाता, तस्याः=हेमवत्याः, नलपक्षे तु—गिरिः=भीमनृपः ('गिरिर्भीमनृपे सूत्रे स्वभावे पर्वते जले'।) इत्युक्तिः। तस्य सुता=दुहिता दमयन्ती तस्याः। कामसन्तापवाहिनि—कामस्य=मदनस्य सन्तापः=पीड़ा तं वहतीति=धारयतीति तस्मिन्=कन्दर्पपीड़ावाहिनि। उरसि=वक्षसि। चान्दनः—=चन्दनस्यायं चान्दनः=चन्दनविषयकः। रसनिषेकः—रसाः निषिच्यन्तेऽस्मिन्निति रसनिषेकः=रसधारः (इव)। चन्द्रमौलिः—चन्द्रः मौलौ यस्य सः=शशाङ्कशेखरः, नलपक्षे तु—चन्द्रः=चन्द्रवंशः, तस्य मौलौ वर्त्तते यः सः=चन्द्रवंशीयनृपशिरोमणिः। जयति=सर्वोत्कृष्टो भवति। 'सर्वोत्कृष्टश्च सर्वेषां नमस्यः स्यात्' इति नमस्कारः

प्रतीयते । नमस्कारेण च प्रबन्धकर्तृव्याख्यातृश्रोतॄणामभीष्टफलसम्प्राप्तिः । तदनु च=तत्पश्चाच्च । कीर्तिभाजाम्=यशोभाजाम् । कवीनाम् = व्यासवाल्मीकिकालिदासादीनां सूरिणाम् । असकृत्=वारम्वारम् । अमृतविन्दुस्यन्दिनः=अमृतस्य=सुधायाः विन्दवः=आनन्दरसनिषेकाः स्यन्दन्ते येभ्यस्ते वाग्विलासाः=वाचः=वाण्याः विलासाः=आनन्दानुभवाः । विजयन्ते=सर्वोत्कृष्टाः भवन्ति । मालिनी वृत्तमत्र । तद्यथा—

ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः ॥ १ ॥

हिन्दी—गिरि-सुता पार्वतीजी के (नलपक्ष में—भीमपुत्री दमयन्ती के) काम-सन्तप्त वक्षःस्थल पर चन्दन रसधार के समान शीतल लगनेवाले चन्द्रमौलि भगवान् शिव (नलपक्ष में—चन्द्रवंश के राजाओं में शिरोमणि, नल) सर्वोत्कृष्ट हैं तथा तदनन्तर यशस्वी कविजनों के निरन्तर सुधारस बरसानेवाली वाणी के आनन्दानुभव सर्वोत्कृष्ट हैं ।

टिप्पणी—रसाः—रस्यन्त इति रसाः शृङ्गारादयः । ते च—शृङ्गारहास्यकरुणरौद्र-वीरभयानकाः । बीभत्सोऽद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः ॥ शान्तोऽपि नवमो रसः इति केचित् । आधुनिकास्तु 'वात्सल्यरसोऽपि दशमः' इति मन्यन्ते । रसनिष्पत्तिस्तु विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद् भवति ।

जयति मधुसहायः सर्वसंसारवल्ली
जननजरठकन्दः कोऽपि कन्दर्पदेवः ।
तदनु पुनरपाङ्गोत्संग संचारितानां
जयति तरुणयोषिल्लोचनानां विलासः ॥ २ ॥

अन्वयः—मधुसहायः सर्वसंसारवल्ली जननजरठकन्दः कः अपि कन्दर्पदेवः जयति । तदनु पुनः अपाङ्गोत्सङ्गसंचारितानाम् तरुणयोषिल्लोचनानाम् विलासः जयति ॥ २ ॥

सुधा—जयतीति । मधु-सहायः—मधुः=वसन्तः सहायः=सहायकः यस्य सः=वसन्त-सखः । सर्वसंसारवल्ली जननजठरकन्दः—संसार एव वल्ली संसारवल्ली, सर्वस्याः संसारवल्याः जननाय=उत्पादनाय जरठः=कठिनः कन्दः, तादृशः । कः अपि=कश्चिद् अपि अद्भुतवैभवः । कन्दर्पदेवः=कामदेवः । जयति=सर्वोत्कृष्टो भवति । तदनु=तदनन्तरम् । च पुनः=भूयः । अपाङ्गोत्सङ्गसञ्चारितानाम्—अपाङ्ग एव उत्सङ्गम् तस्मिन्=अपाङ्ग-क्रोडे सञ्चारितानाम्=सञ्चालितानाम् । तरुणयोषिल्लोचनानाम्-योषिताम्=तरुणीनाम् लोचनानि=नेत्राणि तेषाम् । तरुणेषु=युवजनेषु योषिल्लोचनानाम् इति । विलासः=कटाक्षादि विभ्रमः । जयति=सर्वोत्कृष्टो भवति । मालिनीवृत्तम् । लक्षणं तु प्रागुक्तम् ।

हिन्दी—जिसके वसन्त जैसे सहायक हैं तथा जो सम्पूर्ण संसाररूपी वेल (लता) को उत्पन्न करने के लिए कठोर कन्द के समान हैं, इस प्रकार का कामदेव सर्वोत्कृष्ट है ।

तदनन्तर पुनः युवतियों के नेत्रों के छोररूपी गोद से संचालित होनेवाले नेत्रों का कटाक्ष आदि विलास सर्वोत्कृष्ट होता है ॥ २ ॥

अगाधान्तः परिस्पन्दं विबुधानन्दमन्दिरम् ।
वन्दे रसान्तरप्रौढं स्रोतः सारस्वतं वहत् ॥ ३ ॥

अन्वयः—अगाधान्तः परिस्पन्दम् विबुधानन्दमन्दिरम् रसान्तरप्रौढम् वहत् सारस्वतम् स्रोतः वन्दे । ३ !

सुधा—अथ श्लोकत्रयेण कविर्वाग्विलासगुणान् एव वर्णयति—

अगाधेति । अगाधान्तः—अगाधः महार्थतया लब्धमध्योऽन्तर्मध्ये प्रकरणान् मनसि परिस्पन्दः=चमत्कारी स्फूर्तिविशेषः यस्य तत् तथा । नदीपक्षे तु—अगाधः=गम्भीरः अन्तः मध्ये परिसमन्तात् स्पन्दः=चलनम् आवर्तविशेष । यस्य तत् तथा । विबुधानन्द मन्दिरम्—विबुधानाम्=सुराणाम् पण्डितानां वा मन्दिरम्=हर्षस्थानम् । रसान्तरप्रौढम्—रसानाम्=शृङ्गारादीनाम् अन्तरेण विशेषेण प्रौढम्=प्रगल्भम् । पक्षे तु रसायाः=पृथिव्याः अन्तरेण=मध्येन प्रौढम्=प्रगल्भम् । वहत्=प्रवहत् । सारस्वतम्—सरस्वत्याः=भारत्याः, पक्षे तु–सरस्वती नदी विशेषायाः इदम् सारस्वतम् । स्रोतः=प्रवाहम् । वन्दे=नमस्कुर्वे । अनुष्टुव्वृत्तम् ॥ ३ ॥

हिन्दी—(भारती पक्ष में) हृदय में महान् अर्थ के कारण चमत्कार उत्पन्न करनेवाले, देवताओं तथा विद्वानों के आनन्द के घर, विभिन्न रसों (शृङ्गारादि) की विशिष्टता से समृद्ध, प्रवाहित होनेवाले सरस्वती भारती के स्रोत (प्रवाह) को मैं (त्रिविक्रमभट्ट) प्रणाम कर रहा हूं ॥ ३ ॥

(सरस्वती नदी पक्ष में) अथाह गहराई के मध्य चारों ओर तरंगित होनेवाले, देवताओं या विद्वानों के आनन्द के घर पृथ्वी के मध्य में प्रगल्भता से बहते हुए सरस्वती नदी के स्रोत (प्रवाह) को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ३ ॥

प्रसन्नाः कान्तिहारिण्यो नानाश्लेषविचक्षणाः ।
भवन्ति कस्यचित्पुण्यैर्मुखे वाचो गृहे स्त्रियः ॥ ४ ॥

अन्वयः—प्रसन्नाः कान्तिहारिण्यः नानाश्लेषविचक्षणाः कस्यचित् पुण्यैः मुखे वाचः गृहे स्त्रियः भवन्ति ॥ ४ ॥

सुधा—प्रसन्ना इति । प्रसन्नाः=प्रसादगुणोपेताः, स्त्रीपक्षे तु=प्रसन्नवदनाः । कान्तिहारिण्यः=कान्तिः औज्ज्वल्यम् दीप्तरसत्वं च हर्त्तुं=वशीकर्त्तुम् शीलं यासां ताः, पक्षे तु—कान्त्याः शरीरगुणविशेषेण हर्तुम्=मनोवशीकर्तुं शीलं यासां ताः । नानाश्लेषविचक्षणा=नाना=अनेकधा शब्दगुणार्थं गुणार्थालङ्कार शब्दालङ्काररूपश्लेषं

विशेषेण चक्षते यास्ताः, पक्षे तु—नाना · अनेकविधाः श्लेषे = आलिङ्गना विचक्षणाः चतुराः यास्ताः । कस्यचित्—विरलस्यैवाद्भुतजनस्य । पुण्यैः=सुकृतैः । मुखे=आनने । वाचः=वाण्यः । गृहे = हर्म्ये । स्त्रियः=नार्यः । भवन्ति=सञ्जायन्ते, नतु सर्वेषामिति शेषः । अनुष्टुब्वृत्तम् ॥ ४ ॥

हिन्दी—(वाणी पक्ष में) प्रसादगुण से युक्त औज्ज्वल्यमान तथा दीप्तरसत्वादि गुणों से युक्त मन को प्रसन्न करनेवाली, अनेक प्रकार के श्लेषों में दक्ष वाणी किसी अद्भुत व्यक्ति के पुण्यों से ही मुख में आती है ॥ ४ ॥

(स्त्री पक्ष में) प्रसन्नवदन शरीर की कान्ति से मनोहर तथा अनेक प्रकार के आलिंगनों में चतुर स्त्रियाँ किसी अलौकिक व्यक्ति के पुण्यों से घर मे आती हैं ॥ ४ ॥

टिप्पणी—प्रसादगुण—काव्य में होनेवाले माधुर्यादि गुणों में एक प्रसादगुण जिसमें शब्द के सुनने मात्र से अर्थ का बोध हो जाता है । यथा—श्रुतिमात्रेण शब्दानां येनार्थ प्रत्ययो भवेत् । साधारण-समप्राणां स प्रसादो गुणः स्मृतः ॥ (काव्यप्रकाश)

श्लेष—काव्य में श्लिष्ट पदों से अनेकार्थ प्रकट करनेवाला अलङ्कार । यह शब्द-गुणश्लेष, अर्थगुणश्लेष, शब्दालङ्कारश्लेष तथा अर्थालङ्कारश्लेष भेदों से चार प्रकार का होता है । सामान्यार्थ में श्लेष आलिङ्गन के लिए आता है । चण्डपाल ने जिसको द्वादश भेदों में बाँटा है—(स्पृष्टक, विद्धक, उद्घृष्ट, पीडन, लतावेष्टक, वृक्षाधिरूढक, तिलण्डुल, क्षीरनीरोपगूढ, ऊरूपगूढ, जघनोपश्लेष, स्तनालिङ्गन तथा लालाटिक ।

किं कवेस्तेन काव्येन किं काण्डेन धनुष्मतः ।
परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः ॥ ५ ॥

अन्वयः—कवेः तेन काव्येन किम्, वा धनुष्मतः (तेन) काण्डेन किम् यत् परस्य हृदये लग्नम् शिरः न घूर्णयति ॥ ५ ॥

सुधा—किमिति । कवेः=सूरेः । तेन = तथाविधेन काव्येन=ग्रन्थेन । किम्=कः लाभः । वा=अथवा । धनुष्मतः=धनुर्धारिणः (तेन) काण्डेन=वाणेन । किम्=कः लाभः । यत् = यत्काव्यम् वा शरः । परस्य=अन्यस्य श्रोतुः शत्रोर्वा । हृदये=चेतसि वक्षसि वा । लग्नम्=संलग्नम् शिरः=उत्तमाङ्गम् । न घूर्णयति=न चालयति । ५ ॥

हिन्दी—कवि के ऐसे काव्य से क्या लाभ है जो कि दूसरे श्रोता के हृदय में लग-कर उसको प्रभावित न कर दे अथवा धनुर्धारी के ऐसे वाण से क्या लाभ जो कि शत्रु के वक्ष पर लगकर उसे हिला न दे ॥ ५ ॥

अप्रगल्भाः पदन्यासे जननीरागहेतवः ।
सन्त्येके बहुलालापाः कवयो बालका इव ॥ ६ ॥

अन्वयः—एके कवयः पदन्यासे अप्रगल्भाः बहुलालापाः जननीरागहेतवः बालकाः इव सन्ति ॥ ६ ॥

सुधा—अथ कविः कुकविं निन्दयन्नाह—अप्रगल्भाः इति। एके कवयः=केचन सूरयः। पदन्यासे–पदानाम्—सुप्तिङन्तरूपाणाम् न्यासे सम्यक् प्रयोगे, पक्षे-चरणक्षेपे। अप्रगल्भाः=अदक्षाः। बहुलालापाः बह्व्यः लालाः अप्स्वरूपाः येषु ते। अथवा बह्वीः लालाः=ष्ठीवनजलानि पिबन्तीति बहुलालापाः। जननीरागहेतवः–जनानां लोकानाम् नीरागे=रागाभावे हेतवः=कारणानि ये ते तथाभूताः। पक्षे तु जननी=माता, तस्याः रागे प्रेम्णि हेतवः=कारणानि ये तथाभूताः। बालकाः इव बालाः इव सन्ति=भवन्ति ॥६॥

हिन्दी – (कवि पक्ष में) कुछेक कवि सुबन्त तिङन्तादि पदों के प्रयोग में अकुशल, लोगों की अरुचि (विरक्ति) का कारण बने हुए अत्यधिक आलाप करनेवाले बच्चों जैसे अपरिपक्व बुद्धिवाले होते हैं। (बालक पक्ष-में) पांव रखने में अकुशल (लड़खड़ाते कदमोंवाले) केवल माता के मन को आनन्दित होने के कारण बने हुए कुछ बच्चे जैसे बहुत-सी लार पीते रहते हैं उसी प्रकार कुछ कवि व्यर्थ बकवास करते रहते हैं ॥ ६ ॥

अक्षमालापवृत्तिज्ञा कुशासनपरिग्रहा।
ब्राह्मीव दौर्जनी संसद्वन्दनीया समेखला ॥ ७ ॥

अन्वयः––अक्षमालापवृत्तिज्ञा कुशासनपरिग्रहा दौर्जनी संसद् समेखला ब्राह्मी इव वन्दनीया ॥ ७ ॥

सुधा––कारणं विनापि परोत्कर्षमसहिष्णून् क्षुद्रान् काव्यप्रवृत्तिभङ्गहेतून् शब्दमात्रेण गौरवन्नाह––अक्षमालापेति।

अक्षमालापवृत्तिज्ञा––न क्षमा अक्षमा तया=रुषा आलापस्य सम्भाषणस्य वृत्तिं जानातीति यः सः = असह्यसम्भाषणवृत्तिवेत्री, पक्षे तु––अक्षमाला=जपमाला, तस्याः अपवृत्तिः=भ्रमणम् जानातीति तथाविधः। कुशासनपरिग्रहा–कुत्सितं शासनं कुशासनम् कुशिक्षणम्, तस्य परिग्रहः=स्वीकारो यस्याः सा। पक्षे तु—कुशासनम् कुशानाम्=दर्भाणाम् आसनम्=आस्थानम्, तस्य परिग्रहः=स्वीकारो यस्याः सा। दौर्जनी––दुर्जनानाम्=दुष्टानाम् इयम् सा दौर्जनी = दुष्टजन सम्बन्धिनी। संसद्=परिषद्। समेखला—समे=सज्जने खला दुष्टा या तादृशी, पक्षेतु––मेखलया सहिता समेखला=मौञ्जी सहिता। ब्राह्मी इव—ब्राह्मणानाम्=विप्राणाम् (इयम् संसद्) इव, विप्रसभेव। वन्दनीया=पूजनीया।

हिन्दी—(दुष्ट पक्ष में) असह्य आलापवृत्ति को जाननेवाली, निन्दनीय शिक्षा स्वीकार करनेवाली, सज्जनों पर दुष्टता दिखलानेवाली ब्राह्मणों की सभा के समान दूर से ही नमस्कार कर लेना चाहिए। (विप्रगोष्ठी पक्ष में) जपमाला को फिराने की विधि जाननेवाली, कुशों के आसन को ग्रहण करनेवाली, मेखलायुक्त ब्राह्मणों की सभा को दुष्टों की सभा की भांति प्रणाम कर लेना चाहिए ॥ ७ ॥

रोहणं सूक्तरत्नानां वृन्दं वन्दे विपश्चिताम् ।
यन्मध्यपतितो नीचः काचोऽप्युच्चैर्मणीयते ।। ८ ।।

अन्वयः—सूक्तरत्नानाम् रोहणम् विपश्चिताम् वृन्दम् वन्दे यन् मध्यपतितः नीचः काचः अपि उच्चैः मणीयते ।। ८ ।।

सुधा—रोहणमिति । सूक्तरत्नानाम्–सूक्तानि=सुभाषितानि एव रत्नानि तेषाम् । अथवा प्रशस्तृरत्नानाम् । रोहणम्=आरोहणम्, उत्पत्तिस्थानम् वा । विपश्चिताम्= विदुषाम् । वृन्दम् = समूहम् । वन्दे=नौमि । यन्मध्यपतितः—येषां मध्ये=अन्तरे पतितः= च्युतः । नीचः = निम्नकोटिकः । काचः—कच्यन्तेऽर्था अनेनास्मिन् सः=प्रबन्धः, सहृदय- ग्राह्यार्थनिबन्धं काव्यम्, क्षीरमृद्विकारो वा । उच्चैः उत्कृष्टगुणैः मणीयते=मणि सदृशं भवति ।। ८ ।।

हिन्दी—(काव्य पक्ष में) सुभाषित रत्नों के उत्पत्तिस्थान (रोहण) विद्वद्वृन्द को मैं प्रणाम करता हूँ जिस विद्वद्वृन्द में पड़ा हुआ अधम काव्य भी उत्कृष्ट बन जाता है ।

(रत्न पक्ष में) प्रशंसनीय रत्नों के आरोहण स्थान विद्वद्वृन्द को मैं प्रणाम करता हूँ जिनके बीच में पड़ा हुआ कांच भी उच्च कोटि की मणि के समान लगता है ।। ८ ।।

टिप्पणी—काच=शीशा जो कि रेह मिट्टी से बनाया जाता है ।

कच् बन्धनार्थक धातु से बना हुआ काच शब्द काव्यार्थबोधक भी है जिसका अर्थ सहृदयग्राह्य अर्थों का निबन्धन करनेवाला अर्थात् काव्य होता है ।

अत्रिजातस्य या मूर्तिः शशिनः सज्जनस्य च ।
क्व सा वै रात्रिजातस्य तमसो दुर्जनस्य च ।। ९ ।।

अन्वयः—अत्रिजातस्य शशिनः च सज्जनस्य या मूर्तिः सा वै रात्रिजातस्य तमसः च दुर्जनस्य क्व ।। ९ ।।

सुधा—अत्रिजातस्येति । अत्रिजातस्य–अत्रेः=अत्रिमुनेः जातस्य=सुतस्य शशिनः= चन्द्रस्य अथवा न त्रिभिः जातस्य=अजारजस्य । च=तथा । सज्जनस्य=सत्पुरुषस्य । या मूर्तिः=यत्स्वरूपम् सा सर्वाभीष्टा मूर्तिः । वै=नूनम् । रात्रिजातस्य रात्रौ=निशायाम् । जातस्य = जायमानस्य । तमसः=अन्धकारस्य । दुर्जनस्य = दुष्टस्य क्व=कुत्र, क्वापि नास्ति । यतो दुर्जनस्य वैरप्रधाना मूर्तिः सज्जनस्य चावैरा भवति ।। ९ ।।

हिन्दी—अत्रि ऋषि से उत्पन्न हुए चन्द्रमा के समान सज्जनों की प्रसन्न तथा कल्याणमय मूर्ति कहाँ ! तथा रात्रि से उत्पन्न होनेवाले अन्धकार एवं वैरप्रधान वर्ण- संकर दुष्ट पुरुष की अमङ्गलमय मूर्ति कहाँ ! अर्थात् सज्जनों तथा दुष्टों की समानता कदापि नहीं की जा सकती है । उनमें स्वाभाविक रूप से महान् भेद होता है ।। ९ ।।

टिप्पणी—अत्रिजात = चन्द्रमा । चन्द्रमा की उत्पत्ति अत्रि ऋषि से मानी गई है अतः चन्द्रमा को अत्रिजात कहा जाता है ।

अ + त्रिजात (माता-पिता तथा अन्य से किसी से जन्म न लेनेवाला अर्थात् वर्ण संकरता रहित सज्जन ।

रात्रिजात अन्धकार (रात्रि में ही होनेवाला) अथवा रात्रिजात=राक्षस जैसी दुष्ट प्रकृतिवाला दुर्जन व्यक्ति ।

निश्चितं ससुरः कोऽपि न कुलीनः समेऽमतिः ।
सर्वथासुरसंबद्धं काव्यं यो नाभिनन्दति ॥ १० ॥

अन्वयः—सुरसम् बद्धम् काव्यम् यः न अभिनन्दति (सः) निश्चितम् ससुरः कः अपि न कुलीनः, सर्वथा समे अमतिः ॥ १० ॥

सुधा—निश्चितमिति । सुरसम्–सुष्ठुरसाः शृङ्गारादयः यत्र तादृशम् बद्धम्=रचितम् । काव्यम्=ग्रन्थम् । यः=यः पुरुषः । न अभिनन्दति=अभिनन्दनं न करोति । सः निश्चितम्=निःसन्देहम् । ससुरः—सुरया=मद्येन सहितः=ससुरः मद्यपः (शरावीति भाषायाम्) कः अपि=कश्चिदपि पुरुषः न कुलीनः=नाभिजातः । सर्वथा=सदा । समे= सज्जने । अमतिः=दुर्बुद्धिः । सर्वथा + सुर 'शब्दयोर्मध्येऽकारकल्पना कृते सति— असुरसम्बद्धम्—असुरैः=दुष्टैः राक्षसैः सम्बद्धम् लिखितम् काव्यम्=कविपुत्रम् भृगुम् यः न अभिनन्दति=अभिनन्दनं करोति सः=तथा सुरः=देवः कः अपि कश्चिदपि कुलीनः—कौ पृथिव्यां लीनः=आश्लिष्टः स्वर्गं एव तस्य अधिष्ठानात् । तथा सः मा= लक्ष्मीः ई=कामः, ताभ्यां सहितः, अथवा समेर्विष्णुस्तत्र सेवनाय मतिर्यस्य सः (अस्तीति) ।

हिन्दी—(काव्य पक्ष में) श्रेष्ठ शृङ्गारादि रसों से युक्त काव्य का जो व्यक्ति अभिनन्दन नहीं करता है निश्चय ही वह मद्यप है, अकुलीन है तथा सदा सत्पुरुष में स्नेह नहीं रखता है ॥ १० ॥

(भृगु पक्ष में) जो व्यक्ति राक्षसों से सम्बद्ध भृगु का अभिनन्दन नहीं करता है निश्चित रूप से (वह) कोई सुर है । वह पृथ्वी पर लीन नहीं रहता है तथा लक्ष्मी एवं कामदेव के साथ विष्णु भगवान् में सदा ध्यान (मति) रखता है ॥ १० ॥

टिप्पणी—असुरों के गुरु शुक्राचार्य के पुत्र भृगु हैं । असुरों से सम्बन्ध रखने के कारण देवता उनका अभिनन्दन नहीं करते हैं । देवता स्वर्ग में निवास होने के कारण पृथ्वी में लीन नहीं होते हैं, वे लक्ष्मी तथा काम सहित भगवान् विष्णु में सदा मन लगाये रहते हैं ॥ १० ॥

सदूषणापि निर्दोषा सखरापि सुकोमला ।
नमस्तस्मै कृता येन रम्या रामायणी कथा ॥ ११ ॥

अन्वयः—सदूषणा अपि निर्दोषा सखरा अपि सुकोमला रम्या रामायणी कथा येन कृता तस्मै नमः ॥ ११ ॥

सुधा—सम्प्रति कविर्वाल्मीकिप्रभृतीन् कतिचित्कवीन् वर्णयति सदूषणापि इत्यादि । सदूषणा अपि-दूषणेन सहिता=दूषण नाम्ना राक्षसेन युक्ता अपि । निर्दोषा-निर्गताः दोषाः यस्यास्तथा=दोषरहिता । सखरा अपि-खरेण सहिता सखरा=खर नाम्ना राक्षसेन युता अपि सुकोमला=सुन्दरैः कोमलभावैर्युक्ता । रम्या=रमणीया । रामायणी कथा= रामचरित्रव्यापिनी कथा । येन=येन कविना वाल्मीकिना । कृता=रचिता । तस्मै=आदि-कवये वाल्मीकिने नमः=प्रणामः । (अस्ति) अत्र विरोधवदाभासः ॥ ११ ॥

हिन्दी—दूषण तथा खर राक्षसों के कथानक से युक्त होने पर भी निर्दोष एवं सुन्दर कोमल भावोंवाली रमणीक रामायण की कथा जिसने बनायी उस आदि कवि वाल्मीकि के लिए प्रणाम है ॥ ११ ॥

व्यासः क्षमाभृतां श्रेष्ठो वन्द्यः स हिमवानिव ।
सृष्टा नौरीदृशी येन भवे विस्तारिभारता ॥ १२ ॥

अन्वयः—येन भवे विस्तारिभारता ईदृशी नौ सृष्टा सः क्षमाभृताम् श्रेष्ठः व्यासः हिमवान् इव वन्द्यः ॥ १२ ॥

सुधा—व्यास इति । येन=येन महाकविना । भवे=लोके; पक्षे=शिवे । विस्तारि-भारता=विशाल महाभारतरूपा, पक्षे विस्तारिणी भा=कान्तिः; यस्यास्तथा रता=अनुरक्ता । नौः=तरणिः (संसारसागरतरणाय) । सृष्टा=निर्मिता । सः=तादृशः । क्षमा-भृताम्=क्षमां=शान्ति भरतीति, तेषाम्=शान्तिधारिणाम्, पक्षे क्षमायां धरतीति, तेषां= पर्वतानाम् अथवा क्षमाम्=भूमिं धरतीति तेषाम्=भूभृताम् । श्रेष्ठः=वरः । व्यासः= विव्यास वेदान् यस्यात् तस्मात् व्यासः = कृष्णद्वैपायनः । हिमवान् इव=हिमालयसदृशः धैर्यवान् । वन्द्यः=वन्दनीयः (अस्ति) ॥ १२ ॥

हिन्दी—(व्यास पक्ष में) जिन्होंने संसार में विशाल महाभारत जैसे ग्रन्थ के रूप में भवसागर को पार करने के लिए नाव बना दी वह शान्तिधारकों में श्रेष्ठ तथा हिमालय के समान धैर्यवान् व्यास वन्दनीय हैं ॥ १२ ॥

(हिमालय पक्ष में) जिन्होंने शिव में अनुरक्त विशाल कान्तिवाली गौरी को उत्पन्न किया वह पर्वतों में श्रेष्ठ, विस्तारवाला हिमालय वन्दनीय है ॥ १२ ॥

कर्णान्तविभ्रमभ्रान्त कृष्णार्जुनविलोचना ।
करोति कस्य नाह्लादं कथा कान्तेव भारती ॥ १३ ॥

अन्वयः—कर्णान्तविभ्रमभ्रान्त कृष्णार्जुनविलोचना भारती कथा कस्य आह्लादम् न करोति ॥ १३ ॥

सुधा—कर्णान्तेति । कर्णान्तविभ्रमभ्रान्त कृष्णार्जुनविलोचना-कर्णस्य=राधेयस्य अन्ते विनाशे सति विभ्रमेण=विस्मयेन भ्रान्ताः=विचरितं प्रवृत्ताः कृष्णः=माधवः,

अर्जुनः=पार्थः विलोचनः धृतराष्ट्रः इत्यादयः यस्याम् । कान्तापक्षे तु—कर्णयोः=श्रोत्रयोः, अन्ते=पर्यन्ते, विभ्रमेण=विलासेन, भ्रान्ते=स्फुरिते, कृष्णार्जुने=श्यामश्वेत भागे विलोचने नेत्रे यस्यास्तथा । भारती कथा=महाभारत सम्बन्धिनी कथा, पक्षे—संस्कृत वार्ता । कान्ता इव=रमणीरिव । कस्य=कस्य नरस्य । आह्लादम्=मनोरञ्जनम् । न करोति=न विदधाति, अपि तु करोत्येव ॥ १३ ॥

हिन्दी—(महाभारत पक्ष में) कर्ण के युद्ध में मारे जाने पर विस्मित होकर कृष्ण, अर्जुन तथा धृतराष्ट्र आदि जिसमें इधर-उधर घूमते रहे, ऐसी महाभारत की कथा किसको आह्लादित नहीं कर लेती है ॥ १३ ॥

(कान्ता पक्ष में) कानों पर्यन्त विलास से स्फुरित (चञ्चल) काली तथा सफेद पुतलियोंवाली कान्ता के समान भारती कथा किसे आह्लादित नहीं करती है ? ॥१३॥

शश्वद्बाणद्वितीयेन नमदाकारधारिणा ।
धनुषेव गुणाढ्येन निःशेषो रञ्जितो जनः ॥ १४ ॥

अन्वयः—शश्वद्बाणद्वितीयेन नमदाकारधारिणा गुणाढ्येन धनुषा इव निःशेषः जनः रञ्जितः ॥ १४ ॥

सुधा—शश्वदिति । शश्वद् = निरन्तरम् । बाणद्वितीयेन—बाणः—बाणनामा कविः, पक्षे बाणः=शरः द्वितीयः=अपरः यस्य, तेन । नमदाकारधारिणा मत्तस्वरूपधारिणा पक्षे—बाणकर्षणाय नमदाकारं धरतीति तथाविधेन गुणाढ्येन=गुणाढ्य नाम्ना कविना=गुणयुक्तेन वा । धनुषा इव=कार्मुकेणेव । निःशेषः–निर्गतं शेषं यस्मात् सः=निखिलः । जनः=लोकः । रञ्जितः = आह्लादितः, पक्षे—अरम्=शत्रुम्, जितः=विजितः ॥ १४ ॥

हिन्दी—(कवि पक्ष में) निरन्तर बाण कवि को अपने साथ रखनेवाले, अभिमानयुक्त आकार को न धारण करनेवाले गुणाढ्य नामक कवि ने सभी लोगों को (अपनी कविता द्वारा) रञ्जित कर दिया ॥ १४ ॥

(धनुष पक्ष में) निरन्तर बाणों को अपने ऊपर चढ़ाये रखनेवाले बाण खींचने के समय झुके हुए आकारवाली डोर से मजबूत धनुष से सम्पूर्ण शत्रुवर्ग को जीत लिया ॥ १४ ॥

इत्थं काव्यकथाकथानकरसैरेषां कवीनाममी
विद्वांसः परिपूर्णकर्णहृदयाः कुम्भाः पयोभिर्यथा ।
वाचो वाच्यविवेकविक्लवधियामीदृग्विधा मादृशां
लप्स्यन्ते क्व किलावकाशमथवा सर्वंसहाः सूरयः ॥ १५ ॥

अन्वयः—इत्थम् एषाम् कवीनाम् काव्यकथाकथानकरसैः परिपूर्णकर्णहृदयाः विद्वांसः यथा पयोभिः कुम्भाः किल वाच्यविवेक विक्लवधियाम् मादृशाम् ईदृग्विधाः वाचः क्व अवकाशम् लप्स्यन्ते ॥ १५ ॥

सुधा— इत्थमिति । इत्थम्=अनेन प्रकारेण । एषाम्=एतेषाम् । कवीनाम् = सूरीणाम्। । काव्यकथाकथानकरसैः-काव्यकथानां कथानकानाञ्च रसैः=काव्यकथोपाख्यानानन्दैः । परिपूर्णकर्णहृदयाः-परिपूर्णाः कर्णाः=श्रोत्राः, हृदयानि=चेतांसि च येषाम् ते=पूर्णश्रोतृचेताः । विद्वांसः=पण्डिताः । यथा=येन प्रकारेण । पयोभिः=जलैः दुग्धैर्वा । (पूर्णाः) कुम्भाः=घटाः यथास्युस्तथा । किल=नूनम् । वाच्यविवेकविक्लवधियाम् = वक्तुं योग्यं वाच्यम्, वाच्यस्य विवेके=ज्ञाने विक्लवा व्याकुलिता धीर्येषां तेषाम्=कथनीय ज्ञानशून्यबुद्धीनाम् । मादृशाम्=अस्मद्विधानाम् । ईदृक्विधाः=इत्थं प्रकाराः । वाचः= वाण्यः । क्व=कुत्र । अवकाशम्=अवसरम् । लप्स्यन्ते=प्राप्स्यन्ति । अथवा = वा । सूरयः=कवयः । सर्वंसहाः=सर्वं सहन्ते ये ते=सर्वसहिष्णवः (भवन्ति) । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् । तद्यथा—सूर्याश्वैर्मसजस्ततः स गुरवः शार्दूलविक्रीडितम् ॥ १५ ॥

हिन्दी—इस प्रकार इन कवियों के काव्य, कथा-कथानक आदि रसों से परिपूर्ण कानों तथा हृदयोंवाले विद्वान् जल अथवा दूध से भरे घड़ों के समान हैं । वास्तव में वर्णनीय ज्ञान से शून्य बुद्धिवाले हमारे जैसे व्यक्तियों की इस प्रकार की (तुच्छ) वाणी कहाँ से अवसर पा सकेगी । अथवा (निराश होंने की आवश्यकता नहीं) कविजन सब कुछ सहन कर लेते हैं ॥ १५ ॥

वाचः काठिन्यमायान्ति भङ्गश्लेषविशेषतः ।
नोद्वेगस्तत्र कर्तव्यो यस्मान्नैको रसः कवेः ॥ १६ ॥

अन्वयः—भङ्गश्लेषविशेषतः वाचः काठिन्यम् आयान्ति । तत्र उद्वेगः न कर्त्तव्यः । यस्मात् कवेः एकः रसः न (भवति) ॥ १६ ॥

सुधा—कविर्भङ्गश्लेषकाठिन्यं वर्णयन्नाह—

वाचः काठिन्यमित्यादि । भङ्गश्लेषविशेषतः—वैशिष्ट्येन सभङ्गश्लेषवर्णनाद (कवेः) वाचः=वाण्यः । काठिन्यम् = दुरूहताम्, क्लिष्टतां वा । आयान्ति=आगच्छन्ति । (अतः) तत्र = सभङ्गश्लेषकाठिन्ये काव्ये । उद्वेगः = उद्विग्नता । न कर्त्तव्यः = न करणीयः । यस्मात्=यतः । कवेः=सूरेः । एकः रसः = नैका रुचिः भवति, प्रत्युत प्रसक्तिलक्षणा, व्युत्पत्तिलक्षणाप्यस्ति ॥ १६ ॥

हिन्दी—विशेष रूप से सभङ्ग श्लेष में कवि की वाणी कठिन बन जाती है अतः वहाँ पर उद्वेग नहीं करना चाहिए क्योंकि कवि के लिए केवल एक ही रस, एक ही अभिरुचि नहीं होती है ॥ १६ ॥

काव्यस्याम्रफलस्येव कोमलस्येतरस्य च ।
बन्धच्छायाविशेषेण रसोऽप्यन्यादृशो भवेत् ॥ १७ ॥

अन्वयः—आम्रफलस्य इव कोमलस्य इतरस्य च काव्यस्य रसः अपि बन्धच्छायाविशेषेण अन्यादृशः भवेत् ॥ १७ ॥

सुधा—काव्यस्येति । आम्रफलस्य इव=रसालफलस्येव । कोमलस्य = प्रसादगुण-युक्तस्य, पक्षे मृदोः । इतरस्य क्लिष्टस्य, पक्षे कठोरस्य । काव्यस्य=ग्रन्थस्य । रसः= शृङ्गारादि रसः, पक्षे=आनन्दानुभवः । बन्धच्छायाविशेषेण=बन्धस्य=रचनायाः छाया विशेषः=वैशिष्ट्यम् तेन, पक्षे—बध्यतेऽनेनेति बन्धः=वृन्तम् छायाविशेषश्च=छायायां पक्व विशेषस्तेन । अन्यादृशः=अन्यसदृशः । भवेत्=स्यात् ॥ १७ ॥

हिन्दी—जिस प्रकार कोमल (पके हुए) एवं कठोर (कच्चे) आम के फल के स्वाद से डण्ठल तथा छाया में पके आम के फल का स्वाद कुछ और ही प्रकार का होता है उसी प्रकार कोमल प्रसादादि गुणों से युक्त काव्य तथा भङ्गश्लेषादियुक्त कठिन काव्य का आनन्द भिन्न प्रकार का ही होता है ॥ १७ ॥

अस्ति समस्तमुनिमनुजवृन्दवृन्दारकवन्दनीयपादारविन्दस्य भगवतो विधे-र्विश्वव्यापिव्यापारपारवश्यादवतीर्णस्य संसारचक्रे क्रतुक्रियाकाण्डशौण्डस्य शाण्डिल्यनाम्नो महर्षेर्वंशः ।

सुधा—अस्तीति । सकलमुनिमनुजवृन्दवृन्दारकवन्दनीयपादारविन्दस्य समस्तानाम्= सकलानाम् मुनीनाम् मनुजानाम्=मानवानाञ्च वृन्दानि = कुलानि, तेषां वृन्दारकाणां = समूहानाम् वन्दनीयौ=पूजनीयौ पादारविन्दौ=चरणकमलौ यस्य तस्य । विश्वव्यापि-व्यापारवश्यात्—विश्वे=संसारव्यापी व्याप्तः यः व्यापारः=कार्यकलापः, तस्य यद् पारव-श्यम्=पराधीनता तस्मात् । संसारचक्रे = विश्वचक्रे । अवतीर्णस्य=अवतारगृहीतस्य । भगवतः=ऐश्वर्यशालिनः विधेः = ब्रह्मणः । क्रतुक्रियाकाण्डशौण्डस्य—क्रतोः = यज्ञस्य क्रियाकाण्डे=कर्मविधाने शौण्डस्य=निपुणस्य निष्णातस्य वा । शाण्डिल्य नाम्नः= शाण्डिल्यनामकस्य महर्षेः=परमर्षेः वंशः=अन्वयः । अस्ति=वर्तते ।

हिन्दी—समस्त मुनिजनों, तथा मनुष्यों के वृन्द के श्रेष्ठ व्यक्तियों द्वारा वन्दनीय चरणकमलोंवाले भगवान् ब्रह्मा के विश्व-व्यापार (जन्म-मरण) से पराधीन होकर संसार चक्र में अवतीर्ण हुए यज्ञ-कर्म विधान में निष्णात शाण्डिल्य नाम के महर्षि का वंश है ।

टिप्पणी—जिस प्रकार भगवान् विष्णु भी ब्रह्मा के विश्व-व्यापार का विषय बन-कर इस संसार-चक्र में राम-कृष्ण आदि के रूप में अवतार लेते हैं उसी प्रकार देव-कोटिवाले महर्षि शाण्डिल्य को भी ब्रह्मा के द्वारा विश्व-व्यापार का विषय बना दिये जाने पर इस संसार-चक्र में फंसकर जन्म लेना पड़ा ।

श्रूयन्ते च यत्र श्रवणोचिताश्चन्दनपल्लवा इव केचिदनूचानाः शुचयः सत्यवाचो विरञ्चिवर्चसोऽर्चनीयाचारा ब्रह्मविदो ब्राह्मणाः । पुण्यजनाश्च न च ये लङ्कापुरुषाः, ससूत्राश्च न च ये लम्पटाः, प्रसिद्धाश्च न च ये लम्पाकाः, कामवर्षाश्च न च ये लंघनाः सन्मार्गस्य, नववयसोऽपि न च ये लम्बालकाः,

महाभारतिकाश्च न च ये रङ्गोपजीविनः, सेविताप्सरसोऽपि न च ये रम्भयान्विताः।

सुधा—श्रूयन्त इति। च=तथा। यत्र=यस्मिन् वंशे। श्रवणोचिता—श्रवणे=आकर्णने उचिता=योग्याः। चन्दनपल्लवा इव=चन्दनस्य=मन्दारस्य पल्लवाः=दलानि इव, चन्दनपल्लवास्तु कर्णयोरवतंसीकरण योग्याः भवन्ति। केचित्=कतिपयाः। अनूचानाः=विद्वांसः शुचयः=पवित्राः। सत्यवाचः—सत्याः=तथ्याः वाचः=वाण्यः येषां ते। विरञ्चिवर्चसः—विरञ्चेः=ब्रह्मणः वर्चसा समवर्चः तेजः येषां ते। अर्चनीयाचाराः—अर्चनीयाः=पूजनीयाः आचाराः=आचरणानि येषां ते। ब्रह्मविदः—ब्रह्म जानन्तीति ब्रह्मविदः=ब्रह्मज्ञाः ब्राह्मणाः=विप्राः। श्रूयन्ते=आकर्ण्यन्ते। तथा। ये=ये ब्राह्मणाः। पुण्यजनाः—पुण्याः=पवित्राः जनाः=लोकाः। लङ्कापुरुषाः लङ्कायाः पुरुषाःजनाः=राक्षसाः न। ससूत्राः—सूत्रैः=यज्ञोपवीतैः सहिता=ब्रह्मसूत्रधारिणः। लम्पटाः न=धूर्तपुरुषाः न। प्रसिद्धाः—प्रकर्षेण सिद्धाः ख्याताः। लम्पाकाः=नीचाः न। कामवर्षाः—कामं=यथेप्सं वर्षन्तीति=ददतीति=अभिमतदातारः। अलं घनाः=पर्याप्तमेघाः न। न च सन्मार्गस्य सुपथः लङ्घनाः=उल्लंघनकर्त्तारः। नववयसः अपि नवम् वयः नूतनमायुः येषां ते=अल्पावस्थाः अपि। लम्बालकाः—लम्बाः प्रलम्बमानाः अलकाः केशाः येषां ते=शिशवः न। महाभारतिका—महान्तः भारताख्यायकाः अपि। रङ्गोपजीविनः=नाट्यशास्त्रोपजीविनः नटाः न। सेविताप्सरसः अपि—सेवितानि अप्सरांसि=जलतड़ागानि यैस्तथाविधाः अपि रम्भयान्विताः रम्भाद्यप्सरायुक्ताः न। अथवा अरम्=अत्यन्तम् भयान्विताः=भयभीताः न। (सन्ति)।

हिन्दी—जहां (जिस शांडिल्यवंश में) कानों पर लगाये जानेवाले चन्दन-पल्लवों के समान प्रिय, कतिपय विद्वान्, पवित्र, सत्यवादी ब्रह्मा के तेज के समान तेजस्वी, पूजनीय आचरणवाले ब्रह्मज्ञानी सुने जाते हैं। तथा वे पुण्य लोग हैं, लङ्का पुरुष राक्षस नहीं, ब्रह्मसूत्र (यज्ञोपवीत) धारण किये रहते हैं, पर धूर्त्त पुरुष नहीं है, सुविख्यात होते हुए भी लम्पाक (नीच) नहीं हैं, अभिमत फल देनेवाले हैं पर उचित मार्ग का उल्लंघन करनेवाले नहीं हैं, नूतन आयुवाले होते हुए भी लटाएँ छिटकानेवाले बालक नहीं हैं। महाभारत के आख्यान सुनानेवाले हैं पर नाटक आदि पर जीविका निर्वाह करनेवाले नट नहीं हैं, तड़ागों के जल का सेवन करनेवाले हैं रम्भा आदि अप्सराओं के मोह में फँसनेवाले नहीं हैं।

किं बहुना—

> जानन्ति हि गुणान्वक्तुं तद्विधा एव तादृशाम्।
> वेत्ति विश्वंभरा भारं गिरीणां गरिमाश्रयम्॥ १८॥

अन्वयः—तद् विधा एव तादृशाम् गुणान् वक्तुम् जानन्ति । हि विश्वंभरा गिरीणाम् गरिमाश्रयम् भारम् वेत्ति ॥ १८ ॥

सुधा—जानन्तीति । तद्विधाः एव=तादृशाः, उपर्युक्तगुणयुक्ताः एव जनाः । तादृशाम्=उपर्युक्तगुणसम्पन्नानाम् जनानाम् । गुणान्=वैशिष्ट्यान् । वक्तुम्=वर्णयितुम् । जानन्ति=विदन्ति । हि=यतः । विश्वम्भरा = विश्वम्=जगद् भरतीति = भूमिः । गिरीणाम्=महीधराणाम् । गरिमाश्रयम्-गरिमायाः=गुरुतायाः आश्रयम् । भारम्=गुरुत्वम् । वेत्ति जानाति ॥ १८ ॥

हिन्दी—अधिक कहने से क्या—उपर्युक्त गुणों से सम्पन्न व्यक्ति ही उस प्रकार के गुणों से युक्त पुरुषों के गुणों को कहना—वर्णन करना जानते हैं। क्योंकि विश्व का भार धारण करनेवाली (विश्वंभरा) पृथ्वी ही पर्वतों के गरिमामूलक भार को जानती है ॥ १८ ॥

तेषां वंशे विशदयशसां श्रीधरस्यात्मजोऽभूद्-
देवादित्यः स्वमतिविकसद्वेदविद्याविवेकः ।
उत्कल्लोलां दिशि दिशि जनाः कीर्तिपीयूषसिन्धुं
यस्याद्यापि श्रवणपुटकैः कूणिताक्षाः पिबन्ति ॥ १९ ॥

अन्वयः—विशदयशसाम् तेषाम् वंशे श्रीधरस्य आत्मजः स्वमति विकसद् वेदविद्याविवेकः देवादित्यः अभूत् । यस्य अद्य अपि कूणिताक्षाः उत्कल्लोलाम् कीर्तिपीयूषसिन्धुम् श्रवणपुटकैः पिबन्ति ॥ १९ ॥

सुधा—तेषामिति । विशदयशसाम्—विशदानि यशांसि येषां तेषां=पृथुलकीर्त्तीनाम् । तेषाम्=उपर्युक्तानाम् । वंशे=कुले । श्रीधरस्य=श्रीधरनाम्नः ब्राह्मणस्य आत्मजः—आत्मना जातः=औरस पुत्रः । स्वमतिविकसद्वेदविद्याविवेकः—स्वस्य मतिः स्वमतिः, तया विकसन्=स्फुटन् वेदविद्यायाः=वेदशिक्षायाः विवेकः ज्ञानम् यस्य तथा । देवादित्यः=देवादित्याभिधः विप्रः । अभूत्=अभवत् । यस्य=देवादित्यस्य । अद्यापि = सम्प्रत्यपि । कूणिताक्षाः-कूणितानि=निमीलितानि = नेत्राणि, अक्षीणि येषां ते । जनाः = पुरुषाः । उत्कल्लोलाम्=उद्वेलिताम् । कीर्तिपीयूषसिन्धुम्—पीयूषस्य=अमृतस्य, सिन्धुः = सागरः, कीर्तिरेव पीयूषसिन्धुस्ताम् । दिशि दिशि=काष्ठासु । श्रवणपुटकैः श्रवणानि एव पुटकानि=कर्णपुटकानि, तैः । पिबन्ति=पानं कुर्वन्ति । मन्दाक्रान्ता वृत्तम् । तद्यथा—मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ मयुग्मम् ॥ १९ ॥

हिन्दी—उपर्युक्त पृथुल कीर्तिवाले उनके वंश में श्रीधर के पुत्र, अपनी बुद्धि से वेदविद्या के ज्ञाता देवादित्य हुए जिनकी आज भी आँख मूंदकर लोग उमड़ती हुई कीर्तिरूपी सुधा-सिन्धु को कानरूपी पुटकों (दोनों) से पान कर रहे हैं ॥ १९ ॥

तैस्तैरात्मगुणैर्येन त्रिलोक्यास्तिलकायितम् ।
तस्मादस्मि सुतो जातो जाड्यपात्रं त्रिविक्रमः ॥ २० ॥

अन्वयः—येन तैः तैः आत्मगुणैः त्रैलोक्याः तिलकायितम् । तस्मात् जाड्यपात्रम् त्रिविक्रमः सुतः जातः अस्मि ॥ २० ॥

सुधा—तैस्तैरिति । येन=येन देवादित्यब्राह्मणेन । तैः तैः=उपरि कथितैः । आत्मगुणैः=आत्मनः गुणैः=स्वगुणैः । त्रैलोक्याः=त्रिभुवनस्य । तिलकायितम्=तिलकसदृशं कृतम् । तस्मात्=देवादित्यात् । जाड्यपात्रम् जाड्यम्=अज्ञानम्, तस्य पात्रम्=भाजनम्=मूर्खः : त्रिविक्रमः = त्रिविक्रमनाम्ना ब्राह्मणः अहम् । सुतः=पुत्रः । जातः = उत्पन्नो बभूव ॥ २० ॥

हिन्दी—जिन देवादित्य ने अपने को उन उपर्युक्त गुणों से त्रिभुवन का तिलक बना दिया उन्हीं से जड़ता का भाजन, मूर्ख बना हुआ मैं त्रिविक्रम नामक जन्मा हूँ ॥ २० ॥

सोऽहं हंसायितुं मोहाद् बकः पङ्गुर्यथेच्छति ।
मन्दधीस्तद्वदिच्छामि कविवृन्दारकायितुम् ॥ २१ ॥

अन्वयः—यथा पङ्गुः बकः मोहात् हंसायितुम् इच्छति तद्वत् सः मन्दधीः अहम् कविवृन्दारकायितुम् इच्छामि ॥ २१ ॥

सुधा—सोऽहमिति । यथा=येन प्रकारेण । पङ्गुः=भग्नपादः । बकः=बलाक पक्षी । मोहात्=अज्ञानात् । हंसायितुम्=हंसवदाचरितुम् शोभनगत्या चलितुम् । इच्छति=अभिलषति । तद्वत्=तथैव । सः = तादृशः । मन्दधीः=मन्दा=क्षीणा धीः=बुद्धिर्यस्य सः=क्षीणबुद्धिः । अहम्=त्रिविक्रमः । कविवृन्दारकायितुम्=कवीनाम्=सूरीणाम् वृन्दारकम्=समूहः, तस्य नेतृत्वं कर्त्तुम् । इच्छामि=अभिलषामि ॥ २१ ॥

हिन्दी—जिस प्रकार लंगड़ा बगुला अज्ञानता से हंस के समान सुन्दर चाल चलना चाहता है उसी प्रकार मन्द बुद्धिवाला मैं त्रिविक्रम कविवृन्द में अग्रगण्य बनना चाहता हूं ॥ २१ ॥

भङ्गश्लेषकथाबन्धं दुष्करं कुर्वता मया ।
दुर्गस्तरीतुमारब्धो बाहुभ्यामम्भसां पतिः ॥ २२ ॥

अन्वयः—दुष्करम् भङ्गश्लेषकथाबन्धम् कुर्वता मया बाहुभ्याम् दुर्गः अम्भसां पतिः तरीतुम् आरब्धः ॥ २२ ॥

सुधा—भङ्गश्लेषेति । दुष्करम्=अतिकठिनम् । भङ्गश्लेषकथाबन्धम् भङ्गश्लेषेण=तन्नाम्नालङ्कारेणयुतम् कथाबन्धम् = कथात्मकं काव्यम् । कुर्वता = रचयता । मया = त्रिविक्रमेण कविना । बाहुभ्याम्=दोर्भ्याम् । दुर्गः=दुस्तीर्णः । अम्भसाम्=अपाम् पतिः=प्रभुः सागरः तरीतुम्=पारे गन्तुम् । आरब्धः=प्रारब्धः । अत्रोत्प्रेक्षालङ्कारः ॥ २२ ॥

हिन्दी—अत्यन्त कठिन भङ्गश्लेष से युक्त कथात्मक काव्य की रचना करते हुए मैंने (त्रिविक्रम भट्ट ने) मानों दोनों बाँहों से दुस्तर समुद्र को पार करना प्रारम्भ कर दिया है ।। २२ ।।

उत्फुल्लगल्लैरालापाः क्रियन्ते दुर्मुखैः सुखम् ।
जानाति हि पुनः सम्यक्कविरेव कवेः श्रमम् ।। २३ ।।

अन्वयः—उत्फुल्लगल्लैः दुर्मुखैः सुखम् आलापाः क्रियन्ते । हि पुनः कवेः श्रमम् कविः एव सम्यक् जानाति ।। २३ ।।

सुधा—उत्फुल्लेति । उत्फुल्लगल्लैः—उत्=उत्कर्षेण फुल्लैः—प्रफुल्लैर्गल्लैः=कण्ठैः । दुर्मुखैः=दुष्टानि मुखानि येषां तैः=दुराननैः निन्दितपुरुषैः । सुखम्=सरलतया आलापाः= प्रलापाः । क्रियन्ते=विधीयन्ते । हि=यतः । कवेः = सूरेः । श्रमम् = परिश्रमम् काव्य, निर्माणम् । कविः एव=सूरिरेव । सम्यक्=समीचीनम् जानाति वेत्ति ।। २३ ।।

हिन्दी—गला फाड़-फाड़कर निन्दा करनेवाले पुरुष आनन्द से आलाप (दूसरों की निन्दा) करते रहते हैं क्योंकि किसी भी कवि का किया गया परिश्रम (काव्य निर्माण-श्रम) कवि ही भलीभाँति जानता है ।। २३ ।।

संगता सुरसार्थेन रम्या मेरुचिराश्रया ।
नन्दनोद्यानमालेव स्वस्थैरालोक्यतां कथा ।। २४ ।।

अन्वयः—सुरसार्थेन सङ्गता रम्या मेरुचिराश्रया नन्दनोद्यानमाला इव कथा स्वस्थैः आलोक्यताम् ।। २४ ।।

सुधा—सङ्गतेति । सुरसार्थेन—शोभनो रसः सुरसः शृङ्गारादिः यत्र तथोक्तेन अर्थेन । सङ्गता=उचिता, पक्षे—सुराणाम्=देवानाम् सार्थो वृन्दम्, तेन सङ्गता=कृत-सङ्गा । रम्या=रमणीया । मे = मम । रुचिराश्रया—रुचिरः = रम्यः आश्रयः=नलो-पाख्यानलक्षणः यस्याः सा, पक्षे मेरुः=सुमेरुपर्वतः, चिरम् = बहुकालम् यावद् आश्रयः यस्यास्तथा । नन्दनोद्यानमाला इव—नन्दन नाम्नः देवराजेन्द्रस्य उद्यानमाला=श्रीराम-श्रेणिरिव । आनन्ददायिनी कथा=सुखदायिनलोपाख्यानम् । स्वस्थैः = स्वस्थचित्तजनैः पक्षे—स्वः=स्वर्गम्, तस्मिंस्तिष्ठन्तीति तैः=सुरैः । आलोक्यताम्=विमृश्यताम् ।। २४ ।।

हिन्दी—(कथा पक्ष में) सुन्दर शृङ्गारादि रसार्थपूर्ण रमणीय मेरी रुचिर नला-ख्यान पर आधारित नन्दन वन के समान मनोहारिणी कथा को स्वस्थचित्त व्यक्ति देखें, विमर्श करें ।। २४ ।।

(नन्दनवन पक्ष में) देववृन्द से युक्त रमणीय तथा सुमेरु पर्वत पर चिरकाल तक आश्रय बनानेवाली प्रसिद्ध नन्दनवन श्रेणी को स्वर्ग में रहनेवाले देवता देखते हैं ।।२४।।

टिप्पणी—काव्य में रस का औचित्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होता है । भङ्गश्लेषयुक्त मनोहर काव्य बिना रसौचित्य के नहीं लिखा जा सकता है । रसौचित्ययुक्त लिखा गया

प्रसिद्ध काव्य रस की उपनिषद् जैसा मनोरम बन जाता है। यथा—अनौचित्यादृते नान्यद् रसभङ्गस्य कारणम्। प्रसिद्धौचित्यबन्धो हि रसस्योपनिषद् परा ॥ २४॥

उदात्तनायकोपेता गुणवद्वृत्तमुक्तका।
चम्पूश्च हारयष्टिश्च केन न क्रियते हृदि॥ २५॥

अन्वयः—उदात्तनायकोपेता, गुणवद्वृत्तमुक्तका चम्पूः हारयष्टिः च केन हृदि न क्रियते॥ २५॥

सुधा—उदात्तेति। उदात्तनायकोपेता—उदात्तेन=महात्मना नायकेन=प्रधानपात्रेण (नलेन) उपेता = युक्ता, पक्षे–उज्ज्वलहारमध्यमणिसूत्रग्रथिता। गुणवद्वृत्तमुक्तका—गुणवद्=प्रसादादि गुणयुक्तम् वृत्तम्=छन्दोबद्धम्। मुक्तकम् = गद्यात्मकञ्च यस्यां सा, पक्षे—गुणवत्यः=तन्तुमत्यः वृत्तमुक्ताः = वर्त्तुलमौक्तिकानि यस्यां सा। चम्पूः=गद्यपद्यमयी कथा। च=तथा। हारयष्टिः=मालालता। केन = केन पुरुषेण। हृदि = चित्ते, वक्षसि वा न क्रियते=न धार्यते, अपि तु सर्वैरेव धार्यत इत्याशयः॥ २५॥

हिन्दी—(चम्पू पक्ष में) उदात्त नायक (नल) से युक्त प्रसादादि गुणों, छन्दों तथा मुक्तक (गद्यात्मक) से परिपूर्ण चम्पू को माला के समान कौन व्यक्ति हृदय में धारण नहीं कर लेता है।

(हार पक्ष में) उज्ज्वल मध्यमणि से ग्रथित, तन्तुओं में पिरोई गई मोतियोंवाली माला को कौन व्यक्ति अपने वक्षःस्थल पर धारण नहीं करता है?॥ २५॥

अस्ति समस्तविश्वंभराभोगभास्वल्ललामलीलायमानः समानः सेव्यतया नाकलोकस्य, ग्राम्यकविकथाबन्ध इव नीरसस्य मनोहरः, भीम इव भारतालंकारभूतः, कान्ताकुचमण्डलस्पर्श इवाग्रणीः सर्वविषयाणाम्। अनधीतव्याकरण इवादृष्टप्रकृतिनिपातोपसर्गलोपवर्णविकारः पशुपतिजटाबन्ध इव विकसितकनककमलकुवलयोच्छलितरजःपुञ्जपिञ्जरितहंसावतंसया प्रचुरचलच्चकोरचक्रवाककारण्डवमण्डलीमण्डिततीरया भगीरथभूपालकीर्तिपताकया स्वर्गगमनसोपानवीथीयमानरिङ्गत्तरङ्गया गङ्गया पुण्यसलिलैः प्लावितश्चन्द्रभागालङ्कृतैकदेशश्च, सारः सकलसंसारचक्रस्य, शरण्यः पुण्यकारिणाम्, आरामो रामणीयककदलीवनस्य, धाम धर्मस्य, आस्पदं सम्पदाम्, आश्रयः श्रेयसाम्, आकरः साधुव्यवहाररत्नानाम्, आचार्यभवनमार्यमर्यादोपदेशानामार्यावर्तो नाम देशः॥

सुधा—अस्तीति। समस्त विश्वम्भराभोगभास्वल्ललामलीलायमानः—समस्तायाः= सम्पूर्णाया विश्वम्भरायाः=पृथिव्याः भोगः, तथा भास्वद्=प्रकाशवत् ललामः=सुन्दरः, लीलायमानः च=शोभायमानश्च तथा। नाकलोकस्य=स्वर्गलोकस्य। सेव्यतया सेवितुं योग्यः सेव्यस्तस्यभावः सेव्यता, तया=सेव्यत्वेन। समानः=सदृशः। ग्राम्यकविकथाबन्धः इव—ग्राम्याणाम्=सामान्य जनानाम् कवीनाम्=सूरीणाम्, कथाबन्धः इव कथात्मक काव्यम् इव। नीरसस्य मनोहरः—नीरसस्य=अरसिकजनस्य मनोहरः=मनोरमः

अथवा नीरेण = जलेन शस्येन = अन्नेन च मनोरमः। भीम इव = वृकोदरसदृशः। भारतालङ्कारभूतः—भारतस्य = महाभारतनाम्नः काव्यस्य, अथवा भारतवर्षस्य, अलङ्कारभूतः = आभूषणसदृशः कान्ताकुचमण्डलस्पर्श इव—कान्तायाः = प्रियायाः कुचमण्डलस्य पयोधर वृत्तस्य स्पर्शसदृशः। सर्वविषयाणाम् = सर्वानन्दानाम् पक्षे—सर्वदेशानाम्। अग्रणी = अग्रगण्यः। अनधीतव्याकरण इव—न अधीतं व्याकरणं येन तथा = अपठित पदशास्त्रसमः। अदृष्टप्रकृतिनिपातोपसर्गलोपवर्णविकारः—प्रकृतिप्रत्यय निपात उपसर्गलोपवर्णविकृत्यनभिज्ञः, अथवा प्रकृतिः = प्रजा, निपातः = पतन उपसर्गः = उपद्रवः, लोप-वर्ण-विकारः = लोपवर्णव्यवस्था विकृतिः पशुपति जटाबन्ध इव—पशुपतेः = शिवस्य जटाबन्धः इव = जटाजूट सदृशः। विकसितकनककमलकुवलयोच्छलित रजःपुञ्जपिञ्जरितहंसावतंसया—विकसितानि उत्फुल्लानि कनकसदृशानि कमलानि पीतपद्मानिकुवलयानि = नीलकमलानि च तेषामुच्छलितं = स्रस्तम् यद् रजःपुञ्जम् = केसर राशिः, तेन पिञ्जरितम् = पीतवर्णीकृतम् तथा, तया हंसावतंसया = कलहंसतया। प्रचुर चलच्चकोरचक्रवाक कारण्डवमण्डलीमण्डिततीरया—प्रचुराणाम् = बहुलानाम् चलताम् = चञ्चलानाम् चकोराणाम् चक्रवाकानाम् कारण्डवानाञ्च मण्डली, तया मण्डितं = शोभितम् तीरम् = तटम् यस्यास्तया। भगीरथभूपालकीर्तिपताकया—भगीरथस्य = तन्नाम्नः भूपालस्य = राज्ञः कीर्तिः = प्रशंसा एव पताका = तोरणम्, तया। स्वर्गगमनसोपान वीथीयमानरिङ्गत्तरङ्गया—स्वर्गेगमनं स्वर्गगमनम् = नाकप्रयाणम्, तस्य सोपानम् = सोपान मार्गम् तस्य वीथीयमानाःवीथीरिवसम्भूता रिङ्गास्तरङ्गाः = चञ्चलवीचयःयस्यास्तया। गङ्गया = जाह्नव्या पुण्यैः = पवित्रैः। सलिलैः = जलैः। प्लावितः जलपूरितः। चन्द्रभागालङ्कृतैकदेशः—चन्द्रभागानद्याः अलङ्कृतः = शोभितः एकदेशः = एकभागः यस्य तथा। सकलसंसारचक्रस्य—संसारमेव चक्रम्, संसारचक्रम्, सकलम् = सम्पूर्णम् यत् संसारचक्रम् तत् = निखिलविश्वचक्रम्, तस्य। सारः = तत्वभूतः। पुण्यकारिणाम् = सुकृतकारिणाम् शरण्यः = शरणभूतः रमणीयककदलीवनस्य—रमणीयकम् = सुन्दरम् यत् कदली वनम् = रम्भारण्यम् तत् तस्य। आरामः = उद्यानम्। धर्मस्य = धर्मकर्मणः धामः = भूमिः सम्पदाम् = विभवानाम्, आस्पदम् = स्थानम्। श्रेयसाम् = कल्याणानाम्। आश्रयः = आश्रयस्थानम्। साधुव्यवहाररत्नानाम्—साधूनाम् सत्पुरुषाणाम् व्यवहाराः = आचाराः, त एव रत्नानि तेषाम् आकरः = निधिः। आर्यमर्यादोपदेशानाम्—आर्याणाम् = श्रेष्ठानाम् मर्यादा, तासामुपदेशाः = शिक्षणानि तेषाम्। आचार्यभवनम् = गुरुकुलम्। आर्यावर्त्तनाम-आर्यावर्त्ताभिधः। देशः = भूभागः अस्ति = वर्तते।

हिन्दी—सम्पूर्ण पृथ्वीमण्डल तथा प्रकाशयुक्त सुन्दर शोभायमान, नागलोक के समान सेवनीय, ग्रामीण (सामान्य) कवियों के कथात्मक काव्य के समान नीरस लोगों को भी मनोहर लगनेवाला (नीर तथा फस्लों से सुन्दर लगनेवाला) महाभारत के भीम के समान अलङ्कार बना हुआ (भीम के समान भारत की शोभा बना हुआ) कान्तापयोधरमण्डल के स्पर्श के समान सभी विषयों (आनन्दों अथवा सभी देशों) में अग्रगण्य, बिना व्याकरण के पढ़े प्रकृति प्रत्यय, निपात, उपसर्ग लोप

तथा वर्ण विकार को न देखा हुआ (प्रजा-पतन-उपद्रव लोप तथा वर्ण - व्यवस्था में किसी प्रकार का विकार न दिखलाई पड़नेवाला) भगवान् शिव के जटाजूट के समान विकसित पोत तथा नील कमलों से झड़ते हुए परागपुञ्ज से पीले बने सुन्दर हंसों के समान प्रतीत होनेवाली अत्यन्त चञ्चल चकोर चक्रवाक, सारसों के झुण्डों से शोभित तटवाली, राजा भगीरथ की कीर्तिपताका-सी बनी हुई, स्वर्ग पहुँचने की सीढ़ियोंवाली गलियों में लहराती हुई लहरोंवाली गंगा के द्वारा पवित्र जल से प्लावित चन्द्रवंश के समान शोभित एक भाग जो कि सम्पूर्ण संसार-चक्र का तत्वभूत, पुण्य जनों की शरण, सुन्दर कदली वन का उद्यान-सा बना हुआ, धर्म का धाम, सम्पदाओं का स्थान, कल्याण कार्यों का आश्रय, सद्व्यवहाररूपी रत्नों का खजाना तथा आर्यमर्यादाओं की शिक्षा देने का गुरुकुल-सा बना हुआ आर्यावर्त नाम का देश है।

टिप्पणी—आर्यावर्त्त देश हिमालय से दक्षिण तथा विन्ध्याचल से उत्तर (दोनों पर्वतों का मध्यभाग) जिसके पूर्व तथा पश्चिम में समुद्र है, आर्यावर्त कहलाता है जैसा कि मनुस्मृति में वर्णित है—

आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात् तु पश्चिमात्। तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्त्तं विदुर्बुधाः।

यस्मिन्ननवरतधर्मकर्मोपदेशशान्तसमस्तव्याधिव्यतिकराः पुरुषायुषजीविन्यः सकलसंसारसुखभाजः प्रजाः। तथाहि। कुष्ठयोगो गान्धिकापणेषु, स्फोटप्रवादो वैयाकरणेषु, सन्निपातस्तालेषु, ग्रहसंक्रान्तिर्ज्योतिःशास्त्रेषु, भूतविकारवादः सांख्येषु, क्षयस्तिथिषु, गुल्मवृद्धिर्वनभूमिषु, गलग्रहो मत्स्येषु गण्डकोत्थानं पर्वतवनभूमिषु, शूलसंबन्धश्चण्डिकायतनेषु दृश्यते न प्रजासु॥

सुधा--यस्मिन्निति। यस्मिन्=यस्मिन्नार्यावर्तदेशे। अनवरतधर्मकर्मोपदेशशान्तसमस्तव्याधिव्यतिकराः--अनवरतम्=निरन्तरम्। धर्मकर्मोपदेशैः=धर्मकर्मशिक्षणैः शान्ताः=विरताः समस्ताः निखिलाः व्याधिव्यतिकराः=विपत्तिबाधाः यासां ताः। पुरुषायुषजीविन्यः—पुरुषस्यायुः प्रमाणं जीवन्तीति ताः। सकल संसार सुखभाजः—सकलस्य=अखिलस्य संसारस्य=विश्वस्य सुखम्=आनन्दम् भजन्तीति तथाभूताः। प्रजाः वसन्ति। तथा हि=यतो हि—गान्धिकापणेषु—गान्धिकानाम्=सुगन्धिविक्रेतॄणाम् आपणेषु=विपणेषु। कुष्ठयोगो—कुष्ठम्=ओषधिविशेषः तस्य योगो दृश्यते, न च प्रजासु। वैयाकरणेषु=व्याकरणशास्त्रज्ञेषु स्फोटवादः=व्याकरणप्रसिद्ध-शब्दब्रह्मवादः (दृश्यते) न तु स्फोटस्य=पिटकस्य प्रवादः। तालेषु=सङ्गीते दत्ततालध्वनिषु। सन्निपातः=उभयहस्तयोजनम् न तु रोगविशेषः (दृश्यते)। ज्योतिःशास्त्रेषु=गणनाशास्त्रेषु। ग्रहसंक्रान्तिः—ग्रहाणाम्=सूर्यचन्द्रादिनक्षत्राणाम् संक्रान्तिः=सङ्क्रमणम्। सांख्येषु=साख्यदर्शनेषु भूतविकारवादः=भूतानि=पृथिव्यप्तेजवाय्वादयस्तेषां विकारस्तेषु वादः दृश्यते न तु भूतप्रेतादिविकारवादः। तिथिषु प्रतिपदादिषु क्षयः=नाशः। वनभूमिषु=वनस्थलीषु। गुल्मवृद्धिः=गुल्मलतादीनां वर्द्धनम्। न तु गुल्मरोगस्य वर्द्धनम्। मत्स्येषु=मीनेषु। गलग्रहः=कण्ठबन्धः नत्वन्यत्र गल-ग्रह रोगः। पर्वतवनभूमिषु=भूधरारण्यस्थलेषु। गण्डकोत्थानम्=गण्डकानाम्=गण्डकपशुविशेषाणाम् उत्थानम्=उत्प्लवनम्,

नत्वन्यत्र ह्रस्वस्फोटकम् । चण्डिकायतनेषु=चण्डिकाया:=देव्याः आयतनेषु=मन्दिरेषु । शूलासम्बन्धः—शूलम्=आयुधविशेषः, तस्य सम्बन्धः=छेदनादिकम् न तु शूलम्=पीडा रोगः, तस्य सम्बन्धः । प्रजासु=जनेषु । दृश्यते=अवलोक्यते ।

हिन्दी—जिस (आर्यावर्त देश) में निरन्तर धर्म-कर्म के उपदेशों से सब प्रकार की (दैहिक-दैविक-भौतिक) विपत्तियों को शान्त किये हुए पुरुष-प्रमाण (सौ वर्ष) तक जीवित रहनेवाली, सम्पूर्ण सुखों का भोग करनेवाली प्रजा थी क्योंकि (वहाँ) कुष्ठयोग (एक प्रकार की ओषधि) केवल सुगन्ध बेचनेवालों की दूकानों पर ही दिखलाई पड़ती है (प्राणियों में कुष्ठ रोग नहीं) । स्फोटवाद (शब्द ब्रह्मवाद) व्याकरण के ज्ञाताओं में (सामान्य व्यक्ति में स्फोटवाद—फोड़ा-फुन्सी का होना नहीं), ताल (लय-यति संगीत में) सन्निपात (एक साथ दोनों हाथ बाँधना या बजाना) सन्निपात रोग नहीं । ग्रहों—सूर्यादि की संक्रान्ति ज्योतिषशास्त्र में (कोई प्राणी बन्धन से आक्रान्त नहीं), भूतविकारवाद अर्थात् पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश आदि तत्त्वों में विकृति सांख्यदर्शन में ही (प्राणियों में भूत-प्रेत आदि का विकार नहीं), क्षय प्रतिपदादि तिथियों में ही (प्राणियों में क्षयरोग नहीं), गुल्म-लतावृद्धि वनभूमि में ही (प्राणियों में गुल्म रोग नहीं), गल-ग्रहण (गला फाँसना) मछलियों में ही (अन्य प्रजा में फाँसी लगाना नहीं), गण्डक (गैंड़ा पशु) उत्थान (उठना) पर्वतीय वनस्थलियों में (प्रजा में फोड़ों का गण्डस्थल पर निकलना नहीं), शूल सम्बन्ध (शूल नामक अस्त्रविशेष का सम्बन्ध) चण्डी देवी के मन्दिरों में ही दिखलाई पड़ता है, प्रजाजनों में नहीं दिखलाई पड़ता है ।

टिप्पणी—स्फोटवाद—व्याकरणशास्त्र में प्रसिद्ध शब्द ब्रह्मवाद । यह वाक्यस्फोट तथा पदस्फोट दो प्रकार का होता है ।

सन्निपात—सङ्गीतशास्त्र में सन्निपात का अर्थ है दोनों हाथों को मिलाकर ताली बजाना । यथा—यस्यां दक्षिणहस्तेन तालं वामेन योजयेत् । उभयोर्हस्तयोः पातः सन्निपातः स उच्यते ।

स्वास्थ्य विज्ञान में वात-पित्त-कफ का एक साथ कुपित होना सन्निपात कहलाता है ।

संक्रान्ति—सूर्य एक वर्ष या १२ मासों में क्रमशः मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन राशियों पर संक्रमण (छलांग) करता है । इस प्रकार सूर्य १२ मासों में पृथ्वी की एक परिक्रमा कर लेता है । ज्योतिःशास्त्र में इसी को संक्रान्ति कहते हैं ।

भूतवाद—सांख्यदर्शन में प्रधान—महद्, अहंकार, पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, तन्मात्राएँ तथा उनके रूप, रस, गन्ध, स्पर्श तथा शब्द पञ्चमहाभूत, दश इन्द्रियाँ एवं मन यह २४ तत्त्व होते हैं इनमें २५वाँ पुरुष होता है जो कि प्रकृति तथा विकृति से पृथक् होता है । इन सबका तर्क-वितर्क ही भूतवाद कहलाता है ।

यत्र चतुरगोपशोभिताः सङ्ग्रामा इव ग्रामाः, तुङ्गसकलभवनाः सर्वत्र नगा इव नगरप्रदेशाः, सदाचरणमण्डनानि नूपुराणीव पुराणि, सदानभोगाः प्रभञ्जना

इव जनाः, प्रियालपनसाराणि यौवनानीव वनानि, विटपिहिताश्चेटिका इव वापिकाः, निर्वृतिस्थानानि सुकलत्राणीवेक्षुक्षेत्रसत्त्राणि, जलाविलक्षणाः पशुपुरुषा इवाप्रमाणास्तडागभागाः, कुपितकपिकुलाकुलिता लङ्केश्वरकिंकरा इव भग्नकुम्भकर्णघनस्वापाः कूपाः, पीवरोधसः सरित इव गावः, सतीव्रतापदोषाः सूर्यद्युतय इव कुलस्त्रियः ॥

सुधा—यत्रेति । यत्र=यस्मिन् देशे । चतुरगोपशोभिताः—च=तथा तुरगैः=अश्वैः, उपशोभिताः=अलङ्कृता । सङ्ग्रामाः=सङ्गराः इव, ग्रामाः=ग्राम्यावासाः, पक्षे—चतुरैः=कुशलैः गोपैः=गोपालैः शोभिताः=अलङ्कृताः, सङ्ग्रामा इव ग्रामाः । सर्वत्र=सर्वेषु स्थानेषु । नगाः पर्वता इव । तुङ्गसकलभवनाः तुङ्गानि=उन्नतानि सकलानि=निखिलानि भवनानि=हर्म्याणि येषु तथा नगरप्रदेशाः=नगरस्थानानि । सदाचरणमण्डनानि सदा=सर्वदा चरणमण्डनानि=पादशोभितानि, अथवा सताम् सज्जनानाम् आचरणैः=आचारकर्मभिः मण्डनानि=शोभितानि नूपुराणि । विशेषपादाभूषणानि इव । पुराणि=नगराणि । सदानभोगा—सदा=सर्वदा नभसि=आकाशे गच्छतीति = आकाशगामिनः अथवा दानभोगाभ्यां सहिताः=सदानभोगाः । प्रभञ्जना इव=महावाता इव । जनाः = लोकाः प्रियालापसाराणि—प्रियायाः = दयितायाः आलपनम् आलापः = वार्त्ताकिरणम् तदेव सारा, यत्र तानि, अथवा—प्रियाल-पनस आदि फलानामुपलब्धि युतानि । यौवनानि=तारुण्यानि इव वनानि=अरण्यानि । विटपिहिताः=विटैः=नीचजनैः पिहिताः = आवृताः, अथवा विटपिनाम्=वृक्षाणाम् हिताः = हितकराः । चेटिकाः=चेट्यः इव । वापिका=वावल्यः इति भाषायाम् । निवृत्तिस्थानानि=मुखस्थलानि । सुकलत्राणि इव=सुकान्ता इव । इक्षुक्षेत्रसत्राणि—इक्षुक्षेत्रेषु=इक्षुदण्डकेदारेषु, सत्राणि=दानशालाः । जलाविलक्षणाः—जलैः आविलाः = नीरन्ध्राः पूर्णाः क्षणाः=खातकानि यत्र तथा, अथवा जलानि विलक्षणानि सन्ति यत्र तथाभूताः, अथवा जड़ा=पशुतुल्याः विलक्षणाः=लक्षणहीनाः, तथा । पशुपुरुषा इव=पशुनरसमाः । प्रमाणाः=प्रमाणयुक्ताः । तडागभागाः=सरोभागाः । कुपितकपिकुलाकुलिताः—कपीनां कुलम्, कपिकुलम्=वानरयूथम्, तेन आकुलिताः = पीड़िताः । लङ्केश्वरकिङ्करा इव—लङ्कायाः ईश्वरः=प्रभुः, लङ्केश्वरः=रावणः, तस्य किंकराः=सेवकाः इव । भग्नकुम्भकर्णघनस्वापाः—भग्नानि = नष्टानि, कुम्भकर्णस्य=तन्नाम्नः राक्षसस्य घनानि स्वपनानि, षण्मासाधिकशयनानि यत्र तथा । कूपाः । अथवा स्फुटितघटकण्ठाः, कूपाः । पीवरोधसः—पीवरं=स्थूलम् ऊधः=पयोधरस्थलम् यासाम्, तादृश्यः, अथवा पीवे=विशाले रोधसी=तटे यासां ताः । सरितः इव=नद्य इव । गावः=धेनवः । सतीव्रतापदोषाः=तीव्रतापदोषयुक्ताः अथवा तीव्रतापदोषेण सहिताः, अथवा सतीनाम् व्रतम् तस्य धारणेन अपदोषाः = दोषरहिता इव । कुलस्त्रियः=कुलीनाः वध्वः सूर्यतापद्युतय इव=सूर्यस्य तापः=उष्णत्वम् तस्य द्युतय इव कान्त्यः इव (सन्ति) ।

हिन्दी—जहाँ घोड़ों से सुशोभित संग्रामों के समान गाँव (चतुर ग्वालों से सुशोभित गाँव), सर्वत्र ऊँचे गजकलभों से संयुक्त वनोंवाले पहाड़ों, जैसे नगर (ऊँचे-ऊँचे

सम्पूर्ण भवनोंवाले पहाड़ सदृश नगर), उत्तम आचरणों से शोभित (सदैव पाँवों को शोभित करनेवाले नूपुरों के समान) पुर, सदैव आकाश में चलनेवाली आँधी के समान (दान तथा भोग से युक्त) लोग (जन), कान्ताओं के वार्तालापरूपी तत्त्ववाले यौवन के समान (प्रियाल और पनस फलों के) वन, विट (लम्पट) पुरुषों से घिरी हुई चेटी (सेविकाओं) के समान (वृक्षों की हितकर) बावली, निवृत्ति के स्थान, सुन्दर कलत्रजनों (स्त्रियों) के समान, गन्ने के खेतों में होनेवाले सत्र (निर्बाध रसप्याऊ) पशुओं के समान लक्षणहीन (अच्छे जलवाले अथवा जल से बन्द हुए रन्ध्रोंवाले), पशुओं के समान ऊँचे बेडौल पुरुषों की नाप के तालाब भाग, कुपित वानरसमूह के समान व्याकुल लङ्केश्वर रावण के अनुचरों के समान, फूटे कण्ठवाले सुन्दर गहरे जलवाले घड़ों से समान कुएँ, विशाल तटवाली नदियों के समान, स्थूल पयोधरस्थलवाली गायें, तीव्रतापरूपी दोषोंवाली सूर्यकान्ति के समान, सती व्रत से मुक्तदोषोंवाली कुलाङ्गनाएँ हैं।

यत्र च मनोहारिसारसद्वन्द्वास्तत्पुरुषेण द्विगुना चाधिष्ठिताः कादम्बरीगद्यबन्धा इव दृश्यमानबहुव्रीहयः केदाराः ।।

सुधा—यत्रेति । च=तथा । यत्र=यस्मिन् देशे । मनोहारि सारसद्वन्द्वाः—मनोहारीणि सारसानां द्वन्द्वानि येषु ते, अथवा मनोहारिणा सारेण द्वन्द्वसमासेन सहिताः । तत्पुरुषेण=तत्स्वामिना । द्विगुना=द्वौ गावौ=बलीवर्दौ यस्य तेन, अथवा द्विगुसमासेन । अधिष्ठिताः=समन्विताः । कादम्बरी गद्यबन्धा इव—कादम्बरी ग्रन्थस्य गद्यबन्धाः=गद्य लिखिताः प्रबन्धाः इव । दृश्यमानबहुव्रीहिनः—दृश्यमानाः बहवः व्रीहयः=बहुशस्य सम्पदः येषु ते । केदाराः=क्षेत्राणि । सन्ति ।

हिन्दी—जहाँ मनोरम सारस पक्षियों के जोड़े, खेतों के स्वामी एवं उसके दो बैलों के जुट से समन्वित बहुत से धानों को फस्लों से भरपूर दिखाई पड़ने वाले खेत उसी प्रकार हैं जैसे सत्पुरुष तथा द्विगु समास से युक्त और बहुब्रीहि समासों की छटा कादम्बरी ग्रन्थ का गद्यबन्ध है ।

किं बहुना—

नास्ति सा नगरी यत्र न वापी न पयोधरा ।
दृश्यते न च यत्र स्त्री नवापीनपयोधरा ।। २६ ।।

अन्वयः—यत्र सा नगरी नास्ति (यत्र) न वापी, न पयोधरा च नवापीनपयोधरा स्त्री न दृश्यते ।। २६ ।।

सुधा—नास्ति सेति । यत्र=यस्मिन् देशे । सा नगरी नास्ति=तादृशी नगरी नास्ति । यत्र न वापी=निपानम्, न पयोधरा=पयःप्रधान भूमिः । च=तथा नवा पीनपयोधरा= नवौ=नूतनौ पीनौ=स्थूलौ पयोधरौ=उरोजौ यस्यास्तादृशी तरुणी । दृश्यते=अवलोक्यते, अपि तु सर्वत्र वाप्यः पयःप्रधाना भूमयः, नूतनघनस्तनास्तरुण्याः सन्ति । यदि पुनः तत्रत्यमपि चतुर्थपादेन विशेषणीकर्त्तुमाग्रहस्तर्हि—नवं स्तुतिं माप्नुतोऽभीक्ष्णम् इति नवापिनी । तथाभूते इनपयसी=स्वामिजले धरतीति तादृशा वापी । भूस्तु वपन्त्य-

मीक्ष्णमिति वापिन:=कर्षकाः तेषां स्वामिना आजीवहेतुत्वात् स्वामिनः। पयोधराः= मेघाः यस्यां तथाभूता, पश्चान्नञ् सम्बन्धः। अवृष्टिनिष्पाद्यसस्येति भावः। अर्थात् प्रशस्त स्वामिपयस्का वापी, अवृष्टिनिष्पादितसस्या भूमिः तरुणी पीनस्तनी च कान्ता यस्यां दृश्यते सैव नगरीति ॥ २६ ॥

हिन्दी—अधिक क्या—जहाँ (जिस आर्यावर्त में) ऐसी कोई नगरी दिखलाई नहीं पड़ती जहाँ न बावली हो, न जलप्रधान भूमि हो और न नूतन स्थूल पयोधरों वाली नारी हो अर्थात् वहां प्रत्येक नगरी में बावली, जलप्रधान भूमि तथा नूतन उन्नत उरोजोंवाली युवतियां सर्वत्र दिखलाई पड़ती हैं ॥ २६ ॥

अपि च—

भवन्ति फाल्गुने मासि वृक्षशाखा विपल्लवाः।
जायन्ते न तु लोकस्य कदापि च विपल्लवाः ॥ २७ ॥

अन्वयः—वृक्षशाखाः फाल्गुने मासि विपल्लवाः भवन्ति। लोकस्य तु कदापि विपल्लवाः न जायन्ते ॥ २७ ॥

सुधा—भवन्तीति। वृक्षशाखाः— वृक्षाणां शाखाः=पादपलताः। फाल्गुने मासि= वसन्तमासि। विपल्लवाः—विगतानि पल्लवानि येषां ते=दलरहिताः भवन्ति=जायन्ते। (परम्) लोकस्य=जनस्य तु कदापि=कदाचिदपि विपल्लवाः=विपदां = विपत्तीनाम् लवाः अंशाः न भवन्ति=न जायन्ते ॥ २७ ॥

हिन्दी—और भी—वृक्षों की शाखाएँ तो फाल्गुन मास में पल्लवहीन (पतझड़-वाली) हो जाती हैं पर मनुष्य की विपत्तियों का अंश भी कभी (समाप्त) नहीं होता है ॥ २७ ॥

यत्र सौराज्यरञ्जितमनसः सकलसमृद्धिवर्धितमहोत्सवपरम्परारम्भनिर्भराः, सततमकुलीनं कुलीनाः, प्राप्तविमानमप्राप्तविमानभङ्गाः, कतिपयवसुविराजित-मनेकवसवः, समुपहसन्ति स्वर्गवासिनं जनं जनाः: कथं चासौ स्वर्गान्न विशिष्यते।

सुधा—यत्रेति। यत्र = यस्मिन् देशे। सौराज्यरञ्जितमनसः—शोभनं राज्यं सुराज्यम्, सुराज्यमेव सौराज्यम्, तेन रञ्जितानि=प्रसन्नानि मनांसि=चेतांसि येषां ते। सकलसमृद्धिवर्धितमहोत्सवपरम्परारम्भनिर्भराः—सकलाभिः = सर्वाभिः समृद्धिभिः= सम्पन्नताभिः वर्धिता=प्रवर्द्धिताः महोत्सवस्य परम्पराः=प्रथाः, तासाम् आरम्भाः तेषु निर्भराः। सततम् = निरन्तरम्। अकुलीनम् = कुलहीनम्। कुलीनाः—कौ पृथिव्यां लीनाः=अनुरक्ताः, अथवा उत्तमकुलजाताः प्राप्तविमानम्--प्राप्तम् = अधिगतम् विमानं येन तम्, अथवा प्राप्ता=अधिगता विमानता=तिरस्कारो येन तम्। अप्राप्त-विमानभङ्गाः अप्राप्तः विमानभङ्गः = तिरस्कारभङ्गो यैस्ते। कतिपय वसुविराजितम्—कतिपयैः वसुभिः=धनैः अथवा,ध्रुवादि वसुभिः विराजितम्=शोभितम्। अनेक वसवः—अनेकानि= बहूनि। वसूनि=धनानि सन्ति येषां ते। स्वर्गवासिनम्—स्वर्गे=नाके वसतीति, तम्।

जनम्=पुरुषम् । समुपहसन्ति=उपहासम् कुर्वन्ति । असौ=एषः । स्वर्गात्=नाकलोकात् । कथम्=केन अपि प्रकारेण । न विशिष्यते=विशिष्टो भवेत् ।

हिन्दी—जहाँ (आर्यावर्त में) उत्तम राज्य से प्रसन्न मनवाले सर्वप्रकार की समृद्धि से बढ़े हुए महोत्सवों की परम्पराओं को आरम्भ रखनेवाले लोग निरन्तर स्वर्गवासी कुलीन (उत्तम कुलवाले—पृथ्वी पर लीन रहनेवाले) अकुलीन (कुलहीन—पृथ्वी पर लीन न रहनेवाले देवता) को अप्राप्त विमानभङ्ग (अप्राप्त अहङ्कार की वक्रतावाले) प्राप्त-विमान (देवरथ प्राप्त किये हुए देवता) को अनेक वसु (विपुल धनवाले, ध्रुवादि अनेक वसु) कतिपय वसु (कुछ धन—कतिपय ध्रुवादि वसु जन) को उपहास करते हैं कि कहीं यह स्वर्ग से किसी प्रकार आगे न बढ़ जाये ।

यत्र गृहे गृहे गौर्यः स्त्रियः, महेश्वरो लोकः सश्रीका हरयः पदे पदे धनदाः सन्ति लोकपालाः । केवलं न सुराधिपो राजा। न च विनायकः कश्चित् ।

सुधा—यत्र गृह इति । यत्र=यस्मिन्नार्यावर्ते । गृहे गृहे=हर्म्ये हर्म्ये । गौर्यः गौराङ्ग्यः, शुद्धभावान्विताः वा । स्त्रियः=नार्यः । महेश्वरः—महान् ईश्वरः=अति समृद्धः लोकः=जनः । सश्रीकाः—सह श्रिया=शोभया युताः । हरयः=अश्वाः पदे पदे=स्थाने स्थाने धनदाः=धनानि ददतीति=धनदातारः । लोकपालाः—लोकान्=जनान् पालयन्तीति लोकपालाः=लोकरक्षकाः सन्ति=वर्त्तन्ते, अर्थात् स्वर्गे तु एकैव गौरी=उमा, महेश्वरः=शिवः एकः, हरिः=विष्णुः एकः, धनदः कुबेरः एकः, परम् आर्यावर्ते तु सर्वत्र सन्ति । केवलम्=मात्रम् । सुराधिपः—सुराम्=मदिराम् अधिपिबतीति सुराधिपः=मद्यपः, सुराणामधिपः=देवराज इन्द्रः राजा=नृपः । न=नास्ति । च=तथा । कश्चित्=कः अपि (तत्रत्यः) । विनायकः—विरुद्धः नायकः यस्मात् तथा, अथवा = गणेशः । न=नास्ति ।

हिन्दी—जहाँ गौरी (गौर वर्णवाली अथवा शुद्ध भावोंवाली) स्त्रियाँ, अतिसमृद्ध लोग, शोभायमान घोड़े तथा धन देनेवाले एवं लोकरक्षक घर-घर में हैं । केवल शराब पीनेवाला ही वहाँ राजा नहीं है तथा वहाँ कोई नायक (राजा) के विरुद्ध भी नहीं है ।

टिप्पणी—स्वर्गलोक में गौरी (उमा) महेश्वर (शिव) हरि (विष्णु) धनद (कुबेर) केवल एक हैं पर आर्यावर्त में गौरी स्त्रियाँ, महान् समृद्ध, शोभायुक्त घोड़े-धन देनेवाले दाता तथा लोकपाल घर घर हैं । स्वर्ग में सुराधिप राजा इन्द्र हैं पर यहाँ सुराधिप (मद्यपान करनेवाला) राजा भी नहीं है। स्वर्ग में भले ही विनायक (गणेशजी) रहते हैं पर यहाँ विनायक (राजा के विरुद्ध) कोई नहीं है ।

यत्र चलतासंबन्धः कलिकोपक्रमश्च पादपेषु दृश्यते न पुरुषेषु ॥

सुधा—यत्रेति । च=तथा । यत्र=यस्मिन् देशे लता सम्बन्धः=वल्ली योगः । अथवा चलता=चञ्चलता, तस्याः योगः । कलिकोपक्रमः—कलिकायाः उपक्रमः=उद्भवः, अथवा कलेः=कलियुगस्य कोपक्रमः=क्रोध-परम्परा । पादपेषु=वृक्षेषु । दृश्यते = अवलोक्यते, पुरुषेषु=जनेषु न दृश्यते=नावलोक्यते ।

हिन्दी—जहाँ लता सम्बन्ध और कलियों का उद्भव (केवल) वृक्षों में दिखलाई पड़ता है, चञ्चलता का सम्बन्ध तथा कलियुग के क्रोध की परम्परा पुरुषों में दिखलाई नहीं पड़ती है।

यत्र चमरकवार्ता परमहिमोपघातश्च तुहिनाचलस्थलीषु श्रूयते न प्रजासु ॥

सुधा—यत्रेति। यत्र=यस्मिन्नार्यावर्ते। चमरकवार्ता—चमरकाः=गोविशेषाः तासाम् वार्ताः=कथाः, अथवा मरकवार्ता=मृत्युचर्चा। परमहिमोपघातः—परमम्-उत्कृष्टम् हिमम्=तुहिनम्, तेनोपघातः=हानिः, अथवा परेषाम्=अन्येषाम् महिमा=महत्वम्, तस्योपघातः=हननम्। तुहिनाचलस्थलीषु=पर्वतस्थलेषु। श्रूयते=आकर्ण्यते प्रजासु=जनेषु न श्रूयते।

हिन्दी—जहाँ चमरी गायों की चर्चा तथा उत्कृष्ट हिमपात से हानि पहाड़ी स्थानों पर सुनी जाती है, प्रजा में मृत्युचर्चा अथवा अन्य लोगों का प्रतिष्ठा-हनन नहीं सुना जाता है।

यश्च नीतिमत्पुरुषाधिष्ठितोऽप्यनीतिः, सटोऽप्यवटसंकुलः, कारूपयुतोऽप्यपगतरूपशोभः ॥

सुधा—यश्चेति। च=तथा। यः=यो देशः। नीतिमत्पुरुषाधिष्ठितः—नीतिमद्भिः पुरुषैः=लोकैः अधिष्ठितः=युक्तः अपि, अथवा अनीतिः—न विद्यते ईतिरुपद्रवोऽस्मिन्नित्यनीतिः, अनीतिमत्पुरुषाधिष्ठितः=इति नामोपद्रवरहित पुरुषयुतः। सटः=जटायुतः अपि=न्यग्रोधोऽपि। अवरसंकुलः—अवराः=कूपादिगर्त्ताः, तैः संकुलः=संकीर्णः। कारूपयुतः अपि—कारवः=शिल्पिनः उपयुतः=संयुक्तः अपि, कुत्सितमीषद्वा रूपं कारूपम् तेन युतः=युक्तः अपि। अपगतरूपशोभः—न गता=न भ्रष्टा रूपशोभा = रूपश्रीः यस्य सः, अथवा, अगैः नगैस्तरुभिश्चोपशोभा यस्य सः। अपि विरोधे। स च तुल्यार्थव्याख्यया।

हिन्दी—तथा जो नीतिमान् पुरुषों से अधिष्ठित होता हुआ भी ईति-भीति आदि उपद्रवों से रहित, जटायुक्त होकर भी अवर—कुएँ आदि के गड्ढों से संकुल, शिल्पियों से युक्त होकर भी रूप-शोभाहीन नहीं हैं।

यत्र च गुरुव्यतिक्रमं नक्षत्रराशयः, मात्राकलहं लेखशालिकाः, मित्रोदयद्वेषमुलूकाः, अपत्यत्यागं कोकिलाः, बन्धुजीवविघातं ग्रीष्मदिवसा, कुर्वन्ति न जनाः ॥

सुधा—यत्र चेति। च=तथा। यत्र = यस्मिन्नार्यावर्ते नक्षत्रराशयः = नक्षत्राणाम् सूर्यादिग्रहाणाम् राशयः समूहाः। गुरुव्यतिक्रमम् - गुरोः व्यतिक्रमम् बृहस्पति परिवर्त्तनम्, अथवा गुरुपरिवर्त्तनम् न। लेखशालिकाः = लेखपट्टिकाः, मात्राकलहम्—मात्रासम्बन्धिविरोधम् अथवा मात्रा=जनन्या कलहम्=विरोधम्। उलूकाः=घूकाः। मित्रोदयद्वेषम्=मित्रस्य=सूर्यस्य उदयः, तस्मात् द्वेषम्=विरोधम् अथवा सुहृदुत्थानविरोधम्। कोकिलाः=पिकाः। अपत्यत्यागम्—अपत्यस्य = सुतस्य त्यागम् = परित्यागम्। ग्रीष्मदिवसाः—ग्रीष्मर्त्तोर्दिवसाः = दिनानि। बन्धुजीवविघातम्—बधुजीवस्य—तन्नाम्नः

पुष्पविशेषस्य विघातम्=विनाशम् अथवा बन्धोः=भ्रातुः जीवस्य=जीवनस्य विघातम्=विनाशम् कुर्वन्ति = विदधन्ति । पुनः जनाः = लोकाः न कुर्वन्ति—न सम्पादयन्ति ।

हिन्दी—जहाँ नक्षत्र-राशियाँ गुरु (बृहस्पति) का परिवर्त्तन करती हैं, मनुष्य गुरु-परिवर्त्तन नहीं करते; लेखशालिकाएँ ही मात्रा में विरोध डालती हैं, जननी से विरोध लोग नहीं करते; उलूक ही सूर्योदय से द्वेष करते हैं, मनुष्य अपने मित्रों के उत्थान से द्वेष नहीं करते; कोयलें सन्तान-त्याग करती हैं, मनुष्य नहीं करते; ग्रीष्मकालीन दिवस ही बन्जीव नामक विशेष पुष्प का विनाश करते हैं, लोग अपने भाई के जीवन का विनाश नहीं करते हैं।

टिप्पणी—गुरुव्यतिक्रम—नक्षत्रों की गति में बृहस्पति नक्षत्र (ग्रह) अपनी चाल से अन्य सूर्य, मंगल आदि ग्रहों से आगे-पीछे हो जाता है। यही नक्षत्र-राशि में गुरु-व्यतिक्रम कहलाता है। परन्तु मनुष्य जीवन में जिसको एक बार अपना गुरु चुन लेता है, उसे कभी बदलता नहीं। यही भारतीय सभ्यता है।

अपत्यत्याग—लोक-प्रसिद्ध है कि कोयल चालाक होने के कारण अपने अण्डों को सेने के लिए कौवे के घोसले में रख देती है। कौवा मादा भी एक जैसे होने के कारण उनको सेती रहती है। उनसे बच्चे निकलते हैं, वे भी कौवों के बच्चों के समान ही होते हैं जो कि बड़े होकर उड़ जाते हैं परन्तु वे वास्तव में रहते तो कोयल ही हैं, कौवे नहीं बन जाते। इस प्रकार पक्षी अपनी सन्तान का त्याग कर देता है परन्तु मनुष्य उस आर्यावर्त में अपनी सन्तान का त्याग नहीं करते थे यद्यपि अब युग-प्रभाव से सब कुछ होने लगा है।

किं बहुना—

देशः पुण्यतमोद्देशः कस्यासौ न प्रियो भवेत् ।
युक्तोऽनुक्रोशसंपन्नैर्यो जनैरिव योजनैः ॥ २८ ॥

अन्वयः—अनुक्रोशसम्पन्नैः योजनैः इव जनैः यः युक्तः असौ पुण्यतमोद्देशः देशः कस्य प्रियः न भवेत् ॥ २८ ॥

सुधा—देश इति । अनुक्रोशसम्पन्नैः—अनुक्रोशः=दया, तया सम्पन्नैः = युक्तैः, अथवा अनु=पश्चात् क्रोशम्=क्रोशमात्रम् दूरीपर्यन्तम् तत्सम्पन्नैः युक्तैः । योजनैः—योजनदूरीभिः इव जनैः=लोकैः यः युक्तः=यः संयुक्तः एषः=अयम् पुण्यतमोद्देशः--पुण्यतम=अतिपवित्रः देशः उद्देश्यः अथवा ऊर्ध्वभागः हिमालयः यस्य तादृशः देशः = भूभागः । कस्य=कस्य जनस्य । प्रियः=अभीष्टः । न भवेत्=न स्यात्, अपितु सर्वेषां प्रियो भवेत् ॥ २८ ॥

हिन्दी—अधिक क्या—जो कि लोगों के द्वारा अनुक्रोशयुक्त योजनोंवाला यह पुण्यतम देश, जिसके उत्तरी भाग में ऊर्ध्व भागवाला हिमालय है, ऐसा आर्यावर्त किसे प्रिय न हो ॥ २८ ॥

टिप्पणी—क्रोश तथा योजन—भाषा का कोस शब्द ही संस्कृत के क्रोश का

रूपान्तर है जिसका अर्थ दो मील अर्थात् ३५२० गज दूरीवाला भाग है। इसी प्रकार ४ कोस अर्थात् ८ मील या १४०८० गज दूरी का भाग योजन कहलाता है। यह क्रोश तथा योजन दूरीवाली नाप पौराणिक है। अब इसी को मीलों अथवा किलोमीटरों में माना जाता है।

तस्य विषयमध्ये निषधो नामास्ति जनपदः प्रथितः।
तत्र पुरी पुरुषोत्तमनिवासयोग्यास्ति निषधेति ॥ २९ ॥

अन्वयः—तस्य विषयमध्ये निषधः नाम प्रथितः जनपदः अस्ति। तत्र पुरुषोत्तमनिवासयोग्या निषधा इति पुरी (अस्ति) ॥ २९ ॥

सुधा—तस्येति। तस्य=उपर्युक्तस्य। विषयमध्ये—विषयस्य=देशस्य मध्ये=अन्तरे निषधः नाम=निषधाख्यः। प्रथितः=प्रख्यातः जनपदः=नगरप्रदेशः अस्ति=वर्तते। तत्र=तस्मिन् जनपदे पुरुषोत्तमनिवासयोग्या—पुरुषेषूत्तमः पुरुषोत्तमः, तस्य=भगवतः विष्णोः निवासयोग्या=वासार्हा, अथवा पुरुषाश्च उत्तमाः इति पुरुषोत्तमास्तेषाम्=श्रेष्ठजनानाम् निवासयोग्या=आवास उपयुक्ता निषधा इति=निषधाख्या पुरी=नगरी अस्ति=वर्तते। आर्यावृत्तम् ॥ २९ ॥

हिन्दी—उस आर्यावर्त्त के मध्य भाग में निषध नामक प्रसिद्ध जनपद है जहाँ भगवान् विष्णु के निवास योग्य (विष्णुपुरी के समान) उत्तम पुरुषों के रहने योग्य निषधा नाम की पुरी है ॥ २९ ॥

जननीतिमुदितमनसा सततं सुस्वामिना कृतानन्दा।
सा नगरी नगतनया गौरीव मनोहरा भाति ॥ ३० ॥

अन्वयः—सा नगरी सततम् जननीतिमुदितमनसा सुस्वामिना कृतानन्दा नगतनया गौरी इव मनोहरा भाति ॥ ३० ॥

सुधा—जननीति। सा=निषधा नाम्नी नगरी=पुरी। सततम्=निरन्तरम् जननीतिमुदितमनसा—जनस्य नीत्या=लोकनीत्या मुदितमनसा=हृष्टचेतसा, अथवा जननी=माता इति मुदितमनसा=हृष्टचेतसा सुस्वामिना—शोभनः स्वामी सुस्वामी तेन=सुप्रभुणा अथवा स्वामिकार्त्तिकेयेन। कृतानन्दा-कृतम्=विहितम् आनन्दम् यया सा=कृतहर्षा। नगस्य=पर्वतस्य तनया=दुहिता गौरी इव=पार्वतीव मनोहरा=मनोरमा अथवा मनसिहरः यस्याः तादृशी। भाति=शोभते ॥ ३० ॥

हिन्दी—(नगरी पक्ष में) वह निषधा नगरी जनसाधारण की नीति से प्रसन्न चित्तवाले उत्तम स्वामी (शासक) से हर्षित बनायी हुई पर्वतपुत्री (पार्वती) के समान मनोहर शोभित होती है ॥ ३० ॥

(गौरी पक्ष में) 'जननी है' इस कारण प्रसन्न मन, सुन्दर स्वामिकार्त्तिकेय के द्वारा आनन्दयुक्त बनायी गयी मन में 'हर' का ध्यान रखनेवाली गौरी शोभित हो रही हैं ॥ ३० ॥

यस्यामभ्रंलिहेन्द्रनीलशालशिखरसहस्रनिभृतांशुजालबालशाद्वलाङ्कुराग्रग्रासलालसाः स्खलन्तः खे खेदयन्ति मध्येदिनं सादिनं रविरथतुरङ्गमाः ॥

सुधा—यस्यामिति । यस्याम्=निषधानगर्याम् । अभ्रंलिहेन्द्रनीलशालशिखरसहस्र निभृतांशुजालबालशाद्वलाङ्कुराग्रग्रासलालसाः—इन्द्रनीलमणीनांशालाः=प्राकाराः, अभ्रंलिहाश्च ते इन्द्रनीलमणिशालाः=गगनचुम्बीन्द्रनीलमणिप्राकाराः । तेषां शिखरैः=श्रेणिभिः सहस्राणि=दशशतानि निभृतान्यंशुजालानि=सूर्यकिरणाः, तैः बालशाद्वलानां=लघुदूर्वादलानाम् अग्रग्रासाः = अग्रकवलानि तेषां या लालसाः अभिलाषास्तेषां तादृशाः रविरथतुरङ्गमाः रवेः=सूर्यस्य रथतुरङ्गमाः=रथघोटकाः । स्खलन्तः=पदस्खलनं कुर्वन्तः । खे=आकाशे । मध्यं दिनम्=मध्याह्ने । सादिनं=रथचालकम् खेदयन्ति=खिन्नतां नयन्ति ।

हिन्दी— जिस नगरी में इन्द्रनीलमणि से बने गगनचुम्बी प्राकारों की चोटियों से निकलनेवाली हजारों छिपी हुई सूर्यकिरणों से छोटी-छोटी हरी दूब के अग्र भाग के कवलों को खाने की लालसा रखनेवाले, सूर्य के रथ के घोड़े लड़खड़ाते हुए आकाश में मध्याह्न काल में सारथी को खेद पहुँचा रहे हैं ।

यस्यां च स्फटिकमणिशिलानिबद्धभवनप्राङ्गणगतासु सञ्चरद्गृहिणीचरणालक्तकपदपङ्क्तिषु पतन्ति निर्मलसलिलाभ्यन्तरतरत्तरुणारुणकमलकाङ्क्षयामुग्धमधुपपटलानि ।

सुधा – यस्यामिति । च=तथा । यस्याम् = निषधायाम् । स्फटिकमणिशिलानिबद्धभवनप्राङ्गणगतासु—स्फटिकमणेः=चन्द्रमणेः याः शिलाः, ताभिः निबद्धानि=निर्मितानि भवनानि=हर्म्याणि तेषाम् प्राङ्गणानि = अजिराणि तेषु गताः = प्रयातास्तासु । सञ्चरद् गृहिणीचरणालक्तकपदपंक्तिषु—सञ्चरन्तीनाम्=भ्रमन्तीनाम् गृहिणीनाम् = नारीणाम् चरणेषु=पादेषु यद् अलक्तकम्=लाक्षारसम् तेन पदपंक्तयः = चरणचिह्नानि तासु । निर्मलसलिलाभ्यन्तरतरत्तरुणारुणकमलकांक्षया—निर्मलं च तत् सलिलम्=स्वच्छजलम्, तस्याभ्यन्तरे = मध्ये तरन्ति तरुणानि=नूतनानि फुल्लानि वाऽरुणानि = रक्तानि कमलानि=पद्मानि तेषां या कांक्षा=भ्रान्तिस्तया । मुग्धमधुपपटलानि—मधूनि पिबन्तीति मधुपाः, मुग्धाः=मत्ताश्च ये मधुपाः=मत्त भ्रमराः, तेषां पटलानि=यूथानि पतन्ति = पतनं कुर्वन्ति ।

हिन्दी—तथा जिस निषधा नगरी में स्फटिकमणिशिला से निर्मित भवनों के आँगनों में गयी हुई घूमती हुई गृहिणियों के चरणों में लगे महावर से बनी चरणपंक्तियों पर निर्मल जल के अन्दर तैरते हुए उत्फुल्ल रक्तकमलों की भ्रान्ति से मुग्ध भ्रमरों के झुण्ड गिरते हैं ।

यस्यां च विविधमणिनिर्मितवासभवनभव्यभित्तिषु स्वच्छासु स्वां छायामवलोकयन्त्यः कृतापरस्त्रीशङ्काः कथमपि प्रत्यानीयन्ते प्रियैः प्रियतमाः ॥

सुधा—यस्यामिति । च=तथा । यस्यां नगर्याम् स्वच्छासु = निर्मलासु । विविधमणिनिर्मितवासभवनभव्यभित्तिषु—विविधैः=अनेकैः मणिभिः निर्मितानि=रचितानि वासभवनानि=निवासगृहाणि, तेषां याः भव्याः=सुन्दराः भित्तयस्तासु । स्वाम्=निजाम् । छायाम्=प्रतिबिम्बम् अवलोकयन्त्यः=पश्यन्त्यः । कृतापरस्त्रीशङ्काः—कृता = विहिता

अपरस्त्रियाः=परनार्याः शङ्काः=सन्देहः याभिस्ताः। कथमपि=केनापि प्रकारेण। प्रियैः=प्रियजनैः। प्रियतमाः=प्रेयस्यः। प्रत्यानीयन्ते=प्रत्यर्पिताः क्रियन्ते।

हिन्दी—तथा जिस नगरी में विविध मणियों से निर्मित भवनों की भव्य दीवारों पर अपनी परछाईं को देखती हुई, परस्त्री की शङ्का करनेवाली प्रियतमाएँ जैसे-तैसे (किसी प्रकार से) प्रिय जनों के द्वारा (मनाकर) लौटायी जाती हैं।

यस्यां च दिव्यदेवकुलालंकृताः स्वर्गा इव मार्गाः सततमपांसुवसनाः सागरा इव नागराः, समत्तवारणानि वनानीव भवनानि, सुरसेनान्विताः स्वर्गभूपाः इव कूपाः, अधिकंधरोद्देशमुद्भासयन्तो हारा इव विहाराः॥

सुधा—यस्यामिति। च=तथा। यस्याम्=पुर्याम्। दिव्यदेवकुलालङ्कृताः—दिवि भवाः दिव्याः, तैः=रम्यैः देवकुलैः=देवगृहैः, पक्षे—दिव्यैः=भव्यैः स्वर्गोद्भवैः कल्पद्रुमादिभिः देवानाम्=सुराणाम् कुलैः=वंशैः अलङ्कृताः=भूषिताः। मार्गाः=पन्थानः। स्वर्गाः इव=नाकलोकाः इव। सततम्=निरन्तरम्। अपांसुवसनाः=न पांसुरपांसुः, अपांसुः यद् वासः=निर्धूलवस्त्रम् येषां ते। पक्षे—अपां=जलानाम् सुष्ठु वसन्ति येषु, इति सुवसनाः=सुधाराः जलधारा वा। नागराः=चतुराः नागरिकाः। सागराः इव=समुद्राः इव। समत्तवारणानि—मत्तैः=मदयुतैः वारणैः=गजैः सहितानि=युक्तानीतितानि भवनानि=हर्म्याणि। वनानि इव=काननानीव। सुरसेनान्विताः—सुष्ठुना रसेन=सुरसेन=सुन्दर जलेन अन्विताः=युक्ताः कूपाः=निपानानि। पक्षे—सुराणां=देवानां सेना=वाहिनी तया अन्विता=संयुक्ताः स्वर्गभूपाः=सुरलोकनृपाः इव। अधिकन्धरोद्देशम् 'अधिकम्' इति क्रियाविशेषणम् धरोद्देशः=पृथ्वीप्रदेशः, तम्। उद्भासयन्तः=प्रकाशयन्तः हाराः इव=मालाः इव विहाराः=बौद्ध मठाः, चैत्यानि वा (सन्ति)।

हिन्दी—तथा जिस नगरी में रमणीक देवगृहों (मन्दिरों) से शोभित मार्ग स्वर्ग में होनेवाले कल्पवृक्षादि (दिव्य) देवताओं के वंशों से शोभित स्वर्ग के समान, निरन्तर शुद्ध वस्त्रोंवाले नागरिकजन जल के सुन्दर स्थान समुद्रों के समान, मतवाले हाथियों से परिपूर्ण भवन बनैले हाथियों से परिपूर्ण जङ्गलों के समान, स्वादिष्ट जल से युक्त कुएँ, देवसेना से युक्त स्वर्गीय राजाओं के समान, पृथ्वीप्रदेश को अत्यधिक उद्भासित करनेवाले हारों के समान बौद्ध मठ हैं।

यस्यां च बहुलक्षणाः सुधावन्तो दृश्यन्तेऽन्तः प्रचुराः प्रासादाः बहिश्च वारणेन्द्राः। सुशोभितरङ्गाः समालोक्यन्तेऽन्तः संगीतशाला बहिश्च क्रीडाकमलदीर्घिकाः। बहुधान्यनिरुद्धाः कथमप्यभिगम्यन्तेऽन्तः पण्यस्त्रियो बहिश्च क्षेत्रभूमयः। नानांशुकविभूषणाः शोभन्तेऽन्तः सभा बहिश्च सहकारवनराजयः। ससौगन्धिकप्रसाराः विराजन्तेऽन्तर्विपणयो बहिश्च सलिलाशयाः॥

सुधा—यस्यामिति। च=तथा। यस्याम्=निषधानगर्याम्। बहुलक्षणाः—बहुलाः=अत्यधिकाः क्षणाः=भूमिवन्तः, पक्षे—बहूनि=अनेकानि लक्षणानि येषां ते=अनेक लक्षणयुताः। सुधावन्तः=सुधा=लेपविशेषः, तद्युक्ताः, पक्षे—सुष्ठु धावन्तः अन्तःप्रचुराः=अन्तः=मध्ये प्रचुराः=बहुलाः प्रासादाः=भवनानि। बहिः=बाह्यतः। वारणेन्द्राः=

गजेन्द्राः। दृश्यन्ते=अवलोक्यन्ते। सुशोभिततरङ्गाः—सुशोभिता=सुशोभनाः रङ्गाः= नर्तनस्थानानि यासु ताः सङ्गीतशालाः=रङ्गभूमयः अन्तः=अन्तरे समालोक्यन्ते=दृश्यन्ते। च बहिः=बाह्यतः। सुशोभिनः तरङ्गाः वीचयः यासु ताः। क्रीडाकमलदीर्घिकाः क्रीडायाः=खेलनस्य कमलदीर्घिकाः=कमलैर्युताः दीर्घिकाः=पद्मनिपानानि बहुधान्य-निरुद्धा—बहुधाः=अनेकधाः वारम्वारं वा, अन्यैः=धूर्तैः निरुद्धाः=अवरुद्धाः। पण्यस्त्रियः= वाराङ्गनाः अन्तः=मध्ये। कथम् अपि=कष्टेन। अभिगम्यन्ते=अभि=अभितः गम्यन्ते= प्राप्यन्ते बहिश्च=बाह्यतश्च। बहुभिः=बहुप्रकारैः धान्यैः=अन्नैः निरुद्धाः=अवरुद्धाः क्षेत्र-भूमयः=केदाराः अभिगम्यन्ते। नानाशुकविभूषणाः नानाभिः=विभिन्नैः आशुकविभिः= त्वरितरचनाकारसूरिभिः। विभूषणाः=शोभिताः। अन्तःसभाः=मध्यपरिषदः शोभन्ते=शोभिताः भवन्ति। वहिश्च नानाशुकविभूषणाः=विविधकीरशोभिताः। सहकारवनराजयः—सहकाराणां वनानि तेषां राजयः=आम्रवनपंक्तयः। शोभन्ते= विराजन्ते। ससौगन्धिकप्रसाराः—सुगन्धीनि द्रव्याणि पण्यमेषां ते सौगन्धिकाः सौगन्धिकैः सहिताः ससौगन्धिकाः, तेषां प्रसारः=लघ्वापणः यासु ताः अन्तः=मध्ये विपणयः=विक्रयस्थानानि। बहिश्च सुगन्धप्रसारयुक्ताः सलिलाशयाः=जला-शयाः। विराजन्ते=शोभन्ते।

हिन्दी—तथा जहाँ अन्दर वहुत से चूने से पुते हुए महल तथा बाहर अनेक गुणों से युक्त दौड़ते हुए उत्तम हाथी दिखलाई पड़ते हैं, जहाँ अन्दर सुन्दर रङ्गशालाओं से युक्त संगीतशालाएँ तथा बाहर सुन्दर रङ्गविरङ्गी लहराती हुई क्रीड़ावाली कमलों से भरपूर झीलें, अनेक बार धूर्तों से अवरुद्ध की गयीं अन्दर वाराङ्गनाएँ तथा बाहर अनेक प्रकार की फसलों से भरपूर खेत प्राप्त होते हैं। नगरी के अन्दर अनेक आशु कवियों से विभूषित सभाएँ तथा बाहर अनेक प्रकार के शुकादि पक्षियों से शोभित आम्रवन पंक्तियाँ शोभित होती हैं। अन्दर सुगन्धित द्रव्य बेचनेवालों की छोटी-छोटी दूकानोंवाले बाजार तथा बाहर सुगन्ध फैलानेवाले जलाशय शोभित हो रहे हैं।

किं बहुना—

भूमयो बहिरन्तश्च नानारामोपशोभिताः।
कुर्वन्ति सर्वदा यत्र विचित्रवयसां मुदम्॥ २१॥

अन्वयः—बहिः अन्तः च नानारामोपशोभिताः भूमयः यत्र सर्वदा विचित्रवयसां मुदं कुर्वन्ति।

सुधा—किं बहुना=किमधिकेन। भूमय इति। यत्र=यस्यां, नानारामोपशोभिताः= नाना विविधाभी, रामाभिः=सुन्दरीभिः, उपशोभिताः=समीपत एवालङ्कृताः। अन्त-र्भूमयो नगर्या अन्तःस्थ भूभागाः। विचित्रवयसां सुरम्ययूनां। मुदं प्रीतिं। कुर्वन्ति विद-धति। पक्षे—नानारामोपशोभिताः बहुविधोद्यानैः सुवासिताः। बहिर्भूमयः। विचित्र-वयसां नानाविधपक्षिणां। मुदं प्रीतिं। कुर्वन्ति विदधतीति॥ २१॥

हिन्दी—विविध रामाओं (रमणियों) से सुशोभित शहर का भीतरी भाग विचित्र वयस् (अद्भुत यौवनावस्था से युक्त) पुरुषों को सदैव आनन्दित करते हैं। दूसरे पक्ष

में—अनेक आरामों (घर के बगीचों) से सुशोभित सुवासित नगर के बाहरी भाग में विचित्र वयस् (रंगविरंगे पक्षियों) को सदैव आनन्दित करते हैं ॥ ३१ ॥

यस्यां च भक्तभाजो देवतायतनेषु देवताः संनिधाना दृश्यन्ते हट्टेषु वणिग्जनाः । अक्षरसावधानाः कविगोष्ठीषु कवयो विलोक्यन्ते द्यूतस्थानेषु द्यूतकाराः । कान्तारागप्रियाः करिणो राजद्वारेषु सञ्चरन्ति वेश्याङ्गणेषु भुजङ्गाः ॥

सुधा—यस्यां = नगर्यां । देवतायतनेषु = देवमन्दिरेषु । भक्तभाजो = भक्तयुक्ताः । अत्रोभयार्थको भक्तशब्दः १. भक्ताः = पूजकाः । २. भक्तम्=अन्नम् । देवताः = सुराः । सन्निधानाः=समीपस्थाः । दृश्यन्ते=दृशोर्विषयतां गच्छन्ति । हट्टेषु = आपणेषु । वणिग्जनाः=व्यापारिणः । अक्षरसावधानाः=अक्षराणि वर्णाः । पक्षे—अक्षः=पाशकः । तस्य रसे स्थितम् अवधानं येषां ते । अत्रोभयार्थकोऽक्षरसावधानशब्दः । तद्यथा—कवयः स्वरचितकविताश्रावणे प्रत्यक्षरं सावधाना भवन्ति । द्यूतक्रीडासक्ताः—अक्षप्रयोगावसरे सविशेषं दत्तावधाना भवन्तीति सुविदितम् । कविगोष्ठीषु कवयः । द्यूतक्रीडाम् द्यूतकाराः । कान्तारागप्रियाः—गजपक्षे—कान्तारे ये अगा वृक्षाः ते प्रिया येषां ते । विटपक्षे—रमणीस्नेहासक्ताः, करिणः=गजाः । राजद्वारेषु, वेश्याङ्गणेषु वारवधूनाम् अङ्गणेषु । भुजङ्गा विटाः सञ्चरन्ति ।

हिन्दी—जिस नगरी में देवताओं के मन्दिरों में देवताओं के समीप भक्तजन और बाजारों में बनिया (अन्न बेचनेवाले) दिखलाई देते हैं, कवि-गोष्ठियों में कविजन अक्षर-विन्यास में सावधान (अप्रमत्त) और द्यूतक्रीडा में जुआड़ी (अक्ष + रस + सावधान) दिखलाई देते हैं, राजद्वारों में (कान्तार + अग + प्रिय) जंगली वृक्षों से प्रेम करने-वाले हाथी और वेश्याओं के आँगनों में (कान्ता + राग + प्रिय) कान्ता के प्रेम के प्यारे विटजन भ्रमण करते हैं ।

यस्यां च चतुरुदधिवेलाविराजितसकलधराचक्रचूडामणौ मणिकर्मनिर्मितरम्यहर्म्यतया सुरपतिपुरीपराभवकारिण्याम् । अव्ययभावो व्याकरणोपसर्गेषु न धनिनां धनेषु, दानविच्छित्तिरुन्माद्यत्करिकपोलमण्डलेषु न त्यागिगृहेषु, भोगभङ्गो भुजङ्गेषु न विलासिलोकेषु स्नेहक्षयो रजनीविरामविरमत्प्रदीपपात्रेषु न प्रतिपन्नजनहृदयेषु कूटप्रयोगो गीततानविशेषेषु न व्यवहारेषु, वृत्तिकलहो वैयाकरणच्छात्रेषु न स्वामिभृत्येषु, स्थानकभेदश्चित्रकेषु न सत्पुरुषेषु ॥

सुधा—यस्यामिति । च=तथा । चतुरुदधिवेलाविराजितसकलधराचक्रचूडामणौ—चत्वार उदधयस्तेषाम्=चतुरुदधीनाम्=चतुःसमुद्राणाम् वेला रूपस्य=तटरूपस्य विराजितस्य=शोभितस्य सकलधराचक्रस्य=सम्पूर्णपृथ्वीचक्रस्य या चूडामणिः=शिरोमणिः इव, तादृशाम् । मणिकर्मनिर्मितरम्यहर्म्यतया—मणिकर्म=रत्नखचनम् तेन निर्मितानि= रचितानि रम्याणि=रमणीयानि हर्म्याणि=सौधानि, तेषां भावः तया तथोक्तया । सुरपतिपुरीपराभवकारिण्याम्—सुराणां पतिः सुरपतिः, इन्द्रः, तस्या या पुरी=अलका, ताम् पराभवं करोति इति सा तस्याम् । यस्याम्=निषधापुर्याम् । अव्ययभावः = अव्ययत्वम् । व्याकरणोपसर्गेषु=व्याकरणशास्त्रे प्रपराद्युपसर्गप्रयोगेषु (भवति) अव्यय-

भावः=नास्ति व्ययभावः । व्ययकरणत्वम् यत्र सः=कृपणत्वम् । धनिनाम् = धनिकजनानाम् । धनेषु=वित्तेषु न (भवति) अर्थात् धनिनः स्वधनानि दानभोगादिषु उपयोजयन्ति । दानविच्छित्तिः--दानस्य=मदस्य विच्छित्तिः=शोभा । उन्माद्यत्करिकपोलमण्डलेषु--उन्माद्यन्तः=उन्मादयुताः मत्ताः ये करिणः = दन्तिनः, तेषां कपोलानाम् = गण्डस्थलानाम् मण्डलानि = वृत्तानि, तेषु (भवति) दानविच्छित्तिः=त्यागविच्छेदः त्यागिगृहेषु--त्यागीनाम्=विरक्तानाम् गृहेषु=उटजेषु न (भवति) । भोगभङ्गः—भोगस्य = सर्पवपुषः भङ्गः=विलासः । भुजङ्गेषु=सर्पेषु (भवति) भोगभङ्गः—भोगानाम्=विषयसुखानाम् भङ्गः=विलासः । भुजङ्गेषु=विटादि कुटिलजनेषु । विलासिलोकेषु = विलासिनः=कामुकाः ये लोकाः=जनाः, तेषु न (भवति) । स्नेहक्षयः—स्नेहस्य = तैलस्य क्षयः=नाशः । रजनीविरामविरमत् प्रदीपपात्रेषु -रजन्याः = निशायाः विरामाय = समाप्त्यै प्रकाशाय विरमन्त=शोभायमन्तः ये प्रदीपाः=दीपकास्तेषां पात्राणि=भाजनानि, तेषु (भवति) स्नेहक्षयः=प्रेमनाश । प्रतिपन्नस्य=भक्तजनस्य न (भवति) कूटप्रयोगः–कूटाभिध विशेषप्रयोगः । गीततानविशेषेषु--सङ्गीते तानलयादिषु (भवति) कूटप्रयोगः=कपटाचारः व्यवहारेषु=आचरणेषु न (भवति) वृत्तिकलहः—वृत्तिः=शास्त्रविवरणम्, तस्मिन् कलहः=वितर्कः । वैयाकरणच्छात्रेषु — व्याकरणाध्येतृवटुषु (भवति) वृत्तिकलहः=वृत्तेः=आजीविकायाः कलहः=विवादः । स्वामिभृत्येषु = स्वामिषु = प्रभुषु भृत्येषु=सेवकेषु च न भवति । स्थानभेदः=उच्चावच भेदः । चित्रकेषु = चित्रणकार्येषु (भवति) स्थानभेदः = पतच्चलतादि नवस्थानभेदेषु भेदः=भिन्नत्वम् । सत्पुरुषेषु—सन्तः पुरुषाः सत्पुरुषास्तेषु=सज्जनेषु न (भवति) ।

हिन्दी—चारों समुद्रों के तटरूप में शोभित सम्पूर्ण धराचक्र के चूड़ामणि रत्नखचित रमणीक भवन होने के कारण सुरपति इन्द्र की अलकापुरी को पराजित करनेवाली जिस नगरी में अव्ययभाव व्याकरणशास्त्र में प्र परा आदि उपसर्गों में होता है, धनी लोगों के धन में अव्ययभाव या कृपणत्व (दान-भोगादि में) नहीं होता है । मद की शोभा मतवाले हाथियों के गण्डस्थलमण्डलों में होती है, त्याग-विच्छेद त्यागी पुरुषों के घरों—झोपड़ियों में नहीं होता है । भोगभंग अर्थात् सांप के शरीर का टेढ़ापन आदि विलास भुजंगों में होता है, विट आदि नीच विलासी पुरुषों में विषयभोगादि विलास नहीं होता है । स्नेहक्षय या तेल का नाश रात्रि के विराम अर्थात् अन्धकार नष्ट करनेवाले प्रकाश के लिए शोभायमान दीपकों के पात्रों में होता है, प्रेम का नाश भक्तजन का नहीं होता है । कूट-प्रयोग संगीत में तान-लय में होता है, कूट-प्रयोग अर्थात् कपट का प्रयोग आचरण में नहीं होता है । वृत्ति-कलह अर्थात् वृत्ति, शास्त्रविवरण का विवाद व्याकरण पढ़नेवाले छात्रों में होता है, स्वामी तथा नौकरों में वेतन सम्बन्धी विवाद नहीं होता है । स्थान-भेद चित्रण कार्य में (ऊँचा, नीचा, छोटा, बड़ा आदि) होता है, सत्पुरुषों में स्थान-भेद ऊँच-नीच आदि का भेदभाव नहीं होता है ।

टिप्पणी—कूट—सङ्गीतशास्त्र में कुण्ड आदि उञ्चास प्रकार के लय (तान) भेदों में एक प्रकार की तान होती है ।

स्थान-भेद—पतत् तथा चलत् दो भेदों में क्रमशः ऋजु आदि ५ भेद पतत् के तथा यमनालीढादि ४ भेद चलत् के, कुल नौ भेद होते हैं।

किं बहुना—

त्रिदिवपुरसमृद्धिस्पर्द्धया भान्ति यस्यां
सुरसदनशिखाग्रेष्वाग्रहग्रन्थिनद्धाः।
नभसि पवनवेल्लत्पल्लवैरुल्लसद्भिः
परममिह वहन्त्यो वैभवं वैजयन्त्यः॥ ३२॥

अन्वयः—यस्याम् त्रिदिवपुरसमृद्धिस्पर्द्धया, सुरसदनशिखाग्रेषु आग्रहग्रन्थिबद्धाः उल्लसद्भिः पवनवेल्लत्पल्लवैः नभसि परमम् वैभवम् वहन्त्यः इह वैजयन्त्यः भान्ति॥३२॥

सुधा—किं बहुना=अधिकेन किम्। त्रिदिवेति। यस्याम्=यत्र नगर्याम्। त्रिदिवपुरसमृद्धिस्पर्द्धया—त्रिदिवानाम्=सुराणाम् पुरम्=लोकम्, तस्य या समृद्धिः=सम्पन्नता तस्याः स्पर्द्धा, तया। सुरसदनशिखाग्रेषु—सुराणां सदनानि तेषां याः शिखाः, शिखराणि, तेषामग्रेषु=अग्रभागेषु। आग्रहग्रन्थिनद्धाः—आग्रहात्=बलात् ग्रंथिभिः नद्धाः=पिनद्धा। उल्लसद्भिः=शोभितैः। पवनवेल्लत्पल्लवैः=पवनेन=वायुना वेल्लद्भिः=चलद्भिः पल्लवैः=पत्रैः। नभसि=विहायसि। परमम्=अत्यन्तम्। वैभवम्=ऐश्वर्यम्। वहन्त्यः=धारयन्त्यः इह=अत्र। वैजयन्त्यः=विजयपताकाः। भान्ति=शोभन्ते। मालिनीवृत्तम्॥ ३२॥

हिन्दी—अधिक क्या—स्वर्गलोक की समृद्धि की स्पर्द्धा से देवताओं के भवनों के शिखरों के अग्रभागों पर बलपूर्वक गांठें लगाकर (खूब कसकर) बाँधी गयीं, सुन्दर वायु से हिलते हुए पत्तों के रूप से आकाश में परम वैभव को वहन करती हुई विजय-पताकाएँ यहाँ शोभित हो रही हैं॥ ३२॥

अपि च—

चार्वी सदा सदाचारसज्जसज्जनसेविता।
नगरी न गरीयस्या सम्पदा सा विवर्जिता॥ ३३॥

अन्वयः—सदा सदाचारसज्जसज्जनसेविता चार्वी सा नगरी गरीयस्या सम्पदा विवर्जिता न (अस्ति)॥ ३३॥

सुधा—चार्वीति। सदा=सर्वदा। सदाचारसज्जसज्जनसेविता—सदाचारे=सदाचरणे सज्जाः=तत्पराः ये सज्जनाः=सत्पुरुषास्तैः सेविता=संश्रिता। चार्वी=रुचिरा। सा=निषधाभिधा। नगरी=पुरी। गरीयस्या=महत्या। सम्पदा=सम्पत्त्या। विवर्जिता=परित्यक्ता। न=नास्ति॥ ३३॥

हिन्दी—और भी—सदैव सदाचार में तत्पर सज्जनों से सेवित मनोरम वह नगरी विशाल सम्पदा सेवर्जित नहीं है। अर्थात् सब प्रकार वैभवसम्पन्न है॥ ३३॥

तस्यामासीन्निजभुजयुगलबलविदलितसकलवैरिवृन्दसुन्दरीनेत्रनीलोत्पलगलद्बहलबाष्पपूरप्लवमानप्रतापराजहंसः, सकलजलनिधिवेलावननिखातकीर्ति-

स्तम्भभूषितभुवनवलयः, विश्वम्भराभोग इव बहुधारणक्षमः, प्रासाद इव नवसुधाहारी, रविरिवानेकधामाश्रयः। दनुजलोक इव सदानवः स्त्रीजनस्य, वशिष्ठ इव विश्वामित्रत्रासजननः जनमेजय इव परीक्षिततनयः, परशुराम इव परशुभासितः, राघव इवालघुकोदण्डभङ्गरञ्जितजनकः ॥

सुधा—तस्यामिति। तस्याम्=एतस्याम् नगर्याम्। निजभुजयुगलबलविदलितसकलवैरिवृन्दसुन्दरीनेत्रनीलोत्पलगलद्बहलवाष्पपूरप्लवमानप्रतापराजहंसः—निजयोः भुजयोः युगलम्=स्वबाहुयुगलम्, तस्य बलेन विदलितम्=नाशितम् सकलानाम्=सम्पूर्णानाम् वैरीणाम्=अरीणाम् यद् वृन्दम्=समूहः, तस्य सुन्दरीणां=कामिनीनाम् नेत्राणि=नयनानि एव नीलोत्पलानि=नीलकमलानि, तैर्गलति=स्रवति वहले पर्याप्ते वाष्पपूरे=अश्रुपूरे प्लवमानः=तरन् प्रतापः एव राजहंसो यस्य तादृशः सकलजलनिधिवेलावनिखातकीर्तिस्तम्भभूषितभुवनवलयः—सकलानां=सम्पूर्णानां जलनिधीनाम्=समुद्राणाम् वेलावनानि=तटकाननानि तेभ्यः निखातैः=स्थापितैः कीर्तिस्तम्भैः=जयस्तम्भैः भूषितः=मण्डितः भूवलयः=पृथ्वीमण्डलम् यस्य तादृशः। विश्वम्भराभोग इव=विश्वम्भरायाः=वसुन्धरायाः भोग इव=भोगरूपसदृशः अथवा=आभोगः पूर्णता इव। बहुधारणक्षमः—बहूनाम्=अत्यन्तानाम् धारणे=स्थापने क्षमः=समर्थः, अथवा बहुधा=अनेकधा। रणे=युद्धे क्षमः=समर्थः। प्रासाद इव=सौध इव। न वसुधाहारी—न=नैव वसुधाम्=देवद्विजसम्बद्धाम् हरत्येवं शीलो यः सः। पक्षे नवया=नूतनया सुधया=लेपविशेषेण हारी=रम्यः। पक्षे नवाम्=नूतनाम् सुधाम्=सुखशान्तिरूपामृतम् हरतीति। रविः इव=सूर्य इव। अनेक धामाश्रयः—अनेकधा=सप्ताङ्गत्वाद् बहुधामा=मायायाः=लक्ष्म्याः आश्रयः पक्षे—अनेकधाम्नः=प्रचुरतेजसः आश्रयः। आसीत्=अभूत्। दनुजलोक इव—दनुजानाम्=राक्षसानाम् लोक इव=लोक सदृशः सदा नवः—सदा=नित्यम् नवो रम्यः। स्त्रीजनस्य=नारीजनस्य। वशिष्ठ इव=वशिष्ठ मुनिरिव। विश्वामित्रत्रासजननः—विश्वेषाम्=सर्वेषाम् अमित्राणाम्=शत्रूणाम् त्रासजननः=त्रासकरः। पक्षे—विश्वामित्रो मुनिः। परीक्षिततनयः—परीक्षितो नयः=षाड्गुण्यं येन सः। पक्षे—परीक्षेः=अभिमन्युसुतस्य सुतः=पुत्रः। जनमेजयः इव जनमेजय समः। परशुराम इव=परशुराम सदृशः। परशुभासितः—परे=परस्मिन् शुभे आसितः=आस्थावान्। पक्षे—परशुः=कुठारः। राघव इव=रामसदृशः। अलघुकोदण्डभङ्गरञ्जितजनकः—अलघुकः=गौरवार्हः दण्डस्य परिक्लेशार्थंहरणलक्षणस्य भङ्गेव=मुक्त्या रञ्जितलोकः। पक्षे—बृहद् धनुर्भङ्गहर्षितजनकनृपः (आसीत्)।

हिन्दी—उस (निषधा) नगरी में अपनी दोनों भुजाओं के बल से सम्पूर्ण अरिमण्डल को नष्ट करनेवाला राजा (नल नामक) रहते थे जो कि शत्रु पत्नियों के नील कमल के समान सुन्दर नेत्रों से गिरती हुई पर्याप्त अश्रुधारा में तैरते हुए प्रतापी राजहंस के समान थे। उन्होंने समस्त समुद्रतट पर कीर्तिस्तम्भों को स्थापित कर भूमण्डल को भूषित कर रखा था। वे वसुन्धरा के भोग के समान अथवा पृथ्वी की पूर्णता (विशालता) के समान अत्यन्त भार धारण करने में अथवा अनेक युद्धों में समर्थ थे।

वे देवताओं तथा ब्राह्मणों से सम्बन्धित वसुधा को हरनेवाले गुण से उसी प्रकार युक्त थे जैसे नवीन चूने से पुता महल होता है, अथवा सुख-शान्तिरूपी अमृत का हरण करनेवाले थे। वे अनेक लोकों में उसी प्रकार आश्रय लेनेवाले थे जैसे सूर्य सतरंगी किरणोंवाला होने के कारण प्रचुर तेज का कारण होता है। वे स्त्रीजनों के लिए नित्य नवीन उसी प्रकार दिखलाई देते थे जैसे दानवयुक्त दानवलोक स्त्रियों के लिए होता है। वे समस्त शत्रुजनों को उसी प्रकार त्रास उत्पन्न करनेवाले थे जैसे विश्वामित्र को त्रास उत्पन्न करनेवाले वशिष्ठ मुनि थे।। वे सब प्रकार से अपनी नीति का परीक्षण उसी प्रकार किये रहते थे जैसे परीक्षितसुत जनमेजय थे। वे फरसे से शोभित परशुराम के समान दूसरों के शुभ कर्मों (कल्याणकर कार्यों) में आस्था रखते थे। शिवजी के विशाल धनुष को तोड़कर राजा जनक को प्रसन्न करनेवाले राघव के समान वे गौरव के योग्य दण्डों की युक्ति से प्रजा को प्रसन्न रखनेवाले थे।

सुमेरुरिव जातरूपसम्पत्तिः, तुहिनाचल इव पुण्यभागीरथीसहितः, चिन्तामणिः प्रणयिनाम्, अग्रणीः सांग्रामिकाणाम्, उपाध्यायोऽध्यायविदाम्, आदर्शो दर्शनानाम्, आचार्यः शौर्यशालिनाम्, उपदेशकः शस्त्रशास्त्रस्य, परिवृढो दृढप्रहारिणाम्, अग्रगण्यः पुण्यकारिणाम्, अपश्चिमो विपश्चिताम्, अपाश्चात्यस्त्यागवताम्, अचरमश्चातुर्याचार्याणाम्, अपर्यन्तभूभाराधारस्तम्भभूतभुजकाण्डकीलितशालभञ्जिकायमानविजयश्रीः, श्रीवीरसेनसूनुः, समस्तजगत्प्रासादशिरःशेखरीभूतकान्तकीर्तिध्वजो राजा, राज्यलक्ष्मीकरेणुकाचापलसंयमनशृङ्खलः, खलवृन्दकन्दलदावानलो नलो नाम॥

सुधा—सुमेरुरिति। सुमेरुः इव=सुमेरुपर्वत इव। जातरूपसम्पत्तिः—जातरूपम्=सवर्णम् सम्पत्तिः=सम्पदा यस्य तादृशः। पक्षे—जाता सञ्जाता रूपसम्पत्तिः—रूपसम्पदा यस्य तादृशः। तुहिनाचल इव तुहिनस्य—हिमस्य अचलः=पर्वतः=हिमालय इव। पुण्यभागीरथीसहितः— पुण्यया=पवित्रया भागीरथ्या = गङ्गया सहितः = युक्तः। पक्षे—पुण्यभागी = पुण्यभजनशीलः रथी = रथवान्। सहितः—हितैः कल्याणकार्यैः सहितः=युक्तः। प्रणयिनाम्=याचकानाम् (अर्थिनाम्) चिन्तामणिः = चिन्तामणिमन्त्र इवाभीष्टप्रदः, अथवा चिन्तितम्=याचितम् प्रकर्षेण ददातीति=चिन्तितप्रदः मणिः=रत्नम् इव। सांग्रामिकाणाम्—संग्रामं कुर्वन्तीति सांग्रामिकास्तेषाम = युद्धकर्तृणाम् वीराणाम्=अग्रणीः=अग्रेसरः। अध्यायविदाम् = अध्ययनमध्यायः, तम् विदन्तीति तेषाम् अध्ययनविज्ञानाम्। उपाध्यायः=अध्यापकः। दर्शनानाम्=वेदान्तादि दर्शनशास्त्राणाम्। आदर्शः=दर्पणः। शौर्यशालिनाम्=वीराणाम्। आचार्यः=गुरुः। शस्त्रशास्त्रस्य = आयुधविद्यायाः शास्त्राणां च उपदेशकः=शिक्षकः। दृढप्रहारिणाम = दृढम् प्रहरंतीति दृढप्रहारिणस्तेषाम=पुष्टप्रहारकुर्वताम्। परिवृढः = परितः वृढः=वर्धनशीलः। पुण्यकारिणाम्=पुण्यम् कुर्वन्तीति तेषाम्=पुण्यकृताम् अग्रगण्यः=अग्रेसरः। विपश्चिताम् = विदुषाम्। अपश्चिमः=पूर्ववर्ती त्यागवताम्=त्यागकारिणाम्। अपाश्चात्यः=पश्चाद् भवः पाश्चात्यः। न पाश्चात्यः अपाश्चात्यः=पूर्ववर्ती। अचरमः=सर्वोत्कृष्टः। चातुर्याचार्याणाम्—चातु-

र्यस्य=चतुरतायाः आचार्याः=उपदेशकास्तेषाम् । अपर्यन्त भूभाराधारस्तम्भभूतभुजकाण्ड-कीलितशालभञ्जिकायमानविजयश्रीः अपर्यन्तस्य = समग्रस्य भभारस्य = धराभारस्य आधारस्तम्भभूते=आधारशिलारूपे भुजकाण्डे कीलिता=स्थिरीकृता शालभञ्जिकाय-माना=काष्ठपुत्तलिकायमाना विजयश्रीः=जयलक्ष्मीः यस्मिन् सः । श्रीवीरसेनसूनुः=श्रीवीर-सेनस्य सूनुः = सुतः । समस्तजगत्प्रासादशिरःशेखरीभूतकाकीर्त्तिध्वजः--समस्तस्य= सम्पूर्णस्य जगतः=संसारस्य प्रासादानाम् सौधानाम् शिरासु = मस्तकेषु शेखरीभूतः कान्तः=प्रभावान् कीर्तिध्वजः = यशःपताकारूपः । राज्यलक्ष्मीकरेणुकाचापलसंयमन-शृङ्खलः--राज्यस्य लक्ष्मीः, राज्यलक्ष्मीरूपा करेणुका=गजस्त्री तस्याः चापलस्य= चपलतायाः संयमनाय = संरोधाय शृङ्खला तादृशः । खलवृन्दकन्दलदावानलः— खलानाम् वृन्दम्=दुष्टदलम्, दुष्टदलमेव कन्दलम् तस्मै दावानल = काननानलस्तादृशः । नलः नाम = नलाभिधः । राजा=नृपः (आसीत्) ।

हिन्दी--स्वर्णसम्पत्तिवाले सुमेरु पर्वत के समान उत्पन्न हुई रूपसम्पत्तिवाले, पुण्य भागीरथी गङ्गा सहित हिमालय के समान पुण्यभागी, रथयुक्त तथा हितयुक्त, प्रणयी लोगों के चिन्तामणि मन्त्र के समान, धन चाहनेवाले याचकों के लिए सोची हुई वस्तु प्रदान करनेवाली मणि के समान, संग्राम करनेवालों में अग्रणी, अध्ययनवेत्ताओं के उपदेशक के समान, दर्शनशास्त्रों के आदर्श, शूर-वीरों के आचार्य, आयुधविद्या और शास्त्रों के उपदेशक, दृढ़ प्रहार करनेवालों को ओर उत्साह से बढ़नेवाले, पुण्य कर्म करनेवालों में अग्रगण्य, विद्वानों में श्रेष्ठ, त्यागी पुरुषों में अग्रगामी, चतुरता की शिक्षा देनेवालों में सर्वश्रेष्ठ, समस्त भूभार को धारण करने के लिए आधारस्तम्भ बनी हुई भुजाओं में कठपुतली के समान विजयश्री को कीलित रखनेवाले, श्रीवीरसेन के पुत्र, राज्यलक्ष्मीरूपी हथिनी की चञ्चलता को नियन्त्रित करने के लिए जञ्जीर के समान तथा दुष्टदलरूपी कड़री को नष्ट करनेवाले दावानल के समान नल नामक राजा हुए ।

यस्येन्दुकुन्दकुमुदकान्तयः सकललोककर्णप्रियातिथयो गुणाः सततमेकब्रह्माण्ड-सम्पुटसंकीर्णनिवासव्यसनविषादिनः पुनरनेकब्रह्माण्डकोटिघटनामभ्यर्थयमाना इव भगवतो विश्वसृजः कमलसम्भवस्य कर्णलग्नाः स्वर्गलोकमधिवसन्ति स्म ॥

सुधा—यस्य=राज्ञः नलस्य गुणाः इन्दुकुन्दकुमुदकान्तयः-- इन्दुश्च = चन्द्रश्च कुन्दश्च=कुन्दपुष्पाणिच कुमुदानि च, तेषां कान्तिरिव कान्तिः येषां ते । सर्वलोककर्णप्रिया-तिथयः--सर्वेषां, निखिलानाम् लोकानाम्=जनानाम् कर्णप्रियाः=श्रुतिमधुराः अतिथयः यथा तथा । सततम् = निरन्तरम् । एकब्रह्माण्डसम्पुटसंकीर्णनिवासव्यसनविषादिनः-- एकस्मिन् ब्रह्माण्डे=एकविश्वे सम्पुटं संकीर्णेन=सङ्कीर्णतया निवासेन व्यसनस्य=दुःखस्य विषादिनः = दुःखार्तस्य । पुनः=भूयः । अनेकब्रह्माण्डकोटिघटनाम् इव = बहुब्रह्माण्ड-निर्माणं कारयिष्यन्त इव । भगवतः=ऐश्वर्यशालिनः प्रभोः । विश्वसृजः—विश्वं=भुवनम् सृजतीति विश्वसृक् तस्य=भुवनोत्पादकस्य । कमलसम्भवस्य—कमलम् सम्भवम्=जन्म-स्थानम् यस्य तस्य=ब्रह्मणः । कर्णलग्नाः—कर्णयोः लग्नाः=संलग्नाः । स्वर्गलोकम् = सुरलोकम् । अभ्यर्थ्यमानाः = प्रार्थ्यमानाः अधिवसन्ति स्म=निवसन्तिस्म ।

हिन्दी—जिन (राजा नल) के चन्द्रमा, कुन्द तथा कुमुद पुष्प के समान कान्तिवाले और समस्त लोगों के कर्णप्रिय अतिथियों के समान गुण सदैव एक ब्रह्माण्ड में सम्पुट (बन्द) सङ्कीर्ण निवास के दुःख से दुःखी पुनः अनेक ब्रह्माण्डों को बनाने के लिए विश्व का सृजन करनेवाले कमल से जन्म लेनेवाले भगवान् के कानों में लगे हुए (पड़े हुए वा सुने हुए) प्रार्थना करते हुए स्वर्ग में निवास किया करते थे।

यस्मिश्च राजनि जनितजनानन्दे नन्दयति मेदिनीम्, गीतेषु जातिसंकराः, तालेषु नानालयभङ्गाः, नृत्येषु विषमकरणप्रयोगाः, वाद्येषु दण्डकरप्रहाराः, पुण्यकर्मारम्भेषु प्रबन्धाः, सारिद्यूतेषु पाशप्रयोगाः, पुष्पितकेतकीषु हस्तच्छेदाः, न्यग्रोधेषु पादकल्पनाः, कञ्चुकमण्डनेषु नेत्रविकर्त्तनानि, आसन् न प्रजासु।

सुधा—यस्मिन्निति। च = तथा। यस्मिन् राजनि = यस्मिन्नृपे। जनितजनानन्दे—जनितानाम् = उत्पन्नानाम् जनानाम् लोकानाम् आनन्दः = आनन्दरूपः, तस्मिन्। मेदिनीम् = पृथ्वीम्। नन्दयति = मोदयति सति। गीतेषु = गायनेषु जातिसंकराः = नन्दयन्तीनां जातीनाम् सङ्कराः = मिश्रप्रतीतयः यथानुचितसम्बन्धेन विप्लवा (आसन्) तालेषु = चञ्चत्पुटादिषु नानालयाः = द्रुतविलम्बितमध्यमलक्षणाः लयास्तेषां भङ्गाः नाशाः इति नानालयभङ्गाः। विषमकरणप्रयोगाः—विषमानाम् तलपुष्पपटादिकरणानाम् प्रयोगाः भयंकरयुद्धप्रयोगाः। नृत्येषु = गात्रविक्षेपेषु (आसन्) करदण्डप्रहाराः = करः = पाणिः पक्षे दण्डः = वधादिः करः = राज्ञो देयांशः। प्रहारः = ताडनम्। पक्षे प्रहारः = घातनम् प्रबन्धाः = सातत्यानि, प्रकृष्टबन्धाश्च। पुण्यकर्मारम्भेषु = पुण्यकर्मणाम् आरम्भेषु = प्रारम्भेषु। पाशप्रयोगा = पाशः = अक्षः बन्धनरज्जुश्च तेषां प्रयोगाः। सारिद्यूतेषु = सारिद्यूतक्रीडनेषु। हस्तच्छेदाः—हस्तः = केतकीगर्भः पाणिश्च तेषां छेदः = कर्तनम्। पुष्पितकेतकीषु = कुसुमितकेतकीषु। पादकल्पनाः—पादस्य = मूलस्य कल्पनाः रचनाः, पक्षे पादस्य = अङ्घ्रेः कल्पनाः कर्तनम् न्यग्रोधेषु = वटवृक्षेषु। नेत्रविकर्तनानि—नेत्रं वस्त्रविशेषः नयनं च तेषां विकर्तनानि—विशेषेण = अङ्गप्रमाणेन कर्तनानि खण्डनानि च। आसन् = अभवन् प्रजासु = जनेषु च नाभवन्।

हिन्दी—और जिस राजा के शासन में प्रजा आनन्दित थी, पृथ्वी पर सब प्रसन्न थे। जाति संकर (नन्दयन्ती आदि) गीतों में ही थे, जातिसंकरता प्रजा में नहीं थी। अनेक प्रकार के द्रुत मध्य विलम्वित आदि तालों में होते थे, प्रजा में अनेक प्रकार से घरों के विनाश नहीं होते थे। विषण करण तल पुष्प पट आदि के प्रयोग नृत्यों में होते थे, भयङ्कर युद्ध-प्रयोग जनता में नहीं होते थे। दण्ड तथा हाथ बाजों पर ही मारे जाते थे, जनता में दण्ड तथा कर आदि के प्रयोग नहीं होते थे। प्रबन्ध पुण्य कार्यों के आरम्भ में होते थे, जनता में विशेष प्रकार का बन्धन (फाँसी आदि) नहीं। पाशप्रयोग (अक्षों का प्रयोग) जुए (सारी द्यूत) में होते थे, प्राणी को फँसाने के लिए जालों का प्रयोग नहीं होता था। हस्तच्छेद (केतकी या केवड़े का मध्य भाग काटना) फूली हुई केतकी या केवड़े में होता था, अपराध के कारण प्राणियों के हाथ नहीं काटे जाते थे। पादकल्पना (जड़ की रचना) वटवृक्षों में ही पायी जाती थी, पैरों को काटा

नहीं जाता था । विशेष प्रकार के वस्त्रों का काटना चोली आदि की सजावट में होता था, किसी व्यक्ति का नेत्र विकर्तन नहीं होता था ।

यश्च कोऽप्यन्योदृश एव लोकपालः । तथाहि—अपूर्वो विबुधपतिः, अदण्डकरो धर्मराजः, अजघन्यः प्रचेताः, अनुत्तरो धनदः ॥

सुधा—यश्चेति । यः = यः नलः । कः अपि = कश्चित् । अन्योदृशः = विसदृशः एव । लोकपालः लोकं = प्रजाम् पालयतीति = लोकरक्षकः । तथाहि = यतोहि । विबुधपतिः = सुरेन्द्रः, पूर्वः पूर्वदिग् युक्तत्वात्, परं नलः अपूर्वः = अद्वितीयः विशिष्टः = उत्कृष्टः बुधानाम् = विदुषाम् पतिः = स्वामी । धर्मराजः = यमराजः । दण्डकरः = दण्डपाणित्वात्, परं नलः अदण्डकरः—न दण्डः = वधादिकम् करः = राज्ञे देयांशो यस्मात् इति । प्रचेताः = वरुणलोकपालस्तु जघन्यः – जघन्यया = पश्चिमया दिशा सह वर्तत इति । परं नलः अजघन्यः = अकुत्सितः प्रचेताः—प्रकृष्टः चेतः = चित्तम् यस्य सः । धनदः = कुबेरलोकपालः उत्तरः = उत्तरया दिशा सह वर्तत इति तत्कारणात् । परम् नलस्तु अनुत्तरः—न विद्यते उत्तरः = उत्कृष्टो यस्मात्सः ।

हिन्दी—यह राजा नल तो कोई और प्रकार के ही लोकपाल थे अर्थात् यम, कुबेरादि लोकपालों से भिन्न थे क्योंकि विबुधपति इन्द्र पूर्व दिशा के स्वामी हैं पर नल अपूर्व उत्कृष्ट विद्वानों के पति थे । यमराज दण्डपाणि होते हैं पर राजा नल अदण्डपाणि (दण्ड = वध आदि न करने तथा कर न लेने के कारण) तथा धर्म से राज्य करनेवाले थे । प्रचेता अर्थात् वरुण जघन्य (जघन्या = पश्चिम दिशा के स्वामी होने के कारण) हैं पर राजा नल जघन्य (कुत्सित कर्म न करनेवाले तथा उत्कृष्ट चित्तवाले थे । धनद कुबेर उत्तर दिशा के लोकपाल हैं पर राजा नल अनुत्तर थे अर्थात् उनसे श्रेष्ठ और कोई नहीं था ।

येन प्रचण्डदोर्दण्डमण्डलीविश्रान्तविजयश्रिया श्रवणोत्पलदलायमानमानिनीमानलुण्ठाकलोचनेन पृथ्वी प्रिया च कामरूपधारिणी सा तेन भुक्ता ।

सुधा—येनेति । येन = राज्ञा नलेन प्रचण्डदोर्दण्डमण्डली विश्रान्त विजयश्रिया—प्रचण्डाभ्याम् = उग्राभ्याम् दोर्दण्डाभ्याम् = भुजदण्डाभ्याम् मण्डली कृता विश्रान्ता = विगतक्लान्ता विजयश्री = जयलक्ष्मीः या तया कामरूपधारिणी = कामरूपदेशीया पृथ्वी = भूमिः तेन भुक्ता = उपभुक्ता (तथा) श्रवणोत्पलदलायमानमानिनी मानलुण्ठाक लोचनेन—श्रवयोः = कर्णयोरुपरि ये उत्पलदलायमाने कामिनीनां लुण्ठाके = लुण्ठन कारके लोचने यस्य तेन = कर्णोपरि कमलदलायमान सुन्दरीलुण्ठनकारकलोचनेन तेन = नलेन कामरूपधारिणी—काम्यत इति कामम् = अभिलषणीयम् रूपम्, कामम् = अतिशयेन रूपं वा धरतीत्येवंशीला प्रिया = दयिता भुक्ता = सेविता ।

हिन्दी—जिन राजा नल ने अपनी प्रचण्ड भुजाओं द्वारा चारों ओर से विश्रान्त बनायी गयी विजयश्री द्वारा कामरूप देश की पृथ्वी का तथा कानों के ऊपर कमलदल के समान सुन्दर मानिनी कामिनियों को लूटनेवाले नेत्र होने के कारण कामरूपधारिणी प्रिया का भोग किया ।

यस्याः सकलजनमनोहारिविशेषकम्, पृथुललाटमण्डलम्, अभिलषणीयकान्तयः कुन्तलाः श्लाघनीयो नासिक्यभागः, बहुलवलीकः सरोमालिकालंकारश्च मध्यदेशः, प्रकटितकामकोटिविलासः काञ्चीप्रदेशः ॥

सुधा—यस्या इति । यस्याः = भुवः पक्षे प्रियायाः सकलजनमनोहारि—सकलानाम् निखिलानाम् जनानाम् = लोकानाम् मनांसि हरतीति तत् । विशेषकम् = विशेषक खण्डम्, पक्षे विशेषकम् = तिलकम् । पृथुललाटमण्डलम् = पृथुलम् = विशालम् यल्लाट मण्डलम् = लाटदेशस्य मण्डलम् पक्षे—पृथु = विस्तृतम् यत् ललाटमण्डलम् = मस्तकमण्डलम्, तत् । अभिलषणीयकान्तयः—अभिलषणीया = अभीप्सिता कान्तिः = प्रभा येषां ते । कुन्तलाः = कुन्तलप्रदेशाः पक्षे केशाः । श्लाघनीयः = प्रशसनीयः । नासिक्यभागः = नासिक्यप्रदेशः पक्षे नासिकायाः = घ्राणेन्द्रियस्य भागः । बहुलवलीकः—बहुलाः=बह्व्यः वलीकाः = उच्चावच भूमयः यस्मिन् सः । पक्षे बह्व्यः वल्यः = उदररेखा त्रिवल्यो वा यस्मिंस्तथा । सरोमालिकालङ्कारः = सह रोमपंक्तिमण्डलेनालङ्कारेण च । तडागपंक्तिभूषणः मध्यदेशः = मध्यभागः । पक्षे कटिभागः प्रकटितकामकोटिविलासः—प्रकटितः = स्फुटितः कामकोटीनाम् = सहस्रकामदेवानाम् विलासः = आनन्दः यस्मात् सः । काञ्चीप्रदेशः = काञ्ची देशः । पक्षे—श्रोणी देशः ।

हिन्दी—(भूमि पक्ष में) जिस भूमि का सभी लोगों के मन को मोहित करनेवाला विशेषक प्रदेश, विशाल लाटप्रदेशमण्डल, अभीष्ट कान्तिवाले कुन्तलप्रदेश, प्रशंसनीय नासिक्यप्रदेश, अत्यधिक ऊँची-नीची भूमिवाला तथा तड़ागपंक्तियों का अलङ्कार मध्यदेश एवं करोड़ों कामदेवों की सुन्दरता को प्रकट करनेवाला काञ्ची प्रदेश है ।

(प्रिया पक्ष में) जिस (प्रिया) का सभी लोगों के मन को मोहित करनेवाला तिलक, विशाल ललाटमण्डल, अभीप्सित कान्तिवाले केश, प्रशंसनीय नासिका भाग, बहुतसी त्रिवली तथा रोमपंक्तियों से अलंकृत कटिदेश (कमर) तथा करोड़ों कामदेवों के विलास को प्रकट करनेवाला काञ्ची (श्रोणी) भाग है ।

टिप्पणी—त्रिवली—पेट की तोंदी से ऊपर पड़नेवाली तीन रेखाएँ त्रिवली कहलाती हैं ।

काञ्चीप्रदेश—स्त्रियों के करधनी पहनने का स्थान (कमर का भाग) काञ्चीप्रदेश कहलाता है । इसी को शोणी भाग भी कहते हैं ।

किं बहुना—

यस्याः कृष्णागरुचन्दनामोदबहुलकुचाभोगभूषणा नृत्यतीवाङ्गरङ्गे रमणीयतया निरुपमा नवा यौवनश्रीः ॥

सुधा—यस्याः कृष्णेति । यस्याः=भुवः, पक्षे प्रियायाः । कृष्णागरुचन्दनामोदबहुलकुचाभोगभूषणा-कृष्णागरुचन्दनयोः = कालागरुचन्दनयोः आमोदः = सुगन्धिः तथा बहूनाम् लकुचानाम् = लकुचपादपानाञ्च आभोगः = विस्तारः भूषणं यस्यास्तादृशी । पक्षे कालागरुचन्दनयोः आमोदेन = सुगन्धिना बहुलयोः = उन्नतयोः कुचयोः = उरोजयोः आभोगः = विस्तारः, तदेव भूषणम्=अलङ्करणम् यस्यास्तादृशी । अङ्गरङ्गे—

अङ्गाख्य देश एव रङ्गम् = रङ्गस्थलम् नृत्यस्थानं वा तस्मिन् पक्षे अङ्गम् = शरीरमेव रङ्गम् = नृत्यस्थानम् तस्मिन् नृत्यती इव = नृत्यं कुर्वंती इव। रमणीयतया = मनोरमतया। निरुपमाने निर्गते उपमाने वायौ = पवने। पक्षे = उपमारहिता नवा = नूतना। यौवनश्रीः = तारुण्य-सुषमा। पक्षे यौवनस्य = तरुणतायाः श्रीः = कान्तिः (अस्ति)।

हिन्दी—अधिक क्या—(भूमि पक्ष में) जिस (भूमि) की कृष्णागरु एवं चन्दन वृक्षों की सुगन्ध तथा अत्यधिक लकुच वृक्षों के विस्तार से अलंकृता अङ्गप्रदेश के भूमिरूपी रङ्गमञ्च पर थिरकती हुई सी, रमणीयता से उपमारहित वायु में वनश्री है।

(प्रिया पक्ष में) जिस (प्रिया) की कृष्णागरु तथा चन्दन की सुगन्ध और उन्नत उरोजों के विस्तार से भूषित शरीररूपी रङ्गमञ्च पर नाचती हुई सी, रमणीयता से उपमारहित नूतन यौवन सुषमा है।

किं चान्यत्—

अन्य एव नवावतारः स कोऽपि पुरुषोत्तमो यो न मीनरूपदूषितः, नाङ्गीकृतविश्वविश्वंभराभारोऽपि कूर्मीकृतात्मा, न वराहवपुषाक्लेशेन पृथ्वीं बभार, न च नरसिंहः समुत्सन्नहिरण्यकशिपुः, न बलिराजबन्धनविधौ वामनो दैन्यमकरोत्, नापि रामो लङ्केश्वरश्रियमपाहरत्, नापि बुद्धः कल्किकुलावतारी॥

सुधा—किं चेति। सः असौ। पुरुषोत्तमः = विष्णुः, वा पुरुषेषु=उत्तमः = पुरुषश्रेष्ठः। कः अपि = अपरिच्छेद्यमहिमा। अन्यः = अपरः एव नवावतारः = नूतनः = पूर्वविलक्षणः अवतारः = जन्म यस्य सः। अथवा णु स्तुतौ इत्यत्र नवः = स्तुतयो अवतार्यन्ते यस्मिन्निति = स्तवास्पदम् सर्वोर्वीपतिभ्योऽसाधारण एव सः। नलः राजा। यः मीनदूषितः—मीनेन = मत्स्यावतारेण दूषितः = दोषयुक्तः न। पक्षे अमः = रोगोऽस्यास्तीत्यमी, नामी = अनमी = नीरोगः, अथवा नमयति शत्रून् अवश्यमिति कृत्वा नमी = प्रतापाक्रान्तारिचक्रः। तथा रूपदूषितः = रूपे = स्वरूपे दूषितः = दोषयुक्तः न। अङ्गीकृतविश्वविश्वम्भराभारः अपि—अङ्गीकृतः=स्वीकृतः विश्वस्याः= सम्पूर्णायाः विश्वंभरायाः=पृथिव्याः भारः = धुरः येन सः अपि। कूर्मीकृतात्मा न= भङ्गुरीकृतप्राणः न। अथवा कुत्सिता ऊर्मिः = पीडा यस्य सः, कूर्मीकृतः आत्मा= प्राणाः यस्य सः नास्ति। अङ्गीकृत भारो हि पीड़ावान् भवति। यदुक्तम्—ऊर्मिः पीड़ा जवोत्कण्ठाभङ्गप्राकाश्यवीचिषु। बराहवपुषा-वराहस्य = शूकरस्य वपुः = शरीरम्, तेन। क्लेशेन = कष्टेन पृथ्वीम् = धराम् न बभार न धारयामास। तथा वरम् = श्रेष्ठम् आहवम् = युद्धम् पुषा = पुष्णता क्लेशेन न, अपितु सुखेन धराम् बभार। च = तथा। समुत्सन्नहिरण्यकशिपुः = समुत्सन्नः = नाशितः हिरण्यकशिपुः = हिरण्यकशिपुनामराक्षसराजः येन सः नरसिंहः = नरसिंहावतारः न। अथवा न च समुत्सन्नम् = नाशितम् = हिरण्यम् = धनम् कशिपु = भोजनाच्छादनादिः यस्मात् सः। नरसिंहः—नरेषु सिंह वीरपुरुषः। बलिराजबन्धनविधौ—बलिराजस्य=दैत्यराजस्य

वले: बन्धनस्य विधौ = विधाने दामनः = वामनावताररूपः दैन्यम् दीनताम् नाकरोत् = नासम्पादयत्। अथवा बलिनाम् = राज्ञाम् बन्धने विधाने वा दैन्यम् = मनोदैन्यम् नाकरोत्। रामः = रामरूपः अपि लङ्केश्वरस्य = रावणस्य श्रियम् = शोभाम् नापहरत् = अपहरणम् नाकरोत्। अथवा रामः = सुन्दरः अपि अलम् अत्यर्थम् कस्य = ब्रह्मणः ईश्वरस्य = शम्भोः श्रियम् = शोभाम् नापहरत् = देवस्वापहारी न। बुद्धः = बुद्धावतारः पक्षे विद्वान् अपि। कल्किकुलावतारी = कलियुगावतारी अथवा पापिकुलोत्पन्नो न।

हिन्दी—और यह (राजा नल) कोई दूसरे ही नवावतारी पुरुषोत्तम थे जो कि मीन (मत्स्य) अवतार से दूषित न होकर अनमी (नीरोग) रूप दूषणरहित थे। सम्पूर्ण विश्व के भरण पोषण के भार को स्वीकार करके भी कूर्मरूप धारण करनेवाले नहीं थे तथा शूकरावतार में शरीर धारण कर क्लेश के साथ धरणी को धारण नहीं किया था। नरसिंह थे पर हिरण्यकशिपु का विनाश नहीं किया था। राक्षसराज बलि के बन्धन विधान में वामनावतार पुरुषोत्तम ने दीनता की थी पर इन्होंने बलशाली राजाओं के बन्धन विधान में दीनता भी नहीं की थी। और सुन्दर होकर भी राजा नल ने राम के समान लङ्केश्वर रावण की श्री का अपहरण नहीं किया। बुद्ध (विद्वान्) होकर कलिकुल से उनका कोई सम्बन्ध नहीं था।

टिप्पणी—यहाँ पर भगवान् विष्णु के नवावतार से भिन्न राजा नल को कोई अन्य पुरुषोत्तम माना गया है। भगवान् विष्णु के नव अवतार, जो कि हो चुके हैं, निम्न प्रकार हैं :—

मत्स्यः कूर्मो वराहश्च नृसिंहो वामनस्तथा।
रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्धश्च कल्किरित्यपि॥

अर्थात् मत्स्य, कूर्म, बराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण और बुद्ध कल्कि भगवान् का अवतार आगे चलकर होगा अतएव दशावतार न कहकर नवावतार की गणना की गयी है।

किं बहुना—

धन्यास्ते दिवसाः स येषु समभूद् भूपालचूडामणि-
र्लोकालोकगिरीन्द्रमुद्रितमहीविश्रान्तकीर्तिर्नलः।
लोकास्तेऽपि चिरंतनाः सुकृतिनस्तद्वक्त्रपङ्केरुहे
यैर्विस्फारितनेत्रपत्रपुटकैर्लावण्यमास्वादितम्॥ ३४॥

अन्वयः—ते दिवसाः धन्याः येषु लोकालोकगिरीन्द्रमुद्रितमही विश्रान्तकीर्तिः भूपालचूड़ामणिः नलः समभूत्। ते सुकृतिनः लोकाः अपि चिरन्तनाः (धन्याः) यैः विस्फारितनेत्रपत्रपुटकैः तद् वक्त्रपङ्केरुहे लावण्यम् आस्वादितम्। ३४॥

सुधा—किं बहुना = किमधिकेन। ते दिवसाः = तानि दिनानि। धन्याः = धन्यवादार्हाणि। येषु = दिवसेषु। लोकालोकगिरीन्द्रमुद्रितमहाविश्रान्त कीर्तिःलोकेन= लोक नाम्ना, आलोकेन = आलोकनाम्ना च गिरीन्द्राभ्याम् = पर्वताभ्याम् = मुद्रिता=

आवृता या मही = भूमिः, तस्यां विश्रान्ता = विस्तृता कीर्तिः यशः यस्य तादृशः। भूपालचूडामणिः = भूपालानाम् = नृपाणाम् चूड़ामणिः = शिरोमणिः। नलः = नलाख्य राजा। समभूत् = समभवत्। ते = अमी सुकृतिनः=पुण्यवन्तः चिरन्तनाः= प्राचीनाः लोकाः = जनाः अपि (धन्याः) यैः=लोकैः। विस्फारितनेत्रपत्रपुटकैः— विस्फारितानि = विस्तृतानि नेत्राणि = नयनानि, तान्येव पत्रपुटकानि = दलपुटकानि तैः। तद्वक्त्रपङ्केरुहे—तस्य=नलस्य वक्त्रम् = मुखमेव पङ्केरुहम् = कमलम् तस्मिन्। लावण्यम् = सौन्दर्यम्। आस्वादितम् = आस्वादनपथे नीतम्। अत्र शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्।

हिन्दी—अधिक क्या कहें – वे दिन धन्य हैं जिनमें वह लोक और आलोक नामक पर्वतों से घिरी हुई पृथ्वी पर फैली हुई कीर्तिवाले राजाओं के चूड़ामणि नल राजा उत्पन्न हुए। पुण्यवान् वे प्राचीन लोग भी धन्य थे जिन्होंने विस्तारित नेत्ररूपी पुत्रपुटकों से राजा नल के मुखरूपी कमल में लावण्य का आस्वादन किया॥ ३४॥

अपि च—

ये कुन्दद्युतयः समस्तभुवनैः कर्णावतंसीकृता
यैः सर्वत्र शलाकयेव लिखितैर्दिग्भित्तयश्चित्रिताः।
यैर्वक्तुं हृदि कल्पितैरपि वयं हर्षेण रोमाञ्चिता-
स्तेषां पार्थिवपुंगवः स महतामेको गुणानां निधिः॥ ३५॥

अन्वयः—ये (कुन्दद्युतयः (गुणाः) समस्त भुवनैः कर्णावतंसीकृताः। यैः लिखितैः (गुणैः) दिग्भित्तयः सर्वत्र शलाकया चित्रिता इव। कल्पितैः यैः हर्षेण वयम् हृदि रोमाञ्चिताः। तेषाम् महताम् गुणानाम् निधिः सः एकः पार्थिवपुङ्गवः (नलः) (आसीत्)।

सुधा—ये कुन्देति। कुन्दद्युतयः—कुन्द इव द्युतिः=कान्तिर्येषां ते = कुन्दकान्तयः ये = पूर्वोक्ताः (गुणाः) समस्तभुवनैः—समस्तानि = सर्वाणि भुवनानि = लोकानि, तैः। कर्णावतंसीकृताः=कर्णोपरिधारिताः। यैः लिखितैः अङ्कितैः (गुणैः) दिग्भित्तयः— दिशः एव भत्तयः = दिशारूपाः भित्तयः। सर्वत्र = सर्वेषु स्थानेषु। शलाकया = तूलिकया (ब्रुश इति भाषायां, तेन) चित्रिताः इव = चित्राङ्किता इव (आसन्)। वक्तुम् = वर्णयितुम्। कल्पितैः = सम्भावितैः यैः गुणैः हर्षेण = हर्षाधिक्येन। वयम् = श्रोतारः। हृदि चित्ते। रोमाञ्चिताः = लोमाञ्चपूर्णाः (भवन्ति)। तेषाम् = तादृशानाम् महताम्=श्रेष्ठानाम् = गुणानाम् = वैशिष्ट्यानाम्। निधिः = कोषः सः = उपयुक्तः एकः = अद्वितीयः पार्थिवपुङ्गवः = पार्थिवेषु पुङ्गवः = नृपश्रेष्ठः (नलः) आसीदिति। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ ३५॥

हिन्दी—कुन्द पुष्प के समान कान्तिवाले जिन गुणों को समस्त लोकों ने अपने कानों का आभूषण सा बना लिया, जिन (गुणों) से लिखित दिशारूपी दीवारें सर्वत्र तूलिका (ब्रुश से) चित्राङ्कित सी थीं। वर्णन करने के लिए जिन गुणों की मन में

कल्पना करने से हम (श्रोताओं और वक्ताओं) को हर्ष से रोमाञ्च हो जाता है। इस प्रकार महान् गुणों की निधि वह अकेले नृपश्रेष्ठ राजा नल थे ॥ ३५ ॥

यस्य च युधिष्ठिरस्येव न कश्चिदपार्थो वचनक्रमः मरुमण्डलमिवापापं मानसम्, महानसमिव सूपकारसारं कर्म, कार्मुकमिव सत्कोटिगुणं दानम्, दानवकुलमिव दृष्टवृषपर्वोत्सवं राज्यम्, राजीवमिव भ्रमरहितं सर्वदा हृदयम् ॥

सुधा—यस्य चेति। च = तथा। यस्य = राज्ञः नलस्य। युधिष्ठिरस्य इव = अर्जुनाग्रजस्येव पक्षे युधि=युद्धे स्थिरस्य = स्थितस्य। कश्चित् = कोऽपि अपार्थः = अर्थाद् अपेतः = अर्थरहितः, अन्यत्र पृथायाः=कुन्त्याः अपत्यत्वात् पार्थरहितः। वचनक्रमः-वचनानां क्रमः = कथनक्रमः। न आसीत्। मरुमण्डलम् इव = मरुस्थलमिव। अपापम्-अपेतः आपो यस्मात् तादृशम्। अथवा अपापम् = पापरहितम्। मानसम् = हृदयम्। महानसम् इव = पाकशालेव सूपकारसारम्—सूपकारैः = सूदैः सारम् तत्वम् पक्षे सुष्ठु उपकारेण सारम्। कर्म = कृत्यम्। कार्मुकम् इव=धनुरिव सत्कोटि गुणं दानम् – सत् = शोभनम् कोटिः=संख्या, अथवा अटनिः गुणे = ज्या दानम् तत्। पक्षे–सत्पात्र प्रतिपादनं दानम्। दानवकुलम् इव दानवानां कुलम् = राक्षसदलम् इव। दृष्टम्=अवलोकितम् यद् वृषपर्वोत्सवम्। अथवा वृषः=धर्मः च पर्व = पूर्णिमादिकम् च उत्सव = पुत्रजन्मादिकम् तेषां समाहार इति वृषपर्वोत्सवम्, दृष्टम्=अवलोकितम् यद् वृषपर्वोत्सवम् तत् तादृशम् राज्यम् = शासनम्। राजीवम् इव=कमलमिव भ्रमरहितम्–भ्रमरेभ्यो हितम् अलिहितकरम्। पक्षे भ्रमेण रहितम् = भ्रान्तिशून्यम्। सर्वदा = सदा हृदयम् = अन्तःकरणम् (आसीत्)।

हिन्दी—युधिष्ठिर जिस प्रकार पार्थ के बिना कोई बात नहीं करते थे उसी प्रकार जिसका अपार्थ=अर्थरहित कोई बातचीत का क्रम नहीं होता था। मरुमण्डल जिस प्रकार अपाप (जलरहित) होता है वैसे ही अपाप=पापरहित जिसका मन था। जिस प्रकार रसोईघर में सूपकार (पाचक या भोजन बनानेवाले का मुख्य कर्म भोजन बनाना होता है वैसे ही सुन्दर उपकाररूप कर्म ही जिसका सार था। जिस प्रकार धनुष सुन्दर यष्टि तथा प्रत्यञ्चा के गुणों से युक्त होता है उसी प्रकार सत्कोटिदान= उत्तम करोड़ों गुना जिसका दान कार्य था। जिस प्रकार दानवकुल को दृष्ट वृषपर्वोत्सव (वृषपर्वा नामक का उत्सव देखा हुआ) था उसी प्रकार जिसके राज्य में धर्म, पूर्णिमादि पर्व तथा पुत्रजन्म, विवाहादि उत्सव दिखलाई पड़ते थे। जिस प्रकार कमल सदा भौरों से घिरा (भ्रमरहित) रहता है उसी प्रकार जिस राजा नल का हृदय सदा भ्रमरहित रहता था।

यश्च परमहेलाभिरतोऽप्यपारदारिकः। शान्तनुतनयोऽपि न कुरूपयुक्तः ॥

सुधा—यश्चेति। च=तथा यः = राजा नलः। परमहेलाभिरतः अपि–परमा= महती हेला=शृङ्गारचेष्टा, तया अभिरतः=तत्परः अपि। अथवा परः=उत्कृष्टः महः= उत्सवः यस्यां तस्याम् इलायाम्=पृथिव्याम् अभिरतः=तत्परः अपि। अपारदारिकः— परदारिकासु रतः पारदारिकः = अपारदारिक इत्यपारदारिकः=शत्रुकन्यास्वनभिरतः।

अथवा अपाराः बह्व्यः दारिकाः = कन्याकाः सन्ति यस्य तादृशः। शान्तनुतनयः अपि शान्तश्चासौ नुतनयश्च = स्तुत्यनीतिश्च यस्तादृशः अपि। शान्तनुतनयः अपि शान्तनु कुलजातः अपि। कुरूपयुक्तः—कुरुषु उपयुक्तः नासीत् अथवा कुत्सितम् रूपम्, कुरूपम् = निन्दितरूपम, तेन युक्तः संयुक्तः नासीत्।

हिन्दी - तथा जो (राजा नल) महती शृङ्गार चेष्टाओं में रत होता हुआ भी (अथवा उत्तम उत्सवों वाली पृथ्वी में तत्पर होकर भी) अपार दारिकाओं (कन्याओं वाला (अथवा-शत्रुकन्याओं में अनुरक्त न रहनेवाला) था। (जो) शान्त तथा प्रशंसनीय नीतिवाला होकर भी (अथवा—शान्तनुकुल का होता हुआ भी) कुरूपयुक्त (अथवा कुरु वंश में फिर होनेवाला अर्थात् कौरवों के समान आततायी) नहीं था।

किं बहुना—

सदाहंसाकुलं बिभ्रन्मानसं प्रचलज्जलम्।
भूभृन्नाथोऽपि नो याति यस्य साम्यं हिमाचलः॥ ३६॥

अन्वय—सदाहंसाकुलम् प्रचलज्जलम् मानसम् बिभ्रन् भूभृन्नाथः अपि हिमाचलः यस्य साम्यम् नो याति॥ ३६॥

सुधा—सदेति। सदा = सर्वदा हंसैः = हंसपक्षिभिः आकुलम् = आकीर्णम्। अथवा दाहेन सहितम् सदाहम् = सखेदम्। साकुलम् = व्यग्रम्। प्रचलज्जलम् —प्रचलत् = प्रकम्पमानम् जलम् = नीरम् यस्मिस्तत्। पक्षे जडम् = व्यामूढम्। मानसम = मानसरोवरम्, पक्षे चेतः। बिभ्रत् = धारयन्। भूभृन्नाथः अपि—भूभृताम् = पर्वतानाम् नाथः = स्वामी अपि हिमाचलः = हिमालयः। यस्य=नलस्य। साम्यम् = समताम्। न याति = न गच्छति॥ ३६॥

हिन्दी - अधिक क्या—सदा हंसों से परिपूर्ण प्रकम्पमान् (चञ्चल) जलवाले मानसरोवर को धारण करता हुआ पर्वतराज हिमालय जिन (राजा नल) की समता नहीं कर पा रहा है। (अथवा)

दाह और खेद से युक्त प्रकम्पमान् जड़ मानस (चित्त) धारण करता हुआ पर्वतराज हिमालय जिस राजा नल की समानता नहीं कर पा रहा है क्योंकि हिमालय सदैव हंसों से युक्त, दाह तथा व्यग्रता से पूर्ण लहराते जलवाले मानसरोवर या चञ्चल जड़ मन को धारण करता है पर राजा नल सदा हंसों जैसे उज्ज्वल गुणोंवाले मन्त्रियों आदि से युक्त जल के समान चञ्चल चित्तवाले होकर भी भूपालों के स्वामी थे॥ ३६॥

अपि च—

नक्षत्रभूः क्षत्रकुलप्रसूतेर्युक्तो नभोगैः खलु भोगभाजः।
सुजातरूपोऽपि न याति यस्य समानतां कांचनकाञ्चनाद्रिः॥ ३७॥

अन्वयः—नक्षत्रभूः नभोगैः युक्तः सुजातरूपः अपि काञ्चनाद्रिः भोगभाजः क्षत्रकुलप्रसूतेः यस्य काञ्चनसमताम् न याति॥ ३७॥

सुधा—नक्षत्रभूरिति। नक्षत्रभूः—नक्षत्राणाम् भूः = स्थानम्=अत्युच्चः। नभोगैः-नभसि = आकाशे गतैः यातैः = देवैः युक्तः = पूर्णः। सुजातरूपः = सुजातम् = स्वर्णम् रूपम् यस्य सः सुन्दरः अपि काञ्चनाद्रिः = हेमाद्रिः भोगभाजः—भोगम् = सुखैश्वर्यादि पदार्थम् भजतीति तस्य। क्षत्रकुलप्रसूतेः = क्षत्रियकुलजातस्य। यस्य = राज्ञः नलस्य काञ्चन = कामपि समानताम् = साम्यम्। न याति न गच्छति, अक्षत्रियभुवत्वात् भोगैरयुक्तत्वाच्च ॥ ३७ ॥

हिन्दी—और भी—नक्षत्रों का स्थान (अत्यन्त उच्च) देवताओं से युक्त (यक्ष-किन्नर-गन्धर्वादि का निवासस्थान होने से) सुजात रूप (स्वर्णरूप या सुन्दर) होकर भी हेमाद्रि भोग (सुख-ऐश्वर्यादि) भोगनेवाले क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुए जिन राजा नल की किसी बराबरी को नहीं पहुँच पाता है क्योंकि वह न तो क्षत्रिय कुल में जन्मा है और न भोग-सुखों से युक्त है।

तस्य च महामहीपतेरस्तिस्म प्रशस्तिस्तम्भः सकलश्रुतिशास्त्रशासनाक्षर-मालिकानाम्, न्यग्रोधपादपः पुण्यकर्मप्ररोहाणाम् आकरः साधुव्यवहार-रत्नानाम्।

सुधा—तस्य चेति। च = तथा। तस्य = उपर्युक्तगुणसम्पन्नस्य महामहीपतेः = महतः महीपतेः = भूपतेः नलस्य। सकलश्रुतिशास्त्रशासनाक्षरमालिकानाम्—सकलानाम्=समस्तानाम् श्रुतीनाम् = वेदानाम् शास्त्राणां = षट्शास्त्राणाम् शासनाक्षर-मालिकानाम् = नीतिविद्यानाञ्च समाहारस्तेषाम्। प्रशस्तिस्तम्भः—प्रशस्तेः = प्रशंसायाः स्तम्भः = स्तूपरूपः। पुण्यकर्म प्ररोहाणाम्—पुण्यकर्मरूपाणां प्ररोहाणाम् = वृक्षाणाम् न्यग्रोधपादपः = वटवृक्षसदृशः। साधुव्यवहार रत्नानाम्—साधुव्यवहार एव = सदाचरणमेव रत्नम् तेषाम्। आकरः = निधिः। (ब्राह्मणः श्रुतशीलो नाम महामन्त्री) अस्तिस्म = आसीत्।

हिन्दी—तथा उन महान् महीपति (नल) का समस्त वेदों, शास्त्रों तथा नीति विद्याओं का प्रशस्तिस्तम्भ, पुण्यकर्मों के प्ररोहण का वटवृक्ष, साधु व्यवहाररूपी रत्नों का आकर (खजाना) (श्रुतशील नामक ब्राह्मण महामन्त्री) था।

इन्दुः पार्थिवनीतिज्योत्स्नायाः, कन्दः सकलकलाङ्कुरकलापस्य, सागरः समस्तपुरुषगुणमणीनाम्, आलानस्तम्भश्चपलराज्यलक्ष्मीकरेणुकायाः सकलभुवन-व्यापारपारावारनौकर्णधारः, सुधाम्भोनिधिडिण्डीरपिण्डपाण्डुरयशः कुशेशय-खण्डमण्डितसकलसंसारसरः, सरागीकृतसमस्तपार्थिवानुजीवी, जीवितसमः, प्राणसमः हृदयसमः, शरीरमात्रभिन्नो द्वितीय इवात्मा, कुलक्रमागतः, संक्रान्ति-दर्पणः सुखदुःखयोः, स्वभावानुरक्तः, शुचिः सत्यपूतवाक्, कृतज्ञः, ब्राह्मणः सालङ्कायनस्य सूनुः श्रुतशीलो नाम महामन्त्री ॥

सुधा—इन्दुरिति। पार्थिवनीतिज्योत्स्नायाः—पार्थिवानां नीतिः = राजनीतिः तद्रूपा या ज्योत्स्ना = चन्द्रिका तस्याः। इन्दुः = चन्द्रः। सकलकलाङ्कुरकलापस्य—सकलानाम् = निखिलानाम् कलानाम् अङ्कुराणि = प्ररोहाणि, तेषाम् कलापः =

समूहस्तस्य । कन्दः = मूलम् । समस्तपुरुषगुणमणीनाम्—समस्तेषु = सम्पूर्णेषु = पुरुषेषु = जनेषु ये गुणरूपाः मणयस्तेषाम् । सागरः = सिन्धुः । चपलराज्यलक्ष्मी करेणुकायाः—राज्ञः लक्ष्मी = राजलक्ष्मीः, राजलक्ष्मी एव करेणुका = हस्तिनी, चपला = चञ्चला या राजलक्ष्मी करेणुका तस्याः । आलानस्तम्भः = आधारस्तम्भः बन्धनस्तम्भो वा । सकलभुवनव्यापारपारावारनौकर्णधारः—सकलानाम् = सम्पूर्णानाम् भुवनानाम् = लोकानाम् व्यापार एव पारावारः = सिन्धुस्तस्मिन् नौः = तरिस्तस्याः कर्णधारः = संचालकः । सुधाम्भोनिधिडिण्डीरपिण्डपाण्डुरयशः कुशेशयखण्डमण्डितसकलसंसारसाराः--सुधायाः = अमृतस्य अम्भोनिधिः = सागरः, तस्य डिण्डीरपिण्डम् इव = तेन पिण्डमिव पाण्डुरम् = स्वच्छम् यशः तदेव कुशेशयखण्डम् = कमलसमूहः तेन मण्डितानि सकल संसारस्य = अखिलविश्वस्य सराँसि तडागानि येन तादृशः । सरागीकृतसमस्तपार्थिवानुजीवी–सरागीकृताः अनुरञ्जिताः समरताः = सर्वे पार्थिवाः = राजानः, अनुजीविनश्च = सेवकाश्च येन सः । जीवितसमः = जीवनसदृशः । प्राणसमः = प्राणैः = जीवनेन समः = समानः । हृदयसमः = चेतः समः । शरीरमात्र भिन्नः शरीरेण मात्रम् भिन्नः=केवलं शरीरेण पृथग्भूतः । द्वितीय आत्मेव= अपरः जीवसदृशः । कुलक्रमागतः-- कुलक्रमेण = वंशानुक्रमेण आगतः आयातः । सुखदुःखयोः = आनन्दक्लेशयोः । संक्रान्तिदर्पणः = सन्धिदर्पणः । स्वभावानुरक्तः— स्वभावेन = प्रकृत्या अनुरक्तः = प्रियः । शुचिः = पवित्रचरितः । सत्यपूतवाक्— सत्या = ऋता पूता पवित्रा च वाक् = वाणी यस्य सः । कृतज्ञः = कृतंमन्यः ब्राह्मणः = द्विजः । सालङ्कायनस्य=सालङ्कायननाम्नः पुरुषस्य सूनुः = सुतः । श्रुतशीलः नाम = श्रुतशीलनामकः महामन्त्री —महाँश्चासौ मन्त्री = महामात्यः (आसीत्) ।

हिन्दी—राजनीतिरूपी ज्योत्स्ना का चन्द्रमा, समस्त कलाओं के अंकुरणसमूह की जड़, समस्त पुरुषों में गुणरूपी रत्नों का सागर चञ्चल राजलक्ष्मीरूपा हथिनी का बन्धन स्तम्भ, सकल भुवन व्यापाररूपी सागर में नाव का खेनेवाला (कर्णधार) अमृतसागर के फेनपिण्ड के समान स्वच्छ कीर्तिरूपी कमल समूह से मण्डित पूर्ण संपूरित तड़ागों के समान, समस्त राजाओं तथा अनुजीवियों को अनुरंजित करनेवाला, जीवन के समान, प्राणसदृश, हृदयसदृश, शरीर मात्र से पृथक् द्वितीय आत्मा जैसा कुलक्रम से बना हुआ (पीढ़ी-दर-पीढ़ी से बननेवाला). सुख और दुःख के संक्रान्ति-दर्पण के समान प्रकृति से अनुरक्त, शुद्ध सत्य तथा पवित्र वाणीवाला, कृतज्ञ ब्राह्मण, सालङ्कायन का पुत्र श्रुतशील नाम का महामन्त्री था ।

मित्रं च मन्त्री च सुहृत्प्रियश्च विद्यावयः शीलगुणैः समानः ।
बभूव भूपस्य स तस्य विप्रो विश्वंभराभारसहः सहायः ॥ ३८ ॥

अन्वयः - च तस्य भूपस्य मित्रम् च मन्त्री च सुहृत्, प्रियः, विद्या, वयः शीलगुणैः समानः विश्वम्भराभारसहः सः विप्रः सहायः बभूव ॥ ३८ ॥

सुधा मित्रमिति । च = तथा । तस्य = उपर्युक्तस्य । भूपस्य = राज्ञः । मित्रम् = सखा । (च) मंत्री = सचिवः । (च) सुहृत् = सहृदयः । प्रियः =

अभीष्टः। विद्यावयःशीलगुणैः—विद्या ज्ञानम् च वयः = आयुः च शीलम् = सदाचारः च गुणास्तैः समानः = सदृशः विश्वम्भराभारसहः विश्वम्भरायाः = पृथिव्याः भारसहः = धुरसहः = शासकः सः विप्रः = श्रुतशीलाख्यो ब्राह्मणः सहायः=सहयोगी। बभूव = अभवत्। उपजातिवृत्तम् ॥ ३८ ॥

हिन्दी—(तथा) उस भूपाल (नल) का मित्र, मन्त्री, सुहृद्, प्रिय और विद्या, आयु तथा सदाचार गुणों से समान, विश्वम्भरा का भार सहनेवाला वह ब्राह्मण सहायक हुआ।

अपि च—

ब्रह्मण्योऽपि ब्रह्मवित्तापहारी स्त्रीयुक्तोऽपि प्रायशो विप्रयुक्तः।
सद्वेषोऽपि द्वेषनिर्मुक्तचेताः को वा तादृग्दृश्यते श्रूयते वा ॥ ३९ ॥

अन्वयः—ब्रह्मण्यः अपि ब्रह्मवित्तापहारी स्त्रीयुक्तः अपि प्रायशः विप्रयुक्तः, सद्वेषः अपि द्वेषनिर्मुक्तचेताः तादृक् कः दृश्यते वा श्रूयते ॥ ३९ ॥

सुधा - ब्रह्मण्य इति। ब्रह्मण्यः - ब्राह्मणे हितः ब्रह्मण्यः। पक्षे = ब्रह्मवेत्ता अपि। ब्रह्मवित्तापहारी—ब्रह्मवित् = ब्रह्मज्ञः तथा तापहारी—तापं हरतीति, कष्टहरः अथवा ब्रह्मविदाम् = ब्रह्मज्ञानाम् तापहारो = दुःखहारकः। स्त्रीयुक्तः अपि स्त्रीभिः=नारीभिः युक्तः = युतः अपि प्रायशः = प्रायः विप्रयुक्तः विप्रैः ब्राह्मणैः युक्तः संयुक्तः। सद्वेषः= सताम् सज्जनानाम् वेषः यस्य सः = श्रेष्ठवेषयुक्तः अपि। द्वेषनिर्मुक्तचेतः—द्वेषेण= विरोधेण निर्मुक्तः = वियुक्तम् चेतः=मनो यस्य सः। तादृक् = तथाविधः (लोके) कः दृश्यते = अवलोक्यते वा = अथवा कः श्रूयते = आकर्ण्यते, अर्थात् न कोऽपि दृश्यत आकर्ण्यते वेति भावः ॥ ३९ ॥

हिन्दी—वह ब्राह्मण (ब्राह्मणों का हितकर या ब्रह्मज्ञ) होता हुआ भी ब्रह्मवित् तापहारी (ब्रह्मविद् या ब्रह्मविदों के) कष्टों को हरनेवाला था। स्त्रियोंसे युक्त होकर भी ब्राह्मणों से घिरा रहता था। सद्वेष होकर भी (उत्तम पुरुषों के वेष को धारण करनेवाला होकर भी) उसका चित्त सदा द्वेष से मुक्त रहता था। उसके समान (कोई अन्य व्यक्ति न दिखलाई पड़ता था और न सुना जाता था) ॥ ३९ ॥

अथ स पार्थिवस्तस्मिन्नमात्ये परिजनपरिवृद्धे प्रौढप्रेमणि निगूढमन्त्रे मन्त्रिणि तृणीकृतस्त्रैणविषयरसे सौराज्यरागजनने जननीयमाने जनस्य, सर्वोपधाशुद्धबुद्धौ निधाय राज्यप्राज्यचिन्ताभारमभिनवयौवनारम्भरमणीये रम्यरमणीयजननयनहृदयप्रिये प्रियङ्गुभासि जितमदनमहस्यपहसितसुरासुरसौभाग्ययशसि विस्मापितसमस्तजनमनसि लसल्लावण्यपुञ्जपराजितसकलसमुद्राम्भसि कान्तिकटाक्षितचन्द्रमसि वयसि वर्तमानो मानितमानिनीजनयौवनसर्वस्वः स्वयमनवरतं सकलसंसारसुखसंदोहमन्वभूत्।

सुधा—अथ = अनंतरम्। सः पार्थिवः = सः भूपतिः (नलः) तस्मिन् अमात्ये= तस्मिन् मन्त्रिणि। परिजनपरिवृद्धे = परिजनैः = परिजनसमूहैः परिवृद्धे=दृढे सजाते।

प्रौढप्रेमणि = प्रगाढानुरागे । निगूढमन्त्रे—निगूढम् मन्त्रणम् यस्य तस्मिन् = गुप्तमन्त्रे । तृणीकृतस्त्रैणविषयरसे—स्त्रीणामेवस्त्रैणाः = कामिनीविषयो विषयरसः = भोगानन्दः, तृणीकृतः = तृणवत् तुच्छं मानितः स्त्रैणविषयरसः येन तस्मिन् । सौराज्यराग जनने—सुष्ठु राज्यम् सुराज्यम् तदेव सौराज्यम्, रागस्य = प्रेम्णः जननम् = उत्पादनं सौराज्ये रागजननम् यस्मिन् तस्मिन् । जनस्य = प्रजाजनस्य । जननीयमाने = जननीवत् परिपाल्यमाने । सर्वोपधा शुद्धबुद्धौ—सर्वाः = निखिलाः उपधाः = कपटादि-दुष्टताः ताभिः शुद्धा = पूता बुद्धिः = मतिः यस्य तस्मिन् । राज्यप्राज्यचिन्ताभारम्—राज्यविषयकचिन्तनधुरम् । निधाय = धृत्वा । अभिनवयौवनारम्भरमणीये—अभिनवः = नूतनः यौवनारम्भः सच रमणीयः तस्मिन् = नूतनतारुण्यारम्भ-सुन्दरे । रम्यरमणीयजननयनहृदयप्रिये रम्याणाम् = रमणीकानाम् रमणीयजनानाम् कामिनीनाम् जनानाम् नयनानि = नेत्राणि हृदयानि = मनांसि च तेषां प्रियस्तस्मिन् । प्रियङ्गुभासि प्रियङ्गुवद् भा यस्मिंस्तस्मिन् = प्रियङ्गुपुष्पकान्तौ । जितमदन-महसि = जितम् = विजितम् मदनस्य = कामदेवस्य महः = कान्तिः येन तस्मिन् । अपहसितसुरासुरसौभाग्ययशसि—अपहसितम् = तिरस्कृतम् सुरासुराणाम् = देव-दैत्यानाम् सौभाग्ययशः = सौभाग्यकीर्तिः येन तस्मिन् । विस्मापितसमस्तजनमनसि—विस्मापितानि विस्मये नीतानि जनमनांसि = लोकचेतांसि येन तस्मिन् । लसल्लावण्य-पुञ्जपराजितसकलसमुद्राम्भसि—लावण्यस्य पुञ्जम् लावण्यपुञ्जम्, लसत् = शोभितम् यल्लावण्यपुञ्जम् तेन पराजिताः सकलाः समुद्रास्तेषामम्भास्तद्दृशि शोभित सौन्दर्यराशि पराभूतनिखिलसागरजले । कान्तिकटाक्षित चन्द्रमसि—कान्त्या = दीप्त्या कटाक्षितः = तिरस्कृतः चन्द्रमा येन तस्मिन् । वयषि = आयुसि वर्तमानः = स्थितः मानितमानिनी जनयौवनसर्वस्वः—मानितानाम् = मानयुक्तानाम् मानिनीजनानाम् = अभिमानिनी स्त्रीणाम् यौवनस्य=तारुण्यस्य सर्वस्वः = सारभूतः । स्वयम् = आत्मना । अनवरतम् = निरन्तरम् । सकलसंसारसुखसन्दोहम्—सकलस्य = अखिलस्य = जगतः यः सुख-सन्दोहः = आनन्दसमूहस्तम् । अन्वभूत् = अनुभवम् अकरोत् ।

हिन्दी—अनन्तर उस राजा (नल) ने परिजनों से समृद्ध, प्रगाढ प्रेमवाले, गोपनीय मन्त्रणावाले, स्त्री सुख सम्बन्धी विषयभोग को तृणवत् तुच्छ माननेवाले, सुन्दर राज्यानुराग उत्पन्न करनेवाले, माता के समान प्रजा पर प्रेम करनेवाले, सर्व-प्रकार की आपदाओं में शुद्ध बुद्धि रखनेवाले मन्त्री पर राज्य के चिन्ताभार को सौंपकर नूतन यौवन प्राप्त करने के कारण रमणीक, रम्य रमणियों के नयन तथा हृदय को प्रिय लगनेवाली, प्रियङ्गुसदृश कान्तिवाली, कामदेव को कान्ति को जीतनेवाली, देवताओं तथा असुरों के सौभाग्य एवं कीर्ति को तिरस्कृत करनेवाली, सभी लोगों के मन को विस्मित कर देनेवाली, शोभित सौन्दर्यसमूह से सम्पूर्ण समुद्र जल को पराजित कर देनेवाली चन्द्रकान्ति को भी कटाक्ष करनेवाली आयु (तरुणावस्था) में पहुँचकर मान करनेवाली अभिमानिनी युवतियों के यौवन का सर्वस्व (तत्व) बने हुए स्वयम् निरन्तर सम्पूर्ण संसार के सुखसमूह का अनुभव किया ।

तथा हि—

कदाचिदनुत्पन्नविषमरणो गरुड इवाहितापकारी हरिवाहनविलासमकरोत् ।

सुधा—कदाचिदिति । कदाचित् = कदापि । अनुत्पन्नविषमरणः—अनुत्पन्नम् = असञ्जातम् विषेण = शूलेन मरणम् = निधनम् येन सः । पक्षे—अनुत्पन्नम् = असञ्जातम् विषमः = भयङ्करः रणः = युद्धम् येन सः । गरुड इव = वैनतेय इव । अहितापकारी—अहीनाम् = सर्पाणाम् तापकारी = दुःखदायी । पक्षे—अहितानाम् = अमङ्गलानाम् अपकारी = अपकर्त्ता । हरिवाहनविलासम्—हरेः = विष्णोः वाहन एव विलासस्तम् = विष्णुवाहनानन्दम् । पक्षे—हरेः = अश्वस्य वाहनम् = प्रवहणम्, तस्य विलासः = आनन्दः, तम् = प्रवहणलीलाम् । अकरोत् = चकार ।

हिन्दी—कदाचित् विष के कारण मरण की स्थिति न उत्पन्न होने देनेवाले (कभी भयङ्कर युद्ध की स्थिति उत्पन्न न होने देनेवाले) गरुड़ के समान सर्पों को सन्ताप देनेवाले (अहितकर लोगों का अपकार करनेवाले) (राजा नल ने) हरिवाहन विलास (विष्णु भगवान् का गरुड़ की सवारी करने का आनन्द) (अथवा) रथप्रवहणविलास (रथलीला) किया ।

कदाचिच्चन्द्रमौलिरिव मदनबाणासनातिमुक्तशरसंछादितायां पर्वतभुवि विचचार ॥

सुधा—कदाचिदिति । कदाचित् = कदापि । चन्द्रमौलिः इव—चन्द्रः मौलौ यस्य सः = शशाङ्कशेखरः शिवः इव । मदनबाणासनातिमुक्तशरसंछादितायाम्—मदनस्य = कामदेवस्य बाणासनेन = धनुषा अतिमुक्ताः = परित्यक्ताः ये शराः = बाणास्तैः संछादिता, तस्याम् = आवृतायाम् पक्षे—मदनः, बाणः असनः अतिमुक्तकः शरश्च मुञ्ज एभिः वृक्षैः सम्यक् छादितायाम् = आवृतायाम् । पर्वतभुवि = पर्वतभूमौ विचचार = विचरणमकरोत् ।

हिन्दी—कदाचित् चन्द्रमौलि शिव के समान कामदेव के धनुष से छोड़े गये बाणों से संछादित (पक्ष में— मदन-बाण-असन-अतिमुक्तक शर आदि वृक्षों से आच्छादित) पर्वतभूमि पर (राजा नल ने) विचरण किया ।

कदाचिदच्युत इव शिशिरकमलाकरावगाहनोत्पन्नपुलककोरकिततनुरनन्तभोगभाक्सुखमन्वतिष्ठत् ।

सुधा—कदाचिदिति । कदाचित् = कदापि । अच्युत इव = विष्णुरिव । शिशिरकमलाकरावगाहनोत्पन्नपुलककोरकिततनुः—शिशिरे = शिशिरकाले कमलायाः = लक्ष्म्याः करयोः पाण्योः अवगाहनम् = निमज्जनम् तेन उत्पन्नः = संजातः यः पुलकः = रोमाञ्चम्, तेन कोरकितम् तनुः = शरीर यस्य सः । पक्षे—शिशिरकाले कमलानाम् = पद्मानाम् आकरः = वनम् तस्मिन्न अवगाहनेन = भ्रमणेन उत्पन्नः = संजातः यः पुलकः = रोमाञ्चम् तेन कोरकितम् तनुर्यस्य तादृशः । अनन्तभोगभाक्सुखम् अनन्तभोगभाजः = शेषाहिवपुषः सुखम् आनन्दम् तत् । पक्षे—अनन्तभोगभाक् = असंख्यविलासभाजनम् सुखम् = आनन्दम् । अन्वतिष्ठत = अनुबभूव ।

हिन्दी—कदाचित् विष्णु भगवान् के समान शिशिर काल में लक्ष्मी के हाथों का आलिङ्गन करने से रोमाञ्चित शरीर (पक्ष में) शिशिर काल में कमलवन में प्रवेश करने के कारण उत्पन्न पुलकायमान शरीरवाला शेषनाग के शरीरस्पर्शवाले सुख (पक्ष में असंख्य भोग-विलासवाले सुख) का वह अनुभव किया करता था।

कदाचन नलिनयोनिरिव राजसभावस्थितः प्रजाव्यापारमचिन्तयत् ॥

सुधा—कदाचनेति। कदाचन = कदाचित्। नलिनयोनिः इव—नलिनम्=जलजम् योनिः = उत्पत्तिस्थानम् यस्य सः = ब्रह्मा इव। राजसभावस्थितः—राजसम् = रजोगुणसम्बन्धि यो भावः तस्मिन् अवस्थितः = स्थितः। पक्षे—राज्ञां सभा राजसभा = राजपरिषद्, तस्यामवस्थितः = स्थितः। प्रजाव्यापारम्—प्रजाया = सृष्टेः यः व्यापारः = सृजनम् तम्। पक्षे—प्रजायाः—प्रजाजनस्य व्यापारः = रक्षणादिकम् कर्म। अचिन्तयत् = अविचारयत्।

हिन्दी—कदाचित् ब्रह्मा के समान राजसभाव में स्थित (रजोगुण में युक्त—राजसभा में बैठे) प्रजा व्यापार (संसार का सृजन करना—प्रजा के रक्षण, भरण-पोषण) सोचा करता था।

कदाचिन्मयूर इव कान्तोन्नमत्पयोधरमण्डलिविलासेन हर्षमभजत् ॥

सुधा—कदाचिदिति। कदाचित् = कदापि। मयूर इव = केकीव। कान्तोन्नमत्पयोधरमण्डलिविलासेन—कान्तेषु=कान्तिमत्सु उन्नमत्सु = उद्गच्छत्सु पयोधरेषु = जलदेषु यः मण्डलिविलासः = मण्डलाकारं नृत्यम्, तस्मिन्। पक्षे—कान्तानाम् = अङ्गनानाम् उन्नमन्ति = उद्गच्छन्ति यानि पयोधराणि = उरोजानि, तेषां यो मण्डलिविलासः = आलिङ्गनसुखम्, तेन। हर्षम् = प्रसन्नताम्। अभजत् = असेवत।

हिन्दी—जिस प्रकार वर्षाकाल में मयूर कान्तिमान् ऊँचे उभड़ते हुए बादलों को देखकर मण्डलाकार पुछांड बनाकर नाचकर प्रसन्न होता है उसी प्रकार कभी राजा नल कामिनियों के उन्नत उरोजों के आलिङ्गनानन्दसे हर्ष प्राप्त किया करता था।

कदाचिन्नक्षत्रराशिरिवाश्विन्या सेनया समन्वितो मृगानुसारी बहुशष्पवनमार्गं बभ्राम।

सुधा—कदाचिदिति। कदाचित् = कदापि। नक्षत्रराशिः इव सेनः = इनेन=सूर्येण सह। आश्विन्या = अश्विनी नक्षत्रेण। समन्वितः=संयुक्तः। मृगानुसारी मृगशिरनक्षत्रानुचरी। बहुशः = बहुधा। पवनमार्गम्—पवनस्य = वातस्य मार्गम् = पन्थानम् = आकाशम्। बभ्राम = अभ्रमत्। तथा आश्विन्याः—अश्वाः = घोटकाः सन्ति यस्यां (सेनायाम्) तादृश्या सेनया बलेन समन्वितः = युक्तः (नक्षत्रराशिः = तारक समूह इव कान्तिमान्) (राजा नलः) मृगानुसारी—मृगम् = हरिणम् अनुसरति = अनुधावति इति मृगानुसारी=हरिणानुगामी। बहुशष्पवनमार्गम्=बहुतृणयुक्तं पन्थानम्। बभ्राम = अभ्रमत्।

हिन्दी—जिस प्रकार नक्षत्रों का समूह सूर्य के साथ अश्विनी नक्षत्र से मृगशिर नक्षत्र तक आकाश में भ्रमण करता है उसी प्रकार नक्षत्र राशि के समान कान्तिमान्

राजा नल कभी घुड़सवार सेना से युक्त होकर मृगों का पीछा करता हुआ अत्यन्त घास वाले वनमार्ग में घूमा करता था।

कदाचिदाञ्जनेय इवाक्षविनोदमन्वतिष्ठत्।

सुधा—कदाचिदिति। कदाचित् = कदापि। आञ्जनेयः इव—अञ्जनायाः पुत्र आञ्जनेयः = हनुमान् इव अक्षस्य = रावणसुतस्य विनोदम् = वधम्। पक्षे—अक्षैः = पाशकैः विनोदम् = मनोरञ्जनम्। अन्वतिष्ठत् = अनु=पश्चादवस्थितो बभूव।

हिन्दी—जिस प्रकार अञ्जनिपुत्र हनुमान् ने अक्षयकुमार का वध किया था वैसे ही (खेल में) कभी (राजा नल) पांसों से मनोरञ्जन करने बैठ जाता था।

कदाचिद् वानरेश्वर इव सुग्रीवो वैदेहीति ब्रुवाणस्यालघुकाकुस्थस्यार्थिनः प्रार्थना क्रियतां सफलेति वानरपुङ्गवानादिदेश।

सुधा—कदाचित् इति। कदाचित्=कदापि (यथा) वानरेश्वरः = वानराणाम् = कपीनाम् ईश्वरः=स्वामी सुग्रीवः=वाल्यनुजः 'वैदेहि'—'हा सीते' इति ब्रुवाणस्य इत्थम् भाषमाणस्य। अलघुकाकुत्स्थस्य—अलघोः=गुरोः काकुत्स्थस्य = रामस्य अर्थिनः= याचकस्य। प्रार्थना=निवेदनम्। सफला = सिद्धा क्रियताम् = विधीयताम् इति= इत्थम्। वानरपुङ्गवान्—वानरेषु पुङ्गवाः वानरपुङ्गवास्तेषु = वानरश्रेष्ठान् आदिदेश= आज्ञापयामास। तथैव सुग्रीवः—सुष्ठु=शोभना ग्रीवा=कण्ठदेशः यस्य सः = सुकण्ठः नरेश्वरः=नृपः नलः। वै=नूनम् देहि=प्रदानं कुरु इति ब्रुवाणस्य इत्थं प्राथ्यंमानस्य आलघुकाकुत्स्थस्य—आसमन्तात् लघ्वां काकौ=भिन्नकण्ठध्वनौ तिष्ठतीति तस्य= याञ्चावशात् स्वरभेदवतोर्थिनो याचकस्य प्रार्थना = याञ्चा सफला=सिद्धा। क्रियताम्= विधीयताम् इति=एवम् नरपुङ्गवान् = नरश्रेष्ठान्। आदिदेश=आज्ञापयामास।

हिन्दी—जिस प्रकार वानरेश्वर सुग्रीव ने—'वैदेही' इस प्रकार चिल्लाते हुए महान् राम की की गई प्रार्थना को सफल करो यह वानरभटों को आदेश दिया था उसी प्रकार कदाचित् सुन्दर गर्दन वाले नरेश नल ने 'मुझे दो' 'यह कहने वाले भिन्न कण्ठ ध्वनि वाले याचक की प्रार्थना पूरी की जाय' यह अपने वीरों को आदेश दे रखा था।

टिप्पणी—यहाँ पर राजा नल की दानशीलता का वर्णन किया गया है अर्थात् राजा नल इतने दानशील थे कि यदि कोई याचक बहुत धीरे से भी यह कह देता कि 'मुझे दो' तो वह उसे भी पूर्ण मनोरथ किये जाने का अपने सैनिकों या वीरों को आदेश दे देता था।

कदाचिन्मकरकेतन इव सुमनसो मार्गणान् विधाय स्वगुणं कर्णपूरीचकार।

सुधा—कदाचिन्मकरेति। कदाचित् = कदापि। मकरकेतनः=मकरध्वजः कामदेवः मार्गणान् = बाणान्। सुमनसः = पुष्पाणि। विधाय = कृत्वा। स्वगुणम्—स्वस्य आत्मनः गुणम्=प्रत्यञ्चाम्। कर्णपूरीचकार=कर्णान्तं चकर्ष। तथैव मकरकेतन इव= कामदेवसदृशः सुन्दरः (राजा नलः) मार्गणान्=याचकान् सुमनसः = सन्तुष्टचित्तान्। विधाय=कृत्वा। स्वगुणम् = आत्मवैशिष्ट्यम् (जगतः) कर्णपूरीचकार=कर्णेषु = श्रोत्रेषु पूरीचकार = पूरयामास।

हिन्दी—कदाचित् जिस प्रकार कामदेव ने वाणों को पुष्पों को बनाकर अपनी प्रत्यंचा (धनुष की डोरी को) कानों तक खींच लिया था उसी प्रकार कामदेव के समान सुन्दर राजा नल ने याचकों को सन्तुष्टचित्त करके अपने गुणों को लोगों के कानों में भर दिया था।

कदाचिदम्भोनिधिरिवोच्चैः स्तननाभिरम्याः कृतानिमेषनयनविभ्रमाः, सकन्दर्पाः, सिषेवे वेलाविलासिनीः।

सुधा—कदाचित् = कदापि। वेला विलासिनीः=तटानन्ददायिनीः। अम्भोनिधिः—अम्भसां निधिः=जलवृद्धीः। उच्चैः=तीव्रस्वरैः। स्तननाभिरम्याः स्तननेन=शब्देन, अभिरम्याः = रमणीयाः। कृतानिमेषनयनविभ्रमाः—कृतम् अनिमेषाणाम् = मत्स्यानाम् नयनम् = प्रापणम् = प्रापणाम् यैस्तथोक्ताः विविधाः भ्रमाः = आवर्त्ताः यासु तथा। सकन्दर्पाः—कम् = जलम् तस्य दर्पेण=मोक्षेण सहेति। सिषेवे = भेजें। तथा—उच्चैः स्तननाभिरम्याः—उच्चैः स्तनाभ्याम्, नाभ्या च रम्याः=उन्नतपयोधराभ्यां नाभ्या च रमणीयाः। कृतानिमेषनयनविभ्रमाः—कृतम्=विहितम् अनिमेषाणाम् = निर्निमेषाणां नयनानां विशिष्टाः भ्रमाः=विलासाश्च यासु ताः=सकन्दर्पाः=सकामाः। वारविलासिनी= वाराङ्गनाः। सिषेवे = भेजे।

हिन्दी—समुद्र जैसे तटों पर आनन्द देने वाली जल की बाढ़ें गर्जन करती हुई ध्वनिसे रम्य, मछलियों तथा विशेष प्रकार के आवर्त्तोंवाली जलतरङ्गों के मोक्ष के साथ समुद्र सेवित होता है। उसी प्रकार राजा नल उच्च स्तनों तथा नाभि से अभिरमणीय, निर्निमेष नयनों के विलास को प्रकट करनेवाली सकामा वेला विलासिनियों (वाराङ्गनाओं) का उपभोग करता था।

कदाचिद्दशरथ इवायोध्यायां पुरि स्थितः सुमित्रोपेतो रममाण-रामभरत प्रेक्षणेन क्षणमाह्लादमन्वभूत्।

सुधा—कदाचिदिति। कदाचित्=कदापि। दशरथः=रामजनकः। अयोध्यायाम् पुरि= साकेतनगर्याम्। स्थितः = अवस्थितः। सुमित्रोपेतः—सुमित्रया सुमित्रानाम्न्या पत्न्या उपेतः=युक्तः। रममाण रामभरतप्रेक्षणेन—रममाणस्य क्रीडमानस्य रामस्य=राघवस्य भरतस्य=रामानुजस्य प्रेक्षणेन=दर्शनेन। क्षणम्—मुहूर्त्तम्। आह्लादम् = आनन्दम्। अन्वभवत्=अनुबभूव। तथा—अयोध्यायाम्—न योद्धुं योग्या तस्याम् पुरि=नगर्याम् स्थितः अवस्थितः। सुमित्रैः=शोभनैः सुहृद्भिः उपेतः = युक्तः। रममाण रामभरत प्रेक्षणेन—रममाणानाम् = विलासयुतानाम् रामाणाम्=रमणीनाम् भरतम्=शास्त्रीयम् संगीतम् प्रेक्षणेन = श्रवणेन। क्षणम्=मुहूर्त्तम् आह्लादम्=आनन्दम्। अन्वभूत=अनुबभूव।

हिन्दी—कदाचित् जिस प्रकार दशरथ अयोध्यापुरी में स्थित, सुमित्रा नाम की पत्नी से युक्त, खेलते हुए राम और भरत को देखकर क्षणभर को आह्लादित हो जाते थे उसी प्रकार उस विदर्भ नगरी में स्थित राजा नल अपने मित्रों से युक्त, विलासयुक्त रामाओं (रमणियों) के शास्त्रीय संगीत को सुनने से क्षणभर को आह्लादानुभव किया करते थे।

एवमस्य सकलजीवलोकसुखसन्तानमनुभवतो यान्ति दिनानि।

सुधा—एवमिति एवम्=इत्थम्। सकलजीवलोकसुखसन्तानम्—सकलानाम् जीवलोकानाम्=प्राणिनाम् यत् सुखसन्तानम् तत्=निखिलप्राणिसुखपरम्पराम्। अनुभवतः=अनुभूतिं कुर्वतः अस्य=एतस्य नलस्य दिनानि=दिवसाः। यान्ति= गच्छन्ति स्म।

हिन्दी—इस प्रकार समस्त जीवलोकों की सुखों की परम्परा का अनुभव करते हुए इन (राजा नल) के दिन व्यतीत हो रहे थे।

अथ कदाचिदुन्नमत्पयोधरान्तरपतद्धारावलीविराजिताः कमलदलकान्तनयनाः, सुरचापचक्रवक्रभ्रुवः, विद्युन्मणिमेखलालङ्कारधारिण्यः, शिञ्जानामुक्तकलहंसकाः, प्रौढकरेणुसञ्चारहारिण्यः कम्रकन्धराः, तिरस्कृतशशाङ्ककान्तिकलापोच्चमुखमण्डलाः, सकलजगज्जेगीयमानगुणमिममनुपमरूपलावण्यराशिराजितं राजानमवलोकयितुमिवतरन्तिस्म वर्षाः।

सुधा—अथेति। अथ=अनन्तरम्। कदाचित्=कस्मिंश्चित्काले। उन्नमत्पयोधरान्तर पतद्धारावलीविराजिताः—उन्नमताम्=उन्नतानाम् पयोधराणाम्=मेघानाम् अन्तरे= मध्ये पतन्ती=स्रवन्ती धारावली=धाराश्रेणी, ताभिः विराजिताः=शोभिताः। कमलदलकान्तनयनाः—कमलदलानाम्=पद्मपत्राणाम् कान्तम्=इष्टम् नयनम्=अतिवाहनम् यासां ताः। सुरचापचक्रवक्रभ्रुवः—सुरचापमेवचक्रम्=इन्द्रधनुश्चक्रम्, तद् वद् वक्रा=कुटिला भ्रुवः यासु ताः। विद्युन्मणिमेखलालङ्कारधारिण्यः—विद्युद् एव मणिमेखला=चपला रत्नमेखला ताम् अलम्=अत्यर्थम् कस्य=जलस्य अरम्=वेगम् धारयन्तीति तथाः। शिञ्जाना मुक्तकलहंसकाः—शिञ्जानाः=गर्जन्त्यः तथा मुक्ताः मानसंप्रति प्रस्थिताः कलहंसकाः=हंसाः याभिस्ताः। यद्वा मुक्तहंसानि कानि जलानि यासु ताः (तत्समये हंसानां मानसे गमनात्।) प्रौढकरेणुसंचारहारिण्यः—प्रकर्षेण ऊढं=कम्=जलम् तेन रेणुः=रजः सञ्चारहारिण्यः=संचाररोधिकाः। कम्रकन्धराः--कं=जलम् धरन्तीति कन्धराः=मेघाः ते कम्राः=रम्याः यासु ताः। तिरस्कृतशशाङ्ककान्तिकलापोच्चमुखमण्डलाः—तिरस्कृताः=छादिताः शशाङ्कस्य=चन्द्रस्य कान्तयः। तथा काय=जलाय लापाः, तैः उच्चमुखाः=मेघालोकनायोन्मुखाः मण्डलाः=देशाः यासु ताः। सकलजगज्जेगीयमानगुणम्—सकलेन=निखिलेन जगता=संसारेण जेगीयमानाः गुणाः यस्य तम्=निखिललोक गीयमानविशेषम्। अनुपमरूपराशिराजितम्—नास्ति उपमा यस्य स अनुपमः= अद्वितीयः रूपराशिः=सौन्दर्यं=समूहः तेन राजितः शोभितस्तम्। तम्=उपर्युक्तम् राजानम्=नृपम्। वर्षाः=प्रावृषः अवलोकयितुम्=द्रष्टुम् इव तरन्ति स्म। नायिकापक्षे तु—उन्नमत्पयोधरान्तरपतद्धारावलीविराजिताः—उन्नमताम्=उन्नतानाम्, पयोधराणां =कुचानाम् अन्तरे=मध्ये पतन्ती=चलन्ती धारावली=हारावलीः ताभिः विराजिताः शोभिताः। यद्वा पयोधरयोः=स्तनयोः अन्तरे=मध्येऽपतन्तोऽतिसंहतत्वात् अप्रविशन्तो हारा या सा। तथा वलीभिः=उदरलेखाभिः विराजिताः=शोभिताः। कमलदलकान्तनयना=कमलदलवत्=पद्मपत्रवत् कान्ते=प्रभायुक्ते नयने=नेत्रे यासाम् ताः। सुरचाप-

चक्रवक्रभुवः—सुरचापचक्रवत्=इन्द्रधनुश्चक्रवद् वक्रे=कुटिले भ्रुवौ यासां ताः। विद्युन्मणि-मेखलालङ्कारधारिण्यः=विद्युदिव मणिमेखलाः अलङ्काराणि च तानि धारयन्तीति ताः= विद्योतमानमणिकाञ्चीभूषणधारिण्यः। शिञ्जानामुक्तकलहंसकाः—शिञ्जाने = शब्दाय-माने आमुक्ते = बद्धे हंसके = चरणाभरणे यासाम् ताः। प्रौढकरेणुसञ्चारहारिण्यः प्रौढ़ाश्चते करेणवः = प्रगल्भगजाः, तासाम् संचारम्–सञ्चरणम् हरन्तीति ताः। कम्र-कन्दराः—कम्राः=रम्याः कन्दराः=ग्रीवाः यासाम् ताः। तिरस्कृतशशाङ्ककान्तिकला-पोच्चमुखमण्डलाः—तिरस्कृताः=निर्जिताः शशाङ्कस्य=चन्द्रस्य कान्तिकलापः = प्रभाः, ताभिः, उच्चानि=अत्युत्कृष्टानि मुखमण्डलानि = मुखबिम्बानि यासां ताः।

हिन्दी—(वर्षा पक्ष में) उमड़ते हुए बादलों के मध्य से गिरती हुई धाराओं के समूह से शोभित, कमलदलों के सुन्दर आगमनवाली, इन्द्रधनुष के मण्डल जैसी टेढ़ी भौंहोंवाली, विद्युन्मणि से बनी मेखलालङ्कारों को धारण करनेवाली अथवा विद्युत्रूपी मणिमेखलाओं तथा अत्यधिक जलके वेगको धारण करनेवाली, गरजती हुई सुन्दर हंसों को मानसरोवर की ओर आमुक्त कर देनेवाली, प्रगाढ़जल बहाव के कारण रज (धूल) के सञ्चार में बाधा डालनेवाली, रमणीक मेघों से युक्त, चन्द्रमा की कान्ति को ढक देने-वाली तथा जल की आवाजों से लोगों के मुखमण्डलों को ऊपर उठा देनेवाली वर्षा सम्पूर्ण संसार के द्वारा गाये जाते गुणवाले इस अद्वितीय रूपराशि से शोभित राजा को देखने के लिए मानो अवतरित हो रही थी।

(नायिका पक्ष में) उन्नत उरोजों के मध्य से लटकते हुए हारों से शोभित कमलदल के समान सुन्दर नेत्रोंवाली, इन्द्रधनुष मण्डल के समान वक्र (टेढ़ी भौंहों-वाली) विद्युत् सदृश मणियों की बनी मेखला (करधनी) के आभूषणों को धारण करनेवाली, बजते हुए पहने हंसक नामक चरणाभूषणोंवाली, मतवाले हाथियों के समान मतवाली चाल चलनेवाली, रमणीक गर्दनोंवाली, अपने उठे हुए मुखमण्डलों से चन्द्रमा की दीप्ति को तिरस्कृत कर देनेवाली, सुन्दरियाँ सम्पूर्ण संसार के द्वारा गाये जाते गुणवाले इस अनुपम रूपलावण्य की राशि से शोभित राजा को मानों देखने के लिए अवतरित हो रहीं थीं।

यत्र च—

आकर्ण्य स्मरयौवराज्यपटहं जीमूतनूत्नध्वनि
नृत्यत्केकिकुटुम्बकस्य दधतं मन्द्रां मृदङ्गक्रियाम्।
उन्मीलन्नवनीलकन्दलदलव्याजेन रोमाञ्चिता
हर्षेणेव समुच्छ्रिता वसुमती दध्रे शिलीन्ध्रध्वजान्॥ ४०॥

अन्वयः—नृत्यत्केकिकुटुम्बकस्य मन्द्राम् मृदङ्गक्रियाम् दधतम् जीमूतनूत्नध्वनि स्मरयौवराज्यपटहम् आकर्ण्य उन्मीलन्नवनीलकन्दलदलव्याजेन रोमाञ्चिता हर्षेण समुच्छ्रिता वसुमती शिलीन्ध्रध्वजान् दध्रे॥ ४०॥

सुधा—आकर्ण्येति। नृत्यत्केकिकुटुम्बकस्य—नृत्यताम् = नर्तने लग्नानाम् केकीनाम् यत्कुटुम्बकम्=यूथम्, तस्य। मन्द्राम्=गम्भीराम् मृदङ्गक्रियाम्—मृदङ्गस्य क्रियाम्=मृदङ्ग

नामवाद्यविशेषस्य कार्यमः। दधतम्=धारयंतम् । जीमूतनूत्नध्वनिम् जीमूतानाम्=घनानाम् नूत्नाम् = नवीनाम् ध्वनिम् = शब्दम् । स्मरयौवराज्यपटहम् (इव) स्मरस्य=कामदेवस्य यौवराज्ये = राजसिंहासनारोहणकाले (वदन्तम्) पटहम्=वाद्यविशेषम् (इव) आकर्ण्य= श्रुत्वा उन्मीलन्नवनीलकन्दलदलव्याजेन--उन्मीलिताम्=अंकुरितानाम् नवनीलकन्दल-दलानाम्=नूतनश्यामकन्दलसमूहानाम् व्याजेन=मिषेण रोमाञ्चिता = पुलकिता । हर्षेण=मोदेन समुच्छ्रिता= प्रकटिता । वसुमती = वसुन्धरा । शिलीन्ध्रध्वजान्=गोमय-ध्वजान् । दध्रे = अधारयत् । शार्दुलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ४० ॥

हिन्दी—तथा जिस वर्षा ऋतु में—नाचते हुए मयूरदलों की गम्भीर मृदङ्ग जैसी ध्वनि को धारण करनेवाली बादलों की नूतन ध्वनि कामदेव के यौवराज्याभिषेक काल में बजनेवाले पटह (ढोल) के समान सुनकर अंकुरित होते हुए नवीन श्यामल शस्य के कुन्दों के दल के बहाने से रोमाञ्चित प्रसन्नता से परिपूर्ण बनी हुई वसुन्धरा गोमयछत्तों को धारण कर रही थी ॥ ४० ॥

अपि च—

पर्णैः कर्णपुटायितैर्नवरसप्राग्भारविस्फारितैः
शृण्वन्ती मधुरं द्युमण्डलमिलन्मेघावलीगर्जितम् ।
शाखाग्रग्रथमानसौरभभरभ्रान्तालिपालिध्वजा-
स्तोषेणेव वहन्ति पुष्पपुलकं धाराकदम्बद्रुमाः ॥ ४१ ॥

अन्वयः—नवरसप्राग्भारविस्फारितैः कर्णपुटायितैः पत्रैः मधुरम् द्युमण्डलमिलन्मेघावलीगर्जितम् शृण्वन्ती शाखाग्रग्रथमानसौरभभरभ्रान्तालिपालिध्वजाः धाराकदम्बद्रुमातोषेण पुष्पपुलकम् वहन्ति इव ।

सुधा—पर्णैरिति । नवरसप्राग्भारविस्फारितैः—नवरसस्य=नूतनजलस्य प्राग्भारः =उत्तम भारस्तेन विस्फारितैः = प्रस्फुटितैः । कर्णपुटायितैः—श्रोत्रपुटरूपैः । पर्णैः = दलैः । मधुरम् = मृदुम् । द्युमण्डलमिलन्मेघावलीगर्जितम्— द्युमण्डलेन आकाशमण्डलेन मिलन्त्यः याः मेघावल्यः = घनमालास्तासाम् यद् गर्जितम् = गर्जनम् तत् । शृण्वन्ती= आकर्णयन्ती । शाखाग्रग्रथमानसौरभभरभ्रान्तालिपालिध्वजाः—शाखाग्रेषु = वृक्षाग्र-भागेषु ग्रथमानम् = ग्रथितम् यत् सौरभम् = सुगन्धिः, तस्य भरः = भारम् तेन भ्रान्ताः = भ्रमणशीलाः ये अलयः = भ्रमराः, तेषाम् पाल्यः = पंक्त्यः त एव ध्वजाः= पताकाः येषां ते । धाराकदम्बद्रुमाः–धाराकदम्बस्य = वर्षाकालफुल्लमानकदम्बस्य द्रुमाः = पादपाः । तोषेण = मुदा । पुष्पपुलकम् = कुसुमप्रसन्नताम् । वहन्ति इव= धारयन्ति इव । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ४१ ॥

हिन्दी—और भी—नूतन जलभार से प्रस्फुटित हुए पत्तों के रूप में कर्णपुटों से आकाशमण्डल से मिलतीं हुई मेघमालाओं के मधुर गर्जन को सुनती हुई, वृक्षों के अग्रभाग पर ग्रथित सी सुगन्ध के बोझ से चक्कर काटती हुई भ्रमरपंक्तिरूपी ध्वजों-वाले वर्षाऋतु में फूलनेवाले धाराकदम्ब के वृक्ष सन्तोष से मानों फूल खिलाकर पुष्प-पुलक (फूलों का रोमाञ्च) धारण कर रहे थे ॥ ४१ ॥

टिप्पणी—कदम्ब के वृक्ष दो प्रकार के होते हैं—जो वसन्त ऋतु में फूलते हैं उन्हें धूली कदम्ब तथा वर्षा ऋतु में फूलनेवाले कदम्बों को धारा कदम्ब कहते हैं।

अथ क्रमेण—

नीरं नीरजनिर्मुक्तं नीरजस्कं भुवस्तलम्।
जातं जातिलतापुष्पगन्धान्धमधुपं वनम्॥ ४२॥

अन्वयः—नीरम् नीरजनिर्मुक्तम्, भुवस्तलम् नीरजस्कम्, वनम् जातिलतापुष्पगन्धान्धमधुपम् जातम्॥ ४२॥

सुधा—अथ = अनन्तरम्। क्रमेण = क्रमशः—नीरमिति। नीरम् = जलम्। नीरजनिर्मुक्तम्—नीरजैः = कमलैः निर्मुक्तम्—निर्गता मुक्तिः यस्माद् तत्=सम्पन्नम्। (जातम्)। भुवः = पृथिव्याः तलम् = पृष्ठम्=नीरजस्कम् = निर्गतम् रजः =पांसुः यस्मात् तत् = धूलिरहितम्। (जातम्) वनम् = विपिनम्। जातिलतापुष्पगन्धान्धमधुपम्—जातिलतापुष्पाणाम् = जाती कुसुमानाम् गन्धेन=सौरभेणान्धाः मधुपाः भ्रमराः यस्मिंस्तत्। जातम् = अजायत। अनुष्टुब्वृत्तम्॥ ४२॥

हिन्दी—तदनन्तर क्रमशः जल कमलों से निर्मुक्त, पृथ्वीतल धूलरहित तथा वन जाती कुसुम गन्ध से मतवाले वने भ्रमरों से सम्पन्न हो गया॥ ४२॥

अपि च—

धुतकदम्बकदम्बकनिष्पतन्नवपरागपरागममन्थराः।
हृततुषारतुषा रतिरागिणां प्रियतमा मरुतो मरुतो ववुः॥ ४३॥

अन्वयः—धुतकदम्बकदम्बकनिष्पतन्नवपरागपरागममन्थराः हृततुषारतुषाः रतिरागिणाम् प्रियतमाः मरुतः मरुतः ववुः॥ ४३॥

सुधा—धुतेति। धुतकदम्बकदम्बकनिष्पतन्नवपरागपरागममन्थराः—धुताः= कम्पिताः ये कदम्बाः, तेषाम् कदम्बकात् = समूहात् निपतन्=निःसरन् योऽसौ नवः=नूतनः परागः = केसररजः तत्परागमेन = सङ्गमेन मन्थराः = मन्दाः। हृततुषारतुषाः—तुषारस्य=हिमस्य तुषाः = कणानि, हृताः = नीताः तुषारतुषाः यैस्तादृशाः। रतिरागिणाम्—रतिरागोऽस्ति येषां तेषाम् = प्रेमिजनानाम् = प्रियतमाः = अतिशयेन प्रियाः। मरुताः = वाताः। मरुतः मरुपर्वतात्। ववुः = अवहन्। द्रुतविलम्बितं वृत्तम्॥ ४३॥

हिन्दी—और भी—हिलते हुए कदम्ब वृक्षों के समूह से निकलते हुए नूतन पराग के सङ्गमन से मन्थर (मन्द), तुषारसीकरों को लिये हुए, रतिरागियों के प्रियतम पवन मरु नामक पर्वत से चल रहे थे॥ ४३॥

ततश्च। तिरस्कृततरणित्विषि, विगलद्वारिविप्रुषि, शान्तचातकतृषि, निर्वाणवारणवपुषि, मानिनी मानग्रहग्रन्थिमुषि, जनितजवासकशुषि, विषपवधूविद्विषि, वर्धितमण्डूकहृषि, मुद्रितचन्द्रमसि, विद्राणपङ्कजसरसि, स्वाधीनप्रियप्रेयसि, प्रोषितकलहंसवयसि, नष्टनक्षत्रमण्डलमहसि, मेचकितनभसि,

निष्पतन्नीपरजसि, स्फुटकुटजरजः पुञ्जपिञ्जरिताष्टदिग्भासि, भासुरसुरचापचक्रभृति, मयूरमदकृति, महिषशोषहृति, विस्तरत्सरिति, विद्योतमानविद्युति, वहन्मन्दमेघङ्करमरुति, हृष्यत्कृषाणयोषिति, पुष्यत्केतकीगन्धपानमत्तमधुकृति, प्रोद्भूतभूरुहि, दरिद्रनिद्राद्रुहि, सगर्वगोदुहि, कदम्बस्तम्बालम्बिमधुलिहि, मुदितमदनाट्टहासायमानघननादमुचि, पच्यमानजम्बूफलश्यामलितवनान्तररुचि, रचितपान्थसार्थशुचि, श्रूयमाणमदमधुरमयूरवाचि, विनिद्रकोशातकीशालिनि, यूथिकाजालिनि, नवमालिकामालिनि कन्दलभाजि, पच्यमानजम्बूतरुवनराजिभ्राजि, भिक्षाक्षणक्षपितपरिव्राजि शान्तसारङ्गरुजि; नीडनिर्माणाकुलबलिभुजि, सान्द्रेन्द्रगोपयुजि, श्च्योतत्तमालधारागृहसदृशि, श्यामायमानदशदिशि, दिवापि श्रूयमाणरजनिशङ्काकुलचक्रवाकचक्रक्रुशि, शकटसंचाररुधि, पल्लवितवीरुधि, विश्रान्तजिष्णुक्ष्मापालयुधि, क्षीणोक्षक्षुधि, क्षीरसमुद्रनिद्राणबाणबाहुच्छिदि, सिन्धुरोधोभिदि, दवदहननुदि, विरहिमनस्तुदि, जनितजनमुदि, तापिच्छच्छायानुच्छेदिनि, छन्नकुटीमध्यबध्यमानवाजिनि, विकसितबकुलवनविराजिनि, सीरसीमन्तितग्रामसीमनि, विजयमानमनोजन्मनि जाते जगज्जीविनि, जीमूतसमये कदाचिदम्भसि दिवसे मृगयावनपालकः प्रविश्य राजानं विज्ञापयामास ॥

सुधा—ततश्चेति। ततः = तदनन्तरम्। तिरस्कृततरणित्विषि—तिरस्कृता आच्छादिता तरणेः = सूर्यस्य त्विषो येन, तस्मिन्। विगलद्वारिविप्रुषि—विगलन्ति = स्रवन्ति वारिविप्रूंषि = जलकणानि येन तस्मिन्। शान्तचातकतृषि = चातकानाम् तृट् चातकतृट् शान्ता = शान्ति प्रापिता चातकतृट् = चातकपक्षितृषा येन तस्मिन्। निर्वाणवारणवपुषि—निर्वाणे=शून्ये वारणस्य = हस्तिनः वपुः = शरीरम् येन तस्मिन्। मानिनीनाम् = अभिमानिनी स्त्रीणाम् मानग्रहस्य = सम्मानग्रहणस्य ग्रन्थिम् मुष्णाति= चोरयतीति तस्मिन् मानिनीमानग्रहग्रंथिमुषि। जनितजवासकशुषि—जवासकान् = जवासकवृक्षान् शोषयतीति, जवासकशुट्, जनितम् = उत्पादितम् जवासकशुट् येन, तस्मिन्। विधपवधूविद्विषि—विधपवधूः=पतिहीनस्त्रीः विद्विषतीति तस्मिन्। वर्धितमण्डूकहृषि—वर्धितम् = वृद्धि प्रापितम् मण्डूकानाम् = भेकानाम् हर्षम् = आनन्दम् येन तस्मिन्। मुद्रितचन्द्रमसि—मुद्रितः = आच्छादितश्चन्द्रमा येन तस्मिन्। विद्राणपङ्कजसरसि—पङ्कजानाम् = कमलानाम् सरांसि = तडागानि पङ्कजसरांसि, विद्राणानि = विकसितानि पङ्कजसरांसि येन तस्मिन्। स्वाधीनप्रियप्रेयसि—स्वाधीनपतिका प्रेयसि। प्रोषितकलहंसवयसि—प्रोषिताः=सेविता कलहंसवयसः = कलहंसपक्षिणः येन तस्मिन्। नष्टनक्षत्रमण्डलमहसि—नष्टानि = विगतानि नक्षत्रमण्डलानाम् = तारकसमूहानाम् महांसि = तेजांसि येन तस्मिन्। मेचकितनभसि = मेचकितम् = श्यामीकृतम् = अन्धकाराच्छादितम् नभः = गगनम् येन तस्मिन्। निष्पतन्नीपरजसि—नीपानाम् = कदम्बानाम् रजः = रेणुः, नीपरजः, निष्पतत् = आविष्कृतम् नीपरजो येन

तस्मिन् । स्फुटकुटजरजः पुञ्जपिञ्जरिताष्टदिग्भासि स्फुटम् = विकसितम् यत् कुटज-रजःपुञ्जम् = कुटजपुष्पपरागपुञ्जम् तेन पिञ्जरिताः = पीतवर्णीकृताः दिग्भासः = दिशाकान्तयः येन तस्मिन् । भासुरसुरचापचक्रभृति––सुरचापस्य = इन्द्रधनुषश्चक्रम् इति सुरचापचक्रम्––भासुरम् = कान्तिमत् सुरचापचक्रम् बिभर्तीति तस्मिन् मयूरमद-कृति––मयूरान् = केकीन् मदान् = मत्तान् करोतीति तस्मिन् । महिषशोषहृति–– महिषानाम् शोषम् = दुर्बलताम् हरतीति तस्मिन् । विस्तरत्सरसि = विस्तरत्यः = विस्तारं प्रापिताः सरितः = नद्यः येन तस्मिन् । विद्योतमानविद्युति विद्योतमानाः = कान्तियुक्ताः विद्युतः = चपलाः येन तस्मिन् । वहन्मेघङ्कर–मरुति–मेघान् = घनान् कुर्वंतीति मेघङ्कराः, वहन्तः मेघङ्कराः मरुतः वाताः येन तस्मिन् । हृष्यत्कृषाणयोषिति–कृषाणानां = कृषकाणाम् योषितः = स्त्रियः, हृष्यत्य = मुदिताः कृताः कृषाणयोषितो येन तस्मिन् । पुष्यत्केतकीगन्धपानमत्तमधुकृति––पुष्यन्तः = विभ्रन्तः केतकीगन्धाः= केतकी सुरभयः, तेषां पानेन मत्ताः = मदयुक्ताः मधुकराः = भ्रमराः येन = तस्मिन् । प्रोद्भूतभूरुहि––प्रोद्भूताः=उत्पादिताः भूरुहाः=वृक्षाः येन तस्मिन् । दरिद्रनिद्राद्रुहि–– दरिद्राः=घनाः निद्राः=स्वपनानि, ताः द्रुह्यतीति तस्मिन् । सगर्वगोदुहि = साभिमान धेनुदुहि । कदम्बस्तम्बालम्बिमधुलिहि––कदम्बानाम् नीपवृक्षाणाम् स्तम्बालम्बिनः= शाखाग्रलम्बिनः मधुलिहः = भ्रमराः येन तस्मिन् । मुदितमदनाट्टहासायमानघननाद-मुचि––मुदितश्चासौ मदनः = प्रसन्नकामः तस्याट्टहासायमान इव उच्चहासायमान समः घननादः = मेघगर्जनम् तम् मोचयतीति=श्रजतीति तस्मिन् । पच्यमानजम्बूफलश्याम-लितवनान्तरुचि––पच्यमानानि=पक्वतां गतानि जम्बूफलानि, तैः श्यामलितावनान्तर रुक्=श्यामीकृता काननमध्यकान्तिर्येन तस्मिन् । रचितपान्थसार्थशुचि=कृतपथिक समूहशोके श्रूयमाणमदमधुरमयूरवाचि––मदाः = मत्ताः ये मधुराः मयूराः = मृदुकेकाः तेषाम् वाक्, श्रूयमाणा=आकर्ण्यमाना मदमधुरमयूरवाक् येन तस्मिन् विनिद्रकोशातकीशालिनि । विकसितकोशातकी फलशालिनि यूथिकाजालिनि–– यूथिकाम् = जुहीलताम्––जालम् = पल्लवितं कृतं येन तस्मिन् । नवमालिका-मालिनि––नवमालिकायाः मालाः कृताः येन तस्मिन् । कन्दलभाजि– कन्दलानि=अङ्कुराणि भजतीति तस्मिन् । पच्यमानजम्बूतरुवनराजिभ्राजि पच्यमानानाम् जम्बूतरूणाम् = जम्बूवृक्षाणाम् वनराजिः = वनपंक्तिः भ्राजते=शोभते यत्र तस्मिन् । भिक्षाक्षणक्षपित परिव्राजि––भिक्षायाः = भोजनविषयकस्य क्षणम् = आनन्दम् क्षपितम्––यापितम् परिव्राजाम् = संन्यासिनाम् येन तस्मिन् । शान्तसारङ्गरुजि–– सारङ्गाणाम् रुक्=मृगव्याधिः शान्ता = समाप्ता सारङ्गरुक् येन तस्मिन् । नीडनिर्माणा-कुलबलिभुजि बलिं भुज्यत इति बलिभुक् = काकः, नीडानाम् = कुलायानाम् निर्माणे= रचने आकुलाः = व्याकुलाः बलिभुजः=काकाः यस्मिन् तस्मिन् । सान्द्रेन्द्र गोपयुजि–– सान्द्राः=सघनवर्षायुक्तः इन्द्रः=मघवा गोपाश्च = गोपालकाश्च योजयन्ते यत्र तस्मिन्, अथवा सान्द्राः=सघनाः इन्द्रगोपाः = वर्षासु जाताः क्षुद्रजन्तवः योजयन्ते यत्र तस्मिन् । श्च्योतत्तमालधारागृहसदृशि––श्च्योतत् = क्षरत् तमालानाम् सम्बन्धि यद्धारा-

गृहम् तत् सदृशि। श्यामायमानदशदिशि = श्यामायमानाः = श्यामीकृताः दशदिशः= सकलककुभः येन तस्मिन्। दिवापि = अहन्यपि। श्रूयमाणरजनिशङ्काकुलचक्रवाकचक्रक्रुशि—श्रूयमाणाः=आकर्ण्यमानः रजनिशङ्काकुलानाम् = रात्रिचिन्तातुराणाम् चक्रवाकानाम्=चक्रवाकपक्षिणाम् चक्रक्रोशः=चीत्कारो यत्र तस्मिन्। शकटसंचाररुधि शकटानाम् = वाहनानाम् सञ्चारः=गमनम् तम् रुणद्धीति तस्मिन्। पल्लवितवीरुधि—पल्लविताः=दलयुताः वीरुधः = वृक्षाः येन तस्मिन् विश्रान्तजिष्णुक्ष्मापालयुधि—जेतुमिच्छुः जिष्णुः, क्ष्मायाः पालाः क्ष्मापालाः=पृथ्वीपालकाः राजानः, जिष्णुक्ष्मापालाः युध्यन्त इति जिष्णु क्ष्मापालयुधः, विश्रान्ताः=शान्तिं प्रापिताः जिष्णुक्ष्मापालयुधो येन तस्मिन् क्षीणोक्षक्षुधि—उक्षाणाम् = अनडुहाम्=क्षुत्=क्षुधा, उक्षक्षुत्, क्षीणा=शिथिलिता उक्षक्षुद् येन तस्मिन्। क्षीरसमुद्रनिद्राणबाणबाहुच्छिदि बाणस्य=बाणासुरस्य बाहू=भुजे छिनत्तीति बाणबाहुच्छित् = बाणासुरभुजच्छेदकः, क्षीरसमुद्रे=पयोनिधौ निद्राणः=निद्रां प्रापितः बाणबाहुच्छिद् येन तस्मिन्। सिन्धुरोधोभिदि–सिन्धोः= सागरस्य रोधः = तटम् भेत्तीति तस्मिन्। दवदहननुदि—दवदहनः=दावानलः नुद्यते = प्रेर्यते येन तस्मिन्। विरहिमनस्तुदि—वियोगिचेतस्तुदि जनितजनमुदि-जनितः=उत्पादितः जनमोदः=लोकप्रसन्नता येन तस्मिन्। तापिच्छायानुच्छेदिनि—तापिच्छस्य = तन्नाम्नः वृक्षस्य छायां - अनुच्छेत्तीति=अनुकरोतीति तस्मिन्। छन्नकुटीमध्यवध्यमानवाजिनि छन्नायाम् = आच्छादितायाम् कुट्याम् = कुटीरस्य मध्ये = अन्तरे बध्यमानः= अवरुद्ध्यमानः वाजी=घोटकः येन तस्मिन्। विकसितवकुलघनविराजिनि वकुलानाम्= मौलश्रीणाम् वनम् = काननम्, विकसितेन = स्फुटितेन = वकुलवनेन विराजते= शोभते यस्तस्मिन्। सीरसीमन्तितग्रामसीमनि—सीरेण = हलेन सीमन्तिता = चिह्निता ग्रामसीमा = ग्रामपरिधिर्येन तस्मिन्। विजयमानमनोजन्मनि—विजयमानः = विजयीकृतः मनोजन्मा=कामदेवः येन तस्मिन्, जाते जगज्जन्मनि—जगति=लोके जन्म=प्राणाः येन तस्मिन् जाते—संचारे सति। जीमूतसमये=जीमूतानाम्=मेघानाम् समयः कालः, तस्मिन्=वर्षर्त्तौ। कदाचित्=कदापि अम्भसि=जले। दिवसे=दिने। मृगयावनपालकः—मृगयायाः=आखेटस्य वनपालकः = अरण्यरक्षकः प्रविश्य=प्रवेशं कृत्वा। राजानम् = नृपं नलम्। विज्ञापयामास=निवेदयामास।

हिन्दी—तदनन्तर सूर्यकान्ति को तिरस्कृत करनेवाले-जलकणों को गिरानेवाले, चातकों की प्यास शान्त करनेवाले, आकाश में हाथी के रूप को प्रदर्शित करनेवाले, मानिनी स्त्रियों की मानरूपी गांठ को चुरा लेनेवाले, जवासक पादप को सुखा देनेवाले, पतिहीन (विरहिणी) स्त्रियों से द्वेष करनेवाले, मेढकों के हर्ष को बढ़ानेवाले, चन्दमा को छिपा देनेवाले, कमलयुक्त तालावों को विकसित करनेवाले, स्वाधीनपतिका नारियों को प्रिय लगनेवाले, कलहंस पक्षियों को सेवायुक्त करनेवाले, नक्षत्रमण्डल के तेज को नष्ट करनेवाले, आकाश को अन्धकारयुक्त कर देनेवाले, कदम्बपराग को टपकनेवाले, विकसित कुटज पुष्प की रज (पराग) आठों दिशाओं की कान्ति को पीला कर देनेवाले, भासमान् इन्द्रधनुष को धारण करने

वाले, मयूरों को मतवाला बना देनेवाले, महिषों के शोष को (सूखापन या दुर्बलता को) मिटा देनेवाले, नदियों को फैला देनेवाले, बिजली को चमका देनेवाले, धीरे धीरे मेघों को उत्पन्न करनेवाली वायु को बहानेवाले, कृषक बालाओं को प्रसन्न कर देनेवाले, केतकी (केवड़ा) के गन्धपान से भौंरों को मतवाला बना देनेवाले, वृक्षों को उद्‌भूत करनेवाले, दरिद्र निद्रा से द्रोह करने वाले, उच्छृङ्खल गायों को भी दुहवा लेनेवाले, कदम्बपुष्प के गुच्छों में भौंरों को लटका देनेवाले, मुदित कामदेव के अट्टहास के समान मेघगर्जन करनेवाले, पकते हुए जामुन के फलों से वन के मध्य भाग की कान्ति को श्यामल बना देनेवाले, यात्रीसमूह के शोक को दूर कर देनेवाले, मतवाले मयूरों की मधुर ध्वनि सुनानेवाले, कोशतकी फलों के विकसित होने के कारण सुन्दर लगनेवाले, यूथिका (जुही) लता के जाल को (दलयुक्त) करनेवाले नवमालिकाकी मालाओंवाले, अङ्कुरण को धारण करनेवाले, पकते हुए जामुनों के वृक्षों को वनश्रेणो की शोभावाले संन्यासियों के भोजन सम्बन्धी आनन्द को समाप्त कर देनेवाले, मृगों के रोगों को शान्त कर देनेवाले वलि को खानेवाले कौवों को घोंसले बनाने के लिए व्याकुल कर देने वाले, घने इन्द्रगोप नामक वर्षा के विशेष प्रकार के छोटे-छोटे कीड़े मकोड़े इकट्‌ठे कर देनेवाले, टपकती तमाल वृक्षों की धाराओंवाले घरों के समान, दशो दिशाओं को अन्धकारमय बनाने वाले, दिन में भी रात्रि की शङ्का से व्याकुल चकई चकवा को रुला देनेवाले, गाड़ियों के संचार (गमनागमन) को रोक देनेवाले, वृक्षों को पल्लवित कर देनेवाले, जीतने के (विजय के) इच्छुक राजाओं के युद्ध को शान्त कर देनेवाले, सांड़ों की भूख को क्षीण कर देनेवाले, क्षीरसागर में शयन करनेवाले वाणासुर की भुजाओं को काटनेवाले, भगवान् विष्णु को सुला देनेवाले, समुद्रतट को तोड़ देनेवाले, दावानल प्रेरित करने वाले, विरही पुरुषों के मन को दुःखित कर देने वाले, लोगों की प्रसन्नता को उत्पन्न करनेवाले, तापिच्छ वृक्षों की छाया का अनुकरण करनेवाले, छायी हुई कुटी के अन्दर बँधे हुए घोड़ेवाले, विकसित वकुल (मौलश्री) वन की शोभा वाले, हल से गांव को सीमा को चिह्नित करने वाले; मनोजन्मा कामदेव पर विजय प्राप्त करनेवाले, संसार में प्राण भर देनेवाले बादलों के समय पर कदाचित् वर्षा के दिन आखेट वन के पालक ने प्रवेश करके राजा नल से निवेदन किया।

टिप्पणी—जवास—एक प्रकार का पौधा जो कि वर्षा आरम्भ होते हो पतझड़ ले लेता है। रामचरितमानस मे तुलसीदास ने भी 'अरक जवास पात बिनु भयऊ' कहकर. वर्षाकाल का वर्णन किया है।

दरिद्रनिद्राद्रुह—दरिद्र अथवा निर्धन लोगों की घास फूस से बने छप्पर के वर्षाकाल में टपकने से उन्हें नींद नहीं आतो है अथवा कम निद्रा आतो है अतएव वर्षाकाल को दरिद्रनिद्राद्रुह भी कहा जाता है।

विनिद्र कोशातकी—वर्षा ऋतु आते ही सूखो हुई लौकी भी हरी भरी हो जाती है। अतः वर्षा ऋतु का एक विशेषण विनिद्रकोशातकी भी है।

देव,

किं स्यादञ्जनपर्वतः स्फटिकयोर्द्वन्द्वं दधद्दीर्घयो-
रम्भोमेदुरमेघ एष किमुत श्लिष्यद्बलाकाद्वयः ।
शून्यः किन्नु करेण कुञ्जर इति भ्रान्तिं समुत्पादय-
न्दंष्ट्राद्वन्द्वकरालकालवदनः कोलः कुतोऽप्यागतः ॥ ४४ ॥

अन्वयः—किम् दीर्घयोः स्फटिकयोः द्वन्द्वम् दधत् अञ्जनपर्वतः स्यात् ? उत किम् श्लिष्यद्बलाकाद्वयः एषः अम्भोमेदुरमेघः ? 'किन्नु करेण शून्यः कुञ्जरः' इति भ्रान्तिम् समुत्पादयन् कुतः अपि दंष्ट्राद्वन्द्वकरालकालवदनः कोलः आगतः ॥ ४४ ॥

सुधा—किमिति । दीर्घयोः=विशालयोः स्फटिकयोः=स्फटिकद्वयोः । द्वन्द्वम्=युगलम् । दधत्=बिभ्रत् । अञ्जनपर्वतः=कृष्णगिरिः । स्यात्=भवेत् । किम् उत=अथवा किम् । श्लिष्यद् बलाकाद्वयः=बलाकाद्वयान्वितः । एषः अयम् । अम्भोमेदुरमेघः—अम्भसा=जलेन पूर्णः मेदुरः=श्यामलः मेघः घनः ? किम् नु=निश्चयेन किम् । करेण=शुण्डेन शून्यः=रहितः कुञ्जरः=गजः । इति=इत्थम् भ्रान्तिम्=भ्रमम् । उत्पादयन्=जनयन् कुतः अपि=कस्मादपि स्थानात् । दंष्ट्राद्वन्द्वकरालकाल इव=यम इव वदनम्=शरीरम् यस्य सः । कोलः=शूकरः । आगतः आयातः ॥ ४४ ॥

हिन्दी—हे देव,

क्या दो विशाल स्फटिक पर्वतों को धारण करता हुआ काला पहाड़ है अथवा क्या दो वलाकाओं से युक्त यह जल से भरा हुआ श्यामल मेघ है ? 'क्या वास्तव में शुण्डा-रहित यह हाथी है' इस प्रकार भ्रम उत्पन्न करता हुआ कहीं से दो विकराल दाढ़ों-वाला साक्षात् कालरूप सुअर आ गया है ?॥ ४४ ॥

ततश्चासौ

भिन्दन्कन्दकसेरुकन्दलभृतः स्निग्धप्रदेशान् भुवो
भञ्जन्नञ्जनशैलशृङ्गसदृशः फुल्लल्लतामण्डपान् ।
मन्दं मन्दरलीलयाब्धिसदृशं मथ्नंश्च लीलासरः
क्रोडः क्रीडति भाययन्निव भवत्क्रीडावने रक्षकान् ॥ ४५ ॥

अन्वयः—अञ्जनशैलशृङ्गसदृशः क्रोडः कन्दकसेरुकन्दलभृतः भुवः स्निग्धप्रदेशान् भिन्दन्, फुल्लल्लतामण्डपान् भञ्जन् मन्दरलीलया अब्धिसदृशम् लीलासरः मन्दम् मथ्नन् च भवत्क्रीडावने रक्षकान् भाययन् क्रीडति ॥ ४५ ॥

सुधा—भिन्दन्निति । अञ्जनशैलशृङ्गसदृशः—अञ्जन शैलस्य=कृष्णगिरिशृङ्गेण=शिखरेण सदृशः=समानः क्रोडः=शूकरः । कन्दकसेरुकन्दलभृतः—कन्दानाम्=मूलानाम् कसेरूणाञ्च कन्दलानि=अङ्कुराणि बिभ्रतीति तान् । भुवः=पृथिव्याः । स्निग्ध प्रदेशान्=स्निग्धाश्चते प्रदेशास्तान्=मनोरमस्थलानि । भिन्दन्=नाशयन् । फुल्लल्लता-मण्डपान्=फुल्लन्तः विकसन्तः लतामण्डपास्तान् । भञ्जन्=त्रोटयन् । मन्दरलीलया—मन्दरस्य=मन्दराचलस्य लीला=क्रीडा, तया समम् । अब्धिसदृशम् जलनिधि लीलासरः=क्रीडासरोवरम् । मन्दम्=शनैः । मथ्नन्=मन्थनं कुर्वन् । च=तथा ।

भवत्क्रीडावने=भवतः=श्रीमतः क्रीडायाः मनोरञ्जनस्य वनम् = उद्यानम्, तस्मिन् । रक्षकान् = उद्यानपालकान् भाययन्, इव=भयभीतान् कुर्वन्निव । क्रीडति = क्रीडां करोति । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ४५ ॥

हिन्दी—तदनन्तर वह—अञ्जन पर्वत की चोटी के सदृश शूकर कन्द तथा कसेरु के अङ्कुरों से परिपूर्ण भूमि के स्निग्ध प्रदेशों को भेदता (फाड़ता हुआ, प्रफुल्ल लता-मण्डपों को नष्ट करता हुआ, मन्दराचल की क्रीडा के समान सागर जैसे क्रीडा सरोवर को धीरे-धीरे मथता हुआ, आपके क्रीडोद्यान में रक्षकों को डरपाता हुआ खेल रहा है ॥ ४५ ॥

राजा तु तदाकर्ण्य चिन्तितवान्—

'अच्छाच्छैः शुकपिच्छगुच्छहरितैश्छन्ना वनान्तास्तृणैः
सेव्याः सम्प्रति सान्द्रचन्द्रकिकुलैरुत्ताण्डवैर्मण्डिताः ।
येषु क्षीरविपाण्डुपल्वलपयः कल्लोलयन्तो मनाग्
वाता वान्ति विनिद्रकेतकवनस्कन्धे लुठन्तः शनैः ॥ ४६ ॥

अन्वयः—अच्छाच्छैः शुकपिच्छगुच्छहरितैः तृणैः छन्नाः सम्प्रति सान्द्रचन्द्रकिकुलैः उत्ताण्डवैः मण्डिताः वनान्ताः सेव्याः । येषु क्षीरविपाण्डुपल्वलपयः कल्लोलयन्तः मनाक् विनिद्रकेतकवनस्कन्धे लुठन्तः वाताः शनैः वान्ति ॥ ४६ ॥

सुधा—अच्छाच्छैरिति । अच्छाच्छैः—अच्छैरच्छैरित्यच्छाच्छैः=उत्तमोत्तमैः शुकपिच्छगुच्छहरितैः शुकपिच्छानां गुच्छाः, ते च हरितास्तैः=हरितवर्णैः शुकपुच्छस्तबकैः (इव) तृणैः=घासैः छन्नाः=आच्छादिताः सम्प्रति=साम्प्रतम् । सान्द्रचन्द्रकिरणैः—सान्द्राः प्रसन्नाश्च ते चन्द्रकिरणाः, तेषां कुलैः = प्रसन्नमयूरसमूहैः । उत्ताण्डवैः = उद्धतनृत्यैः । मण्डिताः=शोभिताः वनान्ताः=वनभूमयः । सेव्याः = सेवनीयाः (सन्ति) येषु= वनान्तेषु क्षीरविपाण्डुपल्वलपयः—क्षीर इव विपाण्डु=दुग्धधवलम् । पल्वलम्=अखातं सरः, तस्य पयोभिः=जलैः, क्षीरविपाण्डुभिःपल्वलपयोभिः कल्लोलयन्तः क्रीडयन्तः मनाक् = स्तोकम् । विनिद्रकेतकवनस्कन्धे—विनिद्राणाम्=विकसितानाम् केतकानाम्= केतकीपुष्पाणाम् वनस्कन्धम् = वनान्तम् तस्मिन् । लुठन्तः=लुण्ठनं कुर्वन्तः । वाताः = पवनाः । शनैः=मन्दम् । वान्ति= प्रवहन्ति । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ४६ ॥

हिन्दी—राजा यह सुनकर सोचने लगा—सुन्दर सुन्दर तोतों की पूंछों के गुच्छों के समान हरी घास से आच्छादित इस समय प्रसन्न मयूरों के उद्धतनृत्य से मण्डित वनभूमि सेवनीय है जिसमें दूध के समान उज्ज्वल पल्वलों (पोखरों) के जल से खेलती हुई कुछ-कुछ खिले हुए केतकी पुष्प (केवड़े) वाली वनभूमि पर टकराती हुई हवाएँ धीरे-धीरे वह रही हैं ॥ ४६ ॥

माद्यन्ति च तेषु सम्प्रति प्रोथिनः । 'तद्युज्यते विहर्तुम्' इत्यवधारयन् आहूय बाहुकनामानं सेनापतिमादिदेश ।

सुधा--च = तथा। तेषु = उक्तपल्वलेषु। प्रोथिनः=सूकराः। सम्प्रति = इदानीम्। माद्यन्ति = उन्मत्ताः भवन्ति। तत् = अत एव। विहातुंम् = विहारं कर्त्तुँम्। युज्यते = उचितमस्ति। इति = इत्थम्। अवधारयन् = विनिश्चयं कुर्वन्। बाहुक नामानम् = बाहुकाभिधम्। सेनापतिम् = बलाध्यक्षम्। आहूय=आकार्य। आदिदेश = आदेशं चकार।

हिन्दी—तथा उन पोखरों में इस समय सूकर मतवाले हो रहे हैं। 'अत एव बिहार करना ठीक है' यह निश्चय करते हुए बाहुक नाम के सेनापति को बुलाकर आदेश दिया।

'भद्र द्रुतमनुष्ठीयताम्, समादिश्यन्तां कृतवैरिविपत्तयः पत्तयः, पर्याण्यन्तां मनस्तुरगास्तुरगाः, सज्जीक्रियन्तां निजवेगनिर्जितमातरिश्वानः श्वानः समारोप्यन्तामपनीताहितायूंषि धनूंषि, गृह्यन्तां निर्मथितप्रोथियूथपाशाः पाशाः' इति।

सुधा--भद्रेति। भद्र! द्रुतम् = शीघ्रम्। अनुष्ठीयताम् = क्रियताम्। कृतवैरि विपत्तयः—कृता=आनीताः वैरिषु = शत्रुषु विपत्तयः = आपत्तयः याभिस्ताः। पत्तयः= सेनाः। समादिश्यन्ताम् = आज्ञाप्यन्ताम्। मनस्तुरगाः मनसापि त्वरगामिनः तुरगाः = अश्वाः। पर्याण्यन्ताम् = पर्याणैः सज्जीक्रियन्ताम्। निजवेगनिर्जितमातरिश्वानः— निजवेगेन-स्वतरसा निर्जितः = विजितः मातरिश्वा = पवनः यैस्तादृशः। श्वानः = कुक्कुराः सज्जीक्रियन्ताम्। = सन्नद्धाः विधीयन्ताम्। अपनीताहितायूंषि—अहितानाम्= अकल्याणकराणाम् आयूंषि = वयांसि इत्यहितायूंषि, अपनीतानि = आहृतानि अहितायूंषि यैस्तादृशानि। धनूंषि = कार्मुकानि। समारोप्यन्ताम् = आरोपणं क्रियन्ताम्। निर्मथितप्रोथियूथपाशाः = प्रोथीनां यूथपाः = सूकरसमूहाः, तेषामाशाः। निर्मथिताः = मन्थनतां नीताः प्रोथियूथपाशा यैस्तादृशाः। पाशाः = जालानि। गृह्यन्ताम् = धार्यन्ताम् इति।

हिन्दी—भद्र! शीघ्रता कीजिये। शत्रुओं पर विपत्तियाँ ढहानेवाली सेनाओं को आदेश दिये जायें, मन से भी तेज चलनेवाले घोड़ों को जीनों से कस लिया जाये। अपने वेग से वायु को भी जीतनेवाले (द्रुतगामी) कुत्ते तैयार कर लिये जायें, अहित (अपकार) करनेवालों की आयु अपहरण करनेवाले धनुषों को चढ़ा लिया जाय, सूकरों के झुण्डों को मथ डालनेवाले जालों को उठा लिया जाये।

अथ मौलिमिलन्मुकुलितकरकमलयुगलेन सेनापतिना 'यदाज्ञापयति देवः' इत्यभिधाय त्वरया तथा कृते सति॥

सुधा—अथेति। अथ = अनन्तरम्। मौलिमिलन्मुकुलितकरकमलयुगलेन—कर एव कमलम् तस्य युगलम्, मुकुलितम् = मुद्रितम् यत् करकमलयुगलम्, तेन। मौलिना = शिरसा मिलता=जुष्टेन मुकुलित करकमलयुगलेन=शिरोजुष्टमुद्रितकरकञ्जयुग्मेन। सेनापतिना = बलाध्यक्षेण। यद् देवः = भवान् आज्ञापयति = आदिशति। इति = इत्थम्। अभिधाय = उक्त्वा। त्वरया शीघ्रतया। तथा = पूर्वोक्तम्। कृते सति = विहिते सति।

हिन्दी—तदनन्तर अपने करकमलयुगल को जोड़कर तथा शिर से लगाकर सेनापति ने 'महाराज की जो आज्ञा' यह कहकर शीघ्रता से तदनुसार कार्य कर लिया।

स्वयमपि

निर्मांसं मुखमण्डले परिमितं मध्ये लघुं कर्णयोः
स्कन्धे बन्धुरमप्रमाणमुरसि स्निग्धं च रोमोद्गमे।
पीनं पश्चिमपार्श्वयोः पृथुतरं पृष्ठे प्रधानं जवे
राजा वाजिनमारुरोह सकलैर्युक्तं प्रशस्तैर्गुणैः॥ ४७॥

अन्वयः—राजा मुखमण्डले निर्मांसम्, मध्ये परिमितम्, कर्णयोः लघुम्, स्कन्धे बन्धुरम्, उरसि अप्रमाणम् च रोमोद्गमे स्निग्धम्, पश्चिमपार्श्वयोः पीनम्, पृष्ठे पृथुतरम्, जवे प्रधानम्, सकलैः प्रशस्तैः गुणैः युक्तम् वाजिनम् आरुरोह॥ ४७॥

सुधा—निर्मांसमिति। राजा = नृपः। मुखमण्डले = मुखस्य मण्डलम् तस्मिन् = आननमण्डले निर्मांसम्—निर्गतं मांसं यस्मात् तम् = मांसरहितम्। मध्ये = मध्यभागे। परिमितम् = सीमितम्। कर्णयोः श्रोत्रयोः लघुम्=ह्रस्वम्। स्कन्धे = स्कन्धदेशे= बन्धुरम् = सुन्दरम्। उरसि = वक्षसि अप्रमाणम् = विशालम्। च = तथा रोमोद्गमे= लोमसमूहे। स्निग्धम् = कोमलम्। पश्चिमपार्श्वयोः = पश्चात् पार्श्वभागयोः। पीनम् = स्थूलम्। पृष्ठे = पृष्ठदेशे = पृथुतरम् = पीनतरम्। जवे = वेगे। प्रधानम् = प्रशस्तम् सकलैः = निखिलैः प्रशस्तैः = प्रशंसनीयैः गुणैः=वैशिष्ट्यैः युक्तम् = सम्पन्नम्। वाजिनम्=अश्वम्। आरुरोह=आरोहणञ्चकार। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ ४७॥

हिन्दी—स्वयं राजा भी ऐसे घोड़े पर सवार हो गया जिसके मुखमण्डल पर अधिक मांस नहीं था, मध्य भाग परिमित था, दोनों कानों में लघुता थी, गर्दन पर सुन्दरता थी, वक्षःस्थल अप्रमाण (विशाल, अनुपम) था, रोमों का उद्गम स्निग्ध था। पिछले दोनों पार्श्व भाग मोटे थे, पीठ मोटी तथा चौड़ी थी और चाल प्रशंसनीय थी। (इस प्रकार) वह घोड़ा समस्त प्रशंसनीय गुणों से युक्त था॥ ४७॥

आरुह्य च क्रमेण कार्दमिककर्पटावनद्धमूर्धजैर्दण्डखण्डपाणिभिः क्रूरकर्मोचिताकारैर्वागुरावाहिभिरनन्तैः कृतान्तदूतैरिव पाशहस्तैः पार्पद्धिकैरनुगम्यमानः, दूरादुन्नमितकन्धरैस्तथोर्ध्वकर्णसंपुटैरकांडोड्डीनप्राणैरिव वनप्राणिभिराकर्ण्यमानर्हर्षितहयहेषारवः, पवनकम्पिततरुशाखाग्रपल्लवव्याजेन दूरादेवोत्क्षिप्रहस्ताभिरुड्डीयमानशकुनिकुलकोलाहलच्छलेन भयान्निवार्यमाण इव वनदेवताभिः, अभिमुखागतैरुन्मिषत्तरुपुष्पप्रकरमकरन्दबिन्दुवर्षवाहिभिर्वनविनाशशङ्कितैरर्घ्यमिवोपपादयद्भिरुपरुध्यमान इव वनमारुतैः उन्निद्रसान्द्रकुसुमकेसराङ्कुरजालजटिलाभिर्भयादुद्गतरोमाञ्चप्रपञ्चाभिरिवोद्भ्रान्तभृङ्गरवगद्गदरुदितेन निषिध्यमान इव वनवीरुद्भिः, उद्भिन्नभास्वदमन्दकन्दलावलोकनेनानन्द्यमानः श्वानुगतोऽप्यश्वानुगतः सगजमप्यगजं तद्वनमाससाद॥

सुधा—आरुह्येति । च=तथा । आरुह्य=अश्वारोहणं विधाय । क्रमेण=क्रमशः कार्दमिककर्पटावनद्धमूर्द्धजैः—कार्दमिककर्पटैः=रक्तवस्त्रैः अवनद्धानि=वद्धानि मूर्द्धजानि=शिरोरुहाणि येषां तैः । दण्डखण्डपाणिभिः—दण्डानां खण्डानि=यष्टिशकलानि, दण्डखण्डानि पाणौ येषां तैः । क्रूरकर्मोचिताकारैः—क्रूरकर्मणामुचितैराकारैः=क्रूरकार्यानुकूलवेशैः । वागुरावाहिभिः वागुराणि वहन्तीति तैः=जालधारिभिः । अनन्तैः=असंख्यैः । कृतान्तदूतैरिव कृतमन्तं येन सः कृतान्तः, तस्य दूतास्तैरिव=यमदूतैरिव । पाशहस्तैः—पाशाः=जालानि हस्तेषु येषां तैः=जालकरैः । पापर्द्धिकैः=अवसम्पत्तिकैः अनुगम्यमानः—अनुगमनं क्रियमाणः । दूरात्=दूरस्थानात् । नमितकन्धरैः नमितम्=वक्रीकृतम् कन्धरम्=ग्रीवादेशम् येषां तैः । ऊर्ध्वकर्णसम्पुटैः=उपरिकृतश्रुतसम्पुटैः । अकाण्डोड्डीनप्राणैरिव—अकाण्डे=असमये उडड्डीना ऊर्ध्वंगताः प्राणाः येषां तैरिव । वनप्राणिभिः—वनस्य प्राणिनस्तैः=काननजीवैः । आकर्ण्यमान हर्षितहयहेषारवः—हर्षितानाम्=प्रसन्नानाम् हयानाम्=अश्वानाम् हेषारवः=हेषाध्वनिरिति हर्षितहयहेषारवः आकर्ण्यमानः=श्रूयमाणः हर्षितहयहेषारव इवि=श्रूयमाणप्रसन्नाश्वहेषाध्वनिः । पवनकम्पिततरुशाखाग्रपल्लवव्याजेन—पवनेन=वायुना कम्पिता यास्तरुशाखास्तासामग्रपल्लवव्याजेन=अग्रदलमिषेण । दूरात् एव=दूरस्थानादेव । उत्क्षिप्तहस्ताभिः=उत्थितौ=ऊर्ध्वकृतौ हस्तौ=करौ यासां ताभिः=ऊर्ध्वकृतकराभिः । उड्डीयमानशकुनिकुलकोलाहलच्छलेन उड्डीयमानं यच्छकुनिकुलम् तस्य कोलाहलस्य छलेन=उड्डीयमानपक्षिदलकलरवव्याजेन । भयात्=त्रासात् । निवार्यमाण इव=वार्यमाण इव । वनदेवताभिः=वनदेवीभिः । अभिमुखागतैः=अभिमुखम्=सम्मुखम् आगतैः=आयातैः । उन्मिषत्तरुपुष्पप्रकरमकरन्दविन्दुवर्षवाहिभिः—उन्मिषताम्=विकसितानाम् तरुपुष्पाणाम्=वृक्षकुसुमानाम् प्रकटः=विकरणम्, तस्य मकरन्दविन्दुवर्षणम्=परागकणवर्षणम्,तद् वहन्तीति तैः विनाशशंकितैः—वनस्य=काननस्य विनाशः=नाशस्तेन शङ्कितैः=शङ्कायुक्तैः । अर्घ्यम् इव=पूजाजलमिव उपपादयद्भिः=कुर्वद्भिः । उपरुध्यमान इव=अवरुध्यमान इव । वनमारुतैः=काननपवनैः । उन्निद्रसान्द्रकुसुमकेसराङ्कुरजालजटिलाभिः—उन्निद्राणाम्=विकसितानाम् सान्द्रकुसुमानाम्=घनपुष्पाणाम् केसराङ्कुराणाम्=परागाङ्कुराणाम् जालमेव जटास्ताभिः । भयात्=त्रासात् । उद्गतरोमाञ्चप्रपञ्चाभिः इव—ऊर्ध्वगतलोमहर्षप्रपञ्चाभिः इव । उद्भ्रान्तभृङ्गरवगद्गदरुदितेन उद्भ्रान्तानाम्=व्याकुलितानाम् भृङ्गाणाम्=अलीनाम् रवस्तेन यद् गद्गदं=विह्वलतापूर्णम् रुदितम्=रोदनम् तेन । निषिध्यमान इव=प्रतिषिध्यमान इव । वनवीरुद्भिः=काननलताभिः । उद्भिन्नभास्वदमन्दकन्दलावलोकनेन—उद्भिन्नानाम्=प्रकटितानाम् भास्वताम्=देदीप्यमानानाम् कन्दलानाम्=अङ्कुराणाम् अवलोकनम्=दर्शनम् तेन । आनन्द्यमानः=प्रहृष्यमाणः । श्वानुगतः अपि—श्वभिः=कुक्कुरैः अनुगतः अपि=अनुयातोऽपि । अश्वानुगतः=अश्वैः=वाजिभिः अनुगतः=अनुयातः सगजम् अपि—गजैः सहितम्=सकुञ्जरम् अपि । अगजम्=जम् पर्वतपादपयुक्तम् । तद्वनम्=उक्तं काननम् । आससाद=प्रापयामास ।

हिन्दी—तथा घोड़े पर सवार होकर क्रमशः रक्तवस्त्रों से वालों को बाँधे हुए हाथ में छोटे-छोटे डण्डे लिये हुए, क्रूर कार्य के अनुकूल वेश बनाये हुए, जाल लिये हुए, असंख्य यमदूतों के समान हाथों में जाल थामे हुए, पापसम्पन्न व्यक्तियों (व्याधों) से अनुगमन किये गये, दूर से गर्दन टेढ़ी किये हुए तथा ऊपर को कान खड़े किये हुए असमय में ही उड़ते हुए प्राणों जैसे वन्यजन्तुओंवाले, प्रसन्न घोड़ों की हिनहिनाहट को सुनते हुए, वायु के द्वारा कम्पाये (हिलाये) गये, वृक्षों की शाखाओं के अग्रपल्लवों के बहाने से दूर से ही हाथ उठाये हुए, उड़ते हुए पक्षिसमूह के कोलाहल के बहाने भय से मानो वनदेवियों द्वारा रोके जाते हुए, सामने आते हुए विकसित फूलों के पराग-कणों को ढोनेवाले, वनविनाश से शङ्कित अर्घ्य-सा देते हुए घेरे हुए वन-पवन वाले, खिले हुए घने पुष्प-पराग के अङ्कुरों के जाल से युक्त, भय से खड़े रोंगटोंवाले मानों घबड़ाये हुए, भौंरों की भनभनाहट से गद्‌गद रोदन के द्वारा मानों वन-लताओं से निषिद्ध किये गये, प्रकटित कान्ति से अमन्द (चमचमाते हुए), अङ्कुरों के अवलोकन से आनन्दित कुत्तों को साथ में लिये होने पर भी घोड़ों से युक्त राजा हाथियों से परिपूर्ण होते हुए भी पहाड़ों तथा वृक्षों वाले उस वन में पहुँचा।

ततश्च केचिदुद्यत्परश्वधा गणपतयः केऽपि दृष्टसिंहिकासुतविक्रमाः शशधराः, केऽपि पाशपाणयो जम्बुकदिक्पालाः, केऽपि हरिमार्गानुसारिणो बलभद्राः केऽपि चक्रपाणयो मधुसूदनाः, केऽपि शिवागमवर्तिनो रौद्राः, केऽप्याहिताग्नयो विप्र-लोकाः, केऽपि खण्डिताञ्जनाधरप्रबालाः प्रभञ्जनाः, केऽप्युत्खातदन्तिदन्तमुष्टयो निस्त्रिंशाः, तस्य पृथ्वीपतेराकुलितश्वापदाः पदातयो वनं रुरुधुः॥

सुधा—च = तथा। तदनन्तरम्। केचित् = केऽपि। उद्यत्परश्वधाः–उद्यन्तः = पलायमानाः परे = उत्कृष्टाः श्वानः = कुक्कुरास्तान् दधतीति। तथा उद्यन्तः = सन्नद्धाः परश्वधाः = कुठारशस्त्राणि येषां ते गणपतयः = गणाधिपतयः केऽपि। दृष्टसिंहिकासुत-विक्रमाः–दृष्टः = अवलोकितः सिंहिकासुतस्य = राहोः विक्रमः = पराक्रमः यैस्तादृशाः शशधराः = चन्द्राः। अथवा–दृष्टः = अवलोकितः सिंहिकासुतस्य = सिंहस्य विक्रमः = पराक्रमो यैः। तथा शशान् = शशकान् धारयन्तीति शशधराः = शशकधारिणः। पाश-पाणयः–पाशाः = जालानि पाणौ येषां ते = जालहस्ताः। अथवा पाशपाणयः = वरुणाः जम्बुकदिग्पाला = जम्बुकदिशः = पश्चिमदिशायाः पालाः = पालकाः अथवा जम्बु-कानां = शृगालानाम् दिग्पालाः = दिशारक्षकाः। 'जम्बुकः फेरवे नीचे प्रतीचिदिग्पता-वपि'। इतिविश्वप्रकाशः। हरिमार्गानुसारिणः हरिम् = सिंहम् मार्गम् = मृगसमूहश्चानु-सरन्तीति। बलभद्राः = बलेन भद्राः = शक्ताः। पक्षे हरेः = विष्णोः मार्गम् = अध्वानम् अनुसरन्तीत्यनुसारिणः = बलभद्राः = विष्णुदेवाः। चक्रपाणयः–चक्रं पाणौ येषां ते = चक्रहस्ताः, विष्णुदेवाश्च। मधुसूदनाः—मधुः = क्षौद्रम् सूदनाः = च्योतकाः। पक्षे–मधुं = मधुनामानं राक्षसम् सूदनाः = नाशकाः = विष्णुदेवाः। शिवागमावर्तिनः–शिवायाः = शृगाल्याः गमः = गतिस्तदावर्तिनः = स्थिताः। पक्षे—शिवागमावर्तिनः = शैवदर्शनानुगामिनः। रौद्राः = भयङ्कररूपधारिणः, पक्षे रौद्रदेवाः। आहिताग्नयः–

आसमन्तात् हिताग्नयः = हितकरवह्नयः येषां ते । पक्षे आहिताग्नयः = अग्निहोतारः । विप्रलोकाः पक्षिणः प्रलोकयन्तः = पार्द्धिकाः । पक्षे—विप्रलोकाः = ब्राह्मणजनाः । खण्डिताञ्जनाधरप्रवालाः—खण्डिता अञ्जनस्य=पश्चिकपक्षिणः अधरप्रवालाः पुच्छानि यैस्ते । यद्वा अञ्जनस्य-शाखिनः अधः पल्लवाः । पक्षे—अञ्जनाख्यायाः प्रियायाः अधरप्रवालाःओष्ठपल्लवाः यैस्ते । प्रभञ्जनाः = वाताः । उत्खातदन्तिदन्तमुष्टयः—उत्खाताः दन्तिदन्ताः = करिदन्ताः यैस्तथोक्ताः मुष्टयः = संग्रहाः येषां ते । पक्षे उत्क्षिप्तदन्तिदन्तप्रधानो मुष्टिर्येषु ते । निस्त्रिंशाः = क्रूरकर्माणः पक्षे खड्गाः । आकुलितश्वापदाः—आकुलिताः = व्याकुलीकृताः श्वापदाः वन्यजीवाः यैस्ते । पदातयः = पदचारिणः । तस्य = तादृशस्य पृथ्वीपतेः = भूपतेः । वनम् = काननम् । रुरुधुः—वेष्टयामासुः ।

हिन्दी—तदनन्तर कुछ लोग भागनेवाले उत्तम कुत्तों को उसी प्रकार धारण किये हुए (लिये) थे जैसे गणेशजी अपने कुठार को उद्यत (तैयार–उठाये हुए) रहते हैं। कुछ लोग शेरनी के किशोरों के पराक्रम देख चुके थे जैसे राहु के विशिष्ट आक्रमण को चन्द्रमा देखे हुए हैं। कुछ लोग जाल हाथ में लिये हुए शृगालों के आने की दिशाओं की रक्षा कर रहे थे जैसे हाथ में पाश लिये पश्चिम दिशा के स्वामी हों। कुछ वीर लोग सिंह के मार्ग का अनुसरण कर रहे थे जैसे कृष्ण के मार्ग का अनुसरण बलभद्र करते थे। कुछ लोग चक्रपाणि मधुसूदन के समान हाथ में चक्र लिए हुए मक्खियों के छत्तों से मधु टपका रहे थे। कुछ लोग शैवदर्शन का अनुगमन करनेवाले रौद्र के समान शृगालों के मार्ग पर ठहरकर भयङ्कर रूप धारण किये हुए (रौद्र) थे। कुछ लोग आहिताग्नि (अग्निहोत्र करने वाले) ब्राह्मणों के समान हितकर अग्नि (तापने की क्रिया) कर रहे थे। कुछ लोग खञ्जन पक्षियों के अधरप्रवाल (पूंछ का भाग) तोड़े हुए थे जैसे अञ्जना नाम की प्रिया के अधरोष्ठ का पान करनेवाले पवन हों। कुछ लोग उखाड़े गये हाथी दांत से बनी मूठोंवाली तलवार वैसे ही लिये हुए थे जैसे हिंसक तथा हाथी दांतों को उखाड़कर मुट्ठी में लिये हुए हों। इस प्रकार उन राजा नल के पैदल बहेलियों ने जानवरों को आकुलित बनाये हुए वन को घेर लिया।

ततश्च तैः क्रियन्ते विकलभाः वननिकुञ्जाः कुञ्जराश्च, ध्रियन्तेऽनेकधारयातिपातिनः खड्गाः खड्गिनश्च, कृष्यन्ते कूजन्तः कोदण्डदण्डाः गण्डकाश्च, विक्षिप्यन्ते परितः शराः शरभाश्च, भज्यन्ते तरवस्तरक्षवश्च ॥

सुधा - ततः च = तदनन्तरञ्च । तैः = पदातिभिः । वननिकुञ्जाः = काननकुञ्जाः विकलभाः—विगताः कलभाः येभ्यस्ते = व्यपेतकरिपोताः । कुञ्जराः = नागाः च विकलाः भाः येषां ते = व्याकुलकान्तयः, भयादितिशेषः । क्रियन्ते = विधीयन्ते । अनेकधारयातिपातिनः—अनेकया धारया = द्विधारया । अहिपातिनः बहुपतनकर्तारः । खड्गाः = असयः । ध्रियन्ते । च खड्गिनः = खड्गधारिणः = गण्डकाः अनेकधा = बहुधा रयेन = जवेन अतिपातिनः = आगन्तारः । ध्रियन्ते = गृह्यन्ते । कूजन्तः = ध्वनन्तः । कोदण्डदण्डाः = कोदण्डानाम् = धनुषाम् दण्डाः = यष्टयः । कृष्यन्ते =

आकृष्यन्ते । कूजन्तः = रुदन्तः गण्डाश्च = गण्डकशिशवश्च । कृष्यन्ते = घृष्यन्ते । परितः = अभितः । शराः = बाणाः विक्षिप्यन्ते = प्रक्षिप्यन्ते । शरमाश्च=पतङ्गाश्च । विक्षिप्यन्ते = मत्ताः क्रियन्ते तरवः = पादपाः । भज्यन्ते=नश्यन्ते । तरक्षवश्च = सर्पाश्च भज्यन्ते = कर्त्यन्ते ।

हिन्दी—तदनन्तर उन पैदल व्याधों द्वारा वनकुञ्ज हाथियों से शून्य किये जा रहे तथा हाथी भय से निस्तेज किये जा रहे थे । अनेक वारों से प्रहार किये जानेवाले खड्ग धारण किये जा रहे थे तथा गैंडे पकड़े जा रहे थे । टंकार करते हुए धनुओं के दण्ड खींचे जा रहे थे तथा चिल्लाते हुए गैंडों के बच्चे पकड़े जा रहे थे । चारों ओर बाण फेंके जा रहे थे तथा शरम पागल बनाये जा रहे थे । वृक्ष नष्ट किये जा रहे थे तथा सांप काटे जा रहे थे ।

क्षणेन च पतन्ति पीवरा वराहाः, सीदन्ति दन्तिनः, विरसं रसन्ति सातङ्का रङ्कवः, प्रकाशैलं शैलं भयादारोहन्ति रोहिताः, शरसंघातघूर्णिता यान्ति महीं महिषाः, दुर्गसंश्रयं श्रयन्ते तरलितनेत्राश्चित्रकाः, त्वरिततरं तरन्तीवोत्पतन्तो नभसि निजजवनिर्जिततुरङ्गाः कुरङ्गाः ॥

सुधा —क्षणेनेति । च = तथा । क्षणेन = निमिषेण । पीवराः = स्थूलाः वराहाः = शूकराः पतन्ति = पतिताः भवन्ति । दन्तिनः = गजाः । सीदन्ति=व्याकुलिताः भवन्ति । सातङ्काः = भयभीताः रङ्कवः = मृगाः विरसम् = निष्करुणम् रसन्ति = क्रन्दन्ति । प्रकाशैलम् - प्रकाशाः=स्पष्टाः एलाः = लताः यत्र शैले तम् शैलम् = पर्वतम् । रोहिताः मृगाः । भयात् = त्रासात् । आरोहन्ति = आरोहणं कुर्वन्ति । शरसंघातघूर्णिताः— शराणां संघातः = बाणाघातस्तेन घूर्णिताः = मूर्च्छिताः । महिषाः = पशुविशेषाः । महीं = भूमिम् । यान्ति = गच्छन्ति, भूमौ पतन्तीत्याशयः । तरलितनेत्राः—तरलिते = चञ्चले नेत्रे = नयने येषां ते । चित्रकाः = चित्रक (चीता) पशुविशेषाः । दुर्गसंश्रयम् = दुर्गस्य पर्वतगुहायाःसंश्रयम् = आश्रयम् । श्रयन्ते = यान्ति । नभसि=गगने त्वरिततरम् = अतिशयेन त्वरितं त्वरिततरम् = द्रुततरम् उत्पतन्तः = उड्डीयन्तः (इव) निजजवनिर्जिततुरङ्गाः—निजेन = स्वीयेन जवेन = वेगेन निर्जिताः = पराजिताः तुरङ्गाः = अश्वाः यैस्तादृशाः कुरङ्गाः = मृगाः तरन्ति इव = तरणं कुर्वन्ति इव ।

हिन्दी—तथा क्षणभर में मोटे-मोटे सूकर गिरने लगे, हाथी व्याकुल होने लगे, भयभीत मृग निष्करुण होकर क्रन्दन करने लगे, स्फुट लताओंवाले पर्वत पर भय से मृग चढ़ने लगे, वाणाघात से मूर्च्छित भैंसे भूमि पर लोटने लगे, तरलित नेत्रोंवाले चीते गुफाओं में आश्रय लेने लगे, अति तीव्र मानो आकाश में उड़ते हुए अपने वेग से अश्वों को पराजित करनेवाले कुरङ्ग (मृग) तैर से रहे थे ।

तत्र च व्यतिकरे—

जाताकस्मिकविस्मयैः किमिदमित्याकर्ण्यमानः सुरैः
संत्रासोज्झितकर्णतालचलनाद् दिग्दन्तिनः कम्पयन् ।

जन्तूनां जनितज्वरः स मृगयाकोलाहलः कोऽप्यभूद्-
येनेदं स्फुटतीव निर्भरभृतं ब्रह्माण्डभाण्डोदरम् ॥ ४८ ॥

अन्वयः—जाताकस्मिकविस्मयैः सुरैः किम् इदम् इति आकर्ण्यमानः, संत्रासोज्झित कर्णतालचलनात् दिग्दन्तिनः कम्पयन् जन्तूनाम् जनितज्वरः सः मृगयाकोलाहलः कः अपि अभूत् येन इदम् निर्भरभृतम् ब्रह्माण्डभाण्डोदरम् स्फुटति इव ।

सुधा—जातेति । च=तथा तत्रव्यतिकरे = तदन्तरे — जाताकस्मिकविस्मयैः—जातः= उत्पन्न आकस्मिकः = अकस्मात् विस्मयः = आश्चर्यम् यैस्तैः । सुरैः-देवैः 'किम् इदम्'=-एतत् किम् अस्ति इति = एतत् । आकर्ण्यमानः = श्रूयमाणः । संत्रासोज्झितकर्णताल चलनात्=संत्रासात् = भयात् उज्झितम् यत् कर्णतालम् = श्रवणतालम् तस्य चलनम् = प्रचलनम्=तस्मात् । दिग्दन्तिनः—दिशाम्=ककुभानाम् दन्तिनः = नागास्तान् कम्पयन्= चालयन् । जन्तूनाम् = प्राणिनाम् । जनितज्वरः-जनितः = उत्पादितः ज्वरः = तापम् येन तादृशः । सः = उक्तः । मृगयाकोलाहलः = मृगयायाः = आखेटस्य कोलाहलः = कलकलध्वनिः । कः अपि, कश्चिदपि । अभूत् = आसीत् येन = कोलाहलेन । इदम् = एतत् । निर्भरभृतम् = निखिलम् । ब्रह्माण्डभाण्डोदरम् ब्रह्माण्डम् = विश्वम् एव भाण्डम्= पात्रम् तस्योदरम्=मध्यम् । स्फुटति इव=विदीर्णं भवतीव ।

हिन्दी—तथा इसी बीच में—उत्पन्न हुए आकस्मिक विस्मयवाले देवताओं के द्वारा यह सुने जाते हुए 'कि यह क्या है' तथा डर के कारण कानों को फड़फड़ाते हुए, दिग्गजों को कँपाता हुआ, प्राणियों के ज्वर को उत्पन्न करनेवाला शिकार का कोई कोलाहल सा होने लगा जिससे यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्डरूपी भाण्ड का उदर मानों फटा जा रहा था ।

राजाप्येकशरप्रहारपातितमत्तमातङ्गः सर्वतो विहारिहरिहरिणशशक-शम्बरवराहहननहेलया विचरन्नितस्ततस्तरुणतरतमालमञ्जरीजालनीलो-द्घुषितस्कन्धकेसरमूर्ध्वस्तब्धकर्णसम्पुटमश्वचक्राय क्रुध्यन्तमाघूर्णितघोणमनव-रतकृतघनघोरघर्घररवमुत्क्षिप्तपुच्छगुच्छमभिमुखमेकस्मिन्नतिसान्द्रभद्रमुस्तास्तम्ब-भाजि पङ्किलपल्वलप्रदेशे तं शूरशूकरमपरमिव दवदहनदग्धाद्रि-मद्राक्षीत् ।

सुधा—राजेति । राजा अपि = नृपः अपि । एकशरप्रहारपातितमत्तमातङ्गः—एकेन शरप्रहारेण=बाणाघातेनैव पातितः = भूशायितः मत्तः = मदयुक्तः मातङ्गः = नागः येन तथा । सर्वतः = सर्वदिक्षु । विहारिहरिहरिणशशकशम्बरवराहहननहेलया विहारिणः = विचरणशीलाः हरयः=मृगेन्द्राः हरिणाः=मृगाः शशकाः = शशाः शम्बरा वराहाः = शूकराश्च तेषां हननहेला = वधहेला तया । इतस्ततः = यत्र तत्र । विचरन्= विहरन् । तरुणतरतमालमञ्जरी जालनीलोद्घुषितस्कन्धकेसरम् अतिशयेन तरुणं तरुणतरम्, तेषाम्=नूतनानाम् तमालानाम्=तमालपादपानाम् मञ्जरीजालम्=मञ्जरी-वृन्दम् तेनैव नीलम् = नीलवर्णम् घुषितम् स्कन्धकेसरम् स्कन्धस्य = ग्रीवा केसराः = केशाः यस्य तम् । ऊर्ध्वस्तब्धकर्णसम्पुटम्–ऊर्ध्वम् = उपरिकृतम् स्तब्धम् = शान्तम्

कर्णपुटम् = श्रोत्रपुटम् येन तादृशम् । अश्वचक्राय अश्वानाम् = घोटकानाम् चक्रम् = समूहम् तस्मै । क्रुध्यन्तम् = कुप्यन्तम् । आघूर्णितघोणम्–आघूर्णिता = वक्रीकृता घोणा= नासिका येन तम् । अनवरतकृतघनघोरघर्घररवम्–निरन्तरम् कृतम्=विहितम् घनघोरम्= घमासानम् घर्घररवम्=घर्घर शब्दो येन तादृशम् । उत्क्षिप्तपुच्छगुच्छम्–पुच्छस्य गुच्छः= लांगूलस्तवकम्, उत्क्षिप्तः = ऊर्ध्वं प्रक्षिप्तः पुच्छगुच्छो येन तम् । अभिमुखम्=सम्मुखम् । एकस्मिन् = अद्वितीये । अतिसान्द्रभद्रमुस्तास्तम्बभाजि अतिसान्द्रम् = अतिसघनम् भद्रम् = श्रेष्ठम् मुस्तास्तम्बम् भजते = शोभते यत्र तादृशे । पङ्किलपल्वलप्रदेशे–पङ्केन युतः = पङ्किलः यः पल्वलप्रदेशः = क्षुद्रजलाशयभागस्तस्मिन् । तम् = उपर्युक्तलक्षणसम्पन्नम् । शूरम्=वीरम् । शूकरम्=वीरवराहम् अपरम् = अन्यम् । दवदहनदग्धम्–दवदहनेन = दावानलेन दग्धम् = ज्वलितम् । अद्रिम् = पर्वतम् इव । अद्राक्षीत् = अपश्यत् ।

हिन्दी— एक ही वाण के प्रहार से मतवाले हाथी को गिरा देनेवाले राजा ने भी चारों ओर विचरण करनेवाले सिंह मृग-खरगोश-शम्बरमृग-शूकरों को मारने के विचार से इधर-उधर विचरण करते हुए, नूतन तमाल वृक्षों के मञ्जरीजाल की भाँति श्यामल-ग्रीवाकेसरों को ऊपर उठाये तथा दोनों कानों को ऊपर किये हुए अश्वसमूह पर क्रोध प्रकट करते हुए, नासिका टेढ़ी किये हुए, निरन्तर घनघोर घर्घर (घुरघुराहट) आवाज करनेवाले, पूंछ के गुच्छे को ऊपर फेंकनेवाले, सामने के एक अति सघन सुन्दर मुस्तावाले, कीचड़युक्त छोटे जलाशय में दावानल से जले हुए दूसरे पहाड़ के समान वीर सूकर को देखा ।

दृष्ट्वा च रचितशरसन्धानलाघवो राघव इव राक्षसेश्वरस्य तस्योपरि परिणद्धविविधपत्रैः पतत्त्रिभिरभ्यवर्षत् ।

सुधा—दृष्ट्वेति । च=तथा । दृष्ट्वा = अवलोक्य । रचितशरसन्धानलाघवः=रचितम्= कृतम् शरसन्धानस्य=वाणसञ्चालनस्य लाघवम् = चातुर्यम् (शीघ्रता वा) येन तादृशः (राजा) राघव इव = राम इव । राक्षसेश्वरस्य = दैत्यराजस्य रावणस्य उपरि तस्य= वराहस्योपरि । परिणद्धविविधपत्रैः–परिणद्धैः संयुक्तैः विविधपत्रैः = बहुविधपक्षैः । पतत्त्रिभिः=वाणैः । अभ्यवर्षयत्=वर्षणमकरोत् ।

हिन्दी —उसे देखकर बाण सन्धान में दक्ष राजा नल ने विविध पंखों से युक्त बाणों से उसी प्रकार वर्षा की जैसे राम ने राक्षसराज रावण पर बाणवर्षा की थी ।

तत्र च व्यतिकरे—

किमश्वः पार्श्वेषु प्लवनचतुरः किं नु नृपतिः
शरान्मुञ्चन्नुच्चैश्चलतरकराकृष्टधनुषा ।
किमालोलः कोलः परिहृतशरः शौर्यरसिको
न जानीमस्तेषां क इह परमो वर्ण्यत इति ॥ ४९ ॥

अन्वयः—किम् पार्श्वेषु प्लवनचतुरः अश्वः किम् नु चलतरकराकृष्टधनुषा उच्चैः शरान् मुञ्चन् नृपतिः किम् परिहृतशरः शौर्यरसिकः आलोलः कोलः । इह तेषाम् परमः कः वर्ण्यते इति न जानीमः ॥ ४९ ॥

सुधा--किमिति । पार्श्वेषु = निकटेषु प्लवनचतुर: = प्लवने=कूर्दने चतुर: = दक्ष: अश्व: = वाजी । किम् नु = निश्चयेन किम् । चलतरकराकृष्टधनुषा चलतराभ्याम् = चञ्चलतराभ्याम् कराभ्याम् = हस्ताभ्याम् आकृष्टम् धनु: = चापम् यत् तेन । उच्चैः शरान् = वाणान् मुञ्चन् = त्यजन् । नृपति: = राजा नल: । किम् । परिहृतशर: = परिहृत:=परिरक्षित: । शौर्यरसिक:-शौर्येण=पराक्रमेण रसिक:=आनन्दित: आलोल:= अति चपल: । कोल: = शूकर: । इह = अत्र । तेषाम्=एतेषाम् । क: परम: = क: श्रेष्ठ: वर्ण्यते कथ्यते इति = इत्थम् न जानीम: = न विद्म: । शिखरिणीवृत्तम् ।

हिन्दी—उस समय उछलने में चतुर घोड़ा परम (बड़ा) है, अथवा क्या चञ्चल हाथों से खींचे गये धनुष से तेज वाण छोड़ता हुआ नृपति परम हैं अथवा क्या बाणों से अपने को बचाता हुआ वोर रसिक चञ्चल सूकर परम है ? अर्थात् उन सबमें कौन सबसे बड़ा कहा जा सकता है यह नहीं समझ में आ रहा था ।

अपि च—

अजनि जनितपृथ्वीमण्डलोत्पादकम्पं
किमपि चलितशैलं द्वन्द्वयुद्धं तयोस्तत् ।
स्खलिततुरगवेगो विस्मयेनैष यस्मिन्
दिनपतिरपि शौर्याश्चर्यसाक्षी बभूव ॥ ५० ॥

अन्वय:—तयो: चलितशैलम्, जनितपृथ्वीमण्डलोत्पादकम्पम् किम् अपि द्वन्द्वयुद्धम् अजनि यस्मिन् विस्मयेन एष: स्खलिततुरगवेग: दिनपति: अपि शौर्याश्चर्यसाक्षी बभूव ।

सुधा--अजनीति । तयो: = नृपशूकरयो: । चलितशैलम्=चलित: शैलम् येन तत्= कम्पितपर्वतम् । जनितपृथ्वीमण्डलोत्पादकम्पम्-जनितम् = उत्पादितम् पृथ्वीमण्डले= भूमण्डले उत्पादकम्पम् = प्रचलनम् येन तत् । किमपि । द्वन्द्वयुद्धम् परस्परयुद्धम् । अजनि=अजनिष्ट । यस्मिन्=यस्मिन्युद्धे । विस्मयेन = आश्चर्येण । एष:=अयम् । स्खलित-तुरगवेग:-तुरगाणां वेगस्तुरगवेग: स्खलित: तुरगवेग: = अश्वगति: येन स: दिनपति: = दिवाकर: अपि शौर्याश्चर्यसाक्षी शौर्यस्य=पराक्रमस्य, आश्चर्यस्य च साक्षीबभूव= अभूत । मालिनीवृत्तम् ॥ ५० ॥

हिन्दी—और भी—राजा नल तथा शूकर का वह पर्वत हिला देनेवाला तथा पृथ्वीमण्डल को कँपा देनेवाला द्वन्द्व युद्ध हुआ जिसमें आश्चर्य के कारण भगवान् सूर्य अपने घोड़ों की गति को रोककर उनके अद्भुत शौर्य के साक्षी बने । अर्थात् अनेक अद्भुत शौर्य के सामने सूर्य की गति भी स्थिर सी हो गयी ॥ ५० ॥

अथ कथमपि नाथं प्रोथियूथस्य जित्वा
ज्वरित इव विशालं सालसः सालमूले ।
सुखमभजत राजा राजमानः श्रमाम्भः
कणकलितकपोलालोललीलालकेन ॥ ५१ ॥

अन्वयः—अथ कथम् अपि प्रोथियूथस्य विशालम् नाथम् जित्वा ज्वरित इव सालसः श्रमाम्भः कणकलितकपोलालोललीलालकेन राजमानः राजा सालमूले सुखम् अभजत ।। ५१ ।।

सुधा—अथेति अथ = अनन्तरम् । कथमपि = केनापि प्रकारेण । प्रोथियूथस्य प्रोथीनाम् यूथस्तस्य = शूकरसमूहस्य । विशालम् = महान्तम् । नाथम् = नायकम् । जित्वा = विजित्य । ज्वरितः = ज्वरयुक्तः इव । सालसः = अलसेनसहितः = आलस्ययुतः । श्रमाम्भः कणकलितकपोलालोललीलालकेन श्रमाम्भः कणैः = श्रमस्वेदविन्दुभिः कलितम् = शोभितम् कपोलम् = गण्डस्थलं आलोलम् = चञ्चलम् लीलालकश्च = सुन्दरकेशसमूहश्च तत् तेन । राजमानः = भ्राजमानः राजा = नृपः नलः । सालमूले = सालतरोरधः सुखम् = आनन्दम् । अभजत = असेवत । मालिनीवृत्तम् ।। ५१ ।।

हिन्दी—तदनन्तर किसी प्रकार शूकरसमूह के विशाल नायक (शूकर) को जीतकर ज्वरयुक्त व्यक्ति के समान आलस्य के साथ श्रमस्वेदकणों से शोभितकपोल तथा चञ्चल सुन्दर अलकों से शोभित होता हुआ राजा (नल) सालवृक्ष के नीचे सुख से बैठ गया ।। ५१ ।।

तत्र च स्थितं श्रमसुकुलितनयनारविन्दम्, आन्दोलयन्तः कुसुमिततरून्, तरलयन्तः शिखिशिखण्डमण्डलानि, ताण्डवयन्तस्तनुलतापल्लवनिवहान्, वहन्तो वहन्निर्झरजलशिशिरशीकरनिकरान्, करालयन्तः कुटजकुड्मलानि, मकरन्दबिन्दुमुचो मन्दमानन्दयामासुः कम्पितनीपवनाः पवनाः ।।

सुधा—तत्रेति । च = तथा । तत्र = तस्मिन्स्थाने स्थितम् = अवस्थितम् । श्रममुकुलितनयनारविन्दम् = श्रमेण, परिश्रमेण मुकुलिते = मुद्रिते, नयनारविन्दे = नेत्रकमले यस्य तम् । कुसुमिततरून् = कुसुमिताः = पुष्पितास्तरवो वृक्षास्तान् । आन्दोलयन्तः = कम्पयन्तः । शिखिशिखण्डमण्डलानि = मयूरमण्डलानि, तरलयन्तः चालयन्तः । तनुलतापल्लवनिवहान् = तनुलतानाम् = दुर्बलवल्लीनाम् पल्लवानाम् - दलानाम् निवहाः = पङ्क्तयः, तान् । ताण्डवयन्तः = नृत्यन्तः । वहन्निर्झरजलशिशिरसीकरनिकरान्—वहताम् = प्रवहताम् निर्झरजलानाम् = निर्झरपयसाम् शिशिराणि = शीतलानि सीकराणि = विन्दूनि, तेषाम् निकरास्समूहास्तान् । वहन्तः = प्रवहन्तः । कुटजकुड्मलानि—कुटजपुष्पकलिकाः । करालयन्तः = विकसन्तः । मकरन्दविन्दुमुचः—मकरन्दविन्दूनि = मधुरससीकराणि मोचयन्तीति = त्यजन्तीति मकरन्दविन्दुमुचः । कम्पितनीपवन्तः = कम्पितानि = चालितानि नीपवनानि = कदम्बकाननानि यैस्तादृशाः । पवनाः = वाताः । मन्दम् = मन्थरम् आनन्दयामासुः = मोदयामासुः ।

हिन्दी—वहां बैठे हुए परिश्रम के कारण अधखुले कमल-नयनोंवाले राजा को पुष्पयुक्त पादपों को हिलाता हुआ, मयूरमण्डल को आनन्दित करता हुआ, पतली लताओं के पत्तों को नचाता हुआ, बहते हुए झरनों के जलबिन्दुओं के समूह को बहाता हुआ, कुटजपुष्पों की कलियों को विकसित करता हुआ, मधुबिन्दु टपकानेवाला, कदम्बवन को कंपानेवाला पवन धीरे-धीरे आनन्दित करने लगा ।

अनन्तरमनवरतकरालकाककौलेयककुलकवलनाकुलितकोलकरिकुरङ्गकण्ठीरवकिशोरदृषत्पृष्ठधाविते परितः परिजने, जनितविविधमृगवधूवैधव्याधीन्व्याधान्निवारयितुमिवान्तरान्तरा प्रसारितकरे मध्यस्थतां गतवति गभस्तिमालिनि, सहसंवर्धितमृगविनाशशोकभरादिव वनवीरुधां पतत्सु पुष्पलोचनेभ्यो बाष्पेष्विव मध्याह्नोष्णविलीनमकरन्दबिन्दुषु, श्रूयमाणेषु वनदेवतानां वनविमर्दोपालम्भेष्विव तरुखण्डोड्डीनविविधविहङ्गविरुतेषु, विघट्टितार्भककुरङ्गकुटुम्बिनीकरुणकूजितव्याजेनान्यायमिव पूत्कुर्वतीषु वनराजिषु, इतस्ततः संचरच्चटुलतरतुरङ्गखुरशिखरशिखोत्खातधरणिमण्डलाद्वनविनाशवार्तां गगनचरेभ्यः कथयितुमिवोत्पतितेऽम्बरतलमकृतपरित्राणे च मूर्च्छित इव पुनः पुनः पतति भुवि भवनपारावतपतत्रिपत्रधूसरे धूलिपटले, सकम्पकपिकलापोल्ललनलुलिततरुतरुणमञ्जरीपुञ्जनिकुञ्जादुद्वेजिते मञ्जुगुञ्जति वनान्तरमपरमुच्चलिते चञ्चलचञ्चरीकचक्रवाले, चङ्क्रमणक्रमेण च संपन्ने सैन्यस्य श्रमावसरे तस्यैव सरससरलशालद्रुमस्याधस्तान्निषण्णे श्रमभाजि राजनि ॥

सुधा – अनन्तरमिति । अनन्तरम् = पश्चात् । अनवरतकरालकाककौलेयककुलकवलनाकुलितकोलकरिकुरङ्गकण्ठीरवकिशोरदृषत्पृष्ठधाविते—अनवरतम् = निरन्तरम् काकम् = द्रोणम् कौलेयकम् = श्वानम् च तेषां कुलम् समूहम् कवलनाय = खादनायाकुलितः, करालः = भयङ्करश्चासौ काककौलेयककुलकवलनाकुलितश्च कोलः = वराहः करी = दन्ती, कुरङ्गः = मृगः कण्ठीरवः = सिंहश्च, तेषां किशोराणाम् दृषताम् = दृष्टीनाम् पृष्ठधाविते = पश्चात्पलायमाने । परितः = अभितः परिजने = सेवकवर्गे । जनितविविधमृगवधूवैधव्याधीन्—जनितान् = उत्पन्नान् विविधानाम् = अनेकेषाम् मृगाणाम् = पशूनाम् वधूनाम् = स्त्रीणाम् वैधव्याधयस्तान् = वैधव्यसंकटान् । निवारयितुम् = निवारणं कर्त्तुम् इव । अन्तरान्तरा = मध्येमध्ये । प्रसारितकरे = प्रसारिताः = विस्तारिताः कराः = रश्मयः येन तस्मिन् । मध्यस्थताम् = मध्यस्थरूपे गतवति = प्रयाते सति । गभस्तिमालिनि = सूर्ये । सहसंवर्धितमृगविनाशशोकभराद् इव—सह = साकम् संवर्धितेन = संवर्धनेन मृगाणाम् = हरिणानाम् विनाशशोकः = नाशदुःखम् तेन भरः = भारम् तस्मादिव । वनवीरुधाम् = वनलतानाम् । पतत्सु = स्रवत्सु । पुष्पलोचनेभ्यः = पुष्पाण्येव लोचनानि, तेभ्यः = कुसुमनयनेभ्यः । वाष्पेषु = अश्रुषु इव । मध्याह्नोष्णविलीनमकरन्दविन्दुषु—मध्याह्नोष्णेव = मध्यन्दिनतापेन विलीनाः = अन्तर्हितानि यन्मकरन्दविन्दूनि = मधुरसकणानि, तेषु । वनदेवतानाम् = वनदेवीनाम् । वनविमर्दोपालम्भेषु = वनविमर्देन = काननविनाशेन ये उपालम्भास्तेषु । श्रूयमाणेषु = आकर्ण्यमानेषु इव तरुखण्डोड्डीनविविधविहङ्गविरुतेषु = तरुखण्डेषु – पादपशकलेषु उड्डीनाः ये विविधविहङ्गाः = अनेकपक्षिणः तेषाम् विरुतेषु = कूजनेषु । विघट्टितार्भककुरङ्गकुटुम्बिनीकरुणकूजितव्याजेन—विघट्टितैः = वियुक्तैः अर्भकैः = शिशुभिः कुरङ्गकुटुम्बिनीनाम् = मृगस्त्रीणाम् करुणेन = दयया यत् कूजनं = क्रन्दनम् तस्य व्याजेन = छलेन । अन्यायम् इव = अधर्मम् इव । पूत्कुर्वतीषु = धिक्कुर्वतीषु । वनराजिषु =

काननपंक्तिषु। इतस्ततः = यत्र तत्र। संचरच्चटुलतरतुरङ्गखुरशिखरशिखोत्खात-धरणिमण्डलात्—संचरन्तः = संचलन्तः चटुलतराः = अतिचञ्चलाः ये तुरङ्गाः = अश्वाः, तेषां खुरशिखरशिखानाम् = खुराग्रभागानाम् उत्खातम् = कर्तितम् यद् धरणि-मण्डलम् = भूमण्डलम्, तस्मात् विनाशवार्त्तान् = नाशकथाम्। गगनचरेभ्यः = खेचरेभ्यः। कथयितुम् इव = आख्यातुमिव। उत्पतिते = उड्डीयमाने। अम्बरतलम् = गगनतलम्। अकृतपरित्राणे = न कृतं परित्राणम् = रक्षणम् येषां तादृशे। मूर्च्छिते = मूर्च्छां गते सति। इव। पुनः पुनः = बारम्बारम्। भवनपारावतपतत्रिपत्रधूसरे—भवनपारावतानाम् = गृहकपोतानाम् पतत्रिणाम् = पक्षिणाम् पत्राणि इव = पक्षाणीव धूसरे धूलिपटले = रजः पटले। भुवि = भूतले पतति = स्रवति। सकम्पकपिकला-पोल्ललनलुलिततरुतरुणमञ्जरीपुञ्जनिकुञ्चात्—सकम्पानां = कम्पमानानाम् कपीनाम् = वानराणाम् कलापः = समूहस्तस्योल्ललनेन = उच्छलनेन लुलितम् = सुन्दरम् तरूणाम् = वृक्षाणाम् तरुणमञ्जरीणां = विकसितकुसुमानाम् पुञ्जम् = समूहम् तस्य निकुञ्चात् = घर्षणात्। उद्वेजिते = प्रकम्पमाने। मञ्जुगुञ्जति = सुन्दरं गुञ्जारवं कुर्वंति। चञ्चलचञ्चरीक वनान्तरम् = मध्येकाननम्। अपरम् = अन्यम्। उच्चलिते = प्रयाते। चञ्चलचञ्चरीक चक्रवाले—चञ्चलानाम् = चपलानाम् चञ्चरीकाणाम् = भ्रमराणाम् चक्रवाकम् = समूहम्, तस्मिन्। चङ्क्रमणक्रमेण = परिभ्रमणक्रमेण। सैन्यस्य = सेनादलस्य श्रमा-वसरे = विश्रामकाले सम्पन्ने = समागते। तस्य = उपरिनिर्दिष्टस्य सरस सरलशाल-द्रुमस्य—सरसः = मधुरः सरलः = ऋजुश्चासौ शालद्रुमः = शालवृक्षस्तस्य। अधस्तात् = अधस्तलम्। निषण्णे = अधिशयाने। श्रमभाजि = परिश्रमयुते। राजनि = नृपे।

हिन्दी—इसके बाद निरन्तर कौवों, कुत्तों को खाने के लिए आकुलित भयङ्कर कोल (शूकर) हाथी-मृग और सिंहों के छौनों की निगाहों के पीछे चारों ओर परिजन (नौकर-चाकर) भाग रहे थे। उत्पन्न हुए विविध मृगियों के वैधव्यरूपी व्याधिवाले व्याध (बहेलिये) से बचाने के लिए मानों बीच-बीच में मध्यस्थता करते हुए सूर्य भगवान् अपनी किरणों के रूप में हाथ फैलाये हुए थे। साथ-साथ रहने के कारण बढ़े हुए मृगों के विनाश शोक के बोझ से मानों वृक्ष लताएँ दोपहर की गर्मी के कारण गर्म मकरन्दविन्दुओं के रूप में पुष्परूपी लोचनों से आँसू बहा रही थीं। वनदेवियाँ वन-विनाश के कारण वृक्षखण्डों पर उड़ते हुए विविध पक्षियों के कलरव रूप में मानों उलाहना दे रही थीं। बिछुड़े हुए बच्चों के लिए करुणा से रोती हुई हरिणियों के बहाने से वनपंक्तियाँ मानों अन्याय को धिक्कार रही थीं। इधर-उधर घूमते हुए अति चञ्चल घोड़ों के खुरों के अग्रभाग से कटे भूमण्डल से आकाश में उड़ते हुए मानों वन-विनाश का समाचार कहने के लिए तथा रक्षा न पाने के कारण मूर्च्छित जैसे बारम्बार पृथ्वी पर घरेलू कबूतरों के पक्षों (पंखों) के समान धूसरित धूलि के पटल (तहें) गिर रहे थे। कांपते हुए बन्दरों के झुण्ड उछल-कूद से सुन्दर वृक्षों के विकसित पुष्पों के पुञ्ज को मसल (रगड़) रहे थे जिससे व्याकुल चञ्चल भ्रमर-समूह मञ्जुल गुञ्जार करता हुआ दूसरे वन को उड़कर जाने लगा था तथा सेना के क्रमशः चक्कर काटते-

काटते थक जाने के कारण विश्राम करने का समय हो चुका था (अतः) राजा उसी सरस तथा सरल शाल वृक्ष के नीचे थका हुआ बैठ गया था।

अकस्मात्कुतोऽपि

वल्लीवल्कपिनद्धधूसरशिराः स्कन्धे दधद्दण्डकं
ग्रीवालम्बितमृन्मणिः परिकुथत्कौपीनवासाः कृशः।
एकः कोऽपि पटच्चरं चरणयोर्बद्ध्वाऽध्वगः श्रान्तवान्-
आयातः क्रमुकत्वचा विरचितां भिक्षापुटीमुद्वहन् ॥ ५२ ॥

अन्वयः—वल्लीवल्कपिनद्धधूसरशिराः, स्कन्धे दण्डकं दधत्, ग्रीवालम्बितमृन्मणिः परिकुथत्कौपीनवासाः, कृशः, चरणयोः पटच्चरम् बध्वा श्रान्तवान् क्रमुकत्वचाविरचिताम् भिक्षापुटीम् उद्वहन् कः अपि एकः अध्वगः आयातः ॥ ५२ ॥

सुधा—वल्लीति। वल्लीवल्कपिनद्धधूसरशिराः—वल्याः = लतायाः वल्कम् = वल्कलम् तेन पिनद्धम् = बद्धम् धूसरम् शिरः = पलितमस्तकम् यस्य तथा। स्कन्धे = स्कन्धदेशे दण्डकम् = लगुडम् दधत् = बिभ्रत्। ग्रीवालम्बितमृण्मणिः—मृन्मणिः = मृदः = मृत्तिकायाः मणिः, ग्रीवायां = कण्ठे लम्बितः मृन्मणिर्यस्य सः। परिकुथत्कौपीन-वासाः—परिकुथत् = परिधारयत् कौपोनम् वस्त्रम् यः सः। कृशः = दुर्बलशरोरः। चरणयोः = पादयोः पटच्चरम् = जीर्णवस्त्रखण्डम्। बध्वा = संवध्य। श्रान्तवान् = क्लान्तः क्रमुकत्वचा = पूगद्रुमवल्केन विरचिताम् = निर्मिताम्। भिक्षापुटीम् = याच्चापुटिकां, भिक्षाझोलिकां वा। उद्वहन् = धारयन्। कः अपि = कश्चिदपि एकः अध्वगः = अध्वानं गच्छतीति = पान्थः। आयातः = आगतः। शार्दूलविक्री-डितं वृत्तम् ॥ ५२ ॥

हिन्दी—अकस्मात् कहीं से लतावल्क से पलित शिर को बांधे हुए, कंधे पर डण्डा रखे हुए, गले में मिट्टी का गुरिया लटकाये हुए, कौपोन (लंगोटी) पहने हुए, दुबला-पतला, पावों में फटा-पुराना वस्त्र बाँधे हुए, थका हुआ सुपाड़ी के पेड़ के वकली से बनी भिक्षा पोटली को लिए हुए कोई एक पथिक आया ॥ ५२ ॥

आगत्य च राजानमवलोक्य सविस्मयमेष चिन्तयांचकार—

'अब्जश्रीसुभगं युगं नयनयोर्मौलिर्महोष्णीषवा-
न्नूर्णारोमसखं मुखं च शशिनः पूर्णस्य धत्ते श्रियम्:
पद्मं पाणितले गले च सदृशं शङ्खस्य रेखात्रयं
तेजोऽप्यस्य यथा तथा सजलधेः कोऽप्येष भर्ता भुवः ॥ ५३ ॥

अन्वयः—अस्य नयनयोः युगम् अब्जश्रीसुभगम्, मोलिः महोष्णोषवान्, च ऊर्णा-रोमसखम् मुखम् पूर्णस्य शशिनः श्रियम् धत्ते। पाणितले पद्मम् च गले शङ्खस्य सदृशम् रेखात्रयम्, तेजः अपि यथा तथा। एषः क. अपि सजलधेः भुवः भर्त्ता (अस्ति) ॥ ५३ ॥

सुधा—अब्जश्रीरिति। अस्य = एतस्य। नयनयोः = चक्षुषोः युगम् = युगलम् अब्जश्रीसुभगम्—अब्जश्रिया = पङ्कजकान्त्या सुभगम् = सुन्दरम्। मौलिः शिरोभागः।

महोष्णोषवान्=बृहदुष्णीषयुक्तः। च=तथा। ऊर्णारोमसखम्–ऊर्णा भ्रूमध्ये शुभरोमावर्त्तः ('ऊर्णा मेषादिलोम्निस्यादन्तरावर्तकेभ्रुवः' इति विश्वः) सखा = मित्रम् यस्य तादृशम् मुखम्=आननम्। पूर्णस्य शशिनः=पूर्णचन्द्रस्य। श्रियम् = शोभाम्। धत्ते = दधाति। पाणितले=करतले। पद्मम्=कमलम् (कमलचिह्नम्) च=तथा। गले=कण्ठे। शङ्खस्य= कम्वोः सदृशम्=समम्। रेखात्रयम् त्रयाणां रेखाणां समाहारः इति रेखात्रयम् = रेखाणां त्रिसंख्यकत्वम् तेजः = ओजस्विता अपि यथा स्यात् तथा, तदनुकूलमेव। एषः = अयम् कः अपि=कश्चित्। सजलधेः = जलधिभिः सहिता सजलधिस्तस्याः भुवः = भूमेः भर्त्ता= स्वामी, अर्थात् चक्रवर्ती सम्राट् अस्ति। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ ५३॥

हिन्दी– तथा आकर, राजा को देखकर विस्मय सहित यह सोचने लगा—इसके दोनों नयन कमल कान्ति के सदृश सुन्दर हैं, शिर विशाल उष्णीष (पगड़ी या साफा) से युक्त है, दोनों भौंहों के मध्य ऊर्णा रेखा है, हाथ में पद्म चिह्न तथा गले में शंख सदृश तीन रेखाएँ हैं। इन सब के अनुकूल ही तेज है। यह कोई समुद्रों सहित पृथ्वी का भर्त्ता (चक्रवर्ती सम्राट) है॥ ५३॥

तदेवंविधाः खलु महनीया महानुभावा भवन्ति' इत्येवमवधार्य समुपसृत्य 'स्वस्ति स्वकान्तिनिर्जितमकरध्वजाय तुभ्यम्' इत्यवादीत्॥

सुधा – तदिति। एवंविधाः = ईदृशाः सुलक्षणाः। खलु = नूनम्। महनीयाः = पूजनीया. महानुभावाः=महाशयाः भवन्ति = जायन्ते। इति। एवम्=एतद्। अवधार्य= निश्चित्य। समुपसृत्य = सन्निकटमेत्य स्वस्ति = कल्याणमस्तु। स्वकान्तिनिर्जितमकर-ध्वजाय–स्वकान्त्या=आत्मप्रभया निर्जितः=पराजितः मकरध्वजः = कामदेवो येन तस्मै। तुभ्यम्=भवते। इति=इत्थम् अवादीत्=अकथयत्।

हिन्दी—सो इस प्रकार के वास्तव में पूजनीय महानुभाव होते हैं यह निश्चय कर, समीप जाकर 'अपनी कान्ति से कामदेव को पराजित करनेवाले तुम्हारा कल्याण हो' यह कहा।

राजापि सविस्मयमना मनागुन्नमितमस्तकः स्वागतप्रश्नेनाभिनन्द्य तीर्थयात्रिक, कुतः प्रष्टव्योऽसि। क्व च कियद्दूराद्यापि गन्तव्यम्। उपविश। विश्रम्य कथय काञ्चिदपूर्वां किंवदन्तीम्। अनेकदेशदृश्वानः किलाश्चर्यदर्शिनो भवन्तीति। अपूर्वं न चाकस्मिकं दर्शनमपूर्वः परिचयः स्वल्पा प्रीतिरित्येकमप्याशङ्कनीयम्। अपूर्व-दर्शनेऽपि न जात्या मणयः स्वच्छतामपह्नुवते। तदेहि। मुहूर्तमेकत्र गोष्ठीसुख-मनुभवावः' इत्येनमवादीत्॥

सुधा – राजेति। सविस्मयमना=साश्चर्यचेताः राजा अपि=नृपोऽपि। मनाक्= तोकम्। उन्नमितमस्तकः = उन्नमितं मस्तकं येन तादृशः = उन्नतशिरः। स्वागतप्रश्नेन = स्वागतपृच्छया। अभिनन्द्य = सत्कृत्य। तीर्थयात्रिक! = हे तीर्थयात्राकर! कुतः प्रष्टव्योसि = कस्मात् स्थानात् आगम्यते त्वया। च=तथा। क्व=कुत्र कियत् च = किय-द्दूरम् च गन्तव्यम्=गमनीयम्। उपविश = निषीद। विश्रम्य=विश्रामं कृत्वा। कथय= भण। काञ्चिद्=कामपि अपूर्वाम्=विलक्षणाम्। किंवदन्तीम्=वार्ताम्। अनेकदेशदृश्वानः=

बहुस्थानदर्शकाः। किल = नूनम्। आश्चर्यदर्शिनः = अद्भुतद्रष्टारः भवन्ति। इति आकस्मिकम्=अकस्माज्जातम् दर्शनम्। अपूर्वः = अद्भुतः परिचयः स्वल्पा = अतितुच्छा प्रीतिः = प्रेम। इति एकमपि = किमपि नाशङ्कनीयम् = आशङ्का नैव करणीया। अपूर्वदर्शनेऽपि = अद्भुतदर्शनेऽपि। जात्या = जन्मना मणयः = रत्नानि स्वच्छताम् = उज्ज्वलताम्। न अपह्नुवते = नाच्छादयन्ति। तद् एहि = तद् आगच्छ। मुहूर्त्तम् = क्षणम्। एकत्र = एकस्थाने। गोष्ठीसुखम् = गोष्ठयाः=सभायाः सुखम् = आनन्दम्। अनुभवावः = अनुभवं कुर्वः। इति एनम् = अमुम् पान्थम्। अवादीत्=अब्रवीत्।

हिन्दी -- अश्चर्यचकित राजा ने थोड़ा सा माथा ऊंचा कर स्वागत प्रश्न से अभिनन्दन कर 'हे तीर्थयात्री ! कहां से आ रहे हो ? कहां को और कितनी दूर अभी जाना है ? बैठो विश्राम करके कोई अपूर्व वार्ता सुनाओ। अनेकों स्थानों को देखनेवाले वास्तव में आश्चर्यदर्शी व्यक्ति होते हैं। तथा 'आकस्मिक दर्शन होना' या 'अपूर्व परिचय' अथवा 'अल्पप्रीति' इनमें से कोई एक भी शंका नहीं करनी चाहिए। पहले से न देखे होने पर भी जन्म से मणि स्वच्छता (उज्ज्वलता) को नहीं छिपाती है। अतः आओ। क्षणभर एकत्र हम दोनों गोष्ठी सुख का अनुभव करें।' यह उस पथिक से कहा।

असावपि 'अपूर्वकौतुककथाकर्णनरसिकः श्रूयताम् यद्येवम्' इत्यभिधाय सुखोपविष्टस्यास्य समीपे स्वयमुपविश्य कथयितुमारभत्॥

सुधा—असाविति। असौ अपि = एषोऽपि। अपूर्वकौतुककथाकर्णनरसिक ! अपूर्वाः कौतुककथाः = अद्भुतवार्त्ताः आकर्णने = श्रवणे रसिकः = आनन्दितः तत्संबुद्धौ यदि एवम् तर्हि श्रूयताम् = आकर्ण्यताम्। इति अभिधाय कथयित्वा सुखोपविष्टस्य सुखेन = आनन्देन उपविष्टस्य = आसीनस्य। अस्य=एतस्य राज्ञः। समीपे=पार्श्वे। स्वयम्= आत्मना। उपविश्य=आसनमास्थाय कथयितुम्=गदितुम्। आरभत्=आरम्भयामास।

हिन्दी—उसने भी 'हे अलौकिक कथाओं को सुनने का आनन्द लेनेवाले (राजन् !) यदि ऐसा है तो सुनिये। यह कहकर सुख से बैठे हुए इन राजा के पास स्वयं बैठकर कहना आरम्भ किया।

'अस्ति स्वर्गसमः समस्तजगतां सेव्यत्वसंख्याग्रणी-
र्देशो दक्षिणदिङ्मुखस्य तिलकः स्त्रीपुंसरत्नाकरः।
यस्मिंस्त्यागमहोत्सवव्यसनिभिर्धन्यैरशून्या जनै-
रुद्देशाः स्पृहणीयभावभरिताः कं नोत्सुकं कुर्वते॥ ५४॥

अन्वयः—समस्तजगताम् सेव्यत्वसंख्याग्रणीः दक्षिणदिङ्मुखस्य तिलकः स्त्रीपुंसरत्नाकरः स्वर्गसमः देशः अस्ति यस्मिन् त्यागमहोत्सवव्यसनिभिः धन्यैः जनैः अशून्याः स्पृहणीयभावभरिताः उद्देशाः कम् उत्सुकम् न कुर्वते॥ ५४॥

सुधा—अस्तीति। समस्तजगताम् = निखिललोकानाम्। सेव्यत्वसंख्याग्रणीः सेव्यत्वसंख्यानाम् = सेवनीयस्थानानाम्। अग्रणीः = अग्रगण्यः। दक्षिणदिङ्मुखस्य-तिलकः दक्षिणदिशः=अवाचीदिशारूपनायिकायाः मुखस्य = आननस्य तिलकः। स्त्रीपुंसरत्नाकरः—स्त्री च पुमांश्च स्त्री पुंसौ, तयोः रत्नयोरेवाकरः=सागरः। स्वर्गसमः

स्वर्गेण = नाकेन समः = तुल्यः देशः अस्ति । यस्मिन् = यत्र देशे । त्यागमहोत्सवव्यसनिभिः—त्याग एव महोत्सवः तस्य व्यसनमस्तीति तैः = त्यागरूपोत्सवाभ्यासिभिः । धन्यैः=सुकृतिभिः जनैः=लोकैः । अशूनाः=युक्ताः । स्पृहणीयभावभरिताः=स्पृहणीयस्य= आकांक्षितस्य भावः, तेन भरिताः=पूरिताः उद्देशाः=उन्नतप्रदेशाः । कम् = कम् जनम् । उत्सुकम् = उत्साहसम्पन्नम् न कुर्वते = न विदधन्ति । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ५४ ॥

हिन्दी— सम्पूर्ण संसार के सेवनीय स्थानों में अग्रणी दक्षिण दिशारूपी नायिका का मुखतिलक, उत्तम स्त्रियों तथा पुरुषों का सागर बना हुआ स्वर्ग सदृश (विदर्भ) देश है जिसमें त्याग रूपी महोत्सव के अभ्यासी धन्य जनों से परिपूर्ण, आकांक्षित भाव-भरे हुए उन्नत स्थल किसे नहीं उत्साहित करते हैं ।

कथं चासौ न प्रशस्यते—

यत्र त्रिपुरपुरन्ध्रिरोध्रतिलकहारिणा हरिविरञ्चिचूडामणिमरीचिचक्रचकोर-चुम्बितचरणनखचन्द्ररुचिनिचयेन भगवता सेव्यते सेव्यतयाऽपहसितकैलासश्रीः श्रीशैलः शूलपाणिना ॥

सुधा - यत्र=यस्मिन् देशे । सेव्यतया = रमणीयतया । अपहसितकैलासश्रीः अपहसिता=तिरस्कृता कैलासश्रीः=कैलासपर्वतशोभा येन तादृशः श्रीशैलः=श्रीशैलनामकः पर्वतः त्रिपुरपुरन्ध्रिरोध्रतिलकहारिणा —त्रिपुरपुरन्ध्रिरोध्रस्य=त्रिपुरासुरविधवायाः सिन्दूरस्य तिलकं हरतीति तेन = तिलकनाशकेन । हरिविरञ्चिचूडामणिमरीचिचक्रचकोरचुम्बितचरणनखचन्द्ररुचिनिचयेन—हरेः = विष्णोः विरञ्चेश्च=विधातुश्च चूडामणेः= मुकुटरत्नस्य यत् मरीचिचक्रम्=किरणजालम्, तदेव चकोरः=चकोरपक्षी तेन चुम्बितः चरणनखरूपः चन्द्रः = पादनखसुधाकरः तस्य रुचिनिचयः = कान्तिसमूह इव रुचिः = कान्तिर्यस्य तादृशेन भगवता=परमात्मना शूलपाणिना—शूलम्=त्रिशूलम् पाणौ = करे यस्य तेन शङ्करेण सेव्यते=निवासस्थानं क्रियते ।

वह प्रशंसनीय क्यों न हो—

हिन्दी— जहाँ रमणीयता से कैलास की सुषमा को तिरस्कृत करनेवाला श्रीशैल नामक पर्वत है जिसको त्रिपुरासुर की विधवा के सिन्दूरतिलक को मिटानेवाले विष्णु तथा विधाता के मुकुटरत्नों के किरणसमूहरूपी चकोर के द्वारा चुम्बित चरणनखरूपी चन्द्रमा के कान्तिसमूह के समान कान्तिवाले भगवान् शूलपाणि (शिव) के द्वारा निवासस्थान बनाया गया है ।

यत्र च विकचविविधवनविहारसुरभिसमीरणान्दोलितकदलीदलव्यजनवीज्यमाननिधुवनविनोदखेदविद्रावणनिद्रालुद्रविडमिथुनसनाथपरिसराः सरसघननिचुलतलचलच्चकोरचक्रवाककुलकपिञ्जलमयूरहारिण्यो नाकलोककमनीयतां कलयन्ति कलमकेदारसाराः सरससहकारकारस्कराः कावेरीतीरभूमयः ॥

सुधा—यत्र चेति । च = तथा । यत्र = यस्मिन् देशे । विकचविविधवनविहार-सुरभिसमीरणान्दोलितकदलीदलव्यजनवीज्यमाननिधुवनविनोदखेदविद्रावणनिद्रालु द्रविड-

मिथुनसनाथपरिसराः—विकचेषु = विकसितेषु विविधवनविहारेषु = अनेककाननविहारेषु सुरभिताः = सुगन्धिता ये समीरणाः = वाताः तैरान्दोलितानि = कम्पमानानि कदलीदलव्यजनानि = रम्भापत्रव्यञ्जनानि तैः वीज्यमानाः, निधुवनस्य = मैथुनस्य विनोदः = मनोरञ्जनम् तस्य खेदः = क्लेशः, तद्विद्रावणाय = समाप्त्यै निद्रालवः = निद्रायमाणा ये मिथुनाः = युगलाः, तैः सनाथाः संयुक्ताः ये परिसरास्ते। सरसघननिचुलतलचलच्चकोरचक्रवाककुलकपिञ्जलमयूरहारिण्यः—सरसाः = रसयुक्ताः घनाः निचुलाः = वेत्रलताः, तासां तले चलन्तः = भ्रमन्तः चकोरचक्रवाककुलकपिञ्जलमयूराः = चकोरचक्रवाकदलचातकशिखिनः तैः हारिण्यः = मनोरमाः। कलमकेदारसाराः—कलमकेदाराणि=शालिक्षेत्राणि सारम् = मुख्यम् यासां ताः। सरससहकारकारस्कराः—सरसाः = मधुराः सहकाराः = आम्रपादपाः कारस्कराः = कारस्करपादपाश्च यत्र ताः। कावेरीतीरभूमयः—कावेरीतीरस्य = कावेरीनदीतटस्य भूमयः = प्रदेशाः। नाकलोककमनीयताम्—नाकलोकस्य = स्वर्गस्य कमनीयताम् सुन्दरताम्। कलयन्ति = शोभयन्ति।

हिन्दी—जहाँ खिले हुए अनेक प्रकार के वनविहारसे सुगन्धित पवन से हिलते हुए केले के पत्ते पंखों के रूप में डुलाते हुए मैथुन के विनोद की व्याकुलता (थकावट) को समाप्त करने के लिए नींद में पड़े द्रविड दम्पतियों से शोभित परिसर (मैदान) (और) सरस घने वेंतों के नीचे घूमते हुए चकोर-चकई-चकवों के झुण्ड, चातक तथा मयूर के कारण मनोरम, कलम धान के खेतों की प्रमुखतावाली, मधुर आम एवं कारस्कर वृक्षोंवाली कावेरी नदी के तटवाली भूमि स्वर्गलोककी कमनीयता को शोभित कर रही थी।

किं बहुना—

> अस्तु स्वस्ति समस्तरत्ननिधये श्रीदक्षिणस्यै दिशे
> स्वर्गस्पर्धिसमृद्धये हृदयहृद्गोदावरीरोधसे।
> यत्र त्रस्तकुरङ्गकार्भकदृशः संभोगलीलाभुवः
> सौख्यस्यायतनं भवन्ति रसिकाः कंदर्पशस्त्रं स्त्रियः॥ ५५॥

अन्वयः—अस्तु। समस्तरत्ननिधये श्रीदक्षिणस्यै दिशे स्वर्गस्पर्धिसमृद्धये हृदयहृद्गोदावरीरोधसे स्वस्ति। यत्र त्रस्तकुरङ्गकार्भकदृशः, सम्भोगलीलाभुवः रसिकाः स्त्रियः सौख्यस्य आयतनम् कन्दर्पशस्त्रम् भवन्ति।

सुधा—किं बहुना=किमधिकम्। अस्त्विति। अस्तु = स्यात्। समस्तरत्ननिधये—समस्तानां = निखिलानां रत्नानाम् = मणीनाम् निधिः = आकरा, तस्यै। श्रीदक्षिणस्यै दिशे = अवाच्यै दिशायै। स्वर्गस्पर्द्धिसमृद्धये—स्वर्गाय = नाकाय स्पर्द्धते = स्पर्द्धां करोति समृद्धिः = सम्पत्तिर्यस्यास्तस्यै। हृदयहृद्गोदावरीरोधसे—गोदावर्याः=गोदावरीनद्याः रोधः = तटम्, हृदयहृत् = मनोहरम् यद् गोदावरीरोधः, तस्यै! स्वस्ति = कल्याणं भवतु। यत्र = यस्मिन् स्थाने = कुरङ्गकार्भकदृशः—त्रस्तानां = भीतानाम् कुरङ्गकार्भकानाम् = मृगशिशूनाम् दृशः = नेत्राणि इव दृशः यासां ताः। सम्भोगलीला-

भुवः = सम्भोगलीलायाः = सुरतिक्रीडायाः भुवः = स्थानभूताः । रसिकाः=रसयुताः । स्त्रियः = ललनाः : सौख्यस्य = आनन्दस्य आयतनम् = भवनम् । कन्दर्पशस्त्रम् = कन्दर्पस्य=मदनस्य शस्त्रम्=आयुधम् । भवन्ति=सन्ति । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ।।५५।।

हिन्दी —अधिक क्या कहें—अस्तु । समस्त रत्नों की खान दक्षिण दिशा तथा स्वर्ग की सम्पत्ति से स्पर्द्धा (होड़) करने वाले गोदावरी नदी के तट का मङ्गल (शुभ) हो जहां भयभीत कुरङ्गशावकों के समान सुन्दर नेत्रोंवाली, सुरति क्रीडा का आधार रसिक स्त्रियां सुखका घर तथा कामदेव का शस्त्र होती हैं ।। ५५ ।।

तत्र प्रणतसुरासुरशिरःशोणमरीचिचयवहलकुङ्कुमानुलेपपल्लवितपादारविन्दद्वयस्य क्रौञ्चभिदो भगवतः सुगन्धिगन्धमादनाधिवासिनः स्कन्ददेवस्य दर्शनार्थमितो गतवानस्मि ॥

सुधा—तत्रेति । (अहम्) तत्र = तत्स्थाने । प्रणतसुरासुरशिरःशोणमरीचिचयवहलकुङ्कुमानुलेपपल्लवितपादारविन्दद्वयस्य—प्रणतानाम्=अवनतानाम् सुरासुराणाम् = देवराक्षसानाम् शिरसाम् = मस्तकानाम् शोणाः = रक्तवर्णाः मरीचयः = किरणाः, तेषां चयवहलः = समूहाधिक्यम् तदेव कुङ्कुमानुलेपः = केसरसुगन्धलेपः, तेन पल्लवितम् पादारविन्दद्वयम् चरणकमलयुगलम् यस्य तस्य । क्रौञ्चभिदः—क्रौञ्चम् = क्रौञ्चनामानं पर्वतम् भेत्तीति तस्य । सुगन्धिगन्धमादनाधिवासिनः = सुगन्धिनि=सुरभियुक्ते गन्धमादने = गन्धमादनपर्वते अधिवसति = निवसति इति तस्य । भगवतः = देवस्य ! स्कन्ददेवस्य = स्वामिकार्तिकेयस्य । दर्शनार्थम् = अवलोकनाय । गतवान् अस्मि = अगच्छम् ।

हिन्दी---वहाँ अवनत देवताओं तथा राक्षसों के शिरों की लाल लाल किरणों के समूह के रूप में कुङ्कुम के अनुलेप से पल्लवित चरणकमलवाले, क्रौञ्च पर्वत को भेदनेवाले, सुगन्धित गन्धमादन पर्वत पर निवास करनेवाले भगवान् स्कन्ददेव (स्वामिकार्तिकेय) के दर्शन करने के लिए मैं गया था ।

तस्माच्च निवर्तमानेन क्वचिदेकस्मिन्नध्वरोधिनी न्यग्रोधपादपतले दीर्घाध्वश्रान्तेन विश्राम्यता मया श्रूयतां यदाश्चर्यमालोकितम् ।

सुधा—तस्मादिति । च=तथा । तस्मात् = तत्स्थानात् । निवर्तमानेन = परावर्तमानेन । क्वचिद्=कुत्रचित् । एकस्मिन् अध्वरोधिनि = मार्गावरोधिनि न्यग्रोधपादपतले= वटवृक्षतले । दीर्घाध्वश्रान्तेन = महन्मार्गक्लान्तेन विश्राम्यता = विश्रामं कुर्वता । मया यद् आश्चर्यम्=यद् वैचित्र्यम् आलोकितम्=दृष्टम् । तत् श्रूयताम्=आकर्ण्यताम् ।

हिन्दी– तथा वहाँ से लौटते हुये कहीं एक मार्ग में बाधा डालने वाले बरगद के पेड़ के नीचे लम्बेमार्ग की थकावट से विश्राम करते हुए मैंने जो आश्चर्य देखा वह सुनिये—

अतिललितपदविन्याससारसाधुसिन्धुरवधूस्कन्धमभिरूढा, प्रौढसखीसहायप्राया, प्रान्तपतच्चामरमरुन्नर्तितालकवल्लरी, कर्णकुवलयालंकारधारिणी, रुचिररुचिमच्चरणनूपुरा, पुरः सरसरागगान्धर्विककण्ठकन्दरविनिःसरत्सरसगीतप्रेङ्खोलनप्रयोगेषु दत्तावधाना, नेत्रे मनाङ्मीलयन्ती, ध्रियमाणमायूरातपत्रमण्डला, मण्डलितमदनचापचक्रवक्रभ्रूः भूपालपुत्रिका कापि क्वापि कुतोऽप्युच्चलिता तदेव न्यग्रोधपादपच्छायामण्डपमशिश्रियत् ॥

सुधा—अतिललितेति । तदेव=उपर्युक्तम् एव । न्यग्रोधपादपच्छायामण्डपम्—न्यग्रोधपादपस्य=वटवृक्षस्य छायामण्डपम्=छायामडण्लम् तत् । अतिललितपदविन्याससारसाधुसिन्धुरवधूस्कन्धम्—अतिललितेन = अतिसुन्दरेण पदविन्याससारेण=चरणन्यासमहत्वेन साध्वाः = उत्तमायाः सिन्धुरवध्याः = करिण्याः स्कन्धम् = स्कन्धदेशम् । अभिरूढा = तिरस्कारिणी । प्रौढसखीसहायप्राया—प्रायः = प्रायशः प्रौढाः = वयस्काः सख्यः= सखीजनाः एव सहायाः = साहायकारिण्यः यस्याः सा । प्रान्तपतच्चामरमरुन्नर्तितालकवल्लरी—प्रान्तयोः=पार्श्वयोः पतद्भिः = चलद्भिः चामरमरुद्भिः = चामरपवनैः नर्तिताः= स्फुरिताः अलका एव वल्लर्यः यस्याः सा । कर्णकुवलयालङ्कारधारिणी—कुवलयमेवालङ्कारम् कुवलयालङ्कारम्, कर्णयोः कुवलयालङ्कारं धारयतीति = श्रोत्रकमलाभूषणधारिणी । रुचिररुचिमच्चरणनूपुरा—रुचिमन्तौ = कान्तिमन्तौ चरणौ = पादौ, रुचिमच्चरणौ रुचिराणि=सुन्दराणि रुचिमच्चरणयोः नूपुराणि यस्याः सा । पुरः = सम्मुखम् । सरसरागगान्धर्विककण्ठकन्दरविनिःसरत्सरसगीतप्रेङ्खोलनप्रयोगेषु—सरसैः=मधुरैः रागैः गीतैः गान्धर्विकेण—गन्धर्वसम्बन्धिना कण्ठकन्दरेण=कण्ठरूपकुहरेण विनिःसरन्तः=निर्गच्छन्तः सरसाः=मधुराः ये गीतप्रेङ्खोलनप्रयोगाः सङ्गीतलहरीप्रयोगास्तेषु । दत्तावधाना—दत्तम् = कृतम् अवधानम् = ध्यानम् यया सा । नेत्रे = नयने । मनाक् = किञ्चित् मीलयन्ती = मुकुलयन्ती ध्रियमाणमायूरातपमण्डला—मयूर इव मायूरम्, ध्रियमाणम्=विध्रियमाणं मायूरम् आतपमण्डलम् यया सा । मण्डलितमदनचापचक्रवक्रभ्रूः—मण्डलितम्=मण्डलाकारकृतम् यत् मदनस्य=कामदेवस्य चापचक्रम् = धनुर्वृत्तम् तद्वद् वक्रे = वङ्किमे भ्रुवौ यस्याः सा । क्वापि = कुत्रापि । कुतोऽपि = कस्मादपि स्थानात् । उच्चलिता=प्रयाता । कापि=काचित् । भूपालपुत्रिका=राजपुत्री । अशिश्रियत् = आश्रिता बभूव ।

हिन्दी—उपर्युक्त वटवृक्ष के छायामण्डप के नीचे अतिललित पदचापों से सुन्दरी करिणी की गति को मात करनेवाली, सयानी सखियों के साथ में लिये हुए दोनों ओर से चामरों द्वारा की गयी वायु से उड़ती हुई लटरूपी लताओंवाली कानों में कमल पुष्प के आभूषण पहने हुए रुचिमान् चरणों में रुचिर नूपुर पहने हुए, सामने मधुर राग से गन्धर्व सम्बन्धी कण्ठरूपी कन्दरा से निकलते हुए सरस गीतों की लहरों के प्रयोगों में मन लगाये हुए, दोनों नेत्रों को कुछ कुछ बन्द करती हुई मयूरछत्र को धारण किये हुए, टेढ़े मदन चाप के समान तिरछी भौंहों वाली कहीं को जाने के लिए किसी स्थान से आयी हुई कोई राजकन्या ने आश्रय लिया ।

तां चालोक्य चिन्तितवानस्मि विस्मितमनाः—

किं लक्ष्मीः स्वयमागता मुररिपोर्देवस्य वक्षःस्थलात्
कोपात्पत्युरुतावतारमकरोद् देवी भवानी भुवि।
श्यामाम्भोजसदृक्षपक्ष्मलचलन्नेत्रामिमां पश्यतो
धातस्तात करोषि किं न वदने चक्षुः सहस्रं मम ॥ ५६ ॥

अन्वयः—किम् देवस्य मुररिपोः वक्षःस्थलात् स्वयम् लक्ष्मीः आगता, उत देवी भवानी पत्युः कोपात् भुवि अवतारम् अकरोत्। हे तात धातः! श्यामाम्भोजसदृक्ष पक्ष्मलचलन्नेत्राम् इमाम् पश्यतः मम वदने चक्षुः सहस्रम् किम् न करोषि ॥ ५६ ॥

सुधा—च = तथा। ताम् = राजकन्यकाम्। आलोक्य = दृष्ट्वा। विस्मयमनाः= आश्चर्यचेताः (अहम्) चिन्तितवान् अस्मि=चिन्तयामास—किमिति। देवस्य मुररिपोः = मुरारेः भगवतः विष्णोः। वक्षःस्थलात् = हृदयात्। स्वयम् = आत्मना। लक्ष्मीः = रमा। आगता = आयाता। उत = अथवा देवी भवानी = पार्वती देवी। पत्युः—भर्तुः शिवस्य। कोपात् = क्रोधात्। भुवि = पृथिव्याम्। अवतारम् अकरोत् = अवातरत् हे तातधातः हे ब्रह्मन्! श्यामाम्भोजसदृक्षपक्ष्मलचलन्नेत्राम्—श्यामम् अम्भोजम् = नीलाम्बुजम तत्सदृक्षे—समे पक्ष्मलचलती = निमिषचलती नेत्रे = नयने यस्यास्ताम् = पक्ष्मचञ्चलनयनाम्। इमाम् = एताम्। पश्यतः = अवलोकयतः मम=मे वदने = शरीरे चक्षुः सहस्रम = नयनसहस्रम्। किम् न करोषि=किन्न सम्पादयसि। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्। ५६।

हिन्दी—तथा उसे देखकर विस्मित मन में सोचने लगा—क्या मुरदैत्य के शत्रु भगवान् विष्णु के वक्षःस्थल से स्वयं लक्ष्मीजी आ गयी हैं अथवा पार्वती देवी पति शिवजी के क्रोध से अवतार ले आयी हैं। हे तात ब्रह्माजी! नीलकमल सदृश चञ्चल नेत्रोंवाली इस (राजपुत्री) को देखनेवाले मेरे शरीर में हजार आँखें क्यों नहीं कर देते हो (जिससे कि मैं जी भरकर इसे देख लूँ) ॥ ५६ ॥

अपि च—

इन्दोः सौन्दर्यमास्यं कलयति कमलस्पर्धिनी नेत्रपत्रे
कालिन्द्याः कुन्तलाली तुलयति विभवं भव्यभङ्गैस्तरङ्गैः।
यस्याः किं श्लाघ्यतेऽन्यत्सुभगगुणनिधेः काप्यपूर्वैव यस्याः
पुष्पेषोर्वैजयन्ती जयति युवजनोन्मादिनी यौवनश्रीः ॥ ५७ ॥

अन्वयः—आस्यम इन्दोः सौन्दर्यम् कलयति, नेत्रपत्रे कमलस्पर्धिनी कुन्तलाली भव्यभङ्गैः तरङ्गैः कालिन्द्याः विभवम् तुलयति। अन्यत्सुभगगुणनिधेः यस्याः कापि अपूर्वा यौवनश्रीः किं श्लाघ्यते यस्याः युवजनोन्मादिनी यौवनश्रीः पुष्पेषोः वैजयन्ती जयति ॥ ५६ ॥

सुधा—इन्दोरिति। आस्यम् = मुखम्। इन्दोः = विधोः। सौन्दर्यम्=कमनीयताम् कलयति = तुलयति। नेत्रपत्रे = नयनदले। कमलस्पर्द्धिनी = कमलम् स्पर्धां कुरुतः।

कुन्तलाली=केशपाशम् । मध्यमङ्गैः = मध्यैः लोलैः तरङ्गैः = वीचिभिः । कालिन्द्याः = यमुनायाः । विभवम्=ऐश्वर्यम् । तुलयति=तुलनां करोति । अन्यत्सुभगगुणनिधेः–अन्येषां सुभगानाम् = उत्तमानाम् गुणानाम् = वैशिष्ट्यानाम् निधिः = आकरा, तस्याः । यस्याः कापि = काचित् । अपूर्वा = अद्वितीया । यौवनश्रीः = तारुण्यशोभा किं श्लाघ्यते=किं प्रशस्यते | यस्याः । युवजनोन्मादिनी = तरुणजनमत्तकारिणी । यौवनश्रीः = तारुण्य = सौन्दर्यम् पुष्पेषोः = कामदेवस्य । वैजयन्ती = विजयपताका । जयति = विजयते । स्रग्धरा वृत्तम् ॥ ५७ ॥

हिन्दी—और भी–(इसका) मुख चन्द्रमा के सौदन्र्य की बराबरी कर रहा था। नेत्र कमल से स्पर्धा करते और केशोंका समूह सुन्दर लहरों से कालिन्दी यमुना के विभव की तुलना कर रहा था। अन्य शुभ गुणों की खान जिसकी किसी अपूर्व यौवनश्री की क्या प्रशंसा की जाय, जिसकी युवकों को पागल बना देनेवाली यौवनश्री कामदेव की वैजयन्ती थी ॥ ५७ ॥

अपि च—

आकारः स मनोहरः स महिमा तद्वैभवं तद्वयः
सा कान्तिः स च विश्वविस्मयकरः सौभाग्यभाग्योदयः ।
एकैकस्य विशेषवर्णनविधौ तस्याः स एव क्षमो
यस्यास्मिन्नुरगप्रभोरिव भवेज्जिह्वासहस्रद्वयम् ॥ ५८ ॥

अन्वयः—सः मनोहरः आकारः, सः महिमा, तद् वैभवम्, तद् वयः, सा कान्तिः च सः विश्वविस्मयकरः सौभाग्यभाग्योदयः । एकैकस्य तस्याः विशेषवर्णनविधौ सः एव क्षमः यस्य अस्मिन् उरगप्रभोः इव जिह्वासहस्रद्वयम् भवेत् ॥ ५८ ॥

सुधा—आकार इति । सः = तादृशः । मनोहरः=मनोरमः । आकारः=आकृतिः । सः महिमा = तादृशी = महत्ता । तद् वैभवम् = तादृगैश्वर्यम् । तद्वयः—तादृग् आयुः । सा कान्तिः = तादृशी प्रभा । च=तथा = सः विश्वविस्मयकरः = निखिलाश्चर्यकरः । सौभाग्यभाग्योदयः = भव्यभाग्यविकासः । एकैकस्य = प्रत्येकस्य । तस्याः = उपर्युक्तायाः विशेषवर्णनविधौ = विशेषाणाम् = गुणानाम् वर्णनविधौ = आख्यानविधौ । सः एव क्षमः = स एव समर्थः यस्य = यस्य जनस्य । अस्मिन् = आख्यानविधौ । उरग प्रभोः = उरगाणाम् = सर्पाणाम् प्रभुः = स्वामी, तस्य = शेषनागस्य इव । जिह्वासहस्रद्वयम् रसनासहस्रयुगलम् । भवेत् = स्यात् । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ५ ॥

हिन्दी—और भी—वह मनोहर आकार, वह महिमा, वह ऐश्वर्य, वह आयु, वह कान्ति तथा वह सबको अचम्भित कर देनेवाला दिव्य भाग्योदय, इनमे से प्रत्येक का उस (राजकन्या) के वर्णन करने में वही मनुष्य समर्थ है जिसकी इसमें शेषनाग के समान दो हजार जीभें हों ।

सापि यथा त्वमिदानीं मामिह पृच्छसि तथार्धपथमिलितं कंचिदुदीचीनमध्वगं दक्षिणस्यां दिशि प्रस्थितमादरेण पृच्छन्ती मुहूर्तमिव तत्रैव विश्रमितुमारभत् ॥

सुधा—यथा = येन प्रकारेण । इदानीम् = साम्प्रतम् । त्वम् । इह = अत्र । माम् पृच्छसि । तथा सापि = सा राजकन्यापि । अर्धपथमिलितम्—अर्धमार्गंप्राप्तम् कंचित् = कमपि । उदीचीनम् = उत्तरदिगागतम् । अध्वगम् = पथिकम् दक्षिणस्यां दिशि = अवाच्यां दिशायाम् । प्रस्थितम् = प्रयान्तम् । आदरेण=सम्मानेन पृच्छन्ती = प्रश्नं कुर्वंती । मुहूर्त्तम् इव = क्षणम् इव । तत्रैव = तस्मिन्नेव स्थाने । विश्रमितुम विश्रामं कर्त्तुम् । आरमत् = प्रारम्भयामास ।

हिन्दी— जिस प्रकार तुम इस समय मुझसे पूछ रहे हो उसी प्रकार उसने भी आधे मार्ग में मिले दक्षिण दिशा को जानेवाले उत्तर दिशा के पथिक से आदर के साथ पूछते हुए क्षणभर वहीं विश्राम करना प्रारम्भ किया ।

श्रुतश्चायं मयापि तेन तस्याः पुरः कस्यचिदुदीच्यनरपतेः श्लाघ्यमानकथावशेषालापः ।।

सुधा—च=तथा मयाऽपि । तेन = पथिकेन तस्याः पुरः = राजकन्यासमक्षम् कस्यचित् उदीच्यनरपतेः=उत्तरदिशोभूपतेः । अयम्=एषः । श्लाघ्यमानकथावशेषः—श्लाघ्यमानः=प्रशस्यमानः । कथावशेषः=कथांशः । श्रुतः आकर्णितः ।

हिन्दी—और मैंने भी उस (पथिक) से कहे हुए उत्तर दिशा के राजा का प्रशस्यमान यह कथांश सुना ।

तस्मिन्स्मितमुखे यूनि यूपदीर्घभुजद्वये ।
ते धन्या न्यपतन्येषां कंदर्पसदृशे दृशः ।। ५९ ।।

अन्वयः—ते धन्याः येषाम् दृशः तस्मिन् स्मितमुखे यूपदीर्घभुजद्वये कन्दर्पसदृशे यूनि न्यपतन् ।। ५९ ।।

सुधा—तस्मिन्निति । ते = ते जनाः । धन्याः=प्रशंसार्हाः । येषाम् दृशः = दृष्टयः । तस्मिन् स्मितमुखे—स्मितम् मुखम् यस्य तस्मिन्=स्मिताननें । यूपदीर्घभुजद्वये—यूपदीर्घयोः =यज्ञस्तम्भसदृशयोः विशालयोः भुजयो=बाह्वोः द्वयम् यस्य तस्मिन् । कन्दर्पसदृशे—मदन समे यूनि = तरुणपुरुषे । न्यपतन् = अपतन् । अनुष्टुब्वृत्तम् ।। ५९ ।।

हिन्दी—वे लोग धन्य हैं जिनकी निगाहें (दृष्टियां) मृदु मुस्कराते हुए यज्ञस्तम्भ के समान विशाल दो भुजाओं वाले कामदेव के समान सुन्दर युवक पर पड़ी हो ।।५९।।

किं बहुना—

सा त्वं मन्मथमञ्जरी स च युवा भृङ्गस्तवैवोचितः
श्लाघ्यं तद्भवतोः किमन्यदपरं किं त्वेतदाशास्महे ।
भाग्यैर्योग्यसमागमेन युवयोर्मानुष्यमाणिक्ययोः
श्रेयानस्तु विधेर्विचित्ररचनासंकल्पशिल्पश्रमः ।। ६० ।।

अन्वयः—सा त्वम् मन्मथमञ्जरी, स च युवा भृङ्गः तव एव उचितः । भवतोः अन्यत् किम् अपरम् श्लाघ्यम्, तत् तु एतत् आशास्महे भाग्यैः मानुष्यमाणिक्ययोः युवयोः योग्यसमागमेन विधेः विचित्ररचनासंकल्पशिल्पश्रमः तु श्रेयान् ।। ६० ।।

सुधा—सा त्वमिति सा=तादृशा त्वम्। मन्मथमञ्जरी = मन्मथस्य = कामदेवस्य मञ्जरी (असि) च=तथा स युवाभृङ्गः=युवा एव भृङ्गः=तरुणमधुपः तव एव उचितः =त्वदेवयोग्यः। भवतोः=युवयोः अन्यत् किम् अपरम् श्लाघ्यम् अन्य प्रशंसनीयम् किम्। तत्तु = तदेव तु आशास्महे = कामयामहे। भाग्यैः दैवात् मानुष्यमाणिक्ययोः = मानवरत्नयोः युवयोः = भवतोः। योग्यसमागमेन—उपयुक्तमिलनेन। विधेः=ब्रह्मणः। विचित्ररचनासंकल्पशिल्पश्रमः = विचित्रः = अपूर्वः रचनायाः सृष्टेः संकल्पः = विचारः एव-शिल्पम्=कौशलम् तस्मिन् श्रमः = आयासः तु श्रेयान्=श्रेष्ठः सफलः स्यात्। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ६० ॥

हिन्दी—अधिक क्या—तुम कामदेव की मञ्जरी हो और वह युवकरूपी भौंरा तुम्हारे ही योग्य है। तुम दोनों के विषय में और क्या प्रशंसनीय है? हम यही कामना करते हैं कि भाग्य से तुम दोनों मनुष्यरत्नों के उपयुक्त मिलन से विधाता का अद्भुत रचनासंकल्परूपी शिल्प में किया गया श्रम सफल हो जाये ॥ ६० ॥

तन्न जाने सः कः सुकृती तेन तस्याः श्रवणादेवोल्लसद्बहुलपुलकाङ्कुरोत्तम्भितांशुकायाः पुरो विस्तरेणैवं वर्णितः ॥

सुधा—तत् = अतः न जाने न वेद्मि कः सुकृती = कः पुण्यात्मा जनः। तेन = पथिकेन। तस्याः = राजपुत्र्याः श्रवणात् एव = आकर्णनात् एव। उल्लसद् बहुलपुलकाङ्कुरोत्तम्भितांशुकायाः उल्लसता = विहसता बहुलपुलकेन = अतिगद्गदेनाङ्कुराणि = रोमाणि तथा उत्तम्भितम् = उद्गतम् अंशुकम् = वस्त्रम् च यस्यास्तस्याः। पुरः = सम्मुखम् विस्तरेण = विस्तारक्रमेण। एवम् = इत्थम् वर्णितः = कथितः।

हिन्दी—अतः नहीं मालूम है कि कौन ऐसा पुण्यात्मा व्यक्ति है जिसके सम्बन्ध में सुनने से ही उस राजकुमारी का अति उल्लास के कारण रोमाञ्च हो गया तथा उसका वस्त्र ऊपर उठ गया। उसने उसके सामने इस प्रकार उस पुरुष का वर्णन किया।

न च मयापि विस्मयविस्मृतविवेकेन केयं कस्येयं कुत्र कुतो वा प्रस्थितेति प्रश्नाग्रहः कृतः। केवलमदृष्टपूर्वरूपोत्पन्नाकस्मिककौतुकातिरेकास्तम्भितसमस्तान्यव्यापारेणकाग्रतया ग्रहनिरुद्धेनेवान्धेनेव मूकेनेव मूर्छितेनेव विषविघूर्णितेनेव स्तोभस्तम्भितेनेव गतायामपि तस्यां तेनाध्वनीनेन सह तत्रैव न्यग्रोधतरुतले सुचिरमासितमासीत् ॥

सुधा—च = तथा। विस्मयविस्मृतविवेकेन—विस्मयेन = आश्चर्येण विस्मृतः = स्मृतिपथादपगतः विवेकः = ज्ञानम् यस्य तेन। मया—इयम् = एषा राजपुत्री का? कस्येयम् = इयम् कस्य दुहिता? कुत्र = कुत्रास्याः निवासः। कुतः =कस्मात् स्थानात्। प्रस्थिता = प्रयाता इति = एवम् प्रश्नाग्रहः = पृच्छाहठः कृतः = विहितः। केवलम् = मात्रम्। अदृष्टपूर्वरूपोत्पन्नाकस्मिककौतुकातिरेकास्तमितसमस्तान्यव्यापारेण—न दृष्टः पूर्वं रूपः यस्याः साः = अनवलोकितप्राक्स्वरूपा, तया उत्पन्नः=सञ्जातः आकस्मिकः = अकस्मात् कौतुकातिरेकः = आश्चर्याधिक्यम्, तेनास्तमितः = समाप्तिं प्रापितः समस्तः = सम्पूर्णः अन्यव्यापारः = अपरकृत्यम् तेन। एकाग्रतया = सावधानतया।

ग्रहनिरुद्धेन इव = ग्रहगृहीतेन इव । अन्धेन इव = विगतचक्षुषेव । मूकेनेव = वाक्शक्ति-रहितेनेव । मूर्च्छितेनेव = मूर्च्छां गतेनेव । विषविघूर्णितेनेव-विषेण = गरलेन विघूर्णितः = उन्मत्तस्तेनेव । स्तोमरतम्भितेनेव = किं कर्त्तव्यविमूढेनेव तस्याम् = राजपुत्र्याम् । गतायाम् = प्रस्थितायाम् अपि । तेन अध्वनीनेन सह = अमुना पथिकेन समम् । तत्रैव = तस्मिन्नेव स्थले । न्यग्रोधतरुतले = वटवृक्षस्याधः । सुचिरम् = बहुकालं यावत् । आसितम् आसीत् = उपविष्ट आसीत् ।

हिन्दी — विस्मय के कारण विवेकहीन मैंने भी — यह कौन थी, किसकी कन्या थी, कहां रहती थी अथवा कहाँ को चली गयी, यह सब पूछने का आग्रह नहीं किया । केवल इससे पूर्व मैंने ऐसा रूप नहीं देखा था अतएव उत्पन्न हुए आकस्मिक अति कौतूहल से समस्त अन्य व्यापारों के शान्त हो जाने से एकाग्रचित्त किसी ग्रह द्वारा पकड़े हुए की भांति, अन्धे के समान, मूक के समान, वेहोश व्यक्ति के समान, विष से उन्मत्त जैसा किंकर्त्तव्यविमूढ सा उसके चले जाने पर भी उस पथिक के साथ वहीं वटवृक्ष के तले मैं वहुत देर तक वैठा रहा ।

तदायुष्मन्नेष कथितः स्ववृत्तान्तः ।।

तस्यां दिशि तया सकलजगज्ज्योत्स्नया, अस्मिन्नपि देशे निःशेषजननयन-कुमुदेन्दुना त्वया दृष्टेन, दृष्टं यद्द्रष्टव्यम् । अभूच्च मे श्लाघ्यं जन्म । जाते कृतार्थे चक्षुषी । संपन्नः सफलः परिभ्रमणप्रयासः ।

सुधा — तत् = एतत् । आयुष्मन् = हे दीर्घजीविन् ! एषः = अयम् । स्ववृत्तान्तः = आत्मसमाचारः । कथितः = निवेदितः ।

तस्यां दिशि = तस्यां दिशायाम् । सकलजगज्ज्योत्स्नया — सकलस्य = सम्पूर्णस्य जगतः = लोकस्य ज्योत्स्ना = चन्द्रिका तया । तया = राजपुत्र्या, अस्मिन् अपि देशे = एतस्मिन्नपि स्थाने । निःशेषजननयनकुमुदेन्दुना = निःशेषजनानाम् = समस्तलोकानाम् नयनयोः = नेत्रयोः कुमुदस्य = कुमुदपुष्पस्य इन्दुः = चन्द्रः = इव, तेन = त्वया = भवता । दृष्टेन = अवलोकितेन । यद् द्रष्टव्यम् = यद् दर्शनीयं वस्तु । तद् दृष्टम् = अवलोकितम् । च = तथा । मे = मम । जन्म = जीवनम् । श्लाघ्यम्=प्रशंसनीयम् अभूत् = अभवत् । चक्षुषी = नयने । कृतार्थे = सफले । जाते = बभूवतुः । परिभ्रमणप्रयासः —परितः = सर्वतः भ्रमणस्य = चङ्क्रमणस्य प्रयासः प्रयत्नः । सफलः सम्पन्नः = सफलतां गतः ।

हिन्दी — हे आयुष्मन् ! सो यह अपना वृत्तान्त कह दिया ।

उस दिशा में सम्पूर्ण संसार की ज्योत्स्नारूपा उस राजकन्या के तथा इस देश में सम्पूर्ण लोगों के नयनों के लिए कुमुद के लिए चन्द्रमा जैसे आपके देखने से जो द्रष्टव्य था वह देख लिया तथा मेरा जन्म श्लाघ्य हो गया, नयन कृतार्थ हो गये, परि-भ्रमण का प्रयत्न सफल हो गया ।

तदिदानीं किमन्यत् ।। 'अनुमन्यस्व स्वविषयगमनाय माम्' इत्यभिधाय व्यरंसीत् ।। राजाप्येतदाकर्ण्य चिन्तितवान् ।।

सुधा—तत् = अतः । इदानीम्=साम्प्रतम् । अन्यत् = अपरम् । किम् ? स्वविषय गमनाय—स्वस्य = आत्मनः विषयाय = देशाय गमनम् = प्रस्थानम्, तस्मै माम् । अनुमन्यस्व = अनुमतिं देहि । इति = इत्थम् । अभिधाय = उक्त्वा व्यरंसीत् = व्यरमत् । राजा अपि = नृपोऽपि । एतत् = इदम् । आकर्ण्य = श्रुत्वा । चिन्तितवान्= व्यचारयत् ।

हिन्दी—अब और क्या कहना है ? मुझे अपने देश जाने की अनुमति दीजिये यह कहकर (वह) चुप हो गया । राजा भी यह सुनकर सोचने लगा ।

स्त्रीमाणिक्यमहाकरः स विषयः पान्थोऽप्ययं तथ्यवाग्
व्यापारोऽपि विधेर्विचित्ररचनस्तत्किं न संभाव्यते ।
किं त्वाश्चर्यमदृष्टरूपविभवोप्याकर्ण्यमाना सती
कान्तेत्युन्नतचेतसोऽपि कुरुते नाम्नैव निम्नं मनः ॥ ६१ ॥

अन्वयः · सः विषयः स्त्रीमाणिक्यमहाकरः, अयम् पान्थः अपि तथ्यवाक् विधेः व्यापारः अपि विचित्ररचनः । तत् किम् न सम्भाव्यते । किन्तु आश्चर्यम्, अदृष्ट-रूपविभवः अपि आकर्ण्यमाना सती कान्ता इति नाम्ना एव उन्नतचेतसः मनः निम्नम् कुरुते ॥ ६१ ॥

सुधा—स्त्रोति । सः = एषः । विषयः = देशः । स्त्रीमाणिक्यमहाकरः— स्त्रियः एव माणिक्यानि तेषां महाकरः = नारीरत्नमहासागरः । अयम् = एषः । पान्थः = पथिकः अपि । तथ्यवाक् = तथ्या = सत्या वाक् = वाणी यस्य सः = सत्यवादी (अस्ति) । विधेः=विधातुः । व्यापारः=कार्यकलापः अपि । विचित्ररचनः—विचित्राः = अदभुताः रचनाः यस्मिन्, तादृशः । तत् किं सम्भाव्यते सर्वमेव सम्भवितुं शक्यते । किन्तु = परन्तु । आश्चर्यम् = वैचित्र्यम् अस्ति । अदृष्टरूपविभवः—न दृष्टः अदृष्टः= अनवलोकितः रूपस्य = स्वरूपस्य विभवः = ऐश्वर्यम् येन तादृशः अपि । आकर्ण्यमाना = श्रूयमाणा सती (राजपुत्री) कान्ता इति कान्ता शब्द इति नाम्ना एव=अभिधानेनैव । उन्नतचेतसः— उन्नतम् = विशालम् चेतः = मनः यस्य तस्य (मे) मनः = चेतः । निम्नम्=अनुन्नतम् कुरुते = करोति । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ६१ ॥

हिन्दी—वह देश स्त्रीरत्नों का विशाल सागर है तथा यह पथिक भी सत्यवादी है । विधाता का कार्यव्यापार भी अद्भुत रचनाओंवाला है । उसमें क्या सम्भव नहीं है किन्तु आश्चर्य है कि उस सुन्दरी के रूप वैभव को मैंने देखा भी नहीं है, सुनने मात्र पर कान्ता इस शब्द के नाम से ही उन्नत चित्तवाला मेरा मन अनुन्नत सा हो रहा है ॥ ६१ ॥

तथाहि—

नो नेत्राञ्जलिना निपीतमसकृत्तस्याः स्वरूपामृतं
नो नामान्वयपल्लवोऽपि च मया कर्णावतंसीकृतः ।
चित्रं चुम्बति चुम्बकाश्मकमयो यद्वद्बलाद् दूरत-
स्तद्वत्तर्जितधैर्यमेतदपि मे तस्यां मनो धावति ॥ ६२ ॥

अन्वयः—मया नेत्राञ्जलिना तस्याः स्वरूपामृतम् असकृत् नो निपीतम्, च नामान्वयपल्लवः अपि नो कर्णावतंसीकृतः। चित्रम् यद्वत् बलात् दूरतः चुम्बकाश्मकम् अयः चुम्बति, तद्वत् मे एतद् तर्जितधैर्यम् अपि मनः तस्याम् धावति।

सुधा—नो नेत्रेति। मया नेत्राञ्जलिना नेत्र एव अञ्जलिस्तेन = नयनाञ्जलिना तस्याः=राजपुत्र्याः। स्वरूपामृतम्—स्वरूपमेवामृतम् तत् = आकृतिसुधाम्। असकृत्= वारम्वारम्। नो निपीतम् = नैव पीतम्। च = तथा नामान्वयपल्लवः = अभिधान-किसलयः अपि। नो = नैव। कर्णावतंसीकृतः = श्रोत्राभूषणीकृतः। चित्रम्=आश्चर्यम्। चुम्वकाश्मकम् = चुम्बकनामप्रस्तरम् यद्वद् = यथा दूरात् = दूरतः अयः = लौहम्। चुम्बति=आश्लिषति। तद्वत्=तथा मे = मम। एतत्=इदम्। तर्जितधैर्यम्—तर्जितम् = निषिद्धम् धैर्यम् = स्थैर्यम् यस्य तत्। मनः = चेतः। तस्याम् = राजपुत्र्याम्। धावति = द्रुतं याति। शार्दूल-विक्रीडितं वृत्तम्॥ ६२॥

हिन्दी—मैंने नयनरूपी अञ्जलि से उसकी रूपसुधा का बारम्बार पान नहीं किया तथा नामरूपी पल्लव को भी कर्णाभूषण नहीं बनाया। आश्चर्य है कि जिस प्रकार चुम्बक पत्थर लोहे को बलात् दूर से ही चिपटा लेता है उसी प्रकार मेरा यह तर्जित धैर्य वाला मन उसमें ही दौड़ रहा है॥ ६२॥

सोऽयं दुर्लभेष्वनुरागः पुंसाम्, अज्वरमस्वास्थ्यम्, अदौर्गत्यं दौःस्थ्यम्, अविषास्वादनमाघूर्णनम्, असाध्वसं कम्पनम्, अनात्मविक्रयं पारवश्यम्, अजरं जाड्यम्, अनिन्धनं ज्वलनम्, अलग्नग्रहमुन्मादनम्, अवात्याघातमुद्भ्रमणम्, अमौनं मौक्यम्, अहीनश्रुतिबाधिर्यम्, अनष्टदृष्टिकमन्धत्वम्, अस्खलितमनोरथं मनःस्तम्भनम्, अमन्त्र आवेशः॥

सुधा—सोऽयमिति। सः अयम्=एषः। पुंसाम् = लोकानाम् अनुरागः=प्रेमदुर्लभेषु= अप्राप्यवस्तुषु (भवति), अज्वरम् = ज्वररहितम्। अस्वास्थ्यं = अ-वस्थता। अदौ-र्गत्यम् = दुर्गतिरहितम्। दौःस्थ्यम् = दुःस्थिरता अविषास्वादनम्–विषस्यास्वादनम् विषास्वादनम् न विषास्वादनम् इति=अगरलपानम्। आघूर्णनम्=मूर्च्छनम्। असाध्वसम् = निर्भयम् कम्पनम् = वेपथुत्वम्। अनात्मविक्रयम् = आत्मसमर्पणं विनैव पारवश्यम् = पराधीनता। अजरम्-जरया शून्यम्। जाड्यम् = मौर्ख्यम्। अनिन्धनम् = इन्धनेन विनैव ज्वलनम् = दहनम्। अलग्नग्रहम्–प्रतिकूलग्रहेण विनैव उन्मादनम्= उन्मादत्वम्। अवात्याघातम्–वात्याचक्राघातेन विनैव। उद्भ्रमणम् = ऊर्ध्वभ्रमणम्। अमौनम् = मौनेन विनैव मौक्यम् = मूकता। अहीनश्रुतिः = कर्णाभावेनेव वाधिर्यम् = वधिरता। अनष्टदृष्टिकम् = दृष्टिनाशेन विनैव अन्धत्वम् = दर्शनशक्तिक्षीणता। अस्खलितमनोरथम्–न स्खलितं मनोरथम् यस्मात् तत्–कामनानाशेन विनैव मनः स्तम्भ-नम्=मानसिकी स्तब्धता। अमन्त्रः = मन्त्रेण विनैव आवेशः=उदवेगः। (अजायत)।

हिन्दी—अतः यह लोगों का अनुराग दुर्लभवस्तुओं में होता है। बिना ज्वर आये ही अस्वस्थता, दुर्गति के बिना ही दुःस्थिरता, विषपान किये बिना ही बेहोशी, भय के बिना ही कम्पन, आत्मसमर्पण के बिना ही परवशता बुढ़ापा आये बिना ही अज्ञानता

इंधन के बिना ही जलना, प्रतिकूल ग्रहों के न होने पर भी पागलपन, अंधड़ के बिना ही (वातविकार के बिना ही) छटपटाहट, बिना मौन के मूकता, कानों की हीनता के बिना ही बधिरता, दृष्टिनाश के बिना ही अन्धता, कामनाओं के नष्ट न होने पर भी मानसिक स्तब्धता और बिना मन्त्र के ही आवेश हो गया है।

सर्वथा नमः सुस्थितजनदुर्जनाय मनोजन्मने, यस्यायमेवंविधो व्यापारः, इत्यवधारयेन्नवतार्य सर्वाङ्गेभ्यो भूषणानि तस्मै सदयमदात् ।

सुधा—सर्वथेति । सुस्थिरजनदुर्जनाय-सुस्थिरजनानाम्=सुस्थिरचेतसां सज्जनानाम् दुर्जनः=दुष्टः,तस्मै । मनोजन्मने—मनसा=चेतसा जन्म=उत्पत्तिर्यस्य तस्मै=कामदेवाय । सर्वथा = सर्वप्रकारेण । नमः = प्रणामः । यस्य = कामदेवस्य । अयम् = एषः । एवंविधः = ईदृशः । व्यापारः = कार्यम् । इति=इत्थम् । अवधारयन् = निश्चयन् । सर्वाङ्गेभ्यः = सम्पूर्णशरीरभागेभ्यः । भूषणानि = अलङ्काराणि अवतार्य = उन्मोच्य । सदयम् = दयया सहितम्=सकृपम् । तस्मै=पथिकाय । ददौ=दत्तवान् ।

हिन्दी—'स्थिरचेता सज्जनों के दुर्जन (दुष्ट) मनोज (कामदेव) के लिए सर्वथा नमस्कार है जिसका यह इस प्रकार का व्यापार है।' यह सोचते हुए सभी अङ्गों से आभूषण उतार कर उसे दया के सहित दे दिये ।

तैस्तैरालापैः स्थित्वा च कंचित्समयमिममथ यथाप्रस्थितं पान्थं कथमपि प्रेषयामास ॥

सुधा—तैस्तैरिति । च=तथा । तैः तैः आलापैः = उपर्युक्तप्रकारैः कथनैः । कंचित्समयम् = कमपि कालम् । स्थित्वा = अवस्थाय । अथ=अनन्तरम् इमम्=एतम् । पान्थम् = पथिकम् । यथाप्रस्थितम् = अभीष्टस्थानम् कथमपि = केनापि प्रकारेण । प्रेषयामास=अप्रेषयत् ।

हिन्दी—उस उस प्रकार की बातों से कुछ समय बिताकर, अनन्तर किसी प्रकार उस पथिक को इच्छित स्थान की ओर भेजा ।

स्वयमपि तत्कालान्तरालमिलितैर्नक्षत्रैरिव सार्द्रमृगशिरोहस्तैः सश्रवणचित्रकृत्तिकोपस्करवाहिभिः पापर्द्धिकपरिजनैरनुगम्यमानो राजा निजावासमयासीत् ॥

सुधा—स्वयमिति । तत्कालान्तरालमिलितैः-तत्कालम् = तत्क्षणम् अन्तराले = अध्वमध्ये मिलितैः : पक्षे—तदा—ज्योतिः प्रसिद्धे काले=कलासमूहे अन्तराले=अध्वमध्ये मिलितैः=जुष्टैः नक्षत्रैः इव = ग्रहैरिव । सार्द्रमृगशिरोहस्तैः = सार्द्राणि=सास्रत्वाच्च्योतन्ति हरिणशिरांसि येषु तथाविधाः हस्ताः = येषां तैः पक्षे-आर्द्रा-मृगशिरा-हस्त नक्षत्रसहितैः । सश्रवणचित्रकृत्तिकोपस्करवाहिभिः —सश्रवणाम् = सकर्णाम् चित्रकस्य = चित्रकाय कृत्तिकाम् = त्वचम् उपस्करम् = मृगयोपयोगि वहन्ति तैः पक्षे—श्रवणचित्रे = तदभिधे नक्षत्रे अनयोः समाहारः = श्रवणचित्रम्, तेन सह । ताश्च ताः कृत्तिकाश्च तासामुपस्करं समवायं वहन्ति तैः पापर्द्धिकपरिजनैः—पापर्धिकैः=पापिष्ठैः व्याधैः परिजनैः = सेवकैः । अनुगम्यमानः = अनुगमनंक्रियमाणः स्वयमपि=आत्मनोऽपि राजा = नृपः नलः । पक्षे—राजत इति राजा=चन्द्रः निजवासम् = आत्मभवनम् पक्षे=स्वनिवास-स्थानम् । अयासीत्=अगच्छत् ।

हिन्दी—(राजपक्ष में) उस समय मध्यमार्ग में मिले नक्षत्रों के समान खून से सने मृगों के शिरों को हाथ में लिये हुए तथा कानों सहित चितकबरे हिरण की खाल आदि सामग्री लिये हुए पापकर्मा व्याध (शिकारी) सेवकों से अनुगम्यमान (जिसके पीछे-पीछे चल रहे थे, ऐसा) राजा भी स्वयम् अपने निवास (भवन) को चला गया।

(चन्द्र पक्ष में) तत्काल मध्यमार्ग में उस ज्योतिःप्रसिद्ध अस्सी कलाओं के समूह के मध्य में मिले आर्द्रा-मृगशिर-हस्त सहित श्रवण-चित्रा-कृत्तिका के समुदाय से युक्त नक्षत्रों के समान चन्द्रमा अपने निवासस्थान को चला गया।

ततः प्रभृति च—

> हृद्योद्यानमरुत्तरङ्गितसरित्तीरे तरूणामध-
> स्तल्पेऽनल्पसरोजिनीनवदलप्रायेऽपि खिन्नात्मनः।
> धीरस्यापि मनाङ्मनस्तृणकुटीकोणान्तराले बला-
> ल्लग्नोऽस्येति विभाव्यते परवशैरङ्गैरनङ्गानलः॥ ६३॥

अन्वयः—हृद्योद्यानमरुत्तरङ्गितसरित्तीरे, तरूणाम् अधः, अनल्पसरोजिनीनवदल प्राये तल्पे अपि खिन्नात्मनः धीरस्य अपि मनाक् मनस्तृणकुटीकोणान्तराले बलात् परवशैः अङ्गैः लग्नः अनङ्गानलः विभाव्यते॥ ६३॥

सुधा—हृद्योद्यानेति। हृद्योद्यानमरुत्तरङ्गितसरित्तीरे-हृद्यम्हृदयस्यबन्धनं हृद्यम्=हृदयहारि यद् उद्यानम्=उपवनम् तस्य मरुद्भिः=पवनैः तरङ्गिता = तरलिता सरित्= सरिता, तस्यास्तटे = रोधसि। तरूणाम्=वृक्षाणाम् अधः = निम्नभागे। अनल्पसरोजिनीनवदलप्राये = सरोजिन्याः = कमलिन्याः नवानि = नूतनानि दलानि = पत्राणि इति। अनल्पानि = बहूनि सरोजिनीनवदलानि प्रायः सन्ति यत्र तादृशे। तल्पे = पर्यङ्के अपि। खिन्नात्मनः खिन्ना = खेदयुक्तः आत्मा = जीवः यस्य तादृशस्य। धीरस्य अपि = धैर्यशालिनः अपि। मनाक् = किञ्चित्। मनस्तृणकुटीकोणान्तराले-मनः = चित्तम् एव तृणकुटी = पर्णकुटी, तस्याः कोणस्य यद् अन्तरालम् = मध्यम् तस्मिन्। बलात्=हठात्। परवशैः=पराधीनैः अङ्गैः=शरीरभागैः लग्नः=श्लिष्टः अस्य= एतस्य। अनङ्गानलः—कामाग्निः = विभाव्यते = ज्ञायते। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ ६३॥

हिन्दी—मनोरम उद्यान के पवन से तरङ्गित सरिता के तट पर वृक्षों के नीचे प्रायः अतिशय, सरोजिनी के नूतन दलोंवाले पलंग (शय्या) पर भी लेटे खिन्न आत्मावाले धैर्यवान् राजा के भी मनरूपी तृण कुटी के कोण के अन्तराल में हठात् लग्न पराधीन अङ्गों से इसकी कामाग्नि ज्ञात हो रही थी॥ ६३॥

एवमस्य—

> पुनरपि तदभिज्ञान्पृच्छतः पान्थसार्थान्
> प्रतिपथमथ यूनो यान्ति तस्य क्रमेण।

हरचरणसरोजद्वन्द्वमुद्राङ्कमौले-
मदनमदनिवासा वासराः प्रावृषेण्याः ॥ ६४ ॥

इति श्रीत्रिविक्रमभट्टविरचितायां दमयन्तीकथायां हरचरण-सरोजाङ्कायां
प्रथम उच्छ्वासः समाप्तः
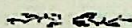
अन्वयः—अथ हरचरणसरोजद्वन्द्वमुद्राङ्कमौलेः तस्य यूनः मदनमदनिवासाः प्रावृषेण्याः वासराः क्रमेण पुनः अपि प्रतिपथम् तद् अभिज्ञान् पान्थसार्थान् पृच्छतः यान्ति ॥ ६४ ॥

सुधा—पुनरपीति । अथ=अनन्तरम् । हरचरणसरोजद्वन्द्वमुद्राङ्कमौलेः—हरस्य= शिवस्य यत् चरणसरोजद्वन्द्वम्=पादपद्मयुगलम् तस्य मुद्राङ्कम् = चिह्नम् मौलौ यस्य तादृशस्य । तस्य = उक्तस्य । यूनः = युवकस्य । मदनमदनिवासाः—मदनमदस्य = काममदस्य निवासः=वासः यत्र तादृशः । प्रावृषेण्या प्रावृटि भवाः प्रावृषेण्याः=वर्षाकालिकाः वासराः = दिवसाः । क्रमेण—क्रमशः पुनः अपि = भूयोपि । प्रतिपथम् = पथि-पथि=प्रतिमार्गम् तदभिज्ञानम्=तस्याः राजपुत्र्याः अभिज्ञानम् अभिज्ञानम् = परिचयम् । पान्थसार्थान् = पथिकान् । पृच्छतः = पृच्छां कुर्वतः । यान्ति = गच्छन्ति । मालिनीवृत्तम् ॥ ६४ ॥

हिन्दी—इस प्रकार—शिवजी के चरण कमल युगल के चिह्न से युक्त ललाट वाले उस युवक के मदनमद के निवास वर्षाकालीन दिवस क्रमशः पुनरपि प्रत्येक मार्ग में उस (राजपुत्री दमयन्ती) के वृत्तान्त को जाननेवाले पथिकों से पूछते ही पूछते व्यतीत हो रहे थे ॥ ६४ ॥

तमसो यत्र विनाशः पथिकोच्छ्वासः पदार्थनिर्भासः ।
उदयं प्रतिपद्यासौ भुवनमुदे जयति चण्डरुचिः ॥

इति शाहजहाँपुर मण्डलान्तर्वर्तिनो नाहिल वास्तव्यस्याचार्यपरमेश्वर-
दीनपाण्डेयस्य कविश्रीस्त्रिविक्रमभट्टस्य नलचम्पूकृतौ 'सुधा'-
संस्कृत-हिन्दीटीकाद्वयोपेतः प्रथमोच्छ्वासः ॥

द्वितीय उच्छ्वासः

अथ कदाचिदवगलद्बहलपरिमलमिलदलिकुलाकुलितकुटजकदम्बकुसुमकर्णपूरशून्यकाननासु, विश्राम्यन्मदमुखरमयूररसनावलीकलक्वणितासु, विरलतरतडिल्लताललितलावण्यासु, विगतहंसद्विजराजिषु, पतत्पयोधरासु, क्षीणशुक्रासु, वृद्धास्विव गतप्रायासु वर्षासु, रतिमकुर्वाणो मदकलकलहंसहासहारिण्यामुत्सुकस्तरुण्यामिवागतायां, शरदि, द्विरदमदगन्धसम्बन्धानुधाविते कुसुमितसप्तच्छदच्छायासु विस्फूर्जति रोषोद्घुषितकेसरकरालकण्ठे कण्ठीरवकदम्बके, गृहदीर्घिकामृणालिकाकाण्डखण्डनविरामरमणीयमुन्नदत्सु शरत्समयप्रवेशमङ्गलमृदङ्गेष्विव हंसमण्डलेषु, स्मरशरनिकरनिर्मथितपान्थसार्थप्रहाररुधिरनिष्यन्दबिन्दुसंदोह इव वनस्थलीषून्मिषति बन्धुरबन्धूककुसुमप्रकरे, प्रसरन्तीषु शरल्लक्ष्मीप्रवेशानन्दवन्दनमालासु निशङ्कशुककुलावलीषु, श्रूयमाणासु स्मरराजराज्यविजयघोषणासु पक्वकलमगन्धशालिपालिकाबालिकाहर्षगीतिषु, शरच्छ्रीकटाक्षेषून्मीलत्सु नीलनीरजेषु, क्वणति वर्षावधूप्रस्थानपटहे षट्चरणचक्रवाले, प्रभात इव घनतिमिरविरामरमणीये जाते जलनिधिशयनशायिशार्ङ्गिनिद्राद्रुहि विनिद्रसान्द्रसरससरोजराजिराजितसरसि शरत्समये, स महीपतिः समासन्नवनविहारिकिंनरमिथुनेन गीयमानमिदमनश्लीलं श्लोकत्रयमशृणोत् ॥

सुधा—अथ कदाचिदिति । अथ = अनन्तरम् । कदाचित् = कदापि । सः = असौ । महीपतिः = भूपतिर्नलः । अवगलद्वहलपरिमलमिलदलिकुलाकुलितकुटजकदम्बकुसुमकर्णपूरशून्यकाननासु-अवगलन्तः = परिस्रवन्तः बहलाः = घनाः परिमलाः = परागास्तेषु मिलन्तः ये अलयः = भ्रमरास्तेषां कुलानि समूहानि तैः आकुलितानि = आकम्पमानानि कुटजकुलानि = कुटजपादपयूथानि, तेषां कुसुमानि = पुष्पाण्येव कर्णपूराणि = उत्तंसास्तैः शून्यानि = रिक्तानि काननानि = अरण्यानि यासु तासु । विश्राम्यन्मदमुखरमयूररसनावली कलक्वणितासु—मदेन मुखराः = मदमुखराः = क्षीवतया कूजनपराः ये मयूराः = केकास्तेषां रसनावली = जिह्वाश्रेणिः, तस्याः कलक्वणितम् = मृदुकूजनम् । विश्राम्यद् = विरमद् यन् मदमुखरमयूररसनावती कलक्वणितं यासु तासु । विरलतरतडिल्लताललितलावण्यासु-विरलतरम् = विलक्षणतरम् तडिल्लतया = विद्युद्रेखया ललितम् = सुन्दरम् लावण्यं = सौन्दर्यम् यासु तासु । विगतहंसद्विजराजिषु-विगताः = समाप्ताः हंसा एव द्विजाः = हंसरूपदन्ता वा, तेषां राजयः = पंक्तयः यासु तासु । पतत्पयोधरासु—पतन्तः = वर्षन्तः स्खलन्तो वा पयोधराः = मेघाः कुचाः वा यासु तासु । क्षीणशुक्रासु = क्षीण शुक्राख्यग्रहासु, विनष्टवीर्यासु वा । वृद्धासु = वर्द्धमानासु वृद्धवधूष्विव वा । गतप्रायासु = अल्पशेषासु । वर्षासु = प्रावृट्सु । रतिम् = चित्तासक्तिम् । अकुर्वाणः = अविदधानः । मदकलकलहंसहासहारिण्याम्—मदेन = क्षीवेन कलः = रम्यः कलहंसः = हंसपक्षी एव हासः = विलासः, तेन हारिणी = मनोरञ्जिनी तस्याम् । आगतायाम् =

आयाताम् इव । तरुण्याम् = युवत्याम् । उत्सुकः = उत्साहयुक्तः । द्विरदमदगन्धसम्बन्धानुधाविते—द्विरदानाम् = गजानाम् मदगन्धः = मदजलसुरभिः, तत्सम्बन्धेनानुधाविते = पश्चाद्धावनशीले शरदि = शरद् ऋतौ । कुसुमिताः = पुष्पिताः ये सप्तच्छदाः = सप्तपर्णपादपाः तेषां छाया यासु तासु । रोषोद्घुषितकेसरकरालकण्ठे—रोषेण = क्रुधा उद्घुषितानि = विपर्यस्तानि केसराणि = गलरोमाणि, तैः करालाः = भयङ्कराः कण्ठाः = गलप्रदेशाः येषां तादृशि कण्ठीरवकदम्बके—कण्ठीरवानाम् = सिंहानाम् कदम्बकम् = समूहम् तस्मिन् । विस्फूर्जति = गर्जति सति । गृहदीर्घिकामृणालिकाकाण्डखण्डन विरामरमणीयम्—गृहदीर्घिकायाः = अन्तःपुरसरस्याः मृणालिकाकाण्डस्य = कमलिनीनालस्य खण्डनाय = त्रोटनाय योऽसौ विरामः = नादः, तेन रमणीयम् = रम्यम् । शरत्समयप्रवेशमङ्गलमृदङ्गेषु-शरदः समयस्य = शरदृतोः प्रवेशः = आगमनम्, तस्मिन् मङ्गलमृदङ्गेषु माङ्गलिकमृदङ्गादिवाद्ययन्त्रेषु इव । हंसमण्डलेषु = हंसपक्षियूथेषु । उन्नदत्सु = उच्चैः क्वणत्सु । स्मरशरनिकरनिर्मथितपान्थसार्थप्रहाररुधिरनिष्यन्दविन्दुसन्दोहः—स्मरस्य = कामस्य शराणाम् = वाणानाम् निकरः—समूहस्तेन निर्मथितः = आकुलितः पः पान्थसार्थः = पथिकसमूहः, तस्मिन्प्रहारेण = आघातेन रुधिरनिष्यन्दस्य = रक्तस्रवणस्य विन्दूनि = सीकराणि, तेषां सन्दोह इव समूह इव । वनस्थलीषु = वनानां = काननानाम् स्थलीषु = भूमिषु । वन्धुरवन्धूककुसुमप्रकरे-बन्धुराणाम् = सुन्दराणाम् वन्धूककुसुमानाम् = वन्धूकपुष्पाणाम् प्रकरः = समूहस्तस्मिन् । शरल्लक्ष्मी प्रवेशानन्दवन्दनमालासु—शरदेव लक्ष्मीस्तस्याः प्रवेशः = आगमः, तस्य वन्दनमालाः = तोरणमालाः यासु । निःशङ्कशुककुलावलीषु—निःशङ्काः = निर्भयाः ये शुकास्तेषां ये कुलावलयः = समुदायपंक्त्यस्तासु । पक्वकलमगन्धशालिपालिका बालिकाहर्षगीतिषु-पक्वाः कलमाः = शालिविशेषा इति पक्वकलमाश्चते संघशालयः = सुगन्धितशालिधान्यानि तेषां पालिकाः रक्षिकाः याः बालिकाः = कन्यकाः, तासां हर्षगीतयः = प्रसन्नतागीतानि यासु तासु । स्मरराजराज्यविजयघोषणासु = स्मरराजस्य = कामभूपतेः । राज्यस्य या विजयघोषणाः = जयोद्घोषास्तासु इव । श्रूयमाणासु = आकर्ण्यमानासु शरच्छ्रीकटाक्षेषु-शरदः श्रियः = शरल्लक्ष्म्याः कटाक्षाः = दृष्टिक्षेपास्तादृशेषु नीलनीरजेषु = इन्दीवरेषु । उन्मीलत्सु = विकसत्सु । वर्षावधूप्रस्थानपटहे—वर्षावध्वाः = प्रावृड्युवत्याः प्रस्थाने = गमनकाले यः पटहः वाद्यविशेषस्तादृशे । षट्चरणचक्रवाले = षट्चरणानाम् = भ्रमराणाम् चक्रवालः = समुदायस्तस्मिन् । क्वणति = गुञ्जति सति । प्रभात इव प्रातःकाल सदृशम् । घन तिमिरविरामरमणीये जाते = सान्द्रान्धकारनाशरम्येसञ्जाते । जलनिधिशयनशायिशार्ङ्गिनिद्राद्रुहि-जलनिधिरेव शयनम् = पयोनिधिशय्या, तस्यां यः शेते इति जलनिधिशायी, तथाभूतः यः शार्ङ्गी = विष्णुदेवः, तस्य निद्रां द्रुह्यतीति तस्मिन् = निद्राविरोधे—सति । विनिद्रसान्द्रसरससरोजराजिराजितसरसि—विनिद्राणि = फुल्लानि सान्द्राणि = सघनानि सरसानि = सुन्दराणि च यानि सरोजानि = कमलानि, तेषां राजिभिः = पंक्तिभिः राजितानि = शोभितानि सरांसि = तडागानि यस्मिंस्तस्मिन् ! शरत्काले = शरदृतौ । समासन्नवनविहारिकिन्नरमिथुनेन = किन्नरयोः मिथुनम् किन्नरमिथुनम्, वने =

विपिने विहरति = भ्रमतीति तथा किन्नरमिथुनम् = किम्पुरुषयुगलम् । समासन्नम् सन्निकटम् यत् वनविहारिकिन्नरमिथुनम् तेन । गीयमानम् = गायनं कुर्वन् । अनश्लीलम् = शिष्टम् च । इदम् = एतत् । श्लोकत्रयम्—त्रयाणां श्लोकानां समाहार इति श्लोकत्रयम् तत् । अश्शृणोत् = समाकर्णयत् ।

हिन्दी—तदनन्तर एक बार उस राजा ने निकट के वन में विचरण करने वाले किन्नर-मिथुन (किन्नर के जोड़े) के द्वारा गाये जाते हुए यह शिष्ट तीन श्लोक सुने (जबकि) उस समय जङ्गल बरसते हुए गहरे पराग पर झूमते हुए भौंरों से आकुल कुटज तथा कदम्ब वृक्षों के पुष्प रूप कर्णाभूषणों से शून्य बन गये थे । मतवाले अधिक बोलने वाली मयूर रूपी जिह्वाओं की मधुरध्वनि समाप्त हो चुकी थी । विद्युत् रेखा की मनोरम लावण्यता कहीं कहीं ही दिखलाई पड़ती थी । हंस पक्षियों की पंक्तियां (मानसरोवर की ओर को) जा चुकी थीं । (अथवा हंसरूपी दांतों की पंक्ति समाप्त हो गई थी) वर्षा रूपी युवती गिरे हुये पयोधरों (कुचों, बादलों) वाली तथा क्षीणशुक्रा (शुक्र ग्रह से रहित या स्त्रीरज रहित) वुढिया जैसे लगभग समाप्त हो चुकी थी और मन नहीं लग रहा था जैसे मतवाले तथा सुन्दर हंसों के हास को हरने वाली शरद् रूपी तरुणी में कोई व्यक्ति उत्सुक हो रहा था और वह चली आ रही थी हाथियों की मद गन्ध के सम्बन्ध में दौड़ते हुये फूलों से लदे सप्तपर्ण वृक्षों की छाया में क्रोध से उलटे हुए भयङ्कर केसरों वाले सिंह गरज रहे थे । शरद् रूपी वधू के आगमन पर अन्तःपुर की दीर्घिका (झील) के कमल नालों को खाना समाप्त किये हंसमण्डल मङ्गल मृदङ्गों की रमणीक ध्वनि कर रहे थे । वन प्रदेशों में कामदेव के वाणसमूह से व्याकुल किये गये पथिक समूह के आहत रुधिर विन्दुसमुदाय जैसे सुन्दर वन्धूक पुष्पों की पंक्तियां खिल रही थीं । शरत् रूपी लक्ष्मी के आगमनानन्द की ध्वजापताकाओं जैसी निर्भय तोतों की पंक्तियां (चारों ओर) फैल रही थीं । कामदेव के राज्य की विजय घोषणाओं के रूप में पके कलम धान की सुगन्ध को रखाने वाली बालिकायें हर्ष के गीत गा रहीं थीं । शरद रूपी लक्ष्मी के कटाक्षों के समान नील कमल खिल रहे थे । वर्षा रूपी वधू के प्रस्थान पर बजने वाले नगाड़े के समान भौरों का समुदाय गुनगुना रहा था । प्रभात के समान घने अन्धकार का विराम हो चुका था । जलनिधि में शयन करने वाले विष्णु भगवान् की नींद टूट चुकी थी विकसित घने एवं सुन्दर कमलपंक्तियों से तालाब शोभित हो रहे थे ।

धन्याः शरदि सेवन्ते प्रोल्लसच्चित्रशालिकान् ।
प्रासादान् स्त्रीसखाः पौराः केदारांश्च कृषीवलाः ॥ १ ॥

अन्वयः—शरदि प्रोल्लसच्चित्रशालिकान् प्रासादान् स्त्रीसखाः धन्याः पौराः, च केदारान् कृषीवलाः सेवन्ते ॥ १ ॥

सुधा—धन्या इति । शरदि = शरत्काले प्रोल्लसच्चित्रशालिकान्, प्रोल्लसन्त्यः = चित्रशालिकाः = आलेख्यभूमिकाः येषु तान् । प्रासादान् = सद्मानि । स्त्रीसखाः—स्त्रियः

सख्यःयेषां ते धन्याः = सुकृतिनः । पौराः पुरे भवाः पौराः = नगरनिवासिनः । सेवन्ते = उपभुज्यन्ते च = तथा केदारान् = क्षेत्राणि । शोभन्तः चित्राः = बहुविधाः शालयः तादृशान् स्त्रीसखाः = सपत्नीकाः धन्याः = पुण्यवन्तः । कृषीवलाः—कृषिरेव बलं येषां ते = कृषकाः । सेवन्ते = उपभुज्यन्ते ।

हिन्दी—शरदृऋतु में सुन्दर चित्रों से सजे हुये महलों को स्त्रियों सहित धन्य नागरिकजन तथा विभिन्न प्रकार के धानों से युक्त खेतों को पत्नियों सहित भाग्यशाली किसान सेवन करते हैं ॥ १ ॥

नमिताः फलभारेण न मिताः शालिमञ्जरी ।
केदारेषु हि पश्यन्तः के दारेषु विनिःस्पृहाः ॥ २ ॥

अन्वयः—केदारेषु फलभारेण नमिताः न मिताः शालिमञ्जरीः पश्यन्तः दारेषु के विनिःस्पृहाः (भवन्ति) ॥ २ ॥

सुधा—नमिता इति । केदारेषु = क्षेत्रेषु । फलभारेण—फलानां भारस्तेन = फलधुरेण नमिताः = नम्रतां गताः न मिताः = अपरिमिताः । शालिमञ्जरीः = शाल्यन्नमञ्जरीः (धानों की बालियों को) इति भाषायाम् । पश्यन्तः = अवलोकयन्तः दारेषु = स्त्रीजनेषु । के = के पुरुषाः । विनिःस्पृहाः = अनुत्कण्ठिताः भवन्तीति ॥ २ ॥

हिन्दी—खेतों में फल भार के कारण अपरिमित धानों की बालियों को देखते हुये स्त्रियों में कौन पुरुष अनुत्कण्ठित होते हैं ॥ २ ॥

प्रावृषं शरदं चापि बहुधाकाशहारिणीम् ।
विलोक्य नोत्सुकः कः स्यान्नरो नीरजसङ्गताम् ॥ ३ ॥

अन्वयः—बहुधा आकाशहारिणीम् प्रावृषम् शरदम् च अपि विलोक्य कः नरः नीरजसङ्गताम् उत्सुकः न स्यात् ॥ ३ ॥

सुधा—प्रावृषमिति । बहुधा = प्रायः । आकाशहारिणीम् आकाशम् = गगनम् हरतीति = आच्छादयतीति ताम् । काशकुसुममनोरमां वा प्रावृषम् = वर्षाम् । शरदम् = शरदृतुम् चापि । विलोक्य = दृष्ट्वा । कः नरः = कः पुरुषः प्रावृटि नीरजसङ्गताम्—निर्गतम् = समाप्तम् रजः सङ्गम् = पांसु साहचर्यम्, तस्य भावः ताम् धूलिराहित्यम् । शरदि च नीरजानाम् = कमलानाम् सङ्गः = साहचर्यम् तस्य भावस्ताम् । उत्सुकः=उत्कण्ठितः । न स्यात् = न भवेत् ॥ ३ ॥

हिन्दी—अधिकतर वर्षा ऋतु आकाश को बादलों से आच्छादित किये रहती है तथा शरद् ऋतु काश पुष्पों से मनोरम लगती है । इन्हें देखते हुए कौन पुरुष वर्षा ऋतु में धूल की हीनता तथा शरदृतु में कमल-पुष्पों के लिए उत्कण्ठित नहीं हो जाते हैं ॥ ३ ॥

अनेन मृदुमूर्च्छनातरङ्गरङ्गिताक्षरेण श्रवणपथप्रथमप्रियातिथिना श्लोकत्रयेण विषविषमविषयवैरस्यव्रततिकठिनकुठारेण, दारपरिग्रहपराङ्मुखोऽपि

शृङ्गारशृङ्गिशृङ्गमुत्तुङ्गमारोप्यमाणस्तदेवोद्यानममन्दमन्दारमकरन्दामोदमत्त-मधुकरमधुरझंकाररमणीयमुपसर्तुमारभत ।

सुधा—अनेनेति । मृदुमूर्च्छनातरङ्गरङ्गिताक्षरेण-मृद्व्याः मूर्च्छनायाः = मधुर-तानपूरस्य तरङ्गाः = ऊर्मयः, ताभिः रङ्गितानि = रञ्जितानि अक्षराणि = वर्णानि यस्य तेन । श्रवणपथप्रथमप्रियातिथिना—श्रवणपथस्य = कर्णमार्गस्य प्रथमम् = अपूर्वम् प्रियातिथिरूपम् यत् तेन । अनेन = एतेन । श्लोकत्रयेण—त्रयाणां श्लोकानां समाहारः श्लोकत्रयम् तेन = त्रिसंख्यश्लोकसमूहेन । विषविषमविषयवैरस्य व्रततिकठिन कुठारेण-विषयेभ्यः = कठिनेभ्यः विषयेभ्यः = सांसारिकसुखेभ्यः यद् वैरस्यम् = वैराग्यम् तदेव व्रततिः = लता । विषस्य = गरलस्य विषमविषयवैरस्यव्रततिस्तस्यै कठिनं कुठारमिव = कठोरपरशुसदृशम् तेन । दारपरिग्रहपराङ्मुखः अपिदाराणाम् = पत्नीनाम् परिग्रहः = परितः ग्रहणम् तेन पराङ्मुखः = विपरीतः अपि । उत्तुंगम् = उन्नतम् । शृङ्गार-शृङ्गिशृङ्गम्—शृङ्गार एव शृङ्गी, तस्य शृङ्गस्तम् = अलंकरणपर्वतशिखरम् आरोप्य-माणः = आरुह्यमाणः । अमन्दमन्दारमकरन्दामोदमत्तमधुकरमधुरझङ्काररमणीयम्—अमन्दानाम् = विकसितानाम् मन्दाराणाम् = मन्दारपुष्पाणाम् यो मकरन्दः = मधुरसः, तस्यामोदेन = प्रसन्नतया मत्ताः = क्षीवाः मधुकराः = भ्रमराः, तेषाम् मधुरेण = मृदुना झङ्कारेण = गुञ्जारवेण रमणीयम् = मनोरमम् । तदेव - उपरिनिर्दिष्टमेव उद्यानम् = आरामम् । उपसर्तुम्, पार्श्वं गन्तुम् । आरभत = आरम्भयामास ।

हिन्दी—मधुर मूर्च्छना की इन तरङ्गों से ओतप्रोत कर्णमार्गों के सर्वप्रथम प्रिय अतिथि, विषम विषयभोगों से विरक्ति रूपी विषलता को काट देने के लिए कठिन कुठार जैसे तीन श्लोकों से पत्नी-सुख से वञ्चित होते हुए भी ऊंचे शृङ्गार रूपी पर्वत के शिखर पर चढ़ते हुए राजा ने विकसित मन्दार पुष्पों के मधुरस पान से मतवाले बने भौंरों की मधुर गुञ्जार से मनोरम बने उसी उद्यान की ओर चलना आरम्भ किया ।

प्रथमसम्मुखप्रेङ्खितेन चलच्चन्दनामोदनन्दिनान्दोलनवेगवित्रस्तकुसुमिततरु-शिखरसुप्तसुरतश्रमखिन्नकिनरीनिबिडतरपरिरभ्यमाणकिनरनमस्कृतेन क्रीडा-कमलदीर्घिकातरङ्गोत्सङ्गरङ्गत्तरुणतामरसरसविसरोद्गारहारिणा यौवनमद-निरुद्धनैषधीधम्मिल्लवल्लरीचलनविलासलासकेन वनमारुतेनोत्पुलकिततनुः स्तो-कमन्तरमतिक्रम्य 'देव, भवद्वैरिवधूवदने वने च नारङ्गतरूपशोभे भान्ति गण्ड-शैलस्थलालङ्कारधारिण्यो लोध्रलताः, नागरुचिताश्चन्दनपत्रभङ्गाः, नालिकेर-चितस्तिलकः, नवा दृष्टिपथमवतरति घनाञ्जनयष्टिका, नाभिरस्या नीलतमालका, नाधरीकृतस्ताम्बूलीरागः, पल्लवितमेतद् दृश्यतेऽशोकजालम् । इतश्च काञ्चन-गिरिरिव सुरचितः क्रीडापर्वतः । इतश्च गूर्जरकूर्चमिवाखण्डितप्रवालं बालशाल-वनम् । इतश्च भवद्वैरिनगरमिवानेकविधकुलसंकुलं कूपकुलम् । इतश्च धूर्जटिजटा-जूट इव पुंनागवेष्टितो वापीपरिसरः । इतश्च कुरुसेनेव कृताश्वत्थामहिता च क्रीडासरित्पुलिनपालिः ।' इति भङ्गश्लेषोक्तिकुशलया वनपालिकया निवेद्य-मानानि वनविनोदस्थानान्यवलोकयाञ्चकार ॥

सुधा—प्रथमेति । प्रथमसम्मुखप्रेङ्खितेन—प्रथमम्=अत्यर्थम् सम्मुखे = प्रत्यक्षे प्रेङ्खितेन = प्रवहता । चलच्चन्दनामोदनन्दिना—चलता = प्रसरता चन्दनस्य आमोदेन = गन्धेन नन्दिना = प्रसन्नेन । आन्दोलनवेगवित्रस्तकुसुमिततरुशिखरसुप्तसुरतश्रमखिन्नकिन्नरी निविडतरपरिरम्यमाणकिन्नरनमस्कृतेन आन्दोलनवेगः = प्रकम्पनम्, तेन वित्रस्ताः = भीताः, कुसुमितानाम् = पुष्पितानाम् तरूणाम् = पादपानाम् शिखरेषु = श्रेणिषु सुप्ता = शयनं गताः सुरतश्रमेण = रतिक्लेशेन खिन्नाः = आकुलिताः याः किन्नर्यस्ताभिः निविडतरम् = गाढतरम् परिरम्यमाणैः = आलिङ्ग्यमानैः किन्नरैः = किम्पुरुषैः नमस्कृतेन = प्रणमितेन । क्रीड़ाकमलदीर्घिकातरङ्गोत्सङ्गरङ्गत्तरुणतामरसरसविसरोद्गारहारिणा—क्रीडायाः = खेलनस्य कमलदीर्घिकाः = कमलकुसुमयुता वाप्यः, तासाम् यः तरङ्गोत्सङ्गः = वीचिसम्पर्कः, तेन रङ्गता = कम्पितेन तरुणतामरसानाम् = विकसितकमलानाम् रसविसरोद्गारः = रसगन्धव्यक्तिस्तेन हारिणा = मनोरमेण । यौवनमदनिरुद्धनैषधीधम्मिल्लवल्लरी चलनविलासलासकेन—यौवनस्य = तरुणतायाः मदः = क्षीवः, तस्मै निरुद्धाः = अवरुद्धाः नैषधीनाम् = निषधदेशजातानाम् धम्मिलानाम् = सुन्दरीणाम् वल्लर्याः = वेण्यः, तासाम् चलनम् = कम्पनरूपम् विलासम् = आनन्दपूर्णम् लासकम् = नृत्यम् येन तादृशेन । वनमारुतेन—वनस्य = विपिनस्य मारुतेन = पवनेन । उत्पुलकिततनुः उत्पुलकितम् = उत्फुल्लितम् तनुः = शरीरम् यस्य सः । स्तोकम् = अल्पम् अन्तरम् = व्यवधानम् अतिक्रम्य = अतिक्रमणं कृत्वा, पार्श्वमुपगम्य । देव = हे राजन् ! भवद्वैरिवधूवदने—भवतः = श्रीमतः वैरिवधूनां = शत्रुपत्नीनाम् वदने = मुखे । अरङ्गतरूपशोभे-अरम् = अत्यर्थम् रूपशोभे = गतसौन्दर्ये । गण्डशैलस्थलालङ्कारधारिण्यः–गण्डशैलस्थले–कपोलफलके अलङ्कारधारिण्यः = अलंकारिण्यः । लोध्रलताः लोध्रस्य–विलेपनाख्यस्य लताः = वल्लर्यः । न भान्ति = न शोभन्ते अगरुचिताः = अगरुद्रवेण चिता = युक्ताः । चन्दनपत्रभङ्गाः = चन्दनद्रव्यस्य पत्रभङ्गाः = पत्रावल्यः न (भान्ति)। अलिकम् = ललाटम् = तस्मिन् रचितः = कृतः तिलकः = पुण्ड्रम् न (भाति) । घनाञ्जनयष्टिका = घना = सान्द्रा अञ्जनस्य यष्टिकाः शलाका । वा = अथवा । दृष्टिपथम् = चक्षुषोर्मार्गम् न अवतरति । नीलतमालका = नीलतमा कृष्णतया अलका = तमालवृक्षपंक्तिः । अभिरम्याः = सर्वतः रमणीया न । ताम्बूलीरागः = ताम्बूललालिमा । अधरीकृता न = अधरयोः न धारितः । एतत् = इदम् । शोकदुःखम् अलम् = अत्यर्थम् । पल्लवितम् वर्द्धितम् दृश्यते = अवलोक्यते । वने च नारङ्गतरुभिः कृतशोभे सहजच्युतस्थूलपाषाणस्थलीभूषणा लोध्रस्य तरुविशेषस्य लताः = शाखाः भान्ति = शोभन्ते । नागेभ्यः = गजेभ्यः रुचिताः = शोभिताः चन्दनतरोः पत्राणां भङ्गा विशेषाः । नालिकेरैः = नारिकेलतरुभिः व्याप्तः तिलकः = तिलकवृक्षः । नवा = नवीना । घनस्य = सान्द्रस्य अञ्जनस्य = अञ्जनपादपस्य यष्टिका = प्रकाण्डः । ताम्बूली = वल्ली । रागः = सक्तिः । पल्लवितम् = किसलयितम् । अशोकानाम् = अशोकपादपानाम् । जालम् = खण्डः । इतश्च = तथा इतः = अस्मात् स्थानात् । सुरचितः–सुष्ठु रचितः, सुरैः = देवैः चितः = व्याप्तः वा । काञ्चनगिरिः इव = हेम-पर्वत समः । क्रीडापर्वतः (अस्ति) । गुर्जरकूर्चम् इव गुर्जरदेशजानाम्

कूर्चसमम् । अखण्डितप्रवालम्—अखण्डिताः = अभग्नाः प्रवालाः = पल्लवा यस्य तथा । पक्षे अखण्डिताः = अकर्तिताः अत एव प्रवृद्धाः वालाः = केशाः यत्र । वालशालवनम्—वालम् = नूतनम् शालवनम् = शालवृक्ष विपिनम् (अस्ति) भवद्वैरिनगरम् इव—भवतः = श्रीमतः वैरीणाम् = अरीणाम् नगरम् इव = जनपदमिव । अनेक विधवकुलसंकुलम्—अनेकविधैः । वकुलैः = वकुलपादपैः । पक्षे अनेकाः विधवाः = मृतभर्तृकाः येषु कुलेषु = वंशेषु तैः सङ्कुलम् = परिपूर्णम् । कूपकुलम् = कूपसमूहम् (अस्ति) । धूर्जटिजटाजूट इव = धूर्जटेः = शिवस्य जटाजूटम् = सटासमूहम् इव । पुन्नागवेष्टितः—पुन्नागैः = पुन्नाग-वृक्षैः वेष्टितः = परिवृतः । पक्षे पुन्नागः = वासुकिः तेन वेष्टितः = परिवृतः । वापीपरि-सरः—वापीनाम् परिसरः = तटम् (अस्ति) च = तथा कुरुसेना इव = कौरवचमूरिव । कृताश्वत्थामहिता—कृता = उत्पादिता अश्वत्थाः पिप्पलीः यस्याम्, तया महिता = चार्वी । पक्षे कृतम् अश्वत्थाम्ने = द्रोणसुताय हितं यया सा । क्रीडासरित्पुलिनपालिः—क्रीडासरितः = क्रीडानद्यः पुलिनपालिः = तटपंक्तिः (अस्ति) । इति = इत्थम् । भङ्ग-श्लेषोक्तिकुशलया भङ्गश्लेषकथनदक्षया । वनपालिकया=उद्यानरक्षिकया । निवेद्यमानानि कथ्यमानानि । वनविनोदस्थानानि = नलः अवलोकयाञ्चकार = व्यलोकयत् ।

हिन्दी—अतीव सम्मुख बहती हुई, फैलती हुई चन्दन की सुगन्ध से प्रसन्न, फूलों से लदी वृक्षों की चोटियों पर मैथुन के परिश्रम से व्याकुल होकर लेटी हुई तथा वायु के झोंकों से भयभीत किन्नरियों द्वारा गाढ़ आलिङ्गन प्राप्त किये हुये किन्नरों से नमस्कृत क्रीडा कमल बावलियों की लहरों के साथ हिलते हुए तामरस (कमल) के रसगन्ध के उद्गार को प्रकट करने के कारण मनोरम, यौवन मद को रोकने के लिए बांधी गई निषध देश की सुन्दरियों की वेणी के हिलने के रूप में आनन्दपूर्ण नृत्य कराने वाले वन के पवन से पुलकित शरीर वाले राजा—थोड़ा सा समीप आकर 'हे देव आपके शोभा ही शत्रुपत्नियों के मुख पर कपोलफलक को अलङ्कृत करने वाली लाल रंग से बनाई गई लतायें शोभित नहीं होती हैं, अगरुयुक्त चन्दन रस से बनाई गई पत्र रचनायें एवं माथे पर लगाया हुआ तिलक अच्छा नहीं लगता है गहरे अञ्जन की शलाका दिखलाई नहीं पड़ती है । गहरे काले रंग की अलकें सुन्दर नहीं लगती, ओठों पर जैसी लालियाँ नहीं की जाती है तथा यह दुःखों का जाल सा पल्लवित हो रहा है ।

'हे देव ! नारंग के वृक्षों से शोभित वन में गण्ड शैलों से अलंकृत लोध्रवृक्षों की लतायें तथा नागों (हाथियों) से सुन्दर चन्दन वृक्षों की नष्ट की गई पत्तियां सुन्दर लगती हैं । नारियल के पेड़ों से युक्त तिलक वृक्ष व घने अञ्जन वृक्षों की नवीन शाखायें दिखलाई पड़ती हैं गहरे हरे रंग वाले तमाल वृक्ष नाभि रम्य (अत्यन्त रमणीक) हैं । ताम्बूल की जड़ें कम नहीं की गई हैं, तथा यह अशोक वृक्षों का जाल पल्लवित दिखलाई पड़ रहा है ।

तथा इधर देवताओं से युक्त 'हेम पर्वत' के समान सुन्दर कीड़ा पर्वत है । इधर अखंडित बढ़े हुये बालों वाले गुजरात प्रदेश के लोगों की दाढ़ी के समान अखण्ड पल्लवों वाला नूतन शाल वृक्षों का वन है । इधर जिस प्रकार आपके शत्रुओं का नगर

विधवाओं से परिपूर्ण है उसी प्रकार आपके अनेक बकुल पादपों से परिपूर्ण कूप समुदाय है। जिस प्रकार भगवान् शङ्कर वासुकि नामक विशेष प्रकार के सर्प को लपेटे रहते हैं उसी प्रकार आपका पुन्नाग वृक्षों से घिरा हुआ वाउलियों का परिसर (मैदान अथवा तट) है जिस प्रकार द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा के लिए हित करने वाली कुरु सेना थी उसी प्रकार उत्पन्न हुए अश्वत्थ (पीपल) के वृक्षों से परिपूर्ण क्रीड़ासरिता की तट पङ्क्तियां हैं।"

इस प्रकार भङ्गश्लेषोक्ति में कुशल वनपालिका (उद्यान की रखवाली करने वाली) के द्वारा बतलाये जाते हुये वन के विनोद स्थलों को (नल ने) देखा।

चलच्चकोरचक्रवाकचक्रचञ्चुचञ्चलचञ्चरीकचरणचूर्णितचम्पकाङ्कुरमरिचमञ्जरीदलदन्तुरेण वनमार्गेण स्तोकमन्तरमतिक्रान्तस्तयापुनरेवं बभाषे ॥

सुधा—चलदिति। चलच्चकोरचक्रवाकचक्रचञ्चुचञ्चलचञ्चरीकचरणचूर्णित चम्पकाङ्कुरमरिचमञ्जरीदलदंतुरेण-चलन्तः = भ्रमन्तश्चकोराश्चक्रवाकाश्च तेषां चक्राणि = समूहानि तेषां चञ्चुभिः चञ्चलैः = चपलैः चञ्चरीकचरणैः = भ्रमरपादैश्चूर्णितानि = मर्दितानि चम्पकानामङ्कुराणि मरिचानां मञ्जरीदलानि च तैः दन्तुरेण = उच्चावचेन। वनमार्गेण = काननपथा। स्तोकम् = किञ्चित्। अन्तरम् = मध्यम्। अतिक्रान्तः = उपसृतः (राजा नलः) तथा = उपरिनिर्दिष्टया वनपालिकया। पुनः = भूयः एवम् = इत्थम्। बभाषे = ऊचे।

हिन्दी—घूमते हुए चकोर एवं चकई चकवों के समूहों की चोंचों और चञ्चल भौंरों के चरणों से चकनाचूर किये गये चम्पा के अङ्कुरों तथा मरिच मञ्जरी दल से ऊँचे नीचे वनमार्ग से थोड़ा सा निकट पहुँचे हुए राजा नल से उस वनपलिका ने पुनः इस प्रकार कहा।

'देव' पुरन्दरानन्दिनोद्यानस्पर्धिनोऽस्य वनस्य किं किं वर्ण्यते ॥

सुधा—'देव' इति। देव ! हे राजन्। पुरन्दरानन्दिनोद्यानस्पर्धिनः—पुरन्दरस्य = शक्रस्यानन्दिनोद्यानम् = सुखकरं नन्दनवनं स्पर्द्धते = तुलनां करोति यस्तस्य अस्य = एतस्य वनस्य = उद्यानस्य किं किं वण्यते = किं किं कथ्यते।'

हिन्दी—हे देव ! इन्द्र के आनन्ददायक नन्दन वन से स्पर्धा करने वाले इस वन का क्या-क्या वर्णन किया जाये।

यत्र त्रिजटाश्रयमनेकजटाः, स्फुरदेकपुष्पकमनेकपुष्पाः, समुद्वेजितराममानन्दितरामा, समुपहसन्ति लङ्केश्वरं तरवः ॥

सुधा—यत्रेति। यत्र = यस्मिन् स्थाने। अनेकजटाः = विविधजटाभियुंक्ताः। अनेकपुष्पाः—अनेकानि = बहूनि पुष्पाणि = कुसुमानि सन्ति येषु ते। आनन्दितरामाः आनन्दिताः—आनन्दयुक्ताः रामाः = स्त्रियः यैस्तादृशाः तरवः = पादपाः। त्रिजटाश्रयम्—त्रिजटाख्यायाः राक्षस्याः आश्रयः = रक्षको यस्तम्। स्फुरदेकपुष्पकम्—स्फुरत् = प्रस्फुरद एकम् = अद्वितीयम् पुष्पकम् = पुष्पकविमानम् यस्य तम्। समुद्वेजितरामम्—समुद्वेजितः—

सम्यक् उद्वेजितः प्रकम्पितः रामः = दाशरथिर्येन तादृशम् लङ्केश्वरम् = दशाननम् । उपहासम् कुर्वन्ति ॥

हिन्दी—जहां अनेक जटाओं वाले, विविध पुष्पों से युक्त, प्रमदाओं को आनन्दित करने वाले वृक्ष त्रिजटा के आश्रयदाता, एकमात्र पुष्पक विमान रखने वाले तथा राम को समुद्वेजित करने वाले लंकेश्वर का उपहास करते हैं।

यस्मिंश्च मत्तमयूरहारिणि भद्रभुजङ्गप्रयाते विचित्रक्रौञ्चपदे छन्दःशास्त्र इव वैतालीयं मालिनी शिखरिणी पुष्पितात्र च दृश्यते विविधा जातिः ॥

सुधा—यस्मिन्निति । च = तथा यस्मिन् उद्याने । मत्तमयूरहारिणि–मत्तैः = क्षीवैः मयूरैः = केकैः हारिणि = मनोरमे । भद्रभुजङ्गप्रयाते–भद्रम् भुजङ्गानाम् = अहीनाम् विटानाञ्च प्रयातं = प्रयाणम् यत्र तस्मिन् । विचित्रक्रौञ्चपदे–विचित्राः = विविधाः क्रौञ्चपदा = क्रौञ्चपक्षिणः यत्र तस्मिन् उद्याने । वै = स्फुटम् । इयम् एषा ताली = तालद्रुमः । मालिनी—मालाऽस्यामस्तीति । शिखरिणी—शिखर युक्ता । पुष्पिता कुसुमिताग्रभागा च । छन्दःशास्त्र इव = पिङ्गल शास्त्र इव वैताली, मालिनी, शिखरिणी पुष्पिता च विविधा = बहुप्रकारा दृश्यते = अवलोक्यते ।

हिन्दी—जहां मतवाले मयूरों से मनोरम, मनोज्ञ सर्पों तथा विटों के गमन से युक्त विचित्रक्रौञ्चपक्षियों वाली इस उद्यान में यह तालवृक्ष स्पष्ट रूप से पंक्ति युक्त, व शिखर युक्त कुसुमित जाति वाले, छन्दः शास्त्र के वैतालीय, मलिनी, शिखरिणी तथा पुष्पिता विविध जाति जैसे दिखलाई पड़ते हैं।

यस्मिंश्च एकभीमार्जुनविनिर्जितानाक्रान्तानेकभीमार्जुनाः, कोपितैकनकुलानाह्लादितानेकनकुला, सहदेवेनैकेन स्पर्धमानाननेकैः सहदेवैः सङ्गताः । न बहु मन्यते कुरुवीरान्वीरुधः ॥

सुधा—यस्मिंश्चेति । यस्मिन् वने वीरुधः = लताः । आक्रान्तानेकभीमार्जुनाः— आक्रान्ताः अनेके = बहवः भीमाः = अम्लवेतसाः अर्जुनाश्च याभिस्ताः । 'भीमोऽम्लवेतसे शंभौ घोरे वापि वृकोदरे' इति विश्वप्रकाशः । आह्लादितानेकनकुलाः–आह्लादिताः = मोदिताः नकुलाः=नकुल जीवाः ('नेउला इतिभाषायां) याभिस्ताः । अनेकैः= बहुभिः सहदेवैः = सहदेव वृक्षैः सङ्गताः = साकंप्रयाताः एकभीमार्जुनविनिर्जितान्— एकमात्रम् भीमेन = भयानकेन = अर्जुनेन = पार्थेन विनिर्जिताम् = पराजिताम् । कोपितैकनकुलान्—कोपिताः = रोषिताः नकुलेन = एकमात्रं माद्रिसुतेन नकुल नाम्ना ये तान् । एकेन = एकमात्रेण सहदेवेन = नकुलभ्राता स्पर्धमानान् = स्पर्धां क्रियमाणान् । कुरुवीरान् कौरवान् न बहुमन्यते = न गौरवयन्ति ।

हिन्दी—जिस उद्यान में लतायें कुरुवीरों कनेरवृक्षों तथा कौरवों की गौरवान्वित नहीं कर रहीं है क्योंकि कुरुवीर एक ही भयङ्कर अर्जुन से आक्रान्त थे पर यह लतायें अम्लवेतस तथा अर्जुनादि अनेक वृक्षों से आक्रान्त हैं, कुरु वीरों को एकमात्र नकुल (माद्री सुत) ने क्रुद्ध किया था पर यह लतायें अनेको नकुलों (झाड़ियों में छिपने के

कारण) को प्रसन्न करने वाली हैं। कुरुवीर अकेले सहदेव (नकुलभ्राता) से प्रतिद्वन्द्विता करते थे जब कि लतायें अनेक सहदेव वृक्षों पर फैली हुई हैं।

किं चान्यदवलोकयतु देवः—

पटलमलिकुलानामुन्नमन्मेघनीलं
भ्रमदुपरि तरूणां पुष्पितानां विलोक्य।
मृदुमदकलकेकानिर्भरो नृत्यसक्त-
स्तरलयति कलापं मन्दमन्दं मयूरः ॥ ४ ॥

अन्वयः—पुष्पितानाम् तरूणाम् उपरि भ्रमद् उन्नमन् नीलमेघम्। अलिकुलम् पटलम् विलोक्य मृदुमदकलकेकानिर्भरः नृत्यसक्तः मयूरः कलापम् मन्दमन्दम् तरलयति ॥ ४ ॥

सुधा—पटलमित्ति। पुष्पितानाम् = कुसुमितानाम्। तरूणाम् = वृक्षाणाम्। उपरि = ऊर्ध्वम् भ्रमद् = गच्छत्। उन्नमन्नीलमेघम् = उद्गच्छन्नीलघनम्। अलिकुलानाम् = भ्रमर समूहानाम् पटलम् = पट्टम्। विलोक्य = दृष्ट्वा। मृदुमदकलकेकानिर्भरः मृदुमदकलः = कोयलमत्तकलरवयुक्तश्चासौ केकासु निर्भरः=केका सहायः नृत्यसक्तः=नृत्येलग्नः। मयूरः = केकी। कलापम् = पक्षम्। मन्दमन्दम् = शनैः शनैः। तरलयति=चञ्चलयति। मालिनी वृत्तम् ॥ ४ ॥

वल्कि आप और भी देखिये—

हिन्दी—फूलों से लदे वृक्षों के ऊपर मडराते हुये काले बादलों के समान भौरों का दल देखकर कोमल, मतवाली सुन्दर मोरनी सहित नाच में तत्पर मयूर अपने पंख को धीरे-धीरे हिला रहा है ॥ ४ ॥

अपि च—

भ्राम्यद्द्विरेफाणि विकासभाञ्जि संयोज्य पुष्पाणि शिलीमुखेषु।
इह स्थितः सर्वजगज्जयाय धनुश्रमं पुष्पशरः करोति ॥ ५ ॥

अन्वय.—इहं स्थितः पुष्पशरः भ्राम्यद् द्विरेफाणि विकासभाञ्जि पुष्पाणि शिलीमुखेषु संयोज्य सर्वजगज्जयाय धनुः श्रमम् करोति ॥ ५ ॥

सुधा—भ्राम्यदिति। अपि च = तथा च। इह = अत्र। स्थितः = अवस्थितः। पुष्पशरः पुष्पाण्येव शराः = वाणाः यस्य सः = कुसुमशरो मदनः। भ्राम्यद्द्विरेफाणि भ्राम्यन्तः = परिक्रमन्तः द्विरेफाः = भ्रमराः येषु तानि। विकासभाञ्जि=विकसितानि। पुष्पाणि = कुसुमानि। शिलीमुखेषु = भ्रमरेषु। संयोज्य = योजयित्वा सर्वजगज्जयाय = सर्वस्य = सम्पूर्णस्य जगतः = संसारस्य जयाय = विजयाय धनुःश्रमम् = धनुषि = चापे चापे श्रमम् = परिश्रमम्। करोति = विदधाति। उपजातिवृत्तम् ॥ ५ ॥

हिन्दी—और भी—इस उद्यान में बैठा-बैठा ही पुष्पशर (कामदेव) मड़राते हुए भौरों वाले विकसित पुष्पों को भौंरों में लगाकर सम्पूर्ण संसार को जीतने के लिए अपना धनुष कार्य कर रहा है ॥ ५ ॥

इतश्च—

हरिति हरिणयूथं यूथिकाजालमूले
कुसुमजमधुबिन्दुस्यन्दसन्दोहभाजि ।
मधुरमधुकरालीगीतदत्तावधानं
लिखितमिव न दूर्वापल्लवानुल्लुनाति ॥ ६ ॥

अन्वयः—हरिति कुसुमजमधुबिन्दुस्यन्दसन्दोहभाजि यूथिकाजालमूले मधुरमधुकराली-गीतदत्तावधानम् लिखितम् इव हरिणयूथम् दूर्वापल्लवान् न उल्लुनाति ॥ ६ ॥

सुधा—हरितीति । हरिति = शाद्वले कुसुमजमधुबिन्दुस्यन्दसन्दोहभाजिकुसुमैः = पुष्पैः जातानि = उत्पन्नानि मधुबिन्दूनि = मकरन्दसीकराणि, तेषां स्यन्दसन्दोहं = संयोगसम्बन्धं भजंतीति तस्मिन् । यूथिकाजालमूले यूथिकाजालस्य = जूहीति पादप समूहस्य मूले = अधःस्थूले । मधुरमधुकरालीगीतदत्तावधानम्—मधुराणाम् = मृदूनाम् मधुकरालीनाम् = भ्रमरपंक्तीनाम् गीतेषु = गुञ्जारवेषु दत्तम् = कृतम् = अवधानम् येन तत् । लिखितम् इव = चित्ताङ्कितमिव । हरिणयूथम् = मृगकुलम् । दूर्वापल्लवान् = दूर्वा-दलानि । न उल्लुनाति = उपर्युपरि न कर्त्तति । मालिनी वृत्तम् ॥ ६ ॥

हिन्दी—और इधर—हरे भरे पुष्पों से निकले मधुरसबिन्दुओं से युक्त जूही के पौधों की जड़ में (नीचे) मधुर मधुकर पंक्तियों की गुञ्जार पर ध्यान लगाये हुये हिरणों का झुण्ड चित्र लिखित सा दूर्वादल को ऊपर से नहीं कुतर रहा है ॥ ६ ॥

इतोऽपि—

सोऽयं क्रीडाचलो भव्यलोभव्यसनवर्जित ।
यस्मिन्नासन्नसारङ्गा सारं गायति किंनरी ॥ ७ ॥

अन्वयः—हे भव्य ! लोभव्यसनवर्जित ! अयम् सः क्रीडाचलः, यस्मिन् आसन्न-सारङ्गा किन्नरी सारम् गायति ॥ ७ ॥

सुधा—सोऽयमिति । हे भव्य = अयि सुन्दर ! लोभव्यसनवर्जित ! लोभेन व्यसनैश्च वर्जितः विहीनस्तत्सम्बुद्धौ । अयम् = एषः । सः = उक्तः क्रीडाचलः = क्रीडापर्वतः (अस्ति) यस्मिन् = यत्र । आसन्नसारङ्गाः—आसन्नाः = अवसन्नाः सारङ्गाः = मृगाः यस्याः सा । किन्नरी = किंनर जातीया नारी । सारम् = उत्कृष्टम् । गायति = गायनं करोति । अनुष्टुब्वृत्तम् ॥ ७ ॥

हिन्दी—हे भव्य तथा लोभ एवं व्यसनों से रहित ! राजन् ! यह वही क्रीडाचल है जिस पर मृगों के बीच किन्नरी उत्तम गीत गाती हैं अर्थात् जहां गीत गाती हुई किन्नरियों के गीतों पर मुग्ध सुधबुध खोकर मृग आ जाते हैं ।

राजते राजतेनायं सानुना सानुनायकः ।
यस्मिन्निशस्य गायन्तं किंनरं किं न रंस्यते ॥ ८ ॥

अन्वयः—राजतेन सानुना अयम् सानुनायकः राजते यस्मिन् गायन्तम् = किन्नरम् निशम्य क्रिम् न रंस्यते ॥ ८ ॥

सुधा—राजत इति । राजतेन सदृशम्, तेन = राजतधातुसदृशेन । सानुना = शिखरेण । अयम् = एषः । सानुनायकः = सानुनायक नाम पर्वतः । राजते = शोभते । यस्मिन् = यत्र पर्वते । गायन्तम् = गायनं कुर्वन्तम् । किन्नरम् = किंपुरुषम् । निशम्य = श्रुत्वा ! किं न रंस्यते = कः जनः रणोन्मुखः न भवति, अपितु रंस्यत एव । अत्र यमकालंकारः अनुष्टुब्वृत्तम् ॥ ८ ॥

हिन्दी—चांदी के समान चमचमाती हुई चोटियों वाला यह सानुनायक पर्वत है जिस पर गाते हुए किन्नरों के गीत सुनकर कौन व्यक्ति रणोन्मुख नहीं हो जाता है ॥८॥

इतश्चास्य—

जनयति जलबुद्धिं बाललीलामृगाणा-
मयमिह पटुकान्तिः स्फाटिको भित्तिभागः ।
इह हरितमणीनामुल्लसन्तो मयूखाः
सरसनवतृणालीलोभमुत्पादयन्ति ॥ ९ ॥

अन्वयः—इह पटुकान्तिः स्फाटिकः अयम् भित्तिभागः बाललीलामृगाणाम् जलबुद्धिम् जनयति । इह हरितमणीनाम् उल्लसन्तः मयूखाः सरसनवतृणालीलोभम् उत्पादयन्ति ॥ ९ ॥

सुधा—जनयतीति । इह = अत्र । अस्य = एतस्य (भवनस्य) ।

इह = अत्र । पटुकान्तिः = उज्ज्वलप्रभाः । स्फाटिकः = स्फटिकमणिसदृशः अयम्-एषः । भित्तिभागः = भित्यंशः । बाललीलामृगाणाम् = बालस्वभावहरिणानाम् । जलबुद्धिम्—जलस्य = पयसः बुद्धिम् = मतिम् भ्रान्तिम् वा । जडबुद्धिम् । जनयति । इह = उत्पादयति । इह = अत्र । हरितमणीनाम् = हरितरत्नानाम् । उल्लसन्तः = भासयन्तः । मयूखाः = किरणाः । सरसनवतृणाली लोभम्—सरसाः = सुरम्याः नवाः = नूतनाश्च तृणालयः = तृणपंक्त्यः, तेषां लोभम् = तृष्णाम् । उत्पादयन्ति = जनयन्ति । मालिनीवृत्तम् ॥ ९ ॥

हिन्दी—और इधर इस भवन का—देदीप्यमान कान्ति जैसे स्फटिक मणि के समान यह भित्तिभाग बाल स्वभावी मृगों की मृगतृष्णा (जलतृष्णा) को उत्पन्न करती हैं तथा यहां हरित मणियों को शोभित किरणें सरस तथा नवीन घास की पंक्तियों के लोभ को उत्पन्न कर रही हैं ॥ ९ ॥

इयं च—

गौरवं गौरवंशस्य पर्वतः पर्वतस्थले ।
भ्रमरी भ्रमरीणस्य कुरुतेऽकुरुतेन ते ॥ १० ॥

अन्वयः—गौरवंशस्य पर्वतः (अत एव) भ्रमरीणस्य ते भ्रमरी अकुरुतेन गौरवं कुरुते ॥ १० ॥

सुधा—गौरवमिति। गौरवंशस्य–गौरः वंशः यस्य तस्य = गौरकुलस्य। पर्वतः = गच्छतः (अतएव) भ्रमरीणस्य–भ्रमेण = देहवैक्लव्येन रीणस्य = खिन्नस्य। ते = तव। भ्रमरी = मधुकरी। अकुरूतेन = अकुत्सितेन गुञ्जारवेण। गौरवम् = प्रतिपत्तिविशेषम्। कुरुते = विदधाति। यमकालङ्कारः। अनुष्टुब्वृत्तम्॥ १०॥

हिन्दी—और यह—

गौरवंश में जन्मे हुए, भ्रमण करते थके हुए आप का मृदु गुञ्जन द्वारा मधुकरी स्वागत कर रही है॥ १०॥

अपि च—

इह कवलितकन्दं कन्दरे कन्दलिन्यां
भुवि विरचितकेलि क्रीडति क्रोडयूथम्।
इह सरसिजगर्भभ्रान्तभृङ्गं कुरङ्गाः
सरसि सरलयन्तः कन्धरां कं धयन्ति॥ ११॥

अन्वयः—इह कन्दलिन्याम् कन्दरे भुवि कवलितकन्दम् विरचितकेलिक्रोडयूथम् क्रीडति। इह सरसि कन्धराम् सरलयन्तः कुरङ्गाः सरसिजगर्भभ्रान्तभृङ्गम् कम् धयन्ति॥ ११॥

सुधा—इहेति। इह = अत्र। कन्दलिन्याम् = कन्दयुक्तायाम्। कन्दरे = गुहायाम्, भुवि=पृथिव्याम्। कवलितकन्दम्–कवलितम्=खादितं कन्दम् येन तत्। विरचितकेलि—विरचिता = कृता केलिः = क्रीडा येन तत्। क्रोडयूथम् = वराहकुलम्। क्रीडति = क्रीडाम् करोति। इह = अत्र। सरसि = तडागे। कन्धराम् = ग्रीवाम्। सरलयन्तः = ऋजुकुर्वन्तः। कुरङ्गाः = मृगाः। सरसिजगर्भभ्रान्तभृङ्गम्—सरसि जातानि सारसिजानि = कमलानि, तेषां गर्भे = कोषे भ्रान्ताः = चङ्क्रमन्तः भृङ्गा भ्रमराः यत्र तादृक्। कम् = जलम्। धयन्ति। मालिनी वृत्तम्॥ ५१॥

हिन्दी—और भी—यहां कन्द युक्त गुफावाली भूमि पर कन्द खाये हुए लीला (केलि) करते हुए वराहों शूकरों का यूथ खेल रहा है तथा यहां तालाब में गर्दन सीधी करते हुए मृग कमल कोष पर मड़राते हुए भौंरों वाले जल को पी रहे हैं॥ ११॥

इह पुनरनिशं निशम्य भिन्न-
द्रुमसुकुलानि कुलानि षट्पदानाम्।
श्रुतिसुखकरणं रणन्ति वीणां
तदनुगुणां गुणयन्ति किंनरेन्द्राः॥ १२॥

अन्वयः—पुनः इह अनिशम् षट्पदानाम् भिन्नद्रुममुकुलानि रजन्ति कुलानि निशम्य किंनरेन्द्राः श्रुतिसुखकरणम् तदनुगुणाम् वीणां गुणयन्ति॥ १२॥

सुधा—इहेति। पुनः = भूयः। इह = अत्र। अनिशम् = निरन्तरम्। षट्पदानाम्

भ्रमराणाम् । भिन्नद्रुममुकुलितानि-भिन्नद्रुमाणाम् = विभिन्नवृक्षाणाम् मुकुलितानि = मञ्जरीयुक्तानि । रणन्ति = गुञ्जन्ति । कुलानि = दलानि । निशम्य = आकर्ण्य किन्नरेन्द्राः = किं पुरुषाः श्रुतिसुखकरणम् = कर्णानन्दकरं । तदनुगुणाम् = तदनुरूपाम् । वीणाम् = विपञ्चीम् गुणयन्ति = वादयन्ति । आर्यावृत्तम् ।। १२ ।।

हिन्दी—पुनः यहां निरन्तर भौंरों के विभिन्न वृक्षों की मञ्जरियों पर गुन गुनाते हुए कुलों को सुनकर किन्नर कानों को आनन्द देने का कारण बनी उस मधुर गुञ्जार के अनुरूप ध्वनि करने वाली वीणा को बजा रहे हैं ।। १२ ।।

इतश्च क्रीडाचलस्थलकमलदीर्घिकातीरतरुतलमनुसरतु देवः ।।

और इधर क्रीडापर्वत के स्थलकमल तडाग (सरोवर) के तीर-वृक्षों की (सुखद) छाया में आप पधारें ।

यत्र च—

वहति नवविकासोल्लासिकिंजल्कलुभ्यन्-
मधुकरकृतगीता नर्त्तयन्नब्जराजीः ।
वनकरिमदगन्धस्पर्धिसप्तच्छदाली
कुसुमजकणशारः शारदीनः समीरः ।। १३ ।।

अन्वयः—वनकरिमदगन्धस्पर्धिसप्तच्छदाली कुसुमजकणशारः शारदीनः समीरः मधुकरकृतगीताः अब्जराजीः नर्तयन् नवविकाशोल्लासि किंजल्कलुभ्यन् वहति ।। १३ ।।

सुधा—वहतीति वनकरिमदगन्धस्पर्धि सप्तच्छदाली–वनकरीणां मदगन्धः तेन स्पर्धते तथा च सप्तच्छदाली = वनगजमदसुरभिस्पर्धिसप्तच्छदसखः । कुसुमजकणशारः—कुसुमजकणाः = मकरन्दलवास्तैः शारः = शवलः । शारदीनः—शरदि भवानि मुद्गादीनि विद्यन्ते येषां ते शारदिनः कृषीवलाः तेषामिनः = स्वामी । समीरः = पवनः । मधुकरकृतगीताः—मधुकरैः = भ्रमरैः कृतम् विहितम् गीतम् = गायनम् यासु ताः । अब्जराजीः = कमलपंक्तीः नर्तयन् = लासयन् । नवविकासोल्लासिकिञ्जल्कलुभ्यन्–नवानि = नूतनानि विकासोल्लासीनि–विकसितानि किञ्जल्कानि = परागरजांसि लुभ्यन् । वहति = चलति । मालिनीवृत्तम् ।। १३ ।।

और जहां—

हिन्दी—वनैले हाथियों की मदगन्ध से स्पर्धा करने वाले सप्तपर्ण के पुष्पों से चूर्ण पराग कणों से मिश्रित शरत्कालीन पवन गुनगुनाते हुये भौंरों से युक्त कमल पंक्तियों को हिलाता हुआ तथा नव विकसित पराग को लुभाता हुआ बह रहा है ।। ११ ।।

राजा तु तेन तस्याः सकलललितवनप्रदेशप्रकटनप्रियालापप्रपञ्चेन परितोषितः 'साधु भोः सारसिके सुभाषितमञ्जरि, साधु । गृहाण परितोषिकम्' इत्यभिधाय सर्वाङ्गीणभरणप्रदानेन प्रसन्नाननां तामकरोत् ।।

सुधा—राजेति । राजा = नृपः नलः । तु तस्याः = वनपालिकायाः । तेन = तादृशेन सकलललितवनप्रदेशप्रकटनप्रियालापप्रपञ्चेन-सकलानाम् = सम्पूर्णानाम् ललितवनप्रदेशानाम् = मनोरमकाननभूमीनाम् प्रकटनेन = वर्णनेन प्रियेण = रुचिकरेण आलापप्रपञ्चेन च = वार्तालापेन च । परितोषितः = सन्तोषितः । साधु = अहोभिः सारसिकेसरसि वासो यस्यास्तत्सम्बुद्धौ = हे सरोवरवासिनि ! सुभाषितमञ्जरि ! सुभाषितमेव= सूक्तिरेव मञ्जरी-कुसुमम् यस्यास्तत्सम्बुद्धौ = हे सूक्तिकुशले ! साधु = प्रशंसोक्तौ सम्बोधनम् । पारितोषिकम्=पुरस्कारम् । गृहाण = स्वीकुरु । इत्थम् । अभिधाय=कथयित्वा । सर्वाङ्गीणभरणप्रदानेन = सर्वाङ्गसम्बन्धिभूषणदानेन । ताम् = वनपालिकाम् । प्रसन्नाम्= मोदयुताम् । अकरोत् = चकार ॥

हिन्दी—राजा (नल) ने उस (वनपालिका) के सम्पूर्ण मनोरम वन प्रदेश के वर्णन तथा प्रिय आलाप प्रपञ्च के द्वारा प्रसन्न होकर—'शाबास हे सरोवर निवासिनि ! सुभाषित वचनों वाली ! शाबास । 'पुरस्कार ग्रहण करो' यह कहकर सम्पूर्ण शरीर के आभूषण प्रदान करके उसे प्रसन्न कर दिया ।

ततश्च संचरच्चटुलभृङ्गविहंगवेगवेल्लद्वकुलचम्पकचूतचन्दनमन्दरामन्दस्यन्दमानमकरन्दबिन्दुसंदोहाडम्बरिताकाण्डप्रावृषि, प्रलम्बताम्बूलवल्लीवलयितनितम्बनिम्बकिम्बजम्बीरजम्बूस्तम्बकदम्बके कुसुमितकरवीरवीरुधि कोरकितकरञ्जाञ्जननिकुञ्जशिञ्जानशुककपिञ्जले, जलदसमयनीरदनीलतमतमालतलताण्डवितशिखण्डिनि, मण्डलितमदकलकलहंसोत्तंसकमलवापीमण्डिते, मञ्जरितसिन्दुवारसुन्दरामोदनन्दिनि मन्दतरमारुतान्दोलनविलोलकक्कोलकुड्मलफलनालिकेरलवङ्गपूगपुंनागनारङ्गरङ्गितविहङ्गे भृङ्गमुखनखरपञ्जरजर्जरितसर्जखर्जूरमञ्जरीरजःपुञ्जपांसुलभुवि भुवो भूषणायमाने, 'सर्वर्तुनिवास'नामनि वने विहर्तुमारभत् ॥

सुधा—ततश्चेति । ततः च = तदनन्तरश्च । सञ्चरच्चटुलभृङ्गविहंगवेगवेल्लद्वकुलचम्पकचूतचन्दनमन्दरामन्द स्यन्दमानमकरन्दविन्दुसन्दोहाडम्बरिताकाण्डप्रावृटि—सञ्चरन्तः = परिभ्रमन्तः चटुलाः = चञ्चलाः भृङ्गाः=मधुकराः विहंगाः = पक्षिणश्च, तेषां वेगैः वेल्लन्तः = कम्पन्तः वकुलाः = मौलश्रीवृक्षाः चम्पकाः = चम्पकपादपाः चूताः = आम्राः चन्दनाः मन्दराश्च = मन्दारपादपाश्च, तेषाममन्देन = द्रुतेन स्यन्दमानेन = च्यवमानेन मकरन्दबिन्दुसन्दोहेन = मधुरससीकरपरिपूर्णेन आडम्बरिता = आवृता अकाण्डे = असमये, प्रावृट् = वर्षा ऋतुः यत्र तस्मिन् । प्रलम्बताम्बूलवल्लीवलयितनितम्बनिम्बकिम्बजम्बीरजम्बूस्तम्बकदम्बके—प्रलम्बमानाभिः = लम्बमानाभिः ताम्बूलवल्लीभिः = ताम्बूललताभिः वलयिताः = आवेष्टिताः नितम्बनिम्बाः किम्वाः जम्बीराः जम्बूपादपाश्च तेषां स्तम्बम् = स्तबकानि तेषां कदम्बानि = यूथानि यत्र तस्मिन् । कुसुमितकरवीरवीरुधि—कुसुमिताः करवीरवीरुधाः = करवीरलताः यत्र तस्मिन् । कोर-

कितकरञ्जाञ्जननिकुञ्जशिञ्जानशुककपिञ्जले—कोरकितानाम् = मुकुलितानाम् करञ्जानाम् अञ्जनपादपानाञ्च निकुञ्जेषु = कुञ्जेषु शिञ्जानः = गुञ्जारवं कुर्वाणः शुकाः कपिञ्जलाश्च = शुककपोताश्च यत्र तस्मिन् । जलदसमयनीरदनीलतमतमाल तलताण्डवितशिखण्डिनि—जलदसमये = मेघकाले नीरदा इव = घना इव नीलतमाः = श्यामतमाः ये, तमालाः = तमालवृक्षा तेषां तले = तदधस्ताण्डविताः = नृत्यन्तः शिखण्डिनः = मयूराः यत्र तस्मिन् । मण्डलितमदकलकलहंसोत्तंसकमलवापीमण्डिते—मण्डितैः = शोभितैः मतेन = क्षीवेन कलैः = सुन्दरैः कलहंसैः = मरालैः = उत्तंसाः = मण्डलीकृताः कमलवाप्यः कमलयुक्ता वाप्यः, तासाम् मण्डितम् = मण्डलम् यत्र तस्मिन् । मञ्जरितसिन्दुवार सुन्दरामोदनन्दिनि—मञ्जरिताः = मञ्जरीयुताः ये सिन्दुवाराः = सिन्दुवारपादपाः, तेषामामोदनन्दनम् = सुरभिसौख्यम् यत्र तस्मिन् । मन्दतरमारुतान्दोलनविलोलकक्कोलकुड्मलफलनालिकेरलवङ्गपूगपुन्नागनारङ्गरङ्गितविहङ्गे—मन्दतरस्य = अतिमन्दस्य मारुतस्य=पवनस्यान्दोलनेन=प्रचलनेन विलोलानाम् = चञ्चलानाम् कक्कोलानाम् कुड्मलानि = कलिकाः फलानि च तथा नालिकेराणि लवङ्गानि = लवङ्गफलानि पूगानि = पूगीफलानि पुन्नागानि = पुन्नागफलानि नारङ्गाणि = नारङ्ग फलानि च तेषु रङ्गिताः = अनुरञ्जिताः विहङ्गाः=पक्षिणो यत्र तस्मिन् । भृङ्गमुखनखरपञ्जरजर्जरितसर्जखर्जूरमञ्जरीरजःपुञ्जपांसुलभुवि—भृङ्गाणाम् = मधुकराणाम् धूम्याटपक्षीणां वा मुखैः = आननैः नखरैः = नखैः पञ्जरैश्च = पञ्जरभागैश्च जर्जरितानाम् = चूर्णीकृतानाम् सर्जाणाम् = सर्जवृक्षाणाम् खर्जूराणाम् = खर्जूरवृक्षाणाञ्च मञ्जरीरजः पुञ्जैः=कुसुमपरागैः पांसुला= धूसरिता भूः = भूमिः यत्र तस्मिन् । भुवः = पृथिव्याः । भूषणायमाने = अलङ्कार-सदृशे । सर्वर्तुनिवासनामनि = निखिलर्तुनामके । वने = विपिने । विहर्तुम् = विहारं कर्तुम् (नृपो नलः) आरभत = प्रारेभे ।

हिन्दी—तदनन्तर मँडराते हुये चञ्चल भौंरों और पक्षियों के वेग से हिलते हुए वकुल, चम्पा, आम, चन्दन तथा मन्दार वृक्षों से पूर्ण रूप से टपकते हुए मकरन्द विन्दुओं के कारण असमय में ही वर्षा ऋतु जैसे वातावरण वाले, लटकती हुई ताम्बूल लताओं से लिपटे हुए नीम, किम्ब, जम्बीर (नीबू) तथा जामुन के झुरमुटों वाले, फूलों से लदे कनेर वृक्षों वाले मुकुलित करञ्ज तथा अञ्जन वृक्षों की झाड़ियों में मधुर ध्वनि करते हुए शुकों एवं कबूतरों वाले बादलों के समय (वर्षाकाल) में अत्यन्त श्यामल मेघों के समान तमाल वृक्षों के नीचे नाचते हुए मयूरों वाले, मण्डलाकार मतवाले सुन्दर कलहंसों से शोभित कमलयुक्त बावलियों वाले, मञ्जरीयुक्त सिन्दुवार वृक्षों की सुन्दर सुगन्ध वाले, अतीव मन्द पवन के आन्दोलन से चञ्चल कक्कोल की कलियों तथा फलों और नारियल लवङ्ग (लौंग) पूग (सुपाड़ी) पुन्नाग और नारङ्ग फलों में अनुरक्त पक्षियों वाले, भौंरों अथवा धूम्याट पक्षियों के मुखों नाखूनों और पञ्जों से जर्जरित सर्ज और खजूर की मञ्जरियों से निकलते हुए पराग पुञ्ज से धूसरित भूमि वाले भूमि का अभूषण बने हुए 'सर्वर्तु निवास' नामक वन में राजा ने विहार करना आरम्भ कर दिया ।

तत्र च व्यातकरे प्रलयप्रचण्डपवनोल्लासिततनुतुहिनाचलगण्डशैललीलामाकलयन्तः, मन्दमरुत्तरङ्गिततनुतरशरदभ्रविभ्रमायमाणाः, सुरवारणेन्द्रविक्षोभितगगनमन्दाकिनीपतत्पांडुरडिण्डीरपिण्डपटलानि विडम्बयन्तः, शकलोदितेन्दुमण्डलसहस्रसंछादितामिव गगनमापादयन्तो, मन्दरगिरिपरिक्षेपक्षुभितक्षीरवारिधिदूरसमुच्छलितदुग्धकल्लोललीलां दर्शयन्तः, शेषाहिफणचक्रवालधवलाः, प्रमुदितहराट्टहासलवा इव मूर्तिमन्तः पतन्तः, अमन्दमन्द्रकोलाहलभरितभुवनान्तरालाः, सपदि धरातलमुत्फुल्लपाण्डुपङ्कजप्रकरप्रकारेण मण्डयन्तो निपेतुः कुतोऽपि पुण्डरीकपाण्डुपक्षपत्रराजयो सपदि राजहंसाः ॥

सुधा—च = तथा । तत्र व्यतिकरे = तस्मिन्नवसरे । प्रलयप्रचण्डपवनोल्लासिततनुतुहिनाचलगण्डशैललीलाम्—प्रलयस्य = प्रलयकालस्य प्रचण्डेन = तीव्रेण पवनेन = वायुना उल्लासितं तनुः = शोभितं शरीरम् यस्य तादृशः तुहिनस्य = सीकरस्याचलः = पर्वतः = हिमालयः तस्य गण्डशैललीलाम् = शिलाखण्डशोभाम् । आकलयन्तः = प्रकटयन्तः । मन्दमरुत्तरङ्गिततनुतरशरदभ्रविभ्रमायमाणाः—मन्देन मरुता = मन्देनपवनेन तरङ्गितानि = कम्पितानि तनुतराणि = क्षीणतराणि शरदभ्राणि = शरत्कालीन घनास्तानि विभ्रमायमाणाः = विभ्रममिव कुर्वन्तः । सुरवारणेन्द्रविक्षोभितगगनमन्दाकिनी पतत्पाण्डुरडिण्डीरपिण्डपाटलानि-सुरवारणेन्द्रेण = ऐरावतेन गजेन विक्षोभिता = उद्वेलिता या गगनमन्दाकिनी = वियद्गङ्गा, तस्याः पतन्ति पाण्डुराणि = श्वेतानि डिण्डीरपिण्डानीव = फेनपुञ्जानीव पटलानि = शुभ्राणि । विडम्बयन्तः = तिरस्कुर्वन्तः । शकलोदितेन्दुमण्डलसहस्रसंछादितम्—शकलः = खण्डशशी तस्योदितेन्दुमण्डलम् = उदयकालीनचन्द्रमण्डलम्, तदेव सहस्रम् = सहस्रसंख्यकम् तेन संछादितम् = सम्यग् आच्छादितम् । गगनम् = नभः । आपादयन्तः इव = पूरयन्त इव । मन्दरगिरिपरिक्षेपक्षुभितक्षीरवारिधिदूरसमुच्छलितदुग्धकल्लोललीलाम्—मन्दरगिरेः = मन्दरपर्वतस्य परिक्षेपेण = क्षीरसागरे पतनेन क्षुभितात् = उद्वेलितात् क्षीरवारिधेः = क्षीरसागरात् दूरम् = दूरीपर्यन्तम् समुच्छलितस्य = सम्यगुत्कम्पितस्य दुग्धकल्लोलस्य=क्षीरानन्दस्य लीलाम् = क्रीडाम् । दर्शयन्तः = प्रकटयन्तः । शेषाहिफणचक्रवालधवलाः = शेषाहेः = शेषनागस्य फणानाम् चक्रवालम् = फणसमूहम् तद्वद्धवलाः = उज्ज्वलाः । प्रमुदितहराट्टहासलवाः प्रमुदितस्य = प्रसन्नस्य हरस्य = शिवस्याट्टहासलवाः = अट्टहासांशाः मूर्तिमन्तः इव = साकारा इव । पतन्तः = स्खलन्तः । अमन्दमन्द्रकोलाहलभरितभुवनान्तरालाः—अमन्देन मन्द्रेण = गमीरेण गर्जनेन कोलाहलेन = हाहारवेण भरितम् = पूरितम् भुवनानाम् = लोकानाम् अन्तरालम् = अन्तरम् यैस्तादृशाः । सपदि = द्रुतम् । धरातलम् = भूतलम् । उत्फुल्लपाण्डुपङ्कजप्रकरप्रकारेण—उत्फुल्लानाम् = विकसितानाम् पाण्डुपङ्कजानाम् = श्वेतकमलानाम् प्रकरः समूहस्तत्प्रकारेण = तत्समेन । मण्डयन्तः = शोभयन्तः । पुण्डरीकपाण्डुपक्षपत्रराजयः = शुभ्रकमलदलसदृशपक्षपंक्तयः । राजहंसाः = मरालाःसपदि = शीघ्रम् । कुतोऽपि = कस्मादपि स्थानात् । निपेतुः = अपतन्; आगच्छन्निति भावः ।

हिन्दी—इसी बीच में प्रलय के प्रचण्ड पवन से ऊपर उठाकर पटके गये हिमालय के शिलाखण्डों की क्रीडा सी करते हुये, मन्द पवन से तरङ्गित क्षीणतर शरत्कालीन मेघों के समान लगने वाले, ऐरावत द्वारा विक्षोभित आकाशगङ्गा से गिरते हुए शुभ्र-फेन-पिण्डसमूह को विडम्बित करते हुए, उदित खण्ड चन्द्रमा के हजारों खण्डों से आच्छादित आकाशमण्डल के समान शोभावाले, मन्दराचल के (क्षीरसागर में) गिरने से क्षुभित क्षीरसागर से दूर तक छलके हुए (उमड़े हुए) दूध की छीटों की सुन्दरता को दिखलाते हुए, शेषनाग के फण-समूह के समान उज्ज्वल (शुभ्र), प्रमुदित शिवजी के अट्टहास कणों को साकार बिखेरते हुए, गम्भीर गर्जन के कोलाहल से जैसे त्रिभुवन के अन्तराल को भरते हुए, शीघ्र खिले हुए शुभ्र कमलसमूह के समान शुभ्रता से भूतल को शोभित करते हुए श्वेत कमल दल के समान पंखों वाले राजहंस कहीं से उतर पड़े।

तथाविधे च व्यतिकरे विस्मयविस्मृतनिमेषपया निर्वातनिश्चलनीलोत्पलपलाशशोभायमानलोचनः कौतुकाकूततरलितमनाः सपरिजनो नरपतिरवलोकयन्निश्चल एवावतस्थे ॥

सुधा—तथाविध इति। च = तथा। तथाविधे = तादृशे। व्यतिकरे = अवस्थायाम् विस्मयविस्मृतनिमेषपयः—विस्मयेन = आश्चर्येण विस्मृतम् निमेषपयः = पक्ष्मजलम् येन तादृशः। निर्वातनिश्चलनीलोत्पलपलाशशोभायमानलोचनः = निर्वातम् = वातरहितम् निश्चलम् = कम्पनरहितम् च यन्नीलोत्पलपलाशम् = नीलकमलम् तादृशे शोभायमाने = भ्राजमाणे लोचने = नयने यस्य सः। कौतुकाकूततरलितमनाः—कौतुकाकूतेन = कौतुकोत्कण्ठया तरलितम् = आन्दोलितं मनो यस्य सः। सपरिजनः = परिजनैः सहितः = सानुचरः। नरपतिः = नृपो नलः। अवलोकयन् = पश्यन्। निश्चल एव = स्तम्भित एव। अवतस्थे = अवस्थितवान्।

हिन्दी—ऐसी स्थिति में आश्चर्य से विस्मृत निमेष वाले, वायु के झोंको के बिना कम्पनरहित नील कमल के समान शोभायमान नयनों वाले, कौतुक के कारण तरलित मनवाले अनुचरों सहित राजा (नल) निश्चल देखते ही खड़े रह गये।

ते च धार्तराष्ट्रा अपि कृतपाण्डुपक्षपाताः, द्विजातयोऽपि सुराजिताः, केचिदुच्चचञ्चुपुटविघटितनिकटबालस्थलकमलकुड्मलाः सरसबिसकिसलयानि कवलयन्तः, केऽप्युन्नतसरलगलनालयो नलिनवनविमुखाः खमालोकयन्तः, केचिदुत्क्षिप्तपक्षविक्षेपपवनकम्पितकन्दलाः सलीलमुत्पतन्तः, केचिन्मदमधुरनिजनिनादनिर्जितशिञ्जाननूपुराः, पुरः पुरोऽस्य धावन्तो विचरितुमारभन्त ॥

सुधा—ते चेति। च = तथा। ते = इमे राजहंसाः = राजकुमाराश्च। धार्तराष्ट्राः अपि = राजहंसा अपि कृष्णैश्चरणाननैर्हंसा धार्तराष्ट्राः। पक्षे धृतराष्ट्रसुता अपि। कृतपाण्डुपक्षपाताः—कृतः = विहितः पाण्डुः = श्वेतवर्णः पक्षपातः = पक्षपतनम् यैस्ते पक्षे—पाण्डवपक्षपातिनः द्विजातयः अपि = पक्षिणः अपि। पक्षे ब्राह्मणाः अपि। सुराजितः = सुशोभिताः। पक्षे सुरया = मद्यपानेनजिताः अर्थात् मद्यवशीभूताः। केचित् = केऽपि।

उच्चचञ्चुपुटविघटितनिकटदालस्थलकमलकुड्मलाः—उच्चैः = उन्नतैः चञ्चुपुटैः चञ्चुभिः विघटिताः = त्रोटिताः निकटानाम्=समीपानाम् बालस्थलकमलानाम् = लघु स्थलपद्मानाम् कुड्मलाः = कलिकाः यैस्ते । सरसविसकिसलयानि—सरसानि = मधुराणि विसकिसलयानि = विसतन्तूनि । कवलयन्तः = खादन्तः । केऽपि = केचित् उन्नतसरलगलनालयः—उन्नताः = उच्चाः सरलाः = ऋजवश्च गलनालयः = कण्ठकाण्डानि येषां ते । नलिनवनविमुखाः–कमलवनविरक्ताः । खम् = आकाशम् । अवलोकयन्तः = पश्यन्तः । केचित् = केऽपि । उत्क्षिप्तपक्षविक्षेपपवनकम्पितकन्दलाः–उत्क्षिप्तानाम् = ऊर्ध्वंकृतानाम् पक्षाणाम् = पुंखानाम् विक्षेपः = प्रक्षेपस्तस्य पवनेन = वायुना कम्पितानि = उद्वेलितानि = कमलनालानि यैस्ते । सलीलम् = लीलया सहितम् = सक्रीडम् । उत्पतन्तः = उड्डीयन्तः केचित् = केऽपि । मदमधुरनिजनिनादनिर्जितशिञ्जाननूपुराः = मदमधुरेण = मदसरसेन निजनिनादेन = आत्मध्वनिना निर्जितानि = विजितानि शिञ्जाननूपुराणि क्वणनकेयूराणि यैस्ते । अस्य = एतस्य राज्ञः । पुरः पुरः = अग्रेऽग्रे । धावन्तः = प्रचलन्तः विचरितुम् = भ्रमितुम् । आरमत = प्रोरेभे ।

हिन्दी—(तथा) काले चरणों और कृष्ण मुखों वाले होते हुए भी श्वेत पंखों वाले (धार्तराष्ट्र–कौरव होते हुए भी पाण्डवों के पक्षपाती जैसे) पक्षी होकर भी सुशोभित (ब्राह्मण होकर भी मदिरा से परतन्त्र जैसे) कुछ अपनी चञ्चुपुटों से तोड़ कर निकटवर्ती स्थल कमल की छोटी छोटी कलियां लिये हुए सरस बिस तन्तुओं को खाते हुए कुछ ऊंची और सीधी गर्दनें किये हुए कमलवन की ओर से विमुख हो आकाश को देखते हुए, कुछ उठाये हुए पंखों के फड़फड़ाने से उत्पन्न वायु से कमल नालों को हिलाते हुए कौतुक-सहित उड़ते हुए, तथा कुछ अपने मतवाले मधुर निनाद से नूपुरों की आवाज को जीतने वाले राजहंस इस राजा के आगे आगे दौड़ते हुए (इधर उधर) घूमने लगे ।

राजापि परिधावितविहङ्गग्रहणाग्रहसमग्रव्यग्रपरिग्रहः परिहासोन्मीलदमलदन्तकान्तिस्तबकिताधरपल्लवो विहसन्नेव तेषामन्यतममनुच्चचटुलचरणचारीचर्यया चारु संचरन्तमीषदुत्क्षिप्तपक्षविलासविहसितविलासिनीलास्यलीलमुन्नमिताग्रग्रीवं जग्राह हेलया हंसम् ॥

सुधा—राजेति । परिधावितविहङ्गग्रहणाग्रहसमग्रव्यग्रपरिग्रहः–परिधावितानाम् = इतस्ततः प्रधावताम् विहङ्गानाम् = पक्षिणाम् ग्रहणाय = स्वायत्तीकरणायाग्रहः = प्रयासस्तस्मिन् समग्रः = सम्पूर्णः व्यग्रः व्यस्तः परिग्रहो यस्य सः । परिहासोन्मीलन्मलदन्तकान्तिस्तवकाधरपल्लवः–परिहासेन = हासेनोन्मीलताम् = विकसितानाम् अमलदन्तानाम् = स्वच्छरदानाम् कान्तिः = दीप्तिः स्तवकाधर एव पल्लवो यस्य तादृशः । राजा अपि = नृपोऽपि । विहसन् एव = प्रहसन्नेव । तेषाम् = उक्तानाम् । अन्यतमम् = एकम् । अनुच्चचटुलचरणचारीचर्यया अनुच्चया = निम्नया चटुलया = चञ्चलया च चरणचारीचर्यया = पादचलनगत्या । चारु = सुन्दरम् । सञ्चरन्तम् = सञ्चरणं कुर्वन्तम् ईषत् = किञ्चित् उत्क्षिप्तपक्षविलासविहसितविलासिनीलास्यलीलम्–उत्क्षिप्तेन = ऊर्ध्वंकृतेन

पक्षविलासेन = पक्षानन्देन विहसितानाम् = प्रसन्नानाम् विलासिनीनाम् = रमणीनाम् लास्यलीलामिव = नृत्यक्रीडामिव लीला = क्रीडा यस्य तम्। उन्नताग्रग्रीवम्—उन्नता = ऊर्ध्वंकृता अग्रग्रीवा = ग्रीवाग्रभागो येन तम्। हंसम् = मरालम्। हेलया = क्रीडया। जग्राह = गृहीतवान्॥

हिन्दी—(इधर उधर) दौड़ते हुए पक्षियों (हंसों) को पकड़ने के लिए सम्पूर्ण व्यस्तता करने वाले, हँसने के कारण विकसित उज्ज्वलदन्तकान्ति तथा गुच्छेदार अधर पल्लव वाले राजा ने भी हँसते हंसते उनमें से एक छोटे छोटे चञ्चल चरणों की सुन्दर गति से घूमते हुए कुछ ऊपर उठाये हुये पंजों के विलास से विहसितरमणियों की नृत्य लीला के समान सुन्दर लीला करने वाले, ग्रीवा के अग्रभाग को उठाये हुये हंस को खेल खेल में ही पकड़ लिया।

उत्क्षिप्तः स च तेन रक्तकमलगर्भविभ्रमायमाणपाणिपल्लवे, पाण्डुपद्म इव पद्मरागशुक्तितले, क्षणमुदयशैलशोणमाणिक्यशिखरशिखायामिन्दुरिव, विराजितो राजहंसो मृदुवाद्यमानरौप्यघनघर्घरीजर्जरस्वरेण कृतस्वस्तिशब्दो विस्पष्टवर्णविशेषं राजानमुपश्लोकयाञ्चकार॥

सुधा—उत्क्षिप्त इति। च = तथा। तेन = तथा कृतेन। रक्तकमलगर्भविभ्रमायमाणपाणिपल्लवे—रक्तम् = अरुणम् कमलगर्भम् = पद्मकोषम् विभ्रमायमाणे = सम्भ्रमे क्रियमाणे पाणिपल्लवे = पल्लवसदृशे सुन्दरे करे पाण्डुपद्म इव = श्वेतकमलसदृशः। पद्मरागशुक्तितले = शोणमाणिक्यशिलातले। क्षणम् = क्षणमात्रम्। उदयशैलशोणमाणिक्यशिखरशिखायाम्—उदयशैलस्य = उदयाचलस्य शोणमाणिक्यशिखरस्य = रक्तमणिपर्वतस्य शिखायाम् = शिखरे! इन्दुः इव = चन्द्र इव विराजितः = शोभितः। उत्क्षिप्तः गृहीतः सः राजहंसः = मरालः मृदुवाद्यमानरौप्यघनघर्घरीजर्जरस्वरेण—मृदुना = मधुरेण वाद्यमानेन वादनशीलेन रौप्यघनरूपवाद्यस्य = रजतमेघस्य घर्घरी इति ध्वनिवाद्यसदृशेन जर्जरस्वरेण = घर्घरध्वनिना। कृतस्वस्तिशब्दः—कृतः = विहितः स्वस्तिशब्दः = जयध्वनिः, मङ्गलशब्दो वा येन तादृशः हंसः। विस्पष्टवर्णविशेषम् = स्पष्टाक्षरविशिष्टविधिना। राजानम् = नृपं नलम्। उपश्लोकयाञ्चकार = प्रशंसामकरोत्॥

हिन्दी—तथा इससे लालकमल कोष-को भ्रम में डालने वाले करपल्लव में पद्मराग मणि की शुक्ति पर रखे पद्म के समान क्षणभर के लिए उदयाचल की लालमणियों वाले शिखरों की चोटी पर चन्द्रमा के समान विराजित पकड़ा गया वह राजहंस मधुर बज रहे रौप्यघनरूपी घर्घरी (झांझ बाजा) के समान घर्घरस्वर से 'स्वस्ति' शब्द कहकर बड़े ही स्पष्ट अक्षरों में राजा की प्रशंसा करने लगा।

पाण्डुपङ्कजसंलीनमधुपालीसमं गलम्।
यो बिभर्ति विधेयात्ते ना कपाली स मङ्गलम्॥ १४॥

अन्वयः—पाण्डुपङ्कजसंलीन मधुपालीसमम् गलम् यः बिभर्ति (सः) ना कपाली ते मङ्गलम् विधेयात्॥ १४॥

सुधा—पाण्डुपङ्कजेति । पाण्डुपङ्कजसंलीनमधुपालीसमम्-पाण्डुषु पङ्कजेषु संलीनानाम् मधुपानाम् आलयस्तत्समम् = श्वेतसरोजलीनालिश्रेणिनिभम् गलम् = कण्ठम् । यः बिभर्ति=यो धारयति । सः ना=सः पुरुषः । कपाली—कपालमस्यास्तीति = कपालमाली शिवः । ते = तव, नलस्य । मङ्गलम् = भद्रम् । विधेयात् = कुर्यात् ।। अनुष्टुब्वृत्तम् ।।

हिन्दी—(जो) श्वेत कमल पर संलग्न भौरों की पंक्ति के समान नीले गले (नीलकण्ठ को) जो धारण करता है वह व्यक्ति अर्थात् कपाल धारण करने वाले शिवजी तुम्हारा (राजा नल का) मङ्गल (शुभ) करे ।। १४ ।।

अपि च—

सरलप्रियं गुणाढ्यं लम्बितमालं विचित्रतिलकं च ।
वनमिव वपुस्तवैतत्कथमवनं नृप जनस्याभूत् ।। १५ ।।

अन्वयः—सरलप्रियम् गुणाढ्यम् लम्बितमालम् विचित्रतिलकम् च वनम् इव तव एतत् वपुः नृपजनस्य अवनम् कथम् अभूत् ।। १५ ।।

सुधा—सरलेति । सरलप्रियम्—सरलाः = ऋजुस्वभावाः प्रियाः = सुहृदः यस्य तम् । पक्षे—सरलाःऋजवः प्रियाः = प्रियङ्गुवृक्षा यत्र तत् । गुणाढ्यम् = शौर्यादिगुणयुक्तम् । लम्बितमालम् = लम्बिता = लम्बमाना माला = स्रक् यस्य तम् । पक्षे—लम्बिनः = प्रलम्बाः तमालाः—तमालवृक्षाः यत्र तत् । विचित्रतिलकम्—विचित्रम् = चित्रम् तिलकम् = पुण्ड्रकम् यस्य तम् । पक्षे—विचित्राः = अद्भुताः तिलकाः = तिलकवृक्षाः यत्र तत् ! वनम् इव = काननम् इव । तव = ते । एतत् = इदम् । वपुः = शरीरम् । नृपजनस्य = राज्ञः । अवनम् = रक्षणम् । पक्षे—वनरहितम् कथम् = केन प्रकारेण । अभूत् = आसीत् ।। १५ ।।

हिन्दी—और भी—(राजा पक्ष में) सरल मित्रों वाले, शौर्य आदि गुणों से युक्त, लटकती हुई माला वाला तथा विचित्र प्रकार के तिलक वाला वन के समान (मनोरम) तुम्हारा यह शरीर अवन (रक्षक) कैसे हो गया ।

(वनपक्ष में) सरल प्रियङ्गु वृक्षों वाला गुणों से युक्त, लम्वे तमाल पादपों और विचित्र तिलक वृक्षों वाला यह वन अवन कैसे हो गया ।। १५ ।।

अपि च—

वरसहकारकरञ्जकवीरतरोऽशोकमदनपुंनाग ।
विविधद्रुममय राजन्कथमसि न विभीतकः क्वापि ।। १६ ।।

अन्वयः—राजन् ! वरसहकारकरञ्जक वीरतरः अशोकमदनपुन्नाग विविधद्रुममय क्वापि विभीतकः सः कथम् असि ।। १६ ।।

सुधा—वरेति । राजन् = हे नृप ! वरसहकारकरञ्जकवीरतरः—वराः = श्रेष्ठाः—सहकारकाः = सहायकाः सचिवादयः यस्य । तथा रञ्जकः = रञ्जयतीति = मोदकः तथा वीरतरः—वीराणाम् = शूद्रकादीनामिव तरः बलं जवो वा यस्येति तत्संबुद्धौ न दीर्घः ।

न शोको यस्य सः=शोकरहितः तथा मदन इव=मदनः=कामः। पुन्नाग इति नाग शब्दः प्रशंसायाम्। विविधद्रुममय इति पदात् द्रुमार्थोऽप्यूह्यः तद्यथा—सहकारः=आम्रः, करञ्जको नक्तमालः वीरतरुर्नदीसर्जः। यदमरः—नदीसर्जो वीरतरुरिन्द्रद्रुः ककुभोऽर्जुनः। अशोकः कंकेल्लिः मदनः शल्यः, यत्फलं विवाहे वधूवरपाणौ वध्यते। पुन्नागः=सुरपर्णिका। कथमिति विरोधो विभीतकस्याक्षार्थत्वात् प्रकृते तु विभीतकौ विशेषेण भीत इति कुत्सायामनुकम्पायाम्वा कन्। आर्यावृत्तम्॥ १६॥

हिन्दी—और भी—हे राजन्! अच्छे सहायकों वाले, रञ्जक और शूद्रक आदि वीरों की भांति वेगवान्, शोकरहित कामदेव और पुरुषों में प्रशंसनीय! विशिष्ट पक्षियों के पोषक वृक्ष के समान आश्रयमय! कहीं भी विभीतक (जुआ खेलने वाले) किस प्रकार हो॥ १६॥

अपि च—

बाणकरवीरदमनक शतपत्रकबन्धुजीवक सुजाते।
नृप विविधविटपरूपस्तथापि विटपः कथं नासि॥ १७॥

अन्वय.—बाणकरवीरदमनक शतपत्रकबन्धुजीवक सुजाते! नृप! विविधविटपरूपः (असि) तथापि विटपः कथम् न असि॥ १७॥

सुधा—बाणेति। बाणकरवीरदमनकशतपत्रकबन्धुजीवक!—बाणाः करे यस्य सः बाणकरस्तथा वीरदमनकः—वीराणाम्=शूराणाम् दमनकः=नाशकस्तथाशतपत्रकम्—शतम्=संख्यकानि पत्रकाणि=वाहनानि यस्य सः=शतवाहनस्तथा बन्धुजीवकः—बन्धूनाम्=भ्रातॄणाम् जीवकः=उद्धारकस्तत्सम्बुद्धौ। हे सुजाते—शोभनजातिर्यस्य सः, तत्सम्बुद्धौ=हे शोभनकुल! हे नृप=हे राजन्! शब्दतः बाणकरबीर-दमनक-शत-पत्रक-बन्धु जीवक जातिः विविध विटपरूपः=विभिन्नवृक्षस्वरूपः असि तथापि (त्वम्) विटपः—विटान् पातीति=अपात्रभर्ता न=नासि। कथमिति विरोधोद्भावने विटप-शब्दस्य वीरुदर्थत्वात्॥ १७॥

हिन्दी—हे हाथों में बाण धारण किये, वीरों का दमन करने वाले, सौ वाहनों वाले भाई बान्धवों को उद्धार करने वाले! उत्तम कुलवाले! राजन्। शब्दोंसे बाणकरवीर-दमनक-शतपत्रक-बन्धु जीवकादि विभिन्न वृक्षों के रूप वाले होकर भी आप अपात्रों (नीचों का) पालन करने वाले विटप किसी प्रकार नहीं हों॥ १७॥

राजा तु तदाकर्ण्य सविस्मयम् 'अहो अस्य धैर्यं मनुष्यसंनिधौ आश्चर्यं रूपे, माधुर्यं वाचि, प्राचुर्यं प्रज्ञायाम्, औदार्यमर्थे, गाम्भीर्यं वर्णव्यक्तौ। प्रायेणाहारमैथुननिद्राभयभ्रमणमात्रविवेकासु कथं प्रागल्भ्यमेतत्पक्षिजातिषु। तदेष विहंगव्यञ्जनः कोऽपि कामचारी भविष्यति। सर्वथा मनसापि नावज्ञेयाः केऽपि प्राणिनः। यतः कर्मतः कामतः शापतः संछन्नरूपाण्यपि भ्रमन्ति विविधाश्चर्यभाञ्जि 'भूतानि' इति चिन्तयन्नुचितज्ञस्तमीषदुल्लसितसिन्दुवारमञ्जरीभिरिव कुन्दकान्तदीप्तिभिरर्चयन्स्वागतमपृच्छत्॥

सुधा—राजेति। राजा तु = नृपस्तु। तत् = पूर्वोक्तम्। आकर्ण्य = श्रुत्वा। स विस्मयम्–विस्मयेन सहितम् = साश्चर्यम्। अस्य = एतस्य पक्षिणः। मनुष्यसन्निधौ = मानवसमीपे। धैर्यम् = धीरता। रूपे = सौन्दर्ये आश्चर्यम्=अद्भुतत्वम्। वाचि=वाण्याम्। माधुर्यम् = मधुरता। प्रज्ञायाम् = बुद्धयाम्। प्राचुर्यम् = बाहुल्यम्। अर्थे = वित्ते। औदार्यम् = उदारता। वर्णव्यक्तौ = वर्णोच्चारणे। गाम्भीर्यम् = गम्भीरता। अहो = आश्चर्यजनकम्। प्रायेण = प्रायशः। आहारमैथुननिद्राभयभ्रमणमात्रविवेकासु आहारः = भोजनम् मैथुनम् = विषयभोगः निद्रा = शयनम् भयम् = भीतिः भ्रमणम् = पर्यटनञ्च एतन्मात्रेषु विवेकः = ज्ञानम् यासाम् तासु एतत्पक्षिजातिसु = एतासु विहङ्गजातिषु। कथम् = कीदृक्। प्रागल्भ्यम् = चातुर्यम् (अस्ति)। तत् = अतः। एषः=अयम्। विहंगव्यञ्जनः = पक्षिश्रेष्ठः। कः अपि = कश्चित्। कामचारी = स्वेच्छाचारी विद्या। धरादिः। भविष्यति = स्यात्। सर्वथा = सर्वप्रकारेण। मनसा = चेतसा अपि। केऽपि = केचन। प्राणिनः = जीवाः अवज्ञेयाः = अवमान्याः न। यतः = हि। कर्मतः = कर्मणः। कामतः= इच्छायाः। शापतः = शापवशाद् वा। संछन्नरूपाणि अपि = प्रच्छन्नस्वरूपाणि अपि। भ्रमन्ति = अटन्ति। विविधाश्चर्यभाञ्जि = बहुविधाश्चर्यशालीनि। भूतानि = प्राणिनः। इति = इत्थम्। चिन्तयन् = विचारयन्। उचितज्ञः = यथोचितविधिज्ञः राजा। तम् = हंसम्। ईषत् = किञ्चित्। उल्लसितसिन्दुवारमञ्जरीभिः—उल्लसिताभिः=शोभिताभिः सिन्दुवारमञ्जरीभिः = सिन्दुवारवृक्षमञ्जरीभिः। इव = समम्। कुन्दकान्तदीप्तिभिः— कुन्दस्य = कुन्दपुष्पस्य कान्तिभिः मनोहरादीप्तिभिः = प्रभाभिः। अर्चयन् = सपर्याम् कुर्वन्। स्वागतम् = शुभागमनम्। अपृच्छत् = पपृच्छ।

हिन्दी—राजा ने यह सुनकर आश्चर्य सहित मनुष्य के समीप इस पक्षी का धैर्य धन्य है। इसके रूप में आश्चर्य, वाणी में माधुर्य, बुद्धि में प्रचुरता अर्थ में उदारता और वर्णोच्चारण में गम्भीरता धन्य है। प्रायः आहारमैथुन-निद्रा-भय तथा भ्रमण मात्र के ज्ञान वाली इस पक्षिजाति में प्रगल्भता कैसी? अतः यह उत्तम पक्षी कोई कामचारी विद्याधर आदि होगा। सर्वथा मन से भी किन्ही प्राणियों का अपमान नहीं करना चाहिए। क्योंकि कर्म से, इच्छा से अथवा शाप के वश प्रच्छन्नरूप वाले विविध आश्चर्यों वाले प्राणी घूमा करते हैं'। इस प्रकार सोचते हुए उचित का ज्ञान रखने वाले राजा (नल) ने उस राजहंस से कुछ खिली हुई सिन्दुवारमञ्जरी के समान कुन्दपुष्प को मनोहर छटा से पूजा करते हुये स्वागत प्रश्न पूछा।

असावपि प्रणयप्रणतशिराः शुचिरोचिषां चयेन पाण्डुपुष्पप्रकरप्रकारेण प्रतिपूजयन्निव 'देव, भवदवलोकनेनाह्लादितमनसो ममाद्य स्वागतम्' इति ब्रुवाणो राजानं रञ्जयाञ्चकार॥

सुधा—असाविति। असौ अपि = एषोऽपि। प्रणयप्रणतशिराः—प्रणयेन = प्रेम्णा च प्रणतम् = अवनतम् शिरः = उत्तमाङ्गं यस्य सः। शुचिरोचिषाम् = पूतकान्तीनाम्। चयेन = समूहेन इव। पाण्डुपुष्पप्रकरप्रकारेण पाण्डुपुष्पाणाम् = श्वेतकुसुमानाम् प्रकरस्य=

समूहस्य प्रकारेण = विधिना। प्रतिपूजयन् इव = प्रत्यर्चयन्निव। 'देव' – राजन्! भवद-वलोकनेन—भवतः = श्रीमतः अवलोकनेन = दर्शनेन। आह्लादितमनसः—आह्लादितम् = मोदयुक्तम् मानसम् = चेतो यस्य तादृशस्य मम = मे। 'अद्य स्वागतम्' = अद्य सत्कारः (अभवत्) इति = एवम् ब्रुवाणः = कथ्यमानः हंसः। राजानम् = नृपम्। रञ्जयाञ्च-कार = अनुरञ्जितवान्।

हिन्दी—उस (हंस) ने भी प्रेम के कारण शिर झुकाये हुये श्वेत पुष्पसमूह के रूप में अपनी पवित्र कान्ति के समूह से मानों प्रतिपूजन करते हुए 'हे देव आपके दर्शन मात्र से ही आह्लादित मन वाले मेरा आज स्वागत हो गया' यह कहते हुए राजा को प्रसन्न कर दिया।

अत्रान्तरे त्रासतरलतरतरत्तारकमकाण्डाडम्बरितबाष्पप्लवप्लवमानमिव वहन्ती चक्षुः, उत्क्षिप्तपक्षपत्रपल्लवव्याजेन संगृहीते सहचरे शाखोद्धारमिव दर्शयन्ती, हंसी दूरादवनिपालमवाप्य रौप्यमयघण्टाटङ्कारकोमलया गिरा श्लोक-द्वयमपठत्॥

सुधा—अत्रेति। अत्रान्तरे = एतस्मिन्नवसरे। त्रासतरलतरतरत्तारकम्—त्रासेन = भयेन तरलतरम् = चञ्चलतरम् तरत्तारकम् = लोलतारकम्। चक्षुः = अक्षि। अकाण्डा-डम्बरित बाष्पप्लवमानम् इव अकाण्डे—अनवसरे आडम्बरितम् तथा बाष्पैः = अश्रुभिः प्लवमानम् इव तरलायमानमिव। वहन्ती = धारयन्ती। उत्क्षिप्तपक्षपत्रपल्लवव्याजेन उत्क्षिप्तानि = ऊर्ध्वंकृतानि पक्षपत्राणि = पुङ्खान्येव पल्लवास्तेषां व्याजेन=मिषेण। हंसी= राजहंसस्त्री। सहचरे = सेवके। संगृहीते=आगृहीते सति शाखोद्धरम् इव – अन्यायपूत्कार चिह्नं शाखाग्रहण इव। दर्शयन्ती = प्रदर्शयन्ती दूरात् = दूरस्थानात्। अवनिपालम् = नृपम्। अवाप्य = प्राप्य। रौप्यमय घण्टाटङ्कारकोमलया—रौप्यमयस्य = रजतमयस्य घण्टायन्त्रस्य टङ्कारमिव—ध्वनिरिव कोमलया = मधुरया। गिरा = वाण्या। श्लोक द्वयम् = द्वौ श्लोकौ। अपठत् = पपाठ।

हिन्दी—इसी बीच में भय के कारण चञ्चल पुतलियों वाले अनवसर में आसुओं की बाढ़ में डूबी (डबडबाई) आंखों वाली फड़फड़ाते हुए पंख रूपी पल्लवों के बहाने से अनुचर के द्वारा पकड़ लिए जाने पर अन्याय को प्रकट करने के लिए एक डाल से दूसरी डालपर बैठती हुई जैसी (विरोध प्रकट करती हुई) हंसी दूर से राजा के निकट आकर चांदी के घंटे की मधुर टङ्कार के समान कोमल वाणी से (यह) दो श्लोक पढ़ने लगी।

एकान्ते सेवते योगं मुक्ताहारपरिच्छदः।
हंसः समोक्षयोग्योऽपि देव किं बध्यते त्वया॥ १८॥

अन्वयः—देव! मुक्ताहारपरिच्छदः योगम् एकान्ते सेवते। सः हंसः मोक्षयोग्यः अपि त्वया किम् बध्यते॥ १८॥

सुधा—एकेति। अस्यापत्यमिः। इरिव इः कन्दर्पप्रतिमः। ततः सम्बुद्धौ 'ए' इति

देव इति = हे कामदेवरूपसदृश नृप ! मुक्ताहारपरिच्छदः—मुक्ताहारः = मौक्तिकहार-स्तद्वत्परिच्छदौ = पक्षती यस्य (शुभ्रत्वात्) सः । आत्मपक्षे त्यक्ताहारपरिवारः सन् । यः = एष हंसः । अगम् = पादपम् एकान्ते = एकान्तस्थाने सेवते = अध्यास्ते । आत्म-पक्षे—योगम् = अध्यात्मम् कान्ते = कमनीये । ए = कृष्णे । सेवते = भजते । सः = तादृशः । हंसः = हंसपक्षी, आत्मा वा । मोक्षयोग्यः अपि = मोचनानुकूलः अपि । पक्षे समः = समदर्शनः अक्षयोग्यः अपि = इन्द्रियसम्बद्धोऽपि । त्वया = भवता । पक्षे—पुरुषा-पेक्षया अन्यया प्रकृत्या । किं बध्यते = किमिति बन्धने नीयते । पक्षे न बध्यत एव इत्यर्थः ।। १८ ।।

हिन्दी—(हंस पक्ष में) हे देव ! मोतियों के हार के समान उज्ज्वल पंखों वाला जो हंस (पक्षी) वृक्ष पर एकान्त में निवास करता है ऐसा निरपराध मोक्ष-योग्य (छोड़ दिये जाने योग्य) हंस आप के द्वारा क्यों बांधा (पकड़ा) गया है ?

(आत्मा पक्ष में) हे कमनीय कान्ति वाले देव (विष्णु भगवान्) भोजन तथा परिवार आदि का परित्याग किया हुआ आत्मा (जीव) जो कि एकान्त में अध्यात्म का भजन करता है ऐसा हंस (जीवात्मा) समदर्शी और इन्द्रिय सम्बद्ध होकर भी आप की अपेक्षा अन्य (प्रकृति) के द्वारा बांधा नहीं जा सकता है ।। १८ ।।

नीरञ्जनपदे तिष्ठन्विश्वसंसारसङ्गतः ।
हंसः किं बध्यते क्वापि यस्य नालम्बनं प्रियम् ।। १९ ।।

अन्वयः—नीरञ्जनपदे तिष्ठन् विश्वसं सारसंगतः यस्य नालम् वनम् प्रियम् (सः) हंसः क्वापि किम् बध्यते ।

सुधा—(हंसपक्षे) नीरञ्जनेति । जनपदे—जनानां = लोकानाम् पदे = स्थाने = पुरग्रामादौ । अतिष्ठन् = अनिवसन्, तादृशम् । विश्वसम् विश्वसन्तीति = विशेषेण श्वासं गृह्णन्तीति विश्वसाः=तादृशं प्राणिनम् अथवा वयः=पक्षिणः श्वसाः यत्र तथाभूतम् । सार-सम् सरस इदं सारसम् नीरम् = जलम् गतः = यातः । हंसः = मरालः । यस्य=एतस्य । नालम्-नलस्येदं नालम् = तृणसम्बन्धि वनम् = अरण्यम् । प्रियम् = रुचिकरम् (सः) क्वापि = कुत्रापि । किम् बध्यते = किमिति बन्धनं नीयते ।। १९ ।।

(आत्मपक्षे) नीरञ्जनपदे = नीराग पदे । तिष्ठन् = वसन् । हंसः = जीवः यस्य । विश्वसंसारसंगतः = विश्वेभ्यः = निखिलेभ्यः संसारसंगतः = संसारसंगेभ्यः । आलम्बनम् = आसक्तिः । न प्रियम् = न रुचिकरम् । क्वापि = कुत्रापि । कि बध्यते = न बध्यते एव ।। १९ ।।

हिन्दी—(हंस पक्ष में) ग्राम नगर आदि में न रहते हुए प्राणी को जो कि सरस जल में रहने वाला है तथा जिसे तृण सम्बन्धी वन प्रिय है ऐसा हंस कहीं भी क्या बांधा जाने योग्य है ।। १९ ।।

(आत्मपक्ष में) वैराग्य पद पर स्थित जीव जिसे कि संपूर्ण सांसारिक सङ्गों से आसक्ति प्रिय नहीं है, कहीं क्या बन्धन में पड़ता है अर्थात् सांसारिक जन्म मरण के बन्धन में नहीं पड़ता है ।। १९ ।।

अन्यच्च—

राजन्, जलपक्षिणो मुनय इव ये मीनाहारं वाञ्छन्ति, बहुधा वनव्यसनिनो बिसाधाराः। तदलमाग्रहेण ॥

अन्वयः—हे राजन् ! ये अमी आहारम् न वाञ्छन्ति बहुधावनव्यसनिनः बिसाधाराः मुनयः इव जलपक्षिणः। ये मीनाधारम् वाञ्छन्ति, बहुधावनव्यसनिनः बिसाधाराः (सन्ति) तत्, आग्रहेण अलम् ॥

सुधा—राजन्निति। हे राजन् = हे नृप ! ये अमी = एते। आहारम् = भोजनम्। न वाञ्छन्ति = नाभिलषन्ति। बहुधा = प्रायः वनव्यसनिनः = वनवासिनः बिसाधाराः = व्यपेतः साधारः येभ्यस्ते उत्सवादिविरुद्धाः। मुनयः = मुनिजनाः इव जलपक्षिणः = जलवासिनः खगाः। मीनाहारम्—मीनाः = मत्स्याः एव आहारम् = भोजनम् येषां तत्। वाञ्छन्ति = अभिलषन्ति। बहुधावनव्यसनिनः—बहुधावनं = अतिप्लवनम् व्यसनम् येषां ते। बिसाधाराः—बिसम् = पद्मिनीकन्दम् आधारो जीवनं येषां ते। (भवन्ति)। तत् = अतः अलम् आग्रहेण = आग्रहो न करणीयः ॥

हिन्दी—हे राजन् ! यह आहार की कामना न करने वाले, अधिकतर वन में ही रहने वाले साधारण तिथिपर्वोत्सवादि से विपरीत रहने वाले मुनियों के समान जलपक्षी जो कि केवल मछलियों का ही भोजन चाहते हैं, अधिकतर दौड़ते रहते हैं और कमल-कन्द जिनका आधार हैं, होते हैं। अतः आग्रह नहीं करना चाहिए।

राजा तु तेन तस्याः श्लेषश्लाघिना श्लोकोक्तिरसेनाह्लाद्यमानो नर्मालाप-लीलया तां बभाषे ॥

सुधा—राजेति। राजा तु = नृपस्तु। तेन = तादृशेन। तस्याः = हंस्याः। श्लेष-श्लाघिना = श्लेषप्रकाशनशीलेन। श्लोकोक्तिरसेन = श्लोककथनानन्देन। आह्लाद्यमानः = मुदितः। नर्मालापलीलया नर्मालापस्य = मधुरभाषणस्य लीलया = क्रीडया। ताम् = हंसीम् बभाषे = उक्तवान्।

हिन्दी—राजा (नल) उसके इस प्रकार श्लेष को प्रकट करने वाले श्लोक कथन के आनन्द से प्रसन्न हो मधुर आलाप लीला के द्वारा कहने लगे।

'अनेकधा यः किल पक्षपातं सदा सदम्भोजगतः करोति।
स हंसिकेदारविहारशीलो न बध्यते किं बहुनाशकुन्तः' ॥ २० ॥

अन्वयः—हे हंसिके ! यः सदा जगतः सदम्भः अनेकधा पक्षपातम् करोति (तथा) दारविहारशीलः बहुनाश कुन्तः सः किम् न बध्यते किल ॥ २० ॥

अथवा—हे हंसिके, यः सदम्भः सदा जगतः पक्षपातम् करोति (तथा) दारविहार-शीलः अनेकधा बहुनाशकुन्तः सः किम् न वध्यते किल ॥ २० ॥

अथवा—हे हंसि ! किं बहुना। सदम्भोजगतः यः सदा, अनेकधा पक्षपातम् करोति सः केदारविहारशीलः शकुन्तः किल न बध्यते किम् ॥ २० ॥

सुधा—अनेकधेति । हे हंसिके=हे हंसपत्नि । यः सदा=नित्यम् । जगतः= सर्वस्य । सदम्भः—दम्भेन सहितः=दाम्भिकः । तथा अनेकधा=प्रणतिप्रत्युपकारा-दिना । पक्षपातम्=ममत्वम् । करोति=विदधाति । (तथा) दारविहारशीलः=दार-क्रीडारतोऽब्रह्मचारी । (तथा) बहुनाशकुन्तः बहून्नाशयत्येवंविधः कुन्तः प्रासो यस्येति= हिंसापापरतः । सः=तादृशः किन्न बध्यते किल=नूनं कथं न वध्यते ॥ २० ॥

(अथवा) हे हंसिके ! यः सदम्भः=दाम्भिकः । सदा=नित्यम् । जगतः= संसारस्य । पक्षपातम्—पक्षस्य=मित्रवर्गस्य पातम्=नाशम् करोति । (तथा) जगतः दारविहारशीलः=सर्वदारेषु क्रीडा परः । (तथा) अनेकधा=बहुधा बहुनाश कुन्तः= बहुधातिकुन्तास्त्रः । सः=महापराधी । किं न बध्यते किल=नूनमेव बध्यते ॥ २० ॥

(अथवा) हे हंसि=हे हंसस्त्रि ! किं बहुना=किमधिकेन । सदम्भोजगतः=सत्प-थगतः सन् यः सदा=सर्वदा । अनेकधा=बारंबारम् । पक्षपातम्=पुंखनिपातम् । करोति । केदारविहारशीलः=केदारविहारम्=क्षेत्रविचरणं शीलयति यः सः शकुन्तः= पक्षी हंसः किल=नूनम् । न वध्यते बंधनेनैव नीयते । किं तर्हि मुच्यत एव ॥ २० ॥

हिन्दी—हे हंसिके ! जो सदा सबके साथ दम्भ करता है, प्रणय एवं उपकारादि अनेक प्रकार से ममत्व करता है तथा स्त्रीक्रीडारत रहता है एवं अति विनाश कर कुन्त के समान हिंसा-तत्पर है वह तो अवश्यमेव बांधा जाता है ॥ २० ॥

हे हंसिके ! जो पाखण्डी सदा सभी मित्र वर्ग का नाश करता है, संसार की स्त्रियों में क्रीडारत रहता है और अनेक प्रकार से अतिघातक कुन्तास्त्र के समान महान् अप-राधी है वह तो अवश्यमेव बांधा जाता है ॥ २० ॥

हे हंसि ! अधिक क्या कहें । उत्तम कमलों में रहते हुए जो सदा बारबार पंख फड़फड़ाता है और खेतों में विचरण करता है ऐसा हंसपक्षी निश्चय ही बांधा नहीं जाता है, क्या वह छोड़ ही दिया जाता है ? ॥ २० ॥

किं चान्यदपि श्रूयतां बन्धस्य कारणम् ॥

सुधा—अपरपरिभोगप्रतिपादनेर्ष्ययोत्कृष्टदोषदर्शनेन च हंसं प्रति हंसीं कलहयन्नाह किं चेति—

किंच=किन्तु । अन्यत् अपि=अपरमपि । बन्धस्य=ग्रहणस्य कारणम्=हेतुः । श्रूयताम्=आकर्ण्यताम् ।

हिन्दी—बल्कि (यही नहीं) और भी (इस हंस को) पकड़ने का कारण सुनिये ।

अस्ति मत्परिग्रहे मृणालिकानामवननायिका, सापरागस्थगितमुखकमलापि बलादनेन विनाशिता, विनिपत्योपरि जर्जरिता नखैः खण्डितमधरदलम्, ललित-मलिकालकमण्डनम्, अपनीतः सुकुमारभावः ॥

सुधा—अस्तीति । मत्परिग्रहे—मम=राज्ञः परिग्रहे स्थितायां नायिकायां प्रवृत्तम् मृणालिकानाम्=पद्मिनीनाम् । अवने=रक्षणे । नायिका=स्वामिनी । सा अपरागस्थ-

गित मुखकमलापि–अपरागात् = रागाभावात् स्थगितमुखकमलापि = संवृतवक्त्रकमलापि। बलात् = बलात्कारात्। अनेन = त्वद्भर्त्रा हंसेन। विनाशिता = नाशिता। उपरि विनिपत्य = उपरिपतित्वा। जर्जरिता = जर्जरीकृता। नखैः = करजैः अधरदलम् = ओष्ठदलम्। खण्डितम्। ललितम् = सुन्दरम्। अलिकालकमण्डनम्–अलिकम् = ललाटम् तस्य, अलकानाम् = केशानाम् मण्डनम् = सौन्दर्यम्। लुप्तम्। सुकुमारभावः = कौमार्यभावः। अपनीतः = उदस्तः। अस्ति।

पक्षे तु—मत्परिग्रहे = ममाधिकृते। मृणालिकानाम् = कमलिनीनाम। वनपालिका = उद्यानरक्षिका। सा = एषा। परागस्थगितमुखकमला अपि–परागेण = केसरेण स्थगितम् = स्थितम् मुखकमलं = वक्त्रं पद्म यस्याः सापि बलात् = प्रसह्य। वि = पक्षी तेन अशिता = भक्षिता या सा। उपरि = ऊर्ध्वम् विनिपत्य = पतित्वा। नखैः = करजैः। जर्जरिता = जर्जरीकृता। अधरदलम् = कमलाधोदलम्। खण्डितम्—कर्तितम्। ललितम् = मनोरमम् अलीनां = भ्रमराणां कालकस्य = कृष्णतायाः मण्डनम् = शोभाम् दलितम्। सुकुमारभावः = कोमलस्वभावः अपनीतः = दूरे कृतः। अस्ति।

हिन्दी—(निन्द्यभाव में) मेरे द्वारा नियुक्त पद्मिनी रक्षण में प्रवृत्त नायिका थी जिसका प्रेमाभाव से मुख कमल बन्द किये होने पर बलात् इसने शील भंग किया, गिरा कर उसे कुचल डाला, नाखूनों से उसके ओष्ठ दल को काट दिया और उसके मनोरम माथे पर की अलकों को बिखेर दिया इस प्रकार उसके कौमार्य को मिटा दिया।

(प्रकृत भाव में) मेरे अधिकार में (संरक्षण में होने वाली) मृणालिनियों के वन को अथवा मृणालिका नाम की नायिका पराग से भरे मुख कमलवाली (कमलिनी) इस पक्षी के द्वारा जबर्दस्ती गिराकर खा ली गई, ऊपर चढ़कर नखों से जर्जर कर डाली गई, उसके निचले पत्ते काट दिये गये और सुन्दर भौंरों की कालिमा रूपी भूषण दलित कर दिया गया। इस प्रकार इसने अपने हंस के सुकुमार स्वभाव को मिटा दिया।

किं वापीवरेणानेन न कृतम् ॥

सुधा—वा = अथवा। अनेन = एतेन। पीवरेण = स्थूलेन। किं न कृतम् = किं न विहितम्, अपितु सर्वमेवापराद्धम्।

(अथवा) वापीवरेण = वाप्यां वरेण = वापीप्रधानेन अनेन = एतेन हंसेन किं न कृतम् = किं न सम्पादितम्।

हिन्दी—अथवा इस मुटल्ल ने क्या उपकार नहीं किया, सब कुछ किया। (अथवा) बाउली में विचरण करने वाले हंसों में प्रधान इस हंस ने क्या नहीं किया ?

तदेष यावन्मध्यं बहुधापाञ्जरन्नावगाहते तावन्मे कुतः संतोषः। न च नदीक्षितेद्विजन्मनि निगृहीतेऽपि गरीयः पातकमस्ति ॥

सुधा—तदिति। तत् = तस्माद। एषः = अपराधी हंसः। पाञ्जरम्–पञ्जरस्येदं पाञ्जरम् मध्यम् = पिञ्जरान्तः। यावत् = यावत्कालम्। बहुधा प्रायः। न अवगाहते = न तिष्ठते। तावत् = तावत्कालम्। मे = मम राज्ञः। कुतः = कस्मात्। सन्तोषः = परि-

तुष्टिः । च = तथा । नदीक्षिते = सरित्स्थिते । द्विजन्मनि = पक्षिणि । निगृहीते = नितरां गृहीते स्नेहात्स्वीकृते । अपि । गरीयः = महत् । पातकम् = पापम् । नास्ति = न भवति ।

(पक्षे) तस्माद् एषः अपराधी । बहुधा = प्रायः । अपाम् = जलानाम् । मध्यं = अन्तः । जरत् यावत् = वृद्धावस्थापर्यन्तम् । न अवगाहते = न विहरति कुतः = कस्मात् तावत् । मे = मम । न सन्तोषः = सन्तुष्टिर्नास्ति । च = तथा नदीक्षिते—दीक्षा = शैवादि मतपरिग्रहः संजातोऽस्य तस्मिन् दीक्षिते, न दीक्षितेऽदोक्षिते = दीक्षारहिते । द्विजन्मनि—द्वाभ्यां सकाशाज्जन्म यस्य स द्विजन्मा = ब्राह्मणस्तस्मिन् । निगृहीतेऽपि = दण्डितेऽपि गरीयः = महत् । पातकम् = पापम् नास्ति न भवति किं पुनः अदीक्षे पक्षिणि निगृहीते महत्पातकम् स्यात् ।

हिन्दी—अतः यह अपराधी हंस पिंजड़े के अन्दर जब तक प्रायः नहीं रहता तब तक मुझे कहां से सन्तोष रह सकता है । फिर नदी तट पर रहने वाले पक्षी को पकड़ लेने में भी महान् पातक नहीं है ।

(अथवा)

अतः यह अपराधी हंस प्रायः जल के अन्दर जब तक वृद्धावस्था पर्यन्त (बहुत समय तक) नहीं विचरण करता तब तक मुझे सन्तोष कहाँ । शैव वैष्णव आदिमत में अदीक्षित ब्राह्मण को भी जब दण्ड देने में महान् पातक नहीं होता है तो इस धृष्ट पक्षी को पकड़ने में कैसे होगा ।

अयि मुग्धे कलहंसिके, त्वं पुनः मानसङ्गतापि विमाननां सहसे, विपरीतः खल्वेषः । यतः सद्वंशकान्तारागविमुखो मधुपश्रेणिश्रयणीयां सुराजीविनीं कान्तां कामयते । तदलमनेन । 'गच्छ वत्से, यथाप्रियम्' इत्यभिहितवति वसुंधरेश्वरे ।।

सुधा—अयीति । अयि मुग्धे = हे मत्ते । कलहंसिकेः पुनः = भूयः । त्वम् = भवती । मानसंगता—मानेन = सम्मानेन संगता = संप्रयाता अपि । पक्षे मानसरोवरगतापि । विमाननाम् = अवमाननाम् पक्षे विषु = पक्षिषु माननाम् = पूजाम् । सहसे = सहनं करोषि । विपरीतः = विरुद्धवृत्तः । पक्षे विभिः = पक्षिभिः परीतः = परिवृतः खलु = नूनम् । एषः = अयम् । यतः = यस्मात्कारणात् । सद्वंशकान्तारागविमुखः—सद् वंशस्य = सत्कुलस्य कान्तानाम् = स्त्रीणाम् रागेण = प्रेम्णा विमुखः = विपरीतः = सदन्वयकान्तानुरागपराङ्मुखः, पक्षे शोभना वंशाः = मस्करा येषु तेषु कान्तारेषु = काननेषु अगेभ्यः = पर्वतेभ्यः विमुखः । मधुपश्रेणिश्रयणीयाम् = मधुपानां श्रेणी = अलि पंक्तिः तस्यां श्रयणम् = आश्रयः यस्यास्ताम् । सुराजीविनीम्—सुरायाम् = मदिरायाम् जीवनम् = जीवितम् यस्यास्ताम्, पक्षे शोभनां राजीविनीम् = नलिनीम् कान्ताम् = पत्नीम् पक्षे कान्तियुताम् । कामयते = अभिलषति । तत् = अतः । अनेन = एतेन । अलम् = निषेधेऽव्ययम् । वत्से = हे वत्से यथा प्रियम्—प्रियस्यानतिक्रमेण । प्रियो भर्त्ता इष्ट-प्रदेशश्च तम् गच्छ = याहि । इति = इत्थम् । अभिहितवति = उक्तवति । वसुन्धरेश्वरे = नृपे ।।

हिन्दी—"हे मुग्धे कलहंसिके ! पुनः तुम मान (प्रेममूलक रोष) से युक्त

होकर भी अपमान को सहन कर रही हो। यह विपरीत-सी है। क्योंकि सद्वंश को प्रिया के अनुराग से पराङ्मुख मदिरापान करने वालों की पंक्ति का आश्रय करनेवाली मदिरा पर ही जीवन बिताने वाली पत्नी को (वह) चाहता है। अतः यह अनर्थ है। वत्से! अपने प्रिय के स्थान को जाओ" यह राजा के कहने पर॥

(अथवा)

हे मुग्धे कलहंसिके! पुनः तुम मानसरोवर में रहनेवाली पक्षिओं में मान को सहन कर रही हो। वास्तव में यह (हंस) तो पक्षियों से घिरा रहता है। विपरीत कार्य है। क्योंकि उत्तम बांसों के वनों में पर्वतों से विमुख (हंस) भौंरों की पंक्तियों का आश्रय बनी हुई श्रेष्ठ कान्ति युक्त कमलिनी को यह चाहता है अतः इससे क्या? हे वत्से तुम अपने अभीष्ट स्थान को चली जाओ। इस प्रकार राजा के कहने पर।

सापि सपरिहासं हंसी 'हंहो विहङ्गभुजङ्ग, मृणालिकां तामरसान्तरसानुरागरञ्जितमनाः कामयसे किं वापीनदेहे नीरसेवके त्वयि न संभाव्यते' इत्याकलितकलहं कलहंसमवादीत्॥

सुधा—सापीति। सा = हंसी अपि। सपरिहासम् = परिहासेन सहितं हंहो = प्रश्न पूर्वामन्त्रणेऽव्ययम्। विहङ्ग भुजङ्ग। पक्षिविलासिन्! ताम् = नृपनिवेदिताम्। मृणालिकाम्, मृणालिकानां पालननायिकाम्। अरसाम् = निःस्नेहाम्। तरसा = बलेन। अनुरागेण = स्वासक्त्या रञ्जितमनाः = रञ्जितचेताः। कामयसे = इच्छसि। वा = अथवा पीनदेहे = स्थूलाङ्गे। नीरसे = निःस्नेहे। वके त्वयि = वकप्राये त्वयि किं न सम्भाव्यते = किं न भवितुं शक्यते। इति = एवम्। आकलितकलहम् = संगृहीतकलहंसम् = मरालम्। अवादीत् = अकथयत्।

(अथवा) सा हंसी अपि सपरिहासम् = परिहास युक्तम्—इह। विहङ्गभुजङ्ग = हे विहङ्गविलासिन्! मृणालिकाम् = पद्मिनीम्। तामरसान्तरसानुराग-तामरसान्ते = अम्भोजे रसः = निर्यासः, तत्रानुरागो यस्य तत्सम्बुद्धौ = हे कमलरसप्रिय! रञ्जितमनाः—रञ्जितम् = अनुरक्तम् मनः = चेतः यस्य तत्सम्बुद्धौ हे रञ्जितमनाः। किं कामयसे = किमिच्छसि। वापीनदेहे = वापीषु नदेषु च ईहा = अभिलाषा यस्य तादृशे नीरसेवके = नीरपार्श्वनिवासिनि। त्वयि = भवति। किं न सम्भाव्यते = किन्न सम्भावना क्रियते। इति=एवम्। आकलितकलहम् = संगृहीतकलहम् हंसम् = मरालम्। अवादीत् = अकथयत्।

हिन्दी—वह हंसी भी परिहास सहित—हे पक्षिविलासिन्। उस मृणालिका नामकी मृणालिकापालिका को जो कि अनुरागहीना थी बलात् आसक्ति के कारण प्रसन्नमन तुम चाहते हो अथवा स्थूलकाय नीरस बगुले जैसे तुम में क्या सम्भावना नहीं हो सकती है? इस प्रकार कुछ क्रुद्ध हुए हंस से कहने लगी।

(अथवा) वह हंसी भी परिहास के सहित—हे विहंगविलासी! हे कमलरस में अनुराग रखने वाले! हे प्रसन्नमन! क्या कमलिनी को चाहते हो। बावलियों और

नदियों में अभिलाषा रखने वाले, नीर के समीप मुनियों के समान रहने वाले तुम में क्या सम्भव नहीं है। इस प्रकार कुछ-कुछ क्रुद्ध हो हंस से कहने लगी।

सोऽपि 'वैदग्धधुरंधर, धूर्तालापपण्डित, प्रज्ञाप्राग्भारगुरो, चातुर्याचार्य, मा मे प्रियां प्रकोपय। सदृशा एव यूयं वयं च राजहंसाः। सरसां श्रियमनुभवामः। नदीनां पात्रेष्ववस्थितिं कुर्मः। न चरणचर्यायां न श्लाघ्यामहे। तत्सपक्षेषु विपक्षो माभूः॥

सुधा—सोऽपीति। सः = राजहंसः अपि। हे वैदग्धधुरन्धर = अयि चातुर्यभारवाह! धूर्त्तालापपण्डित–धूर्त्त इव = धृष्ट इवालापे = वचने पण्डितः चतुरस्तत्सम्बुद्धौ। प्रज्ञाप्राग्भारगुरो! प्रज्ञायाः = बुद्धेः प्राग्भारेण = विशिष्टभारेण गुरुः = गम्भीरस्तत्सम्बुद्धौ। चातुर्याचार्य–चातुर्यस्य = दक्षतायाः आचार्यः = गुरुस्तत्सम्बुद्धौ। मे = मम। प्रियाम् = दयिताम्। मा प्रकोपय क्रुद्धां न कुरु। यूयम् = भवन्तः, वयं च। सदृशाः = समानाः एव। राजहंसाः–राजसु हंसाः = श्रेष्ठाः = नृपवराः, पक्षे मरालाः स्मः। (यथा) यूयम् = राजानः। सरसाम् = रसिकां ललिताम् वा श्रियम् = राजलक्ष्मीम्। अनुभवथ। वयम् = राजहंसाः सरसाम् = तडागानाञ्च। श्रियम् = शोभाम् अनुभवामः। यूयं नृपाः दीनेषु=धर्मपात्रादिषु। दीनामवस्थितिम्=दीनां स्थितिव्यवस्थाम्। न कुरुथ = विदधीथ। वयं हंसाः नदीनाम् = सरिताम् पात्रेषु = कूलमध्येषु। अवस्थितिम्=स्थितिम्। कुर्मः। यूयं रणचर्यायाम् = युद्धविषये च न श्लाघध्वे। प्रशंसध्वे इति न = नास्ति वयम् चरणचर्यायाम् = विलासितया पादविचरणे। न श्लाघामहे=प्रशंसामहे इति न=नास्ति। तत् = अतः भवान् सपक्षेषु = आत्मजनेषु। विपक्षः = प्रतिकूलः। मा भूः = नैव भूयात्। वयमपि सपक्षेषु = पुंखयुक्तेषु सत्सु। विपक्षः = विपरीतः अहम् मा भूम् = मा स्याम्॥

हिन्दी—वह हंस भी—"हे चतुरश्रेष्ठ! हे धूर्त्त के समान बातचीत करने में कुशल! हे बुद्धि के विशिष्ट भार में गम्भीर! हे चतुरता के आचार्य! मेरी प्रिया को क्रुद्ध मत करो। आप और हम एक से ही राजहंस (राजाओं में श्रेष्ठ अथवा हंस) हैं। आप सरसराजलक्ष्मी का अनुभव करते हैं तो हम तड़ागों की शोभा का। आप धर्मपात्रादि में दीन स्थिति नहीं करते हैं तो हम नदियों के तटों पर स्थिति (निवास) करते हैं और रणचर्या (युद्ध के बारे में) आप प्रशंसित नहीं होते हैं ऐसी बात नहीं है तो विलासिता से चरणों से भ्रमण में हम प्रशंसित नहीं होते हैं, ऐसा भी नहीं है। अतः आप आत्मीयजनों में प्रतिकूल मत होवें या हम पंखोवाले पक्षियों में विपरीत मत होवें।" इस प्रकार कहने लगा।

एषा मे हृदयं जीव उच्छ्वासः प्राण एव च।
संसारसुखसर्वस्वं प्राणिनां हि प्रियो जनः॥ २१॥

अन्वयः—एषा मे हृदयम्, जीवः, उच्छ्वासः, प्राणः च एव (अस्ति) हि प्राणिनाम् संसारसुखसर्वस्वम् प्रियः जनः (भवति)॥ २१॥

सुधा—एषेति। एषा = इयं हंसिनी मे = मम हंसस्य। हृदयम् = चित्तम्, जीवः =

आत्मा, उच्छ्वास: = श्वसनम्, प्राण: = प्रधानभूतः वायु: । चैवास्ति । अभिन्नभावात् । हि = यत: प्राणिनाम् = जीवानाम् । संसारसुखसर्वस्वम्-संसारस्य = लोकस्य सुखसर्वस्वम्= आनन्दमूलम् । प्रिय: जन: = प्रियतम: भवतीति ॥ २१ ॥

हिन्दी—यह हंसी मेरी अभिन्न होने के कारण मेरा हृदय, जीवन, श्वास और प्राण है । क्योंकि प्राणियों के लिए संसार का सुखसर्वस्व प्रियतम ही होता है ॥ २१ ॥

रूपसम्पन्नमग्राम्यं प्रेमप्रायं प्रियंवदम् ।
कुलीनमनुकूलं च कलत्र कुत्र लभ्यते ॥ २२ ॥

अन्वय:—रूपसम्पन्नम्, अग्राम्यम्, प्रेमप्रायम्, प्रियंवदम्, कुलीनम् अनुकूलम् च कलत्रम्, कुत्र लभ्यते ॥ २२ ॥

सुधा—रूपेति । रूपसम्पन्नम्–रूपेण सम्पन्नम् = रूपवतीम् । अग्राम्यम्–ग्राम्यत्वरहिताम् । प्रेमप्रायम् = प्राय: प्रेमयुक्ताम् प्रियंवदम् = प्रियवादिनीम् । कुलीनम् = अभिजातकुलाम् । अनुकूलम् = मनोऽनुकूलाम् च । कलत्रम् = पत्नीम् । कुत्र = क्व । लभ्यते = प्राप्यते ॥ २२ ॥

हिन्दी—रूपसम्पन्न, नागरिकस्वभाववाली, प्रेममयी, प्रियवादिनी, उत्तमकुल में उत्पन्न हुई अनुकूल पत्नी कहाँ मिलती है ?

तदलमलीककलहारम्भेण भवानप्येवं प्रेमप्रपञ्चनाटकनायको नातिचिरादेव यथा भवति तथा कमप्युपकारं करिष्यामि' इति राजानमवादीत् ॥

सुधा—तदिति । तत् = अत: । अलीककलहारम्भेण = अलीकम् = असत्यम् कलहारम्भेण प्रलपनप्रारम्भेण । अलम् = निषेधेऽव्ययम् । भवान् अपि = त्वमपि । एवम् = इत्थम् । प्रेमप्रपञ्चनाटकनायक: प्रेमप्रपञ्चस्य=रतिविषयकस्य नाटकस्य=दृश्यस्य नायक:= मुख्य: अभिनेता । न अतिचिरादेव = शीघ्रादेव । यथा = येन प्रकारेण । भवति = सम्भवति । तथैव । कमपि उपकारम् = उपकारात्मकं कमपि प्रयत्नम् । करिष्यामि = विधास्यामि । इति = एवम् । राजानम् = नृपम् । अवादीत् = अकथयत् ।

हिन्दी—"अत: झूठमूठ प्रलाप करना व्यर्थ है । आप भी इस प्रकार प्रेमप्रपञ्चवाले नाटक के नायक शीघ्र ही जिस प्रकार हो सके वैसा ही मैं कोई भी उपकारात्मक प्रयास करूँगा ।" यह (हंस) राजा से कहने लगा ।

अत्रान्तरेऽन्तरिक्षमण्डलादतिस्पष्टवर्णव्यक्तिमनोहारिणी वागश्रूयत ॥

सुधा—अत्रेति । अत्रान्तरे = एतस्मिन्नन्तरे । अन्तरिक्षमण्डलात् = आकाशमध्यात् । अतिस्पष्टवर्णव्यक्तिमनोहारिणी = सुस्पष्टाक्षरप्रकटनमनोरमा । वाक् = वाणी । अश्रूयत = आकर्ण्यत ।

हिन्दी—इसी बीच में आकाशमण्डल से अत्यन्त स्पष्ट अक्षर प्रकट करने वाली मनोरम वाणी सुनाई पड़ी ।

राजन्राजीवपत्राक्ष क्षिप्रं हंसो विमुच्यताम् ।
भविष्यत्येष ते दूतो दमयन्त्या: प्रलोभने ॥ २३ ॥

अन्वयः—हे राजन् ! राजीवपत्राक्ष ! हंसः क्षिप्रम् विमुच्यताम् । एषः दमयन्त्याः प्रलोभने ते दूतः भविष्यति ॥ २३ ॥

सुधा—हे राजीवपत्राक्ष ! राजीवपत्रे इव अक्षिणी यस्य तत्सम्बुद्धौ = कमलनयन ! राजन् = नृपे ! हंसः = मरालः । क्षिप्रम् = द्रुतम् । विमुच्यताम् = परित्यजताम् । एषः = अयम् हंसः । दमयन्त्याः = भीमकन्यकायाः प्रलोभने = त्वदाकृष्टकरणे । ते = तव नलस्य । दूतः = सन्देशवाहकः = भविष्यति ।

हिन्दी—हे कमलनयन ! नृप ! हंस को शीघ्र छोड़ दीजिये । यह हंस दमयन्ती को आपकी ओर आकृष्ट करने में आपका दूत बनेगा ॥ २३ ॥

राजा तु तस्याः सोष्मबलातैलपूरेणेवाङ्गमुत्पुलकयता, कर्णान्तरमवतीर्णेन, दमयन्तीति नाम्ना कोमलतैत्तिरपिच्छस्पर्शसुखमिवानुभवन्मनाङ्निमीलिताक्षश्चिन्तयांचकार ॥

सुधा—राजेति । राजा तु = नृपस्तु । तस्याः = आकाशवाण्याः । सोष्मबलातैलपूरेणेव—सोष्णस्नेहपूरेणेव । पुलकतया = पुलकावल्या । अङ्गम् = शरीरम् । कर्णान्तरम् = श्रोत्रमध्यम् । अवतीर्णेन=अवतरणेन । दमयन्ती इति नाम्ना=दमयन्ती इत्यभिधानेन । कोमलतैत्तिरपिच्छस्पर्शसुखम् इव कोमलस्य=मृदुलस्य तैत्तिरस्य=तित्तिरपक्षिणः पिच्छस्य = पक्षस्य स्पर्शसुखम् इव = स्पर्शानन्दसदृशम् । अनुभवन् = अनुभवं कुर्वन् मनाक् = किञ्चित् । निमीलिताक्षः—निमीलितेऽक्षिणी यस्य सः = निमीलितनयनः । चिन्तयाञ्चकार = चिन्तयामास ।

हिन्दी—राजा तो उस आकाशवाणी से जैसे गरम तेल के छिड़कने से शरीर में रोमाञ्च हो गया हो—कानों में उतरे (सुनाई पड़े) 'दमयन्ती' नाम से तीतर के कोमल पंखों के स्पर्श जैसे आनन्द का अनुभव करता हुआ कुछ मीलित नयनों से सोचने लगा ।

'आह्लादयन्ति सौख्याम्भःशातकुम्भीयकुम्भिकाः ।
काञ्चीकलापसश्रीकाः श्रोणीबिम्बाः श्रुता अपि ॥ २४ ॥

अन्वयः—काञ्चीकलापकश्रीकाः सौख्याम्भः शातकुम्भीयकुम्भिकाः श्रोणीबिम्बाः श्रुता अपि आह्लादयन्ति ॥ २४ ॥

सुधा—आह्लादयेति । काञ्चीकलापसश्रीकाः—मेखलासौन्दर्यसम्पन्नाः सौख्याम्भः शातकुम्भीयकुम्भिकाः—सौख्याम्भसः = ऐश्वर्यजलस्य शातकुम्भीयाः—शातकुम्भम् = हेमम्, तेन निर्मिताः कुम्भिका इव याः तादृशाः कुम्भ सदृशाः कामिन्यः । श्रोणी बिम्बाः अवलोकिताः । श्रुताः = आकर्णिताः अपि । आह्लादयन्ति = प्रसादयन्ति ॥ २४ ॥

हिन्दी—करधनी से उत्पन्न शोभा से युक्त, ऐश्वर्य के जल से भरे सोने की घड़ों जैसी (नितम्बों वाली) कामिनियां देखने और सुनने से भी प्रसन्न कर देती हैं ॥२४॥

तत्केयं दमयन्ती कश्चायमाश्चर्यभूनो विहंगः, का चेयं नभोभारती, सर्वमेतद्विस्तरेण वेदितव्यम्' इत्यवधारयन्नेकस्यामुत्फुल्लपल्लवितलतामण्डपच्छायायामुन्निद्रकुसुममकरन्दशीकरासारशिशिरे शिलातले निषद्य तं हंसमवादीत् ।

सुधा—तदिति । तत्=अतः । इयम्=एषा दमयन्ती=दमयन्ती नाम्नीका=काऽस्ति । च=तथा । अयम्=एषः । आश्चर्यभूतः=अद्भुतः । विहङ्गः=पक्षी कः=कोऽस्ति । च । इयम्=एषा नभोभारती=आकाशवाणी कास्ति । एतत् सर्वम्=इदमखिलम् । विस्तरेण=विस्तारपूर्वकम् । वेदितव्यम्=ज्ञातव्यम् इत्यवधारयन्=इति निश्चयन् एकस्याम् उत्फुल्लपल्लवितलतामण्डपच्छायायाम्—उत्फुल्लपल्लविताया: पुष्पपल्लवयुक्ताया: लताया:=वीरुधाया: मण्डपम्=मण्डलम् तस्य छायायाम्=छायातले । उन्निद्रकुसुममकरन्दसीकरसारशिशिरे—उद् गता=समाप्ता निद्रा येषां तादृशानां कुसुमानाम्=पुष्पाणाम् मकरन्दसीकरसारे=मधुविन्दुसदृशे शिशिरे=शीतले=शिलापृष्ठे । निषद्य=उपविश्य । तम्=एतम् । हंसम्=मरालम् । नृपः अवादीत्=अवोचत् ।

हिन्दी—अतः 'यह दमयन्ती कौन है, और यह अद्भुत पक्षी हंस कौन है तथा यह आकाश-वाणी क्या है 'यह सब विस्तार सहित जानना चाहिए' यह निश्चय करते हुए, एक पुष्पित पल्लवित लतामण्डप की छाया में विकसित पुष्पों के मकरन्दविन्दु सदृश शीतल शिलातल पर बैठकर उस हंस से राजा कहने लगा ।

'भद्र साप्तपदीनं सख्यम्, उत्पन्नकतिपयप्रियालापा प्रीतिः प्रयोजननिरपेक्षं दाक्षिण्यम्, अकारणप्रगुणं वात्सल्यम्, अनिमित्तसुन्दरो मैत्रीभावः सतां लक्षणम् ॥

सुधा—भद्र इति । हे भद्र ! सख्यम्=मित्रता साप्तपदीनम्=सप्तपदानि गम्यन्ते उच्यन्ते वा यत्र सख्ये तत् साप्तपदीनम् । प्रीतिः=प्रेम उत्पन्नकतिपयप्रियालापाः=कृतकतिपयमधुरवार्ता । दाक्षिण्यम्=उदारता । प्रयोजननिरपेक्षम्—प्रयोजनस्य=अर्थस्य निर्गताऽपेक्षा यस्यात् तादृक् । वात्सल्यम्=वत्सलता । अकारणप्रगुणम्=निष्प्रयोजनम् वर्धनशीलम् । अनिमित्त-सुन्दरः=अकारणसुरम्यः मैत्रीभावः=प्रीतिभावः भवति । इत्यम् सताम्=सत्पुरुषाणाम् लक्षणम् भवति ।

हिन्दी—हे भाई सज्जनों की मित्रता सात डग साथ-साथ चलने मात्र से हो जाती है उनकी प्रीति कुछ प्रिय वार्तालाप से ही हो जाती है उनमें उदारता प्रयोजनरहित होती है, वत्सलता अकारण बढ़ती है, मैत्रीभाव अकारण सुन्दर होता है । यह सज्जनों के लक्षण हैं ।

अस्ति च तत्सर्वं भवन्मूर्तावतो निःशङ्कमभिधीयसे कथय केयं दमयन्ती, कस्य सुता, कीदृग्रूपम्, कुत्र सा वसति, कश्च भवानस्माकमुपकर्तुमिच्छति, का चेयं दिव्यवाणी—इत्येवमुक्तः स कथयितुमारेभे ॥

सुधा—अस्तीति । च=तथा तत्सर्वम्=तत्सम्पूर्णम् सज्जनलक्षणम् भवतः=श्रीमतः मूर्तावतः=साकारस्य (वर्तते) (अतः) निःशङ्कम्=सन्देहरहितम् (मया) त्वम् अभिधीयसे=कथ्यसे—कथय=भण । इयम्=एषा दमयन्ती का=दमयन्ती नाम्नी सुन्दरी काऽस्ति । कस्य नृपस्य सुता=दुहिता अस्ति । तस्याः=दमयन्त्याः कीदृक् रूपम्=कीदृक् सौन्दर्यम् अस्ति । सा=दमयन्ती । कुत्र=कस्मिन् स्थाने वसति=निवसति । च=तथा भवान्=त्वम् कः=कोऽसि । (यः) अस्माकम्=मामकीनाम् ।

उपकर्तुम् = उपकारं विधातुम् । इच्छति = अभिलषति । च तथा । इयम् = एषा दिव्य-वाणी = अशरीरा वाक् काऽस्ति इति, एवम् उक्तः = इत्थं भणितः सः = हंसः । कथ-यितुम् = भणितुम् आरेभे = प्रारभत ।

हिन्दी—यह सभी गुण साक्षात् आपके शरीर में हैं। अतः निर्भयतापूर्वक मैं आपसे कह रहा हूं—कहो, यह दमयन्ती कौन है, किसकी पुत्री है कैसी सुन्दरी है। वह कहां रहती है और आप कौन हैं जो हमारा उपकार करना चाहते हैं। तथा यह आकाश-वाणी क्या है ? इस प्रकार पूछने पर उस हंस ने कहना प्रारम्भ किया ।

'शृङ्गाररसभृङ्गार तस्याः सौन्दर्यवीरुधः ।
कर्णमारोप्यतां देव वार्ताविस्मयपल्लवः ॥ २५ ॥

अन्वयः—हे शृङ्गाररसभृङ्गार देव ! तस्याः सौन्दर्यवीरुधः वार्ता विस्मयपल्लवः कर्णम् आरोप्यताम् ॥ ५ ॥

सुधा—शृङ्गारेति । हे शृङ्गाररसभृङ्गार = अयि शृङ्गाररसस्वर्णकलश ! देव = राजन् ! तस्याः = दमयन्त्याः । सौन्दर्यवीरुधः = सौन्दर्यस्य = कमनीयतायाः वीरुधः = लतायाः । वार्ताविस्मयपल्लवः–वार्तायाः विस्मयः=वार्ताश्चर्यः स एव पल्लवः=किसलयः । कर्णम् = श्रुतम् आरोप्यताम् = आरोपणं क्रियताम्, आकर्ण्यतामितिभावः ॥ २५ ॥

हिन्दी—हे शृङ्गाररस के स्वर्णकलश राजन् ! इस दमयन्ती की सौन्दर्यरूपी लता का अद्भुत वार्ता रूपी पल्लव कान पर चढ़ाइये अर्थात् अद्भुत वार्ता सुनिये ।

अस्ति विस्तीर्णमेदिनीमण्डलमण्डनायमानो नगनगरपुरविहारारामरमणीयः सीतासहायसंचरितरघुपतिपादपद्मपवित्रारण्यः पुण्यतरतरङ्गगङ्गागोदावरी-वारिवारित दुरितदावानलप्रसरः मन्दर इव बलिराजजनितपरिवर्तनः कैलास इव महेश्वरलोककृतवसतिः, मेरुरिव सुवर्णप्रकृतिकमनीयो, यदुवंश इव दृष्टशूर-पुरुषावतारः, सोमान्वय इव बुधप्रधानो, वेदपाठ इवानेकैः सवनैरुपेतः, पर्वते-पर्वते स्थाणुभिः, पुरे-पुरे पुराणपुरुषैः, जले-जले कमलोद्भवैः, पदे-पदे देवकुलैः, वने-वने वरुणैः, स्थाने-स्थाने नन्दनोद्यानैः, अर्गलः स्वर्गस्य, तापीप्रायोऽप्यनुप-तापी जनस्य, विन्ध्याद्रिमुद्रितायां दिशि देशानामुत्तरोऽपि दक्षिणो देशः ॥

सुधा—अस्तीति । विस्तीर्णमेदिनीमण्डलमण्डनायमानः—विस्तीर्णस्य = विस्तृतस्य मेदिनीमण्डलस्य = भूमण्डलस्य मण्डनायमानः = भूषणायमानः । नगनगरपुरविहाराराम-रमणीयः–नगैः = पर्वतैः, नगरैः जनपदैः = पुरैः = ग्रामैः विहारैः = मठैः आरामैः = उद्यानैश्च रमणीयः = मनोरमः सीतासहायसञ्चरितरघुपतिपादपद्मपवित्रारण्यः—सीता-सहायस्य = जानकीसहितस्य सञ्चरितस्य = भ्रमितस्य रघुपतेः = रामचन्द्रस्य ये पादपद्मे = चरणकमले, ताभ्यां पवित्राणि = पूतान्यरण्यानि = काननानि यत्र सः । पुण्यतरतरङ्ग-गङ्गागोदावरीवारिवारितदुरितदावानलप्रसरः—अतिशयेन पुण्याः पुण्यतरास्तरङ्गा = वीचयो यत्र तादृशैः गङ्गागोदावरीवारिभिः = गङ्गागोदावरीजलैः वारितः = दूरीकृतः दुरितरूपः = पापरूपः दावानलः = दावाग्निः, तस्य प्रसरः = विस्तारो यत्र तादृशः ।

मन्दर इव = पर्वत इव । बलिराजजनितपरिवर्तनः—बलिना = बलशालिना राज्ञा = नृपेण भीमेन जनितम् = उत्पादितम् परि = समन्तात् वर्तनम् = परिरक्षणम् यत्र तादृशः पक्षे बलिराजेन = बलिदैत्येन जनितम् = उत्पादितम् परिभ्रमणं यत्र तादृशः । कैलासपर्वत इव महेश्वरलोककृतवसतिः—महान् ईश्वरः = अतिसमृद्धः लोककृतवसतिः, जनकृतावासः । पक्षे शिवभक्तकृतनिवासः । मेरुरिव = सुमेरु पर्वत इव सुवर्णप्रकृतिकमनीयः—सुष्ठु वर्णाः = द्विजातयः प्रकृतयः = अमात्यादयश्च तैः कमनीयः = काम्यः । पक्षे—सुवर्ण-प्रकृत्या = सुवर्णस्वभावेन काम्यः यदुवंश इव = यदुकुल इव । दृष्टशूरपुरुषावतारः = अवलोकित बलशालिपुरुषाः । पक्षे—अवलोकितशूरसेनावतारः । सोमान्वय इव = सोमवंश इव बुधप्रधानः = विद्वत्प्रमुखः, पक्षे बुधग्रहविशेष प्रमुखः । वेद-पाठ इव वेद पठनसदृशः । अनेकैः = बहुभिः सवनैः—सः (एषः) वनैः = काननैः पक्षे—यज्ञैः । उपेतः = युक्तः । पर्वते पर्वते = प्रतिशैले स्थाणुभिः = स्थिरपदार्थैः । पुरे पुरे प्रतिनगरे पुराणपुरुषैः=वृद्धैः, पक्षे—विष्णुदेवैः जले जले = सर्वत्र नीरे । कमलोद्भवैः=पद्मोत्पत्तिभिः, पक्षे ब्रह्मभिः । पदे पदे = प्रतिपदे । देवकुलैः = देवगृहैः, पक्षे सुरसमूहैः । वने वने प्रत्यरण्ये वरुणैः = वृक्षैर्जलैर्वा, पक्षे वरुणदेवैः सूर्यदेवैर्वा । स्थाने स्थाने = सर्वत्र । नन्द-नोद्यानैः = इन्द्रवनैः । स्वर्गस्य = द्युलोकस्य । अर्गलः = मेखलीभूतः अधिकः । स्वर्गे ह्येकैकं स्थाणुप्रभृतिः, अस्मिंस्तु बहवः इत्यर्थः । तापीप्राय अपि = नदीप्रायेण तत्र जनस्य = लोकस्य । अनुपतापी = न तापबहुलः । विन्ध्याद्रिमुद्रितायाम्=विन्ध्याद्रिणा= विन्ध्याचलेन मुद्रितायाम् = पृथक्कृतायाम् दिशि = दिशायाम् । देशानाम्=स्थानानाम् । उत्तरः = श्रेष्ठः अपि दक्षिणः देशः = अवाचीदेशः अस्ति ।

हिन्दी—विस्तृत भूमण्डल का भूषण बना हुआ, पर्वत-नगर-पुर-मठ तथा उद्यानों के द्वारा मनोरम, सीता सहित घूमते हुए रामचन्द्र के चरण-कमलों से पवित्र किये हुये अरण्य वाला, पुण्य तरंगों वाले गंगा और गोदावरी नदियों के जल से पाप रूपी दावानल के प्रसार को दूर किया हुआ, पर्वत जैसा बलशाली राजा भीम के द्वारा पालित (बलिराज दैत्य के द्वारा चारो ओर भ्रमण-मन्थन) किया हुआ, कैलास पर्वत के समान अति समृद्ध लोगों का निवास बना हुआ (शिव भक्त जनों का आवास सा बना हुआ) मेरु पर्वत के समान उत्तमवर्ण ब्राह्मणादि द्विजातियों एवं अमात्यादि प्रकृतियों से युक्त (सुवर्ण के स्वभाव से कमनीय) यदुवंश के समान शूरसेनादि के के जन्म को देखा हुआ अथवा वीर पुरुषों के जन्मों को देखा हुआ, सोमवंश के समान विद्वत्प्रधान (बुधग्रह विशेष वाला) वेदपाठ जैसे (अनेक वनों से युक्त) पर्वत पर्वत पर स्थाणु (स्थिर पदार्थों) से, नगर में वृद्धपुरुषों (विष्णु प्रतिमाओं) से जल-जल में कमल की उत्पत्ति से (ब्रह्माओं द्वारा) प्रतिपद पर देवालयों (सुरसमूहों) से वन-वन में वृक्षों (वरुण-सूर्य देवताओं) से स्थान-स्थान पर नन्दन वनों से स्वर्ग लोक की अर्गला सा बना हुआ लोगों के लिए नदी बहुल होने के कारण ताप रहित, विन्ध्याचल से अलग किया हुआ सभी देशों में श्रेष्ठ होकर भी दक्षिण देश है ।

यत्र शास्त्रे शस्त्रे च वेदे वैद्ये च भरते भारते च कल्पे शिल्पे च प्रधानो, धनी, धन्यो, धान्यवान्, विदग्धो वाचि, मुग्धो मुखे, स्निग्धो मनसि वसति निरन्तरमशोको लोकः ॥

सुधा—यत्रेति । यत्र यस्मिन् देशे । शास्त्रे = षड्शास्त्रविषये । शस्त्रे = आयुधे च । वेदे = श्रुतौ वैद्ये = आयुर्वेदे च । भरते = भरतखण्डे, भारते = महाभारतग्रन्थे च । कल्पे = यज्ञाद्युपदेशके, शिल्पे च = कौशले च । प्रधानः = मुख्यः धनी = धनसम्पन्नः, धन्यः = प्रशंसार्हः, धान्यवान् = धान्यसम्पन्नः । वाचि = वाण्याम् विदग्धः = प्रवीणः । मुखे = आनने, मुग्धः = मोहकः । मनसि = चेतसि स्निग्धः । अशोकः = शोकरहितः । लोकः = जनः । निरन्तरम् । सर्वदा । वसति = निवसति ।

हिन्दी —जहां शास्त्र, शस्त्र, वेद, आयुर्वेद, भरतखण्ड, महाभारत (दिव्य ग्रन्थ) कल्प और शिल्प में प्रधान, धनी, धान्य धान्यवान्, वाणी में कुशल, मुख से सुन्दर, मन से स्निग्ध शोक रहित लोग निरन्तर रहते हैं ।

यत्र क्रुद्धधूर्जटिललाटलोचनानलज्वालाकवलनाकुलः, त्रासादपाङ्गावलोकनमात्रनिर्जितपरमेश्वरमनसां विलासिनीनामुच्चकुचकुम्भयोः शृङ्गारसर्वस्वम्, अधरपल्लवेषु मधु, भ्रूभङ्गेषु धनुः, कटाक्षेषु पुष्पबाणान्निधाय निलीनोऽङ्गेषु जघनस्थलस्थापितरतिमकरकेतनः ॥

सुधा—यत्रेति । यत्र = देशे । क्रुद्धधूर्जटिललाटलोचनानलज्वालाकवलनाकुलः—क्रुद्धस्य = रुषितस्य धूर्जटेः = शिवस्य ललाटे = मस्तके यो लोचनानलः = नयनाग्निः, तस्य ज्वालया कवलेन = कवलितेनाकुलः = खिन्नः । त्रासात् = भयात् । अपाङ्गावलोकनमात्रनिर्जितपरमेश्वरमनसाम्-अपाङ्गेन = अपाङ्गभागेनावलोकनमात्रेण = केवलंदर्शनेन निर्जितानि = विजितानि परमेश्वराणाम् = परमैश्वर्यशालिनृपाणाम् मनांसि याभिस्तासाम् विलासिनीनाम् = कामिनीनाम् उच्चकुचे = उन्नतपयोधरे त एव कुम्भे तयोः । शृङ्गारसर्वस्वम् = शृङ्गारसारभूतम् । अधरपल्लवेषु = ओष्ठकिसलयेषु मधु = मकरन्दम् । भ्रूभङ्गेषु = भ्रूवक्रतासु धनुः = चापम् । कटाक्षेषु = दृष्टिक्षेपेषु । पुष्पबाणान् = कुसुमसायकान् । निधाय = धृत्वा । जघनस्थलस्थापितरतिमकरकेतनः—जघनस्थलेषु = जघनाङ्गभागेषु स्थापिता रतिर्येन तथाभूतः मकरकेतनः = मन्मथः । अङ्गेषु = शरीरभागेषु निलीनः = निगूढः (तिष्ठति) ।

हिन्दी—जहां क्रुद्ध शिवजी के ललाट के नयनानल की ज्वाला से कवलित किये जाने के कारण व्याकुल, डर से अपाङ्ग भाग से अवलोकन मात्र द्वारा परम ऐश्वर्यशाली राजाओं के मनको भी जीतने वाली विलासिनी नारियों के ऊंचे ऊंचे पयोधर रूपी कलशों पर शृङ्गार रस के सार को अधर पल्लवों में मधु, भ्रूभङ्गों में धनुष, कटाक्षों में कुसुम सायकों को और जघनस्थलों में रति को रखकर कामदेव (विभिन्न) अङ्गों में छिपा रहता है ।

यासां तारुण्यमेव सर्वाङ्गेषु शोभार्थमाभरणम्, उत्तुङ्गस्तनमण्डललावण्यमेव मुखकमलावलोकनाय दर्पणः, तारतरनयनकान्तिरेव मुखमण्डलमण्डनाय चन्दन-

ललाटिका, भ्रूभङ्गा एव विभ्रमाय मृगमदपत्रभङ्गाः, कटाक्षा एव युवजनजयाय परमास्त्राणि, बन्धूककुसुमकान्तिदन्तच्छद एव लोकलोचनमनोमोहनाय माहेन्द्रमणिः, मुखकमलपरिमलागतमधुकरमधुरझंकार एव विनोदाय वीणाध्वनिः ॥

सुधा—यासामिति । यासाम् = रमणीनाम् । तारुण्यम् एव = तरुणतैव सर्वाङ्गेषु = सम्पूर्णाङ्गेषु । शोभार्थम् = शोभानिमित्तम् आभरणम् = आभूषणम् । उत्तुङ्गस्तनमण्डल लावण्यम् एव—उत्तुङ्गयोः = उन्नतयोः स्तरयोः=पयोधरयोः मण्डलम्, तस्य लावण्यम् = कमनीयता एव । मुखकमलावलोकनाय—मुखमेव कमलम्, मुखकमलम् तस्यावलोकनाय= दर्शनाय दर्पणः=मुकुरः । तारतरनयनकान्तिः एव = चञ्चलनेत्र प्रभा एव । मुखमण्डल-मण्डनाय=मुखमण्डलस्य=आननमण्डलस्य मण्डनाय = अलङ्करणाय । चन्दन-ललाटिका= चन्दनमस्तिका । भ्रूभङ्गाः एव = भ्रूविक्षेपा एव विभ्रमाय । मृगमदपत्रभङ्गाः = कस्तूरी पत्ररचनाः । कटाक्षा एव भ्रूविलासा एव । युवजनजयाय = तरुणपुरुषविजयाय । परमास्त्राणि = महदस्त्राणि । बन्धूककुसुमकान्तिदन्तच्छद एव । बन्धूककुसुमानाम् बंधूकपुष्पाणाम् इव कान्तियुक्तो दन्तच्छदः = ओष्ठः एव । लोकलोचनमोहनाय— लोकानां लोचनानि = जननेत्राणि मनांसि च मोहनाय = सम्मोहनाय । महेन्द्रमणिः— माहेन्द्रम् = इन्द्रजालम् । तन्त्रबलेन । विद्यमानवस्तुप्रकाशनमिति यावत् । तदर्थो मणिः = माहेन्द्रमणिः । मुखकमलपरिमलागतमधुकरमधुरझङ्कारः एव—मुखकमलात्=पद्माननात् परिमलाय = सुगन्धायागतः = आयातः मधुकराणाम् = भ्रमराणाम् मधुरः = मृदुलः झङ्कारः = झंकृतिरेव । विनोदाय = आमोदाय वीणाध्वनिः = तन्त्रीरवः अस्ति ।

हिन्दी—जिन (रमणियों) की तरुणाई ही सभी अङ्गों में शोभा निमित्त भूषण है (उनके) उन्नत उरोज मण्डलों की लावण्यता ही मुख कमल को देखने के लिए दर्पण है, अति चञ्चलनयनों की कान्ति ही मुखमण्डल की शोभा के लिए चन्दन विन्दु है । भ्रूभङ्ग ही विभ्रम करने के लिए कस्तूरी से अङ्कित पत्र रचना हैं, कटाक्ष ही युवकों को जीतने के लिए परम अस्त्र हैं, बन्धूक (गुड़हल) के फूलों की कान्ति वाले ओष्ठ ही लोगों के नेत्रों और मनों को मोहित करने के लिए महेन्द्र मणि हैं मुखकमल से निकले हुए सुगन्ध के लिए आये (मड़राते) भौंरों की मधुर झङ्कार ही मनोरञ्जन के लिए वीणा की ध्वनि है ।

किं बहुना—

> **ता एव निर्वृतिस्थानमहं मन्ये मृगेक्षणाः ।**
> **मुक्तानामास्पदं येन तासामेव स्तनान्तरम् ॥ २६ ॥**

अन्वयः—ताः मृगेक्षणा एव निर्वृत्तिस्थानम् अहम् मन्ये । येन तासाम् स्तनान्तरम् एव मुक्तानामास्पदम् ॥ २६ ॥

सुधा—ता एवेति । ताः = एताः मृगेक्षणा—एव—मृगाणामीक्षणानीवेक्षणानि च यासां ताः = हरिणनयनाः कामिन्यः एव । निर्वृतिस्थानम्—निर्वृतिः = मुक्तिः शर्म च, तत्स्थानम्

अहम् मन्ये। येन = येन कारणेन तासाम् मृगेक्षणानाम् स्तनान्तरम्—स्तनयोः—पयोधरयोः अन्तरम् = मध्यम्। मुक्तानाम् = मुक्तपुरुषाणाम्, मुक्तामणीनाम् आस्थानम्=स्थानम् प्राप्यते ॥

हिन्दी—अधिक क्या—उन मृगनयनियों (सुन्दरियों) को ही निर्वृति (मोक्ष अथवा लज्जाशीलता) का स्थान मैं मानता हूँ। जिससे उन मृगनयनियों के स्तनों के मध्य मुक्तों (मुक्त जनों अथवा मुक्तामणियों) को स्थान मिलता है ॥ २६ ॥

मन्ये च। ताभिरेव विविधनिधुवननिधानकुम्भीभिः कुम्भोद्भवोऽपि भगवान् प्रलोभितो भविष्यति, येनाद्यापि न मुञ्चति दक्षिणां दिशमेव ॥

सुधा—मन्य इति। च = तथा मन्ये = अहम् मन्ये। विविधनिधुवननिधानकुम्भीभिः—विविधाभिः = विभिन्नाभिः निधुवननिधानकुंभीभिः = सुरतक्रीडानिधानपात्राभिः ताभिः = मृगेक्षणाभिः। भगवान् = ऐश्वर्यवान् कुम्भोद्भवः अपि = कुम्भज ऋषिरपि। प्रलोभितः = लोभयुक्तः भविष्यति येन = येन कारणेन। अद्यापि = सम्प्रत्यपि (कुम्भजः = अगस्त्यः) दक्षिणाम् दिशम् = अवाची दिशम्। एव। न मुञ्चति = न त्यजति।

हिन्दी—और मैं तो यह मानता हूँ कि विभिन्न प्रकार की सुरत क्रीडा का पात्र बनी हुई उन मृगनयनियों द्वारा ही कुम्भज ऋषि भी प्रलोभित हुए होंगे जिससे वह आज भी दक्षिण दिशा को नहीं छोड़ रहे हैं ॥

अथवा—

देशो भवेत्कस्य न वल्लभोऽसौ स्त्रीसंकुलः सुस्थितकामकोटिः।
दग्धैककामं त्रिदिवं विहाय यस्मिन्कुमारोऽपि रतिं चकार ॥ २७ ॥

अन्वयः—सुस्थितकामकोटिः, स्त्रीसंकुलः असौ देशः कस्य वल्लभः न भवेत्, यस्मिन् कुमारः अपि दग्धैककामम् त्रिदिवम् विहाय रतिम् चकार ॥ २७ ॥

सुधा—दग्धैकेति। सुस्थितकामकोटिः—सुस्थिता = सनाथिता कामकोटिः = कामकोटिदेवी, यत्र तादृशः, पक्षे कन्दर्पकोटिः। स्त्रीसंकुलः—स्त्रीभिः संकुलः = परिपूर्णः। असौ = एषः देशः = दक्षिण देशः। कस्य = कस्य जनस्य वल्लभः = प्रियः। न भवेत् = न स्यात्। यस्मिन् = यत्र। कुमारः अपि स्वामिकार्तिकेयः अपि, पक्षे-बालोऽपि। दग्धैककामम् दग्धः = ज्वलितः एकमात्रम् कामः = मदनो यत्र तादृशम्। त्रिदिवम् = स्वर्गम्। विहाय = त्यक्त्वा। रतिम् = प्रीतिम् चकार = अकरोत्। पक्षे नष्टकामम्। विहाय। त्रिदिवम् क्रीडनं = रतिश्चकार।

हिन्दी—कामकोटि देवी से सनाथित (कामदेव की धनुषकोटि से युक्त। स्त्रियों से भरा हुआ वह देश किसके लिए प्रिय नहीं है, अर्थात् सभी को प्रिय है जहां कुमार (स्वामीकार्तिकेय–बालक) भी केवल कामदेव को (रति को नहीं) भस्म किये हुए स्वर्ग को छोड़कर रह रहे हैं (बालक भग्नकामनाओं वाले विविध खेलों को प्रेम करते हैं) ॥ २७ ॥

तस्यान्तर्भूतवैदर्भमण्डलस्यालंकारभूतमनाकुलममरपतिपुरप्रतिस्पर्धिपरितः परिखाप्रान्तरूढप्रौढहृद्योद्यानमालावलयितमदभ्रशुभ्राभ्रंलिहप्रासादशिखरशिखाभोगभग्नरविरथतुंगवेगम्, एकत्राग्निहोत्रमन्त्रपवित्राहुतिहतसमस्तदिव्यान्तरिक्षभौमोत्पातसंघातैः, कृतमन्युभिरपि मन्युशून्यैः, उक्तसूक्तैरपि निरुक्तपरैः, सन्मार्गस्थैरपि गृहस्थैः, सकलत्रैरपि ब्रह्मचारिभिः, अभ्यस्ततिथिभिरप्यतिथिकुशलैः, सामप्रयोगप्रधानैरपि दण्डावलम्बिभिः, शतपथानुसारिभिरप्येकमार्गैः, ब्राह्मणैरध्यासितम्। एकत्र कुरुभिरिव द्रोणपुरःसरैः, प्रासादैरिव तुलाधारिभिः नैयायिकैरिवानुमेयानुमाननिपुणैः, वैशेषिकैरिव द्रव्यानुगुणकर्मविशेषपण्डितैः, वैयाकरणैरिव रूपसिद्धिप्रधानैः, रुद्रैरिवानेकग्रन्थिबद्धकपर्दकैः, विपणिवणिग्जनैरधिष्ठितम्। एकत्र विटकौलदम्भदीक्षाभिरिव कुचरूपलोभितलोकाभिः, कुकविकाव्यपद्धतिभिरिव भग्नयतिगणवृत्ताभिः, निशाचरीभिरिव रजनिरागिणीभिः, सर्वतोमुखजघनचपलाभिरप्यनार्याभिः, कर्णाटचेटीभिर्भरितम्। एकत्र बालकमिव कुलालाकीर्णम्। एकत्र वृद्धमिव कुजराजितम्। एकत्र चित्रविद्ययेव प्रवर्धमानसकलशिशुशोभितया विन्यस्तस्वस्तिकया सर्वतोभद्रभूषणया भवनमालयालंकृतम्। एकत्र नाटकैरिव पताकाङ्कसंधिसंगतैः, दुष्टकिरातैरिव दृष्टकूटकर्मभिः, शस्त्रैरिव सुधारैः, विचित्रैरपि सचित्रैः, सतुलैरप्यतुलैर्देवकुलैः संकुलम्। विशालमपि शालासंपन्नम्, चतुश्चरणसंयुक्तमपि चरणरहितम्, विद्संभृतमपि शुचिमार्गम्, सर्वत्र चत्वराधिकमपि स्थिरप्रकृति, मज्जन्महाराष्ट्रकुटुम्बिनीमुखमण्डलविधीयमानोत्फुल्लकमलशोभायास्तुङ्गतरङ्गरङ्गत्तरुणार्जुनराजीवराजमानराजहंसविराजितवारेर्वरदायास्तीरे रमणीयकरसकुण्डं कुण्डिनं नाम नगरम्॥

सुधा—तस्येति। तस्य = दक्षिणदेशस्य। अन्तर्भूतवैदर्भमण्डलस्य-अन्तर्भूतस्य = अन्तर्गतस्य। वैदर्भमण्डलस्य = वैदर्भनाममण्डलस्य। अलङ्कारभूतम् = भूषणसदृशम्। अनाकुलम् = निरुपद्रवम्। अमरपतिपुरप्रतिस्पर्द्धि = अमरपतेः = इन्द्रस्य पुरम् = लोकम्, तत्स्पर्द्धि = तत्तुल्यम्। परितः = अभितः। परिखाप्रान्तरूढप्रौढहृद्योद्यानमालावलयितमदभ्रशुभ्राभ्रंलिहप्रासाद शिखरशिखाभोगभग्नरविरथतुङ्गवेगम्—परिखाप्रान्तम् = परिखापर्यन्तम् रूढाभिः स्थिताभिः प्रौढाभिः = तरुणभिर्हृद्याभिर्मनोरमाभिः उद्यानमालाभिः = आरामपंक्तिभिः वलयितम् = आलिंगितम् मदभ्रशुभ्राभ्रंलिहानाम् = अत्युन्नताकाशचुम्बिनाम् प्रासादानाम् = सौधानाम् शिखराणाम् = श्रेणीनाम् शिखाभोगेन = शिखाविस्तारेण भग्नः = नाशितः रवेः = सूर्यस्य रथतुङ्गस्य = उन्नतरथस्य वेगः = चलनम् येन तादृक्। एकत्र = क्वचित्। अग्निहोत्रमन्त्रपवित्राहुतिहतसमस्तदिव्यान्तरिक्षभौमोत्पातसंघातैः—अग्निहोत्रमन्त्राणाम् पवित्रैः = पावनैः आहुतिभिः = हवनकर्मभिः हतैः = नष्टैः—समस्तस्य = निखिलस्य दिव्यस्य = स्वर्गस्य, अन्तरिक्षस्य = गगनस्य, भौमस्य = भूसम्बन्धिनश्चोत्पातसंघातैः उपद्रवसमूहैः। कृतमन्युभिरपि-कृतोमन्युः यज्ञः यैस्तैरपि = कृतक्रतुरपि। मन्युरहितैः = क्रोधशून्यैः उक्तसूक्तैरपि—उक्तानि = पठितानि सूक्तानि पुरुषसूक्तश्रीसूक्ता-

दीनि यैस्तैरपि । निरुक्तपरैः = ग्रन्थविशेषकुशलैः । सन्मार्गस्थैरपि = सदाचारस्थैरपि । गृहस्थैः = गृहस्थजनैः । सकलत्रैरपि सकलं = सर्वं त्रायन्त इति तैरपि = समस्तरक्षकैरपि । ब्रह्मचारिभिः—ब्रह्म = वेदम् चरन्ति = जानन्त्यवश्यमिति तैः । अभ्यस्ततिथिभिरपि-अभ्यस्ताः तिथौ = पञ्चांगविद्यायाम् ये तैरपि । अतिथिकुशलैः—अतिथीन् = अभ्यागतान् कुशांश्च लान्तीति = स्वीकुर्वन्तीति तैः = अतिथिसेवापरायणैः । सामप्रयोगप्रधानैरपि—साम = सामवेदः, तस्य प्रयोगः = उपयोगः प्रधानो येषां तैरपि । दण्डावलम्बिभिः = पलाशदण्डधारकैः । शतपथानुसारिभिरपि—शतपथम् = यजुर्वेदनागम् अनुसरन्ति = आचरन्ति इति तैरपि । एकमार्गैः—एकः = अद्वितीयः मार्गः = नीतिर्येषां तादृशैः ब्राह्मणैः = विप्रैः । अध्यासितम् = अधिवसत । एकत्र = एकस्मिन् स्थाने । द्रोणपुरःसरैः = द्रोणाचार्यप्रमुखैः, मानप्रधानैर्वा । कुरुभिः इव = कौरवैः इव । तुलाधारिभिः = तिर्यक् स्तम्भधारिभिः । प्रासादैः = सदनैः इव । पक्षे-तुलाधारिभिः व्यापारिवर्गैरिव । अनुमेयानुमाननिपुणैः अनुमेयम् = कणादिः, तस्यानुमानम् = उद्देशज्ञानम् । पक्षे-अनुमीयते तदनुमेयम् । अनुमीयतेऽनेन तदनुमानम् । यथाऽयं वह्निमान् धूमवत्त्वात् इत्यत्र धूमोऽनुमानम् । वह्निरनुमेयः । द्रव्यानुगुणकर्मविशेषपण्डितैः = विशेषाश्चेमे पण्डिताः विशेषपण्डिताः द्रव्यस्य = रूप्यकादेरनुगुणः सकलना तत्कर्मणि विशेषपण्डिताः = विशेषज्ञास्तैः । वैशेषिकैरिव वैशेषिकदर्शनशास्त्रज्ञैरिव, पक्षे-द्रव्यानुगता गुणकर्मविशेषाः पदार्थास्तेषु पण्डिताः = कुशलास्तैः । रूपसिद्धिप्रधानैः—रूपम्-टङ्कक-रूपकादिनामकम्, शब्दश्च, तस्य सिद्धौ = साधनायाम् प्रधाना ये तैः । अनेकग्रन्थिबद्धकपर्दकैः— अनेकग्रन्थिभिर्बद्धाः कपर्दाः = वराटाः जटाबन्धश्च येषां तैः । रुद्रैः इव । त्रिपणिवणिग्जनैः = व्यापारिपुरुषैः । अधिष्ठितम् = आवसितम् । एकत्र = एकस्मिन् स्थाने । विटकौलदम्भदीक्षाभिः—विटकौलानाम् = वाममार्गिशाक्तानाम् दम्भः = पाखण्डः, तस्य दीक्षा यासु ताभिरिव । कुचरूपलोभितलोकाभिः—कुचयोः रूपेण लोभितः लोकः = जगत् याभिस्ताभिः, पक्षे-शाक्तदम्भदीक्षासु कुत्सितेन चरुणा मांसादिनोपलाभितलोकाभिः । भग्नयतिगणवृत्ताभिः = छन्दोयतिगणदोष युक्ताभिः । कुकविकाव्यपद्धतिभि इव-कुकवेः = असमर्थकवेः काव्यस्य = रचनायाः पद्धतिभिः सरणिभिः इव । रजनि रागिणीभिः = हरिद्रारञ्जिताभिः, पक्षे निशागीताभिः निशाचरीभिः इव = राक्षसीभिरिव । सर्वतोमुखजघनचपलाभिः सर्वतः = सर्वदिग्भ्यः मुखे = आनने जघने च चपलाभिः = चञ्चलाभिः अपि । अनार्याभिः = दुष्टाभिः, आर्यावृत्तरहिताभिश्च । कर्णाट चेटीभिः = कर्णाटदासीभिः । भरितम् = परिपूर्णम् । एकत्र = एकस्मिन् स्थाने । कुलालाकीर्णम्—कुलालैः = कुम्भकारैः, पक्षे-कुत्सितया लालयाचाकीर्णम् = युक्तम् । बालकमिव = बालमिव । एकत्र = क्वचित् । कुराजितम्—कुरैः तरुभिः । राजितम् = शोभितम्, पक्षे, कुत्सित जरया जितम् । वृद्धम् = जरठम् इव । एकत्र = क्वचित् । प्रवर्धमानसकलशिशुशोभितया—प्रवर्धमानैः सकलैः कलावद्भिः शिशुभिः = डिम्भैः शोभितया चित्रविद्यया इव = चित्रकलयेव । विन्यस्तस्वस्तिकया—विन्यस्ताः स्वस्तिकाः मौक्तिकादिक्षोदरचिताश्चतुष्का यस्यां तया । सर्वतोभद्रभूषणया-सर्वतः = सर्वत्र भद्रभूषणया—भद्राणि वास्तु-

शास्त्राख्यातानि भूषणानि यस्यां तया। भवनमालया–प्रासादपंक्त्या। अलङ्कृतम्= शोभितम्। एकत्र=क्वचित् पताकासन्धिसंगतैः—पताका=ध्वजवासः, सैवाङ्को येषाम् तथा संधिषु संगितानि, तैः। नाटकेषु तु मुख्यनायकोपरि उपनायकचरितं पताका अङ्कः=प्रवन्धविमात्राः। मुखप्रतिमुखगर्भअवमर्शनिवर्हणाख्या पञ्चसन्धयः, तत्सहितैः। दृष्टकूटकर्मभिः—दृष्टानि=अवलोकितानि कूटः=कपटकार्याणि यैस्तैः, पक्षे अवलोकितं शिखरेण कर्म यैस्तैः। दुष्टकिरातैः=दुष्टवन्यपुरुषैः। सुधारैः—सुष्ठु धाराः= शोभनाधाराः येषां तादृशैः। पक्षे सुधायुक्तैः। शस्त्रैरिव=आयुधैरिव विचित्रैः अपि= अद्भुतैरपि सचित्रैः=चित्रयुक्तैः। सतुलैरपि=तिर्यक् स्तम्भसहितैरपि अतुलैः= अतुलनीयैः देवकुलैः=देवमन्दिरैः। सङ्कुलम्=परिपूर्णम्। विशालम् अपि=विस्तृतम् अपि। शालासम्पन्नम् गजतुरगादिशालायुतम्। चतुश्चरणसंयुक्तम् अपि-चत्वारश्चरणाः=ऋक् यजुः सामाथर्ववेदाः, तैः संयुक्तम्=युक्तम् अपि। चरणरहितम्=युद्ध शून्यम्। विटसम्भृतम् अपि–विटाः चेटविटादि नाटकपात्राणि पक्षे वैश्याः, तैः सम्भृतम्=परिपूर्णम् अपि। शुचिमार्गम् शुचयः शुद्धाः मार्गाः=पन्थानः यत्र तत्। सर्वत्र= सर्वतः। चत्वराधिकमपि चत्वराणि=चतुष्पथानि अधिकेन=बहुलेन यत्र तत् अपि। स्थिरप्रकृतिः=स्थिरस्वभावाः यत्र तत्, अथवा स्थिरामात्यादिकम्। मज्जन्महाराष्ट्रकुटुम्बिनीमुखमण्डलविधीयमानोत्फुल्लकमलशोभायाः—मज्जंतीनाम्=स्नानं कुर्वन्तीना महाराष्ट्रकुटुम्बिनीनाम्=महाराष्ट्रनारीणाम् मुखमण्डलम्=आननमण्डलम् तस्य विधीयमाना=क्रियमाणा उत्फुल्लकमलशोभा=विकसितपद्मशोभा, यस्याः तस्याः। तुङ्गतरङ्गरङ्गत्तरुणार्जुनराजीवराजमानराजहंसविराजितवारेः—तुङ्गतरङ्गेषु=उन्नतवीचिषु रङ्गन्ति तरुणानि=नूतनानि अर्जुनानि धवलानि यानि राजीवानि तद्वद् राजमानाः=शोभायमानाः ये राजहंसाः=मरालास्तैर्विराजितम् शोभितम् वारि यस्या स्तस्याः। वरदायाः=वरदानद्याः। तीरे=तटे। रमणीयकरसकुण्डम् रसानाम्=आनन्ददायकरसानाम् कुण्डम्=पात्रम् कुण्डिनम् नाम=कुंडिननामकम्। नगरम्=पुरम् (अस्ति)।

हिन्दी—उस दक्षिण देश के अन्तर्गत वैदर्भ मण्डल का अलङ्कार बना हुआ उपद्रव रहित, इन्द्र की अमरावती से होड़ करने वाला, चारो ओर से खाइयों से घिरे हुए उत्कृष्ट एवं मनोहर उद्यानों से आलिङ्गित, बहुत से गगनचुम्बी प्रासादों के शिखरों से सूर्य के रथ की द्रुतगति को रोकने वाला, जहां एक स्थान पर अग्निहोत्र मन्त्रों की पावन आहुतियों से समस्त स्वर्ग, गगन तथा भूमि सम्बन्धी उत्पात समूह को नष्ट किये हुए मन्यु, (यज्ञ) करके भी मन्यु (क्रोध) शून्य, पुरुषसूक्त श्रीसूक्तादि पढ़े होकर भी निरुक्त (विशेष ग्रन्थ) के पारङ्गत, सन्मार्ग (सदाचार-पथ) पर स्थिर होकर भी, गृहस्थ, सकलत्र (सभी की रक्षा करने वाले) होकर भी ब्रह्मचारी (वैदिक आचरण करने वाले) अभ्यस्त तिथि (पञ्चाङ्ग विद्या के अभ्यासी) होकर भी अतिथिकुशल (आतिथ्य सत्कार करने में प्रवीण), सामप्रयोग (सामवेद के उपयोग) में प्रमुख होकर भी दण्डावलम्बी (पलाशदण्डधारण करने वाले) शतपथानुसारी (यजुर्वेद के एकभाग

के अनुसार आचरण करने वाले) होकर भी, एकमार्ग (एक नीति वाले) ब्राह्मणों के द्वारा निवास स्थान बनाया हुआ, एकत्र द्रोण-प्रधान (द्रोणाचार्य प्रमुख अथवा मान प्रधान) कौरवों के समान, तुलाधारी (तिरछे स्तम्भों वाले) प्रासादों जैसे अनुमेय— अनुमान (वस्तुओं के उद्देश्य फल भाव आदि) में अनुमेयानुमानादि ज्ञान में चतुर नैयायिकों जैसे, द्रव्यगुण कर्मादि पदार्थों में कुशल वैशेषिकों के समान रुपये-पैसे-गुणावगुण तथा व्यापारादि में कुशल, रूपसिद्धि प्रमुख वैयाकरणों (व्याकरण के विद्वानों) के समान रूपसिद्धि (टांका आदि लगाने) वाले, अनेक ग्रन्थियों से बांधी हुई कौड़ियों (जटाओं) वाले रुद्रों के समान अनेक गठरियों में कौड़ी बांधने वाले, दूकानदारी करने वाले बनियों से अधिष्ठित, एकत्र (कहीं) विट कौलों (वाममार्गी शाक्तों) की दम्भपूर्ण दीक्षाओं के समान दीक्षा वाली कुचरूप लोमित (कुचों के रूप से लोमयुक्त पुरुषों वाली—निन्दित मांसादि लोभवाली) भग्नयतिगण वृत्त यति गण तथा छन्द आदि से रहित असमर्थ कवि की काव्यपद्धति के समान मुनि समूह के शील को भङ्ग कर देने वाली, रजनिरागिणी निशाचरियों के समान रजनी (हरिद्रा का) रागिणी (अङ्गलेप करने वाली, मुखजघनस्थलादि सबसे चञ्चल अनार्या। दुष्टमहिलाओं के समान कर्नाटक देश की सेविकाओं से परिपूर्ण एक ओर कुलालाकीर्ण (लार टपकाने वाले) बालक के समान कुलालों (कुम्भकारों से सम्पन्न, कहीं कुजराजित (अशोभितया वृद्धत्वसे व्याप्त) वृद्ध पुरुष के समान कुजों (वृक्षों) से परिपूर्ण, कहीं चित्रविद्या के समान बढ़ते हुए सम्पूर्ण शिशुओं से शोभित, स्वस्तिक चिह्न विधान द्वारा सर्वतोभद्र वेदिका निर्माण के समान चारों ओर सुन्दर सजावट से पूर्ण भवन पंक्तियों से सुशोभित, कहीं, पताका अंक-संधियों से युक्त नाटकों के समान ध्वजाओं, चिह्नों तथा सन्धियों वाले, कपट व्यापार को देखने वाले दुष्ट किरातों के समान कूटों (शिखरों) से कार्यों को देखने वाले उत्तम धार वाले शस्त्रों के समान सुधा (चूने) से पुते हुए, सचित्र होने के कारण अद्भुत, तिरछे स्तम्भों से युक्त अतुलनीय देवकुलों (देवालयों) से संकुल, विशाल गज, तुरगादि की शालाओं से सम्पन्न, चारो चरणों—ऋग्-यजुः, साम-अथर्ववेदों से युक्त होकर भी रण के वातावरण से रहित, विट्-वैश्यों से सम्पन्न होकर भी पवित्र मार्गों वाला, सर्वत्र बहुत से चौराहों और स्थिर प्रकृति (मन्त्री आदि) से सम्पन्न स्नान करती हुई महाराष्ट्र-रमणियों के मुखमण्डल से प्रतिविम्बित होने वाले उत्फुल्ल कमलों की शोभा वाली तुङ्ग तरङ्गों में रञ्जित नूतन अर्जुन (श्वेत कमल) और राजहंसों से शोभित जल वाली वरदा नदी के तट पर सौन्दर्य रस कुण्ड के समान 'कुण्डिन' नामक नगर है।

यस्य नातिदूरे दर्शनदूरीकृतदुरितोपप्लवाऽऽप्लवनजनितपातकभङ्गां गङ्गामुपहसन्ती स्वर्गमार्गाश्रयनिश्रेणी पुण्यपयाः पयोष्णी वहति ॥

सुधा—यस्येति। यस्य = कुण्डिनपुरस्य। नातिदूरे = समीप एव। दर्शनदूरीकृतदुरितोपप्लवाऽऽप्लवनजनितपातकभङ्गाम्—दर्शनेन = अवलोकनेन दूरीकृतम् = नाशितम् दुरितोपप्लवम् = पापसमूहम् तथा आप्लवनजनितम् = स्नानजन्यम् पातकभङ्गम् =

अघविनाशनम् यया तादृशीम् । गङ्गाम् = सुरनदीम् । उपहसन्ती = उपहासं कुर्वन्तीम् स्वर्गमार्गाश्रयनिश्रेणी = नाकमार्गस्य सोपानभूता । पुण्यपयाः = पुण्यं = पवित्रम् पयः = सलिलम् यस्याः । पयोष्णी = पयोष्णी नाम नदी । वहति = प्रवहति । गङ्गा तु स्नानादेव पातकभङ्गं करोति परं पयोष्णी दर्शनादेव पातकभङ्गाऽस्तीति विशेषः ।

हिन्दी—जिसके समीप ही दर्शन मात्र से पाप समूह को नष्ट करने वाली और स्नान से पातकों को मिटाने वाली गङ्गा का उपहास करती हुई स्वर्ग मार्ग के सोपान के समान पवित्र जल वाली पयोष्णी नदी बहती है ।

यस्य च पश्चिमदेशे प्रणतसुरासुरमौलिनीलमणिमरीचिचञ्चरीकचक्रचुम्बित-चरणाम्भोजस्य भोजकटकूपजन्मनो जरापातितययातेः प्रचण्डदण्डदाण्डिक्यदण्ड-नाडम्बरितगण्डपाषाणविदलितवैदर्भमण्डलस्य भगवतो भार्गवस्याश्रमः ॥

सुधा—यस्येति । यस्य = कुण्डिनपुरस्य । पश्चिमप्रदेशे = प्रतीची भागे । प्रणत-सुरासुरमौलिनीलमणिमरीचिश्चरीकचन्द्रचुम्बितचरणाम्भोजस्य—प्रणतानाम् = अवनतानाम् सुरासुराणाम् = देवानाम् राक्षसानाञ्च मौलयस्तेषां नीलमणीनां मरीचिषु = नीलमणिकान्तिषु यत् चञ्चरीकाणाम् = भ्रमराणाम् चक्रम् = दलम्, तेन चुम्बिते चरणाम्भोजे=चरणकमले यस्य तस्य । भोजकटकूपजन्मनः—भोजकटकूपेति अधिष्ठान-नाम, तज्जन्मास्येति । तथा च श्रुतिः शुक्रो भोजकटेऽभवत् । कूपादि प्रसिद्धचा हि अधिष्ठाननामानि दृश्यन्ते । तथा च शिवकूपः, किराटकूपः, जाङ्गलकूपः इत्याद्यधिष्ठान-नामानि मरु देशे । जरापातितययातेः—जरा = वृद्धत्वम् पातिता = बलात् कृता यः यातौ = ययातिनृपे येन तस्य । वृषपर्वदैत्यसुतां शर्मिष्ठां शुक्रसुतां देवयानीं च ययातिनृपतिरुपयेमे । ततोऽसौ शर्मिष्ठा प्रीत्या देवयानीमवजानन् 'तवाङ्गे जरा पततु' इति शुक्रेण ययातिः शप्तः । प्रचण्डदण्डदाण्डिक्यदण्डनाडम्बरित गण्ड-पाषाणविदलित-वैदर्भमण्डलस्य—प्रचण्डः = उग्रः दण्डः = शासनम् यस्य तादृशम् दाण्डिक्यम् = दाण्डिक्य-नामानं नृपम् दण्डनाय = शासनाय आडम्बरितेन गण्डपाषाणेन = पातालगण्डशैलवृष्टिना विदलितम् = नाशितम् वैदर्भं मण्डलम् = वैदर्भदेशमण्डलम् येन तस्य । भगवतः = प्रताप-शालिनः । भार्गवस्य = शुक्राचार्यस्य । आश्रमः = आश्रमस्थानम् अस्ति ।

टिप्पणी—दाण्डक्यो नाम भोजकटदेशाधिपः शुक्रसुतामरजः संज्ञां क्षत्रियः किल हठात् द्विजकन्यां परिणीतवान् । इति परिभूतमन्येन शुक्रेण मन्युपाताल-शैलगण्ड वृष्टिना सः वैदर्भमण्डलो हतः ।

हिन्दी—जिस कुण्डिनपुर के पश्चिम भाग में अवनत देवताओं तथा राक्षसों के मौलि भाग में लगी नीलमणियों की कान्ति पर चञ्चरीक पुंज से चुम्बित चरण कमल वाले, भोजकटकूप नामक अधिष्ठान में उत्पन्न हुए, ययाति नृप को युवावस्था में ही बुढापे का शाप देने वाले प्रचण्डशासन करने वाले-दाण्डिक्य नामक राजा (भोजकटाधीश) को दण्ड देने के लिए पाताल पर्वतों की चोटियों की वर्षा कर वैदर्भमण्डल को नष्ट कर देने वाले भगवान् भार्गव (शुक्राचार्य) का आश्रम है ।

यत्र च विपत्त्राः सन्ति साधवो न तु तरवः, विजृम्भमाणकमलानि सरांसि न जनमनांसि, कुवलयालंकाराः क्रीडादीर्घिका न सीमन्तिन्यः, विपदाक्रान्तानि सरित्कूलानि न कुलानि ॥

सुधा—यत्र चेति । च = तथा यत्र । साधवः = सज्जनाः । विपत्त्राः–विपदः त्रायन्त इति विपत्त्राः सन्ति, तरवस्तु = वृक्षास्तु । विपत्त्राः = विगतानि पत्राणि येषां ते = पत्र हीनाः न सन्ति । विजृम्भमाणकमलानि विजृम्भमाणानि = उत्फुल्लानि कमलानि = अम्भोजानि यत्र तादृशानि = विकसित पद्मानि । सरांसि = तड़ागानि सन्ति । विजृम्भमाणकम् = कुत्सितप्रसरतमलम् = पापम् येषु तानि । जनमनांसि = लोकचेतांसि तु न सन्ति 'मले किट्टे पुरीषे च पापे च कृपणे मलः' इति विश्वः) कुवलयालङ्काराः = कुवलयानि = पद्मानि अलंकाराणि = भूषणानि यासाम् तादृश्यः । क्रीडादीर्घिकाः = क्रीडासरांसि सन्ति । सीमन्तिन्यः = सौभाग्यवतिस्त्रियः 'तु' कुवलयालङ्काराः–कुत्सितानि वलयानि = कङ्कणानि अलङ्काराणि = आभूषणाणि यासाम् तादृश्यः न सन्ति । विपदाक्रान्तानि-वीनाम् = पक्षिणाम् पदैः आक्रान्तानि = आकुलितानि सरित्कूलानि = नदीतटानि सन्ति । विपदाक्रान्तानि = विपदि = विपत्तिभिः आक्रान्तानि = परिपूर्णानि । कुलानि = वंशानि न सन्ति ।

हिन्दी—जहां सत्पुरुष विपत्र (विपत्ति से रक्षा करने वाले) है वृक्ष विपत्र (पत्तों से रहित) नहीं हैं, सरोवरों में कमल विजृम्भित (विकसित) हैं लोगों के मन विजृम्भमाणक मल (कुत्सित मल से विकसित) नहीं हैं। क्रीड़ासरोवर कुवलयालंकार (कम्बलों से शोभा) वाले हैं, सौभाग्यवती स्त्रियां निन्दनीय वलयाभूषणों वाली नहीं है तथा जहां नदियों के तट पक्षियों से आकुलित रहते हैं लोगों के परिवार विपत्तियों से परिपूर्ण नहीं हैं ।

किं बहुना—

देशानां दक्षिणो देशस्तत्र वैदर्भमण्डलम् ।
तत्रापि वरदातीरमण्डलं कुण्डिनं पुरम् ॥ २८ ॥

अन्वयः—तत्र देशानाम् दक्षिणः देशः वैदर्भमण्डलम् (अस्ति) । तत्र अपि वरदातीरमण्डलम् कुण्डिनम् (अस्तीति) ॥

सुधा—देशानामिति । तत्र = तस्मिन् स्थाने । देशानाम् दक्षिणः राज्यानाम् उत्तमः देशः = राज्यम् वैदर्भमण्डलम् = विदर्भराज्यस्य मण्डलम् अस्ति । तत्रापि = वैदर्भमण्डलेऽपि । वरदातीरमण्डलम् = वरदानदीतटस्य भूषणम् । कुण्डिनम् पुरम् = कुण्डिननाम नगरम् । अस्तीति ॥ २८ ॥

हिन्दी—अधिक क्या—वहां देशों में महान् देश वैदर्भ मण्डल है तथा उस वैदर्भ मण्डल में भी वरदानदी तट की शोभा बना हुआ कुण्डिन नाम का नगर है ॥ २८ ॥

तत्रास्ति समस्तरिपुपक्षक्षोददक्षदक्षिणक्षोणीपालमौलिमाणिक्यनिकषनिर्मलितचरणनखदर्पणश्चतुरुदधिपुलिनचक्रवालबालुकासंख्यसंख्यविख्यातकीर्तनीयकीर्ति-

सुधाधवलितवसुंधरावलयो निजभुजपञ्जरान्तरनिरुद्धशारिकायमाणरणरङ्गाङ्गणार्जितोर्जितजयश्रीः, यौवनमदमत्तकान्तकुन्तलविलासिनीनयननीलोत्पलदलमालाचर्यमानलावण्यपुण्यप्रतिमः, रविरिव नासत्यजनकः, पुरंदर इव नाकविख्यातः, गरुत्मानिव नागमाधिक्षेपी, पद्मखण्ड इव नालसहितः, व्याकरणप्रबन्ध इव नामसंपन्नः, धाम धाम्नाम्, आधारो धीरतायाः, पुरं पुरुषकारस्य, आश्रयः श्रेयसां, श्रियां श्रुतीनां च, राजा रणाङ्गणेष्वगणितभीर्भीमो नाम ॥

सुधा—तत्रेति । तत्र = कुण्डिनपुरे । समस्तरिपुपक्षक्षोददक्षदक्षिणक्षोणीपालमौलिमणिक्यनिकषनिर्मलितचरणनखदर्पणः—समस्तानाम् सम्पूर्णानाम् रिपुपक्षक्षोद दक्षानाम् = शत्रुदलक्षोदप्रवीणानाम् दक्षिणानाम् = अनुकूलानाम् क्षोणीपालानाम् = भूपालानाम् मौलिमाणिक्यानि = उत्तमाङ्गमणयः, तेषां निकपेण निर्मलिताश्चरणनखाः एव दर्पणा येन तादृशः । चतुरुदधिपुलिनचक्रवालबालुकासंख्यविख्यात कीर्तनीयकीर्तिसुधाधवलितवसुन्धरावलयः—चतुरुदधिपुलिनचक्रवालबालुकावद् = चतुःसमुद्रद्वीपपुञ्जवालुकावद् असंख्यसंख्येषु = अगणितयुद्धेषु विख्याता = प्रसिद्धा कीर्तनीया = प्रशंसनीया या कीर्तिसुधा = यशः सुधा, तया धवलितम् = शुभ्रितम् वसुन्धरावलयम् = भूमण्डलम् येन तादृशः । निजभुजपञ्जरान्तरनिरुद्धशारिकायमाणरणरङ्गाङ्गणार्जितजयश्रीः—रणाङ्गणे = युद्धस्थले अर्जिता = अधिकृता, निजे = स्वे भुजपञ्जरान्तरे = भुजरूपपञ्जरमध्ये निरुद्धा = अवरुद्धा शारिकायमाणा = सारिकोपमा रणाङ्गणार्जिता = युद्धस्थलाधिकृता अर्जिता—उद्दीप्ता विजयश्रीः = जयलक्ष्मीः येन तादृशः । यौवनमदमत्तकान्तकुन्तलविलासिनी नयननीलोत्पलदलमालाच्यर्मानलावण्यपुण्यप्रतिमः—यौवनमदेन = तारुण्यमदेन मत्तायाः = क्षीबायाः कान्तकुंतलविलासिन्यः = सुन्दरकुन्तलदेशविशेषस्य नार्यः तासाम् नयन एव नीलोत्पलदलमाले = नेत्ररूपनीलकमलपत्रसृशे ताभ्यामचर्यमानम् = पूज्यमानम् लावण्यमेव सौन्दर्यमेव पुण्यप्रतिमाः = पवित्रमूर्तिः यस्य तादृशः । रविरिव = सूर्य इव नासत्यजनकः = अश्विनीकुमार पिता, पक्षे असत्यजनकः = मिथ्योत्पादकः न । पुरन्दर इव = इन्द्र इव । नाकविख्यातः = स्वर्गप्रसिद्धः, पक्षे अकविषु = कुत्सितसूरिषु ख्यातः न । गरुत्मान् इव = गरुडसदृशः । नागमधिक्षेपी = नागम् = सर्पम् अधिक्षेपी = प्रहारकर्ता, पक्षे आगमान् = शास्त्राणि न तिरस्करोति । पद्मखण्डइव = कमलखण्ड इव नालसहितः = नालदंडयुक्तः पक्षे-असत्येभ्यः हितकारकः न । आलेन = अनर्थेन सहितो वा न । व्याकरण प्रबन्ध इव = व्याकरण शास्त्रमिव नामसम्पन्नः = प्रतिपादकयुक्तः पक्षे-आमसम्पन्नः = रोगयुक्तः न । धाम्नाम् = तेजसाम् धाम = विशिष्टतेजा । धीरतायाः = धैर्यस्य । आधारः = अवलम्बः । पुरुषकारस्य = वीरतायाः पुरम् = समूहः । श्रेयसाम् = कल्याणानाम् आश्रयः = आधारः । श्रियाम् = लक्ष्मीनाम् श्रुतीनाम् = वेदानाञ्च । आश्रयः । रणाङ्गणेषु = युद्धभूमिषु अगणितमीमः—अगणितेषु = असंख्येषु मीमः = भयानकः । मीमः = मीमाख्यः राजा = नृपः अस्ति ।

हिन्दी—वहां समस्त शत्रु पक्ष को नष्ट कर देने में दक्ष, दक्षिण देश के राजाओं के मुकुटमणि कसौटी स्वरूप दर्पण से प्रक्षालित नख चरणों वाले, चारों समुद्रतटों के

मण्डल पर छोटे छोटे बालुओं के कणों के समान असंख्य विख्यात एवं प्रशंसनीय कीर्ति रूपी सुधा से पृथ्वी मण्डल को स्वच्छ बना देने वाले, अपनी भुजाओं रूपी पिंजड़े में बन्द की गई सारिका के समान युद्धस्थलों में उद्दीप्त विजय श्री को अर्जित करने वाले, यौवन-मद से मतवाली सुन्दर कुन्तल नामक देश विशेष की सुन्दरियों के नयन रूपी नील कमल दल की मालाओं से अर्च्यमान लावण्यरूपो पुण्यप्रतिमा वाले, सूर्य के समान नासत्य जनक (अश्विनीकुमार के जनक, असत्यको उत्पन्न करनेवाले नहीं । इन्द्र के समान नाकविख्यात (स्वर्ग में प्रसिद्ध, निन्दनीय कवियों में प्रसिद्ध नहीं) गरुड के समान नागयाधिक्षेपी (सर्पों की लक्ष्मी को समाप्त कर देने वाले—आगम-वेदों पर आक्षेप करने वाले नहीं) कमलखण्ड के समान नाल सहित (नालदण्ड सहित–आलसियों के हितकर नहीं) व्याकरण प्रबंध के समान नाम सम्पन्न (प्रतिपादकों से युक्त रोग सम्पन्न नहीं) तेजों में विशिष्ट तेज, धीरता के आधार, वीरता के समूह, कल्याण कार्यों में अग्रणी लक्ष्मी तथा वेदों के आधार रणभूमि में असंख्य लोगों को भयभीत करने वाले भीम नामक राजा हैं ।

यस्यानवरतमुत्कृष्टालयः क्रीडावनपादपाः पौरलोकश्च, अपरुषो दायादाः वाग्विभवश्च, विमत्सरा सभासदो देशश्च, विकसद्रुचयोऽङ्गावयवः क्रीडापर्वतश्च अपराजयो मण्डनमणयः सेनासमूहश्च, अगतरुजा वने विनाशमन्वभवन्नितान्तं रिपवः पुष्पप्रकरश्च ।।

सुधा—यस्येति । यस्य = नृपस्य भीमस्य । अनवरतम् = निरन्तरम् । क्रीडावन-पादपाः—क्रीडावनस्य = क्रीडोद्यानस्य पादपाः = वृक्षाः । उत्कृष्टालयः–उत् = प्रबाल्येन कृष्टाः = सौरभजनितेन आनीताः अलयो यैस्तादृशाः, पौरलोकः = पुरजनश्च । उत्कृष्टः = श्रेष्ठः आलयः = गृहम् यस्य तादृशः । दायादाः = करदाः प्रजाः । अपरुषः–अपगता रुट् येभ्यः = नीरुजः । च तथा वाग्विभवः = वाणीविभवः अपरुषः = स्निग्धः सभासदः = पार्षदाः । विमत्सराः–विगतो मत्सरो येभ्यः = मात्सर्यहीनाः । च देशः = राज्यम् विमत्सरः–वियन्ति = पक्षियुक्तानि सरांसि = तड़ागानि यस्मिन्, तादृशः । अङ्गावयवाः= अङ्गभागाः । विकसद्रुचयः विकसन्ती रुचिः = कान्तिर्येषु तादृशाः । कीडा पर्वतश्च = क्रीडाशैलश्च । विकस-द्रु-चयः = विकसद्रूणाम् = दुर्वृक्षाणाम् चयः = समूहः । मण्डनमणयः = अलङ्कारत्नानि अपराजयः–अपगता राजिः=सन्धिर्येभ्यस्तादृशाः । सेनासमूहश्च = सैन्यदलम् च अपराजयः = पराजयरहितः = अजेयः अगतरुजः = अपगतपीडाः, रिपवः= शत्रवः । वने = विपिने । नितान्तम् निरन्तरम् । अन्वभवन् = अनुभवमकुर्वन् । तथा । पुष्पप्रकरः = पर्वतवृक्षजः पुष्पवर्गः । वने = कानने । नितान्तम् = निरन्तरम् । विनाशम्= नाशम् अन्वभवत् = प्रध्वंसमनुवभूव । अत्र बहुत्वैकत्वश्लेषः ।।

हिन्दी—जिस राजा के क्रीडोद्यान वृक्ष निरन्तर भ्रमरों को अपनी ओर बलात् आकृष्ट किये रहते हैं तथा नगर निवासी उत्कृष्ट भवनों से सम्पन्न हैं । जिसकी प्रजा नीरोग तथा वाणी वैभव रूखेपन से शून्य अर्थात् स्निग्ध है । जिसके सभासद मात्सर्य

ग्राव से रहित तथा देश पक्षियों से घिरे हुये तड़ागों वाला है। जिसके अङ्गभाग विकसित कान्तिवाले तथा क्रीडा पर्वत टेढ़े मेढ़े वृक्षों का समूह है। जिसकी आभूषणमणियां छिद्रों से रहित तथा सेना समूह अजेय है। जिसके पीड़ायुक्त शत्रु वन में नितान्त विनाश का अनुभव करते हैं तथा जिसका सुरभि वृक्षों से उत्पन्न हुआ पुष्पवर्ग वन में नितान्त विनाश का अनुभव करता है।

तस्य च कंदर्पकमनीयकान्तेर्मत्ताः करिणः सदामानो न मानिनीलोकः, कृतविटपानमनाः क्रीडोद्यानतरवो नावरोधजनः, कटकालंकृतदोषः सीमन्तिन्यो न परिपन्थिकः ॥

सुधा—तस्य चेति। च = तथा। तस्य = एतस्य। कमनीयकान्तेः—कमनीया = मनोरमा कान्तिः = दीप्तिः यस्य तस्य राज्ञः। मत्ताः = क्षीबाः करिणः = गजाः सदामानः–सह दाम्ना = अर्गलेनेति = अर्गलायुक्ताः। पक्षे–सदा = सर्वदा मानो गर्वो यस्य तादृशः। मानिनीलोकः = नारीजनः नास्ति। क्रीडोद्यानतरवः = विहारवनवृक्षाः। कृतविटपानमनाः = विटपानाम् = विस्ताराणाम् अनमनम् कृतं तद्यैः। पक्षे-कृतं विटानाम् = लम्पटानाम् पाने = चुम्बने यतो येन तथा अवरोधजनः = अन्तःपुरलोकः नास्ति। सीमन्तिन्यः = सौभाग्यवतिस्त्रियः कटकालङ्कृतदोषाः–कटकैः = वलयैः अलङ्कृतौ = शोभितौ दोषौ = बाहू यासाम् ताः। परिपन्थिकः = परिपन्थी तु न कटकालङ्कृतदोषः–कटके = स्कन्धावारे अलम् = अत्यर्थम् कृतदोषः = कृतोपद्रवः। अत्र बहुत्वैकत्व श्लेषः।

हिन्दी—तथा उस कमनीय कान्ति वाले राजा के मतवाले हाथी सदामान (बन्धन से युक्त) हैं परन्तु मानिनीजन (नारी लोक) सदा मान युक्त नहीं रहता है। उसके विहार वन के वृक्ष विस्तार के कारण झुके रहते हैं परन्तु अन्तःपुरवासी स्त्रियां लम्पट पुरुषों के चुम्बन में मन नहीं लगाती हैं। सौभाग्यवती स्त्रियां बलयालङ्कृत भुजाओं वाली हैं परन्तु परिपन्थी (शत्रु) सेना में पर्याप्त उपद्रव नहीं कर पाता है।

यस्य च चरणाम्भोजयुगलं विमलीक्रियते नमज्जनेन न मज्जनेन ॥
यः शृङ्गारं जनयति नारीणां नारीणाम् ॥
यः करोत्याश्रितस्य नवं धनं न बन्धनम् ॥
यो गुणेषु रज्यते न रमणीनां नरमणीनाम् ॥

सुधा—यस्येति। यस्य = नृपस्य। चरणाम्भोजयुगलम्–पादपद्मद्वयम्। नमज्जनेन-नमता = विनम्रेण जनेन = पुरुषेण। विमलीक्रियते = स्वच्छीक्रियते (केवलं) मज्जनेन = स्नानादिना न विमलीक्रियते = स्वच्छतां नीयते। यः = नृपः। नारीणाम् = रमणीनाम्। शृङ्गारम् = शोभाम्। जनयति = उत्पादयति अरीणाम् = शत्रूणाम् शृङ्गारं न जनयति = नोत्पादयति। यः = नृपः आश्रित्य = आश्रितं जनम्। नवम् = नूतनम्। धनम् = वित्तम् करोति = आश्रितजनम् बन्धनम् = बन्धनयुक्तम् न करोति यः = नृपः रमणीनाम् = नारीणाम् गुणेषु = सौन्दर्यादिषु। न रज्यते = अनुरक्तो न भवति। नरमणीनाम् = पुरुषरत्नानाम् गुणेषु = दानशौर्यदाक्षिण्यादिषु रज्यते = अनुरक्तो भवतीति।

हिन्दी—जिस राजा के कमल के समान सुन्दर चरण-युगल विनम्रजनों के द्वारा उज्ज्वल बनाये जाते हैं केवल स्नानादि द्वारा स्वच्छ नहीं किये जाते हैं। जो राजा नारियों के शृङ्गार को उत्पन्न करता है शत्रुओं के शृङ्गार नहीं उत्पन्न करता है जो कि अपने आश्रितों को धनवान् बनाता है उन्हें बन्धन युक्त नहीं करता है। जो कि उत्तम पुरुषों के शौर्य दान दयादाक्षिण्यादि गुणों पर अनुरक्त रहता है रमणियों में नहीं ॥

यस्य च नमस्याग्रहारेषु श्रूयते नलोपाख्यानं न लोपाख्यानम् ॥

सुधा—यस्येति । च = तथा । यस्य = नृपस्य । नलस्याख्यानम् = नलस्य = उपाख्यानम् = भारतप्रतीतमाख्यानम् । नमस्याग्रहारेषु—नमस्यानाम् = पूज्यानाम् देवद्विजादीनाम् अग्रहारेषु = ग्रामेषु श्रूयते = आकर्ण्यते । लोपाख्यानम् = लोपस्य कथनम् न श्रूयते ।

हिन्दी—और जिसके पूजनीय देवमन्दिरों एवं ब्राह्मणों आदि के घरों में नल का उपाख्यान ही सुना जाता है किसी वृत्तान्त का लोप सुनाई नहीं पड़ता है।

यस्य च राज्ये साक्षरस्य पुस्तकस्य बन्धः, सगुणस्य कार्मुकस्याकर्षणम्, सुवंशप्रभवस्य च्छत्रस्य दण्डः, सुजातेरुद्यानविशेषस्योत्खननम्, कुलीनस्य कन्दस्योन्मूलनारम्भः, सन्मार्गलग्नस्य पुनर्वसुभाजश्चन्द्रस्यैव ग्रहणालोकनमभूत् ॥

सुधा—यस्य चेति । च यस्य = नृपस्य राज्ये = शासने । साक्षरस्य = अक्षर युक्तस्य । पुस्तकस्य = ग्रन्थस्य । बन्धः = बन्धनं भवति साक्षरस्य = अध्येतृवर्गस्य तु बन्धनं न भवति । सगुणस्य = ज्यायुक्तस्य कार्मुकस्य = धनुषः आकर्षणम् = आकर्षणं भवति । सगुणस्य = शौर्यादिगुणयुक्तस्य पुरुषस्य तु आकर्षणं न भवति । सुवंशप्रभवस्य सुष्ठुवंशः सुवंशः = सुन्दरवेणुः, तस्मिन् प्रभवः = जन्म यस्य = सुवेणुजातस्य । छत्रस्य = आतपत्रस्य दण्डः = यष्टिः नतु सुवंशप्रभवस्य = उत्तमकुलजातस्य दण्डः = दमनम् भवति । सुजातेः = उत्तममालतीपादपस्य उद्यानविशेषस्य = विशिष्टवाटिकायाः । उत्खननम् = वृक्षपुष्टये आलवालमार्दवायोत्कृष्टं खननम् भवति । नतु सुजातेः = सुवंशस्य उत्खननम् = उच्छेदनम् भवति । कुलीनस्य—कौ = पृथिव्यां लीनस्य = अभिजातस्य कन्दस्य — मूलस्य उन्मूलनारम्भः = उत्खननप्रारम्भः भवति नतु कुलीनस्य = सुकुलजातस्य उच्छेदनारम्भो भवति । सन्मार्गलग्नस्य—सद् = विद्यमानम्, मृगस्येदं मार्गम्, तस्मिन् लग्नम् = सक्तम्-यस्य । मृगशिरसः । पुनर्वसुभाजः, पुनर्वसुनक्षत्रयुतस्य चन्द्रस्य = विधोः ग्रहणालोकनम् = राहुग्रासदर्शनम् अभूत् = बभूव न तु सन्मार्गलग्नस्य = सुमार्गप्रवृत्तस्य । पुनः = भूयः वसुभाजः=धनाढ्यस्य ग्रहणालोकनम् = धनापहरणदर्शनम् अभूत् = बभूव ।

हिन्दी—जिसके राज्य में अक्षरों से युक्त पुस्तक ही बांधी जाती है, पढ़े लिखे व्यक्ति का बन्धन नहीं होता है, डोरीयुक्त धनुष ही खींचा जाता है, गुणयुक्त व्यक्ति का आकर्षण नहीं होता है, उत्तम बांस से निकला हुआ छत्र का दण्ड होता है, उत्तमवंश में जन्मे हुए पुरुष को दण्ड नहीं दिया जाता है, श्रेष्ठ मालतीवृक्ष वाले उद्यानविशेष की खुदाई होती है, उत्तमकुल का उच्छेद नहीं होता है, पृथ्वी में संलग्न कन्दमूल का उखा-

ड़ना आरम्भ किया जाता है, कुलीनपुरुष का उन्मूलन नहीं होता है, विद्यमान मृगशिर तथा पुनर्वसु नक्षत्रयुक्त चन्द्रमा का ग्रहण दिखलाई पड़ता है, सन्मार्ग पर चलने वाले धनवान् व्यक्तिका धनापहरण नहीं दिखलाई पड़ता है।

किं बहुना—

देवो दक्षिणदिङ्मुखस्य तिलकः कर्णाटकान्ताकुच-
क्रीडाशैलमृगः प्रतापकदलीकन्दः स किं वर्ण्यते।
यस्यारातिकरीन्द्रकुम्भरुधिरक्लिन्नासिदंष्ट्राङ्कुरा-
शौर्यश्रीर्भुजदण्डमण्डपतले सिंहीव विश्राम्यते॥ २९॥

अन्वयः—दक्षिणदिङ्मुखस्य तिलकः, कर्णाटकान्ताकुच-क्रीडाशैलमृगः प्रताप-कदलीकन्दः सः देवः किं वर्ण्यते। यस्य अरातिकरीन्द्रकुम्भरुधिरक्लिन्नासिदंष्ट्राङ्कुरा-शौर्यश्रीः भुजदण्डमण्डपतले सिंही इव विश्राम्यते॥ २९॥

सुधा—देव इति। दक्षिणदिङ्मुखस्य = अवाचीदिशामुखस्य तिलकः = तिलकभूतः! कर्णाटकान्ताकुचक्रीडाशैलमृग—कर्णाटस्य = कर्णाटकदेशस्य। कान्तानाम् = रमणीनाम् कुचरूपस्य = पयोधररूपस्य क्रीडाशैलस्य = क्रीडापर्वतस्य मृगः = हिरणसदृशः। प्रताप-कदलीकन्दः—प्रतापरूपायाः शौर्यरूपायाः कदल्याः = रम्भायाः कन्दः = मूलभागसदृशः। सः = एषः देवः नृपः किं वर्ण्यते = किं कथ्यते। यस्य = नृपस्य। अरातिकरीन्द्रकुम्भ-रुधिरक्लिन्नासिदंष्ट्राङ्कुराशौर्यश्रीः—अरातिरूपकरीन्द्रस्य = शत्रुरूपगजेन्द्रस्य कुम्भस्य = कुम्भस्थलस्य यद् रुधिरम् = रक्तम् तस्मात् क्लिन्ना = सिक्ता असिरूपदंष्ट्रा एवाङ्कुराणि यस्यास्तादृशी = खड्गरूपदाढांकुराशौर्यश्रीः = पराक्रमलक्ष्मीः। भुजदण्डमण्डपतले— भुजरूपस्य मण्डपस्य = बाहुमण्डलस्य तले = अधःस्थले। सिंही इव = मृगेन्द्रीव। विश्रा-म्यते = विश्रामं करोति। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ २९॥

हिन्दी—अधिक क्या—दक्षिण दिशा का मुख तिलक, कर्नाटकदेश की रमणियों के कुचरूपीक्रीडा पर्वत का मृग, प्रतापरूपकदली का मूल वह राजा है। उसका कहां तक वर्णन किया जाय जिसके शत्रुरूपी गजेन्द्र के कुम्भस्थल के रुधिर से गीली बनी हुई तलवाररूपी दाढ़ों वाली शौर्य लक्ष्मी भुज दंडरूपी मण्डप तल पर सिंहिनी के समान विश्राम कर रही है॥ २९॥

तस्य च महामहीपतेरात्मरूपापहसितसमस्तसुरसुन्दरीसौन्दर्यसारसंपत्तिकल-कुलकन्दलीकंदर्पदर्पगजेन्द्रावष्टम्भस्तम्भयष्टिरखिलजननयनकुरङ्गवागुरा रामणीय-कपताकायमानोद्भिन्नवयौवनश्रीः, शृङ्गारस्यागारम्, अवनिर्वनिताविभ्रमाङ्कु-राणाम्, आभोगः सौभाग्यभागस्य, रङ्गशाला रागवृत्तनृत्तस्य, सर्वान्तःपुरपुरं-ध्रिकाप्रधानभूताऽस्ति प्रिया प्रियङ्गुमञ्जरी नाम॥

सुधा—तस्य चेति। तस्य = एतस्य। महीपतेः = नृपस्य। आत्मरूपापहसितसमस्त सुरसुन्दरीसौन्दर्यसारसम्पत्तिकलकुलकन्दलीकन्दर्तदर्पगजेन्द्रावष्टम्भस्तम्भयष्टिः—आत्मरूपेण = स्वरूपेण अपहसिता = तिरस्कृता समस्तसुरसुन्दरीणाम् निखिलदेवाङ्गनानाम् सौन्दर्य-

सारूपसुन्दरतारूपा सम्पत्तिः = सम्पदास्वरूपा तथा च कलकुलकन्दली = कलङ्कसमूह-मूलरूपकन्दलीस्तम्भा, कन्दर्पदर्पगजेन्द्रावष्टम्भस्तम्भयष्टिः—कन्दर्परूपः = मदनरूपो यो दर्पगजेन्द्रः = मत्तगजराजः तस्यावष्टम्भाय = अवरोधाय स्तम्भयष्टिः = स्तम्भदण्डसदृशा। अखिलजननयनकुरङ्गवागुरा—अखिलजनस्य = समस्तलोकस्य नयनकुरङ्गेभ्यः = नेत्ररूप-मृगेभ्यः वागुरा = वन्धनजालसदृशा। रामणीयकपताकायमानोद्भिन्नवयौवनश्रीः—रामणीयकस्य = सौन्दर्यस्य पताकायमाना = पताकासदृशा उद्भिन्नाः प्रकटिता यौवन-श्रीरिव श्रीर्यस्याः = तारुण्यश्रीः। शृङ्गारस्यागारम् = शृङ्गारगृहभूताः वनिताविभ्रमा-ङ्कुराणाम् = नारीभ्रमकन्दलानाम्। अवनिः = भूमिः। सौभाग्यभागस्य = सौभग्यांशस्य। आभोगः = विशालरूपम्। रागवृत्तनृत्तस्य = प्रेमात्मकनृत्तस्य। रङ्गशाला = रङ्गभूमिः। सर्वान्तःपुरपुरंध्रिकाप्रधानभूता—सर्वान्तःपुरस्य = निखिलान्तः राजभवनस्य पुरंध्रिकासु = रमणीषु प्रधानभूतः प्रमुखतमा। प्रिया = दयिताभार्या। प्रियङ्गुमञ्जरीनाम 'प्रियङ्गु-मञ्जरी' इत्यभिधा। अस्ति।

हिन्दी—उस महीपति की अपने स्वरूप से सुरसुन्दरियों के सौन्दर्य रूपी उत्तम सम्पत्ति को तिरस्कृत करने वाली, कलङ्क समूह की जड़ से निकली अङ्कुरितकदली जैसी, मदनरूपी मतवाले गजराज को रोकने के लिए स्तम्भनदण्ड जैसी, समस्त नयन-रूपीमृगों के लिए वन्धन जाल, सुन्दरता की पताका-सी बनी हुई प्रस्फुटित हुई यौवनश्री, शृङ्गार का घर, नारियों के विभ्रमरूपी अङ्कुरोंकी भूमि, सौभाग्यभाग की विशालरूपा, प्रेमात्मकनृत्त की रङ्गभूमि, समस्त अन्तःपुर की कुलाङ्गनाओं में प्रमुख प्रियङ्गुमञ्जरी नाम की प्रियतमा है।

यस्याः पद्मानुकारिणी कान्तिर्लोचने च, रम्भाप्रतिस्पर्धिनीरूपसंपत्तिरूरु-मण्डले च, सुमनोहारिणी केशकबरी भ्रूभंगचक्रे च, भ्रमरकोद्भासिनी ललाट-पट्टिका कर्णोत्पले च, प्रवालुकाकारिणी दन्तच्छदच्छाया करचरणयुगले च॥

सुधा—यस्या इति। यस्याः = एतस्याः राज्ञ्याः। कान्तिः = प्रभा। पद्मानु-कारिणी = कमलानुसारिणी। च = तथा लोचने = नयने। पद्मानुकारिणी = कमलानु-कृतिनी स्तः। रूपसम्पत्तिः = स्वरूपसम्पदा। रम्भाप्रतिस्पर्धिनी—रम्भा अप्सरोऽन्तरं कदली च तां प्रतिस्पर्द्धते = प्रतिस्पर्द्धां कुरुते या तादृशी वा तादृशे उरुमण्डले = जघनस्थले। केशकवरी कचवेणी सुमनोहारिणी=कुसुमहारिणी मनोरमे वा। भ्रूभङ्गचक्रे= भ्रुवप्रदेशे। ललाटपट्टिका = ललाटस्थली। भ्रमरकोद्भासिनी = भ्रमरकम् = ललाट-स्थलम् तदुद्भासिनी। तथा च कर्णोत्पले = श्रोत्रकमले भृङ्गोद्भासिनी। दन्तच्छदच्छाया= रदच्छदकान्तिः। प्रवालुकाकारिणी = विद्रुमाकारिणी। तथा च करचरणयुगले = हस्त-पादद्वये। पल्लवानुकारिणी। स्तः। अत्रप्रथमैकत्वद्वित्वयोः स्त्रीक्लीबयोश्च श्लेषः॥

हिन्दी—जिसकी कान्ति तथा दोनों नयन कमल के समान हैं, रूपसम्पदा रम्भा अप्सरा से होड़ लगाने वाली तथा उरू मण्डल कमल से प्रतिस्पर्द्धा करने वाले हैं, केशों का जटाजूट फूलों से ग्रथित तथा भौहों की भंगिमा अत्यन्त मनोरम है, दांतों की कान्ति विद्रुममणि जैसी तथा हाथ पांव किसलय दलों जैसे हैं।

यस्याः सुवर्णमयं वचनं नूपुरं च पदे पदे मनो हरति ॥
यस्याः सुमधुरया वाचा सदृशी शोभते कण्ठे कुसुममालिका।
अलिकालयाऽप्यलकवल्लरीमालया सह विराजते तिलकमञ्जरी ॥

सुधा—यस्या इति। यस्याः = राज्ञ्याः। वचनम् = कथनम्। सुवर्णमयम् = अकारादि सुष्ठुवर्णयुक्तम् तथा च नूपुरम् = नूपुरालङ्कारम् सुवर्णमयम् = स्वर्णयुक्तम्। पदे-पदे = प्रत्येक प्रकृतिविभक्तिसमुदाये। पक्षे प्रतिचरणविन्यासे। मनः = चेतः हरति = मोहयति। यस्याः। सुमधुरया = मनोहरया वाचा = वाण्या। सुष्ठु मधुनः = मकरन्दस्य रयः = प्रसरो यत्र तादृशी कुसुममालिका = पुष्पमाला सदृशी = समा कण्ठे = ग्रीवायाम्। शोभते = राजते। अलिकालया अपि–अलिकम् = ललाटम् आलयः = स्थानम् अस्याः सा अपि। तिलकमञ्जरी = तिलकरूपा मञ्जरी पक्षी तिलकवृक्षस्य मञ्जरी। अलकवल्लरीमालया सह–केशजालमेव वल्लरी = लता तस्याः मालया सह। तृतीयापक्षे–अलिवत्कालो वर्णो यस्याः, तादृश्या वल्लरीमालया = लतापंङ्क्त्या सह। विराजते = शोभते।

हिन्दी—जिसके सुन्दर वर्णों से युक्त वचन तथा स्वर्णमय नूपुर पद पद पर (प्रत्येक प्रकृतिविभक्ति आदि पद तथा प्रत्येक कदम पर) मन प्रसन्न कर लेते हैं। जिसकी सुमधुर वाणी सुन्दर पराग-राशिवाली कुसुममालिका कण्ठ में शोभित हो रही है तथा ललाट पर धारण की गई भी तिलकरूपी मञ्जरी (अथवा तिलक वृक्ष की मञ्जरी) केशों की बल्लरी (वेणी) के साथ सुन्दर लग रही है।

किं बहुना—

तस्याः कान्तिनिरुद्धमुग्धहरिणीलीलाचलच्चक्षुष-
स्तारुण्यस्य भरादनालसलसल्लावण्यलक्ष्मीरसः।
लुम्पल्लोकविलोचनाञ्जलिपुटैः पेपीयमानोऽपि स-
न्नङ्गेष्वेव न माति सुन्दरतरो रङ्गंस्तरङ्गैरिव ॥ ३० ॥

अन्वयः—कान्तिनिरुद्धमुग्धहरिणी लीलाचलच्चक्षुषः तस्याः तारुण्यस्य भरात् अनालसलसल्लावण्यलक्ष्मीरसः लुम्पल्लोकविलोचनाञ्जलिपुटैः पेपीयमानः सन् अपि सुन्दरतरः रङ्गतरङ्गैः इव अङ्गेषु एव न माति ॥ ३० ॥

सुधा—तस्याः इति। कान्तिनिरुद्धमुग्धहरिणीलीलाचलच्चक्षुषः—कान्तौ = प्रभायाम् निरुद्धे = अवरुद्धे मुग्धहरिण्याः = मत्तमृग्यायाः चलती = चञ्चले चक्षुषीव = नेत्र इव चक्षुषी यस्याः। तस्याः = एतस्याः राज्ञ्याः। तारुण्यस्य = तरुणतायाः। भरात् = गौरवात्। अनालसलसल्लावण्यलक्ष्मीरसः अनालसेन = आलस्यहीनतया लसन् = शोभितो भवन् लावण्यलक्ष्मीरसः–लावण्यरूपलक्ष्म्याः = सौन्दर्यश्रियाः. रसः = आनन्दः। लुम्पल्लोक वलोचनाञ्जलिपुटैः—लोकानाम् = जनानाम् विलोचनानि = नेत्राणि एव अञ्जलिपुटानि लुम्पन्ति लोकविलोचनाञ्जलिपुटानीतिः तैः। पेपीयमानः सन् अपि = वारवारपानं कुर्वन्नपि। सुन्दरतरः = रमणीयतरः। तरङ्गैः = वीचिभिः रङ्गन् = विलसन् इव। अङ्गेषु = शरीरावयवेषु (न माति = न लसति। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ३० ॥

हिन्दी—कान्ति से मुग्ध हरिणी के लीलाकालीन चञ्चल नेत्रों के समान नेत्रों वाली उस रानी के तारुण्यभार से आलस्यहीन उल्लसित लावण्यरूपी लक्ष्मी का रस ललचाये हुए लोगों के नयनोंरूपी अञ्जलिपुट से बारबार पीकर भी वह अधिक सुन्दर रस तरङ्गों से तरंगित होता हुआ अङ्गों में शोभित नहीं हो रहा है ॥ ३० ॥

एवमनयोः सकलसंसारसुखरसास्वादमुदितमनसोर्यान्ति दिवसाः ॥

सुधा—एवमिति । एवम् = इत्थम् । सकलसंसारसुखरसास्वादमुदितमनसोः सकलस्य = सम्पूर्णस्य संसारस्य = लोकस्य सुखम् = आनन्दम् इति सकलसंसारसुखम् तस्य रसस्य य आस्वादः, तेन मुदिते = प्रसन्ने मनसी = चेतसी ययोस्तयोः । अनयोः = एतयोः प्रियङ्गुमञ्जरी–भीमनृपयोः । दिवसाः = दिनानि । यान्ति = गच्छन्ति ।

हिन्दी—इस प्रकार संपूर्ण संसार-सुख के रसास्वाद से प्रसन्नमनवाले उन दोनों के दिन व्यतीत हो रहे हैं ।

कदाचिच्चटुलतरतरुणषट्चरणचक्रचुम्बनाक्रमणभरभज्यमानमञ्जरीजालगलदमन्दमकरन्दबिन्दुकर्दमितेषु विविधाङ्गविहङ्गविहारविदलितदलदन्तुरान्तरालेषु स्मरबन्धुसुगन्धिगन्धवाहवाजिबाह्यालीषु वरदायाः पुण्यपुलिनपालिपादपतलेषु रममाणयोः परिणतेन्द्रवारुणारुणकपोलकान्तिरुद्घुषितदेहपिण्डकण्डूयनाकूततरलितकरकिसलया बालकमेकमुदरदेशलग्नमपरमपि पृष्ठप्रतिष्ठितमुद्वहन्ती कापि कपिकुटुम्बिनी दृष्टिपथमवातरत् ॥

सुधा—कदाचिदिति । कदाचित् = कदापि चटुलतरतरुणषट्चरणचक्रचुम्बनाक्रमणभरभज्यमानमञ्जरीजालगलदमन्दमकरन्दविन्दुकर्दमितेषु चटुलतरस्य = चपलतरस्य तरुणस्य = यूनः षट्चरणचक्रस्य = मधुकरसमूहस्य चुम्बनाय = आलिङ्गनाय यः आक्रमणभरः = आक्रमणभारः, तेन भज्यमानम् त्रुट्यमानम् यन्मञ्जरीजालम् = मञ्जरीदलम्, तस्मात् गलन्ति=स्रवन्ति अमन्दानि = दीप्यमानानि यानि मकरन्दबिन्दूनि = परागकणानि, तैः कर्दमितेषु = पङ्किलेषु । विविधविहङ्गविहारविदलितदलदन्तुरान्तरालेषु विविधाङ्गैः = विविधमार्गैः विहङ्गानाम् = पक्षिणाम् विहारैः = भ्रमणैः विदलितानि = नष्टानि यानि दलदन्तुरान्तरानि = पर्णदन्तुरमध्यानि, तेषु । स्मरबन्धुसुगन्धिगन्धवाह वाजिवाह्यालीषु-स्मरबन्धोः = कामदेवभ्रातुः सुगन्धिनः = सुरभियुक्तस्य गन्धवाहस्य = पवनस्य वाजिनः = अश्वस्य ये बाह्यालयः = बाह्यविश्रामगृहाणि तादृशेषु । वरदायाः = वरदानद्याः । पुण्यपुलिनपालिपादपतलेषु–पुण्यायाः = पवित्रायाः पुलिनपाल्याः = तटपंक्त्याः ये पादपाः = वृक्षास्तेषां तलेषु = अधःसु । रममाणयोः = विहरमाणयोः । परिणतेन्द्रवारुणारुणकपोलकान्तिः–परिणतस्य = पक्वस्य इन्द्रवारुणस्य = इन्द्रवारुणफलस्यारुणकान्तिरिव कपोलकान्तिः = अरुणाभा यस्यास्तादृशी । उद्घुषितदेहपिण्डकण्डूयनाकूततरलितकरकिसलया—उद्घुषितस्य=धर्षितस्य । देहपिण्डस्य = शरीरपिण्डस्य कण्डूयनाय = घर्षणायाकूतेन = उत्कण्ठतया तरलिते=चञ्चले करकिसलये यस्यास्तादृशी । कापि= काचित् । कपिकुटुम्बिनी = वानरपत्नी । एकम् बालकम् = एकम् = शिशुम् । उदरदेश-

लग्नम्–जठरस्थानसंलग्नम् । अपरम् आप = द्वितीयम् शिशुमपि । पृष्ठप्रतिष्ठितम् पृष्ठ-मागेऽवस्थितम् । उद्वहन्ती = वहन्ती । दृष्टिपथम् = चाक्षुष्पथम् अवातरत् = अगच्छत् ।

हिन्दी—किसी बार अत्यन्त चञ्चल तरुणभ्रमर समूह के चुम्बन के लिए आक्रमण-मार से नष्ट हुये मञ्जरीजाल से टपकते हुए मकरन्दबिन्दुओं की कीचड़ वाले, विविध पक्षियों के विहार से टूटे हुये पत्तियों के ऊँचे नीचे मार्गों वाले, कामदेव के बन्धु पवन के सुगन्धितवायुरूपी घोड़ों के लिए वाह्याली (बाहरी विश्राम गृह) वाले वरदा नदी के पवित्र तटपंक्तियों वाले वृक्षों के नीचे (रानी और राजा के) रमण करते हुए, पके हुये इन्द्रवारुण के फलों के समान कपोल कान्तिवाली, रगड़ी हुई देह के खुजलाने के लिए उत्कण्ठा से तरलित करपल्लवों वाली किसी = कपिकुटुम्बिनी (वानरी) एक बालक (वानर-शिशु) को पेट से चिपकाये तथा दूसरे को पीठ पर लादे हुए दिखलाई पड़ी ।

तां चावलोक्य चेतस्यास्पदमकरोत्तयोरनपत्ययोर्विषमविषादवेदनाव्यतिकरः ॥

सुधा—तामिति । च = तथा । ताम् = मर्कटीम् । अवलोक्य = दृष्ट्वा अनपत्ययोः = निःसन्तानयोः तयोः = एतयोः प्रियङ्गुमञ्जरीभीमयोः । चेतसि = मनसि । विषयविषाद-वेदना व्यतिकरः—विषमविषादस्य = असह्य दुःखस्य वेदनायाः = पीडायाः व्यतिकरः = संस्पर्शः आस्पदम् अकरोत् = स्थानञ्चकार ।

हिन्दी—उस वानरी को देखकर सन्तानहीन इन दोनों (प्रियङ्गुमंजरी तथा भीम) के मन में असह्य वेदना ने घर कर लिया ।

करपत्त्रधाराकर्तनदुःसहदुःखदूनमनसोर्वैमनस्यमभूद् भूम्नि राज्ये जने जीविते च । किमनेनाधिपत्येनापत्यशून्येन ॥

सुधा—करपत्रेति । करपत्त्रधारा कर्तनदुःसहदुःखदूनमनसोः–करपत्त्रधारया–क्रकचधारया कर्तनेन = छेदनेन यत् दुःसहम्–असह्यम् दुःखम् = क्लेशम्, तेन दूने = खिन्ने मनसी = चेतसी ययोस्तयोः । भूम्निराज्ये = विशाले शासने । जने = परिवारे । जीवने= जीविते । च वैमनस्यम् – वैराग्यम् । अभूत् = अभवत् (यत्) अपत्यशून्येन = सन्तान-हीनेन । अनेन = एतेन आधिपत्येन = राज्यवैभवेन । किम् = कः लाभः ।

हिन्दी—आरे की धार से कटने जैसे असह्यदुःख से व्याकुलचित्त उनदोनों के मन में विशालराज्य, परिवार तथा जीवन में विराग हो गया कि सन्तानहीन आधिपत्य से क्या लाभ है ।

सर्वथा सकलसुरासुरकिरीटकोटीकोणशोणमणिमरीचिचञ्चरीकचुम्बितचर-णाम्बुजमम्बिकाप्रियं प्रतिपद्यामहे महेश्वरमित्यन्योन्यमालोचयांचक्रतुः ॥

सुधा—सर्वथेति । सर्वथा = सर्वप्रकारेण । सकलसुरासुरकिरीटकोटीकोणशोण-मणिमरीचिचञ्चरीक चुम्बितचरणाम्बुजम्–सकलानां = सम्पूर्णानाम् सुरासुराणाम् = देवानामसुराणाञ्च किरीटकोट्याम् = मुकुटैकदेशे कोणे शोणमणेः = रक्तमणेः मरीचय एव = किरणा एव चञ्चरीकाः = भ्रमराः तैश्चुम्बिते – आलिङ्गिते चरणाम्बुजे = पादपद्मे यस्य तम् । अम्बिका-प्रियम् अम्बिकायाः = पार्वत्याः प्रियम् = दयितम् पतिम् ।

महेश्वरम् = शिवम् । प्रतिपद्यामहे = आराधयामहे इति । अन्योन्यम् = परस्परम् । आलोचयाञ्चक्रतुः = विचारयामासतुः ।

हिन्दी—"सर्व प्रकार से समस्त देवताओं तथा राक्षसों के मुकुटों के ऊपर एक भाग में लगी लालमणियों की कान्ति रूपी भौंरों से चुम्बित चरणकमल वाले अम्बिका प्रिय महेश्वर की हम आराधना करेंगे" यह उन दोनों ने परस्पर में विचार किया ।

अथ विपुलवियद्विलङ्घनश्रमप्रशमनार्थमरुणेन वारुणीं प्रतिपानार्थमिवावतार्यमाणेषु रविरथतुरंगमेषु, अपरासक्ते दिवसभर्तरि शोकभरादिव तमःपटलेनापूर्यमाणामाश्वासयितुमिव पूर्वां दिशमभिधावमानासु पादपच्छायासु, हारीतहरितहरिहारिणस्तरणेररण्यान्तराच्च मन्दमपवर्त्तमानेषु गोमण्डलेषु, अस्ताचलवनदेवतादत्तरक्तचन्दनार्घसलिलप्लवप्लाव्यमान इव लोहितायति पश्चिमाशामुखे, वारविलासिनीभिः कपोलमण्डलीमण्डनाय क्रियमाणेषु पत्त्रभङ्गेषु, भयेनेव पादपैः प्रारब्धे पत्रसंकोचकर्मणि, विघटिष्यमाणचक्रवाककामिनीकरुणकूजितव्याजेन दिवसभर्तुरस्ताचलगमनं निवारयन्तीभिरिव विरहविधुराभिः कमलिनीभिर्विधीयमानेषु प्रार्थनाप्रणामाञ्जलिपुटेष्विव कमलमुकुलेषु, क्रमेण पश्चिमाम्भोधितरङ्गान्तरतस्तरुणतरताम्रतामरसानुकारिकेसरायमाणरश्मिमञ्जरीजालजटिलमवलोक्य तरणिमण्डलमतिसंभ्रमभ्रमद्भ्रमरनिकुरम्ब इव प्रधावमाने दूरं तिमिरपटले, कृष्णागुरुपङ्कपत्त्रभङ्गभूष्यमाणेष्विव दिगङ्गनामुखेषु, कोकिलकलापैराक्रम्यमाणेष्विव वनान्तरेषु, विकचकुवलयबहलमेचकरुचिनिचयश्यामलीक्रियमाणेष्विव सलिलाशयेषु, तापिच्छगुच्छच्छदच्छाद्यमानास्विव वनवृत्तिषु, नृत्यत्कलापिकुलकलापैः कालीक्रियमाणेष्विव शैलशिरःशिलातलेषु, कज्जलालेख्यचित्रचर्च्यमानास्विव भवनभित्तिषु, विरहिणीनिःश्वासधूमश्यामलीक्रियमाणेष्विव पान्थावसथेषु, कस्तूरिकासलिलसिच्यमानास्विव कामुकविलासवासवेश्मवाटीषु, मदान्धसिन्धुरनिरुध्यमानेष्विव नृपभवनाङ्गनेषु, कलितकालकञ्चुकायामिव गगनलक्ष्म्याम्, मदनशरनिकरविद्रुतदरिद्रविटविषादानलस्फुलिङ्गेष्विव रङ्गत्सु ज्योतिरिङ्गणेषु, काञ्चनीषु तिमिरकरिकुम्भभेदभल्लीष्विव निशितासु प्रदीप्यमानासु प्रदीपकलिकासु, प्लवमानापाण्डुपुण्डरीककल्माषितकालिन्दीपरिस्यन्दसुन्दरेऽमृतमथनक्षणक्षुब्धक्षीरसागररसबिन्दुस्तबकितनारायणवक्षःस्थल इव कांचिदपि श्रियं कलयति ताराविराजिते वियति, विटङ्कान्तमनुसरन्तीषु वेश्यासु वेश्मपारावतपतत्रिपंक्तिषु च, भ्रमरसङ्गतासु कुलटासु कुमुदिनीषु च, नदीपालिविरहितेषु चत्वरेषु चक्रवाकमिथुनेषु च, जाते जरद्गवयकायकालकान्तिकाशिनि निशावतारे, तरुणतमालकाननमिवाञ्जनगिरिगुहागर्भमिवेन्द्रनीलमणिमहामन्दिरोदरमिव विशति सकलजीवलोके स लोकेश्वरः 'प्रिये प्रियङ्गुमञ्जरि, प्रसादय प्रणतप्रियकारिणमभङ्गानङ्गदर्पहरं हरम् । अहं च तदाराधनावधानामनुविधास्यामि' इत्यभिधाय यथावासमयासीत् ॥

सुधा—अथेति । अथ = अनन्तरम् । विपुलवियद्विलंघनश्रमप्रशमनार्थम् विपुलं = विशालम् वियत् = गगनमिति तस्य विलंघनेन = चंक्रमणेन यच्छ्रमम् = परिश्रमम् तस्य-प्रशमनार्थम् = शान्त्यर्थम् । अरुणेन = रक्तेन वारुणीम् = पश्चिमाम् दिशाम् अवतार्यमाणेषु = नीयमानेषु । रविरथतुरङ्गमेषु इव—रवे: रथम् रविरथम् = सूर्यस्यन्दनम्, तस्य ये-तुरङ्गमा: = अश्वा: तेषु वारुणीम् = सुराम् प्रतिपानार्थम् इव = पानकरणार्थमिव । अवतार्यमाणेषु = अवतरणं विधीयमानेषु । रविरथतुरङ्गेषु = सूर्यस्यन्दनहयेषु । अपरासक्ते—अपरायाम्=अन्यायाम् दिश्यंगनायां वा आसक्ते=आलग्ने दिवसभर्त्तरि=दिनस्वामिन: सूर्यस्य । शोकभराद् इव = क्लेशभाराद् इव । तम: पटलेन अन्धकारपट्टेन । पूर्वाम् = प्राचीम् । दिशम् = ककुभम् । आपूर्यमाणाम् = परिपूर्यमाणाम् । पादपच्छायासु = वृक्षच्छायासु । अभिधावमानासु = सर्वत: गच्छत्सु । हारीतहरितहरिहारिण:—हारीत इव = शुकइव हरितानाम् = हरितवर्णनाम् हरिण: = अश्वास्तै: हारिण: = नीयमानस्य तरणे: = सूर्यस्य अरण्यान्तरात् = अन्यकाननात् । मन्दम् = शनै: शनै: । गोमण्डलेषु = पशुवृन्देषु किरणौघेषु च । अपवर्तमानेषु = चलमानेषु । अस्ताचलवनदेवतादत्तरक्तचन्दनार्घसलिलप्लवप्लाव्यमान इव—अस्ताचलस्य वनदेवतया वनदेव्या दत्ते = प्रदत्ते रक्तस्य = अरुणिमारूपस्य चन्दनार्घस्य सलिले = जले प्लवेन = पूरेण प्लाव्यमाने = तरमाणे इव । लोहितायति = अरुणायति पश्चिमदिशामुखे = प्रतीचीदिशाभागे । वारविलासिनीभि: = वारङ्गनाभि: कपोलमण्डलीमण्डनाय = कपोलपार्श्वशोभनाय । क्रियमाणेषु = विधीयमानेषु पत्त्रभङ्गेषु = पत्त्ररचनासु । श्येन इव = भीत्येव । पादपै: = वृक्षै: । पत्त्रसंकोचकर्मणि = दलसंकोचकार्ये । प्रारब्धे = आरम्भे । विघटिष्यमाणचक्रवालकामिनीकरुणकूजितव्याजेन विघटिष्यमाणस्य = वियुक्तस्य चक्रवाकस्य = चक्रवाकपक्षिण: कामिन्या: = प्रेयस्या: करुणेन = दयायुक्तेन कूजितव्याजेन = कूजनमिषेण । दिवसभर्त्तु: = सूर्यस्य । अस्ताचलगमनम् = अस्ताचलाय प्रयाणम् । निवारयन्तीभि: = वर्जयन्तीभि: । विरहविधुराभि: = वियोगव्याकुलाभि: कमलिनीभि: इव पद्मिनीभिरिव । कमलमुकुलेषु—पद्मकलिकारूपेषु । प्रार्थनाप्रमाणाञ्जलिपुटेषु=विनयनमस्काराञ्जलिषु विधीयमानेषु इव = क्रियमाणेष्विव । क्रमेण = क्रमश: । पश्चिमाम्भोधितरङ्गान्तरत: = पश्चिमसमुद्रस्य वीचिमध्यात् । तरुणतरताम्रतामरसानुकारिकेसरायमाणरश्मिमञ्जरीजालजटिलम्—तरुणतरस्य = अतिविकसितस्य तामरसस्य = कमलस्यानुकारि = अनुरूपम् यत् केसरायमाणम् रश्मिरूपम् = किरणरूपम् मञ्जरीजालजटिलम् = मञ्जरीदलयुतम् अवलोक्य = दृष्ट्वा । तरणिमण्डलम् = सूर्यमण्डलम् । अतिसम्भ्रमम् = अतिभ्रमेण भ्रमति = पर्यटति भ्रमरनिकुरम्ब इव = अलिसमूह इव । प्रधावमाने प्रचलमाने । दूरम् = अनतिनिकटम् । तिमिरपटले = अन्धकारपटे । कृष्णागुरुपङ्कपत्त्रभङ्गभूष्यमाणेषु = कृष्णागुरो: = कालागुरो: पङ्केन = रजसा । पत्त्रभङ्ग: = विलेपनचित्रम् भूष्यमाणेषु = रच्यमानेषु । दिगङ्गनामुखेषु = दिक् = दिशारूपा अङ्गना: = नायिका:, तासाम् मुखेषु = आननेषु । कोकिलकलाप: = पिकसमूहै: । आक्रम्यमाणेषु इव = आक्रमणं क्रियमाणेषु इव । वनान्तरेषु काननमध्यभागेषु । विकचकुवलयबहलमेचकरुचिनिचयश्यामलीक्रियमाणेषु इव = विकचानि =

विकसितानि कुवलयवहलानि = कमलदलानि, तेषां यन्मेचकम् = श्यामलम् रुचिनिचयम् = कान्तिदलम् तेन श्यामलीक्रियमाणेषु इव = कृष्णीविधीयमानेषु इव। सलिलाशयेषु = जलाशयेषु। तापिच्छगुच्छच्छदच्छाद्यमानासु—तापिच्छस्य = सप्तपर्णस्य गुच्छच्छदैः = स्तवकदलैः छाद्यमानासु = आवृतासु। वनवृत्तिषु इव = काननलतास्विव। नृत्यत्कलापि-कुलकलापैः—नृत्यतान् कलापीनाम् = मयूराणाम् कुलकलापैः=पक्षसमूहैः कालीक्रियमाणेषु = श्यामीक्रियमाणेषु। शैलशिरः शिलातलेषु=पर्वतोच्चशैलेषु इव। कज्जलालेख्यचित्र-चर्च्यमानासु = कज्जलेन = मसिना आलेख्यं = चित्रणयोग्यम् चित्रम् = चित्रणम् तेन चर्च्यमानासु = विरच्यमानासु भवनभित्तिषु = प्रासादभित्तिषु इव। विरहिणीनिःश्वास-धूमश्यामलीक्रियमाणेषु—विरहिणीनाम्=वियोगिनीनाम् यत् निश्वासरूपं धूमम्, तेन काली क्रियमाणेषु पान्थावसथेषु = पान्थानाम् आवसथेषु = आवासेषु कामुकविलासवासवेश्म-वाटीषु कामुकविलासगृहेषु। कस्तूरिका-सलिलसिच्यमानासु इव=कस्तूरिकायाः सुगन्धि-जलेनार्द्रीक्रियमाणासु इव। नृपभवनाङ्गनेषु = राजप्रासादप्राङ्गणेषु। मदान्धसिन्धुर-निरुध्यमानेषु इव—मदान्धैः = मदयुक्तैः सिन्धुरैः = गजैः निरुध्यमानेषु = अवरुध्यमानेषु इव कलितकायकञ्चुकायाम्—कृष्णकञ्चुकवस्त्रायुतायाम्। गगनलक्ष्म्याम् इव = आकाशलक्ष्म्यामिव। मदनशरनिकटविद्रुतदरिद्रविटविषादानलस्फुलिङ्गेषु—मदनशरनि-करेण = कामवाणसमूहेन विद्रुताः = भयाकुलिताः ये दरिद्रविटाः दरिद्रकामुकाः, तेषां विषादरूपस्यानलस्य = दुःखाग्नेः स्फुलिंगाः = अग्निकणास्तेषु। रङ्गत्सुज्योतिरिङ्गणेषु इव = रङ्गत्सु प्रकाशपुञ्जेषु इव काञ्चनासु = स्वर्णयुक्तासु। तिमिरकरिकुम्भभेदभल्लीषु = अन्धकाररूपगजकुम्भभेदनाय भल्लीषु = तीक्ष्णाङ्कुशेषु। निशितासु = शररूपासु प्रदीपकलिकासु दीपकरूपकलिकासु प्रदीप्यमानासु = प्रज्वलमानासु। प्लवमानपाण्डु-पुण्डरीककल्माषित कालिन्दीपरिस्यन्दसुन्दरे—प्लवमानैः = तरमाणैः अपाण्डुपुण्डरीकैः = कृष्णकमलैः कल्माषितः = कृष्णीकृतः कालिन्द्याः = यमुनायाः परिस्यन्दसुन्दरः = प्रस्र-वणशोभनम्, तस्मिन्। अमृतमन्थनक्षणक्षुब्धक्षीरसागररसविन्दुस्तवकितनारायणवक्षः स्थल इव—अमृतमन्थनस्य = सुधामथनस्य क्षणे = काले क्षुब्धस्य = आलोडयमानस्य क्षीरसागरस्य = पयोनिधेः रसविन्दवः तैः स्तबकितं नारायणस्य वक्षःस्थलम् = विष्णुवक्षो-भागम्, तस्मिन्, तथैव। कांचिद् अपि = कामपि श्रियम् = शोभाम् कलयति = प्राप्नुवति, नारायणवक्षसि तु श्रियम् = अब्धिपुत्रीम् प्राप्नुवति। ताराविराजिते = नक्षत्रालङ्कृते। वियति = विहायसि। विटङ्कान्तम्—विटः = भुजङ्गः तस्यान्तम् = तन्निकटम्। पक्षे पक्षिणामावासयष्टेरुन्नतस्यांशस्य सन्निकटम्। अनुसरन्तीषु = प्रव्रजन्तीषु। वेश्यासु = वारांगनासु वेश्मपारावतपतत्रिपंक्तिषु च = गृहकपोतपक्षिमालासु च। भ्रमरसङ्गतासु = भ्रमस्य = चंक्रमणस्य रसम् = आनन्दम् गतासु = प्रयातासु। कुलटासु = नीचस्त्रीषु। च = तथा भ्रमरसङ्गतासु = अलिसङ्गतासु कुमुदिनीषु = कुमुदपंक्तिषु। न दीपालि-विरहितेषु = दीपपंक्तिशून्येषु चत्वरेषु = चतुष्पथेषु न। च = तथा नदीपालिविरहितेषु = सरित्सेतुशून्येषु चक्रवाकमिथुनेषु = चक्रवाकानाम् = चक्रवाकपक्षिणाम् मिथुनानि = युगलानि तेषु। जरद्गवयकायकालकान्तिकाशिनि—जरद्गवयस्य = वृद्धगोसदृशपशोः

कायम् = शरीरम् तस्य कान्तिकाशि प्रभामासिकीलं यत्र तस्मिन् । निशावतारे जाते = रात्रिसमागते सति । तरुणतमालकाननम् इव = नूतनतमालवनसदृशम् । अञ्जनगिरि-गुहागर्भम् इव = कृष्णशैलगुहामध्यम् इव । इन्द्रनीलमणिमहामन्दिरोदरम् इन्द्रनीलमणे:= कृष्णकान्तमणे: महामन्दिरम् = प्रासादम्, तस्य उदरम् = मध्यभागम् । सकलजीवलोके = निखिलसंसारे विशतीव = प्रविशतीव । स: — असौ । लोकेश्वर: = लोकनाथ: = प्रिये = दयिते प्रियङ्गुमञ्जरि=हे प्रियङ्गुमञ्जरि । प्रणतप्रियकारिणम्–प्रणतम् = अवनतम् भक्तम् प्रियम् = प्रसन्नम् करोतीति तम् । अभङ्गानङ्गदर्पहरम् = अभङ्ग: = अखण्ड: य: अनङ्गस्य = मदनस्य दर्प: = अहंकारस्तम् हरतीति हरस्तम् = अपहारिणम् हरम् = शिवम् । प्रसादय = सन्तोषय । अहं च = अहमपि । तदाराधनावधानाम् = तस्य = हरस्य आराधनावधानाम् = पूजनावधानाम् । अनुविधास्यामि = करिष्यामि इति = इत्थम् । अभिधाय = उक्त्वा । यथावासम् = आवसभवनम् । अयासीत् = अगच्छत् ।

हिन्दी—तदनन्तर विशाल आकाश को लांघने में हुये परिश्रम को शान्त करने के लिए भगवान् सूर्य के मानो पश्चिम दिशा रूपी नायिका का चुम्बन करने के लिए रथ के घोड़ों के उतर आने पर, सूर्यरूपी पति के अन्य नायिका में आसक्त होने से मानो शोकमग्न अन्धकार समूह से पूरित पूर्व दिशा को आश्वासन दिलाने के लिए उसी ओर को दौड़ती हुई वृक्षों की छाया में, शुकों के समान हरे रंग के सूर्य के घोड़ों द्वारा ले जाये जा रहे सूर्य के गोमण्डल (किरणों) के धीरे-धीरे दूसरे जंगलों से मुड़ जाने पर, हरित शुकों के कारण हरे तथा वानरों के कारण मनोरम ढंग से ढँके जङ्गलों से गायों के झुण्डों के लौट आने पर, अस्ताचलकी वनदेवियों द्वारा दिये गये लाल चन्दन के अर्घ्यजल में नौका द्वारा लाल बनी हुई विशाल पश्चिमदिशा रूपी नायिका के मुख पर तैरते रहने पर, वाराङ्गनाओं द्वारा कपोलमण्डल को सजाने संवारने के लिए पत्ररचना कर लेने पर मानो भय से वृक्षों के पत्रों को सङ्कुचित कर देने पर वियुक्त हो रही चकई (चक्रवाकी) रमणी के करुणक्रन्दन के बहाने दिवानाथ (सूर्य) से अस्ताचल-गमन को रोकती हुई विरह व्याकुल कमलिनियों द्वारा अपनी कमलकलियों के रूप में प्रणामाञ्जलि के रूप में प्रार्थना किये जाने पर, क्रमशः पश्चिमीसागर की तरङ्गों के मध्य अति तरुण ताम्रवर्णी सूर्य रूपी कमल की किरण-समूहरूपी मकरन्दमञ्जरी के जाल को देखकर सूर्यमण्डल के पास अतिशीघ्र अन्धकार रूपी भ्रमर समूह के दौड़ते रहने, पर कृष्ण अगरू के पङ्क से निर्मित पत्ररचना से दिशारूपी नायिका के मुख के सुशोभित हो जाने पर, अन्य वनों में मानों कोकिल समूह के आक्रमण करते रहने पर, विकसित नीलकमलकी श्यामल कान्ति राशि से तड़ागों के जल श्यामल किये जाते रहने पर, वनलताओं को सप्तपर्ण के पत्तों के गुच्छों से आच्छादित किये जाने पर, नाचते हुये मयूरों के पंखों से पर्वतों के अत्यन्त ऊँचे शिलाखंडों के मानों काला कर देने पर, भवनों की दीवारों पर काजल से आलेख्य चित्र अंकित किये जाते रहने पर, विरहिणी स्त्रियों के निःश्वासरूपी धुयें से पथिकों के मार्ग श्यामल किये जाते रहने पर, कामुक जनों के विलासगृहों के कक्षों को कस्तूरी जल से सिञ्चित किये जाते रहने पर, राज-

भवनों में मतवाले हाथियों द्वारा रुकावट डाले जाते रहने पर, आकाशलक्ष्मी के काला कुर्ता पहन लिये जाने पर मदन के शरसमूह से भयाकुलित वेचारे विट (नीच कामुक) जनों के मानों विषादानल से निकली चिनगारियों के चलते रहने पर, अन्धकार रूपी हाथी के कुम्भ (कुम्वड) को भेदने के लिए सोने के बने पैने अंकुश रूपी प्रदीपों के जल जाने पर तैरते हुए अपाण्डु कमलों से काली की गई यमुना के बहाव के समान सुन्दर अमृत मन्थन के समय क्षुब्ध क्षीरसागर के रसविन्दुओं से नारायण के वक्षः-स्थल पर मानों अपूर्व शोमा को तारों से शोभित आकाश के धारण कर लेने पर, वेश्याओं के अपने प्रिय वीरों का अनुसरण किये जाने पर तथा गृह कपोतों के विटङ्कान्त (घोसलों के अन्दर) चले जाने पर, कुलटास्त्रियों के भ्रमरस (घूमने के आनन्द) में पड़ने तथा कुमुदिनी के भौंरों से युक्त हो जाने पर, चौराहों पर दीपावलियों से विरहित न होने पर तथा चकईचकवों के जोड़ों से नदीपालि के शून्य हो जाने पर, वृद्ध नीलगाय की शरीर कान्ति के समान रात्रि के अवतरित हो जाने पर, सम्पूर्ण जोव लोक के तरुण तमाल वन के समान अञ्जन पर्वत की गुफागर्भ के समान, अथवा इन्द्र नीलमणि से बने महान् मन्दिर के अन्दर जैसे अन्धकार में प्रविष्ट हो जाने पर वह राजा—"हे प्रिये, प्रियङ्गुमञ्जरि ! भक्त जनों का प्रिय करने वाले, कामदेव के सम्पूर्ण अभिमान को नष्ट करने वाले शिवजी को प्रसन्न करो, तथा मैं भी उनकी आराधना में ध्यान केन्द्रित करूँगा यह कह कर अपने निवास स्थान को चले गये।

ततश्च—अखण्डितप्रभावोऽथ प्रदोषेणान्धकारिणा।
तस्याश्चित्ते स्थितः शम्भुरुदयाद्रौ च चन्द्रमाः ॥ ३१ ॥

अन्वयः—अथ प्रदोषेणान्धकारिणा अखण्डितप्रभावः चन्द्रमाः उदयाद्रौ च शम्भुः तस्याः चित्ते स्थितः ॥ ३१ ॥

सुधा—अखण्डितेति। अथ = अनन्तरम्। प्रदोषेण = प्रकृष्टो दोषस्तेन = अतिदोष युक्तेन। अन्धकारिणा = अन्धकनाम्ना शत्रुणा। अखण्डितप्रभावः—न खण्डितः प्रभावो यस्य सः = अव्याहतवैभवः शम्भुः = शिवः। तस्याः = प्रियङ्गुमञ्जर्याः। चित्ते = चेतसि। स्थितः = अवस्थितः। चन्द्रपक्षे तु—अन्धकारिणा = तमस्कारिणा प्रदोषेण = सन्ध्याकालेन। अखण्डितप्रभावः—न खण्डितः प्रभः = प्रभावः आवः = वृद्धिर्यस्य तादृशः। चन्द्रमाः = चन्द्रः। उदयाद्रौ = उदयाचले स्थितः जातः ॥ अत्र शम्भुशशिनोः श्लेषालङ्कारः ॥ ३१ ॥

हिन्दी—तदनन्तर (शिवपक्ष में)—प्रकृष्ट दोषों वाले अन्धक नामक शत्रु के द्वारा अखण्डित प्रभाववाले शिवजी उस प्रियङ्गुमञ्जरी के चित्त में बस गये ॥ ३१ ॥

(चन्द्रपक्ष में) अन्धकार करने वाले प्रदोष (सन्ध्याकाल) के द्वारा प्रभा वृद्धि को खण्डित न किये जाने वाला चन्द्रमा उदयाचल पर स्थित हो गया (निकल आया) ॥ ३१ ॥

बिभ्रते हारिणीं छायां चन्द्राय च शिवाय च।
नभोगरुचये तस्मै नमस्कारं चकार सा ॥ ३२ ॥

अन्वयः—सा हारिणीम् छायाम् बिभ्रते नभोगरुचये तस्मै शिवाय च चन्द्राय च नमस्कारम् चकार ॥ ३२ ॥

सुधा—बिभ्रत इति । सा = प्रियङ्गुमञ्जरी । हारिणीम्=मनोहारिणीम् । छायाम्= कान्तिम् । बिभ्रते = धारिणे । नभोगरुचये–भोगे = विलासे रुचिः = अभिलाषः यस्य स = भोगरुचिः नास्ति भोगरुचिः यस्य तस्मै = भोगाभिलाषरहिताय । तस्मै = एतस्मै शिवाय = शङ्कराय । नमस्कारम् – प्रणतिम् । चकार = अकरोत् ॥ ३२ ॥

(चन्द्रपक्षे) हारिणीम् = हरिणस्येयं हारिणी, तादृशीम् । छायाम् = प्रतिबिम्बम्, कलङ्कमित्यर्थः । बिभ्रते = धारिणे । नभोगरुचये = नभोगा = आकाशव्यापिनी रुचिर्यस्य तस्मै । चन्द्राय = चन्द्रमसे । नमस्कारं चकार = प्रणनाम ॥ ३२ ॥

हिन्दी—उस (प्रियङ्गुमञ्जरी) ने मनोहारिणी छाया को धारण करने वाले तथा भोगविलास में न रुचि रखने वाले शिवजी के लिए प्रणाम किया ॥ ३२ ॥

(चन्द्रपक्ष में) उसने हरिण जैसी छाया को धारण करने वाले तथा आकाश में विचरण करने वाले चन्द्रमा के लिए प्रणाम किया ॥ ३२ ॥

नित्यमुद्वहते तुभ्यमन्तः सारङ्गरञ्जितम् ।
भूतिपाण्डुर गोवाह सोम स्वामिन्नमो नमः ॥ ३३ ॥

अन्वयः—हे सोमस्वामिन् ! भूतिपाण्डुर !! गोवाह !!! अन्तःसारम् गरञ्जितम् अन्तः नित्यम् उद्वहते । तुभ्यम् नमः नमः ।

(चन्द्रपक्षे) हे भूतिपाण्डुरगोवाह सोम ! स्वामिन् !! सारङ्गरञ्जितम् अन्तः नित्यम् उद्वहते । तुभ्यम् नमः नमः ॥ ३३ ॥

सुधा—नित्यमिति । हे सोमस्वामिन् !—सह उमय वर्तत्त इति सोमः, तादृशः स्वामी, तत्सम्बुद्धौ = हे पार्वती सहितप्रभो ! हे भूतिपाण्डुर ! भूत्या = भस्मना पाण्डुरः= शुभ्रवर्णः यस्तत्सम्बुद्धौ = हे भस्मशुभ्रवर्ण ! हे गोवाह ! गौः = वृषः वाहनं यस्य तत्सम्बद्धौ = अयिवृषभवाहन ! सारम् = उत्कृष्टम् । गरम् = विषं कालकूटम् । जितम् = विजितम् । अन्तः = मध्ये । नित्यम् = सदा । उद्वहते = धारिणे । तुभ्यम् = ते । नमः नमः = भूयोभूय नम इति ।

(चन्द्रपक्षे) हे भूतिपाण्डुर ! = हे जन्मना पाण्डुरवर्ण ! गोवाह = गाः = किरणान् वहतीति तत्सम्बुद्धौ = हे किरणधारक ! अथवा–अयि स्वभावतः शुभ्रकिरणधारक ! स्वामिन् = प्रभो ! सोम = चन्द्र ! सारङ्गरञ्जितम्–सारङ्गो मृगः, तेन रञ्जितम् = लाञ्छितम् । अन्तः = मध्यम् । नित्यम् = सदा । उद्वहते = उद्वहनकर्त्रे । तुभ्यम् = भवते । वारंवारम् नमः अस्तु ॥ ३३ ॥

हिन्दी—हे उमासहित प्रभो ! भस्म से पाण्डुरवर्ण ! बैल पर सवारी करनेवाले (शिव) ! उत्कृष्ट विष (कालकूट) को जीतने वाले अन्तःकरण को सदा धारण करने वाले आपके लिए बार बार प्रणाम है ॥ ३३ ॥

(चन्द्रपक्ष) हे जन्म से शुभ्र किरणों को धारण करने वाले सोमदेव ! मृगलांछित हृदय को नित्य धारण करने वाले आपके लिए बार बार प्रणाम है ॥ ३३ ॥

एवं च नातिचिरात् ।

क्षुभ्यत्क्षीरसमुद्रसान्द्रसलिलोल्लोलैरिव प्लावयँ-
ल्लोकं लोचनलोभतः स्मरसुहृज्जातः स चन्द्रोदयः ।
यस्मिन्संभृतवैरदारुणरणप्रारम्भिणो भ्राम्यतः
क्रुद्धोलूककदम्बकस्य पुरतः काकोऽपि हंसायते ॥ ३४ ॥

अन्वयः—क्षुभ्यत्क्षीरसमुद्रसान्द्रसलिलोल्लोलैः लोकम् प्लावयन् इव लोचनलोभतः स्मरसुहृत् सः चन्द्रोदयः जातः । यस्मिन् सम्भृतवैरदारुणरणप्रारम्भिणः भ्राम्यतः क्रुद्धोलूककदम्बकस्य पुरतः काकः अपि हंसायते ॥ ३४ ॥

सुधा—क्षुभ्यदिति । क्षुभ्यत्क्षीरसमुद्रसान्द्रसलिलोल्लोलैः—क्षुभ्यतः—उद्वेलितस्य क्षीरसमुद्रस्य = क्षीरसागरस्य यत् सान्द्रम् = गहनम् सलिलं तस्य उल्लोलैः = चञ्चलवीचिभिः । लोकम् = भुवनम् । प्लावयन इव = आप्लावनं कुर्वन्निव लोचनलोभतः = दर्शनलौल्यात् । स्मरसुहृत् स्मरस्य सुहृद् = कामदेवसखा । सः = एषः । चन्द्रोदयः = विधूदयः जातः = सञ्जातः । यस्मिन् = चन्द्रोदये । सम्भृतवैरदारुणरणप्रारम्भिणः संभृतः = सम्पूरितस्य वैरस्य = शत्रुतायाः दारुणः = कठिनो यो रणः = युद्धम् तम् प्रारम्भिणः = आरम्भकर्तुः । भ्राम्यतः = इतस्ततः भ्रमणशीलस्य क्रुद्धोलूककदम्बस्य—क्रुद्धानाम् = रोषयुतानाम् उलूकानाम् = घूकानाम् यत्कदम्बम् = समूहम् तस्य । पुरतः = समक्षम् । काकः अपि = वायसोऽपि । हंसायते = हंसवत् प्रतीयते । अत्र शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ३४ ॥

हिन्दी—इस प्रकार थोड़ी ही देर में—

क्षीरसागर को खलबलाती हुई गहरे जल की उमड़ती हुई तरङ्गों की भाँति संसार को आप्लावित करते हुए, नेत्रों के लोभ से कामदेव के मित्र चन्द्रमा का उदय हो गया जिसमें परिपूर्ण शत्रुता के दारुणयुद्ध को प्रारम्भ करने वाले, इधर उधर घूमते हुए क्रुद्ध उलूकसमूह के सामने कौआ भी हंस जैसा प्रतीत होता है ॥ ३४ ॥

टिप्पणी—शत्रुतावश उलूक कौए को मारने के विचार से चाँदनी रातमें जब ढूँढता है तो चन्द्रमा की श्वेतकिरणों में काला कौआ भी हंस जैसा शुभ्र लगने लगता है ।

अपि च—श्च्योतच्चन्दनचारुचन्द्ररुचिभिर्विस्तारिणीभिर्भरा-
ज्जातेयं जगती तथा कथमपि श्वेतायमानद्युतिः ।
उन्निद्रो दिनशङ्कया कृतरुतः काको वराकः प्रिया-
मन्विष्यन्पुरतः स्थितामपि यथा चक्रभ्रमं भ्राम्यति ॥ ३५ ॥

अन्वयः—विस्तारिणीभिः श्च्योतच्चन्दनचारुचन्द्ररुचिभिः भरात् इयम् जगती तथाकथम् अपि श्वेतायमानद्युतिः जाता । दिनशङ्कया उन्निद्रः कृतरुतः वराकः काकः प्रियाम् अन्विष्यन् पुरतः स्थिताम् अपि यथा चक्रभ्रमम् भ्राम्यति ॥ ३५ ॥

सुधा—श्च्योतदिति। विस्तारिणीभिः = विस्तारशालिनीभिः। श्च्योतच्चन्दनचारुचन्द्ररुचिभिः—श्च्योततः = प्रस्रवतः चन्दनस्य = चन्दनतरोरिव चारु = शोभनः चन्द्रः = विधुः, तस्य याः रुचयः = कान्त्यस्ताभिः। भरात्=गुरुतायाः। इयम् = एषा। जगती= पृथ्वी। तथाकथम् = यथा स्यात् तथा श्वेतायमानद्युतिः = श्वेतायमाना = शुभ्रायमाणा द्युतिः = कान्तिः यस्याः तादृशी जाता = सञ्जाता। दिनशङ्कया-दिनस्य शङ्का = दिवसो जातः इति शंका तया। उन्निद्रः-उद्गता = निन्द्र = स्वपनम् यस्मात् सः = निद्रारहितः कृतरुतः—कृतम् = विहितम् रुतम् = ध्वनिः येन सः = कृतशब्दः वराकः = मन्दभाग्यः काकः = वायसः। प्रियाम् = प्रेयसीं काकीम् अन्विष्यन् = अन्वेषणं कुर्वन्। पुरतः=सम्मुखम्। स्थिताम् = अवस्थिताम् अपि प्रियाम् यथा चक्रभ्रमम् = कुलालचक्रवद्। अथवा चक्रः = कोकः, तस्येव भ्रमो यस्य सः। भ्राम्यति = चङ्क्रमति ॥ ३५ ॥

हिन्दी—और भी—टपकते हुए चन्दन के समान सुन्दर फैलने वाली चन्द्रमा की कान्ति से बोझीली बनी हुई यह पृथ्वी जैसे तैसे शुभ्र कान्ति वाली लगती है। दिन निकल आने की शङ्का से उचटी हुई नींद वाला आवाज करता हुआ बेचारा कौआ अपनी प्रिया (कौवी) को ढूंढता हुआ सामने खड़ी होने पर भी उसे देख नहीं पाता चक्कर काटता फिरता है ॥ ३५ ॥

अपि च—मुग्धा दुग्धधिया गवां विदधते कुम्भानधो बल्लवाः
कर्णे कैरवशङ्कया कुवलयं कुर्वन्ति कान्ता अपि।
कर्कन्धूफलमुच्चिनोति शबरी मुक्ताफलाकांक्षया
सान्द्रा चन्द्रमसो न कस्य कुरुते चित्तभ्रमं चन्द्रिका ॥ ३६ ॥

अन्वयः—चन्द्रमसः सान्द्रा चन्द्रिका कस्य चित्तभ्रमम् न कुरुते। मुग्धाः वल्लवाः दुग्धधिया गवाम् अधः कुम्भान् विदधते, कैरवशङ्कया कान्ताः अपि कर्णे कुवलयम् कुर्वन्ति, मुक्ताफलाकांक्षया शबरी कर्कन्धूफलम् उच्चिनोति ॥ ३६ ॥

सुधा—मुग्धा इति। चन्द्रमसः = चन्द्रस्य सान्द्रः = सघना चन्द्रिका = ज्योत्स्ना कस्य = कस्य जनस्य चित्तभ्रमम्–चित्ते = चेतसि भ्रमम् = भ्रान्तिम् न कुरुते = न करोति, अर्थात् करोत्येव। तद्यथा—मुग्धाः = मत्ताः। वल्लवाः = गोपदारकाः। दुग्धधिया = पयोबुद्धया। गवाम् = धेनूनाम् अधः = अधस्तात्। कुम्भान् = घटान्। विदधते = स्थितान् कुर्वन्ति। कैरवशङ्कया = श्वेतकमलभ्रान्त्या। कान्ताः = स्त्रियः अपि। कर्णे= श्रोत्रे। कुवलयम् = कमलम् कुर्वन्ति = धारयन्ति। मुक्ताफलाकाङ्क्षया—मुक्ताफलस्य विद्रुमस्य आकांक्षया = अभिलाषया। शबरी-किराती। कर्कन्धूफलम् = कर्कन्धू = 'वरमदुआ इति भाषायाम्' नामकं फलम्। उच्चिनोति = ऊर्ध्वंतश्चयनं करोति ॥ ३६ ॥

हिन्दी—और भी—चन्द्रमा की घनी चांदनी किसके चित्त में भ्रम नहीं उत्पन्न कर देती है? घनी चांदनी को देखकर मुग्ध होकर गोप बालक गायों के नीचे दूध समझ कर बर्तन (घड़े) रख देते हैं, रमणियां कैरव (कुमोदिनी) समझ कर कमल को अपने कानों पर चढ़ा लेती हैं तथा शबरी (भीलनी) मुक्ताफल की शङ्का से कर्कन्धू फल (वरमदुआ) को ऊपर से तोड़ने लगती है ॥ ३६ ॥

यत्र च—मुक्तादाममनोरथेन वनिता गृह्णन्ति वातायने
गोष्ठे गोपवधूर्दधीति मथितुं कुम्भीगतान्वाञ्छति ।
उच्चिन्वन्ति च मालतीषु कुसुमश्रद्धालवो मालिकाः
शुभ्रान्विभ्रमकारिणः शशिकरान्पश्यन्न को मुह्यति ॥ ३७ ॥

अन्वयः—विभ्रमकारिणः शुभ्रान् शशिकरान् पश्यन् कः न मुह्यति । वनिताः मुक्तादाममयेन वातायने गृह्णन्ति । गोपवधूः गोष्ठे कुम्भीगतान् 'दधि' इति मथितुम् वाञ्छति । च कुसुमश्रद्धालवः मालतीषु मालिकाः उच्चिन्वन्ति ॥ ३७ ॥

सुधा—मुक्तादामेति । विभ्रमकारिणः = भ्रमोत्पादकान् शुभ्रान् = श्वेतवर्णान् शशिकरान् = चन्द्ररश्मीन् । पश्यन् = अवलोकयन् कः न मुह्यति को न मोहमुपयाति, अर्थात् सर्वं एव मोहं गच्छति । वनिताः=नार्यः । मुक्तादाममयेन=मुक्तामालमिया (तान्) वातायने = गवाक्षे गृह्णन्ति = हस्तगतान् कुर्वन्ति । गोनवधूः = गोपस्त्रियः । गोष्ठे = गोव्रजे । कुम्भीगतान् = घटगतान् रश्मीन् । 'दधि' = पयोविकारम् 'दही' इति मत्वा । मथितुम् = तन्मन्थनं कर्तुम् । वाञ्छन्ति = अभिलषन्ति । च = तथा कुसुमश्रद्धालवः = पुष्पश्रद्धालुजनाः । मालतीषु = मालतीपादपेषु पतितान् तान् रश्मीन् । मालिकाः = मल्लिकापुष्पाणि इति । उच्चिन्वन्ति—उत्=उर्ध्वम् चिन्वन्ति=अवचयम् कुर्वन्ति ॥ ३७ ॥

हिन्दी—और जहां—भ्रम उत्पन्न करनेवाली चन्द्रमा की शुभ्र किरणें देखकर कौन व्यक्ति मोहित नहीं हो जाता है ? वनिताएं मुक्तमाल समझ कर उन्हें (चन्द्र किरणों को) खिड़की में पकड़ने लगती हैं, गोपस्त्रियां गोशालाओं में घड़ों में पड़ती किरणों को देख कर उन्हें दही समझ कर मथने की इच्छा करने लगती हैं तथा माली लोग मालती वृक्षों पर पड़ती चन्द्र किरणों को देख कर मालती पुष्प समझ कर तोड़ने लगते हैं ॥ ३७ ॥

अपि च—किं कर्पूरकणाः स्रवन्ति वियतः किं वा मनोनन्दिनो
मन्दाश्चन्दनबिन्दवः किमु सुधानिष्यन्दधारा इमाः ।
इत्थं भ्रान्तिममी जनस्य जनयन्त्यङ्गे लगन्तः परा-
मिन्दोः कुन्दविकासिकुड्मलदलस्रक्सुन्दरा रश्मयः ॥ ३८ ॥

अन्वयः—किम् वियतः कर्पूरकणाः स्रवन्ति, वा किम् मनोनन्दिनः मन्दाः चन्दनबिन्दवः (स्रवन्ति) । किमु इमाः सुधा निष्यन्दधाराः (स्रवन्ति) । इत्थम् जनस्य अङ्गे लगन्तः इन्दोः कुन्दविकासिकुड्मलदलस्रक् सुन्दराः अमी रश्मयः पराम् भ्रान्तिम् जनयन्ति ॥ ३८ ॥

सुधा—किमिति । किम् इति प्रश्नेऽव्ययम् वियतः = आकाशात् । कर्पूरकणाः = कर्पूरलवाः स्रवन्ति = पतन्ति, वा = अथवा किम् । मनोनन्दिनः=चित्ताह्लादकाः मन्दाः= मन्थराः । चन्दनबिन्दवः = चन्दनकणाः (स्रवन्ति) किमु इमाः = एताः सुधानिष्यन्दधाराः = अमृतधाराः (स्रवन्ति) इत्थम् = अनेन प्रकारेण । जनस्य = लोकस्य । अङ्गे= शरीरे । लगन्तः = स्पृशन्तः इन्दोः = विधोः । कुन्दविकासिकुड्मलदलस्रक्सुन्दराः =

कुन्ददलमालासदृशशोभनाः । अमी = इमे । रश्मयः = मयूखाः । भ्रान्तिम् = सन्देहम् । जनयन्ति = उत्पादयन्ति ॥ ३८ ॥

हिन्दी—और भी—क्या यह आकाश से कपूर के कण गिर रहे हैं अथवा मन को प्रसन्न करने वाले मन्द चन्दन बिन्दु टपक रहे हैं ? अथवा यह अमृत टपकाने वाली धारायें वह रहीं हैं ? इस प्रकार लोगों के अङ्ग पर लगती हुई चन्द्रमा की कुन्दपुष्प की माला के समान सुन्दर यह किरणें अतीव भ्रान्ति उत्पन्न कर रहीं है ॥ ३८ ॥

इति जनितमुदिन्दोः सिन्दुवारस्रगाभं
किरति किरणजालं मण्डले दिङ्मुखेषु ।
हरचरणसरोजद्वन्द्वमाराधयन्ती
शुचिकुशशयनीये साथ निद्रां जगाम ॥ ३९ ॥

इति श्रीत्रिविक्रमभट्टविरचितायां दमयन्तीकथायां हरचरण-
सरोजाङ्कायां द्वितीय उच्छ्वासः ॥
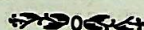
अन्वयः—अथ सा इति जनितमुद् सिन्दुवारस्रगाभम् किरणजालम् दिङ्मुखेषु किरति (सति) इन्दोः मण्डले हरचरणसरोजद्वन्द्वम् आराधयन्ती शुचिकुशशयनीये निद्राम् जगाम ॥ ३९ ॥

सुधा—इति जनितेति । अथ = अनन्तरम् । सा – प्रियङ्गुमञ्जरी । इति = इत्थम् । जनितमुद = उत्पन्नहर्षम् । सिन्दुवारस्रगाभम् = सिन्दुवारपुष्पाणाम् स्रक् = माला तस्या आभेवाभा यस्य तत् किरणजालम् = किरणसमूहम् । दिङ्मुखेषु = दशसु दिक्षु । किरति = विकिरति सति । इन्दोः = चन्द्रस्य मण्डले = वृत्ते । हरचरणसरोजद्वन्द्वम्-हरस्य = शिवस्य चरणसरोजद्वन्द्वम् = पादपद्मयुगलम् आराधयन्ती = पूजयन्ती । शुचि = पवित्रे स्वच्छे वा कुशशयनीये = कुशास्तरणे निद्राम् = शयनम् । जगाम = अगच्छत् । अत्र मालिनी वृत्तम् ॥ ३९ ॥

हिन्दी—तदनन्तर वह (प्रियङ्गुमञ्जरी रानी) इस प्रकार हर्ष उत्पन्न किये हुए सिन्दुवार पुष्पमाला की कान्ति के समान किरण जाल को दिशाओं में (चन्द्र द्वारा) फैला जाने पर चन्द्रमा के मण्डल में भगवान् शिव के चरणकमल युगल की आराधना करती हुई स्वच्छ एवं पवित्र कुशाओं के बिछौने पर सो गईं ॥ ३९ ॥

इति श्रीत्रिविक्रमभट्टविरचितायां दमयन्ती-कथायाम्
शाहजहाँपुरमण्डलवर्ति-नाहिलग्रामवास्तव्यस्य
आचार्यपरमेश्वरदीनपाण्डेयस्य सुधा
संस्कृतहिन्दीटीकाद्वयोपेतः
द्वितीय उच्छ्वासः ।
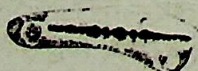
तृतीय उच्छ्वासः

अथ क्रमेण रजतकुम्भमम्भोभरणार्थमिवेन्दुमण्डलमादाय पश्चिमाम्भोनिधि-पुलिनमनुसरन्त्यां तरुणकपोतकन्धरारोमराजिराजिन्यां रजन्याम्, अखिल-कमल-खण्ड-कमलिनीनां विनिद्रायमाण-कमलकुड्मलविलोचनेषु कज्जलरेखास्विवोल्ल-सन्तीषु भ्रमरराजिषु, राजीवराजिपुञ्ज-निकुञ्जे शिञ्जानमञ्जीरमञ्जुलमुन्नदत्सु शरद्वलाहकवलक्षपक्षविक्षेपपवनतरलिततरुणतामरसेषु दीर्घिकावतंसेषु हंसेषु, क्रेङ्कारयति च चक्रवाकमिथुनमेलकमङ्गलमृदङ्ग इव रौप्यघर्घररवसरसं सारस-कुले, अवश्यायजलशिशिरशीकरिणि मन्दान्दोलित-विनिन्द्रद्रुममञ्जरीरजःकण-कषायिते तमःसर्पसंदष्टोज्जीवितजगन्निश्वासायमाने प्रस्खलति प्रभातसुरतश्रम-खिन्नसुन्दरीकुचमण्डले मरुति, मनोहारिहारीतहरितहये हरिततिमिरपटलपटीं गगनलक्ष्म्याः करपरामृष्टपयोधरे रागवति सवितरि, मृगमदमिलितबहलकुङ्कुम-मण्डनमञ्जरीभिरिव पिञ्जरिते पुरन्दरदिङ्मुखे सुखप्रसुप्ता सा स्वप्नमद्राक्षीत् ।

सुधा—अथेति । अथ = अनन्तरम् । क्रमेण = क्रमशः । अम्भोभरणार्थम् = अम्भसः भरणार्थम् = जलानयनार्थम् । रजतकुम्भम् इव = रौप्यघटमिव । इन्दुमण्डलम् = चन्द्र-मण्डलम् । आदाय = आनीय । पश्चिमाम्भोनिधिपुलिनम् = प्रतीचीसिन्धुतटम् । अनुसर-न्त्याम् = अनुगच्छन्त्याम् । तरुणकपोतकन्धरारोमराजिन्याम्—तरुणकपोतस्य = युवपारा-वतस्य कन्धरारोमराजिः = स्कन्धदेशलोमपंक्तिस्तद्वद् राजिन्याम्=शोभिन्याम् । रजन्याम् = निशायाम् । अखिलकमलखण्डकमलिनीनाम् = निखिलकमलवनपद्मिनीनाम् । विनि-द्रायमाणकमलकुड्मलविलोचनेषु-विनिद्रायमाणानि = विकसमानानि कमलकुड्मलानि = कमलदलान्येव विलोचनानि येषां तेषु = कमलदलनयनेषु । कज्जलरेखासु इव—कज्जल-स्य रेखास्तास्विव = कृष्णलेखासदृशेषु । भ्रमरराजिषु = अलिपंक्तिषु । उल्लसन्तीषु = प्रमुदितासु । राजीव राजिपुञ्जनिकुञ्जे-राजीवानां राजिपुञ्जः = कमलपंक्तिसमूहः, तस्य निकुञ्जे = वने । शिञ्जानमञ्जीरमञ्जुलम् = नूपुरमञ्जीरमधुरम् । शरद्वलाहक-वलक्षपक्षविक्षेपपवनतरलिततरुणतामरसेषु—शरदः = शरदृतोः वलाहकाः—घना इव वलक्षाणि = धवलानि पक्षाणि = पुंखानि, तेषां विक्षेपपवनेन = प्रक्षेपवायुना तरलिताः = कम्पिताः तरुणा तामरसाः = विकचकमलानि यत्र तेषु । च = तथा चक्रवाकमिथुनमेलक-मङ्गलमृदङ्ग इव—चक्रवाकमिथुनस्य = चक्रवाकयुगलस्य मेलकं यत् मङ्गलं मृदङ्गम् यत्र तथैव । रौप्यघर्घररवसरसम् = रजतघर्घरध्वनिमधुरम् । सारसकुले = सारसपक्षि-समूहे । क्रेङ्कारयति = क्रेङ्कारध्वनिं कुर्वति, अवश्याय = निश्चितरूपाय । जलशिशिर-शीकरिणि = जलशीतलविन्दुनि । मन्दान्दोलितविनिन्द्रद्रुममञ्जरीरजःकणकषायिते—मन्दान्दोलितस्य = मृदुकम्पितस्य विनिन्द्रद्रुमस्य = कुसुमितपादपस्य यानि मञ्जरीरजः-कणानि = कुसुमशीकराणि, तैः कषायितम्, तस्मिन् । तमःसर्पसंदष्टोज्जीवितजगन्निश्वा-

सायमाने—तम एव सर्पः, तेन संदष्टेन उज्जीवितम् = उन्निद्रितम् जगत् = लोकम् निःश्वासायमाने=निश्वास इव प्रतीयमाने सति । प्रभातसुरतश्रमखिन्नसुन्दरीकुचमण्डले—प्रभाते = प्रत्यूषे यत्सुरतश्रमः = रतिश्रमः, तेन खिन्ना सुन्दरी = रमणी, तस्याः कुचमण्डलम् = पयोधरवृत्तम्, तस्मिन् । मरुति = पवने । प्रस्खलति = प्रवहति सति । मनोहारिहारीतहरितहये—मनोहारिणः = मनोरमस्य हारीतस्य = शुकस्येव हरिताः = हरितवर्णाः हयाः = अश्वाः यस्य, तस्मिन् । सवितरि = सूर्ये । गगनलक्ष्म्याः = आकाशश्रियाः । हरिततिमिरपटलपटीम् = हरितान्धकारपटलवस्त्रम् । करपरामृष्टपयोधरे—करैः = किरणरूपहस्तैः परामृष्टे=दूरीकृते पयोधरे=मेघरूपस्तने । रागवति = अरुणायमाने सति । मृगमदमिलितवहलकुङ्कुममण्डनमञ्जरीभिः—मृगमदेन = कस्तूरीसुगन्धिना मिलितैः = मिश्रितैः कुङ्कुममण्डनमञ्जरीभिः = अत्यधिकं कुङ्कुमरूपालङ्कारकुसुमैः । पुरन्दरदिङ्मुखे = प्राचीदिशामुखे । पिञ्जरिते इव = पीतायमाने इव । सुखप्रसुप्ता—सुखेन = आनन्देन प्रसुप्ता = निद्रां गता । सा = असौ प्रियङ्गुमञ्जरी महिषी । स्वप्नमद्राक्षीत् = स्वप्नमपश्यत् ।

हिन्दी—तदनन्तर क्रमशः जल भरने के लिए चाँदी के घड़े के समान चन्द्रमण्डल को लेकर पश्चिमी सागर के तट का अनुसरण करती हुई तरुण कपोतों के स्कन्धदेश की रोमपंक्ति के समान सुन्दर रात्रि के हो जाने पर सम्पूर्ण कमल बन की कमलिनियों के कमल रूपी नयनों के खिल जाने पर, काजल की रेखाओं के समान भ्रमरपंक्तियों के उल्लसित हो जाने पर, कमल बन में नूपुरों तथा मंजीरों के समान शरत्कालीन मेघों जैसे शुभ्र पंखों को फड़फड़ाकर उत्पन्न हुई वायु से तरलित तरुण कमलों वाली दीर्घिकाओं (सरोवरों–झीलों) के आभूषणरूपी हंसों के द्वारा ध्वनि (क्रेंकार) किये जाने पर तथा चकई-चकवा युगल को मिलाने के लिए मङ्गलमृदंग जैसे चाँदी के घर्घर शब्द के समान सरस सारसपक्षियों के ध्वनि (क्रेंकार) करनेपर निश्चित रूप से ओस के शीतल कणों से युक्त मन्द-मन्द आन्दोलित फूलों से लदे वृक्षों की मञ्जरियों की रज से कषायित अन्धकार रूपी सर्प के काटने से (मूर्च्छित) जगत् के जागृत होने पर निःश्वास छोड़ने जैसा प्रतीत होने पर, प्रातःकालीन रतिश्रम से खिन्न रमणी के पयोधरमण्डलपर वायु के प्रस्खलित होने पर, मनोहारी शुकों के समान हरे रंग के घोड़ों वाले भगवान् सूर्य के आकाशलक्ष्मी के गहन अन्धकारपटल रूपी वस्त्र को किरणों रूपी हाथों से मेघ रूपी पयोधरों को हटा देने से अरुणिम हो जाने पर, कस्तूरी मिश्रित अत्यधिक कुङ्कुम-शोभित मञ्जरियों से जैसे पूर्व दिशा को पिञ्जरित (पीला) कर देने पर सोई हुई उस प्रियङ्गुमञ्जरी (रानी) ने स्वप्न देखा ।

किल सकलसुरासुरशिरःशेखरीकृतचरणकमलः, कमलाधिवासेन ब्रह्मणा नारायणेन च रचितरुचिरस्तुतिः कृशानुरूपेण ललाटलोचनेन चन्द्रमसा च भासमानः विकचं कर्णे कुवलयं करे कपालं च कलयन्, अहिसाटोपं मनसा शिरसा च बिभ्राणः प्रोज्ज्वलन्नयनार्चिश्चिताभस्म च समुद्वहन्, अधिकङ्कालेन स्कन्धेन कन्धरार्धेन च विराजमानः, सालसदृशं भुजवनं भवानीं च दधानः, सर्वदानववारं

त्रिशूलं मन्दाकिनीं च धारयन्, देवो दर्पितदनुजेन्द्रनिद्राहरो हरश्चन्द्रमण्डलादवतीर्य 'पुत्रि प्रियङ्गुमञ्जरि, मञ्जरीमिमां गृहाण। मा भैषीः। प्रत्युषसि मन्नियोगाद्दमनकनामा महामुनिरेष्यति स तेऽनुग्रहं करिष्यति' इत्यभिधाय स्वश्रवणशिखरान्तरादमन्दमकरन्दस्यन्दसुन्दरामोदमाद्यन्मधुकररवरमणीयां पारिजातमञ्जरीमदात्।

सुधा—किलेति। सकलसुरासुरशिरःशेखरीकृतचरणकमलः—सकलैः = समस्तैः सुरैः = देवैः असुरैश्च = दानवैश्च शिरःशेखरीकृतौ = शिरसि धारितौ चरणकमलौ = पादपद्मौ यस्य तादृशः। कमलाधिवासेन = कमलेऽधिवासः=निवासः यस्य तेन ब्रह्मणा = चतुराननेन, नारायणेन, च = विष्णुना च। रचितरुचिरस्तुतिः—रचिता = विहिता रुचिरा स्तुतिः=सुस्तवनम् यस्य सः। कृशानुरूपेण = अग्निरूपेण। ललाटलोचनेन = भालनयनेन (कृशेन = दुर्बलेन अनुरूपेण = अनुकूलेन च) चन्द्रमसा = चन्द्रेण। भासमानः = दीप्यमानः। कर्णे = श्रुते विकचम् = सविकासम् कपालं तु विगताः कचाः = केशा अस्मादिति विकचम् करे = हस्ते। कुवलयम् = कमलम् कपालं च कलयन् = रचयन्। अहिंसाटोपम्—अहिंसायाः = दयालुतायाः आटोपम् = आवेशम्। अहिं च साटोपम्-सस्पन्दम्। मनसा = चेतसा। शिरसा च शिरोयागेन च बिभ्राणः=ध्रियमाण.। प्रोज्ज्वलन्नयनार्चिः—प्रकृष्टेनोज्ज्वलत् दीप्यमानम् नयनार्चिः = नेत्रवह्निः। तथा प्रकर्षेणोज्ज्वलं भस्म=भूतिम्। समुद्वहन् = धारयन्। अधिकङ्कालेन—अधिगतं कङ्कालम् = शरीरास्थि अर्थात् खट्वाङ्गम् येन। स्कन्धेन = स्कन्धदेशेन। तथा कन्धरार्धेन = गलार्धेन तु कालेन सह कालकूटविषत्वात् अधिकमिति। विराजमानः=शोभमानः। सालसदृशम् = सालद्रुमतुल्यं प्रांशुत्वात्। भुजवनम् = भुजप्रदेशम्! च सालसे = लीलामन्थरे दृशौ यस्याः तादृशीम्। भवानीम् = पार्वतीम्। दधानः = बिभ्राणः। सर्वदानववारम्—सर्वान् = सम्पूर्णान् दानवान् = दैत्यान् वारयति, इत्थम्, त्रिशूलम्—त्रीणि त्रिसंख्यकानि शूलानि सन्त्यत्र तादृशो शस्त्रम्। तथा च सर्वदा = सदा नवम् = नूतना अविच्छाया: वा वाः = पाथो यस्यास्तादृशीम्। मन्दाकिनीम् = गङ्गां धारयन् = वहन् अथवा—सर्वं ददातीति सर्वदाः। आनूयन्त इत्यानवाः तथोक्ता वारो अस्यास्तादृशीं मन्दाकिनीं धारयन्। देवः = सुरः। दर्पितदनुजेन्द्रनिद्राहरः—दर्पितानाम्=अहङ्कारयुक्तानाम् दनुजेन्द्राणाम् = राक्षसेन्द्राणाम् निद्राम् = स्वपनम् हरतीति तादृशः हरः = शिवः। चन्द्रमण्डलात् = विधुमण्डलमध्यात् अवतीर्य = अवतरणं कृत्वा। पुत्रि ! = दुहितः प्रियङ्गुमञ्जरि। इमाम् = एताम् मञ्जरीम् गृहाण = स्वीकुरु। मा भैषीः = भयं मा कुरु। प्रत्युषसि = प्रभाते मन्नियोगात् = मदाज्ञया। दमनकनामा = दमनकाभिधः। महामुनिः = महर्षिः। एष्यति = आगमिष्यति। सः = महामुनिः। ते = तव। अनुग्रहम् = कृपाम्। करिष्यति = विधास्यति। इत्यभिधाय = इति कथयित्वा। स्वश्रवणशिखरान्तरात् = आत्मश्रुतात्। अमन्दमकरन्दस्यन्दसुन्दराम् = अमन्दपरागच्युतसुभगाम्। आमोदमाद्यन्मधुकररवरमणीयाम्—आमोदेन=गन्धेन माद्यन् = मत्तां कुर्वन् मधुकररवरमणीयाम् = मधुपध्वनिरस्याम्। पारिजातमञ्जरीम् = पारिजातवृक्षकुसुममञ्जरीम्। अदात् = अददात्।

हिन्दी—समस्त देवताओं तथा राक्षसों के शिरों के आभूषण रूप चरण-कमल वाले, कमल में निवास करने वाले ब्रह्माजी तथा कमला के निवास भगवान् विष्णु के द्वारा रुचिर स्तुति किये जाने वाले, अग्निस्वरूप ललाट लोचन वाले तथा कृश एवं अनुरूप चन्द्रमा से भासमान, कानों में विस्तार तथा हाथ में विकसित कमल एवं कपाल (खप्पर) लिये हुए, मनसा अहिंसा के आवेश को तथा शिर से भयंकर साँपों को धारण किये हुये, जलती हुई अग्निज्वाला वाले तथा चमचमाती चिता की भस्म को धारण करने वाले, कन्धे पर कङ्काल धारण किये हुए तथा गलार्द्ध से अत्यधिक काल (विष) से शोभायमान साल वृक्ष जैसी भुजाओं को और सालस आँख वाली पार्वती को धारण किये हुए, सभी दानवों को भगाने वाले त्रिशूल को तथा सर्वदा नवीन जल देने वाली मन्दाकिनीगंगा को धारण किये हुए देव, अभिमान युक्त राक्षस–राजों की नींद को हरने वाले (भयभीत कर देने वाले) भगवान् शिव ने चन्द्रमण्डल से उतकर "हे पुत्रि प्रियङ्गुमंजरी ! इस मञ्जरी को ग्रहण करो। डर मत करो। प्रातःकाल मेरे निर्देश से दमनक नामक महामुनि आयेंगे (और) तुम पर कृपा करेंगे" यह कह कर अपने कान के ऊपर से अमन्द मकरन्द (पराग) को टपकाने से सुन्दर गन्ध से मत्त बनाने वाली भौंरों की गुनगुनाहट से रमणीय पारिजात मंजरी दी।

सापि 'प्रसादोऽयम्' इत्यभिधाय स्वप्न एव प्रणामपर्यस्तमस्तका स्तुतिमकरोत्।

सुधा—सापीति। सा अपि = प्रियङ्गुमञ्जर्यपि 'अयम् प्रसादः' = 'एषो भगवतः प्रसादोऽस्ति' इति अभिधाय = इति कथयित्वा। स्वप्न एव = निद्रायामेव। प्रणामपर्यस्तमस्तका = शिरसा प्रणामपूर्वकम्। स्तुतिम् = प्रार्थनाम्। अकरोत् = चकार।

हिन्दी—उस प्रियंगुमंजरी ने भी 'यह प्रसाद है' ऐसा कहकर स्वप्न में ही शिर से प्रणामपूर्वक प्रार्थना की।

तुभ्यं नमो नमल्लोकशोकसन्तापहारिणे।
व्यर्थीकृतान्धकारातिदम्भारम्भाय शम्भवे॥ १॥

अन्वयः—नमल्लोकशोकसन्तापहारिणे, व्यर्थीकृतान्धकारातिदम्भारम्भाय तुभ्यम् शम्भवे नमः॥ १॥

सुधा—तुभ्यमिति। नमल्लोकशोकसन्तापहारिणे—नमताम् = प्रणमताम् लोकानाम् = जनानाम् शोकस्य सन्तापस्य = दुःखस्य च हारी = अपहर्त्ता इति तस्मै। व्यर्थीकृतान्धकारातिदम्भारम्भाय—अन्धकश्चासावारातिः = अन्धकनामशत्रुः, तस्य यो दम्भारम्भः = अभिमानारम्भः। व्यर्थीकृतः = विफलतां नीतः अन्धकारातिदम्भारम्भो येन तस्मै। तुभ्यम् = ते। शम्भवे = शिवाय। नमः = प्रणामः (अस्तु)॥ १॥

हिन्दी—प्रणाम करने वाले लोगों के शोक दुःख को हरने वाले तथा अन्धक नामक राक्षस शत्रु के अभिमान को विफल करने वाले आप शिव के लिए प्रणाम है॥ १॥

विभो विभूतिसम्पन्न पन्नगेन्द्र-विभूषण।
नमो नमोघसंकल्प तुभ्यमभ्यन्तरात्मने॥ २॥

अन्वयः—विभो, विभूतिसम्पन्न, पन्नगेन्द्रविभूषण, नमोघसंकल्प, अभ्यन्तरात्मने तुभ्यम् नमः ॥ २ ॥

सुधा—विभो इति । हे विभो ! हे सर्वव्यापक । विभूतिसम्पन्न— विभूत्या = भस्मना सम्पन्नः, तत्सम्बुद्धौ = हे भस्मयुक्त ! पन्नगेन्द्रविभूषण—पन्नगेन्द्राः विभूषणं यस्य तत्सम्बुद्धौ = हे भुजगेन्द्रभूषण ! नमोघसंकल्प—नास्ति मोघः = निष्फलः संकल्पः = विचारो ध्यानं वा यस्य तत्सम्बुद्धौ । अभ्यन्तरात्मने = अन्तरात्मरूपाय । तुभ्यम् = भवते । नमः = (अस्तु) ॥ २ ॥

हिन्दी—हे विभो ! हे भस्म रमाये हुये ! हे नागों के आभूषण ! अपने संकल्प को कभी व्यर्थ न करने वाले, अन्तरात्म-स्वरूप आपके लिए प्रणाम है ॥ २ ॥

अत्रान्तरे तरणिकोमलकान्तिभिन्न-भास्वत्सरोजदलदीर्घविलोचनायाः ।
तस्याः प्रबोधमकरोद्रजनीविराम-यामावसानमृदुमङ्गलतूर्यनादः ॥ ३ ॥

अन्वयः—अत्रान्तरे,तरणिकोमलकान्तिभिन्नभास्वत्सरोजदलदीर्घविलोचनायाः तस्याः रजनीविरामयामावसानमृदुमङ्गलतूर्यनादः प्रबोधम् अकरोत् ॥ ३ ॥

सुधा—अत्रान्तर इति । अत्रान्तरे = अस्मिन्नवसरे । तरणिकोमलकान्तिभिन्नभास्वत्सरोजदलदीर्घविलोचनायाः—कोमला कान्तिः कोमलकान्तिः, तरणेः = सूर्यस्य कोमलकान्तिः = मृदुलप्रभा, तया भिन्ने पृथक् कृते भास्वती = विकसिते च सरोजदले = कमलदले तादृशे दीर्घे = विशाले विलोचने = नयने यस्यास्तादृश्याः । तस्याः = प्रियङ्गुमञ्जर्याः । रजनीविरामयामावसानमृदुलमङ्गलतूर्यनादः = रजन्याः विरामः रजनीविरामस्य यो यामः, तस्यावसानम् = निशाविरामप्रहरसमाप्तिः, तत्र भवः मृदुलः = मधुरः मङ्गलः = शोभनः तूर्यनादः = वाद्यध्वनिः । प्रबोधम् = जागरणम् । अकरोत् = चकार ॥ ३ ॥

हिन्दी—इसी अवसर पर सूर्य की कोमल कान्ति से विकसित देदीप्यमान कमल के समान सुन्दर विशाल नयनों वाली उस प्रियङ्गुमञ्जरी को रात्रि के अन्तिम प्रहर के समाप्त होने पर होने वाले मधुर मांगलिक वाद्यध्वनि ने जगा दिया ॥ ३ ॥

क्रमेण च प्राच्यां सिच्यमानायामिव बहलकुसुम्भाम्भःकुम्भैः ककुभिः, प्रभवति तारकोच्छेदनाय सुकुमारे रश्मिजाले, पूर्वाचलस्थलीमधिरोहति जगत्प्रबोधप्रारम्भमङ्गलकलशेंऽशुमालिमण्डले, ताण्डवाडम्बरिणि पुण्डरीकखण्डे, हिण्डमानासु दीर्घिकामण्डनमुण्डमालासु कारण्डवमण्डलीषु, विश्राम्यत्सु श्रवणपुटेषु हृदयानन्दिनि बन्दिवृन्दारकवृन्दवन्दनारम्भरवे, रणयत्सु वीणावेणुकोणान्वैणिकवैणविकेषु, कण्ठकुहरप्रेङ्खोलनालङ्कारकुशले तारातरं गायति ग्रामरागं गायनजने जाते जरज्जपाप्रसूनभिन्नस्फुटस्फाटिककान्तिसमप्रभे प्रभातसमये, सा समुत्थाय भूत्वा शुचिर्विकचनवनलिनगर्भमर्घाञ्जलिमवकीर्य भगवतः सवितुः स्तुतिमकरोत् ।

सुधा—क्रमेण चेति । च = तथा । क्रमेण = क्रमशः । बहलकुसुमाम्भः कुम्भैः—

वहलकुसुम्भाम्भः = गाढकेसरजलम्, येषु कुम्भेषु = घटेषु, तैः। सिच्यमानायाम् = आर्द्रीक्रियमाणायाम् इव। प्राच्याम् ककुभिः = पूर्वदिशायाम्। तारकोच्छेदनाय—तारकस्य = तारकासुरनाम्नः उच्छेदनाय = नाशाय। पक्षे—तारकाणाम् = नक्षत्राणामुच्छेदनम् = विनाशस्तस्मै। सुकुमारे = स्वामिकार्तिकेये। प्रभवति = प्रवृत्ते सति। पक्षे—सुकुमारे = सुकोमले रश्मिजाले=किरणसमूहे। प्रभवति=प्रवृत्ते सति। जगत्प्रबोधप्रारम्भमङ्गलकलशे—जगतः = संसारस्य प्रबोधरूपान् = जागरणरूपान् यः आरम्भः, तस्य यो मङ्गलकलशः = माङ्गलिकघटस्तस्मिन्। अंशुमालिमण्डले = सूर्यमण्डले। पूर्वाचलम् = उदयाचलम्। अधिरोहति = आरोहणं कुर्वति सति। पुण्डरीकखण्डे=कमलवने। ताण्डवाडम्बरिणि = उद्धतनृत्यदशायाम् सम्भूते सति। दीर्घिकामण्डनमुण्डमालासु = वापीशोभनशिरःपंक्तिषु। कारण्डवमण्डलीषु = कारण्डवपक्षिसमूहेषु। हिण्डमानासु=कम्पमानासु। हृदयानन्दिनि = आह्लादकारिणि। वन्दिवृन्दारकवृन्दवन्दनारम्भरवे—वन्दिवृन्दारकाणाम् = वन्दिजनानाम् वृन्दम् = समूहम्, तस्य वन्दनारम्भे = प्रार्थनाप्रारम्भे यो रवः = ध्वनिस्तस्मिन्। श्रवणपुटेषु = कर्णकुहरेषु। विश्राम्यत्सु = प्रशान्तेषु। वीणावेणुकोणान् = तन्त्रीवंशीवादकान्। वैणिकवैणविकेषु—वैणिकवैणविकौ=वीणावेणुवादकौ, तेषु। रणयत्सु = वादयत्सु। कण्ठकुहरप्रेङ्खोलनालङ्कारकुशले—कण्ठकुहरस्य = व्यालदेशस्य प्रेङ्खोलनम् = कम्पनम्, तेनाम्बुद्रितविवृतानुनासिकादिभिर्यदलङ्करणम् तस्मिन् कुशलः, तस्मिन्। गायकजने = गीतकारे। तारातरम् = अत्युच्चैः ग्रामरागम् = पंचमरागम्। गायति = गायनं कुर्वति सति। जरज्जपाप्रसूनभिन्नस्फुटस्फाटिककान्तिसमप्रभे जरज्जपाप्रसूनेन = जीर्णजपाकुसुमेन भिन्ना अतएव स्फुटा = प्रकटिता स्फाटिककान्तिसमा = स्फाटिकमणिप्रभासदृशा, प्रभा = कान्तिर्यस्य तादृशे। प्रभातसमये = प्रत्यूषकाले संजाते। सा = प्रियङ्गुमञ्जरी समुत्थाय= उत्थाय। शुचिर्भूत्वा = स्नात्वा। विकचनवनलिनगर्भम्=विकसितनूतनकमलयुतम्। अञ्जलिम् = पुष्पाञ्जलिम्। अवकीर्य = समर्प्य। भगवतः = स्वामिनः। सवितुः = सूर्यदेवस्य। स्तुतिम् = प्रार्थनाम्, अकरोत् = चकार।

टिप्पणी—ग्रामराग—संगीतशास्त्र में एक प्रकार का गायन-भेद। षड्जमध्यमगान्धरास्त्रींस्त्रीन्ग्रामान्रागं च भरतोक्तं षड्विधं गायके गायति सति।

हिन्दी—तथा क्रमशः केसर के गाढ़े जल से मानों पूर्व दिशा के सिञ्चित हो जाने पर, तारों के विनाश के लिए सुकुमार रश्मिजाल के प्रवृत्त हो जाने पर, संसार को जागृत करने के लिए मंगल कार्यों को प्रारंभ करने वाले कलश के समान सूर्य मण्डल के उदयाचल स्थल पर आरोहित हो जानें पर, कमल वन के उद्धत नृत्य प्रदर्शित करने पर, दीर्घिकाओं (झीलों) की शोभा बढ़ाने वाले कारण्डव पक्षियों के झुण्ड इधर-उधर घूमने पर, श्रवण पुटों में हृदय को आनन्द देने वाले वन्दीजनों के द्वारा आरम्भ किये गये वन्दनारव के शान्त हो जानेपर, वीणा तथा वंशी बजानेवाले वैणिक (वीणावादक) तथा वैणविकों के (वंशीवादकों) के मधुर ध्वनि करने पर, कण्ठकुहर को कम्पित कर अलंकारों को निकालने में कुशल गायकों के उच्चस्वर से पञ्चमराग अलापने पर, पुराने गुड़हल के फूल से प्रतिबिम्बित स्फटिकमणि के समान कान्ति वाले प्रभात के हो

जाने पर वह (प्रियङ्गु मञ्जरी) उठकर स्नानादि कर खिले हुए नूतन कमल पुष्पों की अञ्जलि अर्पित कर भगवान् सूर्यदेव की स्तुति करने लगी।

वासरश्रीमहावल्लीपल्लवाकारधारिणः ।
जयन्ति प्रथमारम्भसम्भवा भास्वदंशवः ॥ ४ ॥

अन्वयः—वासरश्रीमहावल्लीपल्लवाकारधारिणः प्रथमारम्भसम्भवाः भास्वदंशवः जयन्ति ॥ ४ ॥

सुधा—वासरश्रीरिति । वासरश्रीमहावल्लीपल्लवाकारधारिणः—वासरश्रीरूपा महावल्ली = दिनलक्ष्मीरूपा महालता, तस्याः पल्लवाकारधारिणः=दलरूपसमाः । प्रथमारम्भसम्भवाः = प्रथमप्रहरजाताः भास्वदंशवः—भास्वतः = सवितुः अंशवः = रश्मयः । जयन्ति = उत्कृष्टा भवन्ति ॥ ४ ॥

हिन्दी—दिवस लक्ष्मीरूपी महालता के पल्लवों की आकृति को धारण करने वाली प्रथम प्रहर की सूर्य की किरणें उत्कृष्ट लगती हैं ॥ ४ ॥

जयत्यम्भोजिनीखण्ड-खण्डितालस्यसञ्चयम् ।
कौङ्कुमं पूर्वदिङ्मण्डमण्डनं मण्डलं रवेः ॥ ५ ॥

अन्वयः—अम्भोजिनीखण्डखण्डितालस्यसञ्चयम्, पूर्वदिङ्मण्डनम् रवेः कौङ्कुमम् मण्डलम् जयति ॥ ५ ॥

सुधा—जयतीति । अम्भोजिनीखण्डखण्डितालस्यसञ्चयम्—अम्भोजिनीखण्डस्य = कमलवनस्य खण्डितम् = नाशितम् आलस्यसञ्चयम् = आलस्यसमूहम् येन तत् । पूर्वदिङ्मण्डनम् = पूर्वदिशः मण्डनम् = प्राचीदिक्शोभनम् । रवेः = सूर्यस्य । कौङ्कुमम् = कुङ्कुमसदृशम् मण्डलम् = वृत्तम् । जयति = उत्कृष्टं भवति ॥ ५ ॥

हिन्दी—कमलवन के आलस्यसमूह को समाप्त कर देने वाला, पूर्व दिशा की शोभा बना हुआ सूर्य का कुङ्कुम सदृश मण्डल सर्वोत्कृष्ट लग रहा है ॥ ५ ॥

राजाऽपि प्रथमप्रबुद्धगीतध्वनिनिरस्तनिद्रः, सान्द्रविद्रुमप्रभाभासि सन्ध्यावसरे, विधाय सान्ध्यं विधिम्, अधिकृतेन धर्मकर्मणि तत्कालपुरःसरेण पुरोधसा सह तामेवान्वेष्टुमन्तःपुरमाजगाम ।

सुधा—राजेति । राजा अपि = नृपः अपि । प्रथमम् = प्रथमवारम् प्रबुद्धाय = जागरणाय यः गीतध्वनिः = गीतरवः, तेन निरस्ता = दूरीकृता निद्रा यस्य सः । सान्द्रविद्रुमप्रभाभासि-सान्द्रस्य = सघनस्य विद्रुमस्य=विद्रुममणेः प्रभेव भाः=कान्तिर्यस्य तस्मिन् । सन्ध्यावसरे = सायङ्काले । सान्ध्यम्-सन्ध्यायां भवं सान्ध्यम् = सन्ध्योपासनम् । विधिम् = क्रियाम् । विधाय = कृत्वा । धर्मकर्मणि = धार्मिककृत्ये, अधिकृतेन = अधिकारिणा । तत्कालपुरःसरेण = तत्क्षणाग्रेसरेण । पुरोधसा = पुरोहितेन सह = साकम् । ताम् एव = प्रियङ्गुमञ्जरीमेव । अन्वेष्टुम् = अन्वेषणं कर्तुम् । अन्तःपुरम् = राजभवनान्तर्भागम् । आजगाम = आगच्छत् ।

हिन्दी—राजा भी प्रथमवार की गाई हुई गतीध्वनि से जगकर गहरे विद्रुम मणि की कान्ति के समान कान्ति वाले उषःकाल में सन्ध्यावन्दनादि क्रिया समाप्त कर धार्मिक कर्म के अधिकारी तत्काल सामने आये हुए पुरोहित के साथ उसी रानी प्रियङ्गुमञ्जरी को ढूँढ़ने के लिए अन्तःपुर को आये।

दृष्ट्वा च विस्मयमानः स्फुरदरविन्दसुन्दराननाम् 'अनुगृहीतेयमिन्दुमौलिना' इत्यवधारयन्, अतिहर्षोत्कर्षमन्थरगिरा तां बभाषे।

सुधा—दृष्ट्वेति। च = तथा। विस्मयमाना=आश्चर्यचकितो राजा। स्फुरदरविन्दसुन्दराननाम्–स्फुरत् = प्रस्फुटत् अरविन्दम् = कमलमिव सुन्दरमाननम् = मुखम् यस्यास्ताम्। दृष्ट्वा = विलोक्य। इयम् = एषा। इन्दुमौलिना–इन्दुः—विधुमौलौ यस्य, तेन = महादेवेन। अनुगृहीता = अनुग्रहे नीता। इति = इत्थम्। अवधारयन् = निश्चयन्। अतिहर्षोत्कर्षमन्थरगिरा–अतिहर्षोत्कर्षेण=अत्यन्तप्रसन्नतया। मन्थरगिरा–गम्भीरवाण्या। ताम् = राज्ञीम्। बभाषे = उक्तवान्।

हिन्दी—तथ आश्चर्यचकित राजा ने खिले हुए कमल के समान सुन्दर मुख वाली उस (रानी) को देखकर 'इस पर शिव जी ने कृपा की है' यह निश्चय करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता के कारण गम्भीर वाणी से उस (रानी प्रियंगुमञ्जरी) से कहा—

मुग्धस्निग्धनिरुद्धशब्दहसितस्फारीभवल्लोचनं
तिर्यक्-कान्तिकपोलपालिपुलकस्पष्टीकृतान्तर्धृतिः ।
एतत्ते करभोरु पङ्कजसदृग्दृष्ट्वा मुखं मे बला-
दुच्चैः किञ्चिदचिन्त्यचर्चितचमत्कारं मनो हृष्यति ॥ ६ ॥

अन्वयः—मुग्धस्निग्धनिरुद्धशब्दहसितस्फारीभवल्लोचनम्, तिर्यक्–कान्तिकपोलपालिपुलकस्पष्टीकृतान्तर्धृतिः (अस्ति)। हे करभोरु! ते एतत् पङ्कजसदृक् मुखम् दृष्ट्वा बलात् मे अचिन्त्यचर्चितचमत्कारम् मनः किञ्चिद् उच्चैः हृष्यति ॥ ६ ॥

सुधा—मुग्धेति। मुग्धस्निग्धनिरुद्धशब्दहसितस्फारीभवल्लोचनम् निरुद्धशब्दम् यद्हसितम् तत्। मुग्धम् स्निग्धश्च निरुद्धशब्दहसितम् तेन स्फारीभवल्लोचनम् = मनोहर-स्नेहपूर्ण-निःशब्दहास्योत्फुल्लनयनम् (तथा) तिर्यक् कान्तिकपोलपालिपुलकस्पष्टीकृतान्तर्धृतिः–तिर्यक्कान्तिना = वक्रप्रभायुतेन कपोलपालिपुलकगण्डस्थलरोमाञ्चेन स्पष्टीकृतः = प्रकटितः अन्तर्धृतिः = आन्तरिकं धैर्यम् वर्तते। हे करभोरु! करभः = मणिबन्धकनिष्ठकयोर्मध्यभागस्तद्वद् ऊरू यस्यास्तत्सम्बुद्धौ हे करभोरु। ते = तव। एतत् = इदम्। पङ्कजसदृक् = कमलसमम्। मुखम् = आननम्। दृष्ट्वा = अवलोक्य। बलात् = हठात्। मे = मम। अचिन्त्यचर्चितचमत्कारम् = अद्भुतचमत्कारपूर्णम्। मनः = चेतः। किञ्चिद् उच्चैः = अधिकमेव। हृष्यति = प्रसन्नतामेति। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ६ ॥

हिन्दी—मनोहर स्नेह से पूर्ण निःशब्द हास्य से नेत्र प्रसन्न हो गये हैं तथा वक्र कान्तिपूर्ण गालों की पुलकावलि से आन्तरिक धैर्य प्रकट हो रहा है। हे करभोरू! तुम्हारा यह कमल जैसा सुन्दर मुख देखकर हठात् मेरा अद्भुत चमत्कार पूर्ण मन

कुछ और प्रसन्न हो उठा है जिसका न तो इससे पूर्व कभी चिन्तन किया था और न चर्चा ही की थी ॥ ६ ॥

'तत्कथय शप्तासि ममाज्ञया हर्षवृत्तान्तम्' इत्यभिहिता सा स्मितसुधानुविद्धमुग्धमुखवीणाक्वणकोमलालापेन सर्वमादितः स्वप्नदर्शनमाचचक्षे ।

सुधा—शप्ता = शपथदत्ता । असि त्वम् (मया) । तत् = अतएव । ममाज्ञया = मन्निर्देशेन । हर्षवृत्तान्तम् = आनन्दवृत्तान्तम् । कथय = भण । इति = एवम् । अभिहिता= कथिता । सा = राज्ञी । सुधानुविद्धमुग्धमुखवीणाक्वणकोमलालापेन–सुधयाऽनुविद्धम् = अमृतपूर्णम् मुग्धम् = मनोरमम् च मुखमेव वीणा तस्याः यत्क्वणनम् तद्वद् कोमलम् = मधुरम् यदालापम्, तेन । सर्वम् = सम्पूर्णम् । आदितः = प्रारम्भात् । स्वप्नदर्शनम् = स्वप्नावलोकनम् । आचचक्षे = कथयामास ।

हिन्दी—'तुम्हें मेरी शपथ (सौगन्ध) है अतः मेरी आज्ञा से प्रसन्नता का समाचार कह डालो' । ऐसा कहने पर उसने अमृत से सनी मनोरम मुखरूपी वीणा की आवाज जैसी मृदुल बातचीत से आरम्भ से लेकर सम्पूर्ण स्वप्न देखने वाली बात कह डाली ।

क्षितिपतिस्तु तदाकर्ण्य 'प्रिये, मयापि स भगवान् । आत्मानुहारिणा विनायकेन स्वामिना च शक्तिमता पुत्रेणानुगम्यमानो, दग्धकामः पूरितकामश्च, एककपर्दक ईश्वरश्च, ससोमश्चासोमः, सविभवश्चाविभूतिश्च, पिनाकी चापिनाकी दृष्टः स्वप्नान्तरे तरुणार्कमण्डलमध्यवर्ती प्रणतप्रियङ्करः शङ्करः । तदेष ब्राह्मणः करोतु संवादिनोरनयोः स्वप्नयोरर्थपरामर्शम्' इत्यभिधाय तां, तमवस्थितं पुरः पुरोहितमभाषयत् ।

सुधा—क्षितिपतिरिति । क्षितिपतिस्तु = नृपस्तु । तत् = एतत् । आकर्ण्य = श्रुत्वा । प्रिये = दयिते । मयाऽपि=आत्मनाऽपि । आत्मानुहारिणा–स्वानुरूपेण । शक्तिमता=शक्तिधारिणा शस्त्रधारिणा वा । विनायकेन = नम्रेण विघ्नहरेण वा । स्वामिना = प्रभुणा स्वामिकार्तिकेयेन वा । पुत्रेण = सुतेन, अनुगम्यमानः = अनुगच्छन् । स भगवान् = असौ शिवः । दग्धकामः–दग्धः कामो येन सः = दग्धमदनः अपि । पूरितकामः=पूरितः कामाः येन सः = सफलमनोरथः । एककपर्दकः–एकः कपर्दको यस्य सः = जटाबन्धमात्रोऽपि । ईश्वरः = धनवान् । ससोमः–सोमेन सहितः = विधियुक्तः चापि । असोमः सह उमया वर्तत इति सोमः, न सोमः असोमः = उमया रहितः । सविभवः–विगतो भवो येभ्यस्ते विभवाः = मुक्तात्मानः तैः सह वर्तत इति सविभवः । अविभूतिः–विशिष्टा भूतिर्यस्य । भस्म च । पिनाकी–पिनाकम्=धनुरस्यास्तीति पिनाकी । अपि इति भिन्नम् । नाकी–नाकं = स्वर्गमस्यास्तीति = स्वर्गी । यद्वा 'चप सान्त्वने' । चपयन्ति = सान्त्वयन्त्यनुनयन्त्यवश्यं चापिनः प्रसादकाः नाकिनो यस्य तादृशः । तरुणार्कमण्डलमध्यवर्ती–तरुणश्चासावर्कः = उदयकालीनसूर्यः, तस्य मण्डलमध्ये वर्तत इति = वृत्तान्तर्गतः । प्रणतप्रियङ्करः = प्रणतानाम् = शरणागतानाम् प्रियम् = इष्टम् करोतीति = भक्तजनप्रियकरः । शङ्करः = शिवः । स्वप्नान्तरे = स्वप्ने मध्ये । दृष्टः = अवलोकितः । तत् = अतः । एषः = अयम् ब्राह्मणः =

विप्रः पुरोहित इति । सम्वादिनोः=समानार्थकयोः । अनयोः = एतयोः स्वप्नयोः = द्वयोः स्वप्नयोः । अर्थपरामर्शम् = अर्थविचारणम् । करोतु = विदधातु, तामित्यभिधाय = एवं तां कथयित्वा । पुरः = सम्मुखम् । अवस्थितम् = उपस्थितम् । तम् = अमुम्, पुरोहितम्= पुरोधसम् । अभाषयत् = अकथयत् ।

हिन्दी—राजा भी यह सुनकर 'हे प्रिये, मैंने भी वह अपने अनुरूपशक्ति (शास्त्र) वाले नम्र गणेश जी तथा प्रभु (स्वामी कार्तिकेय) पुत्र को आगे किये हुए कामदेव को जलाने वाले होकर भी सम्पूर्ण कामनाओं को पूरा करने वाले एक कपर्दक (एक कौड़ी वाले) तथा ईश्वर (धन-ऐश्वर्य वाले) ससोम (चन्द्र युक्त) होकर भी असोम (पार्वतीजी के बिना अकेले ही) सविभव (मुक्तात्मा वाले जिनके साथ हैं) होकर भी अविभूति (ऐश्वर्य से विगत नहीं) पिनाकी (धनुर्धारी) होकर भी अपिनाकी (स्वर्गवासी) भक्तों का प्रिय करने वाले भगवान् शङ्कर को उदयकालीन सूर्य मण्डल के अन्तर्गत स्वप्न में देखा है । अतः यह ब्राह्मण (पुरोहित) इन मिलते-जुलते दोनों स्वप्नों का अर्थ परामर्श (फल का विचार) करें, ऐसा उन रानी प्रियङ्गुमञ्जरी से कहकर सामने खड़े हुए उस पुरोहित से कहने लगे ।

सोऽपि 'देव, दिष्टया वर्धसे । अनल्पपुण्यप्राप्यमेतत्तरुणेन्दुमौलेरालोकनम्, अवश्यमवाप्स्यति देवी सकलराजचक्रचूडामणिकल्पमशेषभुवनभ्रान्तशुभ्रयशः-पिण्डडिण्डिममपत्यम्' इत्यनेकधा तयोराशंसयांचकार ।

सुधा—सोऽपीति । सा = असौ पुरोहितः अपि । देव = राजन् !, दिष्टया वर्धसे = सौभाग्येन वर्धसे । एतत् = इदम् । तरुणेन्दुमौलेः—तरुणः = युवा इन्दुः = चन्द्र मौलौ यस्य तस्य = शङ्करस्य । आलोकनम् = दर्शनम् अनल्पपुण्यप्राप्यम् = महत्पुण्यलभ्यम् (अस्ति) अवश्यम् = नूनमेव देवी=राज्ञी प्रियङ्गुमञ्जरी । सकलराजचक्रचूडामणिकल्पम्-सकलस्य = निखिलस्य राजचक्रस्य = नृपमण्डलस्य चूडामणिकल्पम् = मौलिमणिसदृशम् । अशेषभुवनभ्रान्तशुभ्रयशःपिण्डडिण्डिमम्—अशेषम् = समस्तम् भुवनम् = लोकम् भ्रान्तम्= चङ्क्रमणकारिणम् शुभ्रम् = उज्ज्वलम् यशः पिण्डडिण्डिमम् = यश.समूहोद्घोषकम् अपत्यम् = सुतम् । अवाप्स्यति = प्राप्स्यति । इति = एवम्, अनेकधा—भूयोभूय । तयोः = उभयोः । आशंसयांचक्रे = प्रशंसयामास ।

हिन्दी—उस ब्राह्मण (पुरोहित) ने भी 'हे राजन्! भाग्य से आप बढ़ रहे हैं। यह तरुणेन्दु मौलि शिवजी का दर्शन बड़े पुण्य से ही प्राप्त होता है। रानी सकल राज-समूह के चूडामणि सदृश अपनी उज्ज्वल कीर्ति-पुञ्ज को उद्घोषों से समस्त त्रिभुवन को चकित कर देने वाले पुत्र को अवश्यमेव प्राप्त करेंगी।' इस प्रकार बारम्बार उन दोनों की प्रशंसा की ।

एवंविधे च व्यतिकरे कोऽपि कान्तकार्तस्वरस्वरूपमुत्फुल्लपाण्डुपुष्प-मालया मेरुशिखरमिव प्रदक्षिणाक्षीणलग्नया नक्षत्रराज्या जनितशोभं जटा-भारमुद्वहन्, अतिवहलमलयजरसरचितविचित्रपुण्ड्रकमण्डनाममरशैलशिला-मिव रङ्गत्त्रिस्रोतसं ललाट-पट्टिकां कलयन्, प्लवमान इवोज्जृम्भपङ्कजकिञ्जल्क-

कपिलकायकान्तिकल्लोलेषु, करुणारसपूर्णवक्षःस्थलदीर्घिकायामन्तस्तरन्तीं बालकलहंसपक्षिपङ्क्तिमिव स्फारस्फाटिकाक्षमालिका बिभ्राणः, कुशकौपीनवासाः, करकलितकुशकाण्डकमण्डलुमण्डलैः, तरुभिरिव विविधशाखैर्विधृतजटावल्कलैश्च, पर्वतैरिव समेखलैः सरुद्राक्षमालैश्च, नक्षत्रैरिव समृगकृत्तिकाश्लेषैः सज्येष्ठाषाढैश्च, ससंमदैरपि नमदाकारमाकलयद्भिः अक्रीडैरपि चक्रीडापरैः, रोमशरैरपि विप्रबालकैः मुनिभिः परिवृतः, सेवितपुराणपुरुषोऽप्यजनार्दनप्रियः, प्रसन्नशङ्करोऽप्यनाश्रितभवः, प्रबुद्धोऽप्यबन्दीकृतजनः, श्रमणोऽप्यजिनपरिग्रहः, ग्रहगण इव नवधात्मको लोकानाम्, धनुर्धर इव नालीकसन्धः, हंस इव नदाम्भस्थानकप्रियः, पन्नग इव नाकुलीनः, सरस्वतीसन्निवासस्य मुखमन्दिरस्य वन्दनमालयेव प्रथमोद्भेदभासिन्या दंष्ट्रिकारोमराजिरेखया श्यामलितोत्तरोष्ठपृष्ठः, कलिकालकलङ्कशङ्काशरणगतैस्त्रिभिः पुण्ययुगैरिव ससूत्रीभूय देहलग्नैः, त्रिपुष्करस्नानावसरविलग्नसरसबिसकाण्डकुण्डलैरिव भक्त्याराधितत्रिपुरुषरचितरक्षासूक्ष्मरेखानुकारिभिः सितयज्ञोपवीततन्तुभिर्भूषितदेहः, शमीविद्रुमाभाधरश्च, प्रजापो विप्रजापश्च, सुतपाः कृतपश्श्लाघी च, विकलत्रः, सकलत्रश्च, यमान्तानुसारी सकुशलश्च, विकचनवनलिनशङ्कया मिलन्मुक्तमुग्धमधुपमण्डलेनेव रुद्राक्षवलयेन विराजितवामपाणितल्लवः, न स्मृतः स्मरापस्मारेण, नाङ्गीकृतः कृतघ्नतया, नालोकितः कितववृत्तेन, नाकलितः कलिना न निरुद्धो विरुद्धक्रियाभिः, अतितेजस्तया द्वितीय इव परब्रह्मणः, तृतीय इव सूर्याचन्द्रमसोः, चतुर्थ इव गार्हपत्याहवनीयदक्षिणाग्नीनाम्, पञ्चम इव दिक्पतीनाम्, षष्ठ इव महाभूताधिदेवतानाम्, सप्तम इव मूर्तर्तूनाम्, अष्टम इव सप्तर्षीणाम्, नवम इव वसूनाम्, दशम इव ग्रहाणाम्, अनवरतहृदयकमलकर्णिकान्तःस्फुरज्ज्योतीरूपपरमब्रह्मकान्तिकलापेनैव बहिर्निर्गच्छताच्छभस्मानुलेपेन कनकगिरिरिव विरलचन्द्रातपेनापाण्डुरितदेहः, दीर्घसरसबिसकाण्डपाण्डुना प्रचण्डपवनेनोर्ध्वमुल्लासितेन जटाजूटबन्धनपटप्रान्तपल्लवेन शिरःपतद्–गगनगरुद्गङ्गाम्बुधाराहारिणो हरस्य स्वामिभक्त्या कृतानुकरणव्रतचर्यामिव कलयन्, कोमले महसि, तरुणे वयसि वृद्धे तपसि पृथुनि यशसि गुरुणि श्रेयसि वर्तमानः, सदः सदाचाराणाम्, आश्रयः श्रुतीनाम्, महीमहिम्नः, प्रपा कृपारसस्य, क्षेत्रं क्षमाङ्कुराणाम्, पात्रं मैत्रीसुधायाः प्रासादः प्रसादस्य, सिन्धुः साधुतायाः, तरुणार्कमण्डलमध्यान्मुनिरवातरत् ।

सुधा—एवंविध इति । एवंविधे = ईदृशे । व्यतिकरे = अवसरे । कोऽपि = कश्चिद् । मुनिः = यतिः । तरुणार्कमण्डलमध्यात्–तरुणश्चासावर्कः, तस्य यन्मण्डलम्, तस्य मध्यात् = युवसूर्यवृत्तान्तरात् । अवातरत् = अवतीर्णो जातः । पुनः कीदृशोऽसौ—कान्तकार्तस्वररूपम् = सुन्दरकार्तस्वराकृतिम् । उत्फुल्लपाण्डुपुष्पमालया = विकसितपाण्डुकुसुमस्रजा । प्रदक्षिणाक्षीणलग्नया–प्रदक्षिणया = परिक्रमया क्षीणम् = नष्टम् लग्नम् संबद्धं ज्योतिषप्रणीतं च यस्यास्तया । नक्षत्रराज्या = नक्षत्रपंक्त्या । मेरुशिखरम् = सुमेरुपर्वतशिखरम् इव । जनितशोभम्–जनिता = जाता शोभा = सुन्दरता यत्र तादृशम् । जटाभारम् =

जटाजूटम् । उद्वहन् = धारयन् । अतिवहलमलयजरसरचितविचित्रपुण्ड्रकमण्डनाम्—अतिवहलेन = अत्यधिकेन मलयजरसेन = चन्दनेन रचितम् = खचितम् विचित्रम् = अद्भुतम् पुण्ड्रकमण्डनम् = तिलक–शोभनम् यस्यास्तादृशीम् । अमरशैलशिलाम् इव–अमरशैलस्य = हिमालयस्य शिलाम् इव । रङ्गत्त्रिस्रोतसम् प्रवहद् गङ्गाप्रवाहाम् । ललाटपट्टिकाम् = भालपट्टपट्टिकाम् कलयन् = धारयन् । उज्जृम्भपङ्कजकिञ्जल्ककपिलकायकान्तिकल्लोलेषु उज्जृम्भस्य = विकसितस्य पङ्कजस्य = कमलस्य यत् किञ्जल्कम् = परागः, तद्वत् कपिलकायकान्तिः = गौरशरीरदीप्तिस्तस्या कल्लोलेषु = तरङ्गेषु । प्लवमान इव = तरङ्गायमान इव । करुणरसपूर्णवक्षःस्थलदीर्घिकायाम् = कातररसयुक्तम् वक्षःस्थलम् = बक्षोभागम् एव दीर्घिका = सरसी, तस्याम् । बालकलहंसपक्षिपंक्तिम् = शिशुहंसपक्षिमालाम् । अन्तस्तरन्तीम् इव मध्ये = प्रवहन्तीम् इव । स्फारस्फटिकाक्षमालिकाम् = विशालस्फटिकजपमालाम् । बिभ्राणः = दधानः । कुशकौपीनवासाः–कुशाः = दर्भाः कौपीनवासांसि च = कौपीनवस्त्राणि च यस्य सः । करकलितकुशकाण्डकमण्डलुमण्डलैः–करेषु कलितानि कुशकाण्डकमण्डलानाम् मण्डलानि, तादृशैः = हस्तधृतदर्भदूर्वाकमण्डलुवृन्दैः । विविधशाखैः–विविधाः = विभिन्नाः शाखाः = लताः येषु तैः । तरुभिः = पादपैः इव । विधृतजटावल्कलैश्च = धृतसटावल्कलवस्त्रैश्च । समेखलैः = मेखलायुक्तैः । पर्वतैः इव = अद्रिभिरिव । सरुद्राक्षमालैः = रुद्राक्षपादपयुक्तैः, रुद्राक्षमालायुतैर्वा । समृगकृत्तिकाश्लेषैः–मृगकृत्तिकायाः = हरिणचर्मणः श्लेषैः = सहितैः । स ज्येष्ठाषाढैः–ज्येष्ठाषाढेन = प्रशस्यव्रतदण्डेन सहितैः, पक्षे मृगशिरः कृत्तिका अश्लेषा ज्येष्ठा आषाढाश्च नक्षत्राणि च तैः संहितैः ससम्मदैः = तृष्णाक्षयात् सानन्दैरपि । पक्षे–अभिमानसहितैरपि । नमदाकारम् = नम्राकारम्, मदाकारम् = अभिमानरूपयुक्तम् न आकलयद्भिः = कुर्वद्भिः । अक्रीडैः–क्रीडा = विषयासक्तिर्नास्ति येषु तैरपि । चक्रीडापरैः–चक्रिणः = विष्णोः ईडा = स्तुतिस्तत्परैः । रोमशैः = भूमलोमयुक्तैः अपि । विप्रबालकैः–विप्राणां बालकैः = डिम्भैः । मुनिभिः = यतिभिः । परिवृतः–परितोवृतः सेविताः पुराणपुरुषाः = वृद्धजनाः येन तादृशोऽपि । अजनार्दनप्रियः–जनानाम् = लोकानाम् = आर्दनम् = रुदनम् प्रियम् = रुचिरम् यस्य तादृशः । नास्ति जनार्दनप्रियो यः सः = लोकरुदनप्रियरहितः । प्रपन्नशङ्करः प्रपन्नानाम् = आश्रितानाम् शङ्करः = सुखकरः अपि । अनाश्रितभवः अनाश्रितः = अपरतन्त्रः भवस्य = संसारस्य यः सः । प्रवुद्धः = सुबुद्धः अपि । अवन्दीकृतः = हठेन गृहीतः न । पक्षे प्रबुद्धः = सुगतः अपि वन्दाः = वन्दका = बौद्धव्रतस्थो न । श्रमणः = क्षपणः अपि । अजिनः = अर्हन् न । पक्षे श्रवणः = आत्मज्ञानार्थं कृतश्रमः अपि अजिनं परिग्रहः = मृगचर्मधरः । ग्रहगण इव–ग्रहाणाम् = सूर्यादिग्रहाणाम् इव लोकानाम् = जनानाम् नवधात्मकः = नवधाविभक्तः । अथवा ग्रहगण इव = राहुकेत्वादि-क्रूरग्रहसमूह इव । वधात्मकः = वधाकांक्षी न = नासीत् । धनुर्धरः इव = चापधारीव । नालीकसन्धः = मिथ्यासन्धानकर्त्ता न । अथवा–यथा धनुर्धरः अलीकसन्धः न भवति तथैव सः मिथ्या प्रतिज्ञो नासीत् । दंसः = दंशकीट नदाम्भस्थानकप्रियः = सरित्स्थानप्रियः इव । दाम्भस्थानकप्रियः–दम्भः = पाखण्डः एव दाम्भः दाम्भस्थानकं प्रियं रुचिकरं यस्य

नास्तीति सः नदाम्भस्थानकप्रियः = पाखण्डभूमिरुचिरहितः । नाकुलीनः = वल्मीकि-निलीनः पन्नगः = सर्पः इव आकुलीनो न = कुलवान् एव । सरस्वतीसन्निवासस्य—सरस्वती = भारती, तस्याः सन्निवासः = निवासः तादृशस्य । मुखमन्दिरस्य = मुखमेव मन्दिरम्, आननमेव निवासस्थानम् यस्य तादृशस्य । मुखमन्दिरस्य = आननगृहस्य । प्रथमोद्भेदभासिन्या = प्रथमप्रकटकान्त्या दंष्ट्रिकारोमराजिरेखया—दंष्ट्रिकायाः = पुच्छ-भागस्य या रोमराजिः = लोमपंक्तिः, तस्याः रेखा = लेखा, तया । प्रथमवन्दनमालयेव = प्रथमहारेण पंक्त्येव । श्यामलितोत्तरोष्ठपृष्ठः—श्यामलितः = श्यामवर्णभूतः उत्तरोष्ठस्य निम्नाधरस्य पृष्ठः = पार्श्वभागो यस्य सः । कलिकालकलङ्कशङ्काशरणगतैः—कलि-कालस्य = कलियुगस्य कलङ्कस्य या शङ्का = सन्देहः, तया शरणगतैः = शरणस्थितैः । त्रिभिः = त्रिसंख्यकैः पुण्ययुगैः इव = पवित्रैः सतयुग-द्वापर-त्रेता । युगैरिव । सुसूत्रीभूय—अतितनुभूत्वा । देहलग्नैः = शरीरसंजुष्टैः । त्रिपुष्करस्नानावसरविलग्नसरसविसकाण्ड-कुण्डलैः इव—त्रिषु पुष्करेषु स्नानम् इति त्रिपुष्करस्नानम् तदवसरे विलग्नानि = संजुष्टानि यानि विसकाण्डानि कमलतन्तूनि तान्येव कुण्डलानि तैरिव । भक्त्या=श्रद्धया । आराधित-त्रिपुरुषरचितरक्षासूक्ष्मरेखानुकारिभिः—त्रयः पुरुषाः यत्रेति समुदायिन एव समुदाय इति दर्शने बहुवचनम् । आराधितास्त्रिपुरुषा यैस्तादृशः = सेवितहरिहरब्रह्मभिः रचि-तानि = निर्मितानि रक्षार्थं सूक्ष्मरेखानुकारीणि तादृशैः = रचितसूक्ष्मरेखातुल्यैः । सित-यज्ञोपवीततन्तुभिः सितानि = शुभ्राणि यज्ञोपवीततन्तूनि = ब्रह्मसूत्राणि, तैः । भूषित-देहः = शोभितशरीरः । शमी = शमोऽस्यास्तीति शमी = शान्तः । विद्रुमाभाधरः — विद्रुमम् = प्रवालम् तस्याभा = कान्तिः तत्तुल्यौ—अधरौ = ओष्ठौ यस्य सः । प्रजापः-प्रजां पातीति, क्रतुक्रद्भुचो प्रजात्राणमिति । विप्रजापः—विप्राञ्जापयति = जपं प्रापय-तीति सः । सुतपाः—सुष्ठु तपोव्रतं यस्य सः = शोभनतपोव्रतः । कुतपश्लाघी—कौ = पृथिव्याम् तपसा लोकोत्तरेण धर्मेण श्लाघी = श्लाघनशीलः । 'तपश्चान्द्रायणादौ स्याद् धर्मे लोकोत्तरेऽपि च' इति विश्वः । यदा कुतपो दर्भस्तदा कुतपश्लाघीत्यत्र विसर्गाभावेऽपि श्रुत्या विरोध-प्रतीतिः । विकलत्रः = विगतकलत्रः सकलत्रः—सकलम् = निखिलम् त्रायत इति = सर्वरक्षकः । यमान्तानुसारी यमाः = अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा-स्तेषामन्तः पारमनुसरतीति सः । सकुशलः—कुशान् = दर्भान् लान्तीति गृह्णन्ति ये ते कुशलाः = दक्षाः, तैः सह । अत्र 'च' इति सर्वत्र विरोधे । विकचनवनलिनशङ्कया—विकचस्य = विकसितस्य नवनलिनस्य = नूतनकमलस्य शङ्का, तया । मिलन्मुक्तमुग्ध-मधुपमण्डलेनेव—मिलितामुक्तम्=मिलन्मुक्तम्, मुग्धानाम्=आनन्दमग्नानाम्, मधुपानाम् = भ्रमराणाम् यन्मण्डलम् = समूहम् तादृशेनेव । रुद्राक्षवलयेन = रुद्राक्षजपमालाकरेण । विराजितवामपाणिपल्लवः—पाणिरेव पल्लवः पाणिपल्लवः विराजितः = शोभितः वाम-पाणिपल्लवो यस्य सः = भूषितवामपाणिदलः । स्मरापस्मारेण = कामव्याधिना । स्मृतः न = स्मृतिपथेनैव नीतः । कृतघ्नतया—कृतम् = उपकारम् हन्तीति कृतघ्नः, तस्य भावः कृतघ्नता तया । नाङ्गीकृतः = नाधिकृतः । कितववृत्तेन = धूर्त्ताचारेण नालोकितः = नैव प्रकाशितः । कलिना = कलिकालेन । नाकलितः = नैव गणितः । विरुद्धक्रियाभिः

= विपरीतकार्यैः । न निरुद्धः = नैव पतितः । अतितेजस्तया = महत्तेजस्वितया । द्वितीयः = अपरः परब्रह्मणः इव = परमेश्वर इव । सूर्यचन्द्रमसोः = रविचन्द्रयोः । तृतोयः इव = तदधिक इव । गार्हपत्याहवनीयदक्षिणाग्नीनाम् = गार्हपत्यादि वह्नीनाम् । चतुर्थं इवं = तदधिक इव । दिक्पतीनाम् = चतुर्णाम् दिगीशानाम् अपरः पञ्चम इव । महाभूताधिदेवतानाम् = पञ्चसंख्यकमहाभूतस्वामिनाम् । षष्ठः = अपर इव । मूर्त्तर्तूनाम् = साक्षातषड्ऋतूणाम् सप्तम इव = अतिरिक्त इव । सप्तर्षीणाम् = मरीच्यादि सप्त-ऋषीणाम् । अष्टम इव = अतिरिक्त इव । वसूनाम् = अष्टवसूनाम् नवमः इव = विशिष्ट इव । ग्रहाणाम् = सूर्यादिनवग्रहाणाम् । दशमः इव = अन्य इव । अनवरतहृदयकमल-कर्णिकान्तःस्फुरज्ज्योतीरूपपरब्रह्मकान्तिकलापेनेव अनवरतम् = निरन्तरम् हृदयरूपेण-कमलकर्णिकेन = हृत्कमलकर्षोणान्तःस्फुरत् = मध्ये विकरद् ज्योतिरूपम् परब्रह्मकान्ति-कलापम् तादृशेनेव । बहिः = बाह्ये निःसरता = निर्गच्छता । अच्छभस्मानुलेपेन = स्वच्छभस्मधारणेन । कनकगिरिः इव = स्वर्णपर्वत इव । विरलचन्द्रातपेन—विरलेन = विलक्षणेन चन्द्रातपेन = विधुकिरणेन चन्द्रिकयेव । आपाण्डुरितदेहः—अपाण्डुरितः = पाण्डु (गौर) वर्णयुतः देहः = शरीरम् यस्य तादृशः । दीर्घसरसविसकाण्डपाण्डुना—दीर्घेण = विशालेन सरसेन = रसयुक्तेन विसकाण्डसमेन = कमलतन्तुसमेन पाण्डुना = शुभ्रवर्णेन । प्रचण्डपवनेन = तीव्रवायुना । ऊर्ध्वम् = उपरि उल्लासितेन = शोभमानेन । जटाजूटबन्धनपटप्रान्तपल्लवेन—जटाजूटस्य = सटासमूहस्य बन्धनम्, तस्य यत् पट-प्रान्तम् = वस्त्रान्तम्, तदेव पल्लवम् = किसलयस्तेन । शिरःपतद्गगनगरुद्गङ्गाम्बु-धाराहारिणः—शिरसि पतत्या गरुद्गङ्गायाः यदम्बु तस्य धारां हरतीति = मूर्ध्निपत-दाकाशगङ्गाप्रवाहधारिणः । हरस्य = शिवस्य । स्वामिभक्त्या = प्रभु-प्रेम्णा । कृतानु-करणचर्यामिव = विहितानुसरणमिव । आकलयन् = कुर्वन् । महसि = तेजस्वितायाम्, कोमले = मृदुले । वयसि = अवस्थायाम्, तरणि = यूनि । तपसि = तपश्चरणे, वृद्धे = वृद्ध-भावे । यशसि = कीर्तौ, प्रथुनि = विशाले । श्रेयसि = कल्याणे, गुरुणि = महति । वर्तमानः = अवस्थितः । सदाचाराणाम् = उत्तमाचरणानाम्, सदः = सदनम्, श्रुतीनाम् = वेदानाम्, आश्रयः = आश्रयस्थानम् । महिम्नः = गरिम्नः, मही = महान् । कृपारसस्य = दयालुतायाः, प्रपा = निर्झरः क्षमाङ्कुराणाम् = क्षमोत्पत्तीनाम्, क्षेत्रम् = स्थानम् । मैत्रीसुधायाः = सख्यामृतस्य, पात्रम् = भाजनम् । प्रसादस्य = प्रसन्नतायाः प्रासादः = भवनम् । साधुतायाः = सज्जनतायाः सिन्धुः = सागरः ।

टिप्पणी—अग्नि—गार्हपत्याग्नि ग्रहस्थपुरुषों के यहाँ भोजनादि पक्वान्नों में आहवनीय यज्ञकार्य में तथा दक्षिणाग्नि अन्तिम संस्कार में काम आती है । सप्तर्षि—मरीचि-अत्रि-अङ्गिरा-पुलस्त्य । यम—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह ।

हिन्दी—ऐसे ही अवसर पर कोई मुनि तरुण सूर्यमण्डल से अवतरित हुए जिनका स्वरूप कान्तिमान् तथा स्वर दयालु था । वह विकसित शुभ्रकमल से मेरुपर्वत के शिखर के समान, परिभ्रमण करने के कारण क्षीण कान्ति वाले नक्षत्र जैसे सुन्दर जटाजूट को धारण किये हुए, माथे पर अत्यन्त गहरे चन्दन रस का त्रिपुण्ड लगाये हुए

थे मानो हिमालय पर्वत की शिला पर त्रिस्रोतस गंगा बह रही हो, विकसित कमल के पराग के समान गौर शरीर की कान्तिरूपी लहरों में वह तैर-से रहे थे। करुणरस-पूर्ण वक्षःस्थलरूपी सरोवर के अन्दर तैरती हुई छोटे-छोटे सुन्दर हंसों की पंक्तियों के समान विशाल स्फटिकाक्षमाला को धारण किये हुए, कुशायें लिए और कौपीन वस्त्र पहने थे। हाथ कुशाओं एवं कमण्डलु से शोभित थे। जिस प्रकार विविध शाखाओं एवं जटाओं से युक्त वृक्ष होते हैं उसी प्रकार वह विविध कठ—बह्वृचादि वैदिक शाखाओं, जटा एवं वल्कलवस्त्रों को धारण किये थे। मेखलायुक्त पर्वत के समान मेखला (करधनी) व रुद्राक्षमाला से युक्त, नक्षत्रसमूह जैसे—मृगशिर कृत्तिका-अश्लेषा-ज्येष्ठा-पूर्वाषाढा व उत्तराषाढा से युक्त होते हैं वैसे ही वह मृगकृत्तिका (मृग-चर्म), आश्लेष (धारण किये हुए) श्रेष्ठ आषाढ़ (व्रतदण्ड) धारण किये हुए थे। ससम्मद (आनन्दयुक्त) होने पर भी वह अभिमानी नहीं, अपितु नम्र आकार वाले थे। वह अक्रीड (वासनादि रहित) चक्री (भगवान् विष्णु) के इद्रिक (स्तुतिकर्ता), रोमश (लम्वे बालों वाले) विप्रबालकों तथा मुनियों से घिरे रहने वाले, वृद्धजनों की सेवा करने वाले तथा जनता के उत्पीडन को पसन्द न करने वाले थे। वह शिवजी को प्रसन्न किये भी संसार के आश्रित नहीं थे, प्रवुद्ध (आत्मज्ञानी) तथा किसी बन्धन में नहीं थे। श्रमण (आत्मज्ञानार्थ समाधि आदि विशेष परिश्रम करने वाले) होकर भी मृगचर्म धारण किये हुए, नवधा (नौ प्रकार के) ग्रहों के समान लोगों के वधात्मक (किसी प्रकार वध की इच्छा करने वाले) नहीं थे धनुर्धारी पुरुषों के समान मिथ्या प्रतिज्ञा वाले नहीं थे, जिस प्रकार दंस (डांस-मच्छर) नदाम्भस्थानक प्रिय (नदी के जलस्थान को पसन्द करने वाला) होता है उसी प्रकार वह पाखंडी लोगों के स्थान को पसन्द नहीं करते थे। जिस प्रकार पन्नग (सांप) नाकु-लीन (बांबी में छिपा रहने वाला) होता है वैसे ही वह अकुलीन (नीच वंश के) नहीं थे। सरस्वती के निवास वाले मुखरूपी मन्दिर की वन्दनमाला के समान सर्वप्रथम उगने वाली मूँछों की रोमपंक्ति से श्यामल ओष्ठ भाग वाले, कलिकाल के कलङ्क की शङ्का से शरण में पहुँचे हुए तीन पवित्र युगों के समान दुर्बल होकर भी शरीर से संलग्न त्रिपुष्कर के स्नानावसर पर लगे हुए सरस कमल तन्तु के कुण्डल जैसे; भक्ति से आराधित त्रिपुरुष (ब्रह्मा-विष्णु-महेश) रचित रक्षा-सूत्र की रेखाओं के समान शुभ्र यज्ञोपवीत के सूत्र (डोरे) की लड़ियों से शोभित शरीर वाले, शमी (इन्द्रियों को वश में रखने वाले) विद्रुम (प्रवाल) की कान्ति के समान अधरों वाले, प्रजाप (प्रजा का पालन करने वाले) और विप्रजाप (ब्राह्मणों द्वारा जप कराने वाले), सुतपा (अच्छे तपस्वी) तथा कुतपश्लाघी (पृथ्वी पर अलौकिक धर्म से प्रशंसनीय) विकलत्र (स्त्रीरहित) होकर भी सकलत्र (सभी लोगों की रक्षा करने वाले) अहिंसादि यमों के पार अनुसरण करने वाले) तथा कुशलाने में चतुर, विकसित नूतन कमल की शङ्का से आये हुए आनन्द-मग्न मधुप-मण्डल के समान रुद्राक्षवलय से उनका बायाँ हाथ शोभित हो रहा था। कामरूप अपस्मार (मृगी) रोग से वह पीड़ित नहीं किये गये थे, कृतघ्नता के द्वारा

कभी अङ्गीकृत नहीं हुए थे। धूर्त्तवृत्त के द्वारा वह देखे तक नहीं गये थे, कलिकाल ने उन्हें गिना तक नहीं था, विपरीत क्रियाओं द्वारा कभी रोके नहीं गये थे। अति तेजस्विता से दूसरे परब्रह्म के समान, सूर्य और चन्द्रमा से भी बढ़ कर प्रकाशमान, गार्हपत्यादि तीनों अग्नियों से भिन्न चौथी अग्नि, चतुर्दिक्पालों से बढ़ कर पाँचवें दिक्पाल, पाँच से भिन्न छठे महाभूताधिदेवता, छः वसन्तादि ऋतुओं से भिन्न सातवीं ऋतु, सप्तर्षियों से बढ़ कर आठवें ऋषि, अष्ट वसुओं से अतिरिक्त नवम वसु और नवग्रहों (सूर्यादि) से विपरीत दशमग्रह जैसे वह थे। निरन्तर हृदयरूपी कमलकोष के अन्दर छिटकती हुई ज्योतिरूप परब्रह्म की कान्तिकलाप के समान बाहर निकलते हुए स्वच्छ भस्म के अनुलेप से 'हेमकूट' के समान विरलचन्द्र-किरणों से पाण्डु-शरीर वाले, लम्बे व सरस कमलतन्तु के समान शुभ्र, प्रचण्ड पवन से ऊपर उठे हुए जटाजूट को बाँधने वाले वस्त्र के छोर रूपी पल्लव से शिर पर गिरती हुई आकाशगंगा की धारा के समान मनोरम शिवजी की स्वामिभक्ति से व्रतचर्या का अनुकरण-सा करते हुए, तेजस्विता में कोमल, अवस्था में तरुण, तपस्या में वृद्ध, कीर्ति में पृथु (महान्) कल्याणकार्यों में श्रेष्ठता में स्थित, सदाचरण का सदन, वेदों का आश्रय, महिमा में महान्, कृपारूपी रस के झरने, क्षमारूपी अङ्कुरों के क्षेत्र, मित्रतारूपी सुधा के पात्र, प्रसन्नता के प्रासाद तथा साधुता के सागर थे।

राजा तु दूरत एव तमायान्तमवलोक्य विस्मयविस्फारितविलोचनो हर्षवर्षविनिःसरद्बहलपुलकोत्तम्भितोत्तरीयवासाः ससंभ्रममासनादुत्थाय कियन्त्यपि पदान्यभिमुखं समेत्य क्षितितलमिलन्मौलिमण्डलः प्रणाममकरोत्।

सुधा—राजेति। राजा तु = नृपस्तु। दूरत एव = दूरादेव। तम्=मुनिम् आयान्तम्= आगच्छन्तम्। अवलोक्य = दृष्ट्वा। विस्मयस्फारितविलोचनः—विस्मयेन = आश्चर्येणा स्फारिते = विशाले विलोचने = नयने यस्य सः। हर्षवर्षविनिःसरद् बहलपुलकोत्तम्भितोत्तरीयवासाः—हर्षस्य वर्षम् हर्षवर्षम्, तेन विनिःसरन्ति = निर्गच्छन्ति बहलपुलकेन = बहुरोमाञ्चेन उत्तम्भितानि = उत्थितानि उत्तरीयवासांसि = उत्तरीयवस्त्राणि यस्य तादृशः। ससम्भ्रमासनात्—ससम्भ्रमम = सभ्रमम् आसनात् = स्थानात्। उत्थाय = ऊर्ध्वं स्थित्वा। कियन्ति अपि पदानि = कतिचित् पदानि। अभिमुखम् = सम्मुखम्। समेत्य = आगत्य। क्षितितलमिलन्मौलिमण्डलः—क्षििततले = भूतले मिलत् = लग्नीभवत्, मौलिमण्डलम् = शिरोमण्डलम् यस्य, तादृशः = भूतललग्नशिरोमण्डलः। प्रणामम् अकरोत् = प्रणनामः।

हिन्दी—और दूर से ही उन्हें (मुनि को) आते देखकर विस्मय से विशाल नेत्रों वाले, हर्ष की वर्षा के कारण निकलते हुए अति पुलक से ऊपर उठे हुए वस्त्रों वाले राजा ने सहसा आसन से उठकर सम्मुख कुछ कदम चलकर पृथ्वीतल तक शिर झुकाकर प्रणाम किया।

मुनिरपि सदारुणान्तयापि सौम्यया दृशा विद्रुमप्रभाभिन्नया सुधासिन्धुतरङ्गमालयेव प्लावयन्नाशिषमवादीत्।

सुधा—मुनिरिति । मुनिः अपि=साधुरपि । सदारुणान्तया—सदा=सर्वदा अरुणान्तया =रक्तप्रान्तया । सौम्यया=सुन्दरया । दृशा=दृष्ट्या, रक्तान्तनेत्रत्वं शुभलक्षणमिति । विद्रुम-प्रभामिन्नया=प्रवालकान्तिभिन्नया । सुधासिन्धुतरङ्गमालया इव—सुधायाः सिन्धुः, तस्य या तरङ्गमाला तया—अमृतसागरवीचिपंक्त्या । प्लावयन्=अप्लावयन् इव । आशिषम्=आशीर्वादम्, अवादीत्=अकथयत् ।

हिन्दी—मुनि भी सदा अरुण-प्रान्त वाली होने पर भी सौम्य दृष्टि से विद्रुमप्रभा से निकलने वाली सुधा-सागर की तरङ्गमाला में मानो प्लावित (सरावोर) करते हुए आशीर्वाद बोले ।

'सिन्दूरस्पृहया स्पृशन्ति करिणां कुम्भस्थमाधोरणा
भिल्ली पल्लवशङ्कया विचिनुते सान्द्रद्रुमद्रोणिषु ।
कान्ताः कुङ्कुमकाङ्क्षया करतले मृद्नन्ति लग्नं च यत्-
तत्तेजः प्रथमोद्भवं भ्रमकरं सौरं चिरं पातु वः' ॥ ७ ॥

अन्वयः—यत् प्रथमोद्भवम्, भ्रमकरम्, करिणाम् कुम्भस्थम् सौरम्, तेजः आधोरणाः सिन्दूरस्पृहया स्पृशन्ति भिल्ली, सान्द्रद्रुमद्रोणिषु पल्लवशङ्कया विचिनुते, च कान्ताः करतले लग्नम् कुङ्कुमकाङ्क्षया मृद्नन्ति, तत् वः चिरम् पातु ॥ ७ ॥

सुधा—सिन्दूरेति । यत् प्रथमोद्भवम्=प्रथमजातम् । भ्रमकरम्=भ्रान्तिकरम् । करिणाम्=गजानाम् । कुम्भस्थलम्=कुम्भस्थले पतितम् सौरम्—सूरस्येदम्=रवेः । तेजः=धामः । आधोरणाः=हस्तिपकाः सिन्दूरस्पृहया=सिन्दूरेच्छया । स्पृशन्ति=स्पर्शं कुर्वन्ति । भिल्ली=किरातस्त्री । सान्द्रद्रुमद्रोणिषु—सान्द्रेषु=सघनेषु द्रुमद्रोणिषु=वृक्ष-द्रोणिषु । पल्लवशङ्कया—पल्लवानां शङ्का, तया दल-भ्रान्त्या । विचिनुते=चयनं करोति । च=तथा कान्ताः=रामाः करतले=हस्ततले । लग्नम्=संलग्नम् । कुङ्कुम-काङ्क्षया=कुङ्कुमेच्छया । मृद्नन्ति । तत्=उपर्युक्तम् तेजः । वः=युष्मान् । चिरम्=बहुकालम् । पातु=अवत्विति । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ७ ॥

हिन्दी—सर्वप्रथम निकला हुआ भ्रान्तिजनक हाथियों के कुम्भस्थल पर पड़ा हुआ सौर तेज फीलवान् (हस्तिपक) सिन्दूर की स्पृहा (कामना) से छू रहे हैं, किरात-पत्नी सघनवृक्षों के आलवालों में पल्लवों की शङ्का से चयन कर रही है तथा रमणियाँ करतल पर पड़ते हुए उस सौर तेज को कुङ्कुम की अभिलाषा से पोछ रही हैं । वही सौर तेज आपकी चिरकाल तक रक्षा करे ॥ ७ ॥

दत्ताशीश्च प्रणामपर्यस्तकर्णपूरपल्लवपरामृष्टपादपांसुरवनिपालेन स्वयमादरेणोपनीतमुच्चकञ्चनासनमध्यतिष्ठत् ।

सुधा—दत्तेति । च=तथा । दत्ताशीः=प्रदत्ताशीर्वादः । प्रणामपर्यस्तकर्णपूर-पल्लवपरामृष्टपादपांसुः—प्रणामपर्यस्ते=प्रणामावसरे कर्णपूरपल्लवाभ्याम् परामृष्टम् पादपांसुर्यस्य सः=प्रणामावसरे कर्णपूरकिसलयोज्झितचरणरेणुः मुनिः । अवनिपालेन =नृपेण, स्वयम्=आत्मनः । आदरेण=सम्मानेन । उपनीतम्=आनीतम् । उच्चकम्=अत्युच्चम् । आसनम्=आसनस्थानम् । अध्यतिष्ठत्=अध्यारोहत् ।

हिन्दी—आशीर्वाद दिये जाने पर प्रणाम करने के अवसर पर कर्णपूरपल्लवों से पैरों की पुंछी हुई धूल वाले मुनि अवनिपाल के द्वारा स्वयं आदर के साथ दिये गये उच्च आसन पर बैठ गये।

अथ नरपतिदत्ते प्राप्तसौन्दर्यनिर्य-
न्मणिमहसि स तस्मिन्नासने संनिविष्टः।
रुचिररुचि सुमेरोः संगतः शृङ्गभागे
कमल इव कान्ति काञ्चिदुच्चैर्बभार ॥ ८ ॥

अन्वयः—अथ नरपतिदत्ते प्राप्तसौन्दर्यनिर्यन्मणिमहसि तस्मिन् आसने सन्निविष्टः सः रुचिररुचिसुमेरो शृङ्गभागे सङ्गतः कमल इव कांचित् कान्तिम् उच्चैः बभार ॥ ८ ॥

सुधा—अथेति। अथ = अनन्तरम्। नरपतिदत्ते–नरपतिना=नृपेण दत्ते = समर्पिते। प्राप्तसौन्दर्यनिर्यन्मणिमहसि—प्राप्तसौन्दर्यम् = रम्यम् निर्यन् = निःसरन् मणीनाम् महः = तेजो यस्मात् तादृशे तस्मिन् आसने = तत्रासने। सन्निविष्टः = आसीनः सः = मुनिः रुचिररुचिसुमेरोः—रुचिरम् = सुन्दरम् रुचिः = कान्तिः, यस्य तस्य सुमेरोः = शृङ्ग-भागे = शिखरे। सङ्गतः = सम्यक् प्रयातः कमल इव = ब्रह्मेव। कांचिद् = कामपि कान्तिम् = दीप्तिम् उच्चैः बभार = धारयामास। मालिनीवृत्तम् ॥ ८ ॥

हिन्दी—तपश्चात् राजा के द्वारा दिये गये रमणीक निकलते हुए मणियों जैसे तेज वाले वह मुनि उस आसन पर बैठे हुए सुन्दर कान्ति वाले सुमेरुपर्वत की चोटी पर बैठे ब्रह्मा जी के समान अलौकिक कान्ति को धारण कर रहे थे ॥ ८ ॥

दत्त्वार्घमर्हणीयाय तस्मै सोऽपि महीपतिः।
स्वहस्तधौतयोर्भक्त्या ववन्दे पादयोर्जलम् ॥ ९ ॥

अन्वयः—अर्हणीयाय तस्मै अर्घम् दत्वा सः महीपतिः अपि भक्त्या स्वहस्तधौतयोः पादयोः जलम् ववन्दे ॥ ९ ॥

सुधा—दत्वेति। अर्हणीयाय = पूजनीयाय। तस्मै = मुनये। अर्घम् दत्वा = अर्घदानं कृत्वा, सः = असौ। महीपतिः = नृपः। भक्त्या = श्रद्धया। स्वहस्तधौतयोः = आत्मकर-क्षालितयोः। पादयोः=चरणयोः। जलम्=नीरम्। ववन्दे=प्रणनाम। अनुष्टुप्वृत्तम् ॥९॥

हिन्दी—पूजनीय उन मुनि को अर्घ देकर उस राजा ने भक्ति से अपने हाथों से धोये चरणों के जल को प्रणाम किया ॥ ९ ॥

कृत्वातिथ्यक्रियां सम्यग्विनयं च प्रचाशयम्।
तस्याग्रे भूतलं भेजे नोपविष्टः स विष्टरे ॥ १० ॥

अन्वयः—सः सम्यक् आतिथ्यक्रियाम् कृत्वा च विनयम् प्रचाशयम् तस्य अग्रे भूत-लम् भेजे, विष्टरे न उपविष्टः ॥ १० ॥

सुधा—कृत्वेति। सः = नृपः। सम्यक् = सुष्ठु। आतिथ्यक्रियाम्=अतिथिसत्कारम्। कृत्वा = विधाय। च = तथा। विनयम् = नम्रताम्। प्रचाशयम् = प्रकटयन्। तस्य =

मुनेः । अग्रे = समक्षे । भूतलम् = पृथ्वीतलम् । भेजे = सिषेवे । विष्टरे = आसने । नोपविष्टः = नाधिरूढो जातः । अनुष्टुप्वृत्तम् ॥ १० ॥

हिन्दी—वह (राजा) भली प्रकार आतिथ्य सत्कार कर और विनय प्रकट करते हुए उन (मुनि) के समक्ष भूमि पर बैठ गये, आसन पर नहीं बैठे ॥ १० ॥

ललाटपट्टविन्यस्तपाणिसम्पुटकुड्मलः ।
नीचैरुवाच वाचं च चञ्चद्दशनदीधितिः ॥ ११ ॥

अन्वयः—च ललाटपट्टविन्यस्तपाणिसम्पुटकुड्मलः चञ्चद्दशनदीधितिः (नृपः) नीचैः वाचम् उवाच ॥ ११ ॥

सुधा—ललाटपट्टेति । च = अथ च । ललाटपट्टविन्यस्तपाणिसंपुटकुड्मलः—पाणिसम्पुटम् = करयुग्मम् एव कुड्मलम् = कमलम् ललाटपट्टे = भालपट्टे विन्यस्तम् = धृतम् पाणिसम्पुटकुड्मलम् येन सः । चञ्चद्दशनदीधितिः = चञ्चद्दन्तकान्तिः नृपः । नीचैः = मन्दम् । वाचम् = वाणीम् । उवाच = अवोचत् । अनुष्टुब्वृत्तम् ॥ ११ ॥

हिन्दी—तदनन्तर माथे पर कमल के समान कोमल दोनों जुड़े हाथों को रखे हुए चमचमाती दन्त कान्ति वाले राजा धीमे स्वर से बोले ॥ ११ ॥

'अद्य मे सुबहोः कालाच्छ्लाघनीयमभूदिदम् ।
त्वत्पादपद्मसंपर्शसम्पन्नानुग्रहं गृहम् ॥ १२ ॥

अन्वयः—अद्य त्वत्पादपद्मसंस्पर्शसम्पन्नानुग्रहम् इदम् ये गृहम् सुबहोः कालात् श्लाघनीयम् अभूत् ॥ १२ ॥

सुधा—अद्य म इति । अद्य = अस्मिन् दिवसे । त्वत्पादपद्मसंस्पर्शसम्पन्नानुग्रहम्—त्वत् = भवतः ये पादपद्मनी = चरणकमले, तयोः संस्पर्शः = स्पर्शः, तस्मात् सम्पन्नानुग्रहम् = कृपायुक्तम् । इदम् = एतत् मे = मम । गृहम् = भवनम् । सुबहोः कालात् = चिरकालात् । श्लाघनीयम् = प्रशंसनीयम् । अभूत् = अभवत् । अनुष्टुब्वृत्तम् ॥ १२ ॥

हिन्दी—आज आप के चरण कमलों के स्पर्शानुग्रह से सम्पन्न यह मेरा घर चिरकाल (बहुत दिनों) के बाद प्रशंसनीय हुआ है ॥ १२ ॥

यतः समस्तमुनिमनुजवृन्दारकवृन्दवन्दनीयपादारविन्दाः, परमानन्दपरिस्पन्दभाजः पांसूनिव पार्थिवान्, तृणमिव स्त्रैणम्, निधनमिव धनम्, रोगानिव भोगान्, राजयक्ष्माणमिव लक्ष्मीम्, आकलयन्तः सकलसंसारसुखविमुखाः कस्य भवादृशा भवनमवतरन्ति ।

सुधा—यत इति । यतः = यस्मात् कारणात् । समस्तमुनिमनुजवृन्दारकवृन्दवन्दनीयपादारविन्दाः—मुनीनाम् मनुजानाञ्च वृन्दारकवृन्दम् तेन वन्दनीयाः पादारविन्दाः येषाः ते = निखिलमुनिमानवकुलपूजनीयचरणकमलाः । परमानन्दपरिस्पन्दभाजः = ब्रह्मानन्दसुखभाजः । पार्थिवान् = नृपान् । पांसून् इव = रजःकणानीव । स्त्रैणम् = स्त्रीसुखम्, तृणम् इव = तुच्छमिव । धनम् = वित्तम्, निधनम् इव = मृत्युरिव । भोगान् = सुखानि, रोगान् इव = आमयानीव । लक्ष्मीम् = श्रियम् । राजयक्ष्माणम् इव = राजरोग-

मिव । आकलयन्तः = गणयन्तः, सकलसंसारसुखविमुखाः—संसारस्य सुखम् संसारसुखम्, सकलेन संसारसुखेन विमुखाः=निखिललोकसुखविमुक्ताः । भवादृशाः=भवत्सदृशाः मुनयः । कस्य भवनमवतरन्तिं = न कस्यापि गृहमागच्छन्ति ।

हिन्दी—क्योंकि सम्पूर्ण मुनिजनों तथा मनुष्यों द्वारा वन्दनीय चरण कमल वाले, परमानन्द के भाजन, राजाओं को धूल के समान, स्त्री सुख को तृणवत्, धन को मृत्यु के समान, भोगों को रोगों के समान तथा लक्ष्मी को राजयक्ष्मा के समान गिनते हुए समस्त संसार के सुखों से विमुख आप जैसे (महापुरुष) किसके घर आते हैं ?

तदहमद्यानवद्यस्य भवन्नभूवं भूम्नो यशोराशेर्भाजनम्, आरूढः पदं श्लाघार्हम्, आगतो गुणिषु गौरवम्, उपलब्धवान्धन्यताम्, सम्पन्नः पुण्यवतामग्रणी, जातो जनस्य वन्दनीयः ।

सुधा—तदहमिति । भवन्=श्रीमन् ! तत् = अतः । अहम् = भीमनृपः, अद्य=अस्मिन् दिवसे । अनवद्यस्य = अनिन्द्यस्य । भूम्नः = महतः । यशोराशेः = कीर्तिसमूहस्य । भाजनम् = पात्रम् । अभूवम् = बभूव । श्लाघार्हम् = प्रशंसायोग्यम् । पदम् = स्थानम् । आरूढः = आपन्नः, गुणिषु = गुणवत्सु । गौरवम् = गरिमास्थानम् । आगतः = आयातः, धन्यताम् = सफलताम् । उपलब्धवान् = प्राप्तवान् । पुण्यवताम् = पुण्यभाजाम् । अग्रणीः = अग्रेभवः । सम्पन्नः= सञ्जातः । जनस्य = लोकस्य । वन्दनीयः = वन्दनायोग्यः जातः = भूतः ।

हिन्दी—श्रीमन् ! अतः आज मैं अनिन्दनीय विशाल कीर्तिराशि का भाजक बन गया, प्रशंसनीय पदपर आरूढ हो गया, गुणवान् पुरुषों में गौरव को पहुँच गया, धन्यता को प्राप्त हो गया, पुण्यवानों में अग्रणी बन गया तथा मनुष्यों में वन्दनीय हो गया हूँ ।

तदित्थमनेकप्रकारोपकारिणां किं ब्रवीमि, किंकरोऽस्मीति पौनरुक्त्यं सर्वस्वामिनाम् । केनार्थित्वमित्यनुचितादरो निःस्पृहाणाम् । इदं मे सर्वस्वमात्मीक्रियतामिति स्वल्पोपचारः स्वाधीनाष्टगुणैश्वर्याणां भवताम् । तथापि प्रणयेन भक्त्या च मुखरितः किञ्चिद्विज्ञापयामि ।

सुधा—तदित्थमिति । तत् = अतः । इत्थम् = अनेन प्रकारेण । अनेकप्रकारोपकारिणाम् = बहुधोपकारकृताम् भवताम् । किम् ब्रवीमि = किं कथयामि, किङ्करः अस्मि = अनुचरोऽस्मि, इति = एवम् । पौनरुक्त्यम् = पुनरुक्तत्वम् । सर्वस्वामिनाम् = निखिलप्रभूणाम् । केन = केन धनेन, अर्थित्वम् = धनार्थता । निःस्पृहाणाम् = त्यागिनाम्, इति = एवम् । आदरः = सम्मानम् । अनुचितः = अनुपयुक्तः । मे = मम, इदम् = एतत् । सर्वस्वम् = सम्पूर्णम् । आत्मीक्रियताम् = स्वीक्रियताम्, इति = एवम् । स्वाधीनाष्टगुणैश्वर्याणाम्—स्वाधीनानि = स्वायत्तीकृतानि, अष्टगुणैश्वर्याणि यैस्तेषाम् । भवताम् = श्रीमताम् । तथापि = एतत्कृतेऽपि । प्रणयेन = प्रेम्णा । भक्त्या च = श्रद्धया च, मुखरितः = वक्तुमुद्यतः (अहम्) किञ्चिद् = किमपि । विज्ञापयामि = निवेदयामि ।

हिन्दी—इस प्रकार अनेकों तरह से उपकार करने वाले आपसे क्या कहूँ ! 'किंकर हूँ' यह कहना पुनरुक्ति दोष है क्योंकि आप सर्वस्वामी हैं । किससे आपका मतलब है

यह कहना त्यागी (स्पृहारहित) पुरुषों का अनुचित आदर करना है । 'मेरा यह सर्वस्व आप स्वीकार करें' यह कहना अपने वश में अष्टसिद्धियों को रखने वाले आप जैसे महा-पुरुषों का मामूली सत्कार है तथापि प्रेम और भक्ति से मुखरित (वाचाल) मैं कुछ निवेदन कर रहा हूँ ।

इदं राज्यमियं लक्ष्मीरिमे दारा इमे गृहाः ।
एते वयं विधेयाः वः कथ्यतां यदिहेप्सितम् ॥ १३ ॥

अन्वयः—इदम् राज्यम्, इयम् लक्ष्मीः, इमे दाराः, इमे गृहाः, एते वयम् विधेयाः, वः यत् इह ईप्सितम् कथ्यताम् ॥ १३ ॥

सुधा—इदमिति । इदम् = एतत् । राज्यम् = राज्यवैभवम् । इयम्=एष । लक्ष्मीः= राजलक्ष्मीः, इमे = अमी । दाराः = स्त्रीजनाः । इमे = एते, गृहाः = प्रासादाः । एते = इमे । वयम् = सर्वं एव, विधेयाः = विधातुं योग्याः = सेवकाः स्मः । वः = युष्माकम्, यद् = यद् वस्तु । इह = अत्र । ईप्सितम् = अभीष्टम् (अस्तु), कथ्यताम् = उच्यताम् । अनुष्टुब्वृत्तम् ॥ १३ ॥

हिन्दी—यह राज्य, यह लक्ष्मी, ये दारायें, यह भवन (सब आपके हैं) और यह हमलोग आपके सेवक हैं, आपको जो कुछ यहाँ अभीष्ट हो वह कहें ॥ १३ ॥

मुनिरप्यवनीशस्य विनयमभिनन्द्य स्निग्धमुग्धस्मितसुधाधवलिताधरपल्लवमब्रवीत्—'उचितमेतद्भवादृशां वक्तुं कर्तुं वा' ।

सुधा—मुनिरपीति । मुनिः अपि = तापसोऽपि । अवनीशस्य = अवनिपालस्य. विनयम् = नम्रताम् । अभिनन्द्य = प्रशंस्य । स्निग्धमुग्धस्मितसुधाधवलिताधरपल्लवम्— स्निग्धम् = स्नेहपूर्णम्, मुग्धम् = मोहपूर्णम्, स्मितम्=मृदु हसितम् च तदेव सुधा=अमृतम्, तया धवलितम् यद् अधरपल्लवम् तत् । भवादृशाम् = भवत्सदृशानाम् । वक्तुम् = कथयितुम् । कर्तुम् वा = विधातुं वा । उचितम् = उपयुक्तमिति ।

हिन्दी—मुनि भी राजा को विनय की प्रशंसा करके, स्नेहपूर्ण मुग्धमन्द-मुस्कान रूपी सुधा से धवलित अधरपल्लव को शुभ्र बनाते हुए बोले—आप जैसे लोगों का यह कहना या करना उचित है ।

उपकर्तुं प्रियं वक्तुं कर्तुं स्नेहमकृत्रिमम् ।
सज्जनानां स्वभावोऽयं केनेन्दुः शिशिरीकृतः ॥ १४ ॥

अन्वयः—उपकर्तुम्, प्रियम् वक्तुम्, अकृत्रिमम् स्नेहम् कर्तुम् अयम् सज्जनानाम् स्वभावः । इन्दुः केन शिशिरीकृतः ॥ १४ ॥

सुधा—उपकर्तुमिति । उपकर्तुम् = उपकारं विधातुम् । प्रियम् = रुचिरम्, वक्तुम् = कथयितुम् । अकृत्रिमम् = स्वाभाविकम् । स्नेहम् = प्रेम । कर्तुम् = विधातुम् । अयम् = एषः, सज्जनानाम्=सत्पुरुषाणाम्, स्वभावः=प्रकृतिः । (अन्यथा) इन्दुः = चन्द्रः केन= पुरुषेण, शिशिरीकृतः = शीतलः कृतः । अनुष्टुप्वृत्तम् ॥ १४ ॥

हिन्दी—उपकार करना, प्रिय बोलना, स्वाभाविक (अकृत्रिम) प्रेम करना सज्जनों का स्वभाव होता है। (जैसे) चन्द्रमा को शीतल किसने बनाया ॥ १४ ॥

अपि च—

यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रिया।
चित्ते वाचि क्रियायां च साधूनामेकरूपता ॥ १५ ॥

अन्वयः—यथा चित्तम् तथा वाचः, यथा वाचः तथा क्रिया। चित्ते वाचि क्रियायां च साधूनाम् एकरूपता (भवति) ॥ १५ ॥

सुधा—यथेति। यथा = यत्प्रकारकम्, चित्तम् = चेतः, तथा = तत्प्रकारकम्, क्रिया = करणम्। चित्ते = चेतसि, वाचि = वाण्याम्, क्रियायाम् = कर्मणि च। साधूनाम् = सत्पुरुषाणाम्। एकरूपता = समानता भवतीति ॥ १५ ॥

हिन्दी—और भी—जैसा चित्त हो वैसी ही वाणी हो, जैसी वाणी हो वैसी ही क्रिया हो। चित्त, वाणी तथा क्रिया सब में सज्जनों की एकरूपता होती है ॥ १५ ॥

अपिच—

विवेकः सह सम्पत्त्या विनयो विद्यया सह।
प्रभुत्वं प्रश्रयोपेतं चिह्नमेतन्महात्मनाम् ॥ १६ ॥

अन्वयः—सम्पत्त्या सह विवेकः विद्यया सह विनयः प्रश्रयोपेतम् प्रभुत्वम् एतद् महात्मनाम् चिह्नम् ॥ १६ ॥

सुधा—विवेक इति। सम्पत्त्या सह = सम्पत्तिकाले। विवेकः = सदसद्ज्ञानम्, विद्यया सह = विद्यासम्पन्ने सति। विनयः = नम्रता। प्रश्रयोपेतम् = प्रणययुक्तम्। प्रभुत्वम् = स्वामित्वम्। एतत् = इदम्। महात्मनाम् = सज्जनानाम्। चिह्नम् = लक्षणम् (भवति) ॥ १६ ॥

हिन्दी—सम्पत्ति होने पर विवेक होना, विद्या होने पर नम्र होना व प्रणययुक्त प्रभुत्व होना यह महात्माओं का लक्षण है ॥ १६ ॥

तदेतत्समस्तमस्ति त्वयि दीर्घायुषि, श्रूयतामिदानीं प्रस्तुतम्। 'अनवरतसुरासुरचक्रचूडामणिकृतचरणरजसश्चन्द्रचूडामणेर्देवस्यादेशेनागता वयम्। अवाप्स्यसि सकलजलधिजलकल्लोलमालालङ्कारभाजो भुवो भर्तुरुचितमतिमान्यं धन्यमसामान्यं कन्यारत्नम्' इति।

सुधा—तदिति। एतत् = इदम्। तत्सर्वम् = तदखिलम्। दीर्घायुषि = चिरजीविनि। त्वयि = भवति। अस्ति = वर्तते। श्रूयताम् = आकर्ण्यताम्। इदानीम् = सम्प्रति। प्रस्तुतम् = यत् प्रासङ्गिकम् (अस्ति)। वयम्। अनवरतसुरासुरचक्रचूडामणिकृतचरणरजसः—अनवरतम् = निरन्तरम् सुराणाम् = देवानाम्, असुराणाञ्च = दैत्यानाञ्च चक्रचूडामणौ = शिरोमणौ कृतम् चरणरजः = पदधूलिः येन तस्य। चन्द्रचूडामणेः—चन्द्रः चूडामणौ यस्य तस्य = चन्द्रशिरोमणेः, देवस्य = शङ्करस्य। आदेशेन = आज्ञया। आगताः = आयाताः। सकलजलधिजलकल्लोलमालालङ्कारभाजः—सकलानाम् = निखिलानाम्,

जलधीनाम् = सागराणाम् जलम् = नीरम्, तस्य कल्लोलमालाः = तरङ्गमालाः ताः एव अलङ्काराणि = भूषणानि, तानि भजतीति तस्याः भुवः = पृथिव्याः। भर्त्तुः = स्वामिनः, उचितम् = अनुकूलम्, अतिमान्यम् = बहुमाननीयम्। धन्यम् = प्रशस्यम्। असामान्यम् = असाधारणम्। कन्यारत्नम्—कन्यैव रत्नम् तत् = पुत्रीरत्नम्। अवाप्स्यसि=प्राप्स्यसि।

हिन्दी—सो यह सब चिरजीवी आप में है। सुनिये, जो इस समय प्रासंगिक है। निरन्तर देवताओं और दानवों की चूडामणि में जिनके चरणों की धूल लगी रहती है ऐसे चन्द्रचूडामणि महादेव के आदेश से हम लोग आये हैं। समस्त सागरों के जल की तरङ्ग मालारूपी भूषणों से अलङ्कृत पृथ्वी के स्वामी (सम्राट्) के अनुकूल अतिमान्य, धन्य एवम् असाधारण कन्यारत्न को (आप) प्राप्त करेंगे।

एवमुक्तवति तस्मिंस्तपस्विनि पुत्रार्थिनी कन्यालाभं मन्यमाना विप्रियं प्रियङ्गुमञ्जरी जरन्मञ्जीररवजर्जरविलक्षाक्षरया गिरा कुर्वाणेव क्रोधपरिस्पन्दं निन्दास्तुतिधर्मेण नर्मलीलाकलहमकरोत्।

सुधा—एवमिति। एवम् = इत्थम्, तस्मिन् तपस्विनि = तन्मुनौ। उक्तवति = कथयति सति। पुत्रार्थिनी = पुत्रकामिनी। प्रियङ्गुमञ्जरी = राजमहिषी, कन्यालाभम्= पुत्रीप्राप्तिम्, विप्रियम् = अप्रियम्। मन्यमाना। जरन्मञ्जीररवजर्जरविलक्षाक्षरया— जरन्मञ्जीररवम् = प्राचीननूपुरध्वनिः, तद्वद् जर्जरा विलक्षाक्षरा च तया = विस्पष्टाक्षरया गिरा = वाचा। क्रोधपरिस्पन्दम् = क्रोधाभिव्यञ्जितम्, कुर्वाणेव = विदधानेव। निन्दास्तुतिधर्मेण=निन्दाप्रशंसायुक्तेन। नर्मलीलाकलहम् = नम्रक्रीडाकलहम्, अकरोत् = चकार।

हिन्दी—इस प्रकार उस तपस्वी के कहने पर पुत्रार्थिनी प्रियङ्गुमञ्जरी ने अप्रिय कन्या-लाभ जानते हुए पुराने नूपुरों की आवाज के समान टूटी-फूटी अस्पष्ट अक्षरों वाली वाणी से क्रोध की चेष्टा करती हुई निन्दा और स्तुति के आधार से नम्रतापूर्ण कलह आरम्भ की।

'नयशोभाजन, कृतकुटीककुशास्त्रग्राहिन्नवेदनोद्गारं कृतवानसि क्वापि। सर्वदानादेयेषु प्रतिकूलवर्तिषु जलेषु रतिं कुर्वाणः पाठीनहिंसको धीवर इवोपलक्ष्यसे। कुरङ्गेषु प्रीतिं बध्नासि। कदम्बैः कुरबकैर्बहुकदलीकैः पलाशप्रायैः कुजन्मभिः सह संवससि।

सुधा—निन्दापक्षे—नयशोभाजन = हे न यशोभाजन, अयशस्विन्!, कृतकुटीक कुशास्त्रग्राहिन्! कृतानि = कृत्रिमाणि—न तु वेदवदपौरुषेयाणि। कुटीकानि = कुत्सितानि टीकानि। कुशास्त्राणि=कुत्सितानि शास्त्राणि च गृह्णासि इत्येवं शीलस्तत्सम्बुद्धौ हे कृतकुटीककुशास्त्रग्राहिन्! अवेद=यस्मात् अवेदो वेदपाठरहितस्तत्सम्बुद्धो हे अवेद! क्वापिनोद्गारम् = कुत्रापि न उद्गारम्=उच्चारणम्। कृतवान् असि =वक्तुमपि न वेत्सि इत्यर्थः। सर्वदानादेयेषु—सर्वदा = सदा। अनादेयेषु = अश्रद्धेयेषु। प्रतिकूलवर्तिषु = विपरीतवर्तिषु। जलेषु = अज्ञेषु जडेषु। रतिम् = प्रेम। कुर्वाणः = विदधानः। पाठीनहिंसकः=

पाठी नाम मत्स्यविशेषहिंसकः। धीवरः इव=धीवरजातिविशेष इव, उपलक्ष्यसे= बुध्यसे। धीवरोऽपि किलनादेयपयःसु कूलं कच्छं प्रतिवर्तमानेषु रतिं कुरुते। कुरङ्गेषु–कुत्सितः रङ्गः=वासना येषां तेषु विषयेषु प्रीतिं बध्नासि। कदम्बैः–कुत्सिताः अम्बाः येषां तैः=कुमातृकैः। कुरबकैः–कुत्सितो रवो ध्वनिः येषां तैः। बहुकदलीकैः–बहु =अति कुत्सितमलीकम्=असत्यम् येषां तैः। पलाशप्रायैः—पलम्=पिशितम् अश्नन्ति ये तेषां प्रायैः सदृशैः। कुजन्मभिः=कुत्सितं जन्म येषां तथाविधैः। सह=साकम्। (त्वम्) संवससि=निवससि।

प्रशंसापक्षे—नयशोभाजन—नयश्च शोभा च ते जनयसीति। यद् गृहमागतोऽसि तस्येति शेषः। कृतकुटीककुशास्त्रग्राहिन्! कृताकौ=पृथिव्याम् टीका=गमनं येन। कुशो दर्भ एवास्त्रं गृह्णासि अवश्यम्। एतेनाहश्य शत्रूणामपि विधातोक्तिः। वेदनोद्गारम्–वेदना =दुःखम्, तदर्थमुद्गारमुच्चारणं क्वापि नाकरोः। सर्वदानादेयेषु–सर्वदा=सर्वकालम्, नदीभवेयेषु नादेयेषु। प्रतिकूलवर्तमानेषु कूलं कूलं प्रतिवर्तमानेषु। जलेषु=वारिषु। रतिम्=रागम्। कुर्वाणः=विदधानः। पाठीनहिंसकः—पाठी=पाठवान् न हिंसकः= न हिंसाशीलः धीवरः–धिया=बुध्या वरः=श्रेष्ठः इव उपलक्ष्यसे=अवगम्यसे। एतेन तीर्थस्यास्नुदयालुर्ज्ञानी च। कुरङ्गेषु–मृगेषु प्रीतिम्=प्रेम बध्नासि। कदम्बकैः=कदम्ब-वृक्षैः। कुरबकैः=कुरबकपादपैः, बहुकदलीकैः=बहुरम्भावृक्षैः। पलाशप्रायैः=पलाश-बहुलैः। कुजन्मभिः–कौ पृथिव्याम् जन्म येषामिति कृत्वा भूरुहास्तैः सह संवससि–मुनयो हि मृगनगप्रिया। वनवासित्वादिति।

हिन्दी—(निन्दा पक्ष में) हे अयशस्विन्, कृत्रिम निन्दनीय टीकाओं से युक्त कुशास्त्र ग्रहण करने वाले, वेदपाठ रहित! कहीं भी उद्गार (भाषण) नहीं किये हो। सदैव अश्रद्धेय और प्रतिकूल चलने वाले जड़ (मूर्ख) लोगों में प्रेम करते हुए पाठीन मछलियों की शिकार करने वाले धीवर के समान जान पड़ते हो। वासनाओं में प्रेम को बढ़ाते हो। खराब (दूषित) माताओं वाले, चीत्कार करने वाले, अत्यधिक मिथ्या भाषण करने वाले, अधिकांश मांस खाने वाले तथा निन्दनीय कुलों में जन्मे हुए लागों के साथ रह रहे हो। (प्रशंसापक्ष में—) हे न्याय तथा शोभा के जनक! पृथ्वी पर आगमन किये हुए तथा कुशरूपी अस्त्र को ग्रहण करने वाले! तुम कहीं भी वेदना को उच्चारण नहीं करते हो। सदा नदियों के प्रत्येक कूल वाले जल में रति करते हुए (हंस के समान) पाठ करने वाले हिंसक नहीं हो (तुम) बुद्धि से श्रेष्ठ दिखलाई पड़ते हो। मृगों में प्रीति बढ़ाते हो। कदम्ब, कुरबक, बहुतेरे कदली तथा पलाश वृक्ष बहुल पादपों के साथ रहते हो।

किमन्यद् ब्रूमो वयम्।
यस्य ते सदाचारविरुद्धः पुष्पवत्कान्ताराग एव प्रियः।

सुधा—(निन्दापक्षे—) वयम्। अन्यत् किम् ब्रूमः=कथयामः। यस्य ते=तव सदाचारविरुद्धः=सदाचरणविपरीतः। पुष्पवत्कान्ताराग एव–पुष्पवतीषु=रजःस्वलासु कान्तासु=रमणीषु, रागः=अनुरक्तिर्यस्य सः एव। प्रियः=रुचिकरः। (प्रशंसापक्षे–)

हे सदाचरणयुक्त ! विभिः = पक्षिभिः, रुद्धः = आवृतः । पुष्पवत्कान्तारागः–पुष्पवतः कान्तारस्यागः = तरुः एव प्रियः = रुचिकरः (अस्ति) ।

हिन्दी—(निन्दापक्ष में—) हम और क्या कहें। जिन तुम्हारे लिए सदाचार से विपरीत रजस्वला स्त्रियों से अनुराग करना ही प्रिय है। (प्रशंसापक्ष में—) हम और क्या कहें। हे सदाचारवाले ! पक्षियों से घिरा हुआ फूलों से सम्पन्न वनैला वृक्ष ही तुम्हें रुचिकर है अर्थात् आप अरण्यवासी सदा स्तुत्य महात्मा हैं।

'तदलमनेन तापसहितेन कन्यावरप्रदानेन' इति ।

सुधा—तदिति । (निन्दापक्षे) अनेन = एतेन । तापेन सहितम् = तापसहितम् तेन = खेदयुक्तेन । कन्यावरप्रदानेन = पुत्रिकावरदानेन अलम् । पर्याप्तमिष्टं न पूर्यत इति यावत्, यतोऽहं पुत्रार्थिनीति ।

(प्रशंसापक्षे—) हे तापस !=अयि तपस्विन् ! तत्=अतः । कन्यावरप्रदानेन = पुत्रिकावरदानेन । हितेन = त्यक्तेन । अनेन = एतेन । अलम् = पर्याप्तम् न । नान्यत्प्रार्थनीयमित्यर्थः ।

हिन्दी—(निन्दापक्ष में—) अतः इस ताप सहित कन्या के वरदान को देना पर्याप्त नहीं है। क्योंकि मैं पुत्रार्थिनी हूँ।

(प्रशंसापक्ष में—) हे तापस ! अतः इस कन्या देने वाले वरदान के त्यागने से ही पर्याप्त नहीं है (अर्थात् मुझे कुछ और भी आपसे प्रार्थनीय है)।

एवमभिहितः सोऽपि तां बभाषे ।

सुधा—एवमिति । एवम् = इत्थम् । अभिहितः = कथितः, सः मुनिः अपि ताम् = प्रियङ्गुमञ्जरीम् । बभाषे = उक्तवान् ।

हिन्दी—ऐसा कहने पर वह मुनि भी उस (प्रियङ्गुमंजरी) से बोले ।

'दोषाकरमुखि, किं मामुपालभसे। प्रायः प्राणिनामीशः शम्भुरेव शुभाशुभं कर्मालोक्य तुलाधर इव तुलितं फलमुपकल्पयति ।

सुधा—दोषाकरमुखीति । (निन्दापक्षे—) दोषाणामाकरः दोषाकरः, दोषाकर एव मुखं यस्यास्तत्सम्बुद्धौ = हेऽवगुणसिन्धमुखि ! माम् किम् उपालभसे=किमर्थं मामुपालम्भं ददासि । (प्रशंसापक्षे तु) दोषाकरः = चन्द्रः चन्द्र, इव मुखं यस्यास्तत्सम्बोधनम् = हे चन्द्रमुखि ! किमर्थं मामुपालभसे । प्रायः = बहुशः । प्राणिनाम् = जीवानाम् । ईशः = प्रभुः । शम्भुः = शङ्करः एव । शुभाशुभम्–शुभं चाशुभं च = उत्तममनुत्तमञ्च कर्म । आलोक्य = दृष्ट्वा । तुलाधर इव–तुलां धरतीति = तोलक इव । तुलितम् = नाधिकं न च न्यूनम् । फलम् = परिणामम् । उपकल्पयति = ददाति ।

हिन्दी—(निन्दापक्ष में—) हे दोष भरे मुखवाली ! (प्रशंसापक्ष में—) हे चन्द्रमुखि ! मुझे उलाहना क्यों दे रही हो। प्रायः प्राणियों के स्वामी शिवजी ही शुभ तथा अशुभ कर्म देखकर तोलने वाले के समान नपा-तुला (अन्यूनाधिक) ठीक फल देते हैं।

तथाहि—यद्यावद्यादृशं येन कृतं कर्म शुभाशुभम्।
तत्तावत्तादृशं तस्य फलमीशः प्रयच्छति ॥ १७ ॥

अन्वयः—यत् यावत् यादृशम् येन शुभाशुभम् कर्म कृतम्, तत् तावत् तादृशम् तस्य फलम् ईशः प्रयच्छन्ति ॥ १७ ॥

सुधा—यद्यावदिति। यत् यावत् = यावन्मात्रम्। यादृशम्, येन = येन लोकेन, शुभाशुभम् = उत्तममनुत्तमं वा कर्म = कार्यम्। कृतम् = विहितम्। तत् तावत् = तावन्मात्रम्। तादृशम् = तदनुकूलम्। तस्य फलम् = परिणामम्। ईशः = प्रभुः शङ्करः। प्रयच्छति = ददाति ॥ १७ ॥

हिन्दी—क्योंकि—जितना, जैसा, जिसके द्वारा शुभ अथवा अशुभ कर्म किया गया है, उतना वैसा तदनुकूल उसका फल ईश्वर देता है (उससे अधिक अथवा न्यून नहीं देता है।) ॥ १७ ॥

अथवा—मत्तमातङ्गगामिनि, यस्यास्तवाप्रमाणालोचनश्रीः सा त्वं बलिसंश्रयावलग्ना कस्य नाधिक्षेपं जनयसि।

सुधा—अथवेति। मत्तमातङ्गगामिनि! मत्तः=मदयुक्तः मातङ्गः = किरातः तद्वद् गच्छतीति सम्बुद्धौ = हे मत्तकिरातगामिनि! प्रशंसापक्षे तु—अयि मदगजगामिनि! यस्याः तव = यस्यास्ते प्रियङ्गुमञ्जर्याः आलोचनश्रीः = विवेकसम्पत्। अप्रमाणा = प्रत्यक्षादिप्रमाणापेता। सा त्वम् = तादृशीत्वम्। वलिसंश्रयावलग्ना—वलिनः = बलवतः राज्ञः संश्रये = आश्रये, अवलग्ना = अवष्टब्धा कस्य = पूज्यस्यापूज्यस्य वा। अधिक्षेपम् = तिरस्कारम्। जनयसि = उत्पादयसि। सर्वस्यापि करोष्येव, पक्षे तु—लोचनश्रियः=प्रसृत्यादि प्रामाणातिरिक्तवम्। वलिः = उदररेखा। अवलग्नम्=मध्यम्। एवंविधा सा त्वम् शुभलक्षणा कस्याधिक्षेपम् = मनः पीडायाः अपनोदं न करोषि।

हिन्दी—हे मत्तकिरात के समान चलने वाली! जिस तुम्हारी आलोचन श्री (विचार शक्ति) प्रमाणहीन है (अर्थात् तुम प्रत्यक्षादि प्रमाणों को नहीं मानती हो) तुम बलिसंश्रय (बलवान् राजा का आश्रय) प्राप्त कर किसका अधिक्षेप (अपमान) नहीं करती हो।

(प्रशंसा पक्ष में—) हे मत्तगजगामिनि! तुम्हारी अप्रमाण लोचन भी (आँखों की शोभा) है। ऐसी तुम वलिसंभ्रम (त्रिबली युक्त) अवलग्न (कमर) से संलग्न किसकी मनः पीडा का नाश नहीं करती हो।

तदलमनेनालापालसत्प्रपञ्चेन। गतो भूयिष्ठो दिवसः। समासन्नोऽस्माकमाह्निकसमयः। सीदत्येषा ब्रह्मपरिषद्। गगनमण्डलमध्यमारोहति भगवानशेषकल्याणचिन्तामणिस्तरणिः। अरविन्दारुणवदने न नक्तं समयमनुपालयन्त्यमी मुनयः। अनुमन्यस्व। यामो वयम्।

सुधा—तदिति। तत् = तस्माद् हेतोः। अनेन = एतेन। आलापालसत्प्रपञ्चेन—आलापे = सम्भाषे आलस्याभव्यस्य सतः = भव्यस्य प्रपञ्चेन = विस्तारेण अलम् इति = निषेधे। अथवा—आलापस्य आलेन = अवस्तुरूपेण सन् न परमार्थेन सन् योऽसौ

प्रपञ्चः, तेनालम्—निरर्थकत्वादिति । भूयिष्ठः = महदंशः । दिवसः = अहः । गतः = समाप्तः । अस्माकम् = मामकानाम् । आह्निकसमयः—अहनि भवः आह्निकः, आह्निकश्चासौ समयः संध्यानुष्ठानकालः । समासन्नः = सन्निकटे आगतः । एषा = इयम्, ब्रह्मपरिषद् = विप्रगोष्ठी । सीदति = सिन्ना भवति । भगवान् = देवः, अशेषकल्याणचिन्तामणिः—अशेषकल्याणाय = निखिललोकहिताय चिन्तामणिः = चिन्तामणिमन्त्रसदृशः । तरणिः = रविः । गगनमण्डलमध्यम् = नभोमण्डलमध्यभागम् । आरोहति = आरोहणं करोति । हे दारुणवदने = हे दारुणमुखे ! दारुणं न यशो भाजन पाठीनहिंसकेत्यादिकस्य मुनीनां प्रतिपादनाद् रौद्रं वदनं यस्यास्तत्सम्बोधनम् । न अरविम् = रविरहितम् । नक्तम् = समयम् । अपि तु सरविं सन्ध्यासमयं मुनयः अनुपालयन्ति । नक्तम् इत्यनेन संध्या लक्ष्यते । वयमपि मुनयः । ततः अस्माकं संध्यावसर इत्याशयः । प्रशंसायां तु—हे अरविन्दारुणवदने—अरविन्दवद् अरुणम् वदनं यस्यास्तत्सम्बुद्धौ = हे कमलारुणमुखे ! अमी = एते । मुनयः = साधवः । सन्ध्याकालम् अनु = पश्चात् पालयन्ति अवश्यविधेयत्वात् तत्कालमेवेत्यर्थः । अनुमन्यस्व = अनुजानीहि । वयम् यामः = गच्छामः ।

हिन्दी—इस आलाप के आल (अभव्य) और सद् (भव्य) प्रपञ्च से क्या लाभ ! दिन का बहुत-सा भाग समाप्त हो चुका है । हमलोगों के संध्यावन्दन का समय सन्निकट है । यह ब्राह्मणपरिषद् (बैठे रहने के कारण) परेशान हो रही है । समस्त कल्याण के लिए चिन्तामणिमन्त्र के समान भगवान् सूर्य आकाशमण्डल के मध्य पहुँच रहे हैं । हे दारुणवदने ! सूर्यहीन संध्याकाल की संध्या करने का अनुष्ठान यह मुनिजन नहीं करते हैं (मध्याह्न संध्या भी करते हैं) । प्रशंसापक्ष में—हे कमल के समान अरुण मुखवाली ! यह मुनिजन संध्याकालीन संध्या ही नहीं करते हैं । अपितु मध्याह्न सन्ध्या भी करते हैं । अनुमति दीजिये । हमलोग जाते हैं ।

इत्यभिहिता सा प्रियङ्गुमञ्जरी 'महर्षे, मर्षणीयोऽयमेकस्त्यक्तकुलवधूधर्मो नर्मापराधः । स्वीक्रियन्तामेतानि विविधान्युल्लसन्मयूखमञ्जरीरचितेन्द्रचापचक्राण्याभरणानि । गृह्यतामिदमिन्दुद्युतिधवलमनलशौचं चीनांशुकपट्टपरिधानयुगलमियं च कुसुममालिका' इत्यभिधायास्यान्यदप्यतिथिसत्कारोचितमुपढौक्य प्रसादनाय प्रणाममकरोत् ।

सुधा—इत्यभिहितेति । इति = एवम् । अभिहिता = कथिता । सा = इयम् प्रियङ्गुमञ्जरी = तन्नामराज्ञी । महर्षे=मुने । अयम् = एषः । एकः = अद्वितीयः । त्यक्तकुलवधूधर्मः = कुधवधूनाम् धर्मः = कुलवधूधर्मः । त्यक्तः = परित्यक्तः कुलवधूधर्मः=कुलाङ्गनामार्गः । मम = मे, नर्मापराधः = नम्रदोषः । मर्षणीयः = क्षम्यः । एतानि = इमानि । विविधानि = अनेकानि । उल्लसन्मयूखमञ्जरीरचितेन्द्रचापचक्राणि—उल्लसिताः = शोभिताः याः मयूखमञ्जर्यः = किरणमञ्जर्यः ताभिः रचितानि = खचितानि इन्द्रचापमिव = इन्द्रधनुः सदृशानि चक्राणि = रेखाः तादृशानि । अलङ्काराणि = आभूषणानि । स्वीक्रियन्ताम् = गृह्यन्ताम् । इदम् = एतत् । इन्दुद्युतिधवलम्—इन्दोर्द्युतिः = इन्दुद्युतिः तद्वद् धवलम् = उज्ज्वलम् । अनलशौचम् = अनल इव शौचम् = अग्निपूतम् । चीनां-

शुकपट्टपरिधानयुगलम् = क्षीणांशुककौशेयवस्त्रद्वयम् । च = तथा । इयम् = एषा । कुसुम-मालिका = पुष्पमञ्जरी, गृह्यताम् = स्वीक्रियताम् । इत्यभिधाय = एवं कथयित्वा । अस्य = एतस्य । अन्यत् = अपरम् । अतिथिसत्कारोचितम् = आतिथ्यसत्कारयोग्यम् । उपढौक्य = आनीय । प्रसादनाय = प्रसन्नतायै । प्रणामम् = प्रणतिम् । अकरोत् = चकार ।

हिन्दी—ऐसा कहे जाने पर वह प्रियङ्गुमञ्जरी 'हे महर्षे ! यह कुलाङ्गनाओं के मार्ग को छोड़ने का मेरा एक नम्र अपराध क्षमा करें । यह विविध छिटकती हुई किरण मञ्जरियों से बनी इन्द्रधनुषी रेखाओं जैसे आभूषण स्वीकार कीजिये । यह चन्द्रकान्ति जैसे धवल अग्नि के समान पवित्र दो कौशेयवस्त्र तथा यह कुसुममञ्जरी लीजिये' यह कहकर और भी अतिथि सत्कारोचित सामग्री लाकर प्रसन्न करने के लिए प्रणाम किया ।

मुनिस्तु 'गौरवमुखि, वृत्तमुक्तोऽयं हारः, दोषालयमङ्गदम्, जघन्यापदाश्रयं काञ्चीदाम, सदापदाधिष्ठानं नूपुरम्, अलङ्कारोभवद्विधानामेव राजते नास्माकम् । इयं च परिमलवाहिनी माला निबद्धमधुकरालापाचीनं वासश्च तवैवोचितम्' इत्यनेकधा श्लिष्टालापलीलयातिवाह्य काश्चित्कालकलाः करकलितकमण्डलुर्मण्डलेश्वरमापृच्छ्यतां च प्रियंगुमञ्जरीं जरठतमालनीलमम्बरतलमुदपतत् ।

सुधा—मुनिरिति । मुनिस्तु = महर्षिस्तु । गौरवमुखि = हे प्रभाववदने !, वृत्तमुक्तः = वर्त्तुलमौक्तिकः । पक्षे = शीलरहितः । अयम् = एषः । हारः = गलहारः । पक्षे—व्यवहारः । दोषालयम्–दोषा = बाहु आलयो यस्य तत् । दोषाशब्दो भुजपर्यायः यथा—दोषा रात्रौ भुजेऽपि च इति विश्वः । पक्षे–दोषाः = अवद्यानि, तेषामालयम् = आयतनम् । अङ्गदम् = केयूरम् । जघन्यापदाश्रयम्–जघने भवं जघन्यम्, जघन्यपदम् = जंघास्थानम् आश्रयो यस्य तत् । पक्षे–जघन्यम् = गर्हितम्, जघन्यपदं = गर्हितस्थलमाश्रयो यस्य तत् । काञ्चीदाम = मेखला । सदापदाधिष्ठानम्–सदा = शश्वत् पदे = पादावधिष्ठानम् आश्रयो यस्य तत् नूपुरम् । पक्षे–सताम् = सज्जनानाम् अप्यापदानाम् = विपत्तीनाम् अधिष्ठानम् = नगरम् स्थानं वा । अलङ्कारः=भूषणम् । भवद्विधानाम् = भवादृशानाम् एव राजते = शोभते नत्वस्माकम् = मामकानाम् यतीनाम् न राजते । च = तथा । इयम् = एषा । परिमलवाहिनी = सुगन्धप्रवाहिनी । पक्षे—परितः = सर्वतः मलवाहिनी = रजोमलवाहिनी । निबद्धमधुकरालापा—निबद्धाः = संलग्नाः मधुकराणाम् = भ्रमराणाम् आलापाः = गुञ्जारवाणि यस्यां तादृशी माला = सृक् । पक्षे–निबद्धम् अधुना समवेत-सुरया कराला एवं भूतासौ सृक् । च = तथा । चीनं वासः = कौशेयवस्त्रम् । पक्षे—अपाचीनम् = निकृष्टम् वस्त्रम् = वासः । तवैव = तुभ्यमेव । उचितम् = उपयुक्तम् न तु मह्यं मुनये । इति = एवम् । अनेकधा = बहुधा । श्लिष्टालापलीलया कथंचिद् श्लेषोक्ति-क्रीडया काश्चित्कालकला, अतिवाह्य = किमपि कालक्षेपं विधाय । करकलितकमण्डलुः = करे = हस्ते कलितः = शोभितः कमण्डलुर्यस्य तादृशः मुनिः । मण्डलेश्वरम् = राजानम् तां प्रियङ्गुमञ्जरीं च = राज्ञीं च । आपृच्छ्य = कथयित्वा । जठरतमालनीलम् = वृद्धतमालपत्रवन्नीलवर्णम् । गगनम् = अम्बरम् । उदपतत् = [illegible]च्छत् ।

हिन्दी—और मुनि—हे प्रभावशालिनी मुखवाली ! वृत्तमुक्त (गोलाकार मणियों वाला) यह हार, भुजाओं में रहने वाला अंगद (केयूराभूषण) जघनस्थल की आश्रय बनी हुई मेखला, सदैव चरणों में अधिष्ठित रहने वाला नूपुर अलङ्कार आप जैसे लोगों को ही शोभित होता है, हमारे जैसे लोगों को नहीं, तथा यह सुगन्ध बिखेरने वाली, मधुकरों की गुञ्जारयुक्त माला एवं कौशेयवस्त्र आपके ही योग्य हैं। (अथवा) आचरणहीन यह व्यवहार, दोषों का घर केयूर, निन्दनीय पदों का आश्रय बनी मेखला (करधनी) तथा सज्जनों के लिए विपदाओं का अधिष्ठान नूपुर अलंकार आप जैसे राजाओं के लिए ही शोभा देता है हमारे जैसे मुनियों के लिए नहीं। फिर यह मधु (सुरा) की भाँति मादक गंधवाली करालमाला और अपचीन (निम्नकोटि के) वस्त्र लेकर मैं क्या करूँगा।

इस प्रकार विविध श्लिष्ट आलापों वाली बात करते हुए कुछ समय व्यतीत कर हाथ में कमण्डलु उठा कर राजा तथा रानी प्रियङ्गुमञ्जरी से कहकर पुराने तमाल पत्र के समान नीले आकाश में मुनि उड़ गये।

> वियति विशदविद्युल्लोललीलायमाने
> स्फुरदुरुपरिवेषाकारकान्तौ मुनीन्द्रे।
> अथ गतवति तस्मिन्विस्मयोत्तानिताक्षः
> क्षितिपतिरवतस्थे स्थाणुसंस्थां दधानः ॥ १८ ॥

अन्वयः—वियतीति। अथ विशदविद्युल्लोललीलायमाने, स्फुरदुरुपरिवेषाकारकान्तौ तस्मिन् मुनीन्द्रे वियति गतवति विस्मयोत्तानिताक्षः स्थाणुसंस्थां दधानः क्षितिपतिः अवतस्थे ॥ १८ ॥

सुधा—वियतीति। अथ = अनन्तरम्। विशदविद्युल्लोललीलायमाने = उज्ज्वल-तडिच्चलगतिमति। स्फुरदुरुपरिवेषाकारकान्तौ = स्फुरद् विशालपरिवेषाकृतिदीप्तौ। तस्मिन्=एतस्मिन्। मुनीन्द्रौ = महर्षिणि। वियति = विहायसि। गतवति = प्रयाते सति। विस्मयोत्तानिताक्षः–विस्मयेन = आश्चर्येण उत्तान्निते = विस्तारिते अक्षिणी = नयने यस्य तादृशः। स्थाणुसंस्थाम्—स्थाणुवत् = स्तम्भवत् संस्थाम् = संस्थितिम्। दधानः = बिभ्राणः। क्षितिपतिः = भूमिपालो भीमः। अवतस्थे=स्थितवान्। मालिनीवृत्तम् ॥१८॥

हिन्दी—तदनन्तर चमकती हुई बिजली के समान चञ्चल गतिवाले, स्फुट, विशाल गोलाकार तेज का परिवेष बनाये हुए उन महर्षि के आकाश में चले जानेपर, आश्चर्य से विस्फारित नयनों वाले स्तम्भवत् अडिग बने हुये राजा खड़े रह गये ॥ १८ ॥

स्थित्वा च तत्कथावस्थया काश्चित्कालकलाः कलापिकुलोत्कण्ठाकारिणि रणति नवजलधररवरमणीये मध्याह्नगम्भीरभेरीसखे शङ्खयुगलके, विशति बिसकाण्डकवलनमपहाय तीव्रतरतपनतापताम्यत्तनुनि नवनलिनीछदच्छाया-मण्डलमुपवनदीर्घिकावतंसे हंसकुले कुमुदकुवलयाम्भोजपत्रपुञ्जपञ्जरान्तरमनु-सरति परिहृतोष्णमधुनि, मुकुलितपक्षपुटे षट्चरणचक्रवाले चटुलाग्रिमखुरशिखरो-ल्लिखितधरणिमण्डलेषु खण्डितखर्वदूर्वानालनीलघुरघुरायमाणघोणाकोणेषु विमु-

च्यमानेषु पिपासातुरतुरङ्गेषु, घर्मविघूर्णितेषु ससूत्कारकरविमुक्तसीकरासारवर्षेणार्द्रिताङ्गणेषु मज्जनाय सज्जितेषु सेवागतराजकुञ्जरेषु, क्रीडागिरिसरितमवतार्यमाणेषु लीलामृगमिथुनेषु, पयोभिः पूर्यमाणासु पञ्जरपक्षिपयःपानपात्रीषु उद्यानारघट्टतटीं टीकमानासु कोयष्टिमयूरमण्डलीषु, क्रीडासरःसरस्सु सङ्गीतश्रमस्विन्नखिन्नकिन्नरेषु, कूपकूलकुलायकोणकूणितेष्वातपातङ्काकुलकलविङ्केषु, भवनवनवापीपुलिनपालिपांसुपटलमुत्तप्तमपहाय शीतलशैवलावलिं श्रयति तरलितनक्रे, क्रेंकारयति क्रौञ्चचकोरचक्रवाकचक्रे, क्रीडाप्ररोपितप्राङ्गणप्रान्ततरुशिखरमध्ये मध्याह्नबलिपिण्डाय पिण्डिते क्रेंकारयति काकवयसां कर्णकटुकुटुम्बके, बकवलयवलक्षान्क्षिपति दिक्षु दीप्रान्दीप्तिदण्डांश्चण्डरोचिषि, विसर्ज्य परिजनं राजा मज्जनभवनायोदचलत् ।

सुधा—स्थित्वेति । तत्कथावस्थया = तस्य कथा तत्कथा, तस्या अवस्था तया = तच्चर्चादशया । काश्चित् = कतिपयाः । कालकलाः = समयम्, स्थित्वा = अतिबाह्य । कलापिकुलोत्कण्ठाकारिणि—कलापीनां कुलम् कलापिकुलम्, तस्मिन् उत्कण्ठां करोतीत्युत्कण्ठाकारिणि = उत्सुक्ताकारिणि । नवजलधररवरमणीये—नवानाम् = नूतनानाम् जलधराणाम् = घनानाम् रवः = ध्वनिः, तद्वद् रमणीये = मनोरमे । मध्याह्नगमीरभेरीसखे = मध्याह्नस्य = मध्यदिनस्य गमीरे = गहने भेरीसखे = भेरीमित्रे । शङ्खयुगलके = शङ्खयुग्मे, रणति = कूजति । विसकाण्डकवलनम्—विसकाण्डस्य = कमलं नालस्य कवलनम् = ग्रसनम् । अपहाय = विहाय । तीव्रतरतपनतापताम्यत्तनुनि—तीव्रतरैः = प्रखरैः तपनतापैः = सूर्यतापैः ताम्यन्ति तनुनि = शरीराणि यत्र । विशति = प्रविशति सति । नवनलिनीछदच्छायामण्डलम्—नवनलिनीछदानाम् = नवलकमलिनीदलानाम् छायामण्डलम् = छायावृत्तम् । उपवनदीर्घिकावतंसे—उपवनस्य = उद्यानस्य दीर्घिका = सरोवरम्, तस्याः अवतंसे = भूषणे । हंसकुले = हंसदले । कुमुदकुवलयाम्भोजपत्रपुञ्जपञ्जरान्तरम्—कुमुदानाम् = कुमोदिनीनाम् कुवलयानाम् अम्भोजपत्राणां च = श्वेतकमलानाञ्च पुञ्जम्—समूहम् तदेव पञ्जरम् तदनन्तरम् = तन्मध्यम् । परिहृतोष्णमधुनि—परिहृतम् उष्णम् मधु = हृतम् उष्णम् शीतरहितम् मधु = मकरन्दम् यस्मिन् । मुकुलितपक्षपुटे—मुकुलिते = संकुचिते पक्षपुटे = पुंखपुटे येषां तादृशे । षट्चरणचक्रवाले = मधुकरवृन्दे । चटुलाग्रिमखुशिखरोल्लिखितधरणिमण्डलेषु—चटुलैः = चञ्चलैः अग्रिमैः = अग्रभागैः खुशिखरैः = खुरश्रेणिभिः उल्लिखितम् = खचितम् धरणिमण्डलम् = भूमण्डलम् येषां तेषु । खण्डितखर्वदूर्वानालनीलघुरघुरायमाणघोणाकोणेषु—खण्डितानि = शकलितानि खर्वदूर्वानालानि = हरितदूर्वादलानि, तेन घुरघुरायमाणानि घोणाकोणानि येषां तेषु = 'घुरघुर' इति शब्दायमाननासारन्ध्रेषु । विमुच्यमानेषु = त्याज्यमानेषु । पिपासातुरङ्गेषु—पिपासया = तृष्णया । आतुराः = व्याकुलाः, तुरङ्गाः = घोटकाः तेषु । घर्मविघूर्णितेषु—घर्मेन = आतपेन विघूर्णिताः = आकुलिताः, तादृशेषु । ससूत्कारकरविमुक्तसीकरासारवर्षेण—सूत्कारेण सहितम् ससूत्कारम् करविमुक्तेन = शुण्डात्यक्तेन सीकरासारवर्षेण = जलबिन्दुप्रवर्षेण आर्द्रिताङ्गणेषु = आर्द्राजिरेषु । मज्जनाय = स्नानाय । सज्जितेषु = अलङ्कृतेषु । सेवा-

गतराजकुञ्जरेषु—सेवार्थं = सेवानिमित्तम् गतेषु = प्रस्थितेषु राजकुञ्जरेषु = राजहस्तिषु । क्रीडागिरिसरितम्—क्रीडागिरेः = क्रीडा पर्वतस्य सरितम् = नदीम् । अवतार्यमाणेषु = अधःक्रियमाणेषु । लीलामृगमिथुनेषु = लीलामृगयुगलेषु, पयोभिः = वारिभिः । पूर्यमाणासु = पूरितासु । पञ्जरपक्षिपयःपानपात्रीषु = पञ्जरस्थ-खगजलपानभाजनेषु । उद्यानारघट्टतटीम्—उद्यानस्य = उपवनस्य अरघट्टतटीम् = अरघट्टयन्त्रस्य 'रहट' नाम-जलयन्त्रस्य तटीम् = तटभूमिम् । टीकमानासु = आयातासु । कोयष्टिमयूरमण्डलीषु = कोयष्टीनाम् = सारसानाम् मयूराणाञ्च मण्डलीषु = यूथेषु । क्रीडासरःसरत्सु = क्रीडा-तडागेषु गच्छत्सु । संगीतश्रमस्विन्नखिन्नकिन्नरेषु—संगीतश्रमेण = गीतपरिश्रमेण स्विन्नेषु = स्वेदयुक्तेषु खिन्नेषु = आकुलितेषु च किन्नरेषु = किम्पुरुषेषु । कूपकूलकुलायकोणकूणितेषु—कूपकूलेषु = कूपतटेषु कुलायकोणेषु च = नीडकोणेषु च कूणितेषु=प्रविष्टेषु । आतपातङ्का-कुलकलविङ्केषु—आतपस्यातङ्कम् = घर्ममयम्, तेनाकुलाः = पीडिताः कलविङ्काः = चटक-पक्षिणः तेषु । उत्तप्तम् = प्रतप्तम् । भवनवनवापीपुलिनपालिपांसुलपटलम्—भवनरूपायाः वनवाप्याः याः पुलिनपाल्यः = तटपंक्तयः, तासाम् पांसुलपटलम् = रजःपटलम्, तत् । अपहाय = परित्यज्य । शीतलशैवलावलिम्—शीतलम् = अनुष्णम् शैवलावलिम् = शैवाल-पंक्तिम् । तरलितनक्रे=तरलितः नक्रः, तस्मिन् = चञ्चलमकरे । श्रयति = आगते सति । क्रौञ्चचकोरचक्रवाकचक्रे = क्रौञ्चानां, चकोराणाम् चक्रवाकानाञ्च चक्रम् = दलम्, तस्मिन् । क्रेङ्कारयति = क्रेङ्कारवं कुर्वति । क्रीडाप्ररोपितप्राङ्गणप्रान्ततरुशिखरमध्ये—क्रीडार्थं प्ररोपितः = खेलनार्थमारोपितः प्राङ्गणप्रान्ते = अजिरान्ते तरुः = पादपस्तस्य शिखरमध्ये = श्रेणिमध्ये । मध्याह्नवलिपिण्डाय = माध्यन्दिनवलेः पिण्डप्राप्त्यै । काक-वयसाम् = काकपक्षिणाम् । पिण्डिते = एकत्रीभूते । कर्णकटुकुटुम्बके = श्रुतिकटुकुटुम्बे । क्रेङ्कारयति = क्रेङ्कारवं कुर्वति । वकवलयवलक्षान् = वकपक्षिशुभ्रान् । दीप्रान् = द्युति-युक्तान् । दीप्तिदण्डान् = प्रभादण्डान् । दिक्षु = काष्ठासु । चण्डरोचिषि = प्रचण्डकिरणे भास्करे क्षिपति = प्रक्षेपणं कुर्वति । परिजनम् = कुटुम्बिजनम् । विसर्ज्य = परित्यज्य । राजा = नृपः । मज्जनभवनाय = स्नानागाराय । उदचलत् = उदगच्छत् ।

हिन्दी—उन्हीं की बातचीत में कुछ क्षण बिताकर मयूरकुल को उत्कण्ठित करने वाले नवीन मेघों की ध्वनि के समान रमणीक दोपहर के गम्भीर नगाड़े के समान दो शंखों के बजने पर, विसकाण्ड (कमलनाल) खाना छोड़कर तीव्रतर सूर्य की किरणों से व्याकुल शरीर, नूतन कमल दलों के छायामण्डल में घुस जानेपर उपवन के सरोवरों की शोभा बने हुए हंस·कुल के कुमोदिनी, कुवलय तथा अम्भोजपत्र पुंजरूपी पिंजड़ों में चले जाने पर, उष्ण मधुरस का परित्याग कर मधुकरवृन्द के अपने पंखों को समेट लेने पर, चञ्चल खुरों की टापों के अग्रभाग से पृथ्वीमण्डल को उल्लिखित किये हुए नवीन दूब के तोड़े हुए टुकड़ों के नासिकारन्ध्रों (नथुनों) में पड़ जाने के कारण घोड़ों के प्यास से व्याकुल हो जाने पर धूप से व्याकुल सी-सी की आवाज करते हुए सूंड से जल की बूँदों वाली वर्षा के द्वारा भीगे शरीर वाले स्नान के लिए सेवागत गजों-हस्तियों के सज जाने पर, लीलामृग के जोड़े के क्रीडागिरि सरोवर में उतारे जाने पर, पिंजड़ों में बन्द पक्षियों

के जल पीने वाले पात्रों को जल से परिपूर्ण कर दिये जाने पर, उपवन के अरघट्ट (रहँट) के तट को सारसों तथा मयूरमण्डलियों क (जल पीने के लिए) आजाने पर, संगीत के परिश्रम से स्वेदयुक्त (पसोने से तर) खिन्न किन्नरों के क्रीड़ा तडाग की ओर चल देने पर, कुओं के किनारे बने खोखलों के कोनों में धूप के आतङ्क से कलविङ्क पक्षियों के व्याकुल हो जाने पर, गृह रूपो अरण्य को बाउली को तट पंक्तियों की उत्तप्त (गर्म) धूल को छोड़कर चञ्चल नाके के शीतल शैवाल पंक्ति में चले जाने पर, क्रौंच चकोर तथा चक्रवाक पक्षियों के समूह के क्रेंका शब्द (काँव-काँव) करने पर, क्रीडा निमित्त आरोपित किये गये आँगन के छोर वाले तरु शिखर के मध्य भाग में दोपहर के वलि पिण्ड को लेने के लिए इकट्ठे हुए कौओं के कर्णकटु काँव-काँव करने पर, बगुलों ने पंखों के समान श्वेत चमकते हुए दीप्ति दण्डों (किरणों) के दिशाओं में प्रचण्ड तेज फैलाने पर परिजनों को छोड़कर राजा स्नानागार के लिए चल पड़े।

गत्वा च पृथ्वीवलयमिव पयःपूर्णसमुद्रद्रोणीकम्, केदारोदरमिव सकलशालिस्थानम्, श्रोत्रियद्विजजनभवनमिव सकलधौतपट्टम्, अतिरमणीयं मज्जनभवनमवतारिताभरणः स्नानपीठे निषसाद।

सुधा—गत्वेति। च = तथा। गत्वा = यात्वा। पयःपूर्णसमुद्रद्रोणीकम्—पयसा = जलेन पूर्णा = युक्ता, मुद्रया सहिता समुद्रा = मुद्रांकिता द्रोणी = जलपात्री कुण्डिका यत्र। स्नानीयजलादिषु मुद्रा दोयत इति राजधर्मः। पृथ्वीवलयम् इव—पृथ्व्याः वलयः = समुद्रः तदिव। केदारोदरम् इव = क्षेत्रमध्यभागसदृशम्। सकलशालिस्थानम्—कलशाः = कुम्भास्तेषामालिः = पंक्तिस्तया सह युक्तानि स्थानानि = प्रदेशाः यत्र। श्रोत्रियद्विजजनभवनम् इव श्रोत्रियाः = द्विजजना इति श्रोत्रियद्विजजनाः = वैदिकब्राह्मणाः तेषां भवनम् = सदनम् इव। सकलधौतपट्टम् = सम्पूर्णधौतवस्त्रम्। तथा = कलधौतस्य = सुवर्णस्य पट्टः = आसनम्, तेन सह, तत्। अतिरमणीयम् = अतिरम्यम्। भवनम् = सदनम् अवतारिताभरणः = अवतारितान्याभरणानि येन सः = विमुक्तविभूषणः राजा। स्नानपीठे = स्नानपीठिकायाम्। निषसाद = निषण्णो जातः।

हिन्दी—तथा (स्नान गृह को) जाकर जल से पूर्ण एवं मुद्रा सहित द्रोणी (जल कुण्ड) युक्त पृथ्वी वलय (समुद्र) के समान, केदार (खेत) के मध्य भाग के समान सकल शालि स्थान (कलशों की पंक्तियों सहित स्थान) वैदिक ब्राह्मण जनों के भवन के समान सकलधौत पट्ट (समस्त धुले वस्त्रादि वाले) (अथवा) कलधौत पट्ट (स्वर्णासन) से युक्त अतिरमणीय स्नानगृह में आभरण (वस्त्राभूषण) उतार कर नहाने की चौकी पर (राजा) बैठ गये।

आसन्नस्थितश्चास्यावसरपाठकः पपाठ।

सुधा—च = तथा। अस्य = नृपस्य। आसन्नस्थितः—आसन्ने = निकटे स्थितः = अवस्थितः। अवसरपाठकः—अवसरे = उचितकाले पठतीति पाठकः = प्रशंसकः। पपाठ = पठितवान्।

हिन्दी—और इनके समीप बैठा हुआ स्तुति पाठ करने वाला पढ़ने लगा।

वररजनीकरकान्ते चित्राभरणे निशानभःसदृशे ।
तव नृप मज्जनभवने सविताना भाति परमश्रीः ॥ १९ ॥

अन्वयः—नृप ! तव वररजनीकरकान्ते, चित्राभरणे, निशानभः सदृशे मज्जनभवने सविताना परमश्रीः आभाति ॥ १९ ॥

सुधा—वररजनीति । नृप = राजन् ! तव = ते । वरजनीकरकान्ते वरः = श्रेष्ठः, रजनीकरः = चन्द्रः, तस्य कान्तिरिव कान्तिर्यस्य तस्मिन् = पूर्णचन्द्रप्रभे । पक्षे—वरा रजनी = हरिद्रा = लेपनद्रव्यम्, तत्कुर्वन्ति इति रजनीकरास्तैः कान्तम् = मनोरमम् । चित्राभरणे = विचित्राभरणयुक्ते । अक्षे रणे = युद्धे चित्रो = व्याघ्रः, तद्वदाभाऽस्येति तादृशे । अथवा चित्रा तथा भरणी नक्षत्रयुक्ते । निशानभः सदृशे = रात्रिगगनसमे । पक्षे—निशानैः = तेजस्विभिर्वभस्तीति कृत्वा सुभटस्य अथवा निशानम् = निर्मलम् वभस्ति = शोभते । तथा सदृशः इः कामो यस्येति कृत्वा कन्दर्पप्रतिमः । मज्जनभवने = स्नानगृहे सविताना = वितानेन सहिता सविताना = सविस्तरा । पक्षे—सवितानना = सोल्लोचा । परमश्रीः = उत्कृष्टश्रीः । आभाति = शोभते । सविता = सूर्यः तव मज्जनभवनसमक्षे न आयाति = नैव शोभते ॥ १९ ॥

हिन्दी—हे नृप ! तुम्हारे चन्द्रमा के समान कान्ति वाले उत्कृष्ट रजनी (हल्दी लेपन द्रव्य बनाने वाले लोगों से मनोरम) विचित्र वस्त्रों तथा आभूषणों वाले (चित्रा तथा भरणी नक्षत्रों से युक्त पूर्णिमा चन्द्रमा के समान कान्तिमान् या युद्ध में व्याघ्र की कान्ति जैसे—रात्रि के आकाश के समान तेजस्वियों से शोभित (पक्षे) निर्मल शोभा सदृश स्नानगृह में सविस्तार उत्तम लक्ष्मी शोभित हो रही है (सूर्य आपके मज्जन भवन के सामने शोभित नहीं होता है) ॥ १९ ॥

अनन्तरमुत्तुङ्गकनककुम्भशोभास्पर्धिकुचमण्डलार्धबद्धोत्तरीयांशुकपरिकराः, सस्मरस्मितविकारकारिण्यः दर्शितसीत्काराङ्गमलनविन्यासाः, काश्चित्समुद्रवेल इव समकरोत्क्षिप्तामलकाः काश्चित्तरुणतरुमञ्जरीराजय इव भृङ्गारभरभुग्न-देहाः, काश्चिदन्यायकारिण्य इव सभाजनोद्धूलनकराः, काश्चिन्मलयाचलभूमय इवोत्कृष्टगन्धधारितैलाः काश्चिद्देवलोकवसतय इव चामरधारिण्यः काश्चित्पुरंदर-पुरंध्रिका इव सविभ्रमकङ्कतिकोपान्तेनाकेशप्रसादनमाचरन्त्यः काश्चिद्विन्ध्याटव्य इव दर्शितविविधपादपालिकाः, काश्चिद्राघवसेना इव कृतप्रहस्तमलनाः, काश्चि-द्व्याकरणवृत्तय इव बाहुलतां संवाहयन्त्यः मज्जननियुक्ताः कामिन्यः राजानं स्नापयामासुः ।

सुधा—अनन्तरमिति । अनन्तरम् = तत्पश्चात् । उत्तुङ्गकनककुम्भशोभस्पर्द्धि कुच-मण्डलार्धंबद्धोत्तरीयांशुकपरिकराः—उत्तुङ्गस्य = उन्नतस्य कनककुम्भस्य = स्वर्णकल-शस्य शोभाम् = सुषमाम् स्पर्द्धते = स्पर्धां करोतीति तादृशम् यत् कुचमण्डलम् = पयोधरवृत्तम्, तस्यार्द्धे = अर्द्धभागे बद्धाः = निबद्धा उत्तरीयांशुकैः = उत्तरीयवस्त्रैः परिकराः = कटिप्रदेशः यासाम् तादृश्यः । सस्मरस्मितविकारकारिण्यः = मृदुहासेन कामविकारजनन्यः । दर्शितसीत्काराङ्गमलनविन्यासाः—अङ्गानाम् = शरीरभागानाम्

मलनविन्यासः = मर्दनम् । दर्शितः = प्रकटितः सीत्कारः सी–सी–इति शब्द अङ्ग-मलनविन्यासेन याभिस्ताः । काश्चित् समुद्र वेला इव = सिन्धुतट इव । समकरोत्क्षिप्तामलकाः—मकरैः सहितम् समकरम् उत्क्षिप्तम् = उर्ध्वक्षिप्तम् अमलम् = स्वच्छम् = कम् = जलम् याभिस्ताः । पक्षे—समैः = समानैः करैः = हस्तैः उत्क्षिप्तम् = उद्धूतम् आमलकम् = चूर्णम् याभिस्ताः । काश्चिद् । तरुणतरुमञ्जरीराजय इव—तरुणानाम् = नूतनानाम् तरूणाम् = पादपानाम् मञ्जरी राजय इव = कुसुमपंक्त्य इव । भृङ्गारभरभुग्नदेहाः—भृङ्गाणाम् = मधुपानाम् आरम् = आगमनम् तस्य भरेण = गुरुत्वेन भुग्नाः = नम्रीभूताः देहाः = शरीराणि यासाम् तादृशाः । पक्षे—भृङ्गारस्य = जलपूर्णं स्वर्णपात्रस्य भरेण गुरुत्वेन भुग्नाः = अवनम्राः देहाः = शरीराणि यासां तादृशाः । अन्यायकारिण्यः = अनुचितकार्यकारिण्यः । समाजनोद्धूलनकरा इव भाजनेन सहिताः समाजनाः उद्धूलनकराः—उद्धूलनम् = चूर्णम् करेषु यासां तादृशाः स्त्रिय इव । पक्षे—समाजनान् = सज्जनान् उद्धूलनकराः = मलिनकरा इव । मलयाचलभूमय इव = मलयपर्वतभूमय इव उत्कृष्टगन्धधारितैला—उत्कृष्टानि = उत्तमानि गन्धधारितानि = गन्धयुतानि एलाः इव उत्कृष्टानि गन्धधारीणि—तैलानि याभिः ताः । देवलोकवसतय इव = सुरलोकनगर्य इव । चामरधारिण्यः = अमरधारिण्यः = सुरनिवासिन्यः पक्षे चामरधारिण्या = प्रकीर्णकयुताः । पुरन्दरपुरन्ध्रिका इव = इन्द्रदेवाङ्गना इव । सविभ्रमकङ्कतिकोपान्तेनाकेशप्रसादनम्—सविभ्रमकम् = सविलासम् कतिकोपान्ते = किञ्चित्कोपसमाप्तौ नाकेशप्रसादनम् = इन्द्रप्रसन्नताम् आचरन्त्य इव आचरणकुर्वन्त्य इव । पक्षे—सविभ्रमम् = सविलासम् । कङ्कतिकप्रान्तेन = कङ्कतिका = केशमार्जनी, तस्या उपान्ते नासमन्तात् केशानाम् प्रसादनम् = विरलीकरणम् आचरन्त्यः = कुर्वन्त्यः । विन्ध्याख्य इव विन्ध्याचलवत् श्रेण्य इव । दर्शितविविधपादपालिका:—दर्शिताः प्रकटिताः विविधाः= विभिन्नाः पादपालिका = पर्यायावसराः । "पालिः कर्णलतायां स्यात्प्रदेशे पंक्तिचिह्नयोः । हृष्टश्मश्रुस्त्रियामश्रौ पर्यायावसरे क्रये ।" इत्यजयः । ततश्च दर्शिता विविधा । पादपालिः = पादमर्दनावसरो याभिस्ताः । पक्षे—प्रकटित बहु वृक्षपंक्त्यः. राघवसेनाः इव रामचन्द्रवाहिन्य इव कृतप्रहस्तमलना—कृतम् = विहितम् प्रहस्तस्य = प्रहस्तनाम रावणदूतस्य मलनम् = मर्दनम् याभिः तथैव । पक्षे—कृतप्रकरमलनाः । व्याकरणवृत्तय इव = व्याकरणनियमा इव । बाहुलतां = आधिक्यम् संवाहयन्त्यः—प्रवर्तयन्त्यः । पक्षे—भुजलताम् = संवाहयन्त्यः = मर्दयन्त्यः । मज्जननियुक्ताः=स्नानकर्मणि नियुक्ताः । कामिन्यः = रमण्यः । राजानम् = नृपम् । स्नापयामासुः = स्नानं कारयामासुः ।

हिन्दी—तदनन्तर उन्नत स्वर्ण कलश की शोभा से स्पर्धा करने वाले पयोधर मण्डल के अर्धभाग को उत्तरीय (चादर) से कटितक बँधे हुए मन्द मुस्कान से कामविकार को उत्पन्न करने वाली, अङ्गों को मलते समय सीत्कार उत्पन्न कर देने वाली, कुछ मकरों से उछाले गये स्वच्छ जल से युक्त समुद्र वेला के समान (जुड़े हुए हाथों से उछाले गये आमलक चूर्ण (पाउडर वाली), कुछ भौंरो के बोझ से अवनत नूतन वृक्षों की मञ्जरी पंक्तियों के समान स्वर्ण जलपत्र के बोझ से झुकी हुई, कुछ अनुचित

कार्य करने वाली सम्यलोगों को (दुर्व्यवहारों से मलिन करनेवाली स्त्रियों जैसी हाथों में पात्र लिए उद्धूलन (चूर्ण, अंगलेप) युक्त, मलयपर्वत को निकटवर्ती भूमि के समान उत्तम सुगन्धित इलायची अथवा उत्तम सुगन्धित तेल वाली, देवाङ्गनाओं की देवनगरी के समान कुछ चौंर धारण किये हुये, से विभ्रमकङ्कतिकोपान्तेनाकेश प्रसाधन (विलास पूर्वक सुख उत्पन्न करती हुई) कुछ क्रोध के समाप्त हो जाने पर नाकेश (इन्द्र) को जैसे मानती रहती हैं उसी प्रकार) विलासपूर्वक कंघी से बालों को संवारती हुई, कुछ अनेक प्रकार की वृक्ष पंक्तियों को प्रकट करती हुई विन्ध्याटवियों के समान अनेक प्रकार की पाद-पालन विधियां दिखलाती हुई, कुछ प्रहस्त नामक रावण के दूत का मर्दन करने वाली राघव सेना की भांति विशेष रूप से हाथ मलने वाली बहुलता से प्रवृत्त होने वाले व्याकरण के नियमों के समान भुजलताओं को चलाती हुई, नहलाने के लिए नियुक्त कामिनियों ने राजा को स्नान कराया।

किं बहुना—

तास्तास्तं स्नापयामासुरङ्गनाः कुम्भवारिणा।
एत्य याः स्युः प्रसन्नेन द्युलोकात्कुंभवारिणा॥ २०॥

अन्वयः—ताः ताः सुराङ्गनाः कुम्भवारिणा तम् स्नापयामासुः, याः भवारिणा प्रसन्नेन द्युलोकात् कुम् एत्य स्युः॥ २०॥

सुधा—तास्ता इति। ताः ताः सुराङ्गनाः—उपर्युक्ताः देवाङ्गना इव सुन्दर्यः कुम्भवारिणा = कलशजलेन तम् राजानम् स्नापयामासुः = स्नानं कारयामासुः। याः भवारिणा = भवस्य = लोकस्यारिः = शंभुस्तेन = शिवेन प्रसन्नेन = प्रसन्नया द्युलोकात् = स्वर्गात्। कुम् = पृथिवीम् एत्य = आगत्य स्युः॥ २०॥

हिन्दी—अधिक क्या—उन-उन सुन्दरियों ने कलश के जल से उस राजा को स्नान कराया जो कि भवारि शिव की कृपा से स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल पर आई (जन्मी) हुई थी॥ २०॥

अथ विमलदुकूलप्रान्तनिर्नीरिताङ्गः
परिहितसितवासाः स्वल्पमाङ्गल्यभूषः।
शुचिरुचितविधिज्ञः स स्वयं स्वस्थचित्तः
कुशकुसुमकरः सन्कर्म धर्म्यं चकार॥ २१॥

अन्वयः—अथ विमलदुकूलप्रान्तनिर्नीरिताङ्गः, परिहितसितवासाः, स्वल्पमाङ्गल्यभूषः, शुचिः, उचितविधिज्ञः, स्वस्थचित्तः सन् कुशकुसुमकरः, सः, स्वयम्, धर्म्यम्, कर्म, चकार॥ २१॥

सुधा—अथ विमलेति। अथ = अनन्तरम्। विमलदुकूलप्रान्तनिर्नीरिताङ्गः—विमलेन = स्वच्छेन दुकूलप्रान्तेन = वस्त्रप्रान्तेन निर्नीरितः = निर्जलीकृतः अङ्गः = देहो यस्य सः। परिहितसितवासाः—परिहितम् = परिधारितम् = सितम् = शुभ्रम् वासः = वस्त्रम् येन सः। स्वल्पमाङ्गल्यभूषः—स्वल्पम् = किञ्चित् माङ्गल्यम् = माङ्गलिकम्

भूषणम् यस्मिन् सः। शुचिः = पवित्रः। उचितविधिज्ञः—उचिताम् = उपयुक्ताम् विधिम् = क्रियाम् जानातीति ज्ञः। स्वस्थचित्तः = प्रसन्नमनाः सन्। कुशकुसुमकरः—कुशाः = दर्भाः कुसुमानि = पुष्पाणि च करयोः यस्य सः। स्वयम् = आत्मना सः = असौ नृपः। धर्म्यम् = धार्मिकम् कर्म = कृत्यम्। चकार = अकरोत्। मालिनीवृत्तम्॥ २१॥

हिन्दी—तदनन्तर स्वच्छ वस्त्र के छोर से अंग के जल को पोछकर शुभ्र वस्त्र तथा मांगलिक आभूषण पहने हुए, पवित्र, उचित विधि को जानने वाले प्रसन्नचित्त होकर कुशाएँ तथा फूल हाथों में लिए स्वयम् उस (राजा भीम) ने धार्मिक कार्य (पूजनादि कार्य) किया॥ २१॥

अनन्तरमावर्तितानेकस्वर्णवल्लभो वल्लभो जनस्य भोजनस्य समये स मयेन निर्मितया तया स्वधर्माणं धर्मसुतसभया सभयागतजनजनितारम्भोऽरं भोजनस्थानवेदीं जनस्थानवेदीं गतवान्।

सुधा—अनन्तरमिति। अनन्तरम् = तत्पश्चात्। आवर्तितानेकस्वर्णवल्लभः आवर्तिताः येऽनेके स्वर्णस्य वल्लभः = तौल्यमानविशेषास्तद्वद्भा यस्य सः जनस्य = लोकस्य वल्लभः = प्रियः राजा। भोजनस्य समये भोजनकाले सः = असौ। मयेन = मयदानवेन निर्मितया = रचितया तया=एतया धर्मसुतसभया=युधिष्ठिरपरिषदास्वधर्माणम् सदृशीम्। सभयागतजनजनितारम्भः—सभयानाम् = भयभीतानां आगतानाम् = शरणागतानाम् = लोकानाम् जनितः आरंभः = उपक्रमः येन सः। अरम् = अत्यर्थम्। जनस्थानवेदीम्—जनानाम् स्थानवेदीम् = लोकोचितासमज्ञाम्। भोजनस्थानवेदीम् = भोजनस्थानवेदिकाम्। गतवान् = प्राप्तवान्।

हिन्दी—अनन्तर अनेक बार व्यवहार में आये हुए चमकीले स्वर्णवल्लों (स्वर्णमापों) के समान कान्ति वाले जनप्रिय मयदानव के द्वारा निर्मित उस धर्मराज युधिष्ठिर की सभा के समान, भय के सहित आये हुए शरणागत जनों की रक्षा के लिए सदा प्रयत्नशील राजा भोजन के समय अत्यन्त जनस्थान वेदी (योग्यतानुसार लोगों को स्थान देना जाननेवाली) भोजनस्थान की वेदी पर गये।

तस्यां च बहुविस्तीर्णस्वर्णभोजनपात्रपत्रशङ्खशुक्तिसनाथायामुपविष्टस्यास्य क्रमेण परिकरमावध्य गाढमाढौकन्त स्वस्य स्वस्यानुहारिणोऽन्नविशेषानादाय सूपकाराः सूपकाराङ्गनाश्च।

सुधा—तस्यामिति। च = तथा। बहुविस्तीर्णस्वर्णभोजनपात्रपत्रशंखशुक्तिसनाथायाम्—बहुविस्तीर्णानाम् = बहुविस्तृतानाम् स्वर्णभोजनपात्राणाम् = हेमभोजनभाजनानाम् पत्रैः शंखैः शुक्तिभिश्च सनाथायाम् सनाथितायाम् तस्याम् = वेदिकायाम्। उपविष्टस्य = आसीनस्य अस्य = एतस्य राज्ञः। क्रमेण = क्रमशः परिकरम् = मध्यभागम्। आवध्य = सन्नध्य। गाढम् आढौकन्तः = सघनं पंक्तिवद्धाः। स्वस्य स्वस्यानुहारिणः = निजनिजानुरूपाम्। अन्नविशेषान् = सुस्वादुभोजनानि। आदाय = आनीय। सूपकाराः = पाचकाः, स्टूपकारकाश्च सूपकाराङ्गनाश्च = पाचकपत्न्यश्च (परिवेषयामासुः)।

हिन्दी—तथा अतिविस्तृत स्वर्ण पात्रों के पत्र-शंख-शुक्तियों से सम्पन्न भोजन वेदी पर राजा के बैठे हुए क्रमशः कमर बांधकर घनी पंक्तियों में बद्ध होकर अपने अपने अनुरूप स्वादिष्ट भोजनों को सूपकार (पाचक) एवं उनकी पत्नियां परोसने लगीं।

तथाहि—

भक्तास्तस्य भक्तम्, मुद्गा मुद्गान्, मोदका मोदकान्, अशोकवर्तिन्योऽशोकवर्तीः, समांसा मांसम्, नानाशाकाः शाकानि, व्यञ्जना व्यञ्जनम्, अपरास्तु काश्चिदक्षीरा अपि क्षीरम्, अघारिका अपि घारिकाः परिवेषयामासुः।

सुधा—भक्ता इति। भक्ताः = प्रसादकाः पाचकाः। भक्तम् = ओदनम्। मुद्गाः = मुदं गच्छन्तीति मुद्गाः=प्रसन्नाः। मुद्गान्=मुद्गमिष्टान्नानि। मोदकाः = आनन्दमग्नाः। मोदकान् = मोदकमिष्टान्नानि अशोकवर्तिन्यः—नशोके वर्ततेऽभीक्ष्णमशोकवर्तीनीर्नायको येषां यासां च। शोकहीनाः। शोकवर्तीः = तन्नामभोज्यविशेषान्। समांसाः—समोंऽशो यासाम् ताः। मांसम्=पललम्। नानाशाकाः नाना=अनेकप्रकारा आशा येषां यासां च। शाकानि। व्यञ्जनाः = विशिष्टाञ्जनस्त्रियः। व्यञ्जनम् = पक्वान्नम्। अपरास्तु = अन्यास्तु काश्चित् = का अपि पाचिकाः अक्षीराः अपि = अक्षीणि ईरयन्ति विभ्रमात्मकम्पयन्ति, ताः। क्षीरम् = दुग्धम्। अघारिका अपि—अघस्य पापस्य अरिकाः = शत्रुरूपाः= दिव्यधर्माः। घारिकाः = तन्नामभोज्यविशेषान्। परिवेषयामासुः भोजनस्य पात्रे चिक्षेपुः।

हिन्दी—भक्त (प्रसन्न कर देने वाले पाचकों ने उन्हें भात, प्रसन्नमुखवालों ने मूंग से बने पदार्थ, आनन्द मग्न करने वालों ने मोदक (लड्डू) शोकहीन पाचिकाओं ने शोकवर्ती नामक विशिष्ट पदार्थ, समान अंश वालों ने मांस, अनेक प्रकार की आशाओं वाली ने शोक, विशेष प्रकार से अंजन लगाई पाचिकाओं ने पकवान तथा अन्य आंखों के विलास से युक्त स्त्रियों ने भी दूध (पापों की शत्रु अर्थात् दिव्य धर्माचरण युक्तोंने घारिका नामक विशेष भोज्य पदार्थ परोसे।

सोऽप्यधीशो भूभुजां भुञ्जानो भोज्यम्, लिहँल्लेह्यम्, आस्वादयन्स्वादुः चूषयञ्चूष्याणि, पिबन्पेयानि, आहारमकरोत्।

सुधा—सोऽपीति। सः असौ। अधीशः = नृपः अपि। भूभुजाम् = नृपाणाम्। भोज्यम् = भक्ष्यपदार्थम्। भुञ्जानः = खादमानः। लेह्यम् = लिह्यपदार्थम्। लिहन्। स्वादः = स्वादिष्टम्। आस्वादयन् = आस्वादं गृह्णन्। चूष्याणि = चूष्यवस्तूनि। चूषयन्। पेयानि = पेयपदार्थान् पिबन्। आहारम् = भोजनम्। अकरोत् = चकार।

हिन्दी—उस राजा ने भी राजाओं के भोग योग्य पदार्थ खाते हुए लेह्य (चाटने योग्य चटनी आदि को) चाटते हुए, स्वादिष्ट पदार्थों को चखते हुए, चूसने योग्य चीजों को चूसते हुए, पेय पदार्थों को पीते हुए भोज किया।

अनन्तरमाचम्य चन्दनेनोद्वर्तितपाणिपल्लवः शीघ्रमाघ्राय धूपधूमम्, आस्ये निक्षिप्य कस्तूरिकाकुङ्कुमकर्पूरकर्बुराणि क्रमुकफलशकलानि, आदाय च वित्रस्त-

मृगतर्णकर्णकस्राणि शुक्तिशुक्लानि ताम्बूलीदलानि, तस्मात्प्रदेशादपरमवकीर्णकुसुमहारि विस्तीर्णास्तीर्णस्वर्णमयवैदूर्यपर्यन्तपर्यङ्काङ्काप्तैः सह विनोदास्थायिकास्थानमगात् ।

सुधा—अनन्तरमिति । अनन्तरम् = तत्पश्चात् । आचम्य = आचमनं कृत्वा चन्दनेन = श्रीखण्डेन । उद्वर्तितपाणिपल्लवः—उद्वर्तिते पाणिपल्लवे यस्य सः = मर्दित करकञ्जः नृपः । शीघ्रम् = द्रुतम् । धूपधूपम् = धूप सुगन्धिम् । आघ्राय = घ्रात्वा । आस्ये = मुखे कस्तूरिकाकुङ्कुमकर्पूरकर्बुराणि—कस्तूरीकुङ्कुमकर्पूर कर्बुरितानि । क्रमुकफलशकलानि = कषायफलखण्डानि । निक्षिप्य = धृत्वा । वित्रस्तमृगतर्णकर्णकस्राणि वित्रस्ताः = भयभीताः मृगाः = हरिणाः, तेषां तर्णकर्णाणीवक्रमाणि = तर्णश्रोत्रमृदूनि, शुक्तिशुक्लानि = शुक्तिः = शुक्तिका = तद्वत् शुक्लानि = शुभ्राणि । ताम्बूलीदलानि = ताम्बूलपर्णानि । तस्मात् प्रदेशात् = तत्स्थानात् । अपरम् = अन्यम् । अवकीर्णं कुसुमहारि—अवकीर्णानि = प्रक्षिप्तानि कुसुमानि सुमनानि हरतीति = प्रक्षिप्तपुष्पमनोरमम् । विस्तीर्णास्तीर्ण स्वर्णमयवैदूर्यपर्यन्त पर्यङ्काङ्काप्तैः सह—विस्तीर्णास्तीर्णम् = विस्तृत विष्टरयुतम्, स्वर्णमयम् = कनकयुतम् वैदूर्यपर्यन्तम् = वैदूर्यमणिखचितम् यत् पर्यङ्कम = शयनीयम्, तदङ्के = तन्मध्ये । आप्तैः सह = आसीन पुरुषैः सह । विनोदस्थायिकास्थानम् = विनोदगोष्ठीस्थलम् । अगात् = अगच्छत् ।

हिन्दी—अनन्तर आचमन कर चन्दन से कर पल्लव को मल कर, शीघ्र धूप के धुए का सूंघ कर, मुख में कस्तूरी, कुङ्कुम और कपूर से चितकबरा किये हुए कसैले फलों के टुकड़ों को डालकर तथा भयभीत मृग के कान के समान मनोरम, शुक्ति का जैसे शुभ्र, पानके पत्तों को लेकर, उस स्थान से अन्य बिखरे हुए फूलों की शोभा को हरने वाले विस्तीर्ण बिछे हुए सुनहले वैदूर्यमणि से खचित पलंग वाले विनोद गोष्ठी के स्थान को (राजा) गये ।

तत्र च सकामकामिनीकमलकोमलकरपुटपीड्यमानपादपल्लवो नर्तयन्नाटचपरिपाटीपटून्नटान्, भावयन्नमृतस्रुतः कविवाचः वाचयंश्चिरंतनकविकथाः, शृण्वन्वीणाप्रवीर्णाकिनरमिथुनगीतानि, आलोकयँल्लोचनोत्सवकरान्विलासिनीलास्यविलासान्, वादयन्मृदुवाद्यविशेषान्, अवधारयन्वांशिकवाद्यवेणुनिक्वाणान्, कलगिरः पाठयन्पञ्जरशुकान्, कान्ताकुचकुम्भमण्डलावष्टम्भलीलयापराह्णसमयमतिवाहितवान् ।

सुधा—तत्र चेति । च = तथा । तत्र = तत्स्थाने । सकामकामिनीकमलकोमल करपुटपीड्यमानपादपल्लवः—सकामानाम् कामनायुतानाम् कामिनीनाम् = सुन्दरीणाम् कमलकोमलाभ्याम् करपुटाभ्याम् = हस्तयुगलाभ्याम् पीड्यमानौ = संवाह्यमानौ पादपल्लवौ = चरणदलौ यस्य सः । नाट्यपरिपाटीपटून् = नाट्यपरिपाट्याम् = नाट्यविधाने पटून् = दक्षान् नटान् = नर्तकान् नर्तयन् = गात्रविक्षेपं कारयन् । अमृतश्रुतः = सुधाश्रुतः । कविवाचः = सूरिगिरः । भावयन् = विचारयन् । चिरन्तनकविकथाः = प्राच्यकविवार्ताः । वाचयन् = कथयन् । वीणाप्रवीणकिन्नरमिथुनगीतानि—वीणायाम्—

प्रवीणा = तन्त्री कुशलः किन्नरमिथुनः = किंपुरुषयुगलः, तस्य गीतानि = गायनानि । श्रृण्वन् = आकर्णयन् । लोचनोत्सवकरान् = नयनानन्दकरान् । विलासिनी लास्यविलासान् = वाराङ्गनानाम् लास्यविलासान् = नृत्यामोदान् । आलोकयन् = पश्यन् । मृदुवाद्यविशेषान = मधुरवाद्यविशिष्टान् । वादयन् । वांशिकवाद्यवेणुनिक्वाणान्––वंशोद्भववेणुध्वनीः । अवधारयन् = आकर्णयन् । कलगिरः = मृदुवाचः । पञ्जरशुकान् = पञ्जरस्थकीरान् । पाठयन् = शिक्षयन् । कान्ताकुचकुम्भमण्डलावष्टम्भलीलया––कान्ताकुचौ = रमणीपयोधरौ एव कुम्भौ = कलशौ तयोर्मण्डलम्, तस्य अवष्टम्भलीलया = संश्लिष्टक्रीडया । अपराह्णसमयम् = मध्याह्नानंतरकालम् । अतिवाहितवान् = व्यतीतवान् ।

हिन्दी––तथा उस स्थान पर कामना युक्त कामिनियों के कमल के समान कोमल करों से पीडयमान चरण कमल वाले राजा ने नाटय परिपाटी में चतुर नटों को नचाते हुए, श्रुतिमधुर कवियों की वाणी पर विचारते हुए; प्राचीन कवि कथाओं को बांचते हुए, बीणा में प्रवीण किन्नर युगल के गीतों को सुनते हुए, नयनानन्दकर वाराङ्गनाओं के नृत्य विलासों को देखते हुए, मधुर वाद्य विशेष बजाते हुए, बांस से बने मुरली व वेणु आदि बाजों की आवाज सुनते हुए, पिंजड़ों में बन्द तोतों को मधुर वाणी पढ़ाते हुए तथा सुन्दरियों के कुच कुम्भमण्डल की संश्लेष क्रोडा से अपराह्ण समय व्यतीत किया ।

क्रमेण च चषकायमाणविकचकमलमध्यमधुपानमत्त इव पुनर्वारुण्याशयाभिभूतभासि मदादिव लोहितायमाने निपतति मुक्तांशुकेऽशुमालिनि, वनान्तरतरुशिरःश्रितशाखाशिखरेषु गलद्बहलकिञ्जल्कपुञ्जपिञ्जरासु मञ्जरोष्विव विलम्बमानासु दिनकरदीधितिषु, विस्तीर्णशिलावकाशजघनायामुल्लसल्लोहिताधरपल्लवायामस्ताचलवनराजिरेखायामुपरि पतितमवलोक्य रागिणमहर्पतिमीर्ष्यारोषभरादिव जाते जपापुष्पनिचयरुचि पश्चिमाशामुखे, मुखरयति नभो निजनीडनिलयनाकूतकूजितजरदण्डजव्रजे, व्रजति सरः संध्याविधिविधित्सया द्विजजन्मजनमुनिनिकाये, कालागुरुसाञ्जनराग इव श्यामलयति गगनलक्ष्मीमभिसारिकाबन्धावन्धकारे, राज्ञः संध्यावसरमावेदयन्किनरमिथुनमिदमगायत् ।

सुधा––क्रमेणेति । क्रमेण = क्रमशः । चषकायमाणविकचकमलमध्यमधुपानमत्त इव––चषकायमाणस्य = चषकरूपस्य विकचस्य = विकसितस्य कमलस्य = पद्मस्य मध्ये = अन्तरे यत् मधु = मकरन्दम्, तस्य पानेन मत्तः = क्षीवः इव । पुनः = भूयः । वारुण्याशया = मधुवाञ्छया । मदात् इव = अभिमानादिव । अभिभूतभासि = अभिभूतकान्तौ । मुक्तांशुके = मुक्ताः किरणाः येन तस्मिन्-त्यक्तरश्मौ । अंशुमालिनि = सूर्ये लोहितायमाने = रक्तायमाणे निपतति = अधो गच्छति । वनान्तरतरुशिरः श्रितशाखाशिखरेषु वनान्तरे = काननमध्ये तरुशिरःश्रितेषुट-वृक्षाग्राश्रितेषु शाखाशिखरेषु = लताशिरःसु । गलद् बहलकिञ्जल्कपिञ्जरासु––गलद्भिः=स्रवद्भिः वहलैः = गाढैः किञ्जल्कपुञ्जैः = केसरसमूहैः पिञ्जरितासुरक्तपीतवर्णासु । दिनकरदीधितिषु = सूर्यरश्मिषु । मञ्जरीषु इव = कुसुमलतासु इव विलम्बमानासु = प्रलम्बमानासु । विस्तीर्णशिलावकाश

जघनायाम्--विस्तीर्णशिलावकाश एव जघनम्=श्रोणी यस्याः। उल्लसल्लोहिताधर पल्लवायाम्--उल्लसन्तः--शोभन्तः अधराः अधः स्थिताः प्रवालाः यस्याः। ईदृश्याम्। अस्ताचलवनराजिरेखायाम् अस्ताचलारण्यराजौ। उपरि=उपरिष्टात् प्राप्तम् रागिणम्=रक्तम् अहः पतिम्=दिवसनाथम्। पतितम्=च्युतम्। अवलोक्य=दृष्ट्वा। ईर्ष्यारोषभरात् इव=ईर्ष्यायाःरोषस्य च भारात् इव। जपापुष्पनिचयरुचि—जप पुष्पाणाम्=जपाकुसुमाणाम् निचयः=राशिः, तस्य रुगिव=कान्तिरिव। पश्चिमाशामुखे=प्रत्यग्दिशामुखे। रक्ते जाते निजनीडनिलयनीकूत कूजितजरदण्डजव्रजे--निजनीडेषु=स्वक्रोडेषु निलयनाकूतेन=निलयनोत्सुकतया कूजिते=मुखरिते जरदंडजव्रजे=वृद्धपक्षिकुले। नभः=गगनम्। मुखरयति=गुञ्जायमाने सति। सन्ध्याविधिविधित्सया--सन्ध्याविधिम्=सान्ध्यकर्म विधातुम् इच्छया। द्विजजन्मजनमुनिनिकाये--द्विजजन्मजनाः=ब्राह्मणक्षत्रियवैश्याः मुनयश्च, तेषां निकाये=समुदाये। सरः=तडागम् (स्नानार्थम्) व्रजति=गच्छति। अभिसारिका बन्धौ=अभिसारिकाणाम्=नायिकानाम् बन्धुः=सखा, तादृशे अन्धकारे=तमसि। गगनलक्ष्मीम्=आकाशश्रियम् कालागुरुसाञ्जनराग इव=कृष्णागुरुसाञ्जनरागसदृशम्। श्यामलयति=कृष्णीकुर्वति। राज्ञः=नृपस्य सन्ध्यावसरम्=पूजनकालम्। आवेदयन्=निवेदयन्। किन्नरमिथुनम् किंपुरुष युगलम्। इदम्=एतत्। अगायत्=गीतवान्।

हिन्दी—क्रमशः प्याले के रूप में विकसित कमलों के मध्य के मधुरस को पीने से मतवालों जैसे, पुनः मदिरा पीने की इच्छा से मद से अभिभूत कान्ति वाले तथा मुक्त किरणों वाले भगवान् अंशुमाली (सूर्य) के लाल होकर डूबने पर, वनान्तर तरुओं की शाखाओं की चोटियों पर गिरते हुए सघन पराग पुञ्ज से पिंजरित मञ्जरियों की भांति सूर्य की किरणों के लटक जाने पर, फैली हुई शिलावकाश रूपी जघन वाली उल्लसित रक्ताधर पल्लवों वाली अस्ताचल की अरण्यपंक्ति रेखा के ऊपर रक्तवर्ण दिनमणि (सूर्य) को गिरा हुआ देखकर ईर्ष्या और रोष के बोझ से मानों जपा कुसुम की कान्ति के समान रक्त वर्ण पश्चिम दिशा के हो जाने पर, अपने घोसलों में छिपने की उत्कण्ठा से चहचहाते हुए वृद्ध पक्षिकुल के आकाश को मुखरित कर देने पर, सन्ध्योपासन विधि करने की इच्छा से ब्राह्मण क्षत्री वैश्यों तथा मुनियों के झुण्ड तालाब पर चले जाने पर कालागुरु के समान अंजन से अभिसारिकाओं के बन्धु अन्धकार को आकाश लक्ष्मी को काला कर देने पर राजा के सन्ध्याकाल को बतलाते हुए किन्नर मिथुन ने यह गाया।

'भोगान्भो गाङ्गवीचीविमलितशिरसः प्राप्यः शंभोः प्रसादा-
न्मोहान्मोहानभिज्ञाः क्वचिदपि भवत प्राणिनो दर्पभाजः।
यस्माद्यः स्मार्तविप्रप्रणतिनुतपदः सर्वसंपन्नभोगो
भास्वान्भाः स्वाङ्गभूता अपि परिहरन्नस्तमेष प्रयाति' ॥ २२ ॥

अन्वयः—भोः! गाङ्गवीचिविमलितशिरसः शम्भोः प्रसादात् भोगान् प्राप्य क्वचित् अपि मोहात् ऊहानभिज्ञाः प्राणिनः दर्पभाजः मा भवत यस्मात् यः स्मार्तविप्रप्रणति-

नुतपदः सर्वसम्पन्नभोगः सः एषः भास्वान् अपि स्वाङ्गभूताः भाः परिहरन् अस्तम् प्रयाति ॥ २२ ॥

सुधा—भोगानिति । भोः = हे । गाङ्गवीचीविमलितशिरसः—गाङ्गवीचिभिः = गङ्गोर्मिभिः विमलितम् = निर्मलीकृतम् शिरः = उत्तमाङ्गम् यस्य, तस्य । शम्भोः = शिवस्य प्रसादात् = कृपया । भोगान् = ऐश्वर्यसुखानि प्राप्य = लब्ध्वा क्वचित् अपि = कुत्रापि । मोहात् = मोहकारणात् । ऊहानभिज्ञाः = अविमर्शकाः प्राणिनः = जीवाः । दर्पभाजः = दर्पम् = अभिमानं भजन्ते इति दर्पभाजः = अभिमानयुक्ताः । मा भवत = मा स्त । यस्मात् = यतः । यः स्मार्तविप्रप्रणतिनुतपदः—स्मार्तविप्रैः = धार्मिकब्राह्मणैः प्रणतौ = प्रणाम समये नुतपदः = स्तुतपादपद्मः तथा सर्वसम्पन्नभोगः = सर्वसम्पत् = सकलश्रीकः नभोगः = वियद्गामी । सः = असौ । एषः = अयम् भास्वान् = सूर्यः अपि । स्वाङ्गभूताः स्वस्य = आत्मनः अङ्गभूताः = अङ्गजाताः भाः = दीप्तिः । परिहरन् = आकुञ्चन् । अस्तम् = अस्ताचलम् । प्रयाति = प्रस्थानं करोति । तस्मात् एवंविधस्य महात्मनोऽपि रवेरस्तं विलोक्य शम्भोराराधनादिकार्ये न प्रमदितव्यमित्यर्थः । स्रग्धरा-वृत्तम् ॥ २२ ॥

हिन्दी—अरे ! गङ्गा की लहरों से निर्मल शिर वाले भगवान् शिव की कृपा से भोगों को पाकर कहीं (आप) मोह से विचारहीन व्यक्तियों की भांति अभिमान युक्त न हो जायें क्योंकि जो स्मार्त ब्राह्मणों द्वारा प्रणाम किये जाते हैं तथा सकलश्रीक नभोगामी हैं ऐसे यह भगवान् सूर्य भी अपनी अङ्गभूत किरणों को समेट कर अस्ताचल को जा रहे हैं । (अर्थात् इस प्रकार महात्माओं को भी सूर्यास्त काल देखकर शिवजी की आराधना में लापरवाही नहीं करनी चाहिए) ।

एतदाकर्ण्य नरपतिः सांध्यं विधिमन्वतिष्ठत् ।

सुधा—एतदिति । एतत् = इदम् । आकर्ण्य=श्रुत्वा । नरपतिः=भूपतिः । सान्ध्यम्= सन्ध्योपासनम् विधिम् = कर्म । अन्वतिष्ठत् = अनुष्ठितः संजातः ।

हिन्दी—यह सुनकर नरपति सन्ध्योपासन विधि में लग गये ।

क्रमेण प्रचुरचलच्चाषकुलकालकान्तिकाशिभिर्बहलतमःकल्लोलैरालोडिते लोके लोकेश्वरो विहितविकालवेलाव्यापारः पारसीकोपनीतपारावारपारीणपारावतपतत्त्रिपञ्जरसनाथे विकीर्णवासधूलिनि धूपधूममुचि विचित्रचित्रशालिनि प्रान्तप्रदीपितदीपदीप्तिदण्डखण्डिततमसि सज्जितशय्ये शय्यागृहे गृहीतस्पृहणीयाङ्गरागो रागसागरकल्लोललोचनयानया प्रियया प्रियंगुमञ्जर्या अलीककलहकोपकुटिलभ्रमद्भ्रूकोणतर्जनजनितस्मितः स्मरविकारकारिकरिकलभकुम्भविभ्रमायमाणोत्तुङ्गपीवरकुचकुम्भपीठमारोपितो रजनीमनैषीत् ।

सुधा—क्रमणेति । क्रमेण = क्रमशः । प्रचुरचलच्चाषकुलकालकान्तिकाशिभिः— प्रचुरचलतः = बहुचपलस्य चाषकुलस्य = चाषनामकीटविशेषसमूहस्य कालकान्तिकाशिभिः = कृष्णदीप्तिप्रकाशिभिः । वहलतमः कल्लोलैः—प्रचुरान्धकारकल्लोलैः । आलोडिते = मथिते । लोके = संसारे । लोकेश्वरः = लोकनायकः विहितविकालवेला-

व्यापारः—विहितः = सम्पादितः विकाले = विशिष्टसमये वेलाव्यापारः = सामयिकक्रिया येन तादृशः। पारसीकोपनीतपारावारपारीण पारावतपतत्रिपञ्जरसनाथे—पारसीकै = पारसीकजनैः उपनीते = आहृते पारावारपारीणे = समुद्रपारानीते पारावतपतत्रिपञ्जरसनाथे = कपोतपक्षिपंजरयुक्ते विकीर्णवासधूलिनि—प्रसृतः वासः = सुरभिः धूलिः=रजो यत्र तादृशे। धूपधूममुचि—सुगन्धिधूममुचि। विचित्रचित्रशालिनि= विचित्राणि अद्भुतानि चित्राणि यत्र तादृशे प्रान्तप्रदीपितदीपदीप्तिदण्डखण्डिततमसि—प्रान्ते = कोणे प्रदीपितेन = प्रज्वलितेन दीपस्य दीप्तिदण्डेन = प्रकाशदण्डेन खण्डितम् = नाशितम् तमः = अन्धकारो यत्र तादृशे। सज्जितशय्ये—सज्जिता शय्या यत्र = आस्तीर्णशयनीये। शय्यागृहे—शयनकक्षे। गृहीतस्पृहणीयाङ्गरागः—गृहीतः = अङ्गीकृतः स्पृहणीयः = मनोरमः अङ्गरागः = अङ्गलेपो येन तादृशः। रामसागरकल्लोललोचनया—रागसागरस्य = प्रेमसिन्धोः कल्लोलरूपे तरङ्गरूपे लोचने = नयने यस्यास्तया। अनया = एतया। प्रियङ्गुमञ्जर्या = तन्नामराजमहिष्या सह। अलीककलहकोपकुटिलभ्रमद्भ्रूकोणतर्जनजनितस्मितः—अलीकस्य = असत्यस्य कलहस्य कोपेन = क्रोधेन कुटिलेन = वक्रेण भ्रमता भ्रूकोणेन = भ्रूप्रान्तेन यत् तर्जनम् = वर्जनम्, तेन जनितम् = जातम् = स्मितम् मृदुहासः यस्य तादृशो नृपः। स्मरविकारकारि करिकलभकुम्भविभ्रमायमाणोत्तुङ्गपीवरकुचकुम्भपीठम्—कामविकारकारि, करिकलभस्य = गजशावकस्य कुम्भं विभ्रमायमाणम् = भ्रमोत्पादकम् उत्तुङ्गम्=उन्नतम् पीवरम् = स्थूलम् कुचकुम्भम्= पयोधरकुम्भसदृशम्। पीठम् = विष्टरम्। आरोपितः = अध्यारूढः। रजनीम् = निशाम्। अनैषीत् = क्षपितवान्।

हिन्दी—क्रमशः पर्याप्त चञ्चल चाष कटि विशेष के झुण्ड की काली कान्ति वाले घने अन्धकार के कल्लोलों से संसार के मथित हो जाने पर लोकेश्वर वेलानुसार समस्त कार्य सम्पादित कर पारसीक (फारसी) लोगों के द्वारा लाये गये समुद्रपारी कबूतर-पक्षियों के पिंजड़ों से युक्त, बिखरती हुई—सुगन्धित धूलवाले, धूप के धुये को निकालने वाले (छोड़ने वाले) विचित्र चित्रों से युक्त, एक कोने में जलते हुए दीपक के दीप्तिदण्ड से नष्ट किया जा रहा है। अन्धकार जिसका ऐसे, शय्या से सुसज्जित शयन कक्ष में मनोरम अंग राग (सुगंधित लेप) लगाये हुए प्रेमरूपी सागर की कल्लोलों के समान सुन्दर नयनों वाली इस प्रियङ्गुमञ्जरी प्रियतमा के साथ झूठी कलह के क्रोध के कारण टेंढी और घुमाई भौंहों के छोर से डांटने के कारण उत्पन्न मृदु मुस्कान वाले राजा ने काम विकार को उत्पन्न करने वाले गजशावक के कुम्भस्थल को भ्रमित करने वाले ऊंचे तथा स्थूल पयोधर कुम्भके समान पीठ (आसन—बिछोना) पर आरोपित होकर रात्रि व्यतीत की।

एवमस्य सकलसंसारसुखपरम्परामनुभवतो यान्ति दिवसाः।

सुधा—एवमिति। एवम् = इत्थम्। सकलसंसारसुखपरम्पराम्—सकलस्य संसारस्य निखिललोकस्य सुखपरम्पराम् = सुखभोगक्रियाम् अनुभवतः = अनुभवं कुर्वतः अस्य = एतस्य नृपस्य। दिवसाः = दिनानि। यान्ति = गच्छन्ति।

हिन्दी—इस प्रकार सकल संसार की सुख परम्पराओं का अनुभव करते हुए इसके दिन व्यतीत होने लगे।

कदाचिच्चारुचामीकराचलचलद्देहाधिदेवतेव बहुधानन्दने सुरुचिरवायौवनारम्भे सुरतोत्सवमनुभवन्ती पत्युः प्राणप्रिया प्रियंगुमञ्जरी गर्भं बभार।

सुधा—कदाचिदिति। कदाचित् = कदापि। चारुचामीकराचलद्देहाधिदेवता इव—चामीकराचलो मेरुस्तस्य चलदेहा अधिष्ठातृदेवतेव। बहुधानन्दने—बहुधा = प्रायः नन्दयति हर्षयति इति तस्मिन्। सुरुचिर वा—सुष्ठु रुचिः = इच्छारवः = स्वरो यस्याः सा पत्युः = भर्त्तुः। प्राणप्रिया = प्राणवल्लभाः। प्रियङ्गुमञ्जरी = तदभिधाना राज्ञी। यौवनारम्भे—यौवनस्य = तारुण्यस्य आरम्भे = आदौ। सुरतोत्सवम्—सुरतम् = मोहनम्। अनुभवन्ती = अनुभवं विदधती। गर्भम् बभार = गर्भम् धारयामास। यद्वा—बहुधानन्दने = नन्दनाख्ये। सुरुचिरवायौ—सुष्ठु = अतिशयेन रुचिरवायुर्यत्र तादृशे। वनारम्भे वनानाम् = काननानाम् आरम्भः आदिः अग्रम् प्रधानं वा। यदि वा वनान्यारम्यन्तेऽनेनेति कृत्वा वनारम्भः। शतानन्देन हि प्रथमं नन्दनं सृष्ट्वा तद् वृक्षावयवैर्बीजशाखादिभिरितरवनानि जगति सृष्टानि। सुरतोत्सवम्—सुरतायाः = देवत्वस्योत्सवमनुभवती प्रियङ्गुमंजरी गर्भं धारयामास।

हिन्दी—कदाचित् सुन्दर सुमेरु पर्वत (स्वर्ण पर्वत) की गतिशील अधिदेवता के के समान बहुधा आनन्द देने वाले यौवनारंभ में रुचिकर शब्द (आवाज) वाली, पति की प्राणवल्लभा रानी प्रियङ्गुमञ्जरी ने सुरतोत्सव का अनुभव करती हुई गर्भ धारण किया।

तेन च विकचचूतमञ्जरीव कोमलफलबन्धेन बन्धुररमणीयाकृतिः, चन्द्रकलेव कलाप्रवेशेनोपचीयमानप्रभा, प्रभातवेलेवोन्मीलदंशुमालिमण्लेनानन्द्यमाना, रत्नाकरतरङ्गमालेवान्तःस्फुरन्माणिक्यकान्तिकलापेनोद्भासमाना, गर्भसंदर्भितेन लावण्यपरमाणुपुञ्जेन व्यराजत राजमहिषी।

सुधा—तेनेति। च = तथा। विकचचूतमञ्जरीव—विकचचूतस्य = विकसिताम्रस्य मञ्जरी इव। कोमलफलबन्धेन = कुसुमान्तगूंढ फलारम्भकरसकणिकारूपोबन्धस्तेन। बन्धुरमणीयाकृतिः—मनोरमस्वरूपा। चन्द्रकला इव = चन्द्रकान्तिरिव। कलाप्रवेशेन = कान्तिप्रवेशेन। उपचीयमानप्रभा = उपचीयमाना = संगृहीता प्रभा = दीप्तिः। प्रभातवेला इव = प्रत्यूष काल इव। उन्मीलदंशुमालिमण्डलेन = उन्मीलतः = उदतः अंशुमालिनः = सूर्यस्य मण्डलेन = वृत्तेन। आनन्द्यमानः = प्रशंस्यमाना। रत्नाकरतरङ्गमाला इव रत्नाकरस्य = समुद्रस्य तरङ्गमाला = वीचिपंक्तिरिव। अन्तःस्फुरन् माणिक्य कान्तिकलापेन—अन्तःफुरताम् = मध्यस्फुटताम् माणिक्यानाम् = रत्नानाम् कान्तिकलापेन = दीप्त्या। उद्भासमाना = देदीप्यमाना। राजमहिषी = प्रियङ्गुमञ्जरी। तेन = अमुना। गर्भसंदर्भितेन—गर्भाभिव्यक्तिहेतुना। लावण्यपरमाणुपुञ्जेन = लावण्यस्य = सौन्दर्यस्य परमाणुपुञ्जेन = परमाणु—निचयेन। व्यराजत = रेजे।

हिन्दी—विकसित आम्रमञ्जरी के समान कोमलफलबन्ध से मनोरम आकृतिवाली, चन्द्रकला के समान कलाप्रवेश से एकत्र प्रभा, प्रभातवेला के समान उगते हुए अंशुमाली (सूर्य) के मण्डल से प्रशंसित समुद्र तरङ्गमाला के समान भीतर छिपे हुए रत्नों की किरणों से चमकती हुई गर्भ से प्रकट होने वाली उस सौन्दर्य राशि से राजमहिषी (प्रियङ्गुमंजरी) सुशोभित हुई ।

गच्छत्सु च केषुचिद्दिवसेषु सुवृत्ततुहिनाचलगण्डशैलयुगलमिव बालमयूरिकाक्रान्तम्, अनङ्गसौधशिखरद्वयमिव शेखरीकृतेन्द्रनीलकलशम्, उज्ज्वलरौप्यनिधानकुम्भयुग्ममिव भुजगसंगतमुखम्, उल्लासिहंसमिथुनमिव चञ्चूत्खातपङ्किलकमलकन्दम्, ऐरावतमस्तकपिण्डपाण्डुरमुच्चचूचुकश्यामलिम्नाऽलंकृतमापूर्यमाणमन्तःक्षीरेण क्षणं क्षणमखिद्यत पयोधरद्वन्द्वमुद्वहन्ती ।

सुधा—गच्छत्स्विति । च । केषुचिद्दिवसेषु = कतिचिद्दिनेषु । गच्छत्सु व्यतीतेषु । सुवृत्ततुहिनाचलगण्डशैलयुगलम् इव सुवृत्तस्य = मण्डलाकारस्य तुहिनाचलस्य = हिमालयस्य गण्डशैलयुगलम् = गण्डस्थलमिथुनम् इव । बालमयूरिकाक्रान्तम् = शिशुमयूरिणीग्रस्तम्, अनङ्गसौधशिखरद्वयम् इव—अनङ्गसौधस्य = कामप्रासादस्य शिखरद्वयम् = श्रेणियुगलम् इव शेखरीकृतेन्द्रनीलकलशम् = शिरोधृतेन्द्रनीलमणिकुम्भम् । उज्ज्वलरौप्य निधानकुम्भयुग्मम् इव—शुभ्ररजतमुद्राकलशयुगलम् इव । भुजगसंगतमुखम्—सर्पावरुद्धाननम् । उल्लासिहंसमिथुनम् इव—प्रसन्नहंसयुगलमिव । चञ्चूत्खातपङ्किलकमलकन्दम्—चञ्च्वा उत्खातम् पंकिलम् कमलकन्दम्—चञ्चुनिष्काषितरजोयुक्तविसखण्डम् । ऐरावतमस्तकपिंडपाण्डुरम् = ऐरावतगजभालपिण्डमिव शुभ्रम् । उच्चचूचुकश्यामलिम्ना = उन्नतचूचुकश्यामकान्त्या । अलङ्कृतम् = शोभितम् । अन्तःक्षीरेण = आन्तरिकदुग्धेन आपूर्यमाणम् = परिपूर्णम् । पयोधरद्वन्द्वम् = कुचयुगलम् । उद्वहन्ती = धारयन्ती । क्षणं क्षणम् = प्रतिक्षणम् । अखिद्यत = खिन्ना बभूव ।

हिन्दी—कुछ दिन व्यतीत होने पर गोल हिमालय के दोनों गण्डस्थलों के समान छोटी मयूरिनी से आक्रान्त, कामप्रासाद के दो शिखरों पर चढ़े इन्द्रनीलमणि के दो कलशों जैसे, उज्ज्वल चांदी के बने कुम्भ युगल के समान जिनका मुख किसी सांप से अवरुद्ध हो गया हो, प्रसन्न हंस के जोड़े के समान, जिसने कि अपनी चोंच से कीचड़ से सने विसखण्ड (भसीड़) को उखाड़ रखा हो, ऐरावत हाथी के मस्तक पिण्ड के समान शुभ्र, उच्च चूचुक की श्यामलता से अलङ्कृत, अन्दर से दूध से भरे हुए पयोधर युगल को वहन करती हुई (रानी) प्रतिक्षण खिन्न हो रही थी ।

बबन्ध च चन्द्रकलाङ्कुरकवलने स्पृहाम् । अभिलाषमकरोच्च चञ्चलचक्ररोक कुलकलरवरमणीय विकचचूतवनविहारेषु ॥ स्पर्शममन्यत बहु बहलमभ्यर्गावकीर्णविकसितकमलवननिष्यन्दिमकरन्द विन्दोर्मन्दतरतरङ्गसङ्गशीतलमलयमारुतस्य । चिन्तयांचकार च चतुरुदधिलावण्यरसमास्वादयितुम् । अभ्यवाञ्छदतुच्छमच्छमशेषममन्दमन्दरमन्थानमन्थोत्पन्नममृतमातृप्ति पातुम् ।

सुधा—ववन्धेति। चन्द्रकलाङ्कुरकवलने—चन्द्रकलाङ्कुरस्य = चन्द्रकिरण रूपाङ्कुरस्य कवलने = ग्रसने। स्पृहाम् = इच्छाम्। ववन्ध = अवध्नात् चलच्चञ्चरीककुलकलरव-रमणीयविकचचूतवनविहारेषु—चलच्चञ्चरीककुलस्य = चञ्चलभ्रमरसमूहस्य कलरवेण = मधुरकूजनेन रमणीयेषु = मनोरमेषु विकचचूतवनविहारेषु = विकसिताम्रवनविचरणेषु। अभिलाषम् = आकांक्षाम्। अकरोत् = चकार। वहलमभ्यर्णावकीर्णविकसितकमलवन-निष्यन्दि मकरन्दविन्दोः—वहलमभ्यर्णावकीर्णम्—अतिसघनविस्तृतम् विकसितम् यत्कमल-वनम् = पद्मारण्यम् तस्मान्निष्यन्दिनः = निर्झरतः मकरन्दविन्दोः = मधुरसविन्दोः। मन्दतरतरङ्गसङ्गशीतलमलयमारुतस्य = अतिमन्दवीचियुक्तशीतलमलयाचलपवनस्य। स्पर्शम् = आलिङ्गनम्। बहु अमन्यत = धन्यममन्यत। चतुरुदधिलावण्यरसम् = चतुः-समुद्रसौन्दर्यरसम्। आस्वादयितुम् = आस्वादनं ग्रहीतुम्। चिन्तयाञ्चकार = विचारया-मास। अतुच्छम् = बहु। अच्छम् = स्वच्छम्। अशेषम् = सम्पूर्णम्। अमन्दमन्दरमन्थान-मन्थोत्पन्नम्। अमन्दमन्दरात् = प्रदीप्तमन्दराचलात् मन्थानमन्थोत्पन्न = मन्थानमथन-जातम्। अमृतम् = सुधारसम्। आतृप्ति = तृप्तिपर्यन्तम्। पातुम् = पानार्थम्। अभ्य-वाञ्छत् = ऐच्छत्।

हिन्दी—चन्द्रकला की किरणों के उपभोग की अभिलाषा की। चञ्चल चञ्चरीक कुल के कलरव से मनोरम, विकसित आम्रवनों में विचरण करना चाहा अति सघन फैले हुए विकसित कमलवन से टपक रहे मकरन्द विन्दु की अतिमन्द तरङ्गों का साथ होने के कारण शीतल मलय पवन के स्वर्श को धन्य माना तथा चारों समुद्रों के लावण्यरस का आस्वादन करने का विचार किया।

इत्यनेकधोत्पन्नगर्भप्रभावादनुरूपदोहदसंपत्तिसंपन्नाधिककमनीयकान्तिरुल्लसद्बहलमृगमदजललिखितविचित्रपत्रभङ्गभव्यविपुलकपोलमण्डलेन मुखेन शशाङ्कमन्तःस्फुरत्कलङ्कमुपहसन्ती द्विगुणमवनिपतेस्तस्य प्रिया प्रियंगुमञ्जरी बभूव।

सुधा—इत्यनेकेति। इति = इत्थम्। अनेकधोत्पन्न गर्भप्रभावात् = बहुप्रकार जात गर्भप्रभावात्। अनुरूपदोहदसम्पत्ति सम्पन्नाधिककमनीयकान्तिः—अनुरूपया = अनु-कूलया, दोहदसम्पत्या = गर्भसम्पदा सम्पन्ना = संयुक्ता अधिककमनीया = अतिमनोरमा कान्तिः = दीप्तिः यस्याः सा। उल्लसद्बहलमृगमदजललिखित विचित्रपत्रभङ्गभव्य-विपुलकपोलमण्डलेन—उल्लसता = विराजता वहलेन = गाढेन मृगमदजलेन = कस्तू-रिकावारिणा, लिखितम् = अङ्कितम विचित्रम् = आश्चर्यकरम् पत्रभङ्गम् = पत्ररचनम्, तेन भव्यम् = सुन्दरम्, विपुलम् = विशालञ्च कपोलमण्डलम् = कपोलवृत्तम् तादृश-मुखेन = आननेन। अन्तःस्फुरत्कलङ्कम्—अन्तः मध्ये स्फुरत् = स्फुटत् कलङ्कम् = मलम् यस्य तादृशम्। शशाङ्कम् = चन्द्रम् उपहसन्ती = उपहासं कुर्वन्ती, प्रियङ्गुमञ्जरी = राजमहिषी। तस्य = अवनिपतेः = तस्य नृपस्य द्विगुणम् प्रिया—पूर्वाधिकप्रीतिकरा। बभूव = अभवत्।

हिन्दी—इस प्रकार विविध उत्पन्न गर्भ-प्रभावों से अनुरूप गर्भ-रूपी सम्पत्ति से सम्पन्न अत्यधिक कमनीय कान्ति वाली, शोभायुक्त गाढे कस्तूरिका जल से बनायी

गयी विचित्र पत्र रचना के कारण भव्य विशाल कपोलमण्डल वाले मुख से कलङ्क पूर्ण चन्द्रमा का उपहास करती हुई रानी प्रियङ्गुमञ्जरी उस राजा की दूनी प्रिया बन गई।

तथाहि—

सा समीपस्थितज्येष्ठा पयःपूर्णपयोधरा।
अग्रप्रावृडिवाह्लादमकरोत्तस्य भूपतेः ॥ २३ ॥

अन्वयः—समीपस्थितज्येष्ठा, पयःपूर्णपयोधरा, सा, अग्रप्रावृड् इव तस्य भूपतेः आल्हादम् अकरोत् ॥ २३ ॥

सुधा—सा समीपेति। समीपस्थितज्येष्ठा–समीपे = निकटे स्थिताः = अवस्थिताः। ज्येष्ठाः = वृद्धस्त्रियः ज्ञातप्रसवस्वरूपाः यस्याः। तथा पयःपूर्णपयोधरा = पयसा = दुग्धेन पूर्णौ = युक्तौ पयोधरौ = स्तनौ यस्याः। सा = प्रियङ्गुमञ्जरी। अग्रप्रावृड् इव– अग्रम् = प्राक् प्रावृषोऽग्रप्रावृट् = आषाढ इव। तस्य = एतस्य। भूपतेः = नृपतेः। आह्लादनम् = मुदम्। अकरोत् = चकार। पक्षे समीपस्थितज्येष्ठा–समीपे = पार्श्वे स्थितः = अवस्थितः ज्येष्ठः = शुक्रो मासो यस्याः। तथा–पयः पूर्णपयोधरा–पयसा = वारिणा पूर्णः पयोधरो मेघो यस्याः। भुवो हि प्रावृट् परमोदारकारणीति भुवः पत्युः आह्लादनं करोति ॥ २३ ॥

हिन्दी—जैसा कि—समीप में जिसके वृद्धा स्त्रियाँ बैठी रहती थीं तथा जिसके स्तनों में दूध भर आया था, ऐसी रानी प्रियङ्गुमंजरी अग्रवर्षा (आषाढ की पहली वर्षा) के समान उस राजा को प्रसन्न किये रहती थी ॥ २३ ॥

(पक्ष में) ज्येष्ठ का महीना जिसके समीप में है तथा जल से पूर्ण जिसके मेघ हैं ऐसी आषाढमास की प्रथमवर्षा के समान उस भूपति का मनोरञ्जन करती थी ॥२३॥

एवमविरतविविधवाञ्छोत्सवाविच्छेदकर्तरि भर्तरि, संज्ञयैवाज्ञाकारिण्यपारे परिवारे बहुभङ्गिभाग्योपभोगक्रमेणातिक्रामति कुत्रचित्काले, कालकलाकुशल-श्लाघनीये पूर्णप्राये प्रसवसमये, विलीनजात्यशातकुम्भभासि भास्वत्युदयमारोहति, हततिमिरासु दिक्षु क्षणमेकं सा प्रसववेदनाव्यतिकरमन्वभूत्।

सुधा—एवमिति। एवम् = इत्थम्। अविरतविविधवाञ्छोत्सवाविच्छेदकर्तरिनिरंतर-विभिन्नेच्छोत्सवसंलग्ने। भर्तरि = स्वामिनि। संज्ञया एव = संकेतेनैव। आज्ञाकारिणि = आदेशपालने। अपारे = असंख्ये परिवारे = वंशे। बहुभङ्गिभाग्योपभोगक्रमेण— बहुभङ्गिना = अनेक प्रकारेण भाग्योपभोगक्रमेण – क्रमशः भाग्यप्रदत्तोपभोगेन। कुत्र-चित् = क्वापि। काले = समये। अतिक्रामति = व्यतीते सति। कालकलाकुशलश्लाघनीये कालकलायाम् = ज्योतिषि कुशलैः = प्रवीणैः प्रशंसनीये। पूर्णप्राये–अधिकांशतः सम्पूर्णे। प्रसवकाले = दोहदसमये। विलीनजात्यशातकुम्भभासि–विलीनजात्या = लीनगम्या शात-कुम्भभाः = हिरण्यकान्तिः इव भाः कान्तिर्यस्य तस्मिन् = भास्वति = रवौ। उदयम् उदयाचलम् आरोहति = आरोहणं कुर्वति। हततिमिरासु–हतम् = दूरीकृतम् तिमिरम्

यानिस्तासु । दिक्षु = आशासु । एकम् क्षणम् = निमिषमेकम् । सा = राज्ञी । प्रसववेदना-व्यतिकरम् = प्रजननकालीनपीडाम् । अन्वभूत् = अनुबभूव ।

हिन्दी—इस प्रकार विविध इच्छाओं को निरन्तर उत्सवों आदि के द्वारा राजा के पूरा करते रहने पर संकेत मात्र से अपार परिवार के आज्ञापालन में लगे रहने पर विविध प्रकार भाग्य का उपभोग करते हुए इधर-उधर कुछ समय बिता देनेपर, काल कला (ज्योतिष कार्य) में कुशल गणकों द्वारा प्रशंसनीय, लगभग पूर्ण प्रसवकाल में पिघले हुए सुवर्ण की कान्ति के समान दीप्तिवाले भगवान् भास्वान् (सूर्य) के उदया-चलपर आरोहणकाल में (सूर्य निकलते समय), दिशाओं के अन्धकार से रहित (नष्ट) हो जाने पर क्षण भर को उस प्रियङ्गुमंजरी ने प्रसव पीडा का अनुभव किया ।

ततश्च—

प्रभासंयोगिविख्यातं योग्यं नालस्यकर्मणः ।
पृथ्वीव पुण्यतीर्थं सा कन्यारत्नमजीजनत् ॥ २४ ॥

अन्वयः—सा प्रभासंयोगिविख्यातम् नालस्य कर्मणः योग्यम् पृथ्वी पुण्यतीर्थम् इव कन्यारत्नम् अजीजनत् ॥ २४ ॥

सुधा—प्रभा संयोगीति । सा = प्रियङ्गुमंजरी । प्रभा संयोगि दीप्तियुक्तम् विख्यातम् प्रसिद्धम् । नालस्य–नलस्य नृपतेरिदं नालभूतस्य = नलसम्बन्धिनः कर्मणः–कर्म = अगण्यं पुण्यात्मकम् तस्य । योग्यम् = उचितम् । कन्यारत्नम् = कन्यैव रत्नम् तत् = सुतारत्नम् । पृथ्वी = भूमिः पुण्यतीर्थम् इव । तदपि प्रभासम् = प्रभासनामकम् । योगिभिः = योगमार्गरतैः विख्यातम् आलस्य = असारस्य कर्मणो न योग्यम् । अथ च आलस्य कर्मणो न योग्यम् । किं तर्हि उद्यमक्रियायोग्यम् । ततस्तदर्थं केनापि न प्रमदि-तव्यमिति भावः ॥ २४ ॥

हिन्दी—और तब—उस (प्रियङ्गुमंजरी) ने कान्तियुक्त विख्यात राजा नल के पुण्यात्मक कर्म के योग्य कन्यारत्न को उसी प्रकार जन्म दिया जैसे पृथ्वी ने योगियों के द्वारा विख्यात असार अथवा, आलस्य कर्म के अयोग्य अर्थात् उद्यम क्रिया योग्य प्रभास नामक पुण्यतीर्थ को उत्पन्न किया ॥ २४ ॥

तत्र च दिवसे 'विकसितकुमुदकुन्दकान्तकीर्तनीयकीर्तिसुधया धवलानि करि-ष्यत्येषा प्रवर्धमानास्मन्मुखानि' इति प्रियादिव प्रसन्नाः समपद्यन्त दश दिशः । 'मा स्म पुनरस्मदगुणानेषापहार्षीत्' इत्यपहृतैकैकसारगुणाः सभया नमस्यन्त इव तस्यै कुसुमाञ्जलिममुञ्चश्चन्द्रादयो देवाः । स्वकान्तिसर्वस्वापहारभयादिव दिवि ननृतुरप्सरसः । 'किमस्याः समं समुत्पन्नमन्यदपि कन्यारत्नम्' इत्यन्वि-ष्यन्त इव परितः परिबभ्रमुः सुरभयः क्षमाः समीरणाः ।

सुधा—तत्र चेति । तत्र च दिवसे = तस्मिन् दिने । एषा = इयम् । प्रवर्धमाना वर्धमाना । अस्मन्मुखानि = अस्मदाननानि । विकसितकुमुदकुन्दकान्तकीर्तनीय कीर्ति-सुधया—विकसितकुमुदकुन्दकान्तिरिव = विकचकुमुदकुसुमप्रभेव कीर्तनीया = प्रशंसनीया

या कीर्तिरूपी सुधा तया। धवलानि=उज्ज्वलानि करिष्यति=विधास्यति। इति प्रियात्= इति प्रियकारणात् इव दशदिशः=दशसंख्याकाः काष्ठाः। प्रसन्नाः=प्रसादिताः। समपद्यन्त=समजायन्त। पुनः=भूयः। एषा=कन्यकेयम्। अस्मद्गुणान्=अस्मद् वैशिष्ट्यानि। मास्म अपहार्षीत्=मापहरेत्। इति=एवम्। अपहृतैकैकसारगुणाः अपहृताः=चोरिताः एकैकसारगुणाः=प्रत्येक प्रमुखगुणाः येस्ते। चन्द्रादयः देवाः= सोमादि सुराः। सभयाः=भीताः। नमस्यन्तः=प्रणमन्तः इव। तस्यै=कन्यकायै। कुसुमाञ्जलिम्=पुष्पाञ्जलिम्। अमुञ्चन्=अत्यजन्। स्वकान्तिसर्वस्वापहारभयात् इव—स्वस्य=आत्मनः कान्तिसर्वस्वस्य प्रभाप्रमुखांशस्य अपहारभयात् इव=अपहरण-भियेव। दिवि=स्वर्गे। अप्सरसः=देवाङ्गनाः ननृतुः=नृत्यं चक्रुः। अस्याः समम्= एतस्याः सदृशम्। अन्यत् अपि=अपरमपि। कन्यारत्नम्=पुत्रीरत्नम्। समुत्पन्नम्= सञ्जातं किमिति आश्चर्यम्। इति=एवम्। अन्विष्यन्तः=अन्वेषणं कुर्वन्तः। सुरभयः= सुगन्धियुक्ताः। क्षमाः=समाः सश्रीकाश्च समीरणाः=वाताः परितः=सर्वतः। परि-वभ्रमुः=भ्रमणं चक्रुः।

हिन्दी—उस दिन विकसित कुमोदिनी के पुष्पकान्ति के समान प्रशंसनीय कीर्ति-सुधा से यह कन्या बड़ी होकर हमसब मुखों को उज्ज्वल करेगी।'' मानों इस प्रिय आशा से दशो दिशाएँ प्रसन्न हो गईं। फिर ''यह हमारे गुणों को चुरा न ले'' मानो प्रमुख गुणों से युक्त चन्द्रादि देवों ने डर कर प्रणाम करते हुए उसे कुसुमाञ्जलि दी। मानों अपने कान्ति सर्वस्व के अपहरण के भय से स्वर्ग में अप्सरायें नाच उठीं। क्या इसके समान कोई और भी कन्यारत्न उत्पन्न हुआ है? मानों यह ढूँढते हुए सुगन्धियुक्त समर्थ समीरण चारो ओर चलने लगे।

किं बहुना—

अमन्दानन्दनिष्यन्दमपास्तान्यक्रियाक्रमम्।
जगज्जन्मोत्सवे तस्याः पीतामृतमिवाभवत्॥ २५॥

अन्वयः—तस्याः जन्मोत्सवे अमन्दानन्दनिष्यन्दम्, अपास्तान्यक्रियाक्रमम् जगत् पीतामृतम् इव अभवत्॥ २५॥

सुधा—अमन्देति। तस्याः=कन्यायाः जन्मोत्सवे=जन्मोत्सवकाले। अमन्दानन्द-निष्यन्दम्=अमन्दस्य=तीव्रस्यानन्दस्य=प्रसन्नतायाः निष्यन्दम्=प्रवाहम्। अपास्तान्य-क्रियाक्रमम्·त्यक्तान्यक्रियाविधिम्। जगत्=विश्वम्। पीतामृतम् इव=पीतसुधारस-मिव। अभवत्=अभूत्॥ २५॥

हिन्दी—अधिक क्या—उस कन्या के जन्मोत्सव पर अमन्द आनन्द प्रवाह में अन्य क्रिया क्रम को परित्याग कर संसार अमृत पिया हुआ जैसा (आनन्द मग्न) हो गया॥ २५॥

अथ बहोः कालादनुरूपप्रौढप्रहरणप्राप्तिपीतहृदयेनास्फोटितमिव सकलजग-द्विजयव्यवसायसाहसिकेन कुसुमसायकेन, चिरादुचिताश्रयलाभमुदितमनसा स्फू-

स्फूर्जितमिव शृङ्गाररसेन, शुचिकाशकुसुमहास्येन योग्यसहकारिकारणोपलम्भपूर्णमनोरथेन वलिगतमिव वसन्तमासेन, निजकर्मणः सफलतां मन्यमानेनोच्छ्वसितमिव मलयानिलेन, चिरकालोपलब्धश्लाघ्याधारतया हसितमिव रूपसंपदा, विकसितमिव लावण्यलक्ष्म्या, प्रवृत्तमिव समस्तस्त्रीलक्षणाधिदेवतया, कलकलितमिव कान्तिकलापश्रिया ।

सुधा—अथेति । अथ = अनन्तरम् । बहोः कालात् = अति समयात् । अनुरूपप्रौढप्रहरणप्राप्तिपीतहृदयेन—अनुरूपस्य = अनुकूलस्य प्रौढस्य च = सुदृढस्य च प्रहरणस्य = वाणस्य प्राप्त्या = प्राप्तिकारणेन पीतम् = जितम् हृदयम् = मनः येन तादृशेन । सकलजगद्विजयव्यवसायसाहसिकेन—सकले = निखिले जगति लोके विजयव्यवसायस्य = जयोद्यमस्य साहसिकः = कृतसाहसस्तेन । कुसुमसायकेन=पुष्पधन्वना कामदेवेन । आस्फोटितम् इव = उद्यतमिव । शृङ्गाररसेन । चिरात् = बहुकालात् । उचिताश्रयलाभमुदितमनसा—उचितेन = उपयुक्तेन आश्रयलाभेन = शरणलाभेन मुदितमनसा = प्रसन्नचेतसा । स्फूर्जितम् इव = उद्दीप्तम् इव । शुचिकाशकुसुमहास्येन—शुचि = पवित्रम् काशकुसुमम् जवापुष्पमेव हास्यम्=हसितम् यस्य तादृशेन । योग्यसहकारिकारणोपलम्भपूर्णमनोरथेन—योग्येन = उत्तमेन सहकारिकारणोपलम्भपूर्णमनोरथेन—योग्येन = उत्तमेन सहकारिकारणोपलम्भेन = आम्रकारणप्राप्तिहेतुना, सहायककारणप्राप्तिहेतुना वा । पूर्णम् मनोरथम् = अभिलषणम् यस्य तादृशेन । वसन्तमासेन = ऋतुराजमासेन कामेन । वलिगतम् इव = उत्साहयुक्तम् इव । निजकर्मणः = स्वकार्यात् । सफलतां = साफल्यम् मन्यमानेन = अवधीर्यमाणेन । मलयानिलेन = मलयपवनेन । उच्छ्वसितम् = ऊर्ध्वंश्वसितमिव । चिरकालोपलब्धश्लाघ्याधारतया = बहुसमयात् प्राप्तप्रशंसाधारतया । रूप—सम्पदा = स्वरूपसम्पत्त्या । हसितमिव = उपहसितम् इव । लावण्यलक्ष्म्या = सौन्दर्यश्रिया । विकसितम् इव = स्फुटितम् इव । समस्तस्त्रीलक्षणाधिदेवतया—निखिलनारीचिह्नाधिदेवत्वेन । कान्तिकलापश्रिया = दीप्तिसमूहलक्ष्म्या । कलकलितम् इव = कलकलध्वनियुक्तम् इव ।

हिन्दी—अनन्तर बहुत काल से अनुकूल तथा सुदृढ शस्त्र प्राप्त करने से सकल संसार पर विजयरूपी व्यवसाय का साहस करने वाले कुसुम सायक (कामदेव) के द्वारा मानो प्रसन्न हृदय से उतावली होती हुई, चिरकाल से उचित आश्रय लाभ के कारण प्रसन्न मन शृङ्गार रस के द्वारा मानो उद्दीप्त योग्य सहकारी कारण उपलब्ध कर पूर्ण मनोरथ वाले वसन्त मास के द्वारा शुभ्र काशपुष्प से मानों उत्साहित, अपने कर्म से सफलता को मानने वाले मलयानिल द्वारा मानों उच्छ्वासित, अधिक समय से उपलब्ध प्रशंसनीय आधारता से रूपसम्पदा के द्वारा मानों उपहसित, सौन्दर्य लक्ष्मी से मानो विकसित, समस्त स्त्रीलक्षणों की अधिदेवता के द्वारा मानों प्रवृत्त, कान्तिकलाप की लक्ष्मी द्वारा मानों कलकल ध्वनि हो उठी ।

किं बहुना—

> सर्गव्यापारखिन्नस्य बहोः कालाद्विधेरपि ।
> आसीद्यामिमां विनिर्माय श्लाघ्यः शिल्पपरिश्रमः ॥ २६ ॥

अन्वयः—बहोः कालात् सर्गव्यापारखिन्नस्य विधेः अपि इमाम् विनिर्माय शिल्पपरिश्रमः श्लाघ्यः आसीत् ॥ २६ ॥

सुधा—सर्गव्यापारेति। बहोः कालात् = चिरात्। सर्गव्यापारखिन्नस्य = सृष्टिकर्मखिन्नस्य। विधेः = ब्रह्मणः अपि। इमाम् = एतां दमयन्तीम् विनिर्माय = सृष्ट्वा। शिल्पपरिश्रमः = कौशलश्रमः। श्लाघ्यः = प्रशंसनीयः। आसीत् = अभवत् ॥ २६ ॥

हिन्दी—चिरकाल से सृष्टि कार्य करने के कारण खिन्न (थके हुये) ब्रह्मा जी का भी शिल्पपरिश्रम इस दमयन्ती कन्या का निर्माण कर प्रशंसनीय बन गया ॥ २६ ॥

एवमस्याः सततविस्तीर्णस्वर्णपूर्णपात्रपूजितपूज्यद्विजन्मनि संपन्ने नामकर्मसमये संमान्य मान्यजनं जनेश्वरो वरप्रदानमनुस्मृत्य दमनकमुनेः 'दमयन्ती' इति नाम प्रतिष्ठितवान्।

सुधा—एवमिति। एवम् = इत्थम्। अस्याः = एतस्याः। नामकर्मसमये = नामकरणकाले। सततविस्तीर्णस्वर्णपूर्णपात्रपूजितपूज्यद्विजन्मनि सततम् = निरन्तरम् विस्तीर्णैः = विशालैः स्वर्णपूर्णपात्रैः = कनकमयपूर्णपात्रैः = पूजिताः = सत्कृताः पूज्यद्विजन्मानः = पूजनीयविप्राः यत्र तस्मिन्। सम्पन्ने = पूर्णतां याते सति। जनेश्वरः = नृपः मान्यजनम् = पूजनीय पुरुषम्। सम्मान्य = सत्कृत्य। वरप्रदानम् = वरदानवार्ताम्। अनुस्मृत्य = स्मृत्वा। दमनकमुनेः = दमनकनाममुनेः। 'दमयन्ती' इति। नाम = अभिधानम्। प्रतिष्ठितवान् = प्रख्यातम् कृतवान्।

हिन्दी—इस प्रकार इसके नामकरण (दष्ठौन) के समय पर निरंतर विशाल स्वर्णपात्रों के द्वारा पूज्य ब्राह्मणों को पूज कर नरपति ने मान्य पुरुषों का सम्मान कर वरदान देने वाली बात को स्मरण कर दमनक मुनि से 'दमयन्ती' नाम प्रतिष्ठित कराया।

क्रमेण च प्रचुरामृतसंसिक्ता इव सुकुमाराः प्रसर्तुमारभन्ताङ्गावयवपल्लवाः, चकार च चञ्चच्चामीकररुचिररुचिराङ्गणमणिवेदिकासु कैश्चिद्दिवसैरनुच्चचरणप्रचारचारुचापल्यलीलाः, सहासमकरोत्परिजनं जनयन्ती बालकेलीः, स्वच्छन्दमानन्दयाञ्चकार पितरं तरङ्गभङ्गिरङ्गितेन, जननीमजीजनच्चातविस्मयां स्मितमुग्धदर्शितदन्तकान्तिकुन्दपुष्पमनिष्पन्नाक्षरमल्पाल्पं जल्पन्ती।

सुधा—क्रमेणेति। क्रमेण = क्रमशश्च। प्रचुरामृतसंसिक्ता इव—प्रचुरेण = महता अमृतेन = सुधारसेन संसिक्ता इव = सिञ्चिता इव सुकुमारा कोमलाः, अङ्गावयवपल्लवाः = शरीरावयवदलाः। प्रसर्तुम् = वर्धितुम् प्रारभन्त = प्रारेभिरे। चञ्चच्चामीकररुचिररुचिराङ्गणमणिवेदिकासु—चञ्चच्चामीकररुचिषु = दीप्यमानस्वर्णकान्तिषु रुचिरासु = सुन्दरासु अङ्गणमणिवेदिकासु = अजिरमणिस्थलीषु। कैश्चिद्दिवसैः = कतिपयैर्दिनैः। अनुच्चचरणप्रचारचारुचापल्यलीलाः—निम्नपादप्रचरणरुचिरचापल्यक्रियाः (घुटनों के बल चलने की सुन्दर चञ्चल क्रियाएं इति भाषायाम् बालकेलीः = शैशवक्रियाः। जनयन्ती = उत्पादयन्ती। परिजनम् = बन्धुजनम्। सहासम् = सानन्दम्। अकरोत् = चकार। तरङ्गभङ्गिरङ्गितेन = बालोचितानन्देन। स्वच्छन्दम् = स्वतन्त्रम्। पितरम् = जनकम्। आन-

दयाञ्चकार = प्रसादयामास । स्मितमुग्धदर्शितदन्तकान्तिकुन्दपुष्पम्—स्मितमुग्धेन दर्शिता = प्रदर्शिता दन्तकान्तिः = रदकान्तिरेष कुन्दपुष्पम् = कुन्दनामशुभ्रकुसुमम्, तादृशम् अनिष्पन्नाक्षरम् = अस्पष्टाक्षरम् । अल्पाल्पम् = किञ्चित्किञ्चित् जल्पन्ती = भाषयन्ती । जननीम् = मातरम् जातविस्मयाम् = संजाताश्चर्याम् । अजीजनत् = उत्पादयामास ।

हिन्दी—क्रमशः पर्याप्त अमृत—सिञ्चित जैसे सुकुमार अङ्गावयवरूपी पल्लवों ने फैलना आरम्भ किया चञ्चल चमकते हुए सोने की सुन्दर आँगन को मणिमय वेदिकाओं (चौतरियों) पर कुछ दिनों तक (उसने) घुटनों के बल चलकर सुन्दर चञ्चल लीलाएं कीं, बाललीलाओं को करते हुए पारिवारिक लोगों को प्रसन्न किया, आनन्द पूर्वक ढंग से पिता को स्वच्छन्द आनन्दित किया तथा मोहक मुस्कराहट से प्रदर्शित दांतों को कान्तिरूपी कुन्द पुष्प के समान कुछ अस्पष्टाक्षर बोलती हुई जननी को आश्चर्य में डालने लगी ।

किं बहुना—

अपि रेणुकृतक्रीडं नरेऽणुक्रीडयान्वितम् ।
तस्याः प्रौढं शिशुत्वेऽपि वयो वैचित्र्यमावहत् ॥ २७ ॥

अन्वयः—तस्याः रेणुकृतक्रीडम् अपि नरे अणुक्रीडया अन्वितम् शिशुत्वे अपि प्रौढम् वयः वैचित्र्यम् आवहत् ॥ २७ ॥

सुधा—अपीति । तस्याः—दमयन्त्याः । रेणुकृतक्रीडम् अपि रेणुना कृता क्रीडा यत्र = धूलिखेलनमपि । नरे = जने । अणुक्रीडया = सूक्ष्मक्रीडया । अन्वितम् = युक्तम् । शिशुत्वेऽपि = बालत्वेऽपि । प्रौढम् = वृद्धम् । वयःवैचित्र्यम् = वयसः = अवस्थायाः । वैचित्र्यम् = विचित्रताम् । आवहत् = अधारयत् ॥ २७ ॥

हिन्दी—अधिक क्या—उसके धूल में खेलने में मनुष्य की कुछ समान क्रीडा और बचपन में भी प्रौढ अवस्था की विचित्रता को धारण किया ॥ २७ ॥

एवमियमनवरतस्वैरविहाराहारिणि क्रमेणातिक्रामति शैशवे वयसि पितुर्नियोगात् गुरूपदेशात्साधुवृद्धसंवासाद् बुद्धिविकासाच्च नातिचिरेण, प्राप्ता नैपुण्य पुण्यकर्मारम्भेषु, जाता प्रवीणा वीणासु निराकुला कुलाचारेषु, कुशला शलाकालेख्येषु, विशारदा शारिदायेषु, प्रबुद्धा प्रबन्धालोचनेषु, चतुरा चातुरानाथजनचिकित्सासु ।

सुधा—एवमिति । एवम् = इत्थम् । इयम् = एषा । अनवरतस्वैरविहाराहारिणि = निरन्तरस्वच्छन्दविचरणाहारोपयुक्ते । शैशवे वयसि = बाल्यावस्थायाम् अतिक्रामति = समाप्ते सति । क्रमेण = क्रमशः । पितुः = जनकस्य । नियोगात् = आज्ञायाः । गुरूपदेशात् = गुरूणाम् = गुरुजनानाम् उपदेशात् = अनुशासनात् । साधुवृद्धसम्वासात् = साधूनाम् वृद्धानाञ्च संवासः तस्मात् = सज्जनवृद्धसंसर्गात् । बुद्धिविकासात् च = बुद्धेः = धियः विकासात् = प्रकाशात् । नातिचिरेण = अविलम्बेन । पुण्यकर्मारम्भेषु = पुण्यक्रियारम्भेषु । नैपुण्यम् = दाक्षिण्यम् । प्राप्ता = अधिगता । वीणासु = वीणावादनकलासु ।

प्रवीणा = कुशला। जाता = संजाता। कुलाचारेषु = उत्तमकुलाचरणेषु। निराकुला = धैर्ययुक्ता। शलाकालेख्येषु = द्यूतक्रीडासु। कुशला = दक्षा। शारिदायेषु = सारिका-पालनकर्मसु। विशारदा = चतुरा। प्रबन्धालोचनेषु—प्रबन्धानाम् = महाकाव्यानाम् आलोचनेषु = आलोचनाकर्मसु। प्रबुद्धा = प्रकर्षेण बुद्धा = बोधयुक्ता। आतुरानाथ-चिकित्सासु = आतुराणाम् = रोगिजनानाम् अनाथानाम् = असहायानाञ्च चिकित्सासु = चिकित्साकर्मसु चतुरा = प्रवीणा जाता।

हिन्दी—इस प्रकार यह क्रमशः निरन्तर स्वच्छन्द आहार विहार वाली शैशव अवस्था के व्यतीत हो जाने पर पिता के निर्देश, गुरुजनों के उपदेश, साधुजनों एवं वृद्धों के संवास (निकट रहने) तथा बुद्धि विकास से शीघ्र ही पुण्य कर्म करने में निपुण, उत्तम कुल के योग्य आचरणों में धैर्यवती अक्षक्रीडाओं में (अथवा चित्रकला आदि में) कुशल, शारिका पालन में विशारद प्रबन्धकाव्यों की आलोचना करने में प्रखर बुद्धिवाली तथा आतुरों (रोगियों) एवं अनाथ लोगों की चिकित्सा में चतुर हो गई।

किं चान्यत्—

अकरोदनालस्यं लास्ये, प्राप प्राधान्यं धन्योचितव्यवहारेषु, वैचित्र्यं चित्रेषु, चातुर्यं तौर्यत्रिके, कौशलं शल्योद्धारे, पाटव पटहवादने, वैमल्यं नवमाल्यग्रथने, प्रागीत्यं गीत्याम् प्राकाम्यं कामकथासु।

सुधा—अकरोदिति। लास्ये = नृत्ये। अनालस्यम् = आलस्यशून्यताम्। अकरोत् = चकार। अन्योचितव्यवहारेषु = प्रशंसनीयव्यवहारेषु। प्राधान्यम् = प्रधानताम् प्राप = प्राप्तवती। चित्रेषु = चित्रकलासु वैचित्र्यम् = विचित्रताम्। तौर्यत्रिके = वाद्यकलायाम्। चातुर्यम् = प्रवीणताम्। शल्योद्धारे = शल्यचिकित्सायाम्। कौशलम् = नैपुण्यम् पटह-वादने = पटहवादनकार्ये। पाटवम् = प्रावीण्यम्। नवमाल्यग्रथने नूतनसृक्निर्माणे। वैमल्यम् = शुद्धताम्। गीत्याम् संगीतकर्मणि प्रागीत्यम् = वैशिष्ट्यम्। कामकथासु = मदनवार्त्तासु। प्राकाम्यम्। नैपुण्यम् अकरोत्।

हिन्दी—और क्या—नृत्यकला में उसने आलस्य नहीं किया। प्रशंसनीय व्यवहारों में उसने प्रधानता, चित्रकला में विचित्रता, वाद्यवादन में चतुरता, शल्यचिकित्सा (आपरेशन) में कुशलता, पटहवादन में पटुता, नई नई (विविध) मालायें गूंथने में शुद्धता, संगीत कला में प्रवीणता तथा कामकथाओं में निपुणता प्राप्त कर ली।

किं बहुना—

न तत्काव्यं न तन्नाटचं न सा विद्या न सा कला।
यत्र तस्याः प्रबुद्धाया बुद्धिर्नैव व्यजृम्भत॥ २८॥

अन्वयः—न तत् काव्यम्, न तत् नाटचम्, न सा विद्या, न सा कला (आसीत्) यत्र प्रबुद्धायाः तस्याः बुद्धिः न एव व्यजृम्भत॥ २८॥

सुधा—न तदिति। न तत् काव्यम् = न तादृक् किमपि काव्यम् आसीत्। न तत् नाटचम् = न तादृक् किमतिदृश्यमभिनयं वाऽऽसीत्। न सा विद्या = न तादृक् ज्ञानम्

आसीत् । न सा कला = न तादृक् शिल्पम् आसीत यत्र = यज्ज्ञाने । प्रबुद्धायाः = प्रवीणायाः । तस्याः = दमयन्त्याः । बुद्धिः = धीः । नैव व्यजृम्भत = न विस्फुरिताऽभवत् ॥ २८ ॥

हिन्दी—अधिक क्या—न तो ऐसा कोई काव्य था, न नाटक था न विद्या थी और न ही कला थी और न ही कला थी, जिसमें उस दमयंती की बुद्धि स्फुरित न हुई हो ॥ २८ ॥

एवमस्याः शैशव एव निजजरठप्रज्ञाप्रज्ञातव्यवस्तुविस्तारायाः क्रमेण तिलकभूतं नूतनचूतवनमिव वसन्तप्रवेशप्रथमपल्लवोल्लासेन, प्रत्यग्रघनसमयमहीमण्डलमिवामन्दविदलत्कन्दलकलापेन, केसरिकिशोरकण्ठपीठमिवनवकेसराङ्कुरोद्गारेण, करिकलभकपोलस्थलमिव प्रथममदोद्भेदेनः निशावसाननभस्तलमिव प्रभातप्रारम्भप्रभाप्रभावेण, सरःसलिलमिव विदलितकोमलकमलकान्तिसंतानेन, मनोहारिणा संसारसारभूतेनाभूष्यत वपुः कान्ततरतारुण्यावतारप्राक्प्रारम्भेण ।

सुधा—एवमस्याः इति । एवम् = इत्थम् । अस्याः = एतस्या. शैशव एव = बाल्यावस्थायामेव । निजजरठप्रज्ञाप्रज्ञातव्यवस्तुविस्तारायाः—निजया स्वकीयया जरठया = प्रौढया प्रज्ञया = बुद्धया प्रज्ञातव्यस्य = प्रकर्षेण ज्ञातव्यस्य वस्तुनो विस्तारः = प्रसारः यस्यां तथाभूतायाः दमयन्त्याः वपुः = शरीरम् क्रमेण = क्रमशः । संसारसारभूतेन = जगतस्तत्वभूतेन मनोहारिणा = मनोरमेण । वसन्तप्रवेशप्रथमपल्लवोल्लासेन—वसन्तस्य प्रवेशः = वसन्तागमः, तस्य प्रथमपल्लवोल्लासेन = प्रथमदलविकासेन । नूतनचूतवनमिव = नवीनाम्रकाननमिव तिलकभूतम् = श्रेष्ठभूतम् । अमन्दविदलत्कन्दलकलापेन = अमन्देन द्रुतवेगेन विदलता = अंकुरितेन कन्दलकलापेन = मूलसमूहेन । प्रत्यग्रघनसमयमहीमण्डलम् इव = सद्यो मेघकालभूमण्डलमिव नवकेसराङ्कुरोद्गारेण = नूतनलोमाङ्कुरोद्गारेण । केसरकिशोरकण्ठपीठमिव—केसरिकिशोरस्य = सिंहशावकस्य कण्ठपीठमिव = गलभागमिव । प्रथमोद्भेदेन = प्रथमवारप्रकटनेन । करिकलभकपोलस्थलमिव—करिकलभस्य = गजशिशोः, कपोलस्थलमिव = गण्डस्थलमिव । प्रभातप्रारम्भप्रभाप्रभावेण—प्रत्यूषारम्भकान्तिप्रभावेण । निशावसाननभस्तलमिव—निशायाः = यामिन्याः अवसानम् = समाप्तिः, तत्र नभस्तलमिव = गगनतलमिव । विदलितकोमलकमलकान्तिसन्तानेन—विदलितानाम् = विकसितानाम् कोमलकमलानाम् मृदुपद्मानाम् कान्तिसन्तानेन = प्रभाप्रसारेण । सरः सलिलमिव = तडागजलमिव । अभूष्यत = अलङ्कृतमभवत् ।

हिन्दी—इस प्रकार इस शैशवकाल में ही अपनी प्रौढ बुद्धि से ज्ञातव्य वस्तुओं के विस्तार को जाननेवाली दमयन्ती का शरीर क्रमशः मनोरम संसार के तावभूत (यौवन) से वसन्तऋतु के प्रथम प्रवेश काल में नवीन पल्लवों के विकास से उत्तम बना हुआ, तीव्रता से अंकुरित जड समूह से तत्काल बरसने वाले बादलों के समय भूमण्डल जैसा, केसरों (वालों) के अङ्कुरोद्गार से सिंहशावक की गर्दन के समान, विकसित कोमल कमल कान्ति के प्रसार से सरोवर के जल के समान सुशोभित होने लगा ।

ततश्च—

परिहरति वयो यथा यथाऽस्याः
स्फुरदुरुकन्दलशालि बालभावम् ।
द्रढयति धनुषस्तथा तथा ज्यां
स्पृशति शरानपि सज्जयन्मनोभूः ॥ २९ ॥

अन्वयः—यथा यथा अस्याः स्फुरदुरुकन्दलशालिवयः बालभावम् परिहरति, तथा तथा मनोभूः धनुषः ज्याम् द्रढयति, शरान् अपि सज्जयन् स्पृशति ॥ २९ ॥

सुधा—परिहरतीति । यथा यथा = यथा प्रकारम् । अस्याः = एतस्याः स्फुरदुरुकन्दलशालि—विकसज्जघनमूलशालि । वयः = आयुः बालभावम् = शैशवम् । परिहरति= परित्यजति । तथा = तत्प्रकारम् मनोभूः = मदनः । धनुषः = शरासनस्य । ज्याम् = प्रत्यञ्चाम् । द्रढयति = सुस्थिराम् करोति । शरान् = सायकान् अपि । सज्जयन् = सज्जीकुर्वन् । स्पृशति ॥ २९ ॥

हिन्दी—तदनन्तर—जैसे जैसे इस (दमयन्ती) की कन्दल के समान जघनस्थल को विकसित करने वाली अवस्था बालभाव (बचपन) को छोड़ने लगी वैसे वैसे कामदेव अपने धनुष की डोरी को दृढ़ करने लगे तथा वाणों को भी सजाकर छूने लगे । अर्थात् उसे अपने वाणों का निशाना बनाने के लिए तैयार हो गये ॥ २९ ॥

अपि च—

मुञ्चन्त्याः शिशुतां भरादवतरत्तारुण्यमुद्राङ्कित-
स्फारीभूतनितान्तकान्तवपुषस्तस्याः कुरङ्गीदृशः ।
उन्मीलत्कुचकाञ्चनाब्जमुकुलं यूनां मुहुःपश्यतां
बाह्वोरन्तरमन्तरायसदृशा मन्ये निमेषा अपि ॥ ३० ॥

अन्वयः—शिशुताम् मुञ्चन्त्याः भरादवतरत्तारुण्यमुद्राङ्कितस्फारीभूतनितान्तकान्तवपुषः कुरङ्गीदृशः तस्याः बाह्वोः अन्तरम् उन्मीलत् कुचकाञ्चनाब्जमुकुलम् मुहुःपश्यताम् यूनाम् निमेषा अपि अन्तरायसदृशाः मन्ये ॥ ३० ॥

सुधा—मुञ्चन्त्या इति । शिशुताम् = शैशवम् । मुञ्चन्त्याः = परित्यजन्त्याः भरात् = वेगात् । अवतरतः = प्रकटतः तारुण्यस्य = यौवनस्य यत् मुद्राङ्कितम् = चिह्नितम्, तेन स्फारीभूतम् = विकसितम् नितान्तम् = अत्यन्तम् कान्तम् = दीप्तिमत् वपुः = शरीरम् यस्यास्तस्याः कुरङ्गीदृशः = कुरङ्गीरिव दृशे यस्यास्तथा = मृगीदृशः । तस्याः = दमयन्त्याः बाह्वोः = भुजयोः अन्तरम् = मध्यम् । उन्मीलत्कुचकाञ्चनाब्जमुकुलम् = विकसत्पयोधरस्वर्णकमलमुकुलम् । मुहुः = वारंवारम् पश्यताम् = अवलोकयताम् । यूनाम् = तरुणानाम् । निमेषाः = अक्षिपक्ष्म (लोम) भागा (पलक इति भाषायाम्) । अन्तराय सदृशाः = तिरोहितसदृशाः । मन्ये = अमन्यत । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ३० ॥

हिन्दी—शैशव को छोड़ती हुई तेजी से विखरते हुए यौवन के लक्षणों से चिह्नित होने के कारण विकसित अत्यन्त कान्त शरीरवाली हि[illegible]ी के नेत्रों के समान सुन्दर

नेत्रों वाली उस दमयन्ती की बाहों के मध्य उभरते हुए स्वर्ण कमल की कली के समान पयोधरों को बार बार देखते हुए युवकों के निमेष भी मानों छिप से जाने लगे (अर्थात् अपलक युवक देखने लगे ।) ॥ ३० ॥

ततश्च—

तत्तस्याः कमनीयकान्तविजितत्रैलोक्यनारीवपुः
शृङ्गारस्य निकेतनं समभवत्संसारसारं वयः ।
यस्मिन्विस्मृतपक्ष्मपालिचलनाः कामालसा दृष्टयो
नो यूनां पुनरुत्पतन्ति पतिताः पाशे शकुन्ता इव ॥ ३१ ॥

अन्वयः—तस्याः कमनीयकान्तविजितत्रैलोक्यनारीवपुः तद् वयः शृङ्गारस्य निकेतनम्, संसारसारम् अभवत्, यस्मिन् यूनाम् विस्मृत पक्ष्मपालिचलनाः कामालसाः दृष्टयः पतिताः पाशे (पतिताः) शकुन्ता इव पुनः उत्पतन्ति ॥ ३१ ॥

सुधा—तत्तस्या इति । तस्याः = दमयन्त्याः । कमनीयकान्तविजितत्रैलोक्यनारीवपुः—कमनीयेन = सुन्दरेण कान्तेन = दीप्तेन विजितम् = जितम् त्रैलोक्यस्य = त्रिभुवनस्य नारीवपुः = स्त्रीशरीरम् येन तत्—तद् यौवनम् । शृङ्गारस्य = शृङ्गाररसस्य । निकेतनम् = सदनम् । संसारसारम् = विश्वसारतात्वम् । अभवत् = अभूत् । यस्मिन् = वपुषि । यूनाम् = तरुणानाम् विस्मृतपक्ष्मपालिचलनाः विस्मृतम् पक्ष्मपालिचलनम् = यासाम् तादृश्यः । कामालसाः = मदनविह्वलाः । दृष्टयः = अवलोकनानि । पतिताः = च्युताः । पाशे = जाले पतिताः = च्युताः शकुन्ता इव = पक्षिण इव । पुनः = भूयः नो उत्पतन्ति = नो उद्गच्छन्ति । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ३१ ॥

हिन्दी—उस दमयन्ती का सुन्दरकान्ति से तीनों लोकों की स्त्रियों के शरीर को जीत लेने वाला वह शरीर (यौवन) संसार का तत्व बन गया जिसमें युवकों की निर्निमेष पक्ष्म पंक्तिवाली कामविह्वल दृष्टियां पड़ कर जाल में पड़े हुए पक्षियों की भांति पुनः उठ नहीं पाती हैं ॥ ३१ ॥

अपि च—

आबध्नत्परिवेषमण्डलमलं वक्त्रेन्दुबिम्बाद्बहिः
कुर्वंश्चम्पकजृम्भमाणकलिकाकर्णावतंसक्रियाम् ।
तन्वङ्ग्याः परिनृत्यतीव हसतीवोत्सर्पतीवोल्बणं
लावण्यं ललतीव काञ्चनशिलाकान्ते कपोलस्थले ॥ ३२ ॥

अन्वयः—वक्त्रेन्दुबिम्बाद् बहिः आबध्नत्परिवेषमण्डलम्, चम्पकजृम्भमाणकलिका कर्णावतंसक्रियाम् अलम् कुर्वंश्च तन्वङ्ग्या काञ्चन शिलाकान्ते कपोलस्थले उल्वणम् लावण्यम् परिनृत्यति इव, हसति इव, उपसर्पति, इव ललति इव ॥ ३२ ॥

सुधा—आबध्नेति । वक्त्रेन्दुबिम्बाद् बहिः = मुखचन्द्रबिम्बात् बहिः आबध्नत्परिवेषमण्डलम् = आबध्नत्पर्याप्तगोलवृत्तम् । चम्पकजृम्भमाणकलिकाकर्णावतंसक्रियाम्—चम्पकस्य = चम्पकपुष्पस्य जृम्भमाणाम् = विकसिताम् कलिकाम् = कर्णावतंसनक्रियाम्

श्रोत्रभागे धारणक्रियाम् अलम् कुर्वत् = भूषयत् । तन्वङ्ग्याः = कृशशरीरायाः दमयन्त्याः । काञ्चनशिलाकान्ते = स्वर्णशिलाप्रभे । कपोलस्थले = गण्डस्थले । उल्वणम् = उत्कृष्टम् । लावण्यम् = सौन्दर्यम् । परिनृत्यति इव = परितः नृत्यति इव, हसति इव = हासं कुर्वति इव, उपसर्पति इव, ललति इव = उल्लसति इव ॥ ३२ ॥

हिन्दी—मुख चन्द्रविम्ब के बाहर बनाया हुआ पर्याप्त गोलमण्डल, चम्पा की खिलती हुई कली की भांति कर्णाभूषण का कार्य करता हुआ उस कृशांगी के स्वर्ण शिला का कान्ति वाले कपोल स्थल पर उत्कृष्ट सौन्दर्य नाच सा रहा है, हँस सा रहा है, निकट खिसक सा रहा है तथा उल्लसित सा हो रहा है ॥ ३२ ॥

एतदाकर्ण्य राजा रञ्जितस्तत्कथया पुनरुदञ्चदुच्चरोमाञ्चकञ्चुकितकायस्तत्कालमेवान्तःस्फुरन्मन्मथमनोरथभरभज्यमानमानसस्तं हंसमपृच्छत् ।

सुधा—एतदिति । एतत् = इदम् । आकर्ण्य = श्रुत्वा । राजा = नृपः । तत्कथया= तद्वार्तया । रञ्जितः = अनुरक्तः । पुनः = भूयः । उच्चरोमाञ्चकञ्चुकितकायः ऊर्ध्वरोमाञ्चशरीरः । उदञ्चत् = पुलकितो जातः । तत्कालमेव = तत्क्षणमेव । अन्तः स्फुरन्मन्मथ मनोरथभरभज्यमानमानसः—अन्तःस्फुरता = चेतः स्फुरता मनोरथभरेण = मनोरथभारेण भज्यमानम् = नश्यमाणम् मानसम् = मनः यस्य तादृशः राजा तम् हंसम् = कलहंसम् । अपृच्छत् = अकथत् ।

हिन्दी—यह सुनकर उस कथा से प्रसन्न राजा का पुनः रोमाञ्चयुक्त शरीर हो गया (जिससे) तत्काल अन्तःकरण में उमड़ते हुये मनोरथ के बोझ से व्यथित मन वाले राजा ने उस हंस से पूछा ।

"पक्षिराज राजीववनावतंस हंस, पुनः कथ्यतां तस्याः संप्रति वयोवृत्तवृत्तान्तव्यतिकरः"।

सुधा—पक्षिराज इति । राजीववनावतंस = हे कमलवनाभूषण ! पक्षिराज ! = खगराज ! हंस = कलहंस ! सम्प्रति = साम्प्रतम् ! तस्याः दमयन्त्याः । पुनः = भूयः । वयोवृत्तवृत्तान्तव्यतिकरः = यौवनवृत्तसमाचारव्यतिकरः । कथ्यताम् = भण्यताम् ।

हिन्दी—हे कमलवन को शोभित करने वाले पक्षिराज हंस ! अब उस दमयन्ती का फिर से वयःसन्धि (यौवन) का वृत्तान्त सुनाओ ।

इत्युक्तः पुनरेष तं बभाषे—

"देव, किमेकोऽस्मद्विधः पक्षी, क्षीरतरङ्गधवललोचनां तां वर्णयेत् यस्यां सर्वदेवमय इवाकारो लक्ष्यते ।

तथाहि—

सुतारा दृष्टिः, सकामाः कटाक्षाः, सुकुमाराश्चरणपाणिपल्लवाः, सुधाकान्ति स्मितम्, अरुणो दन्तच्छदः भास्वन्तो दन्ताः, सुकृष्णाः केशाः, प्रबुद्धा वाणी, गौरी कान्तिः, गुरुः स्तनाभोगः पृथ्वी जघनस्थली, सुरभिर्निःश्वासः, सुगन्धवाहः प्रस्वेदः, सश्रीकः सकलाङ्गभोगः ।

सुधा—इत्युक्त इति । इति एवम् । उक्तः = कथितः । एषः = अयम् हंसः तम् = राजानम् । पुनः = भूयः । बभाषे = उक्तवान् । देव ! = हे राजन् अस्मद्विधः = मत्सदृशः । एकः = अद्वितीयः पक्षी = खगः हंसः क्षीरतरङ्गधवललोचनाम् = दुग्धतरङ्गोज्ज्वलनयनाम् । ताम् = दमयन्तीम् किम् वर्णयेत् = किं कथयेत् । यस्याः = यस्याः दमयन्त्याः । आकारः आकृतिः । सर्वदेवमय इव = सकलदेव युक्त इव । लक्ष्यते = दृश्यते ।

हिन्दी—इस प्रकार कहे जाने पर यह हंस राजा से पुनः बोला—हे राजन् हमारे जैसा पक्षी दूध की तरङ्गों के समान उज्ज्वल नयनों वाली उस दमयन्ती का क्या वर्णन करे जिसकी आकृति 'सर्वदेवमय' दिखलाई पड़ती है ।

किञ्चान्यत्—नक्षत्रमयीव निर्मिता विधिना । तथापि—भद्रपदा ज्येष्ठा सुहस्ता पूर्वोत्तरा सार्द्रहृदया मूलं कन्दर्पस्य ।

सुधा—किञ्च = किन्तु । अन्यत् = अपरम् । विधिना = ब्रह्मणा (सा) नक्षत्रमयी इव । निर्मिता = रचिता । तथादि = यथादि—भद्रपदा, भद्रं पदं = पदन्यासो यस्याः । ज्येष्ठा = प्रथमापत्यम् । सुहस्ता = शोभनौ हस्तौ यस्याः सा । पूर्वोत्तरा = पूर्वम् उत्कृष्टम् उत्तरम् = वचो यस्याः सा । सार्द्रहृदया—सार्द्रम् = अनिष्ठुरम् हृदयम् = चेतः यस्याः सा । कन्दर्पस्य = कामदेवस्य मूलम् = जडम् कारणं वा । पक्षे—भाद्रपदज्येष्ठा हस्त-पूर्वा-उत्तरा आर्द्रा मूलम् नक्षत्राणि ।

हिन्दी—बल्कि ब्रह्मा ने उसे नक्षत्रमयी जैसा बनाया है जैसे कि भाद्रपद ज्येष्ठा-हस्त-पूर्वा-उत्तरा-आर्द्रा मूल नक्षत्र ।

जैसे कि (वह) सुन्दर अथवा पद विन्यास वाली सन्तानों में प्रथम (बड़ी) सुन्दर हाथों वाली, उत्कृष्ट वचनों वाली, कोमलहृदया तथा कामदेव को उत्पन्न करने वाली है ।

किं बहुना—

लावण्यातिशयः स कोऽपि मधुरास्ते केऽपि दृग्विभ्रमा
सा काचिन्नवकन्दलीमृदुतनोस्तारुण्यलक्ष्मीरपि ।
सौभाग्यस्य च विश्वविस्मयकृतः सा कापि संपद्यया
लग्नानङ्गमहाग्रहा इव कृताः सर्वे युवानो जनाः' ॥ ३३ ॥

अन्वयः—सः कः अपि लावण्यातिशयः, ते के अपि दृग्विभ्रमाः मधुराः, नवकन्दली मृदुतनोः सा तारुण्यलक्ष्मीः अपि काचित् । विश्वविस्मयकृता सौभाग्यस्य सा कापि संपत्, यया सर्वे युवानः जनाः लग्नानङ्गमहाग्रहाः इव कृताः (भवन्ति) ॥ ३३ ॥

सुधा—लावण्येति । सः = असौ । कः अपि = कश्चित् । लावण्यातिशयः = सौन्दर्यातिरेकः (अस्ति) । ते केऽपि = केचित् । दृग्विभ्रमाः = दृष्टिविलासाः । मधुराः (सन्ति) । नवकन्दलीमृदुतनोः = नूतनाङ्कुरकोमलशरीरायाः सा = एषा तारुण्यलक्ष्मीः अपि = यौवनश्रीरपि काचित् = अलौकिकैव । विश्वविस्मयकृता—विस्मये कृता विस्मयकृता, विश्वम् विस्मयकृता इति सा = लोकाश्चर्यकृता । सौभाग्यस्य = शोभनादृष्टस्य ।

सा कापि = काचित् । सम्पत् = सम्पत्तिः (अस्ति)। यया = यत्सम्पदा । सर्वे = निखिलाः । युवानः जनाः = तरुणपुरुषाः । लग्नाङ्गमहाग्रहाः इव महान्तः ग्रहाः महाग्रहाः, अनङ्ग एव महाग्रहाः लग्नाः अनङ्ग महाग्रहा इति = कामग्रहग्रस्ताः भवन्ति । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ३३ ॥

हिन्दी—अधिक क्या कहें—वह कोई सौन्दर्यातिरेक है, वे कोई दृष्टि विलास भी मधुर हैं। नूतन अङ्कुरों के समान कोमल शरीरवाली वह तारुण्य लक्ष्मी भी अलौकिक है विश्व को विस्मय में डालने वाली सौभाग्य को वह सम्पत्ति भी अलौकिक है जिसके द्वारा सभी युवा पुरुष कामदेवरूपी महाग्रहों से ग्रस्त होते हैं ॥ ३३ ॥

टिप्पणी—राहु शनि आदि अत्यधिक अनिष्ट करने वाले क्रूर ग्रह महाग्रह कहलाते हैं।

राजा—'ततस्ततः'।

हंसः—'ततस्तस्या पुनरिदानीं—

दूराभोगभरेण भुग्नगतिना श्लिष्टा नितम्बस्थली
धत्ते स्वर्णसरोजकुड्मलकलां मुग्धं स्तनद्वन्द्वकम् ।
आलापाः स्मितसुन्दराः परिचितभ्रूविभ्रमा दृष्टय-
स्तस्यास्तर्जितशैशवव्यतिकरं रम्यं वयो वर्तते ॥ ३४ ॥

अन्वयः—तस्याः नितम्बस्थली भुग्नगतिना दूराभोगभरेण श्लिष्टा वर्तते, मुग्धम् स्तनद्वन्द्वकम् स्वर्णसरोजकुड्मलकलाम् धत्ते, आलापाः स्मितसुन्दराः, दृष्टयः परिचितभ्रूविभ्रमाः, तर्जितशैशवव्यतिकरम् वयः रम्यम् वर्तते ॥ ३४ ॥

सुधा—दूराभोगभरेणेति । तस्याः = दमयन्त्याः । नितम्बस्थली = नितम्बभागः भुग्नगतिना = भुग्नगतिहेतुना । दूराभोगभरेण = विस्तारभारेण । श्लिष्टा = संजुष्टा वर्तते । मुग्धम् = मोहकरम् । स्तनद्वन्द्वकम् = पयोधरयुगलम् स्वर्णसरोजकुड्मलकलाम् = कनककमलकलिकाकान्तिम् । धत्ते = धारयति आलापाः गिरः । स्मितसुन्दराः = मन्दहाससुन्दराः । दृष्टयः = दर्शनशक्तयः । परिचितभ्रूविभ्रमाः—भ्रुवो विलासाः, परिचिताः भ्रूविलासा इति ताः = भ्रूरागैः परिचिताः (सन्ति) तर्जितशैशवव्यतिकरम् तर्जितम् = वर्जितम् शैशवव्यतिकरम् = बाल्यावस्यामिलनम् येनतत् वयः = तारुण्यम् । रम्यम् = रमणीयम् । वर्तते = अस्ति । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ३४ ॥

हिन्दी—राजा—इसके बाद ।

हंस—फिर उसके इस समय—

नितम्ब भाग स्खलित गति के कारण विस्तार के भार से जुड़ा हुआ है, मनोहर पयोधरयुगल स्वर्ण कमल की कली की शोभा धारण कर रहे हैं उसके आलाप मन्दमुस्कान से सुन्दर हैं, दृष्टि भ्रूविलास से परिचित सी है। शैशव के मिलन को डांटकर यौवन रमणीक हो गया है ॥ ३४ ॥

तदेष तस्याः सकलयुवजनमनोमयूरवासयष्टेः समस्तसंसारसौन्दर्याधिदेवतायाः कथितो वृत्तान्तः ।

सुधा—तदिति । तत् = अतः । एषः = अयम् । सकलयुवजनमनोयष्टेः—मन एव यष्टिः = मनोयष्टिः, सकलानाम् युवजनानाम् मनोयष्टिरिव तस्याः = सम्पूर्णं तरुणलोक चेतो यष्टेः । समस्तसंसारसौन्दर्याधिदेवतायाः—समस्तस्य = सम्पूर्णस्य संसारस्य = लोकस्य सौन्दर्यस्य = सुन्दरतायाः अपि देवता = अधिष्ठात्री, तस्याः । तस्याः = एतस्याः दमयन्त्याः । वृत्तान्तः = इतिवृत्तः कथितः = वर्णितः ।

हिन्दी—इस प्रकार यह समस्त युवाजनों के मन मयूर की निवासस्थली तथा सम्पूर्ण संसार की सुन्दरता की अधिष्ठात्री (दमयन्ती) का वृत्तान्त (मैंने) कह सुनाया ।

किमन्यत्—

हरचरणसरोजाराधनावाप्तपुण्यः
परमसुकृतकन्दो वन्दनीयः स कोऽपि ।
अपि जयतु स यस्तां दुर्लभां लप्स्यतेऽस्मि-
न्निति कथितकथः सन्सोऽपि हंसो व्यरंसीत् ॥ ३५ ॥

इति श्रीत्रिविक्रमभट्टस्य कृतौ दमयन्तीकथायां हरचरणसरो-
जाङ्कायां तृतीय उच्छ्वासः समाप्तः ।

अन्वयः—हरचरणसरोजाराधनावाप्तपुण्यः, परमसुकृतकन्दः सः कोऽपि वन्दनीयः अस्ति) । सः अपि जयतु । यः ताम् दुर्लभाम् प्राप्स्यते इति अस्मिन् कथितकथः सन् सः हंसः अपि व्यरंसीत् ॥ ३५ ॥

सुधा—हरचरणेति । हरणचरणसरोजाराधनावाप्तपुण्यः—हरचरणौ = शिवपादौ सरोज इव = कमल इव, तयोः या आराधनाः उपासना, तया अवाप्तम् = प्राप्तम् पुण्यम् येन तथा । परमसुकृतकन्दः = परम सुकृतस्य = महतः पुण्यस्य कन्दः = मूलम् । सः = असौ कोऽपि = कश्चिद् अनुपमः । वन्दनीयः = प्रणम्यः (अस्ति) । सः अपि = असावपि जयतु = विजयताम् । यः = यः पुण्यात्मा । ताम् = उपर्युक्ताम् । दुर्लभाम् = दुष्प्राप्याम् । प्राप्स्यते = लप्स्यते । इति = एवम् । अस्मिन् = एतस्मिन् । कथितकथः—कथिता = वर्णिता कथा = आख्या येन तथा । सन् । सः हंसः अपि = असौ कलहंसपक्षी अपि । व्यरंसीत् = व्यरमत् । मालिनीवृत्तम् ।

हिन्दी—भगवान् शिव के चरण कमल की आराधना से पुण्य प्राप्त किया हुआ, परम पुण्य की जड़ वह पुरुष प्रणाम करने योग्य है । उस पुण्यात्मा की जय हो । जो कि उस दुर्लभ दमयन्ती को प्राप्त करेगा । इस प्रकार इस कथा का वर्णन करते हुए वह हंस भी चुप हो गया ॥ ३५ ॥

इति श्रीत्रिविक्रमभट्टस्य कृतौ शाहजहाँपुर मण्डलान्तर्वर्तिनो नाहिल ग्राम-
वास्तव्यस्य आचार्यपरमेश्वरदीनपाण्डेयस्य सुधाटीकान्वितायां
दमयन्तीकथायां तृतीय उच्छ्वासः ।
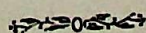
चतुर्थ उच्छ्वासः

एवमेतदाकर्ण्य राजा तत्कालमाघूर्णितमाश्चर्येण, आकुलितमौत्सुक्येन, आमन्त्रितमुत्कण्ठया, कटाक्षितं कन्दर्पेण, अभिवादितं रणरणकेन, ज्योत्कारितमाग्रहग्रहेण, पृष्ठकुशलमकालतरलतया, स्वीकृतमस्वास्थ्येन, अवलोकितं चिन्तया चेतः स्वं स्वयमेव स्वस्थीकृत्य वितर्कितवान् ।

सुधा—एवमिति । एवम् = इत्थम् । एतद् आकर्ण्य = एतच्छ्रुत्वा । राजा = नृपः तत्कालम् = तत्क्षणम् । आश्चर्येण = विस्मयेन । आघूर्णितम् = आपतितम् । औत्सुक्येन = उत्सुकतया । आकुलितम् = व्याकुलितम् । उत्कण्ठया = उत्साहेन । आमन्त्रितम् = कन्दर्पेण = मदनेन । कटाक्षितम् = कटाक्षविषयीकृतम् । रणरणकेन = चिन्तया । अभिवादितम् = नमस्कृतम् आग्रहग्रहेण = हठरूपग्रहेण, ज्योत्कारितम् = अग्निसात् कृतम् । अकालतरलया = असामयिकचपलतया । पृष्ठकुशलम्—पृष्ठे = पश्चात् कुशलम् यत्र । अस्वास्थ्येन = रुग्णतया स्वीकृतम् = आत्मसात्कृतम् । चिन्तया अवलोकितम् = दृष्टम् । स्वम् चेतः = आत्ममनः । स्वयमेव = आत्मनैव । स्वस्थीकृत्य नीरोगीकृत्य । वितर्कितवान् = अतर्कयत् ।

हिन्दी—इस प्रकार सुन कर राजा तत्काल आश्चर्य में पड़ गया । उत्सुकता से वह व्याकुल हो उठा, उत्कण्ठा से भर गया । कन्दर्प के कटाक्षों से युक्त हो गया चिन्ता से नमस्कार किया गया, हठ रूप ग्रहों से आग जैसा बन गया । असामयिक चञ्चलता से कुशलता को पीछे धकेल दिया गया । अस्वास्थ्य से स्वीकृत कर लिया गया । चिन्ता के द्वारा अवलोकन किया गया । राजा ने अपने चित्त को स्वयम् स्वस्थ कर (इस प्रकार) तर्क किया ।

प्रायः सैव भवेदेषा पान्थादश्रावि या मया ।
युगायितं विनिद्रस्य यत्कृते मे त्रियामया ॥ १ ॥

अन्वयः—यत्कृते मे विनिद्रस्य त्रियामया युगायितम्, प्रायः या मया पान्थात् अश्रावि सा एषा एव भवेत् ॥ १ ॥

सुधा—प्राय इति । यत्कृते = यदर्थम् । मे = मम विनिद्रस्य = विगतनिद्रस्य । त्रियामया = रात्र्या ,त्रियामयेति त्रिसंख्यायित प्रहररात्रिवाचकत्वेन साभिप्रायम् । युगायितम् = युगेनेवाचरितम् । प्रायः = बहुधा । या = या सुन्दरी दमयन्ती मया = राज्ञा पान्थात् = पथिकजनात् अश्रावि = श्रुतम् । सा एषा एव = इयमेव । भवेत् = स्यात् "अनुष्टुब्वृत्तम्" ॥ १ ॥

हिन्दी—जिसके लिए निद्रारहित (नींद न होने के कारण) तीन प्रहर की रात मुझे युग के समान प्रतीत हुई । जिसको मैंने पथिक के मुख से सुना था वही यह सुन्दरी हो सकती है ॥ १ ॥

तदेतन्मे—

तद्वार्तामृतपानार्थि भूयोऽपि श्रवणेन्द्रियम् ।
तृप्यते केन वानन्दकन्दे कान्ताकथानके ॥ २ ॥

अन्वयः—(मे) श्रवणेन्द्रियम् भूयः अपि तद् वार्तामृतपानार्थि वा ! वा आनन्द-कन्दे कान्ताकथानके केन तृप्यते ॥ २ ॥

सुधा—तदिति । तत् एतत् = इदम् मे = मम नृपस्य । श्रवणेन्द्रियम् = कर्णेन्द्रियम् भूयः अपि = पुनरपि । तद्वार्तामृतपानार्थि = तत्कथासुधापानार्थि (अस्ति) । वा = अथवा । आनन्दकन्दे = आनन्दमूले कान्ताकथानके = प्रियावार्ताविषये । केन तृप्येत = कः पुरुषस्तृप्तो भवति ॥ २ ॥

हिन्दी—सो यह मेरी श्रवणेन्द्रिय पुनः उसकी वार्तारूपी सुधा को पीना चाहती है । अथवा आनन्द मूल प्रिया की चर्चा से कौन तृप्त हो सका है ? ॥ २ ॥

तत्किमेनं पुनः पृच्छामि ।

नेदं नायकस्थानम् ।

सुधा—तत्किमिति । तत् = अतः किम् एनम् = हंसम् (प्रिया विषये) पुनः = भूयः पृच्छामि !

इदम् = एतत् । नायकस्थानम् = नायकोचितम् न = नैवास्ति ।

हिन्दी—तब क्या इससे पुनः पूछूँ ।

नहीं—यह नायक के योग्य (पुनः पूछना) नहीं है । (क्योंकि नायक का परम स्थान धैर्य ही होता है ।) ।

अतः संप्रति—

मण्डलीकृतकोदण्डः कामः कामं विचेष्टताम् ।
न व्यथिष्ये स्थितः स्थैर्ये धैर्यं धामवतां धनम्' ॥ ३ ॥

अन्वयः—कामः मण्डलीकृतकोदण्डः कामम् विचेष्टताम्, स्थैर्ये स्थितः न व्यथिष्ये । धैर्यम् धामवताम् धनम् (भवति) ॥ ३ ॥

सुधा—मण्डलीकृतेति । (अतः सम्प्रति = इदानीम्) कामः = मदनः । मण्डलीकृत-कोदण्डः—मण्डलीकृतम् कोदण्डम् येन तथा = वर्तुलीकृतचापः कामम् = इष्टम् । विचेष्ट-ताम् = करोतु, स्थैर्ये = धैर्ये स्थितः = अवस्थितः (अहम्) न व्यथिष्ये = न व्याकुली-भविष्यामि । धैर्यम् = स्थिरता । धामवताम् = तेजस्विनाम् । धनम्=वैभवम् भवति ॥३॥

हिन्दी—अतः इस समय कामदेव अपने धनुष को मण्डलाकार कर मनमाना कर लें, मैं व्याकुल नहीं होऊँगा । क्योंकि—धैर्य ही तेजस्वी पुरुषों का धन होता है ॥ ३ ॥

इति वितर्क्य विहसन्हंसमाबभाषे—'साधु भोः सुभाषितामृतमहोदधे, साधु । श्रुतं श्रोतव्यम् । इदानीं भद्रभूयिष्ठो दिवसः । तद्वयं वयस्य, समासन्नाह्निक-समयाः समुचितव्यापारं साधयामः ।

सुधा—इतीति । इति = इत्थम् वितर्क्य = तर्कं कृत्वा । विहसन् = प्रहसन् नृपः हंसम् = हंसपक्षिणम् । आबभाषे = अकथयत् । साधु भोः सुभाषितामृतमहोदधे ! साधु = भोः = अयि सूक्तिसुधासागर ! हंस ! साधु = 'शावाश' इति भाषायाम् । श्रोतव्यम् = श्रवणयोग्यम् । श्रुतम् = आकर्णितम् । इदानीम् = साम्प्रतम् । भद्रभूयिष्ठः = महत्कल्याणकरः दिवसः = वासरः (अस्ति) वयस्य = मित्र ! तद् = अतः वयम् समासन्नाह्निकसमयाः = समासन्नः = सन्निकटः आह्निकसमयः = दैनिककार्यकालः येषां तथाभूताः । समुचितव्यापारम् = यथोचितं कार्यम् । साधयामः = सम्पादयामः ।

हिन्दी—इस प्रकार तर्क कर हँसते हुए राजा ने हंस से कहा—शावाश सूक्ति सुधा के सागर हे हंस ! शावाश !! मैं सुनने योग्य सुन चुका । (अब) आजका दिन महान् मङ्गलमय है । हे मित्र ! दैनिक कृत्य (स्नानादि) का समय समीप है, अतः हम कालोचित कार्य करने जा रहे हैं ।

भवतापि—

> एताः सान्द्रद्रुमतलचलच्चक्रवाकीचकोराः
> क्रीडावापीपरिसरभुवः स्थीयतां स्वेच्छयेति ।
> यत्रोन्मीलत्कमलमुकुलान्याश्रयन्त्याः कुरङ्ग्यो
> भृङ्गश्रेण्याः श्रवणसुभगं गीतमाकर्णयन्ति ॥ ४ ॥

अन्वयः—एताः सान्द्रद्रुमतलचलच्चक्रवाकीचकोराः स्वेच्छया क्रीडावापीपरिसरभुवः स्थीयताम् इति । यत्र उन्मीलत्कमलमुकुलानि आश्रयन्त्यः कुरङ्ग्यः भृङ्गश्रेण्याः कर्णसुभगम् गीतम् आकर्णयन्ति ॥ ४ ॥

सुधा—भवताऽपि = श्रीमतापि स्वेच्छया = आत्मेच्छया स्थीयताम् = तिष्ठताम् । यत्र । एताः = इमाः । सान्द्रद्रुमतलचलच्चक्रवाकीचकोराः—सान्द्रे = सघने द्रुमतले = वृक्षतले चलन्तः = चञ्चलाः चक्रवाकीचकोराः = चक्रवाक्यश्चकोराश्च । यत्र तादृश्यः । क्रीडा वापीपरिसरभुवः—क्रीडावाप्याः = खेलसरोवरस्य याः परिसरभुवः प्राङ्गणभूमयस्ताः सन्ति । उन्मीलत्कमलमुकुलानि = विकसत्पद्मकलिकाः । आश्रयन्त्याः = शरणागताः कुरङ्ग्यः = मृग्यः । भृङ्गः श्रेण्या. = मधुकरपंक्त्याः । श्रवणसुभगम् = कर्णसुखदम् गीतम् = गायनम् । आकर्णयन्ति शृण्वन्ति । मन्दक्रान्ता वृत्तम् ॥ ४ ॥

हिन्दी—आप भी स्वेच्छया विहार को—जहां यह घने वृक्षों के तले चञ्चल चकई चकवो वाली क्रीडा-सरोवर की परिसरभूमि है तथा जहां खिलती हुई कमल की कलियों के पास बैठी हुई हरिणियां भ्रमर पंक्ति की कानों का सुखदेने वाले गीत सुन रही है ॥ ४ ॥

अपिच—

> अतिललिततरं तरङ्गभङ्गैरिदमपि तृड्भरवारि वारि वाप्याः ।
> भ्रमदलिनिवहं वहन्ति यस्मिन्महिमकरं मकरन्दमम्बुजानि ॥ ५ ॥

अन्वयः—तृड्भरवारि इदम् वाप्याः वारि अपि तरङ्गभङ्गैः अतिललिततरम् यस्मिन् महिमकरम् भ्रमद् अलिनिवहम् मकरन्दम् अम्बुजानि वहन्ति ॥ ५ ॥

सुधा—अतिललिततरमिति । तृड्भरवारि—तृड्भरम् = तृष्णातिशयम् वारयति = छिनत्तीति तत् । इदम् = एतत् । वाप्या: = सरोवरस्य । वारि = जलम् अपि तरङ्ग भङ्गै: = वीचिभङ्गै: । अतिललिततरम् = अतिचारुतरम् वर्तते । यस्मिन् महिमकरम् = माहात्म्यकरम् । भ्रमद् = परिभ्रमद् । अलिनिवहम् = भ्रमरकुलम् । मकरन्दम्-मधुरसम् । अम्बुजानि = कमलानि वहन्ति = धारयन्ति । पूर्ववृत्तक्रीडावापीभूकथनापेक्षयापिशब्दोऽत्र समुच्चये ।

हिन्दी—प्यार के भार को समाप्त कर देने वाला यह बावली का जल भी लहरों के टूटने से अत्यन्त सुन्दर लग रहा है । जिसमें महिमा युक्त चक्कर काटते हुए भ्रमर समूह और मकरन्द रस को कमल धारण कर रहे हैं ॥ ५ ॥

'त्वमपि भद्रे वनपालिके कृतकमलमालानितम्बकक्रीडमिममादाय भुक्तावसानास्थानगोष्ठीस्थितस्य मम समीपमेष्यसि' इत्यभिधाय राजा राजभवनमयासीत् ।

सुधा—त्वमपीति । भद्रे वनपालिके = अयि कल्याणि वनरक्षिके ! त्वमपि = भवत्यपि । कृतकमलमालानितम्बकक्रीडम्—कृता = विहिता कमलमालाया: = कमलश्रेण्या: नितम्बकम् = अधोभागम् क्रीडा = खेलनम् येन तादृशम् । इमम् = अमुम् । आदाय = आनीय । भुक्तावसानास्थानगोष्ठीस्थितस्य—भुक्तावसाने = भोजनानन्तरम् आस्थान गोष्ठ्याम् = विश्रामगोष्ठ्याम् स्थितस्य = अवस्थितस्य । मम = मे । समीपम् = पार्श्वम् । एष्यसि = आगमिष्यसि । इति अभिधाय = एवं कथयित्वा राजा = नृप: । राजभवनम् = राजप्रासादम् । अयासीत् = अगच्छत् ।

हिन्दी—हे कल्याणी वनरक्षिके । तुम भी कमल पंक्ति के नीचे क्रीड़ा कर लेने पर इसको लेकर भोजन करने के पश्चात् विश्राम गोष्ठी में बैठे हुए मेरे पास ले आओगी । यह कह कर राजा राजभवन को चले गये ।

गते च राजनि राजीविनीनां जीवितसमा: समास्वादयन्स्वादुकोमलमृणालकन्दली:, दलयन्दलानि, कवलयन्बहलमधुरस्निग्धमुकुलानि, अनुशीलयञ्शीतलशैवलावली:, विलासेन स हंसस्तरंस्तरङ्गान्तरेषु चिर चिक्रीड ।

सुधा—गते चेति । च = तथा गते राजनि = नृप प्रयाते सति । राजीविनीनाम् = कमलिनीनाम् । जीवितसमा: = जीवनसदृशी: प्रिया: । स्वादुकोमलमृणालकन्दली: = स्वादिष्टकोमलकमलमूलान् । समास्वादयन् = कवलयन् । दलानि = पुष्पपत्राणि । दलयन् = विदलयन् । वहलमधुरस्निग्धमुकुलानि = अतिमधुरचिक्कणकलिका: । कवलयन् = आस्वादयन् । शीतलशैवलावली: = शीतशैवालपंक्ती: । अनुशीलयन् = स्पृशन् विलासेन = आनन्देन स: = असौ हंस: । तरङ्गान्तरेषु = वीचीसु, तरन् = तरणं कुर्वन् । चिरम् = वहुकालम् । चिक्रीड = क्रीडाञ्चकार ।

हिन्दी—तथा राजा के चले जाने पर कमलिनियों के जीवन सदृश प्रिय स्वादिष्ट तथा कोमल मृणाल कन्दलियों (भसीड़ों) को चखता हुआ (स्वाद लेता हुआ) पुष्प

पत्रों को विदलित करता हुआ, अतिमधुर तथा स्निग्धकलियों को खाता हुआ, शीतल-शैवाल (सिवार) पंक्तियों को स्पर्श करता हुआ आनन्द से वह हंस तरङ्गों के बीच में तैरता हुआ बहुत देर तक क्रीडा करता रहा।

चिन्तितवांश्च तेन राज्ञा कृतकमलमालानितम्बकक्रोडमिममादाय मत्समीप-मेष्यसि' इति श्लिष्टार्थमिवादिष्टा वनपालिका। 'तन्न युक्तमिह चिरं स्थातुमिति'।

सुधा—च = तथा (सः हंसः) चिन्तितवान् = अचिन्तयत्—तेन = अमुना राज्ञा= नृपेण। कृतकमलमालानितम्बकक्रोडम् विहितपद्मपंक्तिनिम्नक्रोडम्। इमम् = एतम् हंसम् आदाय (त्वम्) मत्सशरीरम् = मम पार्श्वम् एष्यसि = आगमिष्यसि। इति = एवम् श्लिष्टार्थम् = श्लेषगर्भम् इव वनपालिका = उद्यानरक्षिका। आदिष्टा = आज्ञप्ता। इतीति किम्। यत् कृता कमलमालायाः नितम्बके = घनप्राये मध्यदेशे क्रीडा येनेति राजाभि-प्रायः। मालाशब्दगतस्त्रीत्वेन कमलमालायाः साक्षात्स्त्रीत्वाध्यवसायान्नितम्बशब्दः स्त्र्य-वयवोऽपि तदर्थमात्रे प्रयुक्तः। हंसेन त्वेवं प्रतीतम्। यथा कृतकं कापाटिकं वा। तथा अलमत्यर्थम्। आलानितम् बद्धम्। तथा वकवत् क्रोडा यस्य। तादृशमिमं गृहीत्वा मत्समीपमागमिष्यसीति। तत् = अतः। इह = अत्र। चिरम् = बहुकालम् स्थातुम् = अवस्थितुम्। युक्तम् = समीचीनम्। न = नैवास्ति।

हिन्दी—उस (हंस) ने सोचा—उस राजा ने 'कृत·कमल—' इत्यादि श्लिष्ट वाक्य (द्व्यर्थक) से वनकलिका को आदेश दिया है। अर्थात्—कृतक (बनावटी वेषधारी) को अलम् (पूर्ण रूप से) आलानित (शृङ्खलित) कर वकक्रीड (बगुला) के समान छटपटाने की दशा में मेरे पास ले आना। अतः यहां अधिक देर ठहरना ठीक नहीं है।

इत्यस्थान एवाशङ्कमान सह तेन राजहंसकदम्बकेनाम्बरतलमुदपतत्।

तत्र च व्यतिकरे दिवापि स्फारस्फुरत्तारामण्डलमिव, विकचनवकुवलयवन-गहनमिव, अन्तरान्तरोन्निद्रकुमुदखण्डमुड्डीनास्ते क्षणमशोभयन्त नभस्तलम्।

सुधा—इत्यस्थान इति। इति = इत्थम्। अस्थाने = अनवसरे एव। आशङ्कमानः शङ्कां कुर्वन् हंसः। तेन = उक्तेन। राजहंसकदम्बेन = राजहंसवर्गेण सह = साकम्। अम्बरतलम् = गगनतलम्। उदपतत् = उड्डीयामासे। च = तथा तत्र व्यतिकरे=तदवसरे। दिवापि = दिनेऽपि। स्फारस्फुरत्तारामण्डलम् इव—स्फारम् = स्पष्टम् स्फुरत् = दीप्तमत् तारामण्डलम् = ग्रहमण्डलम् इव विकचनवकुवलय वनगहनम्—विकचम् = विकसितम् नवम् = नूतनम् यत् कुवलयवनम् = कुमोदिनीवनम् गहनम् = सघनम् तद्वत् अन्तरान्तरे = मध्ये मध्ये। उन्निद्रकुमुदखण्डम्—उत् = उद्गता निद्रा यस्मात् तादृक् कुमुदखण्डम् = विकचकुमुदखण्डम्। उड्डीनाः = उत्पतिताः। ते = राजहंसाः। क्षणम् = निमिषमात्रम्। नभस्तलम् = गगनतलम्। अशोभयन्त = शुशुभिरे।

हिन्दी—इस प्रकार अनवसर (बेमौके) पर ऐसी शङ्का करता हुआ हंस उस राजहंस समूह के साथ आकाश में उड़ गया।

तथा उस समय दिन में भी स्पष्ट चमचमाते हुए तारामण्डल के समान विकसित नूतन घने कुमुदवन के समान, बीच बीच में खिले हुए कुमुद खण्ड की भांति वे राजहंस क्षणभर में आकाश में शोभित होने लगे।

अविलम्बिताश्च न चिरादवापुर्वैदर्भमण्डलमण्डनं कुण्डिनपुरम्—अवतेरुश्च चकितचलच्चक्रवाकालोक्यमानकृतान्धकारविभ्रमभ्रमद्भ्रमरभरभज्यमानाम्भोजभाजि राजभवनासन्नकन्यान्त पुरोद्यानक्रीडासरसि।

सुधा—अविलम्बिता इति। तथा अविलम्बिताः = विलम्बमकुर्वाणाः (हंसाः) न चिरात् = अचिरात्। वैदर्भमण्डलमण्डनम् = वैदर्भमण्डलस्य = वैदर्भराज्यस्य यत् मण्डनम् = शोभनम् तादृक् कुण्डिनपुरम् = कुण्डिनपुरनामकं नगरम्। अवापुः = प्रापुः। च = तथा। चकितचलच्चक्रवाकालोक्यमानकृतान्धकारविभ्रमभ्रमद्भ्रमरभरभज्यमानाम्भोजभाजि—चकिताः चलन्तश्च चक्रवाकाः इति = चकितभ्रमच्चक्रवाकपक्षिणः, आलोक्यमानाः कृतान्धकारा = विहिततमाः इव विभ्रमात् = भ्रान्त्याः भ्रमन्तः = चक्रमन्तः ये भ्रमराः = अलयस्तेषां यो भरः = भारस्तेन भज्यमानानि अम्भोजानि भजन्तीति यत्र तादृशि। राजभवनासन्नकन्यकान्तःपुरोद्यानक्रीडासरसि = राजभवनस्यासन्ने = राजप्रासादनिकटे यत् कन्यकान्तः पुरम् = स्त्रीजनकक्षम्, तस्योद्यानस्य यत्क्रीडासरस्तस्मिन् = वाटिका क्रीडातडागे। अवतेरुः = अवातरन्।

हिन्दी—वे विना कहीं रुके शीघ्र विदर्भ मण्डल की शोभा बने हुए कुण्डिनपुर में पहुँच गये तथा चकित चञ्चल चक्रवाकों (चकई चकवा) वाले एवम् अन्धकार का दृश्य उपस्थित कर देने वाले भ्रान्तिवश चक्कर काटते हुए भौरों के भार से खण्डित कमल शोभा वाले राजभवन के सन्निकट कन्यकान्तःपुर के उद्यानवाले क्रीडा-सरोवर में उतर पड़े।

सरभसप्रधावितेन सरस्तीरविहारव्यसनिना कन्यकाजनेन निवेदितांस्तानवलोकयितुमतिकौतुकेन दमयन्ती कन्यान्तःपुरात्पुराणमदिरारुणायताक्षी क्षिप्रमाजगाम।

सुधा—सरभसमिति। सरभसप्रधावितेन—सरभसम् = सभयम् प्रधावितेन धावमानेन। सरस्तीरविहारव्यसनिना = सरोवरनिकटे विहारस्य विचरणस्य व्यसनम् यस्य तेन। कन्यकाजनेन = नारीकुलेन। निवेदितान् = कथितान् तान् = निर्दिष्टान् राजहंसान्। अवलोकयितुम् = द्रष्टुम्। अतिकौतुकेन = महत्कौतूहलेन। पुराणमदिरायताक्षी = सघनरक्तायतनयना। दमयन्ती = तन्नाम्नी भैमी। कन्यकान्तःपुरात् = स्त्रीजनभवनात्। क्षिप्रम् = द्रुतम्। आजगाम = आगच्छत्।

हिन्दी—समय दौड़ती हुई तड़ाग तट पर विहार करने की व्यसनी स्त्रियों के द्वारा बतलाये गये उन राजहंसों को देखने के लिए अतिकौतूहल से कन्यकान्तःपुरसे सघन मादक अरुण विशाल नयनों वाली दमयन्ती शीघ्र आ गई।

आगत्य च चटुलतरचरणञ्चुलप्रहारविदलितारविन्दकन्दलानुसालबालनलिनीवनविहारिणस्तान्ग्रहीतुमेकैकशः सखीजनमादिदेश।

सुधा—आगत्येति । च=तथा । आगत्य=एत्य । चटुलतरचरणचञ्चुप्रहारविदलितार-विन्दकन्दलान्—चटुलतरैः=अतिचञ्चलैः चरणचञ्चुप्रहारैः—पदचञ्चुप्रहारैः विदलिताः=नाशिताः अरविन्दकन्दलीः=कमलमूलानि यैस्तादृशान् । उत्तालवालनलिनीवनविहारिणः—उत्ताले=तरङ्गायमाणे नवनलिनीवने=नूतनकमलकानने विहरन्ति=विचरन्ति इति तान् । तान्=राजहंसान् ग्रहीतुम्=धर्तुम् । एकैकशः=एकैकम् । सखीजनम्=सखीम् आदिदेश=आदेशं चकार ।

हिन्दी—(दमयन्ती ने) आकर अति चञ्चल चरणों तथा चोचों के प्रहार कमल-को विदलित करने वाले लहराते हुए (हिलते हुए) बाल कमलवन में विचरण करने वाले उन राजहंसों को पकड़ने के लिए एक एक कर सखी को आदेश दिया ।

स्वयं च चलवलयचारुरववाचालितप्रकोष्ठेन सविलासं विस्मयकरं करपल्लवेन तं राजपुत्री राजहंसमुच्चिक्षेप ।

सुधा—तथा स्वयम्=आत्मना । चलवलयचारुरववाचालितप्रकोष्ठेन—चलस्य=चपलस्य वलयस्य=कंकणस्य यच्चारु रवम्=मधुरध्वनिः, तेन चालितम्=कम्पितम् प्रकोष्ठम्=मणिवन्धः यस्य तादृशेन करपल्लवेन=हस्तदलेन । राजपुत्री=राजकन्या दमयन्ती । सविलासम्=सलोलम् । विस्मयकरम्=अद्भुतम् । तम्=अमुम् । राज-हंसम् । उच्चिक्षेप=उत्त्थापयामास ।

हिन्दी—तथा स्वयम् चञ्चल कंकण को मनोरम्यध्वनि से युक्त मणिबन्धवाले कर पल्लव से राजकन्या दमयन्ती ने सविलास उस अद्भुत राजहंस को उठा लिया ।

पाणिपङ्कजस्थित एव सोऽप्यभिमुखीभूय बिभाव्य च चेतश्चमत्कारकारिणमस्याः कान्तिविशेषमाशिषमदात् ।

सुधा—पाणिपङ्कजेति । पाणिपङ्कजस्थितः=पाणिरेव पङ्कजम्, तस्मिन् स्थितः=पाणिपद्मस्थः एव । सः अपि=हंसः अपि । अभिमुखीभूय=सम्मुखे भूत्वा, अस्याः=दमयन्त्याः । चमत्कारिणम् चमत्कारोत्पादकम् । चेतः=मनः । विभाव्य=परिज्ञाय । कान्तिविशेषम् विशिष्टकान्तियुक्तम् । आशिषम्=आशीर्वचनम् । अदात्=दत्तवान् ।

हिन्दी—कर कमल में स्थित ही उस हंसने भी सामने होकर और इसके चमत्कारी चित्त को पहिचान कर कान्ति विशेष आशीर्वाद दिया ।

> **'कन्दर्पस्य जगज्जैत्रशस्त्रेणाश्चर्यकारिणा ।**
> **रूपेणानेन रम्भोरु दीर्घायुः सुखिनी भव ॥ ६ ॥**

अन्वयः—रम्भोरु ! कन्दर्पस्य आश्चर्यकारिणा जगज्जैत्रशस्त्रेण अनेन रूपेण दीर्घायुः सुखिनी भव ॥ ६ ॥

सुधा—कन्दर्पस्येति । रम्भोरु ! (रम्भावदूरू यस्यास्तत्सम्बुद्धौ) हे सुजघने ! कन्दर्पस्य=मदनस्य । आश्चर्यकारिणा=अद्भुतेन । जगज्जैत्रशस्त्रेण—जगतः=संसारस्य जैत्रम्=विजयिनम् शस्त्रम्=आयुधम्, तेन । अनेन=एतेन । रूपेण=सौन्दर्येण दीर्घायुः=चिरायुः सुखिनी च=सुखयुक्ता च भव=स्याः ॥ ६ ॥

हिन्दी—हे कदली के समान सुन्दर ऊरुवाली ! कामदेव के अद्भुत तथा संसार को विजित करनेवाले शस्त्र इस सौन्दर्य से तुम चिरजीविनी बनों और सुखी रहो ॥ ६ ॥

अपि च—

निर्माय स्वयमेव विस्मितमनाः सौन्दर्यसारेण यं
स्वव्यापारपरिश्रमस्य कलशं वेधाः समारोपयत् ।
कन्दर्पं पुरुषाः स्त्रियोऽपि दधते दृष्टे च यस्मिन्सति
द्रष्टव्यावधिरूपमाप्नुहि पतिं तं दीर्घनेत्रं नलम्' ॥ ७ ॥

अन्वयः—सौन्दर्यसारेण यम् निर्माय स्वयम् एव विस्मितमनाः वेधा स्वव्यापार-परिश्रमस्य कलशम् समारोपयत् । यस्मिन् दृष्टे सति पुरुषाः स्त्रियः च कन्दर्पम् दधते । दृष्टव्याधिरूपम् दीर्घनेत्रम् तम् नलम् पतिम् आप्नुहि ॥ ७ ॥

सुधा—निर्मायेति । सौन्दर्यसारेण—सौन्दर्यतत्त्वरूपेण । यम् = यं पुरुषम् निर्माय = विधाय । स्वयमेव = आत्मनैव । विस्मितमनाः = हृष्टचेताः वेधा = विधाता । स्वव्यापार-परिश्रमस्य—स्वस्य व्यापारः स्वव्यापारः = सर्जनम्, तस्मिन्, यः परिश्रमः = आयासः, तस्य । कलशम् = घटम् । समारोपयत् = अधारयत् । यस्मित् दृष्टे सति = पुरुषाः = नराः कम् दर्पम् = कमहंकारम् दधते = धारयन्ति, न कमपीत्यर्थः । स्त्रियः = नार्यः च कन्दर्पम् = मदनम् दधते = धारयन्ति, सकामा भवन्तीति । दृष्टव्यावधिरूपम् = दर्शनीय-सीमारूपम् । दीर्घनेत्रम् = विशालाक्षम् । तम् = अमुम् नलम् = नलनामानम् पतिम् = स्वामिनम् । आप्नुहि = लभस्व । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ७ ॥

हिन्दी—सौन्दर्य के तत्व रूप से जिसका निर्माण कर स्वयम् एवं विस्मित मन विधाता ने अपने सृष्टिरचना रूपी व्यापारपरिश्रम के कलश को आरोपित किया और जिसको देखते ही पुरुष दर्पहीन तथा स्त्रियां कामयुक्त हो जाती हैं, दर्शनीय रूप सीमा वाले, विशालनेत्रों वाले उन नल को पति रूप में प्राप्त करो ॥ ७ ॥

दमयन्ती तु तस्मिन्क्षणे 'क्व संस्कृतवाचः पक्षिणो विवक्षितवाचश्च' इति मनसि विस्मयं भयं च, 'नामाप्याह्लादजननं नलस्य' इति वपुषि वेपथुं रोमाञ्चं च हृदयेऽनुरागमौत्सुक्यं च समकालमुल्लोलायमानमुद्वहन्ती चिन्तयांचकार ।

सुधा—दमयन्तीति । दमयन्ती तु = भैमी तु । तस्मिन् क्षणे = तत्समये । संस्कृत वाचः = संस्कृतभाषिणः पक्षिणः = खगस्य । विवक्षितवाचः = विवक्षितम् = तथ्यपूर्णम् वाक् = वचनम् यस्य । क्व = कुत्र सम्भवः । इति = एवम् मनसि = चेतसि विस्मयम् आश्चर्यम् भयम् = भीतिः च । नलस्य नाम अपि = अभिधानमपि । आह्लादजननम् = हर्षोत्पादकम् । इति = इत्थम् । वपुषि = शरीरे । वेपथुम् = कम्पनम् । रोमाञ्चम् = लोमहर्षणम् च । हृदये = वक्षसि । अनुरागम् = प्रेम । औत्सुक्यम् = उत्सुकताम् च । समकालम् । एककालम् । उल्लायमानम् = तरङ्गायमाणम् । उद्वहन्ती = धारयन्ती । चिन्तयांचकार = विचारयामास ।

हिन्दी—दमयन्ती तो उसी समय "यह संस्कृत बोलने वाला और तथ्यपूर्ण बातों को कहने वाला पक्षी कहां से आ गया।" इस प्रकार मन में विस्मय और भय "नल का नाम ही आह्लादजनक है" इस प्रकार शरीर में कम्पन और रोमाञ्च, हृदय में अनुराग और उत्सुकता एक साथ ही तरङ्गायमाण अवस्था में धारण करती हुई सोचने लगी।

'सोऽयं यस्तेन पान्थेन यान्त्या गौरीमहोत्सवे।
नलोऽप्यनल एवासीद्वर्णितो मे पुरः पुरा' ॥ ८ ॥

अन्वयः—सः अयम् नलः, यः गौरीमहोत्सवे यान्त्याः मे पुरः पुरा तेन पान्थेन वर्णितः एव अनलः आसीत् ॥ ८ ॥

सुधा—सोऽयमिति। सः असौ। अयम् = एषः नलः = नलाभिधः जनः यः गौरीमहोत्सवे = गौरीदेव्याः महोत्सवे यान्त्याः = गच्छन्त्याः मे = मम पुरः = समक्षम्। पुरा = प्राक्। तेन पान्थेन = पथिकेन वर्णितः = ख्यातः एव अनलः = दाहकः आसीत् = अभवत् ॥ ८ ॥

हिन्दी—वह ही यह नल हैं जो कि गौरी महोत्सव में जाते हुए मेरे सामने पहले बतलाये गये थे तथा अनल (दुःखदायी) बने हुए थे ॥ ८ ॥

अथास्याः सखी परिहासशीला नाम नाम्नैव नलस्योद्भिन्नवहलपुलकाङ्कुरामिमामवलोक्य नर्मालापमकरोत्।

सुधा—अथेति। अथ = अनन्तरम् अस्याः = दमयन्त्याः परिहासशीलानाम सखी = तन्नाम्नी सखी। नलस्य नाम्ना एव = अभिधानेनैव। उद्भिन्नवहलपुलकाङ्कुराम्—उद्भिन्नम् = प्रकटितम् वहलपुलकाङ्कुरम् = अतिपुलकरोमाञ्चम् यस्यास्ताम् इमाम् = एताम् दमयन्तीम्। अवलोक्य = दृष्ट्वा। नर्मालापम् = मधुरवार्ताम् अकरोत् = चकार।

हिन्दी—तदनन्तर परिहासशीला नाम की सखी नल के नाम से ही पुलकपूर्ण रोमाञ्चयुक्त इस दमयन्ती को देखकर मधुर आलाप करने लगी।

कोष्णं किं नु निषिच्यते तव बलात्तैलं सखि श्रोत्रयो-
रन्तस्तित्तिरिपक्षि पत्रमथवा मन्दं मृदु भ्राम्यति।
येनाङ्गेषु निखातमन्मथशरप्रस्फारपिच्छच्छवि-
र्नीलीमेचकितोच्चकञ्चुकरुचं रोम्णां वहत्युद्गमः ॥ ९ ॥

अन्वयः—सखि ! नु तव श्रोत्रयोः अन्तः किम् कोष्णम् वलात्तैलम् निषिच्यते, अथ किं वा मृदु तित्तिरि पक्षिपत्रम् मन्दम् भ्राम्यति। येन अङ्गेषु निखातमन्मथशरप्रस्फार पिच्छच्छविः रोम्णाम् उद्गमः नीलीमेचकितोच्चकञ्चुकरुचम् वहति ॥ ९ ॥

सुधा—कोष्णमिति। 'सखि' इत्यामन्त्रणे। नु = नूनम्। तव = ते। श्रोत्रयोः = कर्णयोः। अन्तः = मध्ये। किम् कोष्णम् अनत्युष्णम्। वलात्तैलम् निषिच्यते = निषिच्यमानमस्ति। किम् वा = अथवा किम् मृदु = कोमलम्। तित्तिरिपक्षिपत्रम् = तित्तिरि नाम्नः पक्षिणः पत्रम् = पक्षम् मन्दम् = शनैः शनैः भ्राम्यति = भ्रमदस्ति। येन = कारणेन।

अङ्गेषु = शरीरावयवेषु । निखातमन्मथशरप्रस्फारपिच्छच्छविः निखाताः = निमग्नाः ये मन्मथशराः = कामबाणाः, तेषाम् प्रस्फाराणि पिच्छानि तद्वच्छविर्यस्य स । रोम्णाम् = लोमानाम् उद्गमः = रोमाञ्चः । नीलीमेचकितोच्चकञ्चुकरुचम्—नील्या = ओषधिविशेषेण मेचकितस्य = श्यामलितस्य उच्चकञ्चुकस्य = उत्कृष्टकञ्चुकस्य रुचम् = कान्तिम् । वहति = दधाति । प्रस्फारत्वं पिच्छानाम् अप्रवेशे हेतुः । अन्यथा शरेषु प्रविष्टेषु पिच्छान्यपि कथं न प्रविष्टानि, तेन पिच्छच्छविरिति कविराचष्टे । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ९ ॥

हिन्दी—हे सखी ! क्या तुम्हारे कानों में कुछ कुछ गर्म वला तेल डाला गया है, अथवा क्या कोमल तीतर पक्षी के पंख को धीरे से घुमाया जा रहा है ? जिसके कारण अङ्गों में घुसे हुए काम बाणों के स्फुट पंखों के समान कान्ति वाला उठा हुआ लोम समूह नील रंग से रंगे हुए चमकीले उत्तम कञ्चुकी को कान्ति को धारण कर रहा है ॥ ९ ॥

दमयन्ती तु तस्याः सवैलक्ष्यस्मितमेवोत्तरं कल्पयन्ती शनैः शिरःकम्पतरलितावतंसोत्पला सलज्जा चलद्विलोचनान्तेन तामतर्जयत् ।

सुधा—दमयन्तीति । तस्याः = सख्याः । सवैलक्ष्यस्मितम् इव = सवैलक्ष्यम् = सविस्मय स्मितम् इव = मन्दहसितमिव । उत्तरम् कल्पयन्ती = ददती । शनैः = मन्दम् । शिरःकम्पतरलितावतंसोत्पला—शिरः कम्पेन = उत्तमाङ्गकम्पेन तरलिते चञ्चले अवतंसोत्पले = कर्णाभरणे यस्याः सा । सलज्जा = लज्जया सहिता = ह्रीयुता । चलद्विलोचनान्तेन = चलतोः = चञ्चलयोः विलोचनयोः = नयनयोः अन्तः = कटाक्षम् तेन । ताम् = सखीम् । अतर्जयत् = अवर्जयत् ।

हिन्दी—उसको सविस्मय मन्द मुस्कराती जैसी उत्तर देती हुई धीरे-धीरे शिर हिलाने के कारण हिलते हुए कर्णाभूषणों वाली लजीली दमयन्ती ने चञ्चल नयनों के कटाक्ष से उस (सखी) को मना किया ।

अवादीच्च तं राजहंसम् 'अहो महानुभाव, सर्वथाश्चर्यहेतुरसि' ।

सुधा—च = तथा । तम् = अमुम् । राजहंसम् = हंसपक्षिणम् । अवादीत् = अकथयत्—अहो महानुभाव = अयिमहाशय ! सर्वथा = सर्वप्रकारेण आश्चर्यहेतुः = विस्मयस्य कारणम् । असि ।

हिन्दी—तथा उस राजहंस से कहा कि—'हे महानुभाव ! सब प्रकार से आश्चर्य के हेतु हो' ।

तथाहि—

द्रष्टव्यानुरूपं रूपम्, महाश्चर्यगर्भाः प्रपञ्चितवाच्या वाचः, सूचितसंस्कारातिरेको विवेकः, सौजन्याश्रयः प्रश्रयः, निष्कारणोपकारधात्री मैत्री ।

सुधा—द्रष्टव्येति । द्रव्यानुरूपम् = द्रव्यानुकूलम् । रूपम् = आकृतिः । महाश्चर्यगर्भा = महदद्भुतयुक्ताः प्रपञ्चितवाच्याः = विशिष्टार्थसम्पन्ना वाचः = वाण्यः । सूचितसंस्कारा-

तिरेकः—सूचितम् = विज्ञप्तम् संस्कारातिरेकम् = संस्काराद्भुतम् येन तथा । विवेकः = विचारशक्तिः । सौजन्याश्रयः सौजन्यम् = सज्जनता आश्रयो यस्य तथा । प्रश्रयः = नम्रता । निष्कारणोपकारधात्री—निष्कारणम् = अकारणम् उपकारं दधातीति = उपकारकर्त्री । मैत्री = मित्रता । अस्ति ।

हिन्दी—क्योंकि—(तुम्हारा) द्रव्यानुरूप सौन्दर्य है, महान् अद्भुत पूर्ण विशेष अर्थों वाली वाणी है, अद्भुत संस्कार बतलाने वाली विचार-शक्ति है, सज्जनता का आश्रय नम्रता है तथा अकारण उपकार करने वाली मित्रता है ।

तत्त्वमनेकधा जनितविस्मयो बहु प्रष्टव्योऽसि ।

सुधा—तदिति । तत् = अतः । त्वम् = राजहंसः । अनेकधा = बहु-प्रकारम् । जनितविस्मयः = जनितः = उत्पन्नः विस्मयः = आश्चर्यः येन तथा । त्वम् । बहु = अत्यर्थम् । प्रष्टव्यः असि = प्रष्टुं योग्यः असि ।

हिन्दी—अतएव बहुत प्रकार आश्चर्य उत्पन्न करने वाले (तुम) से बहुत कुछ पूछना है ।

किं तु प्रस्तुतं पृच्छामः ।

कथय । कोऽयमात्मरूपसम्भावितकन्दर्पदर्पदावानलो नलो नाम ।

'यस्यैतानि मन्दरमथनक्षणक्षुभितक्षीरसागरतरङ्गभ्रमभ्रान्तिभाञ्जि भ्रमन्ति यशांसि ।

सुधा—किं त्विति । किन्तु = किञ्च । प्रस्तुतम् = प्रासङ्गिकम् । पृच्छामः कथय = वद । अयम् = एषः । आत्मरूपसम्भावितकन्दर्पदर्पदावानलः—आत्मनः = स्वस्य रूपेण सम्भावितस्य = सम्भाव्यस्य । कन्दर्पस्य = मदनस्य दर्पाय = अहंकाराय दावानलः इव = दाहक सदृशः । नलः नाम = नलाख्यः कः = को महाशयः (अस्ति) यस्य = नलस्य । एतानि = इमानि । मन्थरमथनक्षणक्षुभितक्षीरसागरतरङ्गभ्रमभ्रान्तिभाञ्जि—मन्दरेण = मन्दराचलेन मथनक्षणे = मथनकाले क्षुभितः = उद्वेलितो यः क्षीरसागरः = पयोधिस्तस्य तरङ्गाणाम् = वीचीनाम् भ्रमेण भ्रान्तिभाञ्जि = भ्रमयुक्तानि । यशांसि=कीर्तयः । भ्रमन्ति = परिक्रमन्ति ।

हिन्दी—किन्तु प्रासंगिक बात ही पूछती हूँ । कहो ! यह अपने रूप से कामदेव के अभिमान के लिए दावानल जैसा नल नाम का कौन व्यक्ति है जिसके यश मन्दराचल के द्वारा मन्थन काल में उमड़ते क्षीर सागर की तरङ्गों के समान चक्कर काट रहे हैं ।

इत्येवमुक्तः सोऽपि 'सुन्दरि, यद्येवमुपविश्यताम् । अवधीयतां मनः । श्रूयतां सविश्रब्धम्' इत्यभिधाय कथयितुमारब्धवान् ।

सुधा—इत्येवमिति । इति । एवम् = इत्थम् । उक्तः = कथितः । सः = हंसः अपि । सुन्दरि = हे रूपसि ! यदि एवम् = यदि ईदृशमस्ति । तर्हि । उपविश्यताम् = आस्यताम् । मनः = चेतः । अवधायताम् = एकाग्रीक्रियताम् । सविश्रब्धम् = निश्चिन्तम् । श्रूयताम् =

आकर्ण्यताम् । इति अभिधाय = एवं कथयित्वा । कथयितुम् = भणितुम् । आरब्धवान् = प्रारमत ।

हिन्दी—इस प्रकार कहे जाने पर उस हंस ने भी—"हे सुन्दरि ! यदि ऐसा है तो बैठिये, मन एकाग्र कीजिये, निश्चिन्त होकर सुनिये।" यह कह कर कहना आरम्भ किया ।

'अस्ति समस्तसुरासुरलोककर्णपूरीकृतकान्तकीर्तिकुन्दकुसुमः, कुसुमायुधरूपरमणीयदेहप्रभः, प्रभावयुक्तो विप्रभावश्च, शुचिरनुपतापकारी च, घनागमसमयो न वारिबहुलश्च, शिशिरस्वभावो न जाड्ययुक्तश्च, रामः कुशलवयोरामणीयकेन जनको वैदेहभागेन, नैषधः प्रजानां पतिः, विरञ्चि इव नाभिभूतः समरे, वीरो वीरसेनो नाम ।

सुधा—अस्तीति । समस्तसुरासुरलोककर्णपूरीकृतकान्तकीर्तिकुन्दकुसुमः समस्तस्य = सकलस्य सुरासुरलोकस्य = देवासुरलोकस्य कर्णेषु पूरीकृतानि = भरितानि कान्तकीर्ति रूपाणि = उज्ज्वलयशोरूपाणि कुन्दकुसुमानि = कुन्दपुष्पाणि येन सः । कुसुमायुधरूपरमणीयदेहप्रभः—कुसुमायुधस्य रूपम् इव = कामदेव सौन्दर्यमिव रमणीया = मनोरमा देहप्रभा—शरीर कान्तिः यस्य सः । प्रभावयुक्तः—प्रभावः = माहात्म्यम् तेन युक्तः = सम्पन्नः । विप्रभावः–विप्राणां भां = तेजोऽवतीति । शुचिः = पुण्यम् । विरोधे तु ग्रीष्मः शुचिः शुद्धेऽनुपहने शृङ्गाराषाढयोः । ग्रीष्मे हुतवहेऽपि इति विश्वप्रकाशः । घनागमसमयः–घनानामागमस्तस्य समयः = वर्षाकालः इति विरोधे । पक्षे तु—घनः = प्रचुरः आगमः = सिद्धान्तो यस्य सः । न वा । अरि बहुलः–अरिः = शत्रुः बहुलेन = आधिक्येन यस्य सः । शिशिरस्वभावः शिशिरः = शीतलः शान्तो वा स्वभावो यस्य सः । शिशिरः = शीतो माघफाल्गुनौ च । जाड्यम् = मौर्ख्यम्, हिमं च, तेन युक्तो यः स नास्ति । कुशलेन = चतुरेण वयोरामणीयकेन = अवस्थासौन्दर्येण । रामः = चारुः । वैदेहभागेन–विदेहाः = देशास्तेषामयं वैदेहोभागस्तेन जनकाख्यनृपतिप्रतिमः । अन्यत्र रामो दाशरथिः । वै वितर्के । देहस्य भां = कान्ति गच्छति व्याप्नोति इति कृत्वा ड प्रत्यये देशप्रभावेण शरीरकान्त्यनुहारिणा रामणीयकेन = सौन्दर्येण । कुशस्य लवस्य च जनकः = जनयिता । नैषधः = निषधदेशीयः । प्रजानाम् = जनानाम् पतिः = प्रभुः = राजा । नाभिभूतः = नाभिजातः, विरञ्चिः इव = विधाता समः । समरे = युद्धे । वीरः । न कदाचित् अभिभूतः=पराजितः । वीरसेनः नाम = वीरसेनाभिधः राजा अस्ति ।

हिन्दी—समस्त देवताओं और राक्षसवर्ग के कानों को उज्ज्वल कीर्तिरूपी कुन्द पुष्पों से भरने वाले, कुसुमायुध (कामदेव) के समान सुन्दर शरीर कान्ति वाले, प्रभावयुक्त, विप्रतेज की रक्षा करने वाले, पवित्र प्रचुर सिद्धान्त वाले (वारि बहुल नहीं), शील स्वभाव वाले (मूर्खता या हिम से युक्त नहीं ।) कुशल आयु तथा रमणीयता से अभिराम देशों के भाग मे जनक के समान (अथवा कुश और लव के जनक राम के समान) निषध प्रजा के स्वामी, नाभि से उत्पन्न हुए ब्रह्मा के समान, युद्ध में वीर (युद्ध में पराभूत नहीं) वीरसेन नाम के राजा हैं ।

यस्य च बहुशोभयाङ्गप्रभया सह स्फुरत्युदारा मनोवृत्तिः, अखण्डनयाज्ञया सदृशी राजते राज्यस्थितिः सज्जया सेनया सह श्लाघनीया कृपाणयष्टिः ।

सुधा—यस्येति । च = तथा । यस्य = राज्ञः । बहुशोभया = अतिशोभया बहुशः अभया = भयरहिता वा । प्रभया = कान्त्या सह, अतिभययुक्ता वा । उदारा मनोवृत्तिः = चेतो = वृत्तिः । अखण्डनयाज्ञया–अखण्डो नयः षाड्गुण्यम् यस्याम्, तया आज्ञया सदृशी राज्यस्थितिः राजते = शोभते । सज्जया–सत् शोभनौ जयो यस्याः । सेनापक्षे—सज्जया = सुसज्जितया । सेनया = वाहन्या सह । श्लाघनीया = प्रशंसनीया कृपाणयष्टिः खड्ग यष्टिः अस्ति ।

हिन्दी—उनकी बहुशः अभया (पूर्ण-निर्भीक) अङ्ग कान्ति के साथ उदार मनोवृत्ति, अखण्ड षाड्गुण्ययुक्त (अखण्डन आज्ञा के सदृश) राज्यस्थिति शोभित है और सुन्दर विजय दिलानेवाली सुसज्जित सेना के साथ प्रशंसनीय कृपाण यष्टि शोभित हो रही है ।

यश्च सशृङ्गारो नारीषु, वीरो वैरिषु, बीभत्सः परदारेषु, रौद्रो द्रोहिषु, सहास्यो नर्मालापेषु, भयानकः संग्रामाङ्गणेषु, सकरुणः शरणागतेषु ।

सुधा—यश्चेति । यश्च = यः वीरसेन नृपः । नारीषु=रमणीषु सशृङ्गारः = शृङ्गारवान् । वैरिषु = शत्रुषु, वीरः = पराक्रमी । परदारेषु = परस्त्रीषु बीभत्सः = घृणाकरः । द्रोहिषु = द्वेषिषु, रौद्रः = भयङ्करः । नर्मालापेषु = मधुरवार्तासु, सहास्यः=हास्ययुक्तः । सङ्ग्रामाङ्गणेषु = युद्धभूमिषु भयानकः = भयङ्करः । शरणागतेषु=दुःखितजनेषु, सकरुणः = सदयः अस्ति । अत्र शृङ्गारादिरसानां रमणीयो निर्वाहः ।

हिन्दी—तथा जो कामिनियों में शृङ्गारवान् रहता है, शत्रुओं में वीरता दिखलाता है, परस्त्री गमन से घृणा रखता है, द्रोह करने वालों पर क्रोध दिखलाता है, मधुरवार्तालापों में हंसता है, युद्ध के मैदानों में भयङ्करता दिखलाता है तथा शरणागतों पर दयालु रहता है ।

यस्य च चतुरुदधितटीटीकमानशरच्चन्द्रविशदयशोराशिराजहंसस्य निस्त्रिंशता कृपाणेषु, कुचातुर्यं कलत्रेषु, कूपदेशसेवा पापर्धिकेषु लुब्धकपर्यायः कैवर्तकेषु तीक्ष्णता शस्त्रेषु, धर्मच्छेदो धनुर्विद्यायाम् ।

सुधा—यस्येति । यस्य च = यस्य नृपस्य । चतुरुदधितटीटीकमानशरच्चन्द्रविशदयशोराशिराजहंसस्य— चतुरुदधेः = चतुःसमुद्रस्य तटीम् = तटभागम् । टीकमानः = चिह्नितः शरच्चन्द्रस्य=शरत्कालीनचन्द्रमसो विशदा = शुभ्रा यशोराशिः = कीर्तिराशिर्येन तादृशस्य राजहंसस्य = राजहंसपक्षिणः । कृपाणेषु = खड्गेषु निस्त्रिंशता = क्रूरता । कलत्रेषु = स्त्रीषु । कुचातुर्यम्—कुचाभ्याम् आतुर्यम् दुर्वहभरत्वात् । अनैपुण्यं नान्येषु । कूपदेशस्य = कूपसेवा पापर्धिकेषु = मृगयाभ्यासेषु । कुत्सित उपदेशो येषां तेषां दाम्भिकानाम् सेवा अन्येषु न । लुब्धकपर्यायः—"लुब्धकः' इति पर्यायः एकार्थम् शब्दान्तरम् = कैवर्तकेषु = तरिवाहकेषु । तथा—कुत्सितो लुब्धो लुब्धकः, तस्य पर्यायः = परिणामो

नान्येषु । तीक्ष्णता = आयः शूलिकत्वम् । शस्त्रेषु = आयुधेषु । धर्मच्छेदः—धर्मनामा-द्रुमः यन्मयं धनुर्विधीयते, तस्य च्छदः = छेदनम्, कर्तनम् धनुर्विद्यायाम् = धनुर्वेदे । तथा धर्मस्य पुण्यस्य छेदः = नाशः अन्यत्र न भवति ।

हिन्दी—चारों समुद्रों के तटों पर चिह्नित शरत्कालीन चन्द्रमा की उज्ज्वल कीर्तिराशि जैसे राजहंसों वाले जिस राजा की क्रूरता खड्गों में हो है अन्य में नहीं, कुचों के भार की आतुरता स्त्रियों में पाई जाती है कुचातुर्यं (अनैपुण्य) अन्यत्र कूप देश सेवा (कुये के पास बैठना) मृगया के अभ्यास कार्यों में होती है निन्दनीय उपदेश वाले दाम्भिको की सेवा अन्यत्र नहीं । 'लुब्धक' पर्याय कैवर्तों (केवटों—मल्लाहों) में होता है निन्द्य लोभ का परिणाम अन्यत्र नहीं । तीक्ष्णता (पैनापन) शास्त्रों में होती है किसी व्यक्ति में नहीं । धर्म नाम का पेड़ का काटा जाना धनुर्विद्या में होता है धर्म का नाश अन्यत्र नहीं होता है ।

एवमस्य हरस्येव करस्थं कृत्वाशेषमण्डलमनवरतविख्यातविजयाभिनन्दिनः, सुन्दरकैलासनाभिरम्यवनान्तरेषु विहरतः मदननिरुद्धनैषधीपीनोच्चकुचकुम्भा-वष्टम्भमसृणितवक्षःस्थलस्य सुखेनाभिक्रामन्ति दिवसाः ।

सुधा—एवमिति । एवम् = इत्थम् । हरस्य इव = महादेवस्येव । अस्य=एतस्य राज्ञः करस्थम् = हस्तगतम् शेषमण्डलम्—शेषाख्यो नागस्तस्यमण्डलम् कुण्डलाकारं वपुः । तथा अशेषमण्डलम्=समस्तदेशम् । अनवरतविख्यातविजयाभिनन्दिनः—हरपक्षे—निरन्त-रम् विख्यातम् = प्रख्यातम् विजयाभिनन्दनम् भङ्गाभिनन्दनम् यस्य तस्य । नृपपक्षे—अनवरतम् विख्यातम् विजयाभिनन्दनम् = जयस्वागतम् यस्य तस्य । सुन्दरकैलासनाभि-रम्यवनान्तरेषु—हरपक्षे—सुन्दरस्य = मनोरमस्य कैलासनाभेः कैलास नाम पर्वतस्याधः रम्येषु = रमणीयेषु वनान्तरेषु=काननान्तरेषु । नृपपक्षे—कम् = जलम् । एला = लता । असनः = पीत मालः, तैः सुन्दरैरभिरम्येषु काननविशेषेषु । विहरतः = विचरतः । मदननिरुद्धनैषधीपीनोच्चपयोधरकुम्भयोरवष्टम्भेन मसृणितम् वक्षःस्थलं यस्य तथोक्तस्य सतः । सुखेन = आनन्देन । दिवसा = दिनानि अभिक्रामन्ति = भान्ति ।

हिन्दी—इस प्रकार जैसे शिव जी हाथ में पकड़े हुए शेष नाग का मण्डल हो उसी प्रकार सम्पूर्ण देश को अपने हाथ में संभाले निरन्तर प्रसिद्ध भोग के कारण प्रसन्न सुन्दर कैलास पर्वत के रमणीक वन प्रदेशों में विचरण करने वाले प्रसन्न शिव जी की भांति निरन्तर विख्यात विजय का स्वागत करने वाले । जल—इलायची तथा पीत शाल के कारण अभिरम्य (रमणीक) वन विहार करने वाले, कामदेव के द्वारा निरुद्ध निषध देश की कामिनियों के स्थूल एवं उन्नत कुच कुम्भों के संस्पर्श से कोमल वक्षःस्थल वाले उस राजा के दिन सुख से व्यतीत हो रहे हैं ।

कदाचिच्चतुरुदधिवेलावलयितवसुन्धराविख्यातमपत्यमभिलषन्ननादरचरणा-ङ्गुष्ठानिष्ठ्यूतकैलासोन्मूलनागतपतद्दशवदनाविरसविरुतविहसितामरमण्डलीमहि-तमहिमानमनवरतविरञ्चिरचितविचित्रनामसामवस्तुस्तुतिमनवरतसकललोक-कल्याणकामधेनुमनुपमवर्चसमर्चयाञ्चकार भगवन्तमम्बिकापतिम् ।

सुधा—कदाचिदिति । कदाचित्=कदापि । चतुरुदधिवेलावलयितवसुन्धराविख्यातम् चतुरुदधेः=चतुः समुद्रस्य वेला=तटम्, तेन वलयिता=आवृता या वसुंधरा=भूमिस्तस्यां विख्यातः=प्रसिद्धस्तादृशम् । अपत्यम्=सुतम् । अभिलषन्=इच्छन् । अनादरचरणाङ्गुष्ठनिठ्यूतकैलासोन्मूलनागतपद्दशवदनविरसविरुतविहसितामरमण्डलीमहिमानम्—अनादरेण=अनायासेन चरणाङ्गुष्ठेन=पादाङ्गुष्ठेन निष्ठ्यूतम् कैलासः=कैलासनामपर्वतः, तस्योन्मूलनाय=उत्पाटनाय आगतस्य=आयातस्य पततः=स्खलतः दशवदनस्य=रावणस्य यत् विरसम्=नीरसम् विरुतम्=रुदनम्, तेन विहसिता=प्रसन्नीभूता या अमरमण्डली=सुरमण्डली, तादृशी महिमा यस्य तम् । अनवरतविरञ्चिरचितविचित्रनाम सामवस्तुस्तुतिम्—अनवरतम्=निरन्तरम् विरञ्चिना ब्रह्मणा विचित्रनामभिः=गर्भंभगवत्त्रिनेत्रादिभिः सामभिः=सामवेदयन्त्रैः वस्तुस्तुतिर्यस्य तम्=स्तवन कृतम् । अनवरतसकललोककल्याणकामधेनुम्=निरन्तरनिखिललोककल्याणकामधेनुसदृशम् । अनुपमवर्चसम्=अद्भुततेजस्विनम् भगवन्तम्=प्रभुम् अम्बिकापतिम्=पार्वतीशम् शिवम् । अर्चयाञ्चकार=पूजयामास ।

हिन्दी—कदाचित् चारों समुद्र तटों से घिरी वसुन्धरा में विख्यात सुत की अभिलाषा करते हुए (राजा ने) अति तेजस्वी उमापति भगवान् शिव की अर्चना की जो (भगवान् शिव) अनायास पांव के अंगूठे से दबाये हुए कैलास पर्वत को उखाड़ कर फेंकने के लिए आये हुए पर्वत से गिरने के कारण रावण के करुण क्रन्दन से हँसते हुए देव समूह द्वारा पूजनीय महिमा वाले हैं, तथा ब्रह्माजी निरन्तर जिनके नामों पर आधारित सामवेद के मन्त्रों से सदा स्तुति किया करते हैं और जो सकललोक कल्याण के लिए कामधेनु सदृश हैं ।

अतिभक्तितोषितहरलब्धवरश्च निरुपमरूपयानुरूपया रूपवत्यभिधानया प्रियया सह मकरकेतनकेलिफलमनुभवन्नतिचिरमासांचक्रे ।

सुधा—अतिभक्तीति । अतिभक्तितोषितहरलब्धवरः—अतिभक्त्या=महद्भक्त्या तोषितः=प्रसादीकृतः हरः=शिवः लब्धः=प्राप्तः वरश्च येन सः । निरुपमरूपया—निरुपमः=उपमारहितः रूपो यस्यास्तया । अनुरूपया=अनुकूलया रूपवत्यभिधानया=रूपवत्याख्यया । प्रधानया=मुख्यया । प्रियया सह=प्रेयस्या समम् । मकर—केतन केलिफलम्=कामक्रीडाफलम् । अनुभवन् अनुभवं कुर्वन् । अतिचिरम्=बहुकालम् । आसाञ्चक्रे=सुखमुवास ।

हिन्दी—अत्यन्त भक्ति से शिवजी को प्रसन्न कर तथा वरदान प्राप्त कर राजा अनुपम रूपवाली अनुरूपा रूपवती नामकी प्रधान पत्नी के साथ कामदेव की क्रीडा का फल (आनन्द विलास) का अनुभव करते हुए चिरकाल तक सुख भोगते रहे ।

अतिक्रामति तु कियत्यपि समये संपन्नसत्त्वा समपद्यत रूपवती ।

सुधा—अतिक्रमतीति । कियत्यपि समये=किञ्चित्काले । अतिक्रामति=व्यतीते सति तु । रूपवती=तन्नाम्नी राज्ञी । सम्पन्नसत्वा=सम्पन्नं सत्वम् यस्यां सा=गर्भिणी । समपद्यत=समभवत् ।

हिन्दी—कुछ समय व्यतीत होने पर रानी रूपवती गर्भवती हुई ।

तेन च समस्तसंसारवस्तूद्धृतकान्तिकणकलितगर्भारम्भेण, नारायणनाभिरिव विरञ्चोत्पत्तिकमलकन्दबन्धेन, कल्पपादपलतेव पल्लवारम्भोच्छ्वासेन, मनाङ्मेदुरितोदरा रराज राजीवनयना राजपत्नी ।

सुधा—तेनेति । च = तथा । तेन = उक्तेन । समस्तवस्तूद्धृतकान्तिकणकलितगर्भारम्भेण—समस्तैः = सम्पूर्णैः वस्तुभिः = पदार्थैः उद्धृतानि = उद्गतानि कान्तिकणानि = कान्तिविन्दूनि, तैः कलितः = निर्मितो यो गर्भस्तस्यारम्भः, तेन । विरञ्चोत्पत्तिकमलकन्दबन्धेन—विरञ्चोत्पत्तेः = ब्रह्मण उत्पत्तेः कमलकन्देन = कमलमूलेन बन्धः= बन्धनम्, तेन । नारायणनाभिरिव = विष्णु नाभिरिव । पल्लवारम्भोच्छ्वासेन = नूतनदलाविर्भावेन । कल्पपादपलता इव कल्पवृक्षलता इव मनाक् = किञ्चित् । मेदुरितोदरा—मेदुरितः उदरः = जठरः यस्याः सा = वर्धमानोदरा । राजीवनयना = कमलपत्राक्षी । राजपत्नी = राजमहिषी रूपवती । रराज = शुशुभे ।

हिन्दी—उस समस्त संसार के पदार्थों से निकले हुए कान्तिकणों से निर्मित गर्भ के आरम्भ से ब्रह्मा को उत्पन्न करने वाले कमलमूल से शोभित नारायण नाभि के समान, नूतन पल्लवों के आविर्भाव से कल्पवृक्ष की लता के समान कुछ कुछ बढ़े हुये उदरवाली राजीवनयना राजपत्नी रूपवती सुन्दर लगने लगी ।

क्रमेण च मेचकोच्चचूचुककुचकुम्भकपोलिपाण्डिम्ना निम्नयन्ती मृगलाञ्छनच्छायमवाञ्छदच्छामृतपयः पिष्टमूर्तिमन्मधुसमयमदनमृगाङ्कमण्डलरसेनात्मानमालेप्तुम् ।

सुधा—क्रमेणेति । क्रमेण = क्रमशश्च । मेचकोच्चचूचुककुचकुम्भकपोलिपाण्डिम्ना—मेचकयोः = श्यामलयोः उच्चचूचुककुचकुम्भयोः कपोलयोश्च गण्डस्थलयोश्च यत्पाण्डिमा= पाण्डुरता शुभ्रतावा तेन । मृगलाञ्छनच्छायम् मृगलाञ्छनः = चन्द्रः तस्यच्छायम् = प्रसारम् । निम्नयन्ती = अधःकुर्वन्ती अच्छामृतपयः पिष्टमूर्तिमन्मधुसमयमदनमृगाङ्कमण्डल रसेन—अच्छम् = स्वच्छम् अमृतमेव यत्पयः = नीरम्, तेन पिष्टो = घृष्टः योऽसौ मूर्तिमतां मधुसमयः = वसन्तः, मदनः = कामदेवः मृगाङ्कश्च = चन्द्रश्च, तेषां मण्डलानां रसस्तेन । आत्मानम् = स्वम् । अलिप्तुम् = आलेपनं कर्तुम् अवाञ्छत् = इयेष ।

हिन्दी—क्रमशः श्यामता उन्नत चूचुकों वाले कुचकुम्भों एवं कपोलों की शुभ्रता से मृगलाञ्छन चन्द्रमा को नीचा दिखाती हुई रानी स्वच्छ अमृतजल से पिष्ट मूर्तिमान् वसन्त मदन चन्द्रमण्डल के रस से अपने को लिप्त करने की इच्छा करने लगी ।

अग्रतः सखीजनविधृतमपास्य मणिमयमुकुरमण्डलमनवरतनिशानिर्मलकरवालतलेष्वात्ममुखकमलमवलोकयाञ्चकार ।

सुधा—अग्रत इति । अग्रतः = सम्मुखात् । सखीजनविधृतम् = सखीभिः धृतम् मणिमयमुकुरमण्डलम् = रत्नमयदर्पणम् । अपास्य = दूरीकृत्य । अनवरतनिशानिर्मलकरवाल

तलेषु—अनवरतम् = निरन्तरम् निशानिर्मलानि = शाणोज्ज्वलानि करवालानि = खड्गानि तेषां तलेषु = धारासु। आत्ममुखकमलम् = स्वपद्माननम्। अवलोकयांचकार। ददर्श।

हिन्दी—सामने सखियों द्वारा रखे गये मणिमय दर्पणमण्डल को हटाकर निरन्तर शान रखने से उज्ज्वल बनी तलवारों की धारों में (वह) निरन्तर अपना मुख कमल देखा करती थी।

निरस्य नीलोत्पलमजरठकण्ठीरवकण्ठकेसरस्तवकमकरोत्कर्णावतंसम्। अतिबहलकुङ्कुमाङ्ककस्तूरिकापङ्कमपहाय मत्तमातङ्गमदकर्दमेन निजभुजशिखरयोर्विरचयांचकार विचित्रपत्रभङ्गान्।

सुधा—निरस्येति। नीलकमलम् = इन्दीवरम्। निरस्य = अपास्य। जरठकण्ठीरवकण्ठकेसरस्तवकम्—जरठस्य = वृद्धस्य कण्ठीरवस्य = मयूरस्य कण्ठे = गलप्रदेशे यत् केसरस्तवकम् = केसरगुच्छम्। कर्णावतसम् = कर्णाभरणम् अकरोत् = चकार। अतिबहलकुङ्कुमाङ्ककस्तूरिकाम्—अतिबहलम् = सघनम् कुङ्कुमाङ्कम् यस्यां तथा कस्तूरिका ताम्। अपहाय = विहाय। मत्तमातङ्गमदकर्दमेन—मत्तानाम्=मदयुतानाम् मातङ्गानाम्= यत् मदकर्दमम् = मदपङ्कम् तेन। निजभुजशिखरयोः = आत्मबाहुप्रान्तयोः। विचित्रपत्रभङ्गान् = अद्भुतचित्राङ्कान्। विरचयांचकार = रचयामास।

हिन्दी—नीलकमल को हटाकर वयस्क कण्ठीरव (मयूर) के कण्ठ के समान नीले केसर गुच्छे को कानों का आभूषण बना रही थी। अत्यधिक गाढ़े कुङ्कुम से युक्त कस्तूरी को छोड़कर मतवाले हाथियों के मदपङ्क से अपनी भुजाओं के छोर पर विचित्र चित्र (पत्रभङ्ग) बनाया करती थी।

एवमन्तःस्फुरद्गर्भानुरूपदोहदसुखमनुभवन्ती कदाचिदुच्चस्थानस्थिते सौम्यग्रहग्रामे, महाराजजन्मोचितेऽह्नि शुभसंभारकारणायां कालवेलायां जातप्राये प्रभाते प्रभाप्रतानजनितपरिवेषमशेषतेजस्वितेजःपुञ्जापहारिणमालोहितपादपल्लवोल्लसितपङ्कजच्छायम्, द्यौरिव रविमण्डलम्, उन्नमन्मेघमालेव विद्युल्लोलम्, अरणिरिव वितानवैश्वानरम्, नरपालप्रिया प्रीणितगोत्रं पुत्रमजीजनत्।

सुधा—एवमिति। एवम् = इत्थम्। अन्तःस्फुरद्गर्भानुरूपदोहदसुखम्—अन्तः = मध्ये स्फुरतः गर्भस्य = स्पन्दतो गर्भस्यानुरूपम् = अनुकूलम् दोहदसुखम् = गर्भानन्दम्। अनुभवन्ती = अनुभवं कुर्वन्ती। कदाचित् = कदापि। उच्चस्थानस्थिते = उत्तमस्थान गते। सौम्यग्रहग्रामे = सुन्दरग्रहसमूहे। महाराजजन्मोचिते=महाराजजन्मयोग्ये। अह्नि= दिवसे। शुभसम्भारकारणायाम् = उत्तमसम्भारहेतुकायाम्। कालवेलायाम् = उपयुक्तवेलायाम्। जातप्राये प्रभाते = प्रायः प्रत्यूषसंजाते। प्रभाप्रतानजनितपरिवेशम्—प्रभाप्रतानेन = कान्तिविस्तारेण जनितम् = जातम् परिवेषम् = मण्डलम् यस्य तम्। अशेष तेजस्वितेजः पुञ्जापहारिणम्—अशेषम् = निखिलम् यत् तेजस्वितेजः पुञ्जम्, ओजस्विनामोजः समूहम्, तदपहरतीति तम्। आलोहितपादपल्लवोल्लसितपङ्कजच्छायम्— आलोहिताभ्याम् = रक्ताभ्याम् पादपल्लवाभ्याम् = चरणदलाभ्याम् उल्लसिता=शोभिता- पङ्कजच्छाया यस्य तादृशम्। द्यौरिव = आकाशमिव रविमण्डलम् = सूर्यमण्डलम् उन्न-

मन्मेघमालेव–उन्नमन्ती = उद्वेलन्ती मेघमाला = घनावलिरिव विद्युल्लोलम्—विद्युताम् = चपलानाम् लोलनं लोलः = विलासस्तम् । अरणिरिव = यज्ञकाष्ठमिव । वितानवैश्वानरम् = विस्तृताग्निम् । प्रीणितगोत्रम् = कुलतृप्तिदायकम् । पुत्रम् = सुतम् । नरपालप्रिया = भूपालप्रेयसी अजीजनत् = अजनयत् ।

हिन्दी—इस प्रकार अन्दर स्पन्दन करते हुए गर्भ के अनुरूप दोहदसुख (गर्भ पीड़ा का आनन्द) का अनुभव करती हुई कदाचित् सौम्यग्रह-समूह के उच्च स्थान पर स्थिर होने पर, महाराज के जन्मयोग्य दिन पर शुभतैयारियों वाली वेला में लगभग प्रभात होते समय, कान्ति के प्रसार से उत्पन्न गोलपरिवेष बनाये हुए, समस्त तेजस्वियों के तेजः पुञ्ज का अपहरण करने वाले लाल चरणदलों से कमलकान्ति को शोभित करने वाले, वंश को तृप्त कर देने वाले पुत्र को राजपत्नी ने उसी प्रकार जन्म दिया जैसे आकाश ने सूर्य मण्डल को, उमड़ती हुई मेघमाला ने विद्युद् विलास को तथा अरणि ने विस्तृत वैश्वानर (अग्नि) को जन्म दिया ।

तत्र च दिवसे—

सांशुकोन्नतवंशस्य तस्य राज्ञः पुरस्य च ।
बभूव लक्ष्मीः सा कापि यया स्वर्गोऽपि निर्जितः ॥ १० ॥

अन्वयः—सांशुकोन्नतवंशस्य तस्य राज्ञः पुरस्य च सा कापि लक्ष्मीः बभूव यया स्वर्गः अपि निर्जितः ॥ १० ॥

सुधा—सांशुकेति । सांशुकोन्नतवंशस्य—अंशुना = रविणा सह सांशुकः उन्नतो वंशो यस्य तस्य = सूर्यवंशस्य सपताकोच्छ्रितवेणुकस्य । तस्य = एतस्य । राज्ञः = नृपस्य पुरस्य = नगरस्य च सा = एषा । कापि = काचिद् अपि । लक्ष्मीः = शोभा । बभूव = अभवत् यया = शोभया स्वर्गः अपि = द्युलोकः अपि । निर्जितः = विजितः ॥ १० ॥

हिन्दी—उस दिन पर वहां—उन्नत सूर्यवंशी उस राजा की तथा उसके वस्त्र-विशिष्टध्वज वंश वाले नगर की ऐसी शोभा हुई कि उसके द्वारा स्वर्ण लोक भी जीत लिया गया ॥ १० ॥

अपिच—

सवृद्धबालाः कालेऽस्मिन्मुक्ताहारविभूषणाः ।
प्राप्ताः प्रीतिं पुरे पौरा वनेषु च तपस्विनः ॥ ११ ॥

अन्वयः—अस्मिन् काले पुरे सवृद्धबालाः मुक्ताहारविभूषणाः पौराः, वनेषु तपस्विनः प्रीतिम् प्राप्ताः ॥ ११ ॥

सुधा—सवृद्धेति । अस्मिन् = एतस्मिन् । काले = समये । पुरे = नगरे । सवृद्धबालाः वृद्धः = पितामहादिः, बालः = पुत्रादिः, ताभ्यां सहेति । मुक्ताहारविभूषणाः— मौक्तिकहारालङ्कारणाः । पौराः = नगरवासिनः । वनेषु = अरण्येषु च । सवृद्धबालाः = सवृद्धकेशाः कूर्चादिरसंस्कारात् । तथा मुक्ताहारविभूषणाः—मुक्तआहाराः = भोजनादि-

कर्माणि यैः । तथा व्यपेतभूषाश्च । तपस्विनः = यतयः प्रीतिम् = आनन्दम् । प्राप्ताः = अधिगताः ॥ ११ ॥

हिन्दी—उस समय नगर में आबालवृद्ध मौक्तिक हारों से अलङ्कृत नगर वासी तथा वनों में बढ़े हुए केशों वाले तपस्वी लोग व्रतोपवास से शोभित प्रसन्नता को प्राप्त हुए ॥ ११ ॥

सूतीगृहे च—

अलंकृतनिशान्तेन तरुणारुणरोचिषा ।
प्रदीपानां प्रभा तेन प्रभातेन यथा जिता ॥ १२ ॥

अन्वयः—अलङ्कृतनिशान्तेन तरुणारुणरोचिषा तेन प्रभातेन यथा प्रदीपानाम् प्रभा जिता ।

सुधा—अलङ्कृतेति । अलङ्कृतनिशान्तेन—अलंकृतम् निशान्तम् = रात्र्यन्तम् गृहं येन तेन । तरुणारुणरोचिषा = तरुणारुणः = मध्याह्नार्कः, तद्वद्रोचिर्यस्य तेन । तेन = शिशुना । प्रभातेन = प्रातःकालेन यथा = येनप्रकारेण । प्रदीपानाम् = दीपकानाम् । प्रभा = दीप्तिः । जिता = विजिता ॥ ११ ॥

हिन्दी—तथा सौरीगृह में—रात्रि के अन्तिम प्रहार को अलङ्कृत करने वाले मध्याह्न के सूर्य के प्रकाश के समान उस बालक के प्रदीपों की कान्ति को जिस प्रकार प्रभात के द्वारा जीत लिया जाता है, जीत लिया ।

चिरात्पल्लवितं राजवंशेन, समुच्छ्वसितं राज्यश्रिया, प्रीतं प्रणयिभिः, प्रनृत्तं पौरैः, प्रमुदितं बान्धवैः, विद्राणं द्रोहिजनैः, उन्नदितं वियत्यदृष्टमङ्गलवादित्रैः, चित्रायितमतिबहलपरिमलपतत्पुष्पवृष्ट्या, विकसितं दिग्वधूवदनारविन्दैः, विलसितमतिसुरभिसुखस्पर्शसमीरणेन, स्वच्छन्दायितं वन्दीकृताराातिरमणीभिः, आढ्यायितमर्थिलोकेन ।

सुधा—चिरादिति । चिरात् = बहुकालात् । राजवंशेन = नृपकुलेन । पल्लवितम् = नवाङ्कुरमिव प्रसरितम् । राज्यश्रिया = राज्यलक्ष्म्या । समुच्छ्वसितम् = सम्यग् उच्छ्वसितम् । प्रणयिभिः = प्रियतमैः प्रीतम् = प्रसारीभूतम् । पौरैः = नागरिकैः प्रनृत्तम् = प्रकर्षेण नृत्तम् । बान्धवैः = बन्धुजनैः । प्रमुदितम् = प्रीतम् । द्रोहिजनैः = प्रीतम् । द्रोहिजनैः = द्विष्टैः । विद्राणम् = विदीर्णीभूतम् । अदृष्टमङ्गलवादित्रैः = अनवलोकितमङ्गलवाद्यैः । उन्नदितम् उन्नादं कृतम् । अतिवहलपरिमलपतत्पुष्पवृष्ट्या—अतिवहलेन = अतिप्रगाढेन परिमलेन = सुगन्धिना पतत्या पुष्पवृष्ट्या = कुसुमवर्षया । चित्रायितम् = भक्तिविशेषविन्यासायितम् । दिग्वधूवदनारविन्दै = दिगङ्गना मुखकमलैः । विकसितम्—विकचनं कृतम् । अतिसुरभिसुखस्पर्शसमीरणेन = बहु सुगन्धिसुखस्पर्शपवनेन । विलसितम् = विलासः कृतः । वन्दीकृताराातिरमणीभिः—वन्दीकृता या आरातीनां = शत्रूणाम्—रमण्यः = कामिन्यस्ताभिः । स्वच्छन्दायितम्—स्वतन्त्रायितम् । अर्थिलोकेन = याचकगणेन आढ्यायितम् = अर्थयितम् ।

हिन्दी—बहुत समय बाद राजवंश ने पुत्र रूप नवाङ्कुर को धारण किया। (इस पर मानो) राज्यलक्ष्मी ने उच्छ्वास लिया। प्रेमीजन प्रसन्न हो उठे। नागरिक नाच उठे, बान्धव प्रमुदित हो उठे, विद्रोही लोग विदीर्ण हो गये। आकाश में अदृष्ट मङ्गल-वाद्य बज उठे अत्यन्त गाढ़े सुगंधित पराग के परसते हुए पुष्पों की वर्षा से आकाश चित्रित-सा हो उठा, दिगङ्गनाओं के मुखकमल विकसित हो उठे, अति सुगन्धित सुख-स्पर्श विलसित हो उठा, बन्दी बनाई गईं शत्रुपत्नियाँ स्वच्छन्दता का अनुभव करने लगीं (मुक्त कर दी गईं) तथा याचक लोग धनवान् (मनचाहा दान मिलने के कारण) हो गये।

किं बहुना—

अवृष्टिनष्टधूलीकमशरन्निर्मलाम्बरम् ।
अपीतमत्तलोकं च जगज्जन्मोत्सवेऽभवत् ॥ १३ ॥

अन्वयः—जन्मोत्सवे जगत् अवृष्टिनष्टधूलीकम् अशरन्निर्मलाम्बरम् अपीतमत्त-लोकम् च अभवत् ॥ १३ ॥

सुधा—अवृष्टीति। कि बहुना = किमधिकेन (तस्य) जन्मोत्सवे = जन्मोत्सवकाले जगत् = लोकम्। अवृष्टिनष्टधूलीकम्—अवृष्टया = विनावर्षणेन नष्टाधूलिः = रजो यस्य तत्। अशरद् = शरदृतुविनैव। निर्मलाम्बरम् = स्वच्छं गगनम् अपीतमत्तलोकम्—अपीतेन = मद्यपानविनैव मत्तम् = मदयुक्तम् लोकम् = विश्वम् यत्। अभवत् = बभूव।

हिन्दी—उसके जन्मोत्सव में विना वर्षा के ही धूलरहित जगत् हो गया, शरत् काल के विना ही आकाश निर्मल हो गया तथा मदिरा पान किये बिना लोग मतवाले हो उठे ॥ १३ ॥

भूते च विभवभूयिष्ठे षष्ठीजागरणव्यतिकरे, अतिक्रान्तेषु च सूतकदिवसेषु नामकरणोचितेऽह्नि 'न लास्यति धर्मधनान्येष साधुभ्यः' इति ब्राह्मणाः, प्रविश्य तस्य 'नलः' इति नाम प्रतिष्ठापयामासुः।

सुधा—भूत इति। च = तथा। विभवभूयिष्ठे = ऐश्वर्यबाहुल्ये सति, षष्ठीजागरण-व्यतिकरे—षड्रात्रिजागरणसमाप्तौ। भूते = जाते सति। तथा। सूतकदिवसेषु = सौरी दिनेषु। अतिक्रान्तेषु। नामकरणोचिते = नामकरणयोग्ये। अह्नि = दिवसे—एषः = अयमर्भकः। साधुभ्यः = सत्पुरुषेभ्यः। धर्मधनानि = धर्म-सम्पत्तीः। न लास्यति = न छेत्स्यसि। इति = एवम् ब्राह्मणाः=विप्राः प्रविश्य = प्रवेशं कृत्वा तस्य=बालस्य नल इति नाम = अभिधानम्। प्रतिष्ठापयामासुः = प्रख्यापयामासुः।

हिन्दी—वैभवपूर्ण षष्ठी (छठी) जागरण समाप्त होने पर तथा सूतकदिनों से, व्यतीत हो जाने पर नामकरण के योग्य दिवस में—"यह बालक सत्पुरुषों से धर्म रूपी सम्पत्ति का उच्छेदन नहीं करेगा" इस प्रकार उसका ब्राह्मणों ने नल नाम प्रतिष्ठापित किया।

क्रमेण च चतुरुदधिवेलावनविकासोचितकीर्तिकुन्दकन्दलैर्विश्वविश्वम्भरा-भिलम्भलम्पाकैः कुमारसेवकैरिव सकलचक्रवर्त्तिचिह्नैरलङ्कृतावयवो विस्तर-जटालवालः, कल्पपादपाङ्कुर इव वर्धितुमारभत।

सुधा—क्रमेणेति। क्रमेण=क्रमशश्च। चतुरुदधिवेलावनविकासोचितकीर्त्तिकुन्दकन्दलैः—चतुरुदधेः=चतुःसमुद्रस्य वेलायाः=तटरूपपृथिव्याः यद् वनम्=काननम्; तस्य विकासोचिताः=विकासयोग्याः कीर्तयः=यशांसि एव कुन्दकन्दलानि=मूलकन्दलानि, तैः। विश्वविश्वम्भराभिलम्भलम्पाकैः—विश्वस्य=सम्पूर्णस्य विश्वम्भरस्य=लोकपालकस्य चक्रवर्तिसम्राजः अभिज्ञः=सर्वतः लम्भलम्पाकैः=राजचिह्नैः रेखाकृतैश्चक्रचापकुलिशादिभिः। कुमारसेवकैः इव=राजकुमारसेवाकर्मकरैरिव। सकलचक्रवर्तिचिह्नैः=सम्पूर्णचक्रच्छत्रचामरादि राजचिह्नैः। अलङ्कृतावयवः—अलङ्कृतानि अवयवानि यस्य तथा=भूषिताङ्गः। विस्तरजटालवाल—विस्तरन्तः जटालाः=स्वभावजटाबन्धाः वालाः=कचाः यस्य तथा। कल्पपादपाङ्कुर इव=कल्पवृक्षस्याङ्कुर इव। वर्धितुम्=एधितुम। आरभत=प्रारेभे।

हिन्दी—क्रमशः चारो समुद्रों के तटरूप पृथ्वी के विकास योग्य कीर्ति रूपी मूल कन्दलों से सम्पूर्ण विश्व के भरणपोषणसूचक चक्रवर्ती समाट् की रेखायें उस बालक को सेवक की भांति समस्त चक्रवर्ती चक्र छत्र आदि राजचिह्नों से अलङ्कृत कर रही थी, विस्तृत जटाओं वाले बाल कल्पवृक्ष के अङ्कुरों जैसे थे ऐसे सुन्दर बालक ने बढ़ना आरम्भ किया।

विरचितचूडाकरणादिसंस्कारक्रमश्च प्राप्ते विद्याग्रहणकाले निमित्तमात्रीकृतोपाध्यायः स्वयमेव समस्तानवद्यविद्याम्भोनिधेः परं पारमवाप।

सुधा—विरचितेति। विरचितचूडाकरणादिसंस्कारक्रमः—विरचिताः=रचितानि चूडाकरणादिसंस्काराणां क्रमाणि येन तथा। विद्याग्रहणकाले=विद्याप्राप्तिसमये। प्राप्ते=अधिगते। निमित्तमात्रीकृतोपाध्यायः—निमित्तमात्रम्=कारणमात्रम् कृतः उपाध्यायः=आचार्यः येन तथा। स्वयम् एव=आत्मनैव। समस्तानवद्यविद्याम्भोनिधेः—समस्तानाम्=सम्पूर्णानाम् अनवद्यविद्यानाम्=पवित्रविद्यानाम् अम्भोनिधिस्तस्मात्=सागरात् परम्=महत् पारम् अवाप=प्राप।

हिन्दी—क्रमशः चूड़ाकरणादि संस्कार हो जाने पर विद्या प्राप्त करने के समय नाममात्र के लिए उपाध्याय (आचार्य–गुरु) का अवलम्बन लेकर स्वयमेव समस्त पवित्रविद्याओं के सागर से महान् पार को प्राप्त किया।

तथाहि—

प्रबुद्धबुद्धिर्बौद्धे, सविशेषशेमुषीको वैशेषिके, विख्यातः सांख्ये, रञ्जितलोको लोकायते, प्राप्तप्रभः प्राभाकरे, प्रतिच्छन्दकश्छन्दसि, अनल्पविकल्पः कल्पज्ञाने, शिक्षाक्षमः, शिक्षायाम्, अकृतापशब्दः शब्दशास्त्रे, अभियुक्तो निरुक्ते, सज्जो ज्योतिषि, तत्त्ववेदी वेदान्ते, प्रसिद्धः सिद्धान्तेषु, स्वतन्त्रस्तन्त्रीवाद्येषु, पटुः पटहे, अप्रतिमल्लो झल्लरीषु, निपुणः पणवेषु, प्रवीणो वेणुषु, चित्रकृच्चित्रविद्यायाम्, उद्दामः कामतन्त्रे, कुशलः शालिहोत्रे, श्रेष्ठः काष्ठकर्मणि, सावलपो लेप्ये, पण्डितः कोदण्डे, शौण्डः शारिषु, गुणवान्गणिते बहुलो बाहुयुद्धेषु चतुरश्चतुरङ्गद्यूतक्रीडायाम्, उपदेशको देशभाषासु, अलौकिको लोकज्ञाने।

सुधा—प्रबुद्धेति । बौद्धे = बौद्धदर्शने । प्रबुद्धबुद्धिः—प्रबुद्धा बुद्धिर्यस्य सः । वैशेषिके—वैशेषिकदर्शने । सविशेषम् = विशिष्टरूपेण । उषीकः = ज्ञाता । सांख्ये = सांख्यशास्त्रे । विख्यातः = प्रख्यातः । लोकायते = चार्वाकदर्शने । रञ्जितलोकः—रञ्जिताः= प्रसादीकृताः लोकाः = जनाः येन तथा । प्राभाकरे = मीमांसाशास्त्रे । प्राप्तप्रभः–प्राप्ता = अधिगता प्रभा = कान्तिर्येन तथा । छन्दसि = छन्दःशास्त्रे । प्रतिच्छन्दकः = स्वतन्त्रः । कल्पज्ञाने = कल्पशास्त्रज्ञाने । अनल्पविकल्पः—अनल्पम् = पर्याप्तम् विकल्पम् यस्मिन् सः । शिक्षायाम् = शिक्षाशास्त्रे । शिक्षाक्षमः—अध्यापनसमर्थः । शब्दशास्त्रे=व्याकरणशास्त्रे । अकृतापशब्दः—अकृतम् अपशब्दम् येन तथा = उपयुक्तशब्दकृतः । निरुक्ते = अन्वयस्य प्रकाशके शास्त्रे । अभियुक्तः=परिपूर्णः । ज्योतिषि=ज्योतिः शास्त्रे । सज्जः = अलंकृतः । वेदान्ते = वेदान्तशास्त्रे । तत्ववेदी = तत्ववित् । सिद्धान्तेषु = सिद्धान्त ज्ञानेषु = विपञ्चिवाद्येषु । स्वतन्त्रः = आत्मनिर्भरः । पटहे = पटहवादने । पटुः = चतुरः झल्लरीषु = झल्लीवाद्येषु = अप्रतिमल्लः = अनुपमः । पणवेषु = पणवाद्येषु निपुणः = कुशलः । वेणुषु = वेण्वादिवाद्येषु । प्रवीणः = दक्षः । चित्रविद्यायाम् = चित्रण ज्ञाने । चित्रकृत् = चित्रकरः । कामतन्त्रे = कामशास्त्रे । उद्दामः = प्रशस्तः । शालिहोत्रे = अश्वविद्यायाम् । कुशलः = निपुणः । काष्ठकर्मणि = काष्ठकलायाम् । श्रेष्ठः = उत्तमः । लेप्ये = लेपनकार्ये । सावलेपः–साहंकारः कोदण्डे = धनुर्विद्यायाम् । पण्डितः= प्रवीणः । शारिषु = अक्षःकर्मसु । शौण्डः = उत्कृष्टः । गणिते = गणितविद्यायाम् । गुणवान् = गुणान्वितः । बाहुयुद्धेषु = भुजयुद्धेषु । बहुलः = सफलः । चतुरङ्गद्यूतक्रीडायाम्-चतुरङ्गद्यूतक्रीड़ाकर्मणि । चतुरः = कुशलः । देशभाषासु = विभिन्नभाषासु । उपदेशकः = उपदेष्टा । लोकज्ञाने = सांसारिकज्ञाने । अलौकिकः = अद्भुतः । अभवत् ।

हिन्दी—क्योंकि बौद्ध दर्शन में वह प्रबुद्ध बुद्धि वाले, वैशेषिक दर्शन में विशेष पद्धतियों के जानकार, सांख्ययोग में विख्यात, लोकायत (चार्वाक) दर्शन में लोगों को प्रभावित करने वाले, प्राभाकर (मीमांसा) में प्रतिभावान् छन्दः शास्त्र में स्वच्छन्द विचारों वाले, कल्प (पितरों की अर्चना विधि) में पर्याप्त कल्पना वाले शिक्षाशास्त्र में शिक्षा देने में समर्थ, निरुक्त में प्रवीण ज्योतिष शास्त्र में सुसज्जित, वेदान्त के तत्व को जानने वाले, सिद्धान्त ज्ञान में प्रसिद्ध, वीणावादन में स्वतन्त्र, पटह (नगाड़ा) बजाने में पटु झल्लरी (झांझ) बजाने में अनुपम, पणव बजाने में निपुण वेणुवादन में प्रवीण, चित्रकला में अचम्भित कर देने वाले, कामशास्त्र में प्रशस्त अश्वविद्या में कुशल, काष्ठ-कला में श्रेष्ठ, रञ्जनकला में अभिमानी, धनुर्विद्या में पण्डित, द्यूतविद्या में उत्कृष्ट, गणित में गुणी, बाहुयुद्ध में सफल चतुरङ्ग द्यूतक्रीड़ा (एक विशेष प्रकार का जुआं) में चतुर, देश भाषाओं में उपदेशक तथा लौकिक ज्ञान (व्यवहार) में अलौकिक हो गये ।

किं बहुना—

रसे रसायने ग्रन्थे शस्त्रे शास्त्रे कलास्वपि ।
नले न लेभिरे लोकाः प्रमाणं निपुणा अपि ॥ १४ ॥

अन्वयः—रसे, रसायने, ग्रन्थे, शस्त्रे, शास्त्रे कलासु अपि निपुणाः लोकाः अपि नले प्रमाणम् न लेभिरे ॥ १४ ॥

सुधा—रस इति। रसे—शृङ्गारादि काव्यरसज्ञाने, पारदादि द्रव्यरसज्ञाने च। रसायने—जरामरणाद्यपहृऔषधिज्ञाने। ग्रन्थे=काव्यशास्त्रे। शस्त्रे=आयुधज्ञाने शास्त्रे=शास्त्रज्ञाने। कलासु-अन्यासु विविधकलासु च अपि। निपुणाः=कुशलाः। लोकाः अपि=जनाः अपि। नले=तदाख्ये नृपे। प्रमाणम्='इयत्ताम्' इति। न लेभिरे=न प्रापुः ॥ १४ ॥

हिन्दी—अधिक क्या—रस, रसायन, काव्य, शस्त्र-शास्त्र तथा कलाओं में निपुण लोग भी राजा नल में सीमा (ज्ञान की थाह) न पा सके ॥ १४ ॥

क्रमेण शैशवमतिक्रामतोऽस्य सेवकैरिवाङ्गावयवैरप्यनुवृत्तिः कृता।

सुधा—क्रमेणेति। क्रमेण=क्रमशः। शैशवम्=शैशवावस्थाम्। अतिक्रामतः अतिक्रमणं कुर्वतः। अस्य=एतस्य नलस्य। सेवकैः=अनुचरैः। इव=समम्। अङ्गावयवैः=शरीरमागैः अपि अनुवृत्तिः=अनुगतिः। कृता=विहिता।

हिन्दी—क्रमशः शैशव अवस्था को पार किये हुए इस राजा (नल) के शरीरावयवों ने भी सेवकों के समान ही अनुगमन किया अर्थात् तरुणता प्राप्त की।

तथाहि—

श्रवणासक्तस्य लोचनद्वयमपि श्रवणसंमतिमकरोत्। उन्नतस्वभावस्य नासावंशोऽप्युन्नतिं जगाम। वक्रोक्तिकुशलस्य केशकलापोऽपि वक्रतां भेजे। शङ्खनिर्मलगुणस्य कण्ठोऽपि शङ्खाकारमधारयत्। पृथुलतेरंसकूटद्वयमपि पृथुलमभूत्। प्रमाणवेदिनो वक्षःस्थलमपि सुप्रमाणमजायत। मध्यस्थस्य तस्य रोमराजिरपि मध्ये स्थिता शुशुभे। सुवृत्तस्य बाहूरुयुगलमपि सुवृत्तमभवत्। गम्भीरप्रकृतेर्नाभिरपि गम्भीरा व्यराजत। पल्लवसुकुमारहृदयस्य हस्तचरणैरपि पल्लवसौकुमार्यमङ्गीकृतम्।

सुधा— तथाहीति। तथाहि=यतः। श्रवणासक्तस्य—श्रवणे=शास्त्राकर्णने आसक्तः =अनुरक्तः, तस्य। लोचनद्वयम् अपि=आन्तरिक्तबाह्यनयनद्वयमपि। श्रवणसम्मतिम्=कर्णानुकूलताम्। अकरोत्=चकार। उन्नतस्वभावस्य उन्नतः=उत्कृष्टः स्वभावः=प्रकृतिर्यस्य, तस्य। नासावंशः अपि=नासिकाग्रमागोऽपि। उन्नतिम्=उत्कृष्टत्वम्। जगाम= अव्रजत्। वक्रोक्तिकुशलस्य=वक्रोक्तिमाषणे कुशलस्य=चतुरस्य। तस्य। केशकलापः अपि=कचकलापोऽपि। वक्रताम्=कौटिल्यम्। भेजे=सिषेवे। शङ्खनिर्मलगुणस्य=शंख सदृशनिर्मलगुणवतः राज्ञः। कण्ठः अपि गलमागोऽपि। शङ्खाकारम्=कम्बुकण्ठत्वम्। अधारयत्=धृतवान्। पृथुलतेः=पुष्टस्य तस्य। अंसकूटद्वयम् अपि=स्कन्धशिखरद्वयमपि। पृथुलम्=विस्तृतम्। अभूत्=अभवत्। प्रमाणवेदिनः=प्रमाणं=तर्कशास्त्रम् मानञ्च वेत्तीति तस्य। वक्षःस्थलम् अपि=उरःस्थलम् अपि। सुप्रमाणम्=सुविशालम्। अजायत=अभवत्। मध्यस्थस्य=अकृतपक्षपातस्य तस्यः नृपस्य। रोमराजिः

अपि = लोमपंक्तिरपि । मध्ये = उदरे स्थिता = सुस्थिरा । शुशुभे = शोभिता बभूव । सुवृत्तस्य = शोभनं = सुष्ठु वृत्तम् = चरित्रम् यस्य । बाहूरुयुगलम् अपि = भुजोरुद्वयमपि । सुवृत्तम् = वर्त्तुलम् । अभवत् = बभूव । गम्भीरप्रकृतेः = गम्भीरा प्रकृतिः यस्य = गहनस्वभावस्य । नाभिः = अपि नाभिभागोऽपि । गम्भीरा = गहना । व्यराजत = अशोभत । पल्लवसुकुमारहृदयस्य = पल्लवसदृशकोमलहृदयस्य । हस्तचरणैः = करपादैः अपि । पल्लवसौकुमार्यम् = दलकोमलताम् अङ्गीकृतम् = स्वीचकार ।

हिन्दी—क्योंकि—शास्त्रश्रवण में आसक्त राजा के दोनों नेत्रों ने भी कानों की सङ्गति की। उच्च स्वभाव वाले (राजा का) नासिका भाग भी ऊंचा हो गया। वक्रोक्ति में कुशल के केशकलाप भी वक्र (टेढ़े—घुंघराले) हो गये शंख के समान निर्मल गुणों के साथ ही कण्ठ भाग भी शङ्खाकार हो गया। अति पुष्ट होने के साथ ही उसके कन्धों के शिखर भी विस्तृत हो गये। तर्कशास्त्र के प्रत्यक्षादि प्रमाण में तथा मान को जानने के साथ ही उसका वक्षःस्थल भी सुविशाल हो गया। मध्यस्थ (पक्षपात न करनेवाले) उस राजा का मध्य उदर (भाग) में रोमपंक्ति सुन्दर लगने लगी। उत्तम चरित्र के साथ ही दोनों भुजायें तथा दोनों ऊरु भाग भी सुडौल हो गये। गम्भीर प्रकृति के साथ ही उसकी नाभि भी गम्भीर (गहरी) हो गई। पल्लवों के समान कोमल हृदय वाले उस नल के हाथों तथा पैरों ने भी पल्लवों की कोमलता अंगीकार कर ली।

अथ किं बहुना—

सोष्णीषमूर्धा ध्वजवक्रपाणिरूर्णाङ्कविस्तीर्णललाटपट्टः ।
सुस्निग्धमूर्तिः ककुदुन्नतांसः कस्यैष न स्यान्नयनाभिरामः ॥ १५ ॥

अन्वयः—सोष्णीष-मूर्धा, ध्वजवक्रपाणिः, ऊर्णाङ्कविस्तीर्णललाटपट्टः, सुस्निग्धमूर्तिः ककुदुन्नतांसः एषः कस्य नयनाभिरामः न स्यात् ॥ १५ ॥

सुधा—सोष्णीषेति । सोष्णीषमूर्धा—उष्णीषेन सहितं सोष्णीषम् । सोष्णीषमूर्धा = सशिरोवेष्टनशिरः । उष्णीषाकारं शारीरिकं लक्षणमुष्णीषम् । ध्वजचक्रपाणिः = ध्वजम् चक्रञ्च पाणौ यस्य सः=ध्वजचक्रहस्तः । ऊर्णाङ्कविस्तीर्णललाटपट्टः—ऊर्णायाः = भ्रमर्याः अङ्कम् = चिह्नम् विस्तीर्णे = विशाले ललाटपट्टे = भालपट्टे यस्य सः । सुस्निग्ध-मूर्तिः = सुस्निग्धा = शोभना मूर्तिः = आकृतिर्यस्य सः । ककुद उन्नतांसः = ककुद् इव उन्नतौ स्कन्धौ यस्य तथा = उच्चस्कन्धदेशः । एषः = अयम् । कस्य = कस्य जनस्य । नयनाभिरामः = नेत्ररमणीयः । न = नास्ति, अपि तु सर्वेषाम् नयनसुखकरोऽस्ति । इन्द्रवज्रावृत्तम् ॥ १५ ॥

हिन्दी—और अधिक क्या—पगड़ी से शोभित शिर, ध्वज तथा चक्र से चिह्नित हाथ भौंहों के बीच भौंरी से चिह्नित विशाल भाल पट्ट, सुस्निग्धमूर्ति ककुद (ठिल्ला) जैसे उन्नत कंधों वाले यह (नल) किसकी नयनों से रमणीय नहीं हैं ॥ १५ ॥

अपि च—आस्यश्रोः संनिभेन्दोः समदवृषककुद्बन्धुरः स्कन्धसंधिः ।
स्निग्धा [illegible] वक्षोवंद्ध्मसिन्धोवरस्य ॥

स्थानं वक्षोऽपि लक्ष्म्याः स्पृशति भुजयुगं जानुनो वृत्तरम्ये।
जङ्घे, क्षामोऽवलग्नः, किमु निषधपतेः श्लाघनीयं न तस्य ॥ १६ ॥

अन्वयः—तस्य निषधपतेः आस्यश्रीः इन्दोः सन्निभा, स्कन्धसन्धिः समदवृषककुद्-बन्धुरः कुन्तलानाम् रुक् स्निग्धा दृशोः द्वन्द्वम् इन्दीवरस्य रुक् अनुहरति। वक्षः अपि लक्ष्म्याः स्थानम्, भुजयुगम् जानुनः स्पृशति वृत्तरम्ये जंघे अवलग्नः क्षामः। किमु श्लाघनीयम् न ॥ १६ ॥

सुधा—आस्यश्रीरिति। तस्य = एतस्य। निषधपतेः = निषधराजस्य। आस्यश्रीः = मुखकान्तिः। इन्दोः = चन्द्रस्य। सन्निभा = सदृशा। स्कन्धसन्धिः = स्वन्धयोः सन्धि-देशः। समदवृषककुद्बन्धुरः—मत्तवृषभककुन्मनोरमः कुन्तलानाम् = केशानाम्। रुक् = कान्तिः स्निग्धा = मनोहरा। दृशोःद्वन्द्वम् = नयनयुगलम्। इन्दीवरस्य = नीलकमलस्य। रुक् = कान्तिम्। अनुहरति = अनुकरोति। वक्षः अपि = वक्षःस्थलमपि। लक्ष्म्याः = श्रियः। स्थानम् वृत्तरम्भे = सुमनोहरे = पदम् भुजयुगम् = बाहुयुगलम्। जानुनः = जानुभागम्। स्पृशति = स्पर्शं करोति। जंघे = अवलग्नः = मध्यभागः। क्षामः = क्षीणः। अस्ति। (तस्य) किमु न श्लाघनीयम् = किं प्रशंसनीयं नास्ति, अपितु सर्वमेव मनोरम-मित्यभिप्रायः। सुग्धरा वृत्तम् ॥ १६ ॥

हिन्दी—और भी—उस निषधराज की मुख कान्ति चन्द्रमा के समान सुन्दर है उसके कंधों के जोड़ मतवाले सांड के कुकुद् (ठिल्ला) के समान मनोरम, तथा केशों कीं कान्ति मनोहर है। उसकी दोनों आँखें नीलकमल की कान्ति का अनुकरण करती हैं, वक्षःस्थल लक्ष्मी का स्थान है। उसकी दोनों भुजायें घुटनों को स्पर्श करती हैं जघन-स्थल गोल रमणीक हैं तथा मध्यमाग (कमर) पतली है अर्थात् उसका कोई भी भाग ऐसा नहीं है जो कि रमणीक न हो ॥ १६ ॥

अस्ति च तस्य नरपतिसूनोः समानशीलवयोविद्यालंकारकान्तिकलापरिपूर्ण-देहः शरीरमात्रद्वितीयोऽप्यद्वितीयहृदयमेकं जीवितमपर उच्छ्वासः सालङ्कायन-सूनुः श्रुतशीलो नाम मन्त्री मित्रं च।

सुधा—अस्तीति। च = तथा। तस्य = एतस्य। नरपतिसूनोः = राजपुत्रस्य समान-शीलवयोविद्यालङ्कारकान्तिकलासपपरिपूर्णदेहः—समानम् अनुकूलम् शीलम् = सौजन्यम्, वयः = आयुः, विद्या = ज्ञानम्, अलङ्कारकान्तिकलापश्च, तैः परिपूर्णः देहः = कायः यस्य सः। शरीरमात्रद्वितीयः = शरीरमात्रेण = देहमात्रेण द्वितीयः - भिन्नः अपि। अद्वितीय-हृदयम = अभिन्नहृदयम्। एकम् जीवितम् = अद्वितीयजीवनम्। अपरः = अन्यः। उच्छ्वासः सालङ्कायनसूनुः - सालङ्कायनस्य पुत्रः श्रुतशीलः नाम = श्रुतशील इत्यभिधः मन्त्री = सचिवः। मित्रम् च = सखा चास्ति।

हिन्दी—उस राजकुमार के समान शील—आयु—विद्यालङ्कार कान्तिकलाप से परिपूर्ण शरीर वाला, शरीर मात्र से अद्वितीय हृदय एक प्रकार का जीवन, श्वास के समान, सालङ्कायन का पुत्र श्रुतशील नामक मन्त्री तथा मित्र है।

एकदा तु पूर्वदिग्वधूकुङ्कुमपङ्कपल्लवितवदनायमाने निरुद्धान्धतमसे सौगन्धिकबन्धुनि बन्धूककुसुमारुणे वियति तरतीव तरुणतरे तरणिमण्डले, मण्डयति कुसुम्भकुसुमकेसरप्रकरायमाणे गगनाङ्गणमम्भोजमुकुलनिद्रामुषि रोचिषां चये, चलिते च विचरितुमुपवनतरुराजिकर्णोत्पले निद्राविरामविधुतपक्षे पक्षिकुले, कृतप्राभातिककर्मणः सभाङ्गणमण्डपमध्यवर्तिनो दत्तसेवावसरस्य राज्ञः प्रविष्टे मन्त्रिणि सालङ्कायने, प्रणामपर्यस्तकर्णोत्पलधवलितसभाङ्गणे यथासतमुपविष्टे प्रस्तुतसेवालापरञ्जितराजनि राजन्यचक्रे, प्रक्रान्ते शास्त्रीयविनोदे, श्रुतिशीलेन सममन्यैश्च क्रीडासहायैरनुचरैरनुगम्यमानो नलः सेवासुखमनुभवितुमागतवान् ।

सुधा—एकदेति । एकदा तु = वारमेकं तु । पूर्वदिग्वधूकुङ्कुमपङ्कपल्लवितवदनायमाने—पूर्वादिग् एव वधूः = पूर्वदिग्वधूः, तस्याः कुङ्कुमपङ्केन = परागकर्दमेन पल्लवितम् वदनायमानं यत्र = पूर्वदिशास्त्रीकुङ्कुमकर्दमपल्लवसदृशमुखप्रतीते । निरुद्धान्ततमसि—निरुद्धः अवरुद्धम् अन्धतमः = गाढान्धकारम् येन तादृशे । सौगन्धिकबन्धुनि = कमलबन्धुनि । बन्धूककुसुमारुणे = बन्धूकपुष्पसदृशरक्ते । तरुणतरे = अतितरुणे । तरणिमण्डले = सूर्यमण्डले । वियति = विहायसि । तरति इव = तरणं कुर्वति सतीव । गगनाङ्गणम् = वियत्प्राङ्गणम् । कुसुम्भकुसुमकेसरप्रकरायमाणे—कुसुम्भ कुसुमानाम् = कुसुम्भ पुष्पाणाम् केसरम्, तस्य प्रकारायमाणे = विकरायमाणे । अम्भोजमुकुलनिद्रामुषि—कमलमुकुलनिद्राहारिणि । रोचिषाम् चये=कान्तिसमूहे । च = तथा । उपवनतरुराजिकर्णोत्पले उपवनस्य = उद्यानस्य तरुराजिरूपकर्णपुष्पे । विचरितुम् = विहरितुम् । प्रचलिते = प्रयाते । निद्राविरामविधुतपक्षे—निद्रसमाप्तिविधुतपंखे । पक्षिकुले=खगकुले कृतप्राभातिककर्मणः—कृतम् = सम्पादितम् प्राभातिकं कर्म येन तस्य । सभाप्राङ्गणमण्डपमध्यवर्तिनः—सभाप्राङ्गणमण्डपमध्यस्थितस्य । दत्तसेवावसरस्य—दत्तः सेवायै अवसरो येन तस्य । राज्ञः = नृपस्य । सालङ्कायन्ते = तन्नाममन्त्रिणि । प्रविष्टे = समागते । प्रणामपर्यस्तकर्णोत्पलधवलितसभाङ्गणे—प्रणामावसरे कर्णाभरणोज्ज्वलसभाप्राङ्गणे । यथासतम् = यथोचितमासनम् । उपविष्ट—प्रस्तुतसेवालापरञ्जितराजनि = उपविष्टाः = आसोनाः, प्रस्तुतसेवा = उद्यतसेवाः आलापरञ्जिताश्च = आलापानुरक्ताः च राजानः यस्मिन्न । राजन्यचक्रे = राजसमूहे । शास्त्रीयविनोदे = शास्त्रीयचर्चाविषयकमनोरञ्जने । प्रक्रान्ते = प्रारम्भे । श्रुतशीलेन समम् = श्रुतशीलमन्त्रिणा सह । अन्यैः = अपरैः । क्रीडासहायैः = क्रीडासहयोगिभिः । अनुचरैः = सेवकैः । अनुगम्यमानः = अनुनीयमानः । नलः = नलाख्यः नृपः सेवासुखम् = सेवानन्दम् । अनुभवितुम् = अनुभवं कर्त्तुम् । आगतवान् = आगच्छत् ।

हिन्दी—एक समय पूर्वदिग्वधू कुङ्कुमपङ्क से बने पल्लवों जैसे मुख के समान प्रतीत होने वाला, कमलबन्धु, बन्धूक पुष्प के समान अरुण सूर्यमण्डल अन्धकार को नष्ट कर आकाश में तैर सा रहा था। कुसुम्भ पुष्प के केसर पुन्ज की भांति गगनाङ्गण में कमलमुकुलों की निद्र को चुरा लेने वाली कान्ति राशि बिखर रही थी उपवन के वृक्षों की पंक्तिरूप कर्णाभूषण हिल रहे थे, निद्रा समाप्त होने से पक्षिकुल

पंख फड़फड़ा रहे थे। ऐसे अवसर पर प्रातःकालीन कर्म समाप्त कर सभामण्डप में बैठे हुए राजा के सेवा करने का अवसर प्रदान किये हुए मन्त्री सालङ्कायन ने प्रवेश किया। आश्रित नृप वर्ग ने प्रयाण के अवसर पर अपने कर्णाभूषणों की उज्ज्वल कान्ति से सभा प्राङ्गण को धवलित कर रखा था (उनके) यथास्थान बैठ जाने पर तथा की गई सेवा एवम् अलापों से राजा को प्रसन्न करने पर शास्त्रीय चर्चाओं द्वारा मनोविनोद प्रारम्भ हुआ तभी श्रुतशील के साथ अन्य अन्य क्रीड़ा सहायकों को साथ में लिये हुए नल सेवा सुख का अनुभव प्राप्त करने के लिए आये।

आगत्य च क्षितितलमिलन्मौलिमण्डलः प्रणम्य पितुः पादारविन्दद्वयमदूरदत्तमासनं भेजे।

सुधा—आगत्येति। आगत्य च = आगमनम् विधाय च। क्षितितलमिलन्मौलिमण्डलः—क्षितितलम् = भूतलम् मिलन्मौलिमण्डलम् = भालमण्डलम् यस्य सः नलः। पितुः = जनकस्य। पादारविन्दद्वयम् = चरणकमलयुगलम्। प्रणम्य = नत्वा। अदूरदत्तम् निकटवर्तिनम् आसनम्। भेजे = अभजत्।

हिन्दी—आकर पृथ्वी तल तक शिर झुका कर पिता के चरणकमल को प्रणाम कर निकट ही दिये गये आसन पर (नल) बैठ गया।

उपविष्टे च तस्मिन्ननभिवादनादुत्पन्नमन्युरीषत्कोपकम्पितकरपरामृष्टकूर्चाग्रिमग्रन्थिरग्रणीर्मन्त्रिमण्डलस्य भ्रूभङ्गभीषणया शोणकोणान्तरतरत्तरलतारया दृशाऽभिमुखमस्य सालङ्कायनः प्रणयपरुषाक्षरमभाषत।

सुधा—उपविष्टे। तस्मिन् = एतस्मिन् नले। उपविष्टे च = आसन् ग्रहणे सति अनभिवादनात् = नमस्कृत्यकरणहेतोः। उत्पन्नमन्युः = सञ्जात–क्रोधः ईषत् कम्पित करपरामृष्ट कूर्चाग्रिमग्रन्थिः। किञ्चित् कम्पितकरेण स्पृष्टकूर्चाग्रग्रन्थिभागः। सालङ्कायनः = तदभिधो मन्त्री। मन्त्रिमण्डलस्य = सचिवमण्डलस्य। अग्रणी—मुख्यः भ्रूभङ्गभीषणया = भ्रूक्षेपभयङ्करया। शोणकोणान्तरतरत्तरलतरया—शोणयोः = रक्तवर्णयोः कोणयोरन्तरे = कोणमध्ये। तरती = चलती या तरलतरा = अतिशयेन तरला, तया। दृशा = दृष्ट्या अस्य = एतस्य। अभिमुखम् = सम्मुखम्। प्रणयपरुषाक्षरम् = प्रणयेन = प्रेम्णा परुषेण = कठोरेणाक्षरम्। अभाषत = अकथयत्।

हिन्दी—उसके बैठ जाने पर अभिवादन न करने के कारण उत्पन्न हुए क्रोध वाले, क्रोध के कारण कुछ कांपते हुए हाथ से अपनी मूँछों के छोर को छूते हुए भौंहों की वक्रता से भयङ्कर लाल कोनों के मध्य तैरती हुई पुतलियों वाली दृष्टि से मन्त्रिमण्डल के अग्रणी सालङ्कायन उस नल के सम्मुख प्रेम और रूक्षता युक्त बातें कहने लगे।

कुमार, राजहंसोऽपि 'अहंसरूपः' इति मा स्म मोहवान्भूः।

सुधा—कुमार इति। हे कुमार = हे राजकुमार नल! राजहंसः = राजमुख्यः अपि हंसः त्वम्। सरूपः = रूपवान्। 'अहम्' = इत्यमुना प्रकारेण। मोहवान् मास्म भूः = मोहं मा गाः। रूपमदो हि नीच-चिह्नम्। यश्च राजहंसः सः कथमहं स स्वरूप इति विरोधद्योतकोऽपि शब्दः।

हिन्दी—हे राजकुमार! राजहंस (राजप्रमुख) होकर भी तुम 'मैं सरूप हूँ' (सुन्दर हूँ) यह अभिमान मत करो।

अनुभवति च मूढः शस्त्रसंघात इव कोशशून्यताम्।

सुधा—अनुभवतीति। ननु यदि रूपात् अहङ्काराद् वा नृपः मूढः स्यात् तर्हि को दोषः? इत्याशङ्कयाह—मूढः = मूर्खः चमूढः = चम्वा = सेनया ऊढः = धृतः। शस्त्र-संघात इव = शस्त्रनिचय इव मूढ कोशशून्यताम् = प्रत्याकारशून्यताम्। धनहीनताम् च अनुभवति = अनुभवं करोति।

हिन्दी—मोह से घिरा हुआ (मूढ) कोशशून्यता का अनुभव उसी प्रकार करता है जैसे सेना के द्वारा शस्त्रों के उठा लेने पर शस्त्र समूह कोषशून्यता का अनुभव करता है।

अविभवः पुरुषो मेष इव कम्बलस्योपयोगं गच्छति।

सुधा—अविभव इति। अविभवः—नास्ति विभवो यस्य सः = निर्धनः। पुरुषः = नरः। बलस्य = शक्तेः सैन्यस्य वा। कम् उपयोगम् = साफल्यम् गच्छति = याति। यथा—अविभवः—अवेः = मेण्ढाद् भवः = जातः। मेष इव। कम्बलस्य = आच्छादन विशेषस्य। उपयोगम् गच्छति = याति।

हिन्दी—निर्धन पुरुष बल के किस उपयोग में आता है? भेड़ों से उत्पन्न हुआ मेढा कम्बल के ही काम आता है। (अर्थात् कोशशून्य व्यक्ति किसी काम का नहीं रह जाता है)।

प्रद्युम्नजातोऽपि बाणयुद्धव्यतिकरकारिण्या सदोषया यौवनावस्थया निरुद्धोऽनिरुद्ध इव को नाम न क्लेशमनुभवति।

सुधा—प्रद्युम्नेति। प्रद्युम्नजातः = प्रकृष्टौजः पुञ्जः अपि। बाणयुद्धव्यतिकर-कारिण्या—वाणैः = शब्दैः। युद्धम् = कोलाहलम् व्यतिकरकारिणी=सम्पर्ककारिणी तया। सदोषया—सहदोषैरिति तया = दोषान्वितया। यौवनावस्थया = तारुण्यावस्थया निरुद्धः = अवरुद्धः। अनिरुद्ध इव = कृष्णपौत्र इव को नाम क्लेशम् = दुःखम् न अनुभवति = दुःखानुभवं न करोति। अपि तु करोत्येव। पक्षे—प्रद्युम्नः = कामः, तस्माज्जातः अनिरुद्धः = तदभिधः कृष्णपौत्र इव। वाणयुद्धव्यतिकरकारिण्या—वाणेन = वाणाख्येन दैत्येन समं युद्धव्यतिकरकारिण्या = युद्धसम्बन्धविधायिन्या। यौवनावस्थया—यौवने अवतिष्ठत इति कृत्वा। तारुण्ये स्थितया। उषया = उषाख्यया पत्न्या। सदा = सर्वदा। निरुद्धः= वशीकृतः क्लेशम् = दुःखम्। अनुभवति = अनुभूतवान् इत्यागमः। युद्धव्यतिकरः = अनङ्गसूनोः क्लेशानुभवहेतुः।

हिन्दी—प्रकृष्ट तेज से उत्पन्न होकर भी शब्दों की कलह करने का अवसर देने वाली दोषपूर्ण यौवनावस्था से घिरा हुआ अनिरुद्ध के समान कौन पुरुष दुःख का अनुभव नहीं करता है?

प्रद्युम्न पक्ष में—प्रद्युम्न से उत्पन्न होकर भी अनिरुद्ध ने वाणासुर के साथ युद्ध

सम्बन्ध कराने वाली (वाण की पुत्री) तरुणी उषा के द्वारा सदा वशीकृत किये हुए क्लेश का अनुभव किया था ।

टिप्पणी—कृष्ण पौत्र–प्रद्युम्न के पुत्र अनिरुद्ध वाणासुर की पुत्री उषा की प्रेरणा से चित्रकला में प्रवीण किसी दैत्य स्त्री द्वारा उड़ाकर उषा के महल में ले जाये गये थे। अन्तःपुर में किसी पुरुष के होने का समाचार पाकर वाणासुर ने इनसे घमासान युद्ध किया तथा उस युद्ध में अनिरुद्ध को अत्यन्त दुःख का अनुभव करना पड़ा था ।

तत्तात, सुविषमेऽघवर्त्तिनि विद्युद्विलास इवास्थिरे स्थितस्तारुण्ये मा स्म विस्मर स्मयेन विनयम् ।

सुधा—तदिति । तात = हे पुत्र ! तत् = तस्मात् कारणात् । सुविषमेघवर्तिनि–सुविषमे = अत्यनुचिते । अघे = अविनयरूपपापे वर्तत इति तस्मिन् । विद्युद्विलास इव–विद्युतः = रोचमानाः विलासाः = शृङ्गारादयः यस्मिन् । अस्थिरे = चञ्चले तारुण्ये = यौवने । स्थितः सन् । स्मयेन = गर्वेण । विनयम्=नम्रताम् । मास्म विस्मर = विस्मार्षीः ।

पक्षे—सुविषमेघवर्तिनि–सुविषे = सुष्ठुजलयुते मेघे = घने वर्त्तिनि = विद्यमाने । अस्थिरे = चञ्चले । विद्युद्विलासे = तडिद्विलासे । इव = समम् । तारुण्ये = यौवने । स्थितः = अवस्थितः (त्वम्) स्मयेन = अहङ्कारेण । विनयम् = नम्रत्वम् । यास्म विस्मर = मा विस्मार्षीः ।

हिन्दी—हे वत्स ! अतएव अति विषम पापों में वर्तमान रुचिकर विलास (शृङ्गारादि) वाले चञ्चल तारुण्य में स्थित (तुम) अभिमान से विनय को मत भूल जाओ ।

पक्ष में—हे वत्स ! अतएव सुन्दर जल वाले मेघ में रहने वाले चञ्चल विद्युद विलास के समान युवावस्था में अवस्थित (तुम) अभिमान से विनय को मत भूल जाओ ।

अविनीतोऽग्निरिव दहति ।

सुधा—अविनीत इव । अविनीतः = अविनयी पुरुषः । अग्निः इव = वह्निरिव । दहति = आत्मनः परस्य च दाहमुत्पादयति ।

पक्षे—अविनीतः–अविः = ऊर्णायुः, तेन नीतः । अग्नि = इव वह्निरिव । दहति = तन्नेतारम् दहति ।

हिन्दी—अविनयी पुरुष अग्नि के समान अपने को तथा दूसरों को भी जला डालता है ।

अवि (कम्बल) में लगी आग कम्बल को तो जलाती ही है उसे ओढ़ने वाले को भी जला डालती है ।

अजातनयश्छाग इव नाभिनन्द्यते जनेन ।

सुधा—अजातेति । अजातनयः–अजातः = अनुत्पन्नः नयः = नम्रत्वम् यस्मिन् सः । छागः इव = अजापुत्र इव । जनेन = लोकेन । नाभिनन्द्यते = न स्तूयते । पक्षे—अजा-

तनयः = अजापुत्रः छागः इव (दाहको नरः) जनेन = लोकेन = नाभिनन्द्यते – स्तुतिमपि न प्राप्नोति ।

हिन्दी—अविनयी पुरुष बकरे के समान लोगों से स्तुति का पात्र नहीं बन पाता है । (अथवा) अजासुत बकरे की लोग कभी प्रशंसा नहीं करते हैं ।

किं च ब्रूमः—

सुसहायशून्यस्य भवतो यस्यामीमांसाभियोगा राक्षसा इव, अन्यायाः पारदारिका इव, अयोगक्रिया लोहकारा इव अश्रुतागमाः शोकवेगा इव सहायाः ।

सुधा—किमिति । किञ्च = किन्तु । ब्रूमः = वयं कथयामः । सुसहायशून्यस्य = सुमित्ररहितस्य । भवतः = तव । यस्य । अमी = एते । मांसाभियोगाः—मांसेऽभियोगो येषां ते = आमिषाभियुक्ताः राक्षसा इव = दैत्याः इव । न मीमांसाभियोगो विचारोत्साहो येषाम् । अन्यायाः–अन्याम् = अन्यसम्बद्धाम् अयन्ते = गच्छन्ति, इत्यन्यायाः । पक्षे—न विद्यते न्यायः येषां तेऽन्यायाः = न्यायरहिताः । पारदारिका इव = परदाररता इव । अयोगक्रियाः—अलब्धलाभो लब्धपरिरक्षणं रक्षितसम्वर्द्धनं च योगः । तस्य क्रिया नास्ति येषां ते । पक्षे—अयो गच्छतीत्ययोगा = लौहगताः क्रिया येषां ते । लौहकारा इव = अयस्कारा इव । अश्रुतागमाः—न श्रुता आगमः = शास्त्रम् यैस्ते । पक्षे—अश्रुतायाः = नयनजलत्वस्यागमो येषु ते । शोकवेगा इव = शोकप्रसरा इव । सहायाः = सहायकाः सन्तीति ।

हिन्दी—किन्तु बतलाये देता हूँ—सुसहायक शून्य जिन तुम्हारे यह राक्षसों के समान मांस खाने में लगे हुए (अथवा—मीमांसा-विचार से शून्य) परदारासक्तों के समान अन्य स्त्रियों के पास जाने वाले, लोहे की क्रिया में लगे हुए लोहार के समान अयोग क्रियाओं को (निष्प्रयोजन कार्य करने वाले, शोक वेग को वढ़ाने वाले अश्रुजलत्व के समान शस्त्रों का ज्ञान न रखनेवाले सहायक है ।

न च ते दुःशिक्षितनृपकलभव्याकरणमार्गेषु निपुणा नर्तकीव मित्रमण्डली ।

सुधा—न चेति । दुःशिक्षितनृपकलभ = हे अशिक्षित राजकिशोर ! च = तथा । ते = तव मित्रमण्डली = मित्रसमुदायः । व्याकरणमार्गेषु–शब्दतत्वज्ञानमार्गेषु । शब्दतत्वावबोधे हि नीतिशास्त्राधिगमः । नीत्यवगमे हि कृत्याकृत्यविमर्शनम् । तस्मात्सम्पदः न निपुणा न च तन्नैपुण्यमस्तीति भावः । पक्षे—हे दुःशिक्षितनृपकलभव्याकरणमार्गेषु = अनुकरणमार्गेषु भव्या = अनुपमा । नर्तकी इव = वाराङ्गनेव । न निपुणा = न कुशला ।

हिन्दी—हे दुःशिक्षित नृपकलभ ! तुम्हारी मित्रमण्डली व्याकरणमार्ग (नीतिशास्त्र में उचितमार्ग) में नर्तकी के समान निपुण नहीं है ।

पक्ष में—हे दुःशिक्षित नृपकल (नृपनीति को न जानने वाले) अनुपमा नर्तकी के समान उचित अनुकरण हावभाव दिखाने में निपुण नर्तकी के समान तुम्हारी मित्रमण्डली निपुण नहीं है ।

तदायुष्मन्नहितया प्रकृत्या भुजङ्ग इव भयाय लोकस्य ।

सुधा—तदिति । आयुष्मन् = चिरजीविन् ! तत् = अतः । अहितया = हितेतरया । अहेर्भावः अहितातया = सर्वसम्बन्धिन्या । प्रकृत्या = स्वभावेन भुजङ्ग इव = सर्प इव । लोकस्य = जनस्य । भयाय = भयहेतवे ।

हिन्दी—हे आयुष्मन् ! सो अविनयादि स्वभाव के कारण (आप) सर्प के समान लोगों के लिए भयदायक हैं ।

उग्रसेनः कंसानुरागं जनयेत् ।

सुधा—उग्रसेन इति । उग्रसेनः = उग्रा सेना यस्य सः = क्रूर शासकः । कम् = कं नरम् । सानुरागम् = सप्रेम । जनयेत् = उत्पादयेत् । उचितपरिवारो हि सानुरागाय भवति । परिवारः लोकस्योपद्रवं रक्षणं वा कुरुते । उग्रसेनः = तन्नामदैत्यः । कंसा-नुरागम्—कंसे = कंसाभिधे राजनि, अनुरागम् = प्रेम । जनयेत् = उत्पादयेत् । इत्या-गमोक्तोल्लिङ्गनम् ।

हिन्दी—क्रूर शासक किसको (अपने प्रति) अनुराग उत्पन्न कर सकता है ? उग्रसेन दैत्य कंस राजा में (पुत्रत्व से) अनुराग उत्पन्न कर सकता है ।

अमृतमथनोद्यतहरिबाहुपञ्जर इव मन्दरसानुगतः को न घृष्यते ।

सुधा—अमृतेति । मन्दरसानुगतः—मन्दो रसः = प्रीतिर्येषां तैरनुगतः = अनुयातः । अमृतमथनोद्यत हरिबाहुपञ्जरः इव—अमृतमथनाय उद्यतस्य = तत्परस्य हरेः = विष्णोः बाहुपञ्जर इव = भुजपञ्जर इव । मन्दरसानुगतः = मन्दरनामः गिरेः सानुगतः = तटप्राप्तः कः नु घृष्यते = को नु घृष्टो भवति ।

हिन्दी—मन्द प्रीतिवाले लोगों से घिरा कौन व्यक्ति अमृतमथनोद्यत विष्णु की भुज पंजर से नहीं रगड़ जाता है ।

अमृत मन्थन के लिए उद्यत विष्णु भगवान् के बाहुपञ्जर के समान मन्दराचल पर्वत की चोटी पर पहुँचा हुआ कौन नहीं रगड़ जाता है ?

शुनीमिवास्थिरतां परिहर ।

सुधा—शुनीमिति । शुनीम् इव = कुक्कुरीम् इव अस्थिरतां = चञ्चलताम् त्यज = जहि । अस्थिरताम् = अस्थितत्पराम् इति भावः ।

हिन्दी—जिस प्रकार कुतिया हड्डी चूसने में लगी रहती है उसी प्रकार (अस्थिरता में संलग्न तुम) अपनी चञ्चलता को छोड़ दो ।

कुशीलताग्राही मा स्म तैलिक इव केवलं खलोपभोगाय भूः ।

सुधा—कुशीलतेति । कुशीलताग्राही—कुत्सिता = निन्दिता शीलता ग्राह्यतेऽनेन सः= लौल्यादिग्राही त्वम् । तैलिक इव=तैलिक समम् केवलम् । खलोपभोगाय—खलानाम् = दुष्टानाम् उपभोगाय मास्म भूः । कुशीलो हि दुर्जनानामेवोपभोगाय भवति न तु सज्जना-नाम् । कुशीनाम लतां गृह्णातीति = कुशीनाम लतायाः ग्रहणकर्त्ता । तैलिक इव । खलोपभोगाय = खलः = पिण्याकः स एवोपयोगस्तस्य ।

हिन्दी—लौल्यादि ग्रहण करनेवाले तुम (कुशी नामक लता को ग्रहण करनेवाले) तेली के समान दुष्टों के उपयोग के लिए (खली के उपयोग के लिए) केवल मत बन जाओ।

आवर्जय गुणान्। निर्गुणे धनुषी सुवंश्येऽपि कस्याग्रहो भवति।

सुधा—आवर्जयेति। गुणान् = अकृत्यानि परिहार्य कृत्यानि। आवर्जय = अर्जय। निर्गुणे = गुणहीने, प्रत्यञ्चाहीने। धनुषि इव = कोदण्ड इव। सुवंश्ये अपि सुकुलजातेऽपि, सुवेणावपि। कस्य = कस्य जनस्य। आग्रहः = आदरः भवति। गुणानामेवाग्रहो जनस्य न केवलं कुलीनानामित्याशयः।

हिन्दी—(इन अकृत्यों—त्रुटियों को छोड़ कर) गुणों को अर्जित करो। जिस प्रकार उत्तम बांस से बने (परन्तु) डोरी रहित धनुष का कोई आदर नहीं करता है उसी प्रकार उत्तम कुल में उत्पन्न होकर भी निर्गुण व्यक्ति का कोई भी आदर नहीं करता है।

अभ्यस्य कलाः। निष्कलो वीणाध्वनिरिव प्रशस्यते न पुरुषः। त्यज जाड्यम्। जाड्ययोगेन हिमानी दूष्यतां याति।

सुधा—अभ्यस्येति। कलाः = विद्वत्तादिकाः। अभ्यस्य = अभ्यासं कुरु। निष्कलः= कलाभिः रहितः पुरुषः = जनः। निष्कलः = कलयितुमशक्यः वीणाध्वनिः = विपञ्ची-शब्दः। न प्रशस्यते = न शंस्यते। जाड्यम् = जडताम्। त्यज = जहि। हि—जाड्य-योगेन = मूर्खत्वेन मानी = स्तब्धः पुमान्। दूष्यताम् याति = दूषितो भवति। हिमानी = हिमसंहतिः। जाड्ययोगेन = अतिशैत्यात् दूष्यताम् याति = दूष्यत इत्यर्थः।

हिन्दी—कलाओं (विद्वत्ता आदि) का अभ्यास करो। कलाओं से शून्य व्यक्ति उसी प्रकार प्रशंसित नहीं होता है जैसे स्वरहीन वीणा-ध्वनि की कोई प्रशंसा नहीं करता है। जड़ता छोड़ दो। क्योंकि जड़ता के कारण मानी पुरुष दूषित हो जाता है। हिमानी अतिशीतलता के कारण ही दूषित हो जाती है।

मा स्म मुखरो भूः। कर्णाटचेटीमिव मुखरतां न शंसन्ति साधवः।

सुधा—मेति। मुखरः = वाचालः मा भूः। मुखरताम्—मुखे रतम् = सुरतम् यस्याः ताम्। कर्णाटचेटीम् इव कर्णाटदेशस्य चेटीम् इव। साधवः = सज्जनाः मुखरताम् = वाचालताम्। न शंसन्ति = न स्तुवन्ति।

हिन्दी—वाचाल मत बनो। मुखरत (केवल मुख पर ही सुन्दरता रखने वाली, हृदय से कठोर) कर्णाटदेश की चेटी के समान वाचालता की सज्जन प्रशंसा नहीं करते हैं।

भज माधुर्यम्। धवलबलीवर्दपङ्क्तिरिव समाधुर्या वाणी मनो हरति।

सुधा—भजेति। माधुर्यम् = मधुरताम्। भज = सेवस्व। समाधुर्या—सहमाधुर्येण सा = मनोहारिणी। वाणी = वाक्। समाधुर्या—समा = अविषमा धुर्या = धूर्वाहिनी

धवलबलीवर्दपङ्क्तिः इव = उज्ज्वलवृषश्रेणीसमम् । मनः = चेतः । हरति मोहयति, अक्षाग्रकीलिकामिव वहति ।

हिन्दी—स्वभाव से मधुर बनो । मधुर वाणी उसी प्रकार मन को हर लेती है जैसे बराबर धुरी वाली गाड़ी को उज्ज्वल बैलों की जोडी वहन करती है ।

वर्जय वैपरीत्यम् । विपरीतं शवमिव को न परिहरति ।

सुधा—वर्जयेति । वैपरीत्यम् = विपरीतस्वभावम् । वर्जय = त्यज । विपरीतम् विभिः = पक्षिभिः परीतम् = व्याप्तम् । शवम् = मृतकम् इव । विपरीतम् = विरुद्धाचारिणम् । को न परिहरति = को न परित्यजति, अपि तु, सर्वमेव परित्यजति ।

हिन्दी—विपरीत आचरण छोड़ दो । पक्षियों से घिरे मृतक (शव) के समान विपरीत आचरण करने वाले व्यक्ति को कौन नहीं छोड़ देता है ?

कमलदीर्घाक्ष, शिक्षाक्रमेऽस्मिन्नपरमप्यभिधीयसे ।

सुधा—कमलदीर्घाक्ष इति । हे कमलदीर्घाक्ष—कमलमिव सुन्दरे दीर्घे = विशाले च अक्षिणी यस्य तत्सम्बुद्धौ हे पद्मविशालनयन ! अस्मिन्=एतस्मिन् । शिक्षाक्रमे = उपदेशक्रमे । अपरम् अपि = अन्यदपि । अभिधीयसे = कथ्यसे ।

हिन्दी—हे कमल के समान सुन्दर तथा विशाल नेत्रों वाले ! इस उपदेशक्रम में (कुछ) और भी कह रहा हूँ ।

मा गाः स्त्रियाः श्रियो वा विश्वासम् ।

सुधा—मेति । स्त्रियाः—स्तृणाति दुर्विनीता सती आत्मनः परस्य वा गुणगणम् प्रच्छादयतीति स्त्री । यस्यां तु सतीधर्मयोगात् अस्यार्थस्यान्यथात्वम् । तत्र आवृणोति कल्याणपरम्पराभिः स्वकुलं पतिकुलं च, सा स्त्री । तस्याः = दुर्विनीतायाः अबलायाः । वा = अथवा । श्रियः = लक्ष्म्याः । विश्वासम्–विश्वस्मिन् = सर्वत्र निक्षेपस्य योग्योऽयोग्ये वा आसः = उपवेशनम् = स्थापनम् विश्वासस्तम् मा गाः = मा गच्छेः । धनार्थे हि पिता पुत्रेभ्यः, पुत्राश्च पितृभ्यो द्रुह्यन्ति इति भावः ।

हिन्दी—स्त्री अथवा लक्ष्मी का विश्वास मत करो ।

टिप्पणी—(१) स्तृञ् आच्छादने धातु से स्त्री शब्द सिद्ध होता है । धात्वर्थ से अपने तथा दूसरों के गुणों को छिपाने वाली, कल्याणपरम्पराओं से अपने कुल और पितृकुल को आच्छादित रखने वाली, लोभ अथवा स्वभाव से अतीव अनुराग रखने वाली स्त्री होती है अत एव उसके विश्वास को वर्जित किया गया है ।

(२) श्री = लक्ष्मी को विश्व (सब को, चाहे योग्य हो अथवा अयोग्य हो) आस (स्थापन करना, रखना) निषिद्ध किया गया है क्योंकि लक्ष्मी के लिए ही पिता-पुत्रों से तथा पुत्र-पिता से द्रोह करते हुए देखे गये हैं, इस प्रकार लक्ष्मी सदैव उपाधिभूत होती है ।

अधिकमलवसतिरनार्यसंगता स्त्री श्रीश्च कं न प्रतारयति ।

सुधा—अधिकेति। अधिकमलवसतिः—अधिको योऽसौ मलः = पापम्, तस्य वसतिः = आस्पदम्। अनार्यसंगता—अनार्यैः = असाधुभिः संगता = कृतमैत्रीका स्त्री कम् = कम् पुरुषम् न प्रतारयति = वञ्चयति। श्रीश्च = लक्ष्मीश्च। अधिकमलम् = कमले पद्मे वा वसतिः = वासो यस्याः। कमलं हि तरणशीलम् सा च तेनाविनाभावसंवद्धा। ततः पद्मासना श्रीः कं पुरुषं न। प्रतारयति=प्रकर्षेण तारयति। किं विशिष्टा। न नारी = अनारी = अमानुषी। ओ = विष्णुः। तत्संगता = असंगता। सर्वमपि प्रलम्भयति।

हिन्दी—नारीपक्ष—नारी सभी प्रकार के पापों का घर होती है तथा दुष्टों के साथ संगत स्त्री किसी को धोखा दे देती है।

श्रीपक्ष—लक्ष्मी का निवास कमल है जो कि प्रतिक्षण चञ्चल तथा क्षरणशील है—नष्ट हो जाता है, पुनः हो जाता है। तदनुसार लक्ष्मी भी अस्थिर होती है। पुनः अनारी—अमानुषी एवं ओं—विष्णुभगवान् से संगत (साथ में) होने के कारण भी किसको लुभाकर वञ्चित नहीं कर देती है अर्थात् सभी लक्ष्मी से सदा वंचित रहते हैं।

या कालकूटद्वितीया नीरोषितापि नार्द्रहृदया भवति। स्वीकृतापि विवाहेन कंसानलङ्घनचापलेनोद्वेजयति।

सुधा—या कालकूटेति। स्त्रीपक्षे—या = स्त्री। कालकूटद्वितीया काले = समये समये यत् कूटम् = कपटम् द्वितीयम् = अपरम् यस्याः। नीरोषिता = नीरोष्यते स्मेति नीरोषिता = प्रसादिता अपि। नार्द्रहृदया = आर्द्रं हृदयम् यस्याः = स्निग्धहृदया न भवति। विवाहेन = उद्वाहेन। सानलम् = अग्निसाक्षिकम्। स्वीकृता = गृहीता अपि। कम् = कम् पुरुषम् अपि। घनचापलेन = गाढलौल्येन उद्वेजयति = पीडयति।

लक्ष्मीपक्षे—या = लक्ष्मी। कालकूटद्वितीया—कालकूटम् = तन्नाम विषम् द्वितीयम् = अपरम् अस्याः। तदनन्तरमुत्पन्नत्वात्। नीरोषिता—नीरे = जले, उषिता = वासकृता, जलधिपुत्रीत्वात्। अपि। न आर्द्रहृदया = निर्जलवक्षाः। घनचापलेन = अतिचञ्चलेन विवाहेन—विः = पक्षी—गरुडः वाहनम् यस्य तेन = विष्णुना स्वीकृता = अङ्गीकृता अपि। कंसानलवत् कंसरूपाग्निम्। उद्वेजयति = पीडयति नाशयति वा। अथवा—उश्च अश्च वा = शिवविष्णू उत्कृष्टौ वौ यस्य स उद्वः—ईश्वरो विष्णुश्च यस्य प्रसन्नः, तस्मिन् जयति। अथवा या श्रीः विष्णुना स्वीकृतापि सती नीरे उषिता। कालकूटद्वितीयापि सती घनस्य = मेघस्य चापलेन = विलसितेन कंसमेव जगत्सन्तापकारित्वात् अनलम् उद्वेजयति = पीडयति। अर्थात् शमयितरि विवाहे गरुडवाहने आर्द्रहृदया न भवति।

हिन्दी—(स्त्रीपक्ष में) स्त्री समय-समय पर कपट को ही अपना सहयोगी बनाती है, प्रसन्न होकर भी कभी स्निग्ध हृदया नहीं हो पाती है, अग्नि को साक्षी कर विवाह द्वारा स्वीकार की गई भी गाढ़ चञ्चलता से किसी पुरुष को भी पीड़ित कर देती है।

(श्रीपक्ष में) लक्ष्मी कालकूट नामक भयङ्कर विष के साथ उत्पन्न हुई है (अत एव उसका विषैला प्रभाव होना स्वाभाविक ही है।) वह जल में रहकर भी स्निग्ध

हृदया नहीं है। अत्यन्त चञ्चल पक्षी गरुड को वाहन बनाने वाले विष्णु भगवान् के द्वारा कंस राक्षसरूपी अग्नि को वह पीडित करती है।

अथवा—'उ' = शिव तथा 'अ' = विष्णु दोनों ही देवता जिसपर अत्यन्त प्रसन्न हैं, ऐसी जल में वास करती हुई कालकूट विष की बहन होती हुई (तदनुकूल गुणवाली) मेघ के विलास से किस वीर पुरुष को पीडित नहीं कर देती है।

अस्याः कारणेऽभ्रान्तः समस्तोमन्दरागः सदालोकः, लोलनेत्रीकृता घृष्टा भुजङ्गमण्डली, प्राप्तो जलधी राजकुमारपराभवम्।

सुधा—अस्या इति। (स्त्रीपक्षे—) अस्याः = एतस्याः स्त्रियाः। कारणे = हेतौ। सदा = सर्वदा। समस्तः लोकः सर्वलोकः। अमन्दरागः=दृढानुरागः। भ्रान्तः = भ्रमयुक्तो भवति लोलनेत्रीकृता = चञ्चलनयना। भुजङ्गमण्डली = भुजङ्गानाम् = विटादिनीचपात्राणाम् मण्डली = वृन्दम्। घृष्टा = विप्रलब्धा। जलधी = जडबुद्धिः जनः राजकुमारपराभवम्–राजकुमारेण राज्ञः सकाशात् कुत्सितोमास्तेन कामदेवेन पराभवम् = पराजयम्। प्राप्तः = गतः।

(श्रीपक्षे) हे राजकुमार! अस्याः = एतस्याः श्रियाः। कारणे = हेतौ। समस्तः= सम्पूर्णः अभ्रान्तः—अभ्रम् = गगनम् अन्तो यस्य तथा = अत्युच्चः मन्दरागः = मन्दराचलः। सदालोकः = सुकान्तः। सम्यग् अस्तः = क्षिप्तः। भुजङ्गमण्डली = सर्पमण्डली (निश्चलनेत्रापि) लोलनेत्रीकृता चञ्चलनेत्रीकृता, घृष्टा = घर्षणं नीता। जलधिः = समुद्रः अस्याः हेतो पराभवम् = मन्थनलक्षणम् पराजयम् प्राप्तः = गतः।

हिन्दी—(स्त्रीपक्ष में) जिस स्त्री के कारण सदा समस्त लोक दृढानुरक्त हो चक्कर लगाता है। भुजंग मण्डली (नीच पुरुषों का समुदाय) चंचल नयनों से जिसके पीछे-पीछे घसिटती है तथा मूर्ख व्यक्ति कुत्सित स्वभाव वाले राजा कामदेव के द्वारा (जिस स्त्री के कारण) पराजय को प्राप्त होता है।

(लक्ष्मीपक्ष में) हे राजकुमार! जिस लक्ष्मी के कारण गगनपर्यन्त विस्तृत सुकान्त सम्पूर्ण मन्दराचल समुद्र में फेंक दिया गया तथा जिस लक्ष्मी के लिए समुद्र भी मन्थनरूप पराजय को प्राप्त हुआ है।

अनयावष्टब्धः को न गुरुवारणयोग्यो भवति, को न वाजिपृष्ठमारोहति कंकणन्नवञ्चनातः प्रकटयति, कः कण्ठे हारावमोचनं न कुरुते, को न काञ्चनशृङ्खलामनुभवति। कुरङ्ग इवान्धीभूतः को वागुरावञ्चनं करोति, कः कार्मुकनिर्मुक्तशिलीमुख इव व वैलक्षमागच्छति।

सुधा—अनयेति। अनया = एतया स्त्रिया। अवष्टब्धः = आश्रितः। कः = कः पुरुषः गुरुवारणयोग्यः—गुरूणाम् = गुरुजनानाम् वारणे = निषेधे योग्यः = पात्रः न भवति, वा = अथवा। आजिपृष्ठम्–आजिः कलहः, तस्य पृष्ठम् = तदुपरि को न आरोहति = आरोहणं करोति। वा वञ्चनातः = प्रतारणात्। कणम् = शब्दायमानः कं सुखं न प्रकटयति = स्फुटयति। कः = को नरः। कण्ठे = गलदेशे। हारावमोचनम्—हा = हा हा इति आरावः = ध्वनिः तस्य मोचनम् = त्यागः न कुरुते = न विदधाति। कः,

काञ्चनशृङ्खलाम् = कामपि शृङ्खलाम् = बन्धनम् न अनुभवति, वा अन्धीभूतः = मोहयुक्तः कुरङ्गः इव = मृगसदृशः कः गुरौ = गुरुविषये । अञ्चनम् = पूजनम् न करोति । अथवा—वागुरावञ्चनम् वागुरैः=जालतन्तुभिः आवञ्चनम् = मोचनम् करोति । कार्मुकनिर्मुक्तशिलीमुख इव—कार्मुकात् = कोदण्डात् निर्मुक्तः = निर्गतः शिलीमुखः इव—बाणसदृशः कः । वैलक्ष्यम्, विसदृशो लक्ष्यत इति विलक्षः, तस्यभावो वैलक्षम् = स्फुटं वेध्यम् कः = को नरः न आगच्छति = न आयाति ।

(श्रीपक्षे) अनया = एतया = लक्ष्म्या । अवष्टब्धः = आश्रितः को नरः गुरुवारणयोग्यः—गुरुः = महान् वारणः = गजः, तस्य योग्यः न भवति । वा = अथवा कः नरः वाजिपृष्ठम् = अश्वपृष्ठम् । न आरोहति = आरोहणं करोति । नवम् = नूतनम्, कङ्कणम् = हस्तसूत्रम् च अतः = अस्याः लक्ष्म्याः न प्रकटयति । कण्ठे = गलदेशे । हारावमुञ्चनम् = हारधारणम् कः न कुरुते = विदधाति, काञ्चनशृङ्खलाम् = स्वर्णशृङ्खलाम् कः न अनुभवति । वा कुरङ्ग-कुत्सितो रङ्गो यस्य सः = धूर्त इव अन्धीभूतः = मोहान्धः कः । अगुरौ = निम्नकोटिजने अञ्चनम् = पूजाम् करोति । अथवा विशालवासनाम् करोति । कार्मुकनिर्मुक्तशिलीमुख इव—कार्मुकः = कामयुक्तश्चासौ निर्मुक्तशिलीमुखः पुष्पाद् बहिर्गतभ्रमर इव वै = नूनम् लक्षम् = पुनः कामुकत्वम् । अथवा वैलक्षम् = कान्तिहीनताम् । आगच्छति = आप्नोति ।

हिन्दी—(स्त्री पक्ष में) इस स्त्री के आश्रित बना हुआ कौन व्यक्ति गुरुजनों के निषेध का पात्र नहीं बनता है, अथवा कौन कलह में नहीं फंसता है । अथवा वञ्चना से (धूर्तता से) बोलता हुआ किस सुख को प्रकट नहीं करता हैं । कौन पुरुष गले में हाहाकार की ध्वनि नहीं निकालता तथा कौन किसी प्रकार की शृङ्खला (जंजीर) के बन्धन का अनुभव नहीं करता अर्थात् सभी प्रकार से बन्धनों में फंस जाता है । कौन मोहान्ध कुरङ्ग की भांति विशाल वासना का उपासक नहीं बनता अथवा कौन मोहान्ध कुरङ्ग की भांति (स्त्री-विषय) जाल से मुक्त हो पाता है । धनुष से छूटे हुए बाण के समान (स्त्री का) स्पष्ट लक्ष (निशाना) नहीं बन जाता है ।

(श्री पक्ष में) इस लक्ष्मी से घिरा हुआ (आश्रित बना हुआ) कौन पुरुष महान् हाथी-घोड़ों की पीठ पर नहीं बैठता, नूतनकङ्कण कौन नहीं पहनता, गले में हार कौन नहीं पहनता, तथा कौन पुरुष सोने की जंजीर (आभूषण) धारण नहीं करता, दुष्ट पुरुष के समान धन-मदान्ध कौन व्यक्ति नीचों की नहीं पूजा करता अथवा विशाल वासना नहीं करता है । लक्ष्मी से अन्धा बना हुआ कौन पुरुष धनुष से निकले बाण के समान (फूल से मुक्त हुए भौंरे के समान) स्पष्ट लक्ष (निशाना) नहीं बन जाता है अथवा कान्तिहीन नहीं हो जाता है ।

कस्य न पराभूतिर्भवति । कस्य नापूर्वं यशः समुच्छलति ।

सुधा—कस्येति । (स्त्रीपक्षे) कस्य = स्त्रीवशीभूतस्य कस्य जनस्य । पराभूतिः = पराभवः न भवति । कस्य । अपूर्वम् यस्य तथा यशः = अयशः = अपकीर्तिः न = नैव समुच्छलति = सम्यक् प्रसरति ।

(श्रीपक्षे) (श्रीयुतस्य) कस्य पुरुषस्य परा = उत्कृष्टा भूतिः = उन्नतिः न भवति (अथवा) कस्य अपूर्वम् = अलौकिकम् यशः = कीर्तिः न समुच्छलति = समन्तात् न प्रसरति ।

हिन्दी—(स्त्रीपक्ष में) स्त्री के वशीभूत कौन व्यक्ति पराजित नहीं होता है और किसका अपयश नहीं फैलता है ?

(श्री पक्ष में) लक्ष्मीयुक्त किस पुरुष की उत्कृष्ट उन्नति नहीं होती है तथा किसकी अपूर्व कीर्ति नहीं फैलती है ?

किमतोऽप्यस्याः परमुच्यते ।

सुधा—किमिति । किम् अतः अपिः अस्मादपि । परम् = अधिकम् अस्याः = एतस्याः स्त्रियाः लक्ष्म्याः वा उच्यते = कथ्यते ।

हिन्दी—इससे और अधिक इस स्त्री अथवा श्री के विषय में क्या कहा जाय ।

यादवप्रियं शार्दूलमिव शूरं महत्तरं भयान्नोपसर्पति । सुनयनादेवरं सिंहमिव बलभद्रं दृष्ट्वा प्रपलायते । न वसुदेवेऽपि चक्षुः पातयति ।

सुधा—यादवेति । (स्त्रीपक्षे) या = या स्त्री । दवप्रियम्—दवम् = उत्पातम् प्रीणाति दवप्रियम् रागिणम् । अथवा—दुनोतीति दवः कुतश्चिद् वैगुण्यात् उपतापजनकः यः प्रियः कान्तः, तम् । शूरम् = वीरम् । महत्तरम् = वृद्धम् । शार्दूलमिव = सिंहम् इव । भयात् = त्रासात् । न उपसर्पति = समीपं न गच्छति । शार्दूलपक्षे दवः = काननम् । सुनयना = शोभने नयने यस्याः सा स्त्री । सुनयनादे = नयप्रवर्तन प्रोत्साहनायामामन्त्रम् । नादे = शब्दे । वरम् = प्रियंवदम् । बलभद्रम् बलेन = शक्त्या भद्रम्, दृष्ट्वापि । प्रपलायते = प्रणश्यति । सिंहमिव, सिंहस्तु नादे = शब्दे परम् = अपरं श्रेष्ठम् सिंहमिव दृष्ट्वा प्रपलायते = पलायितो भवति । वसुदे = धनप्रदे । अवे = रक्षके अपि । चक्षुः = नयनम् न पातयति, सम्मुखं न पश्यति ।

(श्रीपक्षे) या = लक्ष्मी । यादवप्रियम्—यादवः यदुवंश्याः, तेषां प्रियः तम् । शूरम् = शूरनामाद्य पुरुषम् । महत्तरम् = अतिमहान्तम् । सिंहमिव = शार्दूलमिव भयात् = स्थितिलंघनलक्षणात् । न उपसर्पति = न तत्समीपं गच्छति । एतेन श्वशुरो वध्वा न स्पृश्यत इति स्थितिरुक्ता । सुनयना देवरम् = गदनामानम् कृष्णानुजम् । बलभद्रम् = कृष्णाग्रजम् अपि ज्येष्ठ सम्बन्धेन प्रतीतम् वीक्ष्य प्रपलायते—प्रकर्षेण पलायते, स्पर्शभयात् । सा वसुदेवेऽपि = कृष्णपितर्यपि । चक्षुः = नयनम् । न पातयति ।

हिन्दी—(स्त्री पक्ष में) स्त्री अनुराग रखने वाले (उपतापजनक) पराक्रमी (परन्तु) वृद्ध प्रिय के निकट भय से उसी प्रकार नहीं जाती है जैसे जंगल में रहने वाले शार्दूल (शेर) के पास कोई व्यक्ति भय से नहीं जाता है । सुन्दर नेत्रों वाली वह बलशाली तथा कल्याणकर देवर को देखकर सिंह के समान भाग जाती है (अथवा हे सुनय ! शब्द में प्रियंवद तथा शक्ति से कल्याण कर (परन्तु) वृद्ध (बूढ़े) को देख कर भी मर जाती है—भयभीत हो जाती है या भाग जाती है । धन देने वाले तथा रक्षक-पुरुष में भी वह दृष्टि तक नहीं डालती है ।

(लक्ष्मी पक्ष में) लक्ष्मी यदुकुल में उत्पन्न पुरुषों के प्रिय शूर नामक महान् यदुराज के पास भय से नहीं जाती है। वह सुनयना देवर (कृष्ण के छोटे भाई गद) तथा बलभद्र (बड़े भाई) को सिंह के समान देख कर तेजी से भाग जाती है। वसुदेव (कृष्ण के पिता) पर भी वह दृष्टि तक नहीं डालती है।

केवलमनवरतशिक्षितवैदग्ध्यकलापराधात्मिकात्रपापरा परिहृत्य गुणिनो गुरून्परपुरुषे मायाविनि कृतकेशिवधे धृतमन्दरागे रागं बध्नाति।

सुधा—केवलमिति। (स्त्रीपक्षे) केवलम्। अनवरतशिक्षितवैदग्ध्यकला = नूयते इति नवम् = प्रशस्यम् न नवमनवम् = अप्रशस्यम् रतम् = प्रेम यस्याः, तथा–विशेषेण दग्धो विदग्धः। तस्य भावो वैदग्ध्यम् = सन्तापः, तस्य कला = वैदग्ध्यकला शिक्षिता यया सा। अपराधात्मिका–अपराध एव आत्मा = स्वरूपं यस्याः सा। अत्रपापरा–न त्रायते = रक्षति नरकाद् अत्रम् तथाभूतं यत्पापं कर्मण्युपसर्गं राति = ददाति इत्यत्र-पापरा। गुणिनः = सगुणान् ग्राह्यपुरुषान्। गुरून् = पित्रादीन् च परिहृत्य = परित्यज्य। परपुरुषे–परस्याः = अन्य नार्याः पुरुषे = कान्ते। मायाविनि = कापटिके। कृतकेशिवधे–कृतके = कृत्रिमे अशिवम् = अकल्याणम् दधातीत्यशिवधे। धृतमन्दरागे–धृतक्षणप्रेमणि। रागम् = प्रेम। बध्नाति अनुरज्यत इति भावः।

(लक्ष्मीपक्षे) (लक्ष्मीं) केवलम्। अनवरतशिक्षितवैदग्ध्यकलापराधात्मिका— अनवरतम् = निरन्तरम् शिक्षितो वैदग्ध्यकलापः = दक्षातिशयितः यया सा चासौ राधात्मिका = कृष्णपत्नीरूपा। त्रपापरा = सलज्जा गुणिनः = गुणान् = शौर्यादियुक्तान् गुरून् = शूरादीन्यदूनामादि पुरुषान् परिहृत्य = परित्यज्य। परपुरुषे = कृष्णे रागम् = प्रीतिम् बध्नाति किंभूते–मायाविनि–माया = त्रिलोकी निर्माणलक्षणा–वामन नृसिंह महिलात्वादि लक्षणा वा विद्यते यस्य तस्मिन्। कृतकेशिवधे–कृतः = विहितः केशिनः = अश्वरूप-दैत्यस्य वधो येन तस्मिन्। धृतमन्दरागे–धृतः मन्दरः = मन्दरनामा अगः = पर्वतो येन तादृशि।

हिन्दी—(स्त्री पक्षमें) स्त्री केवल अप्रशंसनीय संताप देने की कला सीखी हुई, अपराधस्वरूपा, नरक से रक्षा न करने वाले पापों को प्रदान करती है। वह पिता आदि को तथा शौर्यादि गुणों से युक्त पुरुष को छोड़ कर मायावी, कृत्रिम तथा अकल्याणका निम्न श्रेणी का प्रेम रखने वाले अन्य स्त्री के प्रियतम में प्रेम बढ़ाती है।

(लक्ष्मी पक्ष में) लक्ष्मी केवल निरन्तर वैदग्ध्यकलाप (ज्ञान की विविधता) की शिक्षा लिए रहती है। वह राधा स्वरूपा (कृष्ण की पत्नी) तथा अत्यन्त लज्जालु है। वह गुणी 'शूर' आदि नाम वाले अन्य यदुवंशियों को छोड़कर मायावी (त्रिभुवन की रचना करने वाले) केशी नाम राक्षस का संहार करने वाले तथा मन्दराचल को धारण करने वाले परात्पर पुरुष (भगवान् कृष्ण) में प्रेम बढ़ाती है।

तदायुष्मन्नतिगम्भीरगुहा गिरीन्द्रभूरिव हृदयहराश्रेयोऽर्थिनां शरणं न स्त्री श्रोर्वा।

सुधा—(स्त्रीपक्षे) तदिति । आयुष्मन् ! अयि दीर्घजीविन् राजपुत्र ! तत् = तस्मात् हेतोः अतिगम् = अतिशयेन बिभेतीति भीः = भीरुः । अगुहा—न गीर्वाग् यस्य सः अगुः, तं जहातीति सा अगुहा । अथवा—नतिगम्भीरगुहा—नतौ = नम्रतायाम् गम्भीरा गीर्वाग् यस्य तमतिगुम् जहातीति । गिरीन्द्र भूः इव = गिरीन्द्रस्य = हिमालयस्य भूः = पुत्री = पार्वती इव । हृदयहराहृदये = चित्ते हरः = शिवः यस्यास्तथा । हृदयहरा = हृदयहारिणी । श्रेयोर्थिनाम् = कल्याणेच्छु जनानाम् शरणम् = रक्षणम् न = नास्ति ।

(श्रीपक्षे) वा = अथवा श्रीः = लक्ष्मीः । अतिगम्भीरगुहा = अतिगहन गुहायुता गिरीन्द्रभूः = हिमालयस्य भूमिः इव हृदयहरा = मोहकारिणी श्रेयोऽर्थिनाम् = कल्याणाभिलाषिणाम् नराणाम् शरणम् = रक्षित्री । न = नैवास्ति ।

हिन्दी—(स्त्री पक्ष में) हे आयुष्मन् ! अतः स्त्री अतिशय डरपोक, अमृदुभाषी को त्याग देने वाली (अथवा—न्याय में गम्भीर वाणी वाले व्यक्ति का परित्याग करने वाली) हृदय में हर का ध्यान रखने वाली गिरीन्द्रपुत्री पार्वती के समान हृदयहारिणी, कल्याण चाहने वाले पुरुषों की रक्षा करने वाली नहीं होती है ।

(श्री पक्ष में) हे आयुष्मन् ! अतः लक्ष्मी अत्यन्त गहन गुफाओं वाली हिमालय भूमि के समान मनोहारिणी कल्याण चाहने वाले पुरुषों की रक्षा करनेवाली नहीं है ।

शृङ्गारप्रधानास्तात, गाव इव विचारिताः सरसा भवन्ति न स्त्रियः ।

सुधा—(स्त्रीपक्षे) शृङ्गारेति । हे तात = हे वत्स ! शृङ्गारप्रधानाः—शृङ्गारः रसः प्रधानं यासु ताः । गावः इव = धेनवः इव विचरिताः = भ्रमिताः स्त्रियः सरसाः = मधुराः न भवन्ति । अथवा—गावः इव–गावः = गिरः इव सरसाः = मधुराः न भवन्ति (गो पक्षे) हे तात ! शृङ्गारप्रधानाः—शृङ्गस्य अरम् = अग्रम प्रधानम् यासु ताः । सरसाः = स दुग्धाः । विचारिताः = विवेचिताः । गावः = धेनवः सरसाः भवन्ति, न स्त्रियः = स्त्रियस्तु सरसाः न भवन्ति ।

हिन्दी—शृङ्गार रस प्रधान (सजावट पसन्द करने वाली) स्त्रियां गायों के समान इधर-उधर चक्कर काटती अच्छी नहीं होती हैं ।

सींगों के अग्रभाग वाली चरती हुई गायें ही अच्छी होती हैं स्त्रियां नहीं ।

तदेताः कन्दर्पकण्डूकषणविनोदमात्रोपकारिण्यो नात्यन्तविश्वासयोग्याः सर्वथा विश्वस्तं विश्वासमिव नरं कुर्वन्ति स्त्रियः ।

सुधा—तदिति । तत् = अतः । कन्दर्पकण्डूकषणविनोदमात्रोपकारिण्यः–कन्दर्पस्य = कामदेवस्य कण्डूकषणम्, तेन विनोदमात्रेण = मनोरञ्जनेन उपकुर्वन्तीत्युपकारिण्यः । एताः स्त्रियः = नार्यः । अत्यन्तविश्वासयोग्याः = अतिविश्वासार्हाः न = न भवन्ति । स्त्रियः सर्वथा = सर्वप्रकारेण विश्वस्तम् = विश्वसनीयम् नरम् = पुरुषम् । विश्वासम् इव–विगतः = समाप्तः श्वासः = श्वसनम् यस्य तथा कुर्वन्ति = विदधन्ति ।

हिन्दी—अतः यह कामजन्य खुजलाहट से विनोद करके उपकार करने वाली स्त्रियां अत्यन्त विश्वास योग्य नहीं होतीं हैं । वे सर्वथा विश्वास योग्य पुरुष को विगत-श्वास (मृतप्राय) बना देती हैं ।

श्रियोऽपि दानोपभोगाभ्यामुपयोगं नयेत् । न लोभं कुर्यात् । बहुलोभानुगतः किरणकलापोऽपि संतापयति जनम् ।

सुधा—श्रिय इति । श्रियाः अपि = लक्ष्म्याः अपि । उपयोगम् = उपयुक्तताम् । दानोपभोगाभ्याम्–दानम् च उपभोगम् च, ताभ्याम् = दानकरणेन स्वयमुपयोगेन च नयेत् । लोभम् = तृष्णाम् न कुर्यात् । बहुलोभानुगतः–बहुलोभेन = अतितृष्णया अनुगतः= अनुयातः । किरणकलापः अपि = रश्मिसमूहः अपि । जनम् = लोकम् । सन्तापयति = पीडयति ।

हिन्दी—लक्ष्मी का उपयोग भी दान देकर तथा स्वयम् उपभोग करना चाहिए लोभ नहीं करना चाहिए । अधिक लोभ के पीछे पड़ा हुआ मनुष्य उसी प्रकार पीडित होता है जैसे सूर्य का घना किरण समूह लोगों को सन्तप्त कर देता है ।

अतः पुत्रः प्राप्स्यसि नचिरान्निजकुलकमलराजहंसीं राज्यश्रियम् । अनवरतं कृतयशोदानन्दे हि नारायण इव त्वयि चिरं रंस्यते खल्वियं लक्ष्मीः ।

सुधा—अतः इति । अतः = अस्माद् हेतोः । न चिरात् = द्रुतम् । निजकुलकमल-राजहंसीम्–निजकुलकमलस्य=आत्मनः वंशस्य कमलस्य । राजहंसी=राजहंसीं सदृशीम् । राज्यश्रियम् = राजलक्ष्मीम् । प्राप्स्यसि = अवाप्स्यसि । अनवरतम् = शश्वत् । कृतयशो-दानन्दे–कृतः = सम्पादितः यशोदायाः = यशोदाख्यायाः जनन्याः आनन्दो येन तस्मिन् । नारायणे इव = कृष्णे इव त्वयि = राजपुत्रे खलु = नूनम् इयम् = एषा । लक्ष्मीः = राज्यश्रीः । चिरम् = बहुकालम् रंस्यते = रमणं करिष्यति । (अथवा—निरन्तरम् कृत यशः = कृतकीर्तिः त्वम् दानम् देहि = दानेन धनं वितर । हि—यतः नारायण इव त्वयि चिरम् इयम् राजलक्ष्मी रंस्यते ।

हिन्दी—अतः पुत्र ! शीघ्र अपने वंशरूपी कमल की राजहंसी के समान राज्यलक्ष्मी प्राप्त करोगे । निरन्तर कीर्ति प्राप्त करते हुए दान दो क्योंकि नारायण के समान तुम्हारे पास बहुत समयतक यह लक्ष्मी रमण करेगी जैसे यशोदा नाम की माता को आनन्दित करने वाले कृष्ण (नारायण) में चिरकाल तक लक्ष्मा ने वास किया था ।

पाहि प्रजाः । प्रजापो ब्राह्मण इव क्षत्रियोऽपि न लिप्यते पातकैः ।

सुधा—पाहीति । प्रजाः = प्रजाम् । पाहि = पालय । प्रजापः–प्रकृष्टो जापो यस्मिन् तथा ब्राह्मणः इव = विप्र इव प्रजापः = प्रजापालकः क्षत्रियः अपि क्षत्रियवंशजातः अपि पातकैः = अघैः न लिप्यते = लिप्तो न भवति ।

हिन्दी—प्रजा का पालन करो । उत्कृष्ट जप करनेवाले ब्राह्मण के समान प्रजापालक क्षत्रिय भी पापों से लिप्त नहीं होता है ।

मा च वृद्धिं प्राप्य गुणेषु द्वेषं कार्षीः । व्याकरणे हि वृद्धिर्गुणं बाधते, न सत्पुरुषेषु ।

सुधा—मा इति । च = तथा । वृद्धिम् प्राप्य = राज्यसमृद्धिं लब्ध्वा गुणेषु पाण्डि-त्यादिषु । द्वेषम् = विरोधम् । माकार्षीः = मा कुर्याः । हि = यतः । व्याकरणे व्याकरण-

शास्त्रे एव वृद्धिः = वृद्धिकार्यम् । गुणम् बाधते = गुणकार्ये बाधकं भवति । अन्यत्र तु सत्पुरुषेषु = साधुषु वृद्धिः = उन्नतिः गुणम् = पाण्डित्यादिकम् न बाधते = बाधाम् न करोति, अपि तु गुणमपि वर्धते ।

हिन्दी—समृद्धि पाकर गुणों में द्वेष मत करो । क्योंकि व्याकरण शास्त्र में वृद्धि गुण-कार्य को रोकती है सज्जनों में प्रगति गुण से विद्रोह नहीं करती है ।

वत्स, मा चैवं चेतसि कृथाश्छान्दसोऽयम् । छान्दसश्च गुरुर्वक्र स्वभाव एव भवति तत्किमनेनेति । यस्माच्चतुरानन्दिपदः पुण्यश्लोको भवान् । अतोऽङ्गभावं यान्ति ते वक्रोक्तयोऽपि गुरवः । सरलतया लघवोऽप्यन्तरङ्गा भवन्ति । किन्तु ते ह्यवसाने कुटिलतामपि दर्शयन्ति ।

सुधा—वत्स इति । वत्स = पुत्र । अयम् = एषः । छान्दसः = छन्दत्वम् । चेतसि = मनसि । एवम् = इत्थम् या कृथाः = मा कुरुष्व । छान्दसः = छन्दःशास्त्रस्य गुरुः = गुरुचिह्नम् (ऽ) वक्रस्वभावः एव = कुटिलरूप एव । भवति । तत् = एतत् । अनेन = वक्रत्वेन किमिति । यस्मात् = यत्कारणात् । चतुरानन्दिपदः चतुरान् = विज्ञान् आनन्दयति तथाविधं पदम् = राज्यम् यस्य तथा । भवान् = राजपुत्रः । पुण्यश्लोकः = पुण्यम् = पवित्रम् श्लोकम् = यशः यस्य तथा = पूतकीर्तिः अस्ति । अतः = अस्मात्कारणात् । ते = तव । वक्रोक्तयः = कुटिलभाषिणः । गुरवः = गुरुजनाः अपि । अङ्गभावम् = तवभावनाम् यान्ति । त्वयिभावितात्मानो भवन्तीत्यर्थः । सरलतया = ऋजुतया । लघवः अपि = लघुचिह्नानि (।) क्षुद्रजनाः अपि अन्तरङ्गाः = अन्तर्गताः आत्मीयाः वा । भवन्ति । किन्तु = किञ्च ते लघुचिह्नानि (।) क्षुद्रजनाः वा । अवसाने = पादान्ते वा । कुटिलताम् = वक्रत्वम् अपि दर्शयन्ति = प्रदर्शयन्ति ।

हिन्दी—वत्स ! यह इस प्रकार की स्वच्छन्दता चित्त में मत लाना । छान्दस = वेदवेत्ता अथवा छन्दःशास्त्र वेत्ता गुरु टेढ़े स्वभाव का होता ही है, इससे क्या । अर्थात् इससे कोई हानि नहीं होती है । क्योंकि चतुर पुरुषों को आनन्ददायी राज्य वाले आप पुण्य कीर्ति वाले हैं । अतः वे कुटिल उक्ति वाले गुरु (ऽ) (गुरु जन) भी अन्तरङ्ग (आत्मीय) हो जाते हैं । सरलतया लघु (ह्रस्व ।) (नीच) भी अन्तरङ्ग हो जाते हैं किन्तु वे अवसान (पद समाप्ति पर) (अन्त में) कुटिलता (ऽ) भी दिखलाते हैं ।

टिप्पणी—छन्दः शास्त्र में गुरु तथा लघु दो प्रकार के वर्ण होते हैं जिनके चिह्न क्रमशः ऽ—। हैं । गुरु का आकार टेढा तथा लघु का (।) सीधा होता है । पदान्त में विकल्प से गुरु का लघु अथवा लघु का गुरु हो जाने का विधान है ।—संयुक्ताद्यं दीर्घं सानुस्वारं विसर्गं संमिश्रम् । विज्ञेयमक्षरं दीर्घं पादान्तस्थं विकल्पेन ।

तत्किं बहुना—

तथा भव यथा तात त्रैलोक्योदरदर्पणे ।
विशेषैर्भूषितस्तैस्तैर्नित्यमात्मानमीक्षसे ॥ १७ ॥

अन्वयः—तात, तथा भव यथा त्रैलोक्योदरदर्पणे तैः तैः विशेषैः भूषितः नित्यम् (त्वम्) आत्मानम् इक्षसे ।

सुधा—तथेति । तात = वत्स । तथा = तादृशः भव, यथा । त्रैलोक्योदरदर्पणे—त्रैलोक्यस्य उदररूपदर्पणे । तैस्तैः = आकल्पितैः विशेषैः = दानादिगुणैः भूषितः = अलङ्कृतः, भुवि = पृथिव्यामुषितो वा । नित्यम् = सदा । आत्मानम् अविनश्वरम् स्वम् । ईक्षसे = पश्यसि । अन्योऽपितैस्तैराकल्पविशेषैः मण्डितमात्मानं दर्पणे पश्यति । यशोऽर्थमेव प्रयतितव्यमितिभावः ॥ १७ ॥

हिन्दी—अतः अधिक क्या—हे तात ! प्रजारक्षण आदि से ऐसे बनो जिससे त्रैलोक्य के आंगनरूपी दर्पण में अपने विशेष दानादि गुणों से अलङ्कृत होकर तथा इस पृथ्वी पर रहकर सदा अपनी पवित्र आत्मा को देख सको ।

किं चान्यत्—

बिभर्ति यो ह्यर्जुनवारि पौरुषं करोति नम्रे च न वा रिपौ रुषम् ।
न तेन राज्ञा सहसागराजिता भवेन्मही किं सहसागरा जिता ॥ १८ ॥

अन्वयः—हि यः अर्जुनवारिपौरुषम् बिर्भात, च नम्रे रिपौ वा पौरुषम् न करोति तेन राज्ञा अगराजिता सहसागरा सहसा किम् मही जिता न भवेत् ॥ १८ ॥

सुधा—बिभर्तीति । यः = यो नृपः । अर्जुनवारिपौरुषम् = अर्जुनम् एव वृणोति = आच्छादयति, वारयति वा इत्येवं शीलं निजप्रकर्षेण तच्चरित्रापह्नवकारि पौरुषम् = पराक्रमम् । बिर्भाति = धत्ते । च = तथा नम्रे = विनम्रे रिपौ = शत्रौ वा = अथवा । रुषम् = क्रोधम् न करोति = विदधाति । तेन = तथाविधेन । राज्ञा = नृपेण । अगराजिता = अगैः = पर्वतैः राजिता = शोभिता = अष्टसंख्यकुलाचलालंकृता । सहसागरा सागरैः सहिता = स समुद्रा । सहसा = बलेन । किम् । मही = भूमिः । जिता = विजिता न भवेत् = न स्यात्, अपि तु जितैवेत्याशयः । यमकालङ्कारः । वंशस्थवृत्तमत्र । 'जतौ तु वंशस्थमुदोरितं जरौ' इति लक्षणात् ॥ १८ ॥

हिन्दी—बल्कि और भी—क्योंकि जो राजा अर्जुन के यश को आच्छादित कर लेने वाले पराक्रम को धारण करता हैं अथवा नम्र शत्रु पर भी क्रोध नहीं करता है ऐसे राजा के द्वारा पर्वतों से अलङ्कृत समुद्रों सहित सम्पूर्ण पृथ्वी क्या जीत नहीं ली जाती है ? अर्थात् अवश्य जीत ली जाती है ॥ १८ ॥

अपि च—

'किं तेन जातु जातेन मातुर्यौवनहारिणा ।
आरोहति न यः स्वस्य वंशस्याग्रे ध्वजो यथा' ॥ १९ ॥

अन्वयः—मातुः यौवनहारिणा तेन जातेन किम्, यः जातु स्वस्य वंशस्य अग्रे यथा ध्वजः न आरोहति ॥ १९ ॥

सुधा—किमिति । मातुः = जनन्याः । यौवनहारिणा = तारुण्यापहारिणा । तेन = एतेन । जातेन = सुतेन किम् = कः लाभः । यः = सुतः । जातु = कदाचित् । स्वस्य =

आत्मनः वंशस्य = कुलस्य अग्रे = समक्षे यथा = येन प्रकारेण। वंशस्य = वेणुकाष्ठस्य अग्रे = उपरि ध्वजः = पताका आरोहति तथैव न आरोहति ॥ १९ ॥

हिन्दी—और भी—माता के यौवन को हरने वाले ऐसे पुत्र से क्या लाभ होता है जोकि अपने वंश के आगे उसी प्रकार उन्नत नहीं हो जाता जैसे बाँस के छोर पर ध्वज ऊँचा दिखलाई पड़ता है ॥ १९ ॥

एवमुक्त्वा विश्रान्तवाचि वाचस्पतिसमे मन्त्रिणि राजापि प्रेमार्द्रया दृशा नलमवलोक्य वक्तुमारभत।

सुधा—एवमिति। एवम् = इत्थम्। उक्त्वा = कथयित्वा। वाचस्पतिसमे = वृहस्पति सदृशे मन्त्रिणि = अमात्ये। विश्रान्तवचसि = शान्तवचसि सति। राजापि नृपः अपि। प्रेमार्द्रया–प्रेम्णा आर्द्रा = नम्रीकृता तया दृशा = दृष्ट्या। नलम् = नलनामानं पुत्रम्। अवलोक्य = दृष्ट्वा। वक्तुम् = कथयितुम् आरभत = प्रारेभे।

हिन्दी—इस प्रकार कहकर बृहस्पति सदृश मन्त्री के चुप हो जाने पर राजा ने भी स्नेहार्द्र दृष्टि से नल को देखकर कहना प्रारम्भ किया।

'तात, युक्तमुक्तोऽसि सालङ्कायनेन। कस्यान्यस्य निर्यान्ति वदनारविन्दादेवंविधाः पदे पदेऽर्थसमर्था मृद्वचो मृष्टाः श्लिष्टाश्च वाचः।

तद्दर्शितस्तवानेन निर्वापितदेहः स्नेहः। स्वीकृतस्त्वं मनसा समस्तसाम्राज्यभारोद्वहनधुर्यतां प्रति। तेनायमनुशास्ति।

सुधा—तात इति। तात = वत्स! सालङ्कायनेन=सालङ्कायननाममन्त्रिणा युक्तम् = उचितम्। उक्तः असि = भणितः असि। अन्यस्य = अपरस्य। कस्य = कस्य सामान्यजनस्य। वदनारविन्दात्—वदनम् = मुखमेवारविन्दम् तस्मात् = मुखकमलात्। एवंविधाः = ईदृश्यः। पदे पदे = प्रतिपदे। अर्थसमर्थाः = अर्थगम्भीराः मृद्वचः कोमलाः, मृष्टाः = मधुराः। श्लिष्टाः = श्लेषयुक्ताः, बह्वर्थपूर्णाः वाचः = गिरः निर्यान्ति = निःसरन्ति। तत् = अतः। अनेन = एतेनामात्येन तव = ते। निर्वापितदेहः = निर्वापितः—तृप्तिं नीतः देहः = कायः येन तथा स्नेहः = प्रेम। दर्शितः = प्रदर्शितः। त्वम् मनसा = चेतसा। समस्तसाम्राज्यभारोद्वहनधुर्यताम् प्रति—समस्तस्य = सम्पूर्णस्य साम्राज्यस्य = राज्यस्य भारोद्वाहेन भारवहनकार्ये या धुरी तस्या भावस्तां प्रति। स्वीकृतः = अङ्गीकृतः असि। तेन = तस्मात्। अयम् = एषः मन्त्रिवरः अनुशास्ति = उपदिशति।

हिन्दी—हे वत्स! मन्त्री सालङ्कायन ने तुमसे ठीक कहा है। और किसके मुखारविन्द से इस प्रकार पद पद पर अर्थ गम्भीर कोमल मधुर तथा श्लिष्ट वाणी निकल सकती है। शरीर को तृप्त कर देने वाले स्नेह को इन्होंने तुम्हारे ऊपर दिखलाया है। हृदय से समस्त साम्राज्य के भारवहन में समर्थता को स्वीकार किया है। इसी से यह (मन्त्री जी) तुम्हें उपदेश दे रहे हैं।

युज्यते चैतत्। तथाहि—

संग्रहं नाकुलीनस्य सर्पस्येव करोति यः।
स एव श्लाघ्यते मन्त्री सम्यग्गारुडिको यथा ॥ २० ॥

अन्वयः—यः मंत्री अकुलीनस्य संग्रहम् न करोति स एव गारुडिकः (नाकुलीनस्य) सर्पस्य इव सम्यक् श्लाघ्यते ।। २० ।।

सुधा—च = तथा । एतत् = इदम् । युज्यते = उचितमस्ति । तथाहि—

संग्रहमिति । यः मन्त्री = योऽमात्यः । अकुलीनस्य = अनभिजातस्य संग्रहम् = संकलनम् । न करोति = न विदधाति । सः एव । यथा गारुडिकः = अहितुण्डकः । नाकु-लीनस्य = नाकुः = वल्मीकः, तत्र लीनस्य = प्रच्छन्नस्य । सर्पस्य = अहेः इव । सम्यक् समीचीनम् । प्रशस्यते = प्रशंसितो भवति । मन्त्रः = कर्मणामारम्भोपायः पुरुषद्रव्य सम्पत्, देशकालविभागो विनिपातप्रतीकारः, कार्यसिद्धिश्चेति पञ्चाङ्गः, गारुडादिविष-यश्च । तद् योगान्मन्त्री ।। २० ।।

हिन्दी—यह उचित ही है । क्योंकि—

जो मन्त्री नीच परम्परा वाले लोगों का संग्रह नहीं करता है वह गारुडिक (सांप बुझाने वाले) के समान जो कि बिल में घुसे सांप पकड़कर प्रशंसित होता है, प्रशंसा का पात्र बनता है ।

किं च—

न पश्यसि सांप्रतमिदमस्माकमतिभीरुभूपालमण्डलमिव बलिभिराक्रान्तम्, अशेषमङ्गम्, अतिजीर्णशीर्णकर्पटमिवावरीतुं न शक्यते क्वाप्युपरिपतितभ्रूचक्रा भीरुभटपेटीव नष्टा दृष्टिः ।

सुधा—किं चेति । न पश्यसि = नावलोकयसि —साम्प्रतम् = इदानीम् । इदम् = एतत् । अस्माकम् = मामकानाम् । वलिभिः आक्रान्तम् = वलयः = त्वक् शैथिल्यानि, तैराक्रान्तम् बलशालिभिः आक्रान्तम् । अतिभीरुभूपालमण्डलम् इव—अतिकापुरुषनृपमण्डलम् इव । अशेषम् = सम्पूर्णम् । अङ्गम् = आवरणं सम्व्यानम् । अङ्गपक्षे—सम्वरणम् अति-जीर्णशीर्णम् = अतिसौष्ठवात् अशक्यम् कर्पटम् इव = वस्त्रम् इव । आवरीतुम् आवरणं भवितुम् न शक्यते = सामर्थ्यम् न गच्छति क्वापि उपरि पतितभ्रूचक्रा = उपरिपतितम् = शैथिल्यात् स्रस्तम् भ्रूचकम् यस्याम् । भीरुभूपालमण्डलीपक्षे तु प्रतिभटानामिति शेषः । भीरुभटपेटी इव = भीतवीरपेटी समा । दृष्टिः नष्टा = नाशं गता । भीरवो हि वैरिणि विलोकयति पलायन्ते ।

हिन्दी—किन्तु—देखते नहीं, इस समय यह हमारे समस्त अंग बलियों से घिरे (बलवान् पुरुषों से आक्रान्त) अत्यन्त डरपोक नृपमण्डल के समान अति जीर्ण शीर्ण कपड़े जैसे ओढ़ने-ढकने (घेरने) के समर्थ नहीं है । ऊपर से पड़ी भ्रूचक्री (लटकी हुई भौंह) (भ्रूचक्र वाली) भीरुभटपेटी (कायरवीर मण्डली) जैसी कोई दृष्टिहीन हो जाय ।

ये हितवर्गोपदेशिनो मुख्यास्तेऽपि सालङ्कायनप्रभृतयो मन्त्रिण इव विरली-भूता दन्ताः । शब्दशास्त्रे हि राजादीनामदन्तता श्लाघ्यते । नान्यत्र ।

सुधा—ये हितेति । ये = इमे । हितवर्गोपदेशिनः—हितवर्गम् = हितसमूहम् उप-

दिशन्तीति । मुख्याः = प्रधानाः । ते अपि । सालङ्कायनप्रभृतयः = सालङ्कायनादिनामकाः मन्त्रिणः इव = सचिवाः इव विरलीभूताः = केचिदेव । हि = यतः तवर्गोपदेशिनः— 'त थ द ध न' इत्युच्चारकाः दन्ताः = रदाः विरलीभूताः स्युः । हि—यतः । शब्दशास्त्रे = व्याकरणे । राजादीनाम् = राजादिशब्दानाम् । अदन्तता = दन्तहीनता । श्लाघ्यते = प्रशस्यते । अन्यत्र = अन्यस्थले न = नैव श्लाघ्यते ।

हिन्दी—जो हित की बातों का उपदेश देते हैं वैसे सालङ्कायन आदि मन्त्री विरले ही हैं क्योंकि त वर्ग (त थ द ध न) का उच्चारण करने में सहायक कुछ ही दांत होते हैं । व्याकरणशास्त्र में 'राजा' आदि शब्दों की अदन्तता (दन्तहीनता) प्रशंसनीय होती है अन्यत्र (राजाओं में) दन्तहीनता प्रशंसनीय नहीं होती है ।

तदिदानीं मम वन्यश्वापदमिव विषयविमुखं मनो वनाय धावति । कृतं च यन्मनुष्यजन्मनि क्रियते ।

सुधा—तदिति । तत् = अतः । इदानीम् = सम्प्रति । मम—मे । वन्यश्वापदम् इव = वने जाताः वन्याः वन्याश्च, ते श्वापदास्तेषं समाहारः = अरण्यपशव इव । विषयविमुखम् = विषयविरक्तम् = चेतः । वनाय = अरण्याय । धावति = पलायते । च = तथा । कृतम् = विहितम् । यत् = यत्कर्म । मनुष्यजन्मनि = नरजन्मनि । क्रियते = विधीयते ।

हिन्दी—अत एव इस समय मेरा विषय विमुख मन जंगली जानवरों के समान वन के लिए दौड़ रहा है । जो कार्य मनुष्य जन्म में किया जाता है वह मैं कर चुका हूँ ।

तथाहि—

एता प्राप्य परोपकारविधिना नीताः श्रियः श्लाघ्यता-
मापूर्वापरसिन्धुसीम्नि च नृपाः स्वाज्ञां चिरं ग्राहिताः ।
भूभारक्षमदोर्युगेन भवता जाता वयं पुत्रिण-
स्तत्संप्रत्युचितं यदस्य वयसस्तत्कर्म कुर्मो वने ॥ २१ ॥

अन्वयः—एताः श्रियः प्राप्य परोपकारविधिना श्लाघ्यताम् नीताः, च नृपाः आपूर्वापरसिन्धुसीम्निचिरम् स्वाज्ञाम् ग्राहिताः । भूभारक्षमदोर्युगेन भवता वयम् पुत्रिणः जातः । तत् सम्प्रति यद् अस्य वयसः उचितम् तत् कर्म वने कुर्मः ।

सुधा—एताः प्राप्य इति । एताः = इमाः श्रियः = लक्ष्म्यः प्राप्य = लब्ध्वा परोपकारविधिना = परोपकारविधानेन । श्लाघ्यताम् = प्रशंसनीयताम् नीताः = प्रापिताः । च = तथा । नृपाः = राजानः । आपूर्वापरसिन्धुसीम्नि आ समन्तात् पूर्वापरयोः = पूर्वपश्चिमदिशोः सिन्धोः = सागरस्य सीम्नि = प्रान्तभागे । चिरम् = बहुकालम् । स्वाज्ञाम् = आत्मादेशम् । ग्राहिताः—स्वीकारिताः । भूभारक्षमदोर्युगेन = भूमिभारवाहनसमर्थभुजयुगलेन । भवता = त्वयाऽऽत्मजेन वयम् । पुत्रिणः = पुत्रवन्तः जाताः = सम्भूताः । तत् = अतः सम्प्रति = साम्प्रतम् यत् = यत्कर्म । अस्य एतस्य । वयसः = अवस्थायाः, वृद्धत्वस्य । उचितम् = उपयुक्तम् । तत कर्म वने = कानने (वयम्) कुर्मः = सम्पादयामः । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ २१ ॥

हिन्दी—क्योंकि—यह सम्पदायें पाकर परोपकार विधि (परोपकार के कार्य करके) से उन्हें सफल (प्रशंसनीय) बना चुका हूँ। तथा समुद्र की पूर्व से लेकर पश्चिम तक सीमा पर्यन्त राजाओं से मैंने चिरकाल तक अपनी आज्ञाओं का पालन भी करा लिया है। भूमि के भार को रक्षा करने में समर्थ भुज युगल वाले तुम जैसे पुत्र को पाकर हम सार्थक पुत्रवान् भी हो चुके हैं। अतः एव इस वृद्धावस्था के उपयुक्त जो कर्म (ईश्वर चिन्तन) है वही अरण्य में करेंगे।

इत्यभिधाय तत्कालमेव मौहूर्त्तिकानाहूयादिदेश–'कथ्यतां यौवराज्याभिषेकोत्सवाय दिवसः' इति।

सुधा—इत्यभिधायेति। इति = एवम्। अभिधाय = उक्त्वा। तत्कालम् एव = तत्क्षणमेव मौहूर्तिकान् = ज्योतिर्विदः आहूय = आकार्य। आदिदेश = आदेशं चकार यौवराज्याभिषेकोत्सवाय-राजतिलकसमारोहाय। दिवसः=सुदिवसः। कथ्यताम्=भण। इति।

हिन्दी—यह कह कर तत्काल ही ज्योतिषियों को बुलाकर आदेश दिया—यौव राज्याभिषेक के उत्सव के लिए (उचित) दिवस बतलाइये।

अथ कथयामासुस्तेऽपि—देव, श्रूयतामनवद्यतनमेव राज्याभिषेकयोग्यमहः! केन्द्रस्थानवर्त्तिनः सर्वेऽप्युच्चग्रहाः, पुण्यो मासः, पूर्णा तिथिः, श्लाघ्यो योगः प्रशस्तो वारः शुभं नक्षत्रम्, कल्याणी वेला, विधीयतां यद्विधेयम्' इत्यभिधाय स्थितेषु तेष्वनन्तरमेव 'सुश्रोणि, श्रूयतां यदस्माभिः श्रुतमाश्चर्यम्।

सुधा—अर्थेति। अथ = अनन्तरम्। तेऽपि = मौहूर्तिका अपि। कथयामासुः = अकथयन्। देव = नृप! श्रूयताम् = आकर्ण्यताम्—अनवद्यतनम् एव = अनिन्द्यतनम् एव। राज्याभिषेकयोग्यम् = राजतिलकोपयुक्तम्। अहः = दिनम्। केन्द्रस्थानवर्तिनः = उच्चस्थानगताः सर्वेऽपि = समस्ताः अपि। उच्चग्रहाः = उत्तमग्रहाः पुण्यः मासः = पवित्रमासः। पूर्णातिथिः। श्लाघ्यः = प्रशंसनीयः योगः। प्रशस्तः = शुभः वारः = दिवसः। शुभम् = कल्याणकरम् नक्षत्रम् = ग्रहः। कल्याणी = शुभा वेला। यद्विधेयम् = यत्करणीयम्। विधीयताम् = क्रियताम्। इति अभिधाय = एवं कथयित्वा। तेषु = एतेषु स्थितेषु = अवस्थितेषु। अनन्तरम् एव = पश्चादेव। सुश्रोणि = सुमध्ये! अस्माभिः यत् आश्चर्यम् = कौतुकम्। श्रुतम् = आकर्णितम् तत् श्रूयताम् = आकर्ण्यताम्।

हिन्दी—अनन्तर वे भी कहने लगे—'देव'! सुनिये, राज्याभिषेक के लिए अत्यन्त प्रशंसनीय दिवस है। सभी उच्चग्रह केन्द्रस्थानवर्ती हैं, पवित्र मास है, पूर्णा तिथि, श्लाघनीय योग, प्रशंसनीय दिन, शुभनक्षत्र, कल्याण कर वेला है। अतः जो करणीय हो कीजिए, यह कहकर उन सबके बैठ जाने से अनन्तर ही (राजा) कहने लगे—हे सुमध्ये! हमने जो आश्चर्य सुना है, सुनिये।

उचितमुचितमेतद्धैर्यधाम्नां नृपाणां
वयसि कटुनि कान्तालोचनानां तृतीये।
इति रभसमिवास्य प्रस्तुतं श्लाघमानो
वियति पटुरकस्मादुत्थितस्तूर्यनादः ॥ २२ ॥

अन्वयः—तृतीये वयसि कान्तालोचनानाम् कटुनि धैर्यधाम्नाम् नृपाणाम् एतत् उचितम्, इति रभसम् इव अस्य प्रस्तुतम् श्लाघ्यमानः पटुः तूर्यनादः अकस्मात् वियति उत्थितः ॥ २२ ॥

सुधा—उचितमिति । तृतीये वयसि = वानप्रस्थावस्थायाम् । कान्तालोचनानाम् रमणीनयनानाम् । कटुनि = अप्रिये सति । धैर्यधाम्नाम्—धैर्यरूपतेजसाम् नृपाणाम् = भूपतीनाम् । एतत् = इदम् । उचितमुचितम् = अत्युचित्तम् (अस्ति) इति = एवम् । रभसम् इव = सहसेव । अस्य = एतस्य । प्रस्तुतम् = उपस्थितं कार्यम् श्लाघ्यमानः = प्रशस्यमानः । पटुः तूर्यनादः = तूर्य-वाद्यध्वनिः अकस्मात् = सहसा । वियति = आकाशे । उत्थितः = समजायत । मालिनीवृत्तम् ॥ २२ ॥

हिन्दी—"तृतीय (वानप्रस्थ) अवस्था में रमणियों के नयनों के अप्रिय हो जाने पर धैर्य-धाम नृपतियों के लिए यह अत्यन्त उचित है।" इस प्रकार सहसा इसके प्रस्तुत कार्य की प्रशंसा करते हुए तूर्य वाद्यध्वनि अकस्मात् आकाश में गूंज उठी ॥२२॥

अपि च—

> उपरि परिमलान्धैः सस्वनं संचरद्भि-
> र्मधुकरनिकुरम्बैश्चुम्ब्यमाना भरेण ।
> अविरलमधुधारासारसंसिक्तभूमिः
> सदसि सुरविमुक्ता प्रापतत्पुष्पवृष्टिः ॥ २३ ॥

अन्वयः—उपरि सस्वनम् संचरद्भिः परिमलान्धैः मधुकरनिकरैः चुम्ब्यमाना भरेण अविरलमधुधारासारसंसिक्तभूमिः सुरविमुक्ता पुष्पवृष्टिः सदसि प्रापतत् ॥ २३ ॥

सुधा—उपरीति । उपरि = उर्ध्वम् । सस्वनम् = सगुञ्जनम् सञ्चरद्भिः = भ्रमद्भिः परिमलान्धैः = परिमलेन = सुगन्धेन अन्धाः = जडीकृतास्तैः । मधुकरनिकरैः भ्रमरसमूहैः चुम्ब्यमाना = चुम्बिता । भरेण = भारेण । अविरलमधुधारासारसंसिक्तभूमिः—अविरलम् = अविच्छिन्नम् मधुधारासारेण = मधुधारावर्षणेन संसिक्ता = आर्द्रीकृता भूमिः = पृथ्वी यया तथा । सुरविमुक्ता = सुरैः = देवैः विमुक्ता = परित्यक्ता । पुष्पवृष्टिः = कुसुमवर्षा । प्रापतत् = पपात । मालिनी वृत्तम् ॥ २३ ॥

हिन्दी—ऊपर गुन गुनाते हुए, सुगन्ध से मतवाले मधुकरों के समूह द्वारा चुम्बित, बोझ से निरन्तर मधुरस की वर्षा से भूमि को गीला कर देने वाली देवताओं द्वारा छोड़ी गई पुष्पवर्षा सभा में होने लगी ॥ २३ ॥

अवतेरुश्च तत्कालमेवाम्बरतलादुल्लसद्ब्रह्मकान्तिकलापपवित्रीकृताष्टदिग्भागभूमयः सकलसागरसरित्तीर्थाम्बुपूर्णकमण्डलुमुत्कुशकुसुमौषधिरुद्धपाणयो दर्शनादेवापनीतसमस्तकलिकल्मषाः केऽपि कुतोऽपि ब्रह्मर्षयः ।

सुधा—अवतेरुरिति । च = तथा । तत्कालम् एव = तत्क्षणमेव । अम्बरतलात् = गगनतलात् । उल्लसद्ब्रह्मकान्तिकलापपवित्रीकृताष्टदिग्भागभूमयः—उल्लसद्भिः = शोभितैः ब्रह्मकान्तिकलापैः = ब्रह्मतेजोराशिभिः पवित्रीकृता = शुद्धीकृता अष्टदिग्भागभूमिःसर्वदि-

म्भागभूः यैस्तादृशाः । सकलसागर-सरित्तीर्थाम्बुपूर्णकमण्डलुम्——सकलानाम् = निखिलानाम् सागराणाम् = सिन्धूनाम् = सरिताम् = नदीनाम् तीर्थानाञ्च यदम्बु = जलम्, तेन पूर्णम् = परिपूर्णम् यत् कमण्डलुम् तत् । उत्कुशकुसुमौषधिरुद्धपाणयः——उत् = उत्पाटिताः कुशाः = दर्भाः, कुसुमानि = पुष्पाणि औषधीश्च, तैर्वस्तुभिः रुद्धाः पाणयः = हस्ताः येषां ते । दर्शनात् एव=दर्शनमात्रादेव । अपनीतसमस्तकलिकल्मषाः अपनीतानि= दूरीकृतानि समस्तानि = निखिलानि कलेः कल्मषाणि = कलुषाणि यैस्तादृशाः केऽपि = केचित् । ब्रह्मर्षयः = तेजस्विमहर्षयः । कुतः अपि कस्माच्चित्स्थानात् । अवतेरुः = अवातरन् ।

हिन्दी——तत्काल ही आकाश से ब्रह्मतेजो राशि से आठो दिशाओं की भूमि को शोभित करते हुए, सभी सागर, सरिताएं तथा तीर्थों के जल से परिपूर्ण कमण्डलु, एवं उखाड़ती हुई कुशाओं फूलों तथा औषधियों को हाथों में लिए हुए, दर्शन से ही समस्त कलिकल्मष को मिटा देने वाले कोई ब्रह्मर्षि कहीं अवतरित हुए ।

सहर्षेण सविनयेन सपरिवारेण च चलत्कर्णोत्पलगलद्बहलरजःपुञ्जपिञ्जरितकपोलपालिना पृथ्वीपालेन प्रणम्य कृतातिथेयाः समुचितान्यलंचक्रुरासनानि ।

सुधा——सहर्षेणेति । सहर्षेण = प्रसन्नतया । सविनयेन = नम्रतया । सपरिवारेण—परिवारेण सह च । चलत्कर्णोत्पलगलद्बहलरजःपुञ्जपिञ्जरितकपोलपालिना——चलता= दोलायितेन कर्णोत्पलेन = कर्णपुष्पेण गलता = स्रवता बहलेन रजः पुञ्जेन = अतिशयपरागसमूहेन पिञ्जरितौ = पिंगलवर्णीकृतौ कपोतापाली = गण्डस्थले तेन । पृथ्वीपालेन = भूपालेन । प्रणम्य = नमस्कृत्य । कृतातिथेयाः——कृतम् आतिथ्यं येषां ते = विहितातिथ्यसत्काराः । ब्रह्मर्षयः । समुचितानि = उपयुक्तानि आसनानि = विष्टराणि । अलंचक्रुः ।

हिन्दी——प्रसन्नता और विनय के साथ सपरिवार हिलते हुए कर्ण पुष्प से गिरते हुए अत्यधिक पराग पुञ्ज से पीले बने हुए गण्डस्थल वाले भूपाल के द्वारा प्रणाम कर अतिथि सत्कार किये हुए ब्रह्मर्षियों ने समुचित आसनों को अलङ्कृत किया ।

कृतकुशलप्रश्नालापाश्च प्रस्तुतकुमाराभिषेकस्य नरपतेः स्वस्वकमण्डलुवारीणि दर्शयामासुः ।

सुधा——कृतेति । च = तथा । कृतकुशलप्रश्नालापाः——कृताः कुशलप्रश्ना आलापाश्च यैस्ते = कृतकुशलप्रश्नवार्ताः । प्रस्तुतकुमाराभिषेकस्य——प्रस्तुतराजपुत्रराजतिलकस्य । नरपतेः = भूपतेः । स्वस्वकमण्डलुवारीणि=निजनिजकमण्डलुजलानि (ते) दर्शयामासुः= दर्शनं कारयामासुः ।

हिन्दी——कुशल प्रश्न वार्ता करने के पश्चात् राजकुमार नल के अभिषेक के लिए प्रस्तुत राजा को (उन ब्रह्मर्षियों ने) अपने अपने कमण्डलु के (तीर्थ) जल दिखलाये ।

इदं मन्दाकिन्याः सलिलमवगाह्यागतमरुत्-
पुरन्ध्रीणां पीनस्तनशिखरभुग्नोर्मिवलयम् ।

इदं कालिन्द्याश्च प्रविकसिततीरद्रुमलता-
पतत्पुष्पैरन्तःसुरभिततरङ्गं नृप पयः ॥ २४ ॥

अन्वयः—नृप ! पुरन्ध्रीणाम् पीनस्तनशिखरभुग्नोर्मिवलयम् अवगाहागतमरुत् इदम् मन्दाकिन्याः सलिलम् । च इदम् प्रविकसिततीरद्रुमलता पतत्पुष्पैः अन्तः सुरभित तरङ्गम् पयः कालिन्द्याः (अस्ति) ॥ २४ ॥

सुधा—इदमिति । नृप = हे राजन् ! पुरन्ध्रीणाम् = देवमणीनाम् । पीनस्तनशिखर-भुग्नोर्मिवलयम्—पीनस्तनानाम् = स्थूलपयोधराणाम् शिखरैः = अग्रभागैः भुग्नम् = त्रुटितम् उर्मिवलयम् = वीचिवलयम् यस्य तत् । अवगाहागतमरुत्-अवगाहनेन = निमज्ज-नेन आगतम् = आयातम् मरुत् = वायुः यत्र तत् । इदम् = एतत् । मन्दाकिन्या = गङ्गायाः सलिलम् = जलम् (अस्ति) च = तथा । इदम् = एतत् । प्रविकसिततीर द्रुमलतापतत्पुष्पैः—प्रविकसिताभिः = विकचिताभिः तीरद्रुमलताभिः = तटवृक्षलताभिः पति-तानि = स्खलितानि पुष्पाणि तैः । अन्तः सुरभिततरङ्गम्-अन्तः = मध्ये सुरभिताः = सुगन्धिताः तरङ्गाः = वीचयः यत्र तत् । पयः = सलिलम् कालिन्द्याः = यमुनायाः (अस्ति) शिखरिणी वृत्तम् ॥ २४ ॥

हिन्दी—हे नृप ! देवाङ्गनाओं के स्थूल पयोधरों के अग्रभाग से टूटे उर्मि मण्डल वाला, स्नान से उत्पन्न हुई वायु वाला यह मन्दाकिनी का जल है तथा यह विकसित तटवर्त्ती वृक्षलताओं से गिरते हुए पुष्पों द्वारा सुगन्धित तरङ्गों से युक्त जल कालिन्दी (यमुना) का है ॥ २४ ॥

इदं गोदावर्यास्त्रिनयनजटालखण्डगलितं
महाराष्ट्रीनेत्रैः कृतकुवलयं मज्जनविधौ ।
इदं चापि प्रेङ्खन्मुनिजनविकीर्णार्घकमलं
पयो विन्ध्यस्कन्धस्थलविलुलितं नार्मदमपि ॥ २५ ॥ युग्मम् ।

अन्वयः—इदम् त्रिनयनजटाखण्डगलितम् महाराष्ट्रीनेत्रैः मज्जनविधौ कृतकुवलयम् (जय) गोदावर्याः, अपि च इदम् प्रेङ्खन्मुनिजनविकीर्णार्घकमलम् विन्ध्यस्कन्धस्थल-विलुलितम् पयः नार्मदम् अपि (अस्ति) ।

सुधा—इदमिति । इदम् = एतत् । त्रिनयनजटाखण्डगलितम्—त्रीणि नयनानि यस्य सः त्रिनयनः = शिवः, तस्य यत् जटाखण्डम् = सटाभागम्, तेन गलितम् = स्रस्तम् । महाराष्ट्री नेत्रैः—महाराष्ट्रीणाम्-महाराष्ट्ररमणीनाम् नेत्राणि = लोचनानि, तैः । मज्जन विधौ = स्नान-विधौ कृतकुवलयम् = कृतनीलकमलम् पयः = जलम् । गादावर्याः = गोदावरी नद्याः (अस्ति) अपिच = तथा । इदम् = एतत् । प्रेङ्खन्मुनिजनविकीर्णार्घ-कमलम्—प्रेङ्खन्तः = भ्रमन्तः ये मुनिजनाः = महर्षयः, तैः विकीर्णानि अर्घकमलानि-अर्घनिमित्तं पद्मानि यत्र तत् । विन्ध्य स्कन्ध स्थल विलुलितम्—विन्ध्यस्य = विन्ध्याचलस्य यत् स्कन्धस्थलम् = उपरिस्थानम्, तेन विलुलितम् = आविर्भूतम् यत् । पयः = सलिलम् अपि नार्मदम् = नर्मदा-जातम् (अस्ति) । शिखरिणीवृत्तम् ॥ २५ ॥

हिन्दी—यह त्रिनेत्रशिव के जटाखण्ड से गिरा हुआ, तथा महाराष्ट्र की रमणियों के नयनों द्वारा स्नान करते समय नीलकमल सा बना हुआ गोदावरी का जल है एवम् यह भ्रमण करते हुए मुनिजनों के द्वारा बिखेरे गये अर्धकमलों वाला विन्ध्याचल पर्वत की चोटी पर से आविर्भूत नर्मदा का जल है ।। २५ ।।

इतश्च—तदेतत्पुण्यानां परममवधि प्राप्तमुदधेः
पयः प्रक्षाल्याङ्घ्री शयनसमये शार्ङ्गधनुषः ।
विहारायोन्मज्जद्वरुणवनितावृन्दवदनैः
क्षणं यत्रोत्फुल्लन्नवकमलखण्डश्रियमधात् ।। २६ ।।

अन्वयः—तत् शयनसमये शार्ङ्गधनुषः अंघ्री प्रक्षाल्य पुण्यानाम् परमम् अवधिम् प्राप्तम् एतत् पयः उदधेः, यत्र उन्मज्जद्वरुणवनिता वृन्दवदनैः उत्फुल्लन्नवकमलखण्ड श्रियम् अधात् ।

सुधा—तदिति । तत् = अतः । शयन–समये = युगान्ते । शार्ङ्गधनुषः–शार्ङ्गंनाम धनुर्यस्य तस्य = भगवतः विष्णोः । अंघ्री = चरणौ । प्रक्षाल्य = प्रक्षालनं कृत्वा पुण्यानाम् = पवित्राणाम् । परमम् = चरमम् । अवधिम् = सीमाम् प्राप्तम् = गतम् । एतत् = इदम् । पयः = जलम् । उदधेः = समुद्रस्य (अस्ति) । यत्र = यस्मिन्नुदधौ विहाराय = क्रीडनाय उन्मज्जद् वरुणवनितावृन्दवदनैः–उन्मज्जतः = स्नानं कुर्वतः वरुणस्य = वरुण देवस्य वनितावृन्दम् = स्त्रीसमूहम् तस्य वदनैः = मुखैः । उत्फुल्लन्नवकमलखण्डश्रियम्–उत्फुल्लतः = विकसतः नवस्य = नूतनस्य कमलखण्डस्य = पद्मवृन्दस्य या श्रीस्ताम् = शोभाम् अधात् = दधार । शिखरिणी वृत्तम् ।। २६ ।।

हिन्दी—और इधर सो, युग के अन्त मे शार्ङ्गधनुर्धारी भगवान् विष्णु के दोनों चरणों को धोकर पुण्यों की परम सीमा को पहुँचा हुआ यह जल समुद्र का है जहां बिहार के लिए स्नान करती हुई वरुण की पत्नियों के मुखों से खिलते हुए नवीन कमल खण्ड की शोभा को (जलने) धारण किया था ।। २६ ।।

राजा तु तत्कालमुन्मीलद्बहलपुलकाङ्कुरकोरकितदेहः किमप्यद्भुतरसेनावेशित इव विधूय शिरश्चिन्तयाञ्चकार ।

सुधा—राजेति । राजा तु = नृपस्तु । तत्कालम् = तत्क्षणम् । उन्मीलद्बहल पुलकाङ्कुरकोरकितदेहः = विकसद् बहलपुलकरोमाञ्चितशरीरः किमपि = किञ्चिद् अद्भुतरसेन = विचित्ररसेन । आवेशित इव = आवेश युक्त इव । शिरः = उत्तमाङ्गम् । विधूय = चालयित्वा । चिन्तयाञ्चकार विचारयामास ।

हिन्दी—राजा ने तत्काल अत्यन्त पुलकायमान रोमाञ्चित शरीर होकर कुछ विचित्र रस से आवेश में आये हुए जैसे शिर हिला कर विचार किया ।

'नूनमयमस्मद्गृहे हरिहरब्रह्मणामन्यतमः कोऽप्यवतीर्णो भविष्यति । यतः क्वायं शिक्षाक्रमः, क्वेयमस्माकमाकस्मिकी यूनोऽस्याभिषेकाय बुद्धिः क्व चानुकूलकालसंपत्तिः, क्व चामी समस्ताभिषेकोपकरणपाणयो महामुनयः ।

सुधा—नूनमिति । नूनम् = अवश्यम् । अयम् = एषः । अस्मद् गृहे = मद्भवने हरिहरब्रह्मणाम् = हरिश्च हरश्च ब्रह्मा च = हरिहरब्रह्माणस्तेषाम् = विष्णुशिवविधातृणाम् । अन्यतमः = विशिष्टः । कः अपि = कश्चिद् । अवतीर्णः = गृहीतावतारः भविष्यति = स्यात् । यतः = यस्मात्कारणात् । क्व = कुत्र । अयम् = एषः । शिक्षाक्रमः = उपदेश क्रमः । क्व च । इयम् = एषा । अस्माकम् । आकस्मिकी = सहसोत्पन्ना । अस्य=एतस्य । यूनः = युवकस्य । अभिषेकाय = राजतिलकाय । बुद्धिः = विचारः । क्व च । अनुकूल काल सम्पत्तिः = अनुकूलमुहूर्त्तः । क्व च । अमी = एते समस्ताभिषेकोपकरणपाणयः–समस्तानि = निखिलानि अभिषेकाय = राजतिलकाय उपकरणानि = वस्तूनि पाणिषु = हस्तेषु येषां ते । महामुनयः = महर्षयः ।

हिन्दी—निश्चय ही यह हमारे घर में विष्णु-शिव एवं ब्रह्मा जैसे देवताओं से विशिष्ट कोई अवतारी होगा क्योंकि कहां यह उपदेश क्रम कहां यह हमारी आकस्मिक इस युवक की राज्याभिषेक के लिए बुद्धि, और कहां अनुकूल-मुहूर्त्त एवम् कहां यह समस्त राज्याभिषेक–सामग्री हाथों में लिए महर्षि ।

सर्वथा नमोऽस्तु घटितदुर्घटाय वेधसे। यस्यायमेवमद्भुतो व्यापारः, इत्यवधारयन्नुत्थाय गृहीत्वा तानि तीर्थोदकानि कृत्वा कनककुम्भेषु तात्कालिकास्फालितमृदङ्गझल्लरीरवरभसोल्लास्यविलासिनीवृन्दैरानन्द्यमानो मङ्गलोद्गारमुखरपरिवृतः सह सालङ्कायनेन 'सहस्रं समास्तात एवानुपालयतु राज्यम्' इत्यभिदधानमनिच्छन्तमपि नलं बलान्निवेश्याभिषेकमकरोत् ।

सुधा—सर्वथेति । सर्वथा = सर्वप्रकारेण । घटितदुर्घटाय—घटितम् = योजितम् दुर्घटम् = शिक्षाप्रक्रमादि लक्षणम् येन, तस्मै । वेधसे = ब्रह्मणे । नमः अस्तु = = प्रणामः । यस्य = यस्य वेधसः । अयमेव = एष एव । अद्भुतः = विचित्रः व्यापारः= कार्यक्रमः । इति = इत्थम् अवधारयन्=निश्चयन्, उत्थाय तानि = एतानि । तीर्थोदकानि= तीर्थानामुदकानि = तीर्थजलानि । गृहीत्वा = अधिगृह्य । कनककुम्भेषु = स्वर्णघटेषु । कृत्वा = विधाय । तात्कालिकास्फालितमृदङ्गझल्लरीरवरभसोल्लास्यविलासिनीवृन्दैः तात्कालिके = तत्क्षणे आस्फालिते = स्फुटिते मृदङ्गझल्लरीरवे = मृदङ्गझल्लरीवाद्यध्वनौ रभसा = वेगेन उल्लास्यानि = उत्कृष्टनृत्ययुक्तानि विलासिनीवृन्दानि = वाराङ्गनायूथानि; तैः । आनन्द्यमानः = आनन्दानुभवन् । मङ्गलोद्गारमुखरपरिवृतः = मङ्गलोच्चारशब्दपरिवृतः नृपः सालङ्कयनेन, सह = तन्नाममन्त्रिणा सह । "तात = वत्स ! सहस्रंसमा एव = सहस्रवर्षाणि यावदेव । राज्यम् = राज्यभारम् पालयतु = अवतु ।।" इति = एवम् । अभिदधानम् = धारयन्तम् । अनिच्छन्तम् = अनभिलषन्तम् अपि । नलम् = नलाख्यं राजपुत्रम् । बलात् = हठात् । अभिषेकपदे = अभिषेकस्थले । निवेश्य=स्थाप्य । स्वयमेव = आत्मनैव । अभिषेकम् = राजतिलकम् । अकरोत् = चकार ।

हिन्दी—'सर्वप्रकार असम्भव को भी सम्भव कर देने वाले विधाता के लिए प्रणाम है जिसका यह ऐसा अद्भुत कार्य है ।" यह सोचता हुआ हुआ उठकर उस तीर्थ जल को लेकर तथा कनककुम्भों पर तात्कालिक उठने वाले मृदङ्ग झांझ बाद्यों की ध्वनि

से वेग से उत्कृष्ट लास्य करती हुई वाराङ्गनाओं के समूहं के द्वारा आनन्द का अनुभव करते हुए माङ्गलिक शब्दोच्चार करने वाले पुरुषों से घिरे हुए राजा ने सालङ्कायन मन्त्री के साथ—'हे वत्स ! हजारों वर्षों तक राज्य का पालन करो।' यह कहते हुए अनिच्छा होने पर भी नल को बलात अभिषेक पट्ट पर बिठला कर स्वयम् एवं (नृप ने) राजतिलक किया।

परिधाप्य च मङ्गलाभरणवाससी सिंहासनमारोप्य पुत्रप्रेम्णा पुरः स्थित्वा कनकदण्डपाणिः क्षणं प्रातिहार्यमन्वतिष्ठत्।

सुधा—परिधाप्येति। च = तथा मङ्गलाभरणवाससी–मङ्गलम् = माङ्गलिकम् आभरणम = अलङ्करणम् वासश्च = वस्त्रञ्च ते। परिधाप्य = धारणं कारयित्वा। सिंहासनम् = राज्यासनम्। आरोप्य = स्थाप्य। पुत्रप्रेम्णा = सुतस्नेहेन। पुरः = सम्मुखम्। स्थित्वा = अवस्थाय। कनकदण्डपाणिः–कनकस्य दण्डम् = स्वर्णदण्डम् पाणौ = करे यस्य सः। क्षणम् = मुहूर्त्तम्। प्रातिहारीम् = प्रहितारीकार्यम्। अन्वतिष्ठत = सम्पादयामास।

हिन्दी—माङ्गलिक आभूषण तथा वस्त्र पहना कर सिंहासन पर बिठला कर पुत्र प्रेम से सामने खड़े होकर स्वयम् स्वर्णदण्ड हाथ में लिए हुए (राजा ने) क्षण भर के लिए प्रतिहारी का कार्य-सम्पादन किया।

सालङ्कायनोऽप्यतिस्नेहेनास्योपरि लम्बितमुक्ताकलापमास्रवत्सुधाधारमिन्दु-मण्डलमिव कनकदण्डमापाण्डुरमातपत्रमधारयत्।

सुधा—सालङ्कायन इति। सालङ्कायनः अपि = तन्नाम सचिवोऽपि। अतिस्नेहेन = अतिप्रेम्णा। अस्य = नलस्य उपरि। लम्बितमुक्ताकलापम् = खचितमुक्तासमूहम्। आस्रवत्सुधाधारम् = वर्षदमृतधारम्। इन्दुमण्डलम् इव = चन्द्रमण्डलम् इव। कनकदण्डम्—कनकस्य = स्वर्णस्य दण्डं यस्य तत्। आपाण्डुरम् = पाण्डवर्णम्। आतपत्रम्–आतपात् = घर्मात् त्रायत इति = छत्रम्। अधारयत् = धृतवान्।

हिन्दी—सालङ्कायन अतिस्नेह से इसके ऊपर (मन्त्री) ने भी मुक्तासमूह जटित, सुधाधार वर्षानेवाले इन्दु मण्डल के समान स्वर्ण दण्ड वाले पाण्डुवर्ण के छत्र को धारण कर लिया।

सामन्तचक्रं च चलच्चामीकरचारुचामरकलापव्यापृतकरपल्लवमस्याग्रे विनयमदर्शयत्।

सुधा—सामन्तेति। च। चलच्चामीकरचारुचामरकलापव्यापृतकरपल्लवम्–चलता = चञ्चलेन चामीकरेण = चमत्कृतेन चारुणा = रम्येण चामरकलापेन = चामरसमूहेन व्यापृतानि करपल्लवानि = हस्तपल्लवानि यस्य तत्। सामन्तचक्रम् सामन्तवर्गम्। अस्य = एतस्य। अग्रे = सम्मुखम्। विनयम् = नम्रताम् अदर्शयत् = दर्शयाञ्चकार।

हिन्दी—चञ्चल चमचमाते हुए सुन्दर चामर समूह से युक्त कर पल्लवों वाले सामन्त वर्ग ने इसके समक्ष विनय प्रदर्शित की।

मुनयोऽप्युच्चारयांचक्रुश्चतुर्वेदप्रशस्तमन्त्रान् । उत्थाय च गृहीत्वाक्षताञ्शिरसि विकिरन्तोऽस्य पुनरिदमवोचन् ।

सुधा—मुनय इति । मुनयः = महर्षयः अपि । चतुर्वेदप्रशस्तमन्त्रान्—चतुर्षु वेदेषु= चतुःसंख्यकेषु ऋगादिवेदेषु प्रशस्तान् = प्रख्यातान् मन्त्रान् । उच्चारयाञ्चक्रुः = उच्चारयामासुः । च उत्थाय = उत्थितो भूत्वा । अक्षतान् = तण्डुलान् गृहीत्वा = आगृह्य । अस्य = एतस्य । शिरसि = मूर्ध्नि विकिरन्तः । पुनः = भूयः । इदम् = एतत् । अवोचन् = अकथयन् ।

हिन्दी—मुनियों ने भी ऋग् आदि चारों वेदों में प्रसिद्ध मन्त्रों का उच्चारण किया तथा उठकर, अक्षत लेकर इनके शिर पर छिड़कते हुए कहा—

> **'याः स्कन्दस्य जगाद तारकजये देवः स्वयंभूः स्वयं**
> **स्वःसाम्राज्यमहोत्सवेऽपि च शचीकान्तस्य वाचस्पतिः ।**
> **ताभिस्तेऽद्य विरञ्चिवक्त्रसरसीहंसीभिराशास्महे**
> **वैदीभिर्वसुधाविवाहसमये मन्त्रोक्तिभिर्मङ्गलम् ॥ २७ ॥**

अन्वयः—तारकजये देवः स्वयंभूः स्वयम् स्कन्दस्य, स्वःसाम्राज्यमहोत्सवे अपि च वाचस्पतिः शचीकान्तस्य स्वयम् याः जगाद अद्य ते वसुधा विवाहसमये विरञ्चिवक्त्र सरसीहंसीभिः ताभिः वैदीभिः मन्त्रोक्तिभिः मङ्गलम् आशास्महे ॥ २७ ॥

सुधा—या इति । तारकजये = तारकासुरविजयावसरे । देवः = सुरः स्वयंभूः = ब्रह्मा स्कन्दस्य = स्वामिकार्तिकेयस्य । स्वः साम्राज्यमहोत्सवे = स्वर्गसाम्राज्यप्राप्त्युत्सवे अपि च वाचस्पतिः = बृहस्पतिः । शचीकान्तस्य—शच्याः = इन्द्राण्याः कान्तः = पतिर्यस्तस्य = पाकशासनस्य । स्वयम् । याः = मन्त्रोक्तयः जगाद = कथयामास । अद्य = अस्मिन् दिने । ते=तव । वसुधाविवाहसमये=भूविवाहावसरे । विरञ्चिवक्त्रसरसीहंसीभिः—विरञ्चेः = ब्रह्मणः वक्त्रम् मुखम् एव सरसी = सरोवरम्, तस्यां याः हंस्यस्ताभिः । ताभिः = एताभिः वैदीभिः = वैदिकीभिः मन्त्रोक्तिभिः = मन्त्राशीर्भिर्मंगलम् । आशास्महे = कामयामहे । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ २७ ॥

हिन्दी—तारकासुर को जीतने के अवसर पर ब्रह्माजी ने स्कन्द को और स्वर्ण साम्राज्य प्राप्ति के महोत्सव में बृहस्पति ने भी शचीपति इन्द्र को जो मंत्रोक्तियों का उच्चार किया था, आज तुम्हारे वसुधा विवाह (पृथ्वी के पालन रूप वोक्ष को अंगीकार कर लेने) के अवसर पर ब्रह्माजी के मुखरूपी सरोवर में हंसियों के समान उन्हीं वैदिक मन्त्रोक्तियों से हम मङ्गल कामना कर रहे हैं ॥ २७ ॥

अन्यदपि तत्र दिवसे सुभ्रु समाकर्ण्यतां यदद्भुतमभूत् ।

सुधा—अन्यदिति । सुभ्रु—शोभनौ भ्रुवौ यस्य तत्सम्बुद्धौ । तत्र दिवसे = तस्मिन् दिने । अन्यद् अपि = अपरमपि ! यदद्भुतम् = यद्विचित्रम् । अभूत् = अभवत् । समाकर्ण्यताम् = श्रुणुताम् !

हिन्दी—हे सुभ्रु ! उस दिन और भी जो अद्भुत बात हुई (सो) सुनो ।

दिशः प्रसेदुः सुरभिर्ववौ मरुद्दिवो निपेतुः सुरपुष्पवृष्टयः।
कृताभिषेकस्य नलस्य निःस्वनारनाहता दुन्दुभयोऽपि चक्रिरे ॥ २८ ॥

अन्वयः—कृताभिषेकस्य नलस्य दिशः प्रसेदुः, सुरभिः मरुत् ववौ दिवः सुरपुष्पवृष्टयः निपेतुः, निःस्वनारनाहताः दुन्दुभयः अपि चक्रिरे ॥ २८ ॥

सुधा—दिश इति। कृताभिषेकस्य–कृतः = विहितः अभिषेकः = राजतिलकम्। यस्य तस्य नलस्य = नलनृपस्य। दिशः = आशाः प्रसेदुः = प्रसन्नाः बभूवुः। सुरभिः = सुगन्धिः मरुद् = वायुः ववौ = चचाल। दिवः = स्वर्गात् सुरपुष्पवृष्टयः = देवकुसुमवर्षाः। निपेतुः = अपतन्। निःस्वनाः = ध्वनिरहिताः निःशब्दा वा अनाहताश्च = अताडिताश्च। दुन्दुभयः अपि चक्रिरे = अकुर्वन्। वंशस्थवृत्तम् ॥ २८ ॥

हिन्दी—नल के राज्याभिषेक होने पर दिशाएँ प्रसन्न हो गईं, सुगन्धित वायु चलने लगी, आकाश से देवताओं के द्वारा फूलों की वर्षा की गई तथा विना बजाई दुन्दुभियाँ ध्वनि करने लगीं (वज उठीं) ॥ २८ ॥

अन्तरिक्षे च कोऽप्यदृश्यमान एवाशीःश्लोकद्वयमपठत्।

सुधा—अन्तरिक्षे इति। अन्तरिक्षे = आकाशे च। कः अपि = कश्चिज्जनः अदृश्यमानः एव = अगोचरः एव। आशीः श्लोकद्वयम् = आशीर्वादात्मकौ द्विसंख्यश्लोकौ। अपठत् = पपाठ।

हिन्दी—अन्तरिक्ष में किसी अदृश्य ने दो श्लोक पढ़े।

'अहीनां मालिकां बिभ्रत्तथापीताम्बरं वपुः।
हरो हरिश्च भूपेन्द्र! करोतु तव मङ्गलम् ॥ २९ ॥

अन्वयः—भूपेन्द्र! अहीनाम् मालिकाम् बिभ्रत् तथा पीताम्बरम् वपुः हरः हरिः च तव मङ्गलम् करोतु ॥ २९ ॥

सुधा—अहीनामिति। भूपेन्द्र = हे नृपेन्द्र! अहीनाम् = सर्पाणाम् मालिकाम् मालाम् बिभ्रत् = धारयन् तथापि = पुनश्च इतराम्बरम्–इतरम् = गतम् अम्बरम्=वस्त्रम् यस्मात् तथा वपुः = शरीरम् यस्य सः। हरः = शिवः। च = तथा अहीनाम् = द्युतिमतीम् मा = लक्ष्मी सा चासावलिका = अलिभिर्युक्ता, ताम् बिभ्रन् = रक्षन्, तथा पीताम्बरम्—पीतम् = पीतवर्णम् अम्बरम् = वस्त्रम् यस्य तथा वपुः = शरीरं यस्य सः। हरिः=विष्णुः तव = ते मङ्गलम् = कल्याणम् विदधातु = करोतु।

हिन्दी—हे भूपेन्द्र! नागों की माला पहनने वाले तथा दिगम्बर शिवजी एवम् द्युतिमती सखियों से युक्त लक्ष्मी को धारण करते हुए पीताम्बर शरीर वाले विष्णु भगवान् तुम्हारा कल्याण करें ॥ २९ ॥

अपि च—

लीलया मण्डलीकृत्य भुजंगान्धारयन्हरः।
देयाद्देवो वराहश्च तुभ्यमभ्यधिकां श्रियम् ॥ ३० ॥

अन्वयः—लीलया भुजङ्गान् मण्डलीकृत्य धारयन् हरः, देवः वराहः च तुभ्यम् अभ्यधिकाम् श्रियम् देयात् ॥ ३० ॥

सुधा—लीलयेति । लीलया = क्रीडया । भुजङ्गान् = सर्पान् मण्डलीकृत्य = वर्तुलीकृत्य धारयन् = बिभ्रन् हरः = शिवः च = तथा । भुजम् = बाहुम् । मण्डलीकृत्य = वर्तुलीकृत्य । गाम् = भूमिम् धारयन् = बिभ्रन् । देवः वराहः = वराहरूपो भगवान् ! तुभ्यम् = ते । अपि = अभितः अधिकाम् = विपुलाम् । श्रियम् = लक्ष्मीम् सम्पदां वा देयात्–दद्यात् ॥ ३० ॥

हिन्दी—खेल-खेल में (बिना परिश्रम के) सर्पों को गोलाकार बनाकर पहनते हुए शिवजी तथा बाहु को गोलाकार कर पृथ्वी को धारण किये हुये वराहरूपी भगवान् विष्णु चारो ओर से तुम्हारे लिए विपुल सम्पदा प्रदान करें ॥ ३० ॥

इत्याशास्य विश्रान्तायां वियद्वाचि स्थित्वा च किंचित्कृतोचितापचितिषु गतेषु क्षणादन्तर्धानं मुनिषु 'समुच्छ्रीयन्तां वैजयन्त्यः, बध्यन्तां तोरणानि, सिच्यन्तां चन्दनाम्भोभिः पन्थानः, मण्ड्यन्तां मसृणमुक्ताफलक्षोदरङ्गावलीभिः प्राङ्गणानि, कुसुमप्रभाञ्जि चत्वराणि, पूज्यन्तां द्विजन्मानो देवताश्च, दीयन्तां दानानि, गीयन्तां मङ्गलानि, विसृज्यन्तां वैरिवन्द्यः, मुच्यन्तां पक्षिणोऽपि पञ्जरेभ्यः' इति श्रूयमाणेषु परितः परिजनालापेषु लास्योन्मादिनि मृदुमङ्गलोद्गारमुखरे संचरति पुरपथेषु पौरनारीजने स दिवसः संप्राप्तस्वर्गसुखस्येव भुक्ताशेषभुवनस्येवास्वादितामृतरसस्येवानुभूतपरमानन्दस्येव राज्ञः कृतकृत्यतां मन्यमानस्यातिक्रान्तवान् ।

सुधा—इत्याशास्येति । इति = इत्थम् । आशास्य = आशीर्वादं दत्वा । वियद्वचसि = आकाशवाण्याम् । विश्रान्तायाम् = समाप्तायाम् । स्थित्वा च = अवस्थाय च । किञ्चित्कृतोचितापचितिषु–किञ्चित् = किमपि । कृता = विहिता उचिता=उपयुक्ता अपचितिः= पूजनम् येषां तेषु । मुनिषु = महर्षिषु । क्षणात् = मुहूर्तम् । अन्तर्दधानम् = अन्तर्ध्यानम् गतेषु = प्रस्थितेषु । वैजयन्त्यः = पताकाः । समुच्छ्रीयन्ताम् = उद्धूयताम् तोरणानि = तोरणचिह्नानि । बध्यन्ताम् = स्थिरीक्रियन्ताम् । चन्दनाम्भोभिः चन्दनजलैः । पन्थानः= मार्गाणि । सिच्यन्ताम् = आर्द्रीक्रियन्ताम् । मसृणमुक्ताफलक्षोदरङ्गावलीभिः = मुक्तामणिपिष्टरङ्गपंक्तिभिः । प्राङ्गणानि = अजिराणि । मण्डयन्ताम् = सज्जीक्रियन्ताम् । कुसुमप्रभाञ्जि = पुष्पकान्तियुक्तानि चत्वराणि=चतुष्पथानि (अपि) मण्डयन्ताम् द्विजन्मानः= ब्राह्मणाः, देवताः = सुराश्च । पूज्यन्ताम् = अर्च्यन्ताम् । दानानि दीयन्ताम=वितरन्ताम् । मङ्गलानि = मङ्गलगीतानि । गीयन्ताम् । वैरिवन्द्यः=वन्दीकृताः शत्रवः । विसृज्यन्ताम्= निर्बन्धाः क्रियन्ताम् । पक्षिणः अपि = खगाः अपि । पञ्जरेभ्यः = मुच्यन्ताम् = त्यजन्ताम् । इति = एवम् । परितः = अभितः । परिजनालापेषु = सेवकालापेषु । श्रूयमाणेषु = आकर्ण्यमानेषु । लास्योन्मादिनि=नृत्योन्मादिनि । मृदुमङ्गलोद्गारमुखरे–मधुरमङ्गलोच्चारमुखरे पौरनारीजने=नागररमणीजने । पुरपथेषु = नगरवर्त्मसु । संचरति = सञ्चरणं कुर्वति सति । सः = असौ नलः । सम्प्राप्तस्वर्गसुखस्य इव–सम्प्राप्तम् = समधि-

गतम् स्वर्गसुखम् = स्वर्गानन्दम् येन तस्य इव। भुक्ताशेषभुवनस्य इव = भुक्तम् अशेषम् = सम्पूर्णम् भुवनम् विश्वम् येन तस्य सदृशम्। आस्वादितामृतरसस्य इव–आस्वादिता अमृतरसः = सुधारसः येन तस्येव। अनुभूतपरमानन्दस्येव अनुभूतं परमानन्दम् = परम-सुखम् येन तस्येव। राज्ञः = नृपस्य कृतकृत्यताम् = धन्यताम्। मन्यमानस्य = स्वीकुर्वाणस्य। अतिक्रान्तवान् व्यतीतवान्।

हिन्दी—इस प्रकार आशीर्वाद देकर आकाशवाणी चुप हो जाने पर, ठहर कर कुछ उचित ढंग से पूजा किये जाने के पश्चात् क्षण भर में उन मुनियों के अन्तर्ध्यान हो जाने पर "वैजयन्तियां फहराई जायें, तोरण वन्दनवार बांधी जायें, चन्दन जल से पथ छिड़क दिये जायें, सुन्दर मुक्ताफल चूर्ण के विविध रंगों से आंगन मण्डित किये जायें तथा चौराहों को फूलों से शोभित किया जाय, देवताओं तथा ब्राह्मणों को पूजा जाये, दान दिये जायें, मङ्गलगीत गाये जायँ कैद किये गये शत्रु छोड़ दिये जायँ, पक्षियों को पिंजड़ों से मुक्त कर दिया जाय" इस प्रकार चारों ओर परिजनों द्वारा किये गये वार्तालाप सुनाई पड़ने लगे, नृत्योन्माद में मधुर मङ्गलमय शब्दों से मुखरित नगर सुन्दरियाँ नगरपथों पर निकल पड़ीं। वह दिन मानो स्वर्ग सुख प्राप्त किए हुए, सम्पूर्ण भुवनों का भोग किये हुए, अमृतरस का आस्वादन लिए हुए तथा परमानन्द का अनुभव प्राप्त किये हुए जैसे कृतकृत्य मानते हुए राजा का व्यतीत हुआ।

एवमतिक्रामत्सु केषुचिद्दिवसेषु, जरठीभूते महोत्सवव्यतिकरे, गतवति यथा-यथमामन्त्रितायाते समस्तसामन्तलोके, यौवराज्यरञ्जिते च परितः परिजने जनेश्वरो रिपुपयोधिवडवानलं नलमाबभाषे।

सुधा—एवमिति। एवम् = इत्थम्। केचिद् दिवसेषु = कतिपयदिनेषु अतिक्रामत्सु = गच्छत्सु। महोत्सवव्यतिकरे = महोत्सवसमारोहे जरठीभूते = जरठीसञ्जाते। यथा-यथम् = यथास्थानम्। आमन्त्रितायाते = आहूतागते। समस्तसामन्तलोके = निखिल-सामन्तमण्डले। गतवति प्रयाते सति। च = तथा। परितः = अभितः। यौवराज्य-रञ्जिते = यौवराज्यानुरक्ते। परिजने = प्रजाजने। जनेश्वरः = नृपः। रिपुपयोधि-वडवानलम्–रिपुः = शत्रुरेव पयोधिः = सागरः, तस्मै वडवानलः—वडवाग्निसदृशस्तम्। नलम् = राजकुमारं नलम्। आबभाषे = अकथयत्।

हिन्दी—इस प्रकार कुछ दिन व्यतीत हो जानेपर, महोत्सव की चहल-पहल पुरानी पड़ जानेपर तथा आमन्त्रित आये हुए समस्त सामन्त मण्डल के यथास्थान चले जानेपर, और चारों ओर प्रजाजन के यौवराज्य में अनुरक्त हो जानेपर राजा ने शत्रु-सागर के लिए बडवानल के समान (राजकुमार) नल से कहा।

'तात-किमपि ब्रूमो यदि न खिद्यसे। संप्रति प्रियं सख्यं श्रेयस्करमस्माक-मैणम्, न स्त्रैणम्। आभरणाय योग्या जटाभाराः, न हाराः। साहाय्याय साधवो बुधाः, न बान्धवाः। शयनायोचिता कुशपूलिका, न तूलिका। क्रीडायै वरा वेगवन्तो निर्झरप्रवाहाः न वाहाः। प्रार्थनीयाश्च हरप्रसादा न प्रासादाः।

सुधा—तात इति। तात = वत्स ! यदि न खिद्यसे = यदि त्वम् खेदं न करोषि तर्हि। किमपि = किञ्चिदपि (वयम्) ब्रूमः = कथयामः। सम्प्रति = अधुना। अस्माकम् प्रियम् = रुचिरम् सख्यम् = मित्रत्वम्। श्रेयस्करम् = कल्याणकरम् एणम् = मृगवर्गमेव, स्त्रैणम्—स्त्रीणामिदं स्त्रैणम् तु न श्रेयस्करम्। आभरणाय = अलङ्करणाय योग्याः = उपयुक्ताः जटाभराः = सटाभाराः सन्ति, हाराः = मालास्तु न सन्ति। साहाय्याः = सहायता करणीयाः साधवः सत्पुरुषाः। बुधाः = विद्वांसः सन्ति, बान्धवाः=बन्धुजनास्तु न सन्ति। शयनोचिता = शयनयोग्या, कुशपूलिका=दर्भपूलिका न तु तूलिका। क्रीडायै= क्रीडाकरणाय। वराः श्रेष्ठाः। वेगवन्तः = द्रुतं वहन्तः निर्झरप्रवाहाः = स्रोतः प्रवाहाः सन्ति, वाहाः = अश्वादयः न सन्ति च। हरप्रसादाः = शिवकृपाः। प्रार्थनीयाः = प्रार्थनायोग्याः न च प्रासादाः = राजभवनानि प्रार्थनीया, सन्ति।

हिन्दी—हे वत्स ! यदि खेद न होतो हम कुछ कहें। इस समय मृगवर्ग से ही मित्रता करना श्रेयस्कर है, स्त्रियों से नहीं, अलङ्करण के लिए योग्य जटाभार ही है, हार नहीं, सहायता करने योग्य साधु, विद्वान् ही हैं, बान्धव नहीं। शयन योग्य कुशों के पूले ही हैं तूलिका (गद्दे) नहीं। खेल के लिए श्रेष्ठ वेगवान् झरनों के प्रवाह ही हैं घोड़े हाथी आदि वाहन नहीं, तथा भगवान् शिव की कृपा ही प्रार्थनीय है, महल नहीं।

तदायुष्मन्नेष दृष्टोऽस्यापृष्टोऽस्याश्लिष्टोऽसि क्षमितोऽसि दुरुक्तमुक्तः इत्यभिधायोत्सङ्गमारोप्य च तत्कालगलद्बहलबाष्पाम्बुप्लाविते वक्षसि निधाय परिष्वज्य च पुनः पुनः पुलककोरकितभुजलताभ्यामन्तर्मन्युभरनिरुध्यमानोत्तरमजस्रमास्रवदश्रुक्लिन्नकपोलमाविर्भवन्मोह मूर्छान्धकारकुञ्चितलोचनमिममाघ्राय मूर्धनि वनाय वनितासहायः प्रतस्थे।

सुधा—तदिति। आयुष्मन् ! = हे चिरजीविन् ! तत् = अतः। एषः = अयम्। दृष्टः = अवलोकितः। अस्य=एतस्य। आपृष्टः = आकथितः अस्य = एतस्य। आश्लिष्टः= आलिङ्गितः। क्षमितः = क्षमाकृतः असि। दुरुक्तम् = दुर्भणितम्। उक्तः = कथितः असि। इति = एवम्। अभिधाय = उक्त्वा। उत्सङ्गम्=अङ्कम्। आरोप्य च = अभिधाय च। तत्कालगलद्बहलबाष्पाम्बुप्लाविते—तत्कालम् = तत्क्षणम्। गलता = स्रवता बहलेन = अतिशयेन बाष्पाम्बुना = अश्रुजलेन यत् प्लावितम् तादृशि। वक्षसि = वक्षःस्थले। निधाय = धारयित्वा। परिष्वज्य = आलिङ्ग्य च। पुनः पुनः = वारं वारम्। पुलककोरकितभुजलताभ्याम्–पुलकेन = हर्षेण कोरकितम् = रोमाञ्चितम्। पुलकरोमाञ्चिते भुजलते = बाहुलते, ताभ्याम्। अन्तः मन्युभरनिरुध्यमानोत्तरम्—अन्तः = आन्तरिकम् यन् मन्युभरः = क्रोधम्, तेन निरुध्यमानम् = अवरुध्यमानम् उत्तरम्=कथनम् यस्य तम्। अजस्रम् = निरन्तरम् आस्रवदश्रुक्लिन्नकपोलम्—आस्रवद्भिः = आस्खलद्भिः अश्रुभिः = लोचनवारिभिः क्लिन्ने = आर्द्रे कपोले = गण्डस्थले यस्य तम्। आविर्भवन्मोहमूर्च्छान्धकारकुञ्चितलोचनम्–आविर्भवता = प्रकटता यत् मोहम् जाड्यम् तेन मूर्च्छारूपेण यदन्धकारम् तेन कुञ्चिते = मीलिते लोचने = नयने यस्य तम्। इमम् = एतम् सुतम् मूर्ध्नि =

शिरसि । आघ्राय = आघ्राणम् विधाय । वनितासहायः—सपत्नीकः । वनाय = काननाय प्रतस्थे = चचाल ।

हिन्दी—अतः हे आयुष्मन् ! तुम्हें देखा, पूछा, आलिङ्गन किया, क्षमा किया तथा दुर्वचनों को भी कहा, यह कहकर और गोद में बिठला कर, तत्काल बहते हुए अत्यधिक अश्रुजल से भीगे हुए वक्षःस्थल पर रखकर और आलिङ्गन कर पुनः पुनः रोमाञ्च के कारण दोनों भुजलताओं से आन्तरिक क्रोध के कारण उत्तर न देते हुए अश्रुजल से गीले बने हुए गालों वाले प्रकट होते हुए मोह के कारण बने हुए मूर्च्छा रूपी अन्धकार से नेत्रों को बन्द किये हुए इन नल के शिर को सूंघकर पत्नी सहित राजा वन के लिए चल दिए ।

प्रस्थिते च तस्मिन्परिहृतराज्ये राजनि, रजनीवियुज्यमानचलच्चक्रवाकीष्विव कृतकरुणाक्रन्दासु प्रजासु, प्रतिभवनमुच्चलितेषु जरत्पौरजनेषु, 'कल्याणिन् एष पितृप्रणयप्रणामाञ्जलिरस्य क्रमागतकर्मकारिणः श्रुतशीलस्य कृतापराधस्यापि त्वया सहनीयाः कतिपयेऽप्यस्मदनुकम्पयाऽपराधाः । पश्य । पयोराशेर्नोद्वेगाय मृगाङ्कस्य मीलयन्तोऽपि कमलाकरान्कराः । किं न सहन्ते सुमनसोऽपि भ्रमरभरभञ्जनानि' इत्यभिधाय समर्प्य च स्वसुतमुच्चलिते च प्रेम्णानुगतभूभुजि भुजायामनिर्जितसाले सालङ्कायने, बालमत्स्य इव शुष्यत्सरःसलिलसंतापवेपिताङ्गः, करिकलभ इव वियुज्यमानयूथपतिः पतद्बहलबाष्पबिन्दुसंदोहैर्वक्षसि विधीयमानहारः 'हा तात' इति ब्रुवन्नलो न लोचने तं दिवसं समुदमीलयत् ।

सुधा—प्रस्थित इति । च = तथा परिहृतराज्ये—परिहृतम् = परित्यक्तम् राज्यम् = राज्यभारम् येन तादृशि । तस्मिन् = एतस्मिन् । राजनि = नृपे प्रस्थिते = गते सति । रजनीवियुज्यमानचलच्चक्रवाकीषु इव रजन्याम्=निशायाम् (पत्या चक्रवाकेण) वियुज्यमानाः = वियुक्ताः या चलच्चक्रवाक्यः = चञ्चलचक्रवाकीपक्षिण्यः, तास्विव । कृतकरुणाक्रन्दासु—कृतम् = विहितम् करुणम् आक्रन्दनम् = चीत्कारम् याभिस्तासु प्रजासु = जनतासु । जरत्पौरजनेषु = जठरनागरिकजनेषु । प्रतिभवनम्=भवनं भवनम् । उच्चलितेषु= प्रस्थितेषु । कल्याणिन् = श्रेयस्कर ! क्रमागतकर्मकारिणः—क्रमागतम् = परम्परानुसारम् कर्म करोतीति तस्य । अस्य = एतस्य मम नलाख्यस्य । एषः = अयम् । पितृ-प्रणय प्रणामाञ्जलिः पितुः = जनकस्य प्रणयः = प्रेम, तेन प्रणामाञ्जलिः = नमस्कृतिः । श्रुतशीलस्य = श्रुतं शीलं यस्य, तस्य = वेदाद्यधीतस्य । कृतापराधस्य अपराधिनः अपि । कतिपये = केऽपि । अपराधाः = अपराधव्यवहाराः अस्मदनुकम्पया = मयि कृपया त्वया = भवता सहनीयाः = सह्या एव । पश्य = अवलोकय । मृगाङ्कस्य=चन्द्रस्य कराः= रश्मयः । कमलाकरान् = पद्मसमूहान् मीलयन्तः = मुकुलयन्तः अपि पयोराशेः = सागरस्य उद्वेगाय = उद्वेलनाय न (किम् ?) सुमनसः = पुष्पाणि अपि । भ्रमरभरभञ्जनानि = अलिभारमर्दनानि किम् न सहन्ते, अपितु सहन्त एव । इति = एवम् । अभिधाय = कथयित्वा च = तथा स्वसुतम् स्वात्मजम् समर्प्य = समर्पणं कृत्वा । च । प्रेम्णा = स्नेहेन अनुगतभूभुजि = अनुगतराजनि । भुजायाम् = बाहौ अनिर्जितसाले = अपराजेये सालङ्का-

यने = सालङ्कायनमन्त्रिणि । उच्चलिते=उद्गते । बालमत्स्य इव = क्षुद्रमीन इव । शुष्यत्सरः सलिलसन्तापवेपिताङ्गः—शुष्यतः = शोषं गच्छतः सरसः = तडागस्य यत् सलिलम् तस्य सन्तापेन = वियोगदुःखेन वेपितम् = कम्पितम् अङ्गम् = शरीरावयवम् यस्य सः । वियुज्यमानयूथपतिः = वियुज्यमानः = पृथक् कृतः यूथपतिना यूथाधिपेन यस्तथा । करिकलभः इव = गजशावकसदृशः । वक्षसि = वक्षःस्थले । पतद्वहलवाष्पविन्दुसन्दोहैः—पतद्भिः = स्खलद्भिः वहलैः = अधिकैः बाष्पविन्दुसन्दोहैः । = अश्रुकणसमूहैः । विधीयमानहारः = विधीयमानः = क्रियमाणः हारः = स्रक् येन तथा । नलः = नलाभिधः राजपुत्रः हा तात = हा पितः । इति = एवम् = ब्रुवन् = प्रलपन् । तम् दिवसम् = तद्दिनम् लोचने = नयने । न समुदमीलयत् = उन्मीलनं न चकार ।

हिन्दी—राज्य छोड़कर उस राजा के चले जाने पर जिस प्रकार रात्रि में पति से बिछुड़ने पर चञ्चल चकई पक्षी दुःखी होती है उसी प्रकार प्रजा करुण क्रन्दन करने लगी नगर के वृद्धजन अपने-अपने भवनों का चले गये । हे कल्याणवर ! यह परम्परागत कार्य करने वा, श्रुति शील इस (मुझ) व्यक्ति की पितृ प्रेम से प्रणामाञ्जलि है । इस (मेरे) के अपराध करने पर भी तुम्हें कृपाकर कुछ अपराध क्षमा (सहन) कर लेने चाहिए । देखो—मृगाङ्क (चन्द्रमा) की किरणें कमल-समूह को मुकुलित करती हुई भी समुद्र को क्या तरङ्गित नहीं करती हैं ? क्या सुमन भौरों के भार तथा छेदन को सहन नहीं करते हैं ? यह कहकर और अपने पुत्र को (मन्त्रियों आदि को) सौंपकर प्रेम से अपराजेय मन्त्री सालङ्कायन के राजा के पीछे-पीछे चले जाने पर जिस प्रकार तालाब सूखने पर जल के सन्ताप से मछली का बच्चा कांपने लगता है, उसी प्रकार कांपते हुए, यूथपति से वियुक्त हाथी के बच्चे के समान, वक्षःस्थल पर गिरते हुए अश्रु विन्दुओं के समूह से हार सा बनाये हुये (वक्षःस्थल आसुओं से भिगोये हुए) नल—हा तात ! यह कहते हुए उस दिन आंखे नहीं खोल सके ।

केवलममन्दमन्यूद्गारगद्गदयागिरा पुनः पुनरिमं श्लोकमपठत् ।

सुधा—केवलमिति । केवलम् = मात्रम् । अमन्दमन्यूद्गारगद्गदया—अमन्देन = पर्याप्तेन मन्यूद्गारेण = क्रोधोत्साहेन या गद्गदा = पुलकिता तादृश्या गिरा = वाण्या । पुनः पुनः = भूयोभूयः । इमम् = एतम् । श्लोकम् अपठत् = पपाठ ।

हिन्दी—केवल पर्याप्त क्रोधोद्गार से बार-बार यह श्लोक पढ़ा—

तत्तातस्य कृतादरस्य रभसादाह्वाननं दूरत-
स्तच्चाङ्के विनिवेश्यं बाहुयुगलेनाश्लिष्य संभाषणम् ।
ताम्बूलं च तदर्धचर्वितमतिप्रेम्णा मुखेनार्पितं
पाषाणोपम हा कृतघ्न हृदय स्मृत्वा न किं दीर्यसे ।। ३१ ।।

अन्वयः—कृतादरस्य तातस्य तत् दूरतः रभसात् आह्वाननम्, च अङ्के निवेश्य बाहुयुगलेन आश्लिष्य तत् सम्भाषणम् च तत् अर्धचर्बितम् ताम्बूलम् अतिप्रेम्णा मुखेन अर्पितम् स्मृत्वा हा पाषाणोपमकृतघ्नहृदय ! किम् न दीर्यसे ।। ३१ ।।

सुधा—सदिति । कृतादरस्य—कृतमादरं येन तस्य=कृतसम्मानस्य । तातस्य= पितुः । तत्=उक्तविधम् दूरतः=दूरात् । रभसात्=द्रुतम् । आह्वाननम् आगमनाय कथनम् । च=तथा । अङ्के=उत्सङ्गे । विनिवेश्य=संस्थाप्य बाहुयुगलेन=भुजयुग्मेन । आश्लिष्य=आलिंग्य । तत्=तथा । सम्भाषणम्=आलपनम् । च=तथा । अर्द्धचर्वितम्=अपूर्णस्वादितम् ताम्बूलम्=ताम्बूलपत्रम् । अतिप्रेम्णा=बहुस्नेहेन । मुखेन= आननेन अर्पितम् सन्निवेशितम् । स्मृत्वा=संस्मृत्य हा पाषाणोपम ! हा पाषाणसदृश कठोर ! कृतघ्नहृदय=नीचहृदय ! किं न दीर्यसे=विदीर्णं कथं न भवसि । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ३१ ॥

हिन्दी—आदरयुक्त पिताजी का उस प्रकार दूर से शीघ्र बुलाना, गोद में बिठलाकर दोनों बाहों से आलिंगन कर वैसी बातें करना तथा उस प्रकार अधखाया पान अत्यन्त प्रेम से मुख से निकाल कर देना याद कर हा पत्थर जैसे कठोर नीचहृदय ! तू फट क्यों नहीं जाता ।

एतच्चाकर्ण्य दमयन्ती चिन्तितवती—'अहो, स्नेहवानार्द्रहृदयः खल्वसौ महानुभावः । तत्सर्वथास्मत्प्रीतिपात्रं भवितुमर्हति' इत्यवधारयन्ती पुनः पप्रच्छ ।

सुधा—एतदिति । च । एतत्—इदम् । आकर्ण्य=श्रुत्वा । दमयन्ती=भैमी-चिन्तितवती=चिन्तयामास । अहो=आश्चर्यम् । खलु=नूनम् असौ=एषः । महानुभावः= महाशयः । स्नेहवान्=स्नेही । आर्द्रहृदयः=दयार्द्रचेताश्च । तत्=अतः । सर्वथा=सर्वं प्रकारेण अस्मत्प्रीति—पात्रम्=मम प्रेमभाजनम् । भवितुम् अर्हति=भवितुम् योग्योऽस्ति इति=एवम् । अवधारयन्ती=निश्चयन्ती । पुनः=भूयः । पप्रच्छ=अप्रच्छत् ।

हिन्दी—यह सुनकर दमयन्ती सोचने लगी—"अहा ! वास्तव में महानुभाव स्नेहवान् तथा दयालु हृदय हैं । अतः सब प्रकार हमारे प्रेम के योग्य हैं" यह निश्चय करती हुई पुनः (उसने) पूछा ।

हुं हंस ततस्ततः । सोऽपि राजहंसः कथानुपसंहर्त्तुमिच्छन्निमं श्लोकमुच्चारयाञ्चकार ।

सुधा—हुमिति । हुम्='हां' इति प्रश्नेऽव्ययम् । हंस=हे हंसपक्षिन् ! ततः ततः= तदनन्तरं किमिति ? सः=असौ राजहंसः अपि=राजहंस पक्ष्यपि । कथाम्=वार्त्ताम् । उपसंहर्त्तुम्=समाप्त्यर्थम् । इच्छन्=अभिलषन् । इमम्=एतम् श्लोकम् । उच्चारयाञ्चकार=उच्चारयामास ।

हिन्दी—हां ! हे राजहंस ! फिर क्या हुआ ? वह राजहंस ने भी कथा को समाप्त करने की इच्छा से यह श्लोक उच्चरित किया ।

'सुन्दरोदरि, ततश्च—

किमपि परिजनेन स्वेन तैस्तैर्विनोदैः
पितृविरहविषादं सोऽथ विस्मार्यमाणः ।

गमयति परिवर्त्तं वासराणामिदानीं
हरचरणसरोजद्वन्द्वदत्तावधानः ॥ ३२ ॥

इति श्रीत्रिविक्रमभट्टविरचितायां दमयन्तीकथायां हरचरण-
सरोजाङ्कायां चतुर्थ उच्छ्वासः समाप्तः ।

अन्वयः—अथ स्वेन परिजनेन किमपि पितृविरहविषादम् विस्मार्यमाणः हरचरण-सरोजद्वन्द्वदत्तावधानः सः इदानीम् वासराणाम् परिवर्तम् गमयति ॥ ३१ ॥

सुधा—किमपीति । हे सुन्दरोदरि = अयि सुभगशरीरे ! ततश्च = तदनन्तरम् अथ = अनन्तरम् । स्वेन = आत्मना परिजनेन सेवकेन । किमपि = किञ्चिदपि । पितृविरह-विषादम् – पितृवियोगजनितखेदम् विस्मार्यमाणः = विस्मृतिपथं नीयमानः । हरचरण-सरोजद्वन्द्वदत्तावधानः—हरस्य = शिवस्य चरणसरोजद्वन्द्वयोः = पादपद्मयुगलयोः दत्तम् = कृतम् अवधानम् = ध्यानम् येन तथा । सः = नलः । इदानी = साम्प्रतम् वासराणाम् = दिवसानाम् । परिवर्तम् = समापनम् गमयति = चालयति । मालिनीवृत्तम् ॥ ३२ ॥

हिन्दी—हे सुन्दरि ! इसके बाद—

अपने सेवक वृन्द द्वारा कुछ पितृविरह से उत्पन्न विषाद को भुलाते हुए, भगवान् शिव के चरण कमल में ध्यान लगाये हुए वह (नल) अब दिन बिता रहे हैं ॥ ३२ ॥

इति श्रीत्रिविक्रमभट्टस्य कृतौ शाहजहांपुर मण्डलान्तर्वर्तिनो नाहिलग्रामवास्तव्य-
स्याचार्यपरमेश्वरदीनपाण्डेयस्य कविश्रीस्त्रिविक्रमभट्टस्य नलचम्पूकृतौ
सुधासंस्कृतहिन्दीटीकाद्वयोपेतः चतुर्थं उच्छ्वासः ।
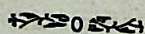
पञ्चम उच्छ्वासः

अथ विश्रान्तवाचि वाचस्पताविवोच्चारितानष्टविस्पष्टवर्णो वर्णितनिषधराजे राजहंसे 'अहं सेवार्थी' इत्यभिधायोपरुध्यमाना कृतोत्तरासङ्गेन द्विजन्मना श्रुतानुरागेण। 'वत्से, चिरान्मिलितासि' इत्युक्त्वैवाश्लिष्टा हृदये प्रवृद्धया चिन्तया। 'पुत्रि, कथंकथमपि दृष्टासि' इति संभाष्येवालिङ्गिता सर्वाङ्गेषूत्कम्पजनन्या रोमाञ्चावस्थया। 'तरुणि, त्यज्यतामिदानीं शैशवव्यवहारः, इत्यभिधायेव मुग्धे स्पृष्टा प्रमुखेन मुखे वैवर्ण्येन। 'मुग्धे मुच्यतां स्वच्छन्दभावः' इत्यनुशास्येव ग्राहिता निजाज्ञां गुरुणा मकरध्वजेन दमयन्ती। तथापि क्षणमिव महानुभावतामवलम्ब्यानुपलक्षितावस्थमवतस्थे।

सुधा—अथेति। अथ = अनन्तरम्। वाचस्पतौ इव = बृहस्पतिसदृशे। उच्चारिता नष्टविस्पष्टवर्णे = उच्चारितानि = कथितानि। अनष्टानि = विद्यमानानि। विस्पष्टवर्णानि = वैशिष्ट्येन स्पष्टाक्षराणि येन तस्मिन्। वर्णितनिषधराजे = वर्णितः = आख्यातः निषधराजः = निषधाधिपः येन तस्मिन्। राजहंसे = राजहंसपक्षिणि विश्रान्तवाचि—विश्रान्ता = समाप्ता वाक् = वाणी यस्य तादृशि। अहम् = एषोऽहम् सेवार्थी = सेवितुकामः अस्मि। इति = एवम् अभिधाय = उक्त्वा। कृतोत्तरासङ्गेन कृतः = उत्पादितः उत्तरे = उत्तरस्यां दिशि विषये आसङ्गः = आसक्तिर्येन तादृशेन नलाधारत्वादुत्तरस्याः। द्विजन्मना—द्वाभ्याम् (तस्मिन्स्मितमखे यूनि यूपदीर्घभुजद्वये २ उ० ५९ श्लोक०) येनोदीच्याध्वगेनोक्तं तस्मात् एकस्मात् द्वितीयाद् हंसात्। जन्म = उत्पत्तिर्यस्य स तथाभूतः। श्रुतानुरागेण—श्रुतात् = आकर्णनात् योऽनुरागः = प्रेमबन्धः, तेन। उपरुध्यमाना = व्याप्यमाना। वत्से = सुते। चिरात् = बहु मिलिता = प्राप्ता असि। इति = एवम् उक्त्वा = कथयित्वा एव। हृदये = चेतसि। प्रवृद्धया—प्रकर्षेण वृद्धिं गतया। चिन्तया। आश्लिष्टा = आलिङ्गिता। पुत्रि = वत्से। कथंकथम् अपि = केनापि प्रकारेण दृष्टा = अवलोकिता असि। इति = एवम् सम्भाष्य = कथयित्वा एव। सर्वाङ्गेषु = निखिल शरीरावयवेषु उत्कम्पजनन्या—उत्कम्पम् = कम्पनम् जनयति = उत्पादयति इति तया। रोमाञ्चावस्थया = रोमाञ्चदशया आलिङ्गिता = आश्लिष्टा। तरुणि = हे युवति इदानीम् साम्प्रतम्। शैशव व्यवहारः = बालत्व व्यवहारः। त्यजताम् = जहीहि। इति = एवम् अभिधायेव = उक्त्वा इव। मुग्धे ! प्रमुखेन = प्रधानेन प्रकृष्टम् मुखं यस्य तेन। वैवर्ण्येन = विवर्णत्वेन। मुखे = आनने। स्पृष्टा = स्पर्शकृता। मुग्धे। स्वच्छन्दभावः = स्वतन्त्रता। मुच्यताम् = त्यजताम्। इति = एवम्। अनुशास्येव = शिक्षितेव। गुरुणा = दुर्वहभारेण मकरध्वजेन = मदनेन। निजाज्ञाम् = स्वादेशम्। ग्राहिता इव=स्वीकारितेव। दमयन्ती = भैमी। तथापि = एतत्कृतेपि क्षणमिव = मुहूर्तमिव। महानुभावताम् = गम्भीरताम्। अवलम्ब्य = आलम्बिनं कृत्वा अनुपलक्षितावस्थम् = अप्रकटितावस्थम्। अवतस्थे = अतिष्ठत्।

हिन्दी—तदनन्तर वाचस्पति के समान उच्चारित स्पष्टाक्षरों वाले, निषधराज का वर्णन करने वाले राजहंस के चुप हो जाने पर उत्तर (उत्तर दिशा) से सम्बन्ध रखने वाले तथा केवल श्रवण के आधार पर उत्पन्न होने वाले द्विजन्मा अनुराग ने 'मैं सेवक हूँ' यह कहकर उसे (दमयन्ती को) घेर लिया। वत्से ! बहुत दिनों बाद मिली हो' मानों यह कहकर हृदय में बढ़ी हुई चिन्ता ने उसे मानों आलिङ्गित कर लिया। 'पुत्रि। किसी प्रकार से तू दिखलाई पड़ सकी है मानों यह कह कर सम्पूर्ण अङ्गों में उत्कम्पन से उत्पन्न हुई रोमाञ्चावस्था ने आलिङ्गन कर लिया। 'हे युवती। अब बचपन का व्यवहार छोड़ दो' यह कह कर मानों उसके सुन्दर मुख को अत्यधिक विवर्णता ने छू दिया। 'मुग्धे ! स्वच्छन्दता छोड़ दो' इस प्रकार मानों अनुशासन करते हुए दुर्वह कामदेव ने दमयन्ती को अपनी आज्ञा ग्रहण कराई। तथापि क्षणभर गम्भीरता का अवलम्बन कर उसने उस अवस्था को प्रकट नहीं होने दिया।

तां च तथा बलात्सरलीभवन्निश्वाससूचितान्तर्मन्मथव्यथावेगाम्, अकाण्डकुण्ठितधैर्यासिधारां, हृत्पुण्डरीके मनोरथानीतनलावलोकनार्थमिवान्तर्मुखीभूतचक्षुर्व्यापाराम्, आकस्मिकस्मरापस्मारेण दाम्यन्तीं दमयन्तीमवलोक्य तदिङ्गिताकारकुशला परिहासव्यसनिनी परिहासशीला नाम सखी 'महानुभाव, नास्माकमद्यापि तद्गुणश्रवणाय श्राम्यति श्रोत्रेन्द्रियम्। न तृप्यति प्रश्नरसायनाय जिह्वा। न सन्तुष्यति विशेषज्ञानाय शेमुषी। नानुरागायोपरमते मनः। तत्कथं कृतवानसि गीतस्येव विस्वरम्, वाद्यस्येव वितालम्, लास्यस्येवान्यथापदप्रचारम्, अत्यन्तरसविच्छेदकारिणं कथाप्रक्रमस्य विरामम्, एतत्परमपि पिपासया पयः पातुमुद्यतस्येवाविरतायां तृषि वारिधारानिवारणम्। इयं सा भुञ्जानस्यार्धतृप्तिः, सोऽयमप्राप्तरतस्य रिरंसाव्याघातः। तन्न युक्तमिवान्तरे विरन्तुम्। निष्कारणोपकारिन्, प्रवर्त्त्यतां पुण्यराशेस्तस्य स्वरूपाख्यानामृतप्रपामण्डपो, निर्वान्तु च चिरकालमनङ्गग्रीष्मोपतप्ता एवंविधकन्यकाः प्रसारितश्रवणाञ्जलयः' इति दमयन्तीमर्धक्षणेन कटाक्षयन्ती तं राजहंसमालापयाञ्चकार।

सुधा—तामिति। च = तथा बलात् = हठात् सरलीभवन्निःश्वाससूचितान्तर्मन्मथव्यथावेगाम्-सरलीभवद्भिः = सामान्यीभवद्भिः निःश्वासैः = प्रश्वासैः सूचितम् = प्रकटितम् अन्तः = आन्तरिकम् मन्मथस्य = मदनस्य व्यथायाः = पीडायाः वेगम् = गतिर्यया ताम्। अकाण्डकुण्ठितधैर्यासिधाराम्—अकाण्डे = अनवसरे कुण्ठिता = मन्थरीकृता धैर्यरूपासिधारा = धैर्यरूपखड्गधारा इव ताम्। हृत्पुण्डरीके—हृत् = मनः एव पुण्डरीकम् = कमलम्, तस्मिन्। मनोरथानीतनलावलोकनार्थम्—मनोरथेन = कामनया आनीतम् = आहृतम् नलस्य = नलाभिधस्य अवलोकनार्थम् = दर्शननिमित्तम्। अन्तर्मुखीभूतचक्षुर्व्यापाराम्—अन्तर्मुखीभूतम् = अन्तर्लीनतां गतम् चक्षुषोः = नयनयोः व्यापारम् = कार्यम् यस्यास्ताम् इव आकस्मिकस्मरापस्मारेण = आकस्मिकम् = अकस्मात् कामदेवरूपम् अपस्मारम् = अपस्माररुक्, तेन दाम्यन्तीम् = परिगृहीताम्। तथा = तेन प्रकारेण ताम् = एताम्। दमयन्तीम् = भैमीम्। अवलोक्य = दृष्ट्वा। तदिङ्गिताकारकुशला तत् = तस्याः दमयन्त्या

इंगिताकारे = सङ्केतपरिज्ञाने कुशला = दक्षा । परिहासव्यसनिनी–परिहासः = परिहसनम् व्यसनम् यस्याः सा । परिहासशीला नाम—परिहासशीलाभिधा । सखी = सहेलिका । महानुभाव = महाशय ! अद्य अपि-अद्य दिनमपि । अस्माकम् श्रोत्रेन्द्रियम् = मत्कर्णेन्द्रियम् । तद्गुणश्रवणाय तद् वैशिष्ट्यमाकर्णनाय । न श्राम्यति = श्रान्ता न भवति । जिह्वा = रसना । प्रश्नरसायनाय–प्रश्नमेव रसायनम् = पृच्छा रसायनम् । न तृप्यति = तृप्तिं न गच्छति । शेमुषी = मनः । विशेषज्ञानाय = विशेषज्ञानप्राप्तिहेतवे । न सन्तुष्यति = सन्तोषं न याति । मनः = चेतः । अनुरागाय = प्रेम्णे । न उपरमते । तत् = अतः । गीतस्य = गायनस्य । विस्वरम्-विगतः स्वरः = ध्वनिः यस्मात्तत् एव । कथम् कृतवान् असि = केनप्रकारेण विहितवान् असि । वाद्यस्य = वादनयन्त्रस्य वितालम् इव तालराहित्यमिव, लास्यस्य = नृत्यस्य । अन्यथापदप्रचारम् इव–अन्यत्र पदचालनमिव । कथाप्रक्रमस्य = वर्णन-क्रमस्य । अत्यन्तरसविच्छेदकारणम् = महदानन्दनाशकरम् । विरामम् = विश्रान्तिम् । एतत्परम् अपि = अतोऽधिकमपि । पिपासया = तृषया । पयः = जलम् । पातुम् = पानार्थम् । उद्यतस्य = तत्परस्य । अविरतायाम् = निरन्तरायाम् । तृषि = तृषायाम् । वारिधारानिवारणम् इव = जलधारापृथक्करणसदृशम । कथम् कृतवानसि इति शेषः । इयम् = एषा । सा = असौ । भुञ्जानस्य । अर्द्धतृप्तिः = अपूर्णं तृप्तिः । सः = असौ । क्षयम् । अप्राप्तरतस्य = अलब्धरत्यानन्दस्य । रिरंसा व्याघातः— रन्तुमिच्छा रिरंसा, रिरंसायां सत्यां व्याघातः = अन्तरायः । तत् = अतः । अन्तरे मध्ये । विरन्तुम् = विरामं कर्त्तुम् । युक्तमिव न = नोचितम् । निष्कारणोपकारिन् = अयि अकारणोपकारक ! पुण्यराशेः = पुण्यपुञ्जस्य । तस्य = एतस्य । स्वरूपाख्यानामृतप्रपामण्डपः–स्वरूपस्य = तदाकारस्याख्यानम् = वर्णनम्, स्वरूपाख्यानरूपा मृतस्य = सुधायाः प्रपः = पानकः यो मण्डपः । प्रवर्त्यताम् = विस्तार्यताम् । च = तथा । चिरकालम् = बहुकालम् । अनङ्गग्रीष्मोपतप्ताः–अनङ्गस्य = मदनस्य ग्रीष्मेण = उष्मणा उपतप्ताः = सन्तप्ताः । प्रसारितश्रवणाञ्जलयः = विस्तारितकर्णाञ्जलयः । एवंविध-कन्यकाः = ईदृग्बालाः । निर्वान्तु=तृप्तिमनुभवन्तु । इति = एवम् । दमयन्तीम्=भैमीम् । अर्द्धक्षणेन = क्षणार्धम् कटाक्षयन्ती = कटाक्षम् कुर्वन्ती (परिहासशीलानाम सखी) तम् = एतम् । राजहंसम् = राजहंसपक्षिणम् । आलापयाञ्चकार = आलापम् अकरोत् ।

हिन्दी—हठात् सरलता से निकलते हुए निःश्वासों से आन्तरिक कामकथा का वेग प्रकट हो रहा था, धैर्यरूपी कृपाणधारा असमय में ही कुण्ठित हो रही थी, मनोरथ से हृदय कमल में लाये गये नल को देखने के लिए आंखों का व्यापार (देखना) कुछ छिप सा गया था । अकस्मात् आये हुए काम विकाररूपी अपस्मार (मिर्गी) से ग्रस्त हुई उस प्रकार दमयन्ती को देखकर, उसके संकेत आदि को पहिचानने में कुशल मजाकी स्वभाव वाली परिहास शीला नाम की सखी आधे क्षणभर दमयन्ती को कटाक्ष करती हुई उस राजहंस से कहने लगी—हे महानुभाव ! आज भी उनके गुण सुनने के लिए हमारे कान थके नहीं हैं । प्रश्न रसायन से जीभ तृप्त नहीं हो रही है मन उनके सम्बन्ध में विशेष जानकारी के लिए सन्तोष नहीं कर पा रहा है । चित्त उनके अनुराग से शान्त

नहीं हो रहा है। अतः आप विना स्वर के यह कौन सा गीत गा गये हो। किस प्रकार बिना ताल के बाजा बजा गये हो, बिना पांव चलाये कौन सा नाच नाच गये, जिसने हम सबको मुग्ध कर दिया। इस कथा-प्रसंग का विराम अत्यन्त रस (आनन्द) भंग कर रहा है। इससे भी बढ़कर यह कहा जा सकता है कि कथा-प्रसंग का विराम वैसा ही है जैसे प्यास के कारण जल पीने के लिए तैयार व्यक्ति को प्यास बुझने से पहले ही जल धारा से अलग कर दिया जाय। इस प्रकार यह कथा प्रसङ्ग-समाप्ति खाते हुए व्यक्ति का अधखायापन है। सुरत सुख प्राप्त हुए बिना ही रमण की इच्छा में व्याघात (बाधा) करना इसी को कहते है। अतः बीच में ही इस प्रकार कथा-विराम कर देना उचित नहीं है। हे निष्कारण उपकार करनेवाले! उस पुण्यराशि (नल) के स्वरूपवर्णनरूपी कथामृत का पान कराने वाले मण्डप को विस्तृत कीजिये जिससे बहुत देर तक मदन की उष्णता से संतप्त होकर अपनी कर्णाञ्जलि को फैलाई हुई इस प्रकार की कन्यायें कुछ तृप्ति का अनुभव करें।

सोऽपि 'सुन्दरि, किमन्यत्तस्य समस्तस्त्रीहृदयप्रासादप्रतिष्ठापितप्रतिमस्याद्यापि प्रशस्यते।

सुधा—सोऽपीति। सः = राजहंसः अपि। सुन्दरि = हे सुवदने। समस्तस्त्रीहृदयप्रासादप्रतिष्ठापितप्रतिमस्य—समस्तेषु = निखिलेषु स्त्रीहृदयप्रासाद नारीहृदयभुवनेषु प्रतिष्ठापिता = प्रकृष्टतया स्थापिता प्रतिमा = मूर्तिः यस्य तस्य, तस्य = नलस्य। अद्यापि = सम्प्रत्यपि। अन्यत् = अपरम्। किम् प्रशस्यते किं प्रशंसा क्रियते।

हिन्दी—वह राजहंस भी—हे सुन्दरि! उसकी और क्या प्रशंसा की जाय जबकि उसकी प्रतिमा समस्त स्त्री हृदयरूपी प्रासादों पर प्रतिष्ठित हो चुकी है।

यत्र श्रूयमाणे न मधुरो वेणुवीणाक्वणः, दृष्टे नाभिरामः कामः। संभाषिते न सारा सरस्वती, परिचिते न श्लाघ्यममृतम्, अभ्यस्ते नानन्दीन्दुः, प्रसादिते न प्रशंसास्पदं धनदः।

सुधा—यत्रेति। यत्र = यस्मिन्। श्रूयमाणे = आकर्ण्यमाने। वेणुवीणाक्वणः = वेणोः = मुरलिकायाः, वीणायाश्च = विपञ्च्याश्च क्वणः = नादः। मधुरः = मृदुलः न (ज्ञायते)। यस्मिन् दृष्टे = अवलोकिते। कामः = मदनः। अभिरामः = सुन्दरः न ज्ञायते। संभाषिते = वार्ताकृते। सरस्वती = वाणी। सारा = तत्त्वयुता न। परिचिते = परिज्ञाने अमृतम् = सुधारसम्। श्लाघ्यम् = प्रशंसनीयम् न। अभ्यस्ते = परिशीलिते इन्दुः = चन्द्रः। आनन्दी = आनन्दयुक्तः न। प्रह्लादिते = प्रसन्नीकृते। धनदः = कुबेरः। प्रशंसास्पदम् = प्रशंसनीयः न परिज्ञायते।

हिन्दी—जिसके सम्बन्ध में सुनने पर बांसुरी और वीणा की ध्वनि मधुर नहीं लगती जिसे देख लेने पर कामदेव भी सुन्दर नहीं लगता, जिससे बातचीत कर लेने पर सरस्वती में तत्व नहीं मालूम पड़ता, जिससे परिचय कर लेने अमृत भी प्रशंसनीय नहीं रह जाता, जिसके अभ्यास करने पर चन्द्रमा आनन्द देनेवाला नहीं रह जाता है तथा जिसके प्रसन्न हो जानेपर धनद कुबेर प्रशंसा के पात्र नहीं बन पाते हैं।

किं बहुना—

भवति यदि सहस्रं वाक्पटूनां मुखानां
निरुपमवधानं जीवितं चापि दीर्घम् ।
कमलमुखि तथापि क्ष्मापतेस्तस्य कर्तुं
सकलगुणविचारः शक्यते वा न वेति ।। १ ।।

अन्वयः—कमलमुखि, यदि वाक्पटूनाम् मुखानाम् सहस्रम् भवति, अपि च जीवितम् दीर्घम् अवधानम् निरुपमम् (भवति) तथापि तस्य क्ष्मापतेः सकलगुणविचारः कर्तुम् शक्यते वा न वा (शक्यते) इति ।। १ ।।

सुधा—भवतीति । कमलमुखि–कमलमिवमुखं यस्यास्तत्सम्बुद्धौ = हे सरसिजवदने ! यदि = चेत् । वाक्पटूनाम्–वाचिपटवस्तेषाम् = गोदक्षाणाम् । मुखानाम् = आननानाम् सहस्रम् = सहस्रसंख्याकम् भवति । अपि च जीवितम् = जीवनम् । दीर्घम् = चिरम् । अवधानम् ध्यानम् । निरुपमम् = उपमारहितम् (भवति) तथापि तस्य = एतस्य । क्ष्मापतेः = भूपतेः सकलगुणविचारः = निखिलवैशिष्ट्यविचारः । कर्त्तुम् = विधातुम् । शक्यते = संभूयते वा = अथवा न शक्यत इति सन्देहः । मालिनी वृत्तम् ।। १ ।।

हिन्दी—अधिक क्या—हे कमलमुखि ! यदि बोलने में दक्ष लोगों के हजार मुख हो जायँ तथा उनका जीवन भी लम्बा (चिरकालिक) एवम् ध्यान अनुपम हो जाये तथापि उस भूपति (नल) के सम्पूर्ण गुणों पर विचार किया जा सकता है अथवा नहीं इसमें सन्देह है ।। १ ।।

अपि च—

संसाराम्बुनिधौ तदेतदजनि स्त्रीपुंसरत्नद्वयं
नारीणां भवती नृणां पुनरसौ सौभाग्यसीमा नलः ।
सा त्वं तस्य कुरङ्गशावनयने योग्यासि पृथ्वीपते-
रेतत्ते कथितं किमन्यदधुना यामो वयं स्वस्ति ते ।। २ ।।

अन्वयः—संसाराम्बुनिधौ तत् एतत् स्त्रीपुंसरत्नद्वयम् अजनि, पुनः नारीणाम् भवती पुनः नृणाम् असौ भाग्यसीमा नलः । कुरङ्गशावनयने ! सा त्वम् तस्य पृथ्वीपतेः योग्या असि, एतत् ते कथितम् । अधुना अन्यत् किम्, वयम् यामः, ते स्वस्ति ।। २ ।।

सुधा—संसारेति । संसाराम्बुनिधौ = विश्वपयोनिधौ । तत् = तथा । एतत् = इदम् । स्त्रीपुंसरत्नद्वयम्–स्त्री च पुमांश्च, तावेव रत्नौ द्वौ तत् = नारीनररत्नयुगलम् । अजनि = अजायत । नारीणाम् = रमणीनाम् । भवती=श्रीमती । पुनः = भूयः । नृणाम्= पुंसाम् । असौ = सः । भाग्यसीमा = परमभाग्यवान् । नलः = नलाख्यः नृपः । अजनि । कुरङ्गनयने अयि मृगाक्षि ! सा = एषा । त्वम्=भवती । तस्य=नलाख्यस्य । पृथ्वीपतेः= भूपतेः । योग्या = अर्हा । असि । एतत् = इदम् । ते = तुभ्यम् । कथितम् = वर्णितम् । अधुना = सम्प्रति । अन्यत् = अपरम् किम् कथयामः । वयम् यामः = गच्छामः । ते = तुभ्यम् । स्वस्ति = कल्याणम् भवतु । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ।। २ ।।

हिन्दी—और भी—संसार-सागर में यह स्त्री तथा पुरुष दो ही रत्न उत्पन्न हुए। पुनः नारियों में आप तथा पुरुषों में भाग्य की सीमा बना हुआ वह नल (भूपति) है। हे कुरङ्गनयने ! इस प्रकार तुम भूपति (नल) के सर्वथा योग्य हो। यह तुम्हें बतला चुके हैं। अब और क्या कहें ! हम जारहे हैं। तुम्हारा कल्याण हो ॥ २ ॥

अन्यच्च—

चन्द्रमुखि, महानाम्नि सुसंधिकृति सुसमासाख्याततद्धिते सत्कारके परिभाषाकुशले बलाबलविचारिणि विचार्यमाणे व्याकरणे प्रेष्यमाणे च दूते नापशब्दसम्बन्धो भवति। तत्प्रेष्यतां तथाविधस्तस्यान्तिकं कोऽपि दूतः।

सुधा—अन्यदिति। चन्द्रमुखि = अयि चन्द्रवदने ! महानाम्नि = महदभिधाने। नाम प्रातिपादिकं तद्विषयं प्रकरणमपि नामेत्युपचारे सति महदिति विशेषणस्य सफलत्वम्। नाममात्रस्य महच्छब्देन व्यवच्छेद्याभावात्। सुसन्धिकृति = सुष्ठुसन्धिकारके। सुष्ठुसन्धिवर्णसंश्लेषः कृत्संज्ञकप्रत्ययश्च यत्र। सुसमासाख्याततद्धिते—सुष्ठु समासा = शुभसंदेशः आख्यातम् = कथितम् यस्य तद्धिते = तत्कल्याणकारके। समासः = तत्पुरुषादिः। आख्यातम् = क्रिया। तद्धितः = अणादिः, तस्मिन्। सत्कारके = सत्क्रियाकृति। कारकम् = अपादानादिः, तस्मिन्। परिभाषाकुशले = परितः भाषासु कुशलः = प्रवीणस्तस्मिन्। परिभाषा = न्यायसूत्राणि, तस्मिन्। बलाबलविचारिणि = शक्त्यशक्तिविचारकारके। बलाबलम् = पूर्वापरविधीनां बाधस्थितौ। प्रेष्यमाणे = प्रहिते। दूते = संदेशवाहके। च = तथा विचार्यमाणे=विचारं क्रियमाणे। व्याकरणशास्त्रे। अपशब्दसम्बन्धः=अववादसम्बन्धः। असाधुशब्दः। न भवति। तत् = अतः। तथाविधः = उपर्युक्तगुणयुक्तः। कः अपि = कश्चिदपि। दूतः = संदेशहारकः। तस्य = नलस्य। अन्तिकम् = पार्श्वम्। प्रेष्यताम् = भवत्या प्रेषणीयः स्यात्।

हिन्दी—और—दूतपक्ष में—हे विधुवदने। बड़े नाम वाले (प्रतापी) शत्रु-मित्र दोनों पक्षों में उत्तम सन्धि स्थापित करने वाले, सन्देश भेजने वाले का हित चाहने वाले, शुभ कार्य करने वाले विभिन्न भाषाओं में कुशल, बलाबल (शक्ति-अशक्ति) का विचार रखने वाले भेजे गये दूत में किसी प्रकार अपशब्द की शङ्का नहीं रह जाती है। अतः उपर्युक्त गुणों से सम्पन्न कोई दूत उनके पास भेज दीजिये।

व्याकरणपक्ष में—प्रातिपादिक, उत्तम सन्धियों (अच् हलादि) को करने वाले सुन्दर समास प्रसिद्ध तद्धित तथा उत्तम कारकोंवाले, न्यायसूत्रोंवाले, पूर्वापर का विचार करने वाले विचारणीय व्याकरणशास्त्र में अपशब्द का सन्देश नहीं रह जाता है।

'न च बृहत्या संपदान्विते जगत्याख्याते सत्कृतगुरुगणे शार्दूलविक्रीडिताडम्बरिणि पुण्यश्लोके पर्यालोच्यमाने छन्दसि प्रार्थ्यमाने च तस्मिन्निषधेश्वरे वृत्तभङ्गो भवति' इत्यभिधाय गन्तुमुदचलत्।

सुधा—न चेति। बृहत्या = विशालया। सम्पदा = सम्पत्त्या। अन्विते = युक्ते। जगति = संसारे। आख्याते=प्रसिद्धे। सत्कृतगुरुगणे—सत्कृतः = समाजितः गुरुगणः = गुरु-

जनसमुदायो येन तस्मिन् । शार्दूलविक्रीडिताडम्बरिणि = सिंहविलसिते । पुण्यश्लोके = पुण्यकीर्तौ । प्रार्थ्यमाने = स्तूयमाने । तस्मिन् = एतस्मिन् । निषधेश्वरे = नलनृपे । वृत्त-भङ्गः = शीलनाशः न भवति । इति = एवम् । अभिधाय = कथयित्वा । गन्तुम्=यातुम् । उदचलत् = उच्चचाल ।

वेदपक्षे—बृहती जगती शब्दौ छन्दोजातिवचनौ तृतीयान्तौ तेन ख्याते = प्रसिद्धे सम्पदान्विते—सङ्गतैः पदैः अन्विते । अथवा छन्दसि पदान्विते कथं यथा भवति बृहत्यासं बृहत्यां जातौ आसोऽवस्थानं यस्येति । सत्कृतगुरुगणे = गुरुगणयुक्ते । शार्दूलविक्रोडिता-डम्बरिणि—शार्दूलविक्रीडितं छन्दोनाम तस्याडम्बरिणि । पुण्यश्लोके = पवित्रछन्दसि । पर्यालोच्यमाने = विचार्यमाणे । छन्दसि = वृत्ते । वृत्तभङ्गः = छन्दोभङ्गः न भवति ।

हिन्दी—"विशाल सम्पदा से युक्त, लोक प्रसिद्ध, गुरुजनों का सत्कार करने वाले, सिंह-सदृश वीर, पुण्यकीर्ति वाले निषध देश के राजा में प्रार्थना करने पर शील भंग नहीं होता है।" यह कहकर चलने के लिए (हंस) उठ खड़ा हुआ ।

वेदपक्ष में—बृहती छन्द की सम्पदा से युक्तता प्रसिद्ध जगती छन्द वाले, गुरु वर्णों को विशेष स्थान देने वाले, शार्दूलविक्रोडित छन्द के समान समृद्ध, पवित्र श्लोकों वाले वेद के पर्यालोचन में छन्दोभङ्ग दोष नहीं होता है ।

टिप्पणी—यहां पर निषधराज नल की प्रार्थना तथा वेद के पर्यालोचन में केवल शाब्दी समानता है, आर्थी समानता नहीं ।

उच्चलितं च तं परिहासशीला पुनर्बभाषे ।

'महानुभाव, यथेयमनुरागकन्दलैरालापैस्त्वयोक्ता, तथा सोऽपि स्पृहणी-योक्तिभिरभिधातव्यः । यतो न ह्येकहस्ततलेन तालिका वाद्यते, न चैकं तप्त-मतप्तेनापरेण लोहं लोहेन संधीयते, नाप्येकं रक्तमरक्तेनान्येन वस्त्रमपि वाससा संयोजितं शोभां लभते । केवलं वियुगलमेव भवति' इति ।

सुधा—उच्चलितमिति । च = तथा । 'उच्चलितम् = गमनोद्यतम् । तम् = राज-हंसम् । परिहासशीला = तन्नामसखी । पुनः = भूयः । बभाषे = उक्तवती ।

महानुभाव = हे महाशय ! यथा = येन प्रकारेण । इयम् = एषा दमयन्ती । अनुराग-कन्दलैः—प्रेमाङ्कुरितैः । आलापैः = कथनैः । त्वया = भवता । उक्ता = कथिता । तथा= तेन प्रकारेण । स्पृहणीयोक्तिभिः = काम्यालापैः । सः = नलनृपः अपि । अभिधातव्यः = कथनीयः । यतो हि = यस्मात्कारणात् । एकहस्ततलेन = एकमात्रकरतलेन तालिका न वाद्यते = तालिकावादनं न क्रियते । च = तथा । एकम् तप्तम् = उष्णम् लोहम् = अयो-भागम् । अपरेण = अन्येन । अतप्तेन = अनुष्णेन । लोहेन—अयःखण्डेन न संधीयते = संयुक्तं न क्रियते । अपि = तथा । एकम् रक्तम् = लोहितम् वस्त्रम् अपि = वासोऽपि । अन्येन = अपरेण । अरक्तेन = अलोहितेन । वाससा = वस्त्रेण । संयोजितम् = सम्मीलि-तम् । शोभाम् = सुषमाम् । न लभते = न प्राप्नोति । केवलम् वियुगलम् = विपरीतम् । एव । भवति ।

हिन्दी—जाने के लिए उद्यत उस राजहंस से परिहासशोला सखी पुनः कहने लगी—

हे महानुभाव ! जिस प्रकार आपने अनुराग अंकुरित करने वाली बातों को इन (दमयन्ती) से कहा है उसी प्रकार चाह उत्पन्न करनेवाली उक्तियों द्वारा उन (राजा नल) से भी कहना, क्योंकि एक हाथ से ताली नहीं बजती है। और एक गर्म लोहा दूसरे ठंडे लोहे से जोड़ा नहीं जाता है एवम् एक लाल वस्त्र दूसरे अरक्त—रंगहीन वस्त्र से जोड़ा हुआ शोभा नहीं पाता। केवल विपरीतता ही होती है।

एवंवादिनीं दमयन्ती परिहासशीलामलपत्—

सखि, किमस्य निष्कारणवत्सलस्यैवमभ्यर्थ्यते ॥

यस्यास्मासु निरपेक्षः पक्षपातः, स्वभावजं सौजन्यम्, अकृत्रिमः स्नेहभावः, अनुपचरितमुपकारित्वम्, अपरिचया प्रीतिः, अनभ्यासं सौहार्दम्, अदृष्टपूर्वा मैत्री।

सुधा—एवमिति। दमयन्ती = भैमी। एवं वादिनीम् = इत्थं कथयन्तीम्। परिहासशीलाम् = तन्नाम्नीं सखीम्। अलपत् = अभाषत।

सखि = प्रेयसि ! निष्कारणवत्सलस्य = अकारणानुरागकारिणः। अस्य = एतस्य एवम् = इत्थम्। किम् अभ्यर्थ्यते = किं निवेद्यते।

यस्य = यस्य जनस्य। अस्मासु = अस्मद्विधासु। निरपेक्षः = आकाङ्क्षारहितः। पक्षपातः = मित्राद्यवष्टम्भः। स्वभावजम् = अकृत्रिमम्। सौजन्यम् = सुजनता। अकृत्रिमः = प्राकृतिकः। स्नेहभावः = प्रेमभावः। अनुपचरितम् = आडम्बररहितम्। उपकारित्वम् = उपकारिता। अपरिचया = अनभिज्ञा। प्रीतिः = स्नेहः। अनभ्यासम्—अभ्यासः = सामीप्यम् तेन शून्यम्। सौहार्द्रम् = मैत्रीभावः। अदृष्टपूर्वा—दृष्टा = अवलोकिता पूर्वम् = प्राक् इति दृष्टपूर्वा, न दृष्टपूर्वेत्यदृष्टपूर्वा। मैत्री = सख्यम्।

हिन्दी—दमयन्ती इस प्रकार कहती हुई परिहासशीला सखी से कहने लगी—

हे सखि, अकारण स्नेह करनेवाले उस (राजहंस) से इस प्रकार क्या निवेदन कर रही हो जिसका हम पर बिना कुछ चाहे पक्षपात, स्वाभाविक सौजन्य, सरल स्नेहभाव, आडम्बरहीन उपकार करना, अपरिचित दशा में प्रीति, समीप न होते हुए भी सौहार्द्र तथा ऐसी मित्रता जो कि इससे पूर्व कभी न देखी गई हो, है।

तदेवंविधो निर्निमित्तबन्धुः किमभ्यर्थ्यते। केन याच्यन्ते चन्द्रचन्दनसज्जनाः परोपकाराय। किन्तु कतिपयमुहूर्त्तमैत्रीरञ्जितास्मन्मनसो दुस्त्यजस्याकाण्ड एवास्य गन्तुमुत्सहमानस्य किं ब्रूमः। मा गा इत्यशकुनम्, गच्छेति निष्ठुरता, यदिष्टं तद्विधीयतामित्यौदासीन्यम्, आदर्शनात्प्रियोऽसीति क्रियाशून्यालापः, कस्त्वमेवंविधो दिव्यवाक्पक्षिरत्नमित्यप्रस्तुतप्रश्नः, केनार्थीत्यप्रक्रान्तम्, किं ते प्रियमाचरामीत्युपचारवचनम्, कृतोपकारोऽसीति प्रत्यक्षस्तुतिः।

सुधा—तदिति। तत् = अतः। एवंविधः = एतत्प्रकारकः। निर्मिमित्तबन्धुः—निर्गतम् निमित्तम् यस्मात् तथा बन्धुः = अकारणभ्राता। किम् अभ्यर्थ्यते = किं प्रार्थ्यते।

चन्द्रचन्दनसज्जनाः—चन्द्रः = विधुः, चन्दनम् = मलयजम् सज्जनाश्च = सत्पुरुषाश्च। परोपकाराय = परोपकारकरणार्थम्। केन = केन जनेन। याच्यन्ते = याचना क्रियन्ते, स्वभावत एव ते शीतत्वाद्युपकारं कुर्वन्ति। किन्तु = किञ्च। कतिपयमुहूर्त्तमैत्रीरञ्जितास्मन्मनसः कतिपयैः मुहूर्त्तैः = कतिचित्क्षणैः या मैत्री = सख्यभावस्तया रञ्जितम् = अनुरक्तम् अस्मन्मनस्तस्य। दुस्त्यजस्य = कष्टत्यजस्य। अकाण्डे = असमये एव। अस्य = एतस्य। गन्तुम् = यातुम्। उत्सहमानस्य = उत्सुकस्य राजहंसस्य। किं ब्रूमः = किं कथयामः। मा गाः = प्रस्थानं मा कुरु। इति = एवं कथनम्। अशकुनम् = अशुभम् गच्छ = प्रयाहि इति निष्ठुरता = क्रूरत्वम्। यद् इष्टम् = यद् रुचिकरम्। तद्विधीयताम् = तत्क्रियताम्। इति कथनम् औदासीन्यम् = उदासीनता। आदर्शनात् = दर्शनकालाद् एव। प्रियः असि = त्वम् रुचिरः असि। इति = एवम्। क्रियाशून्यालापः = निष्क्रियप्रलापः। त्वम् एवम्विधः = ईदृशः। दिव्यवाक्पक्षिरत्नम् = अलौकिकवाणीयुतः पक्षिवरः कः असि इति अप्रस्तुतप्रश्नः = अनुचितपृच्छा। केन = केन कारणेन। अर्थी = हेतुकः इति। अप्रक्रान्तम् = प्रकरणशून्यत्वम्। ते = तव। किं प्रियम् = किं रुचिकरम् आचरामि = विदधामि। इति। उपचारवचनम् = औपचारिकतामात्रम्। कृतोपकारः असि = त्वया महदुपकारः कृतः इति। प्रत्यक्षस्तुतिः = समक्षप्रशंसा अस्ति।

हिन्दी—अतः इस प्रकार अकारण बन्धु से क्या प्रार्थना की जाय। परोपकार के लिए चन्द्रमा (शीतार्थ) चन्दन (शीतार्थ) और सज्जनों से कौन याचना करता है? किन्तु कुछ ही क्षणों में हुई मित्रता से प्रसन्न मन वाले हमारे लिए बीच में ही इसे छोड़ देना दुःखदायी है। असमय में ही जाने के लिए उत्सुक बने इससे क्या कहें। 'मत जाओ' यह कहना असगुन है, 'जाओ' यह कहना निष्ठुरता है। 'जैसा चाहो करो' यह कहना उदासीनता है। जब से देखा है तब से प्रिय लगते हो यह क्रियाशून्य आलाप (बकवास) है। "इस प्रकार दिव्यवाणी बोलने वाले श्रेष्ठ पक्षी कौन है।" यह अप्रासङ्गिक प्रश्न है। 'किस निमित्त आये हो' यह पूछने का कोई प्रकरण नहीं है। 'आपका क्या प्रिय-कार्य करूँ' यह कहना उपचार मात्र है तथा 'आपने बड़ा उपकार किया है' यह कहना प्रत्यक्ष स्तुति है।

तन्न जानीमः कल्याणबन्धो, किमुच्यसे। वरमदर्शनमेव भवादृशाम्, न तु लूयमानाङ्गावयवदुःसहो दर्शनव्याघातः। वरमनास्वादितमेवामृतम्, न तु सकृत्पीत्वा पुनरलाभदुःखम्।

सुधा—तदिति। तत् = अतः। कल्याणबन्धो = अयि भद्र! न जानीमः = न विद्मः किम् उच्यसे = किं कथ्यसे। भवादृशाम् = भवत्समानाम्। अदर्शनम् = अनवलोकनम्। वरम् = श्रेष्ठम्। लूयमानाङ्गावयवदुःसहः = खिद्यमानशरीरावयवदुःखदः। दर्शनव्याघातः—दर्शनस्य = अवलोकनस्य व्याघातः = विच्छेदः। तु न वरम् = नोपयुक्तम्। अमृतम् = सुधारसम्। अनास्वादितम् = अयुक्तम् एव वरम्। सकृत्पीत्वा = भूयोभूयः पानं कृत्वा। पुनः = पश्चात्। अलाभदुःखम् = अप्राप्ति दुःखम् तु न वरम्।

हिन्दी—अतः हे कल्याणबन्धो! समझ में नहीं आता है कि हम आपसे क्या कहें।

आप सदृश लोगों को दर्शन न करना ही अच्छा है पर कटे हुये शरीरावयवों के समान दुखदायी दर्शन का विच्छेद होना अच्छा नहीं। अमृत का रसास्वादन न करना अच्छा है पर बारबार पीकर पुनः न मिलने का दुःख अच्छा नहीं।

अतः प्रार्थ्यसे भूयो दर्शनार्थम्, इयं भविष्यति भवत्प्रियस्य कस्याप्युपायनमात्रमस्मदनुस्मरणनाटकसूत्रधारी हारलता' इत्यभिधाय नलमुररीकृत्य 'महानुभाव, द्वाभ्यां श्रुतोऽसि पान्थादस्माद्राजहंसाच्च, द्वाभ्यामुह्यसे वाचा हृदयेन च, द्विकालं स्मर्यसे दिवा नक्तं च, द्वयी गतिरस्माकमिदानीं त्वं वा मृत्युर्वा' इति द्विसंख्यसंदेशार्थमिव द्विगुणीकृत्योन्मुच्य च स्वकण्ठकन्दलादुत्कण्ठितामिव स्वां मूर्त्तिमतीं तस्य मुक्तावलीं गले व्यलम्बयत्।

सुधा—अत इति। अतः = अस्माद् हेतोः। भूयः = पुनः। दर्शनार्थम् = दर्शन हेतवे प्रार्थ्यसे = निवेद्यसे। इयम् = एषा। हारलता = मुक्तावली। भवत्प्रियस्य = भवन्मित्रस्य कस्यापि = नलादिकस्यापि। उपायनमात्रम् = उपहारस्वरूपमात्रम् अस्मदनुस्मरणनाटकसूत्रधारी = अस्माकम् अनुस्मरणस्य = अनुस्मृतेः नाटकस्य = दृश्यस्य रूपकस्य वा सूत्रधारी = आरम्भकरी। भविष्यति। इति = एवम्। अभिधाय = कथयित्वा। नलम् = नलाख्यं प्रियम्। उररीकृत्य = हृदये विधाय, हृदि स्वीकृत्य। महानुभाव = महाशय! द्वाभ्याम् = वारद्वयम्, प्रथमम् पथिकात् = पान्थानः पश्चात् अस्मात् राजहंसात् = राजहंस पक्षिणः। श्रुतः असि = आकर्णितोऽसि। वाचा = वाण्या। हृदयेन च = अभ्यन्तरेण च। द्वाभ्याम् = द्वाभ्यां पदार्थभ्याम्। उह्यसे = धार्यसे। दिवानक्तम् च = अहर्निशम्। द्विकालम् अष्टयामम्। स्मर्यसे = स्मृतिपथं नीयसे। अस्माकम् = मामकीनाम्। इदानीम् = सम्प्रति। त्वम् = भवान्। वा = अथवा मृत्युः = मरणम् इति द्वयीगतिः = द्विसंख्यकैव अवस्थितिः। द्विसंख्यसन्देशार्थम् इव = तव प्राप्तिः, मृत्युर्वा इति सूचनार्थम् इव द्विगुणीकृत्य = अतोऽपि वर्धयित्वा। उत्कण्ठाम् = इव। स्वकण्ठकन्दलात्—आत्मगलाङ्कुरात्। उन्मुच्य = अवतार्य द्विगुणीकृत्य। स्वाम् = निजाम्। मूर्तिमतीम् = प्रतिमूर्तिम् इव। मुक्तावलीम् = हारलताम्। तस्य = एतस्य राजहंसस्य गले = कण्ठ देशे। व्यलम्बयत् = लम्बवदपातयत्।

हिन्दी—"अत एव पुनः दर्शन देने के लिए मैं प्रार्थना कर रही हूँ"। यह हार लता किसी प्रिय (नल) के लिए उपहार मात्र, हमारे स्मृतिरूपीनाटक की सूत्रधार (आरम्भ करने वाली) बनेगी। यह कहकर नल को हृदय मे बसाकर—हे महानुभाव! एक बार पथिक से तथा दुबारा राजहंस से (दोबर) सुने गये हो, वाणी तथा हृदय दो से धारण किये जा चुके हो, दिन तथा रात दोनों समय स्मरण किये जाते हो, अब 'तुम' अथवा 'मृत्यु' दो ही हमारी गतियां हैं। मानों 'तुम' या 'मृत्यु' यह दो सन्देश भेजने के लिए अपने कण्ठ कन्दल से अपनी प्रतिमूर्ति जैसी मुक्तावली को उतारकर, दोहरा करके उसके गले में लटका दिया।

सोऽपि "सुन्दरि, सोऽयं स्कन्धीकृतो मया मुक्तावलीच्छलेन तस्य पुरो भवद्दर्शनाभारः" इत्यभिधाय सह तेन विहङ्गमगणेनोत्पपात।

सुधा—सोऽपीति। सः = राजहंसः अपि। सुन्दरि = हे सुवदने! अयम् = एषः मया = राजहंसेन। मुक्तावलीच्छलेन = मुक्ताहारमिषेण। तस्य = नलस्य। पुरः = समक्षम्। भवद्वर्णनाभारः = भवतः = तव वर्णनायाः = आख्यानस्य भारः। स्कन्धीकृतः= अङ्गीकृतः। इति = एवम् अभिधाय = कथयित्वा। तेन विहंगगणेन = पक्षिसमूहेन। सह = साकम्। उत्पपात = उदपतत्।

हिन्दी—वह राजहंस भी "हे सुन्दरि! इस प्रकार यह मुक्तावली के बहाने उन (नल) के समक्ष आपके वर्णन करने का भार मैंने स्वीकार कर लिया है"। यह कह कर वह उस विहंग समुदाय के साथ उड़ गया।

उत्पतिते च नभस्तलम् 'आगच्छत, संपद्यन्तां सफललोचनाः, पश्यतापूर्वं श्रीरत्नम्' इति चलत्पक्षपल्लवव्याजेन दूराद्दिक्पालानिवाह्वयति तीव्रब्रध्नमयूख-संतप्तां दिवमिवोपवीजयति, दिक्कुञ्जरनिरुद्धावकाशा आशा इवाश्वासयति, पक्षि-मण्डले तस्मिन्विस्मयोन्मुखी सा भूपालपुत्री निर्निमेषं निक्षिप्य चक्षुश्चिरमूर्ध्वं-वावतस्थे।

सुधा—उत्पतित इति। च = तथा। नभस्तलम् = आकाशमण्डलम्। उत्पतिते = उड्डीयमाने सति। आगच्छत = आयात। सफललोचना=सार्थकनयना। सम्पद्यन्ताम् = क्रियन्ताम्। अपूर्वम् = अद्वितीयम्। श्रीरत्नम् = शोभारत्नम्। पश्यत = अवलोकयत। इति = एवम्। चलत्पक्षपल्लवव्याजेन = चलद्भ्याम् = चञ्चलयोः पक्षयोः = पुंखयोः व्याजेन = मिषेण। दूरात् = दूरस्थानात्। दिक्पालान् = दिग्गजान्। आवाहयति = आह्वयति। तीव्रब्रध्नमयूखतप्तम् = तीव्रैः = प्रखरैः ब्रध्नमयूखैः = रविकिरणैः, तप्तम् = सन्तप्तम्। दिवम् = आकाशम्। उपवीजयति इव = व्यजनं कुर्वतीव। दिक्कुञ्जरनिरुद्धा-वकाशा–दिक्कुञ्जरैः = दिग्गजैः निरुद्धः = अवरुद्धः अवकाशः = अन्तरम् यासाम् ताः। आशाः = दिशः। आश्वासयति इव = धैर्यधारणं कारयति सतीव। पक्षिमण्डले = खग-वृन्दे। तस्मिन् = राजहंसे। विसयोन्मुखी = आश्चर्योन्मुखी सा = इयम्। भूपालपुत्री = राजकुमारी दमयन्ती। निर्निमेषम् = निमेषरहितम् चक्षुः = नेत्रम्। चिरम् = बहुकालम्। ऊर्ध्वम् उपरि निक्षिप्य = प्रक्षिप्य एव। अवतस्थे–अतिष्ठत्।

हिन्दी—(पक्षिसमूह के साथ) उस राजहंस के "आओ, अपने नेत्र सफल करो अनुपम कन्यारत्न को देखो।" इस प्रकार अपने चञ्चल पंखों को फड़फड़ाने के बहाने दूर से मानो दिक्पालों को बुलाते हुए, प्रखरसूर्य किरणों से व्याकुल मानों स्पर्श को पंखा झलते हुए, दिग्गजों से घिरी हुई मानों सभी दिशाओं को धैर्य बंधाते हुए आकाश मण्डल में उड़ जाने पर आश्चर्य से ऊपर मुंह उठाये वह राजकुमारी अपलक आंखे डालकर बहुत देर तक ऊपर देखती खड़ी रही।

चिन्तितवती च—

'तात तावन्ममाप्येवं न विधत्से प्रजापते।
पक्षौ पक्षिवदुड्डीय येन पश्यामि तन्मुखम्॥ ३॥

अन्वयः—तात प्रजापते ! तावत् मम अपि एवम् पक्षौ न विधत्से, येन पक्षिवत् उड्डीय तन्मुखम् पश्यामि ॥ ३ ॥

सुधा—तातेति । तात प्रजापते ! अयि पितः विधातः ! तावत्, मम = मद् देहे अपि । एवम् = इत्थम् । पक्षौ = पुंखौ न विधत्से = न निर्मीयसे । येन = यथा । पक्षिवत् = खग सदृशम् । उड्डीय = उड्डीयनं विधाय । तन्मुखम् = प्रियनलाननम् । पश्यामि = अवलोकयामि ॥ ३ ॥

हिन्दी—तथा सोचने लगी —

हे तातविधातः, तो मेरे भी इसी प्रकार पंख क्यों नहीं बना देते हो जिससे पक्षियों के समान उड़ कर उन (प्रिय नल) का मुख देख सकूं ॥ ३ ॥

अपि च—

उड्डीय वाञ्छितं यान्तो वरमेते विहङ्गमाः ।
न पुनः पक्षहीनत्वात्पङ्गुप्रायं कुमानुषम् ॥ ४ ॥

अन्वयः—एते विहङ्गमा वाञ्छितम् उड्डीय यान्तः वरम् । पुनः पक्षहीनत्वात् पङ्गुप्रायम् कुमानुषम् न वरम् ॥ ४ ॥

सुधा—उड्डीयेति । एते = इमे । विहङ्गमाः = पक्षिणः । वाञ्छितम् = यथेष्टम् । उड्डीय = उत्पत्य । यान्तः = गच्छन्तः । वरम् = श्रेष्ठम् । पुनः = भूयः । पक्षहीनत्वात् = पुंखाभावात् । पङ्गुप्रायम् = पङ्गुवत् । कुमानुषम् = कुपुरुषत्वम् । न वरम् ॥ ४ ॥

हिन्दी—और भी—यह पक्षी मन चाहे स्थान को उड़ कर जाते हुये अच्छे हैं, परन्तु पंखहीन होने के कारण पङ्गुवत् निन्दनीय मानव जीवन अच्छा नहीं है ।

टिप्पणी—यद्यपि "मनोरपत्यं स्त्रीमानुषी पुमान्मानुषः" इस व्याख्या से 'कुमानुषम्' में पुंलिग का प्रयोग होना चाहिए तथापि लोकाश्रयत्व से दिया गया नपुंसक लिंग भी उपयुक्त है । कविभवभूति ने भी इसी प्रकार प्रयोग किया है—

अद्वैतं सुखदुःखयोरनुगतं सर्वास्ववस्थासु यद्विश्रामो हृदयस्य यत्रजरसा यस्मिन्नहार्यो रसः ।
कालेनावरणात्ययात्परिणतेयत्स्नेहसारस्थितं भद्रं तस्य सुमानुषस्य कथमप्येकं हि तद्दुर्लभम् ॥

इति चिन्तयन्ती गतेष्वपि तेषून्मुखी तां दिशमनुविस्मयविस्फारलोचना निस्पन्दतया काष्ठकल्पामवस्थां दधाना चिरात्सखीभिः सम्बोध्य स्वगृहमनीयत ।

सुधा—इति चिन्तयन्तीति । इति = एवम् । चिन्तयन्ती = विचारयन्ती । तेषु = पक्षिषु । अपि = प्रयातेष्वपि । ताम् दिशम् अनु=पक्षिगमनदिशा पश्चात् उन्मुखी = ऊर्ध्वमुखी । विस्मयविस्फारलोचना—विस्मयेन = आश्चर्येण विस्फारिते = प्रस्फुटिते लोचने = नयने यस्यास्तथा । निस्पन्दतया = स्तब्धतया । काष्ठकल्पाम् = यष्टिसमाम् । दशाम् = अवस्थाम् । दधाना = बिभ्राणा । चिरात् = बहुकालात् । सखीभिः = सखीजनेन सम्बोध्य = आहूय । स्वगृहम् = आत्मसदनम् । अनीयत = अप्राप्यत ।

हिन्दी—इस प्रकार सोचती हुई, उन पक्षियों के उड़कर चले जाने पर भी उसी दिशा की ओर आश्चर्य से आंखे फैलाकर देखती हुई, चुपचाप (निश्चल) काठ के समान अवस्था धारण करती हुई, देर तक सखियों द्वारा बुलाकर वह अपने घर पहुँचाई गई ।

ततः प्रभृति च तस्याः सरलीभवन्ति निश्वासा न हासाः, स्खलन्ति वाचो न शुचः वर्धते तन्द्रा न निद्रा, द्रवति स्वेदाम्भो न स्तम्भः, मन्दायते स्वरो न स्मरः, वाञ्छा चन्दनाय न स्पन्दनाय, सन्तापशान्तये तद्गुणादानं न स्नानम्, प्रीयते हारो नाहारः, सुखायाङ्गे लगन्नुद्यानप्रभञ्जनो न जनः ।

सुधा—ततः प्रभृतीति । ततः प्रभृति = तद्दिनादारभ्य । तस्याः = दमयन्त्याः । निःश्वासाः = उच्छ्वासाः एव सरलीभवन्ति = सुकराः अभवन् हासाः = हासविलासाः सुकराः नासन् । वाचः = गिरः । स्खलन्ति = स्खलिताः जाताः । शुचः—चिन्ताः न स्खलन्ति । तन्द्रा = आलस्यम् । वर्धते = एधते । निद्रा न वर्धते । स्वेदाम्भः = स्वेद जलम् (पसीना) द्रवति स्रवति । स्तम्भः = स्थिरत्वम् न द्रवति । स्वरः = ध्वनिः । मन्दायते = मन्दो भवतिस्म । स्मरः = कामपीडा न मन्दायते । चन्दनाय = शैत्यर्थं चन्दन प्राप्त्यै । वाञ्छा = अभिलाषा । न स्पन्दनाय = इतस्ततः भ्रमणाय न वाञ्छा । तद्-गुणादानम् = नलगुणश्रवणम् । सन्तापशान्तये = तापशयनकारणाय । स्नानम् न = स्नान-करणं तापशान्तिकारणं न । हारः = स्रक् । प्रीयते = रोचते । आहारः = अशनम् न रोचते । अङ्गे = शरीरे । लगन् = स्पृशन् । उद्यानप्रभञ्जनः = उद्यानपवनः । सुखाय = आमोदाय जनः = लोकः सुखाय न ।

हिन्दी—उस दिन से उस (दमयन्ती) को लम्बी लम्बी स्वांसे छोड़ना ही सरल बन गया हँसना नहीं, बोली ही लड़खड़ाने लगी, शोक कम नहीं हुआ । तन्द्रा (जँभाई लेना) बढ़ गया नींद नहीं बढ़ी । पसीना निकलने (बहने) लगा, शरीर की अकड़ नहीं गई । स्वर धीमा पड़ गया, काम पीड़ा धीमी नहीं पड़ी । चाह (शीतोपचार हेतु) चन्दन के लिए रह गई, कहीं चलने फिरने क्या हिलने डुलने को भी मन नहीं होता । सन्ताप शान्त करने के लिए उस (नल) की कहानियां सुनना ही रह गया स्नान करना नहीं । हार रुचिकर लगते थे भोजन करने की इच्छा तक नहीं होती । शरीर को छूता हुआ उद्यान पवन ही अच्छा लगता किसी का स्पर्श तक अच्छा नहीं लगता ।

पठति च मुहुर्मुहुरिमं श्लोकम्—

विश्राम्यन्ति न कुत्रचिन्न च पुनर्मुह्यन्ति मार्गेष्वपि
प्रोत्तुङ्गे विलगन्ति नान्तरतरुश्रेणीशिखापञ्जरे ।
खिद्यन्ते न मनोरथाः कथममी तं देशमुत्कण्ठया
धावन्तः पथि न स्खलन्ति विषमेऽप्यास्ते स यस्मिन्प्रियः ॥ ५ ॥

अन्वयः—इमे मनोरथाः उत्कण्ठया तम् देशम् धावन्तः कुत्रचित् न विश्राम्यन्ति, पुनः मार्गेषु अपि न मुह्यन्ति प्रोत्तुङ्गे अन्तरतरुश्रेणीशिखापञ्जरे न विलगन्ति, न खिद्यन्ते । विषये अपि पथि यस्मिन् स प्रियः आस्ते, न स्खलन्ति ॥ ५ ॥

सुधा—विश्राम्यन्तीति । इमे = एते । मनोरथाः—मनसि रथाः = संकल्पाः । उत्कण्ठया = उत्सुकतया । तम् देशम् = तत्स्थानम् । धावन्तः = द्रुतं व्रजन्तः । कुत्रचित् = क्वापि न विश्राम्यन्ति = विश्रामं न कुर्वन्ति । पुनः = भूयः । मार्गेषु = वर्त्मसु अपि । न

मुह्यन्ति = मूर्च्छिता न भवन्ति । प्रोत्तुङ्गे = अत्युन्नते । अन्तरतरुश्रेणीशिखापञ्जरे— अन्तरे = मध्ये तरूणाम् = पादपानाम् श्रेण्यः = पंक्तयः, तासां शिखाः = शिखराणि एव- पञ्जरम् = जालम् तस्मिन् । न विलगन्ति = निरुद्धाः न भवन्ति । न च खिद्यन्ते = खिन्नाः भवन्ति । विषये = असमे अपि । पथि = मार्गे । यस्मिन् पथि = यद्वत्मर्नि । सः = असौ । प्रियः = प्रियतमः नलः । आस्ते = वर्तते (तम्) न स्खलन्ति = विचलिताः न भवन्ति । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ५ ॥

तथा बार-बार यह श्लोक पढ़ने लगती थी—

हिन्दी—(मेरे) यह मनोरथ उत्सुकता से उस ओर दौड़ पड़ते हैं, कहीं विश्राम तक नहीं लेते हैं पुनः मार्ग में कहीं मूछित (थकने से) नहीं होते । अन्दर पादप पंक्तियों की ऊँची शिर रूपी पञ्जर (जाल) में फँस कर खिन्न नहीं होते हैं । उस विषम पथ (टेढ़े मेढ़े मार्ग) में जहां वह प्रियतम (नल) है, कभी विचलित नहीं होते हैं ॥ ५ ॥

तेऽपि राजहंसाः शशाङ्कधरेषु, सप्रपञ्चपञ्चाननेषु, शिवरूपेषु, वनेषु, सुशोभां कौमुदीं दधत्सु, शश्वदनुकृतसामुद्रवृद्धिषु, चन्द्रमण्डलरूपेष्विव सरःसलिलेषु विहरन्तस्तुहिनाद्रिकुञ्जानिव सत्त्रिपथगान्नगनगरग्रामाग्रहारपत्तनप्रदेशानुल्लङ्घयन्तः कतिपयदिवसैरासेदुरुद्यानं निषधायाः ।

सुधा—तेऽपीति । ते = अमी । राजहंसाः अपि = राजहंसखगा अपि । शशाङ्कधरेषु—शशाः = शशकाः अङ्के = क्रोडे यस्यास्तथाभूता धरा = भूमिर्येषु (शिवपक्षे—चन्द्रधरेषु) । सप्रपञ्चपञ्चाननेषु—प्रपञ्चेन सहिताः सप्रपञ्चाः = सच्छद्मानः पञ्चाननाः = सिंहाः येषु (शिवपक्षे—साङ्गवेद पञ्चमुखेषु) । शिवरूपेषु = कल्याणाकृतिषु (शिवपक्षे = हररूपेषु) वनेषु = काननेषु । शश्वत् = निरन्तरम् । अनुकृतसामुद्रवृद्धिषु—अनुकृतम् = अनुकरणम् = अनुहरणम् सागरी वृद्धिषु (चन्द्रपक्षे—अनुपश्चात् कृता सामुद्री वृद्धिर्येन । चन्द्रागमो हि जलधिविवृद्धये । न विद्यन्ते नावो यत्र तदनु, अनु यथा भवति एवं कृतवृद्धिषु । सुशोभाम् शोभायुक्ताम् । कौमुदीम् कुमुदानामियं ताम् पक्षे = चन्द्रिकाम् । दधत्सु = धारयत्सु । चन्द्रमण्डलरूपेषु इव चन्द्रमण्डलाकार वृत्तरूपेषु इव सरः सलिलेषु = सरोवरजलेषु । विहरन्तः = विचरन्तः तुहिनाद्रिकुञ्जानि इव = हिमालयकुञ्जानीव । सत्त्रिपथगात् = सत्राणि = ब्राह्मणादीनां भोजनानि यज्ञाः वा विद्यन्ते येषु । ते च ते पन्थानश्च सत्त्रिपथाः तान्गच्छन्ति = प्राप्नुवन्ति इति तान् । हिमाद्रिकुञ्जानि सह त्रिपथगया गङ्गया । नग—नगरग्रामाग्रहारपत्तनप्रदेशान् = पर्वतनगरग्राम-दानभूमिपत्तनक्षत्राणि । उल्लङ्घयन्तः = उल्लङ्घनं कुर्वन्तः । कतिपयदिवसैः = कतिचिद्दिनैः । निषधायाः = निषधदेशस्य । उद्यानम् = आरामम् । आसेदुः = प्रापुः !

हिन्दी—वे राजहंस भी खरगोशों की निवास भूमिवाले (चन्द्र धारण किये हुए शिवजी की निवास भूमिवाले) प्रपञ्चयुक्त सिंहों वाले (साङ्गवेदयुक्त पांच मुखों वाले शिव के निवास से युक्त) कल्याणरूप (शिवरूप) वनों में शोभायुक्त कौमुदी (चन्द्रिका) धारण करते हुए, निरन्तर समुद्र वृद्धि का अनुकरण करने वाले, चन्द्र-

मण्डलाकार तड़ागों के जल में विहार करते हुए हिमालय पर्वत के कुञ्जों वाले, यज्ञों से शोभित मार्गों वाले (गंगा नदी के मार्ग में पड़ने वाले) पर्वत-नगर-गांव दानभूमि में तथा नगर क्षेत्रों को पार करते हुए कुछ ही दिनों में निषध नगर के उद्यान में पहुँच गये ।

टिप्पणी—अग्रहारः—अग्रम् = ब्राह्मणभोजनम्, तदर्थं ह्रियते = राजधनात् पृथक् क्रियते क्षेत्रादिः, इति अग्रहारः । (नीलकण्ठः) अर्थात् ब्राह्मण भोजन के लिए राजकीय धन से पृथक् किया गया क्षेत्रादि अग्रहार कहलाता है । आचार्य श्री तारानाथजी ने इसे और भी स्पष्ट कर दिया है:—

क्षेत्रोत्पन्नशस्यादुद्धृत्य ब्राह्मणोद्देश्येन स्थाप्यं धान्यादिः, गुरुकुलावृत्तब्रह्मचारिणे देयः क्षेत्रादिः, ग्रासभेदश्च । (वाचस्पत्यम्—तारानाथः) अर्थात् खेत से उपजे हुए अनाज से निकाल कर ब्राह्मण को देने के उद्देश्य से रखा गया अनाज आदि अग्रहार कहलाता है । भोजन से निकाला गया प्रथम ग्रास (कवल) को भी अग्रहार कहते हैं ।

क्रीडितुमारभन्त च स्वच्छन्दम् ।

सुधा—क्रीडितुमिति । च—तथा । स्वच्छन्दम् = स्वैरम् । क्रीडितुम् = क्रीडां कर्तुम् (ते) आरभन्त = प्रारेभिरे ।

हिन्दी—तथा स्वच्छन्दता से उन्होंने खेलना आरम्भ कर दिया ।

अथ तेषामन्यतमामवलोक्य क्रीडातडागपङ्कजपञ्जरे राजहंसीमागत्य त्वरया हंसदर्शनोत्सुकं सरोरक्षिका राजानं व्यजिज्ञपत्—

सुधा—अथेति । अथ = अनन्तरम् । तेषाम् = राजहंसानाम् । अन्यतमाम् = एकाम् राजहंसीम् क्रीडातडागपङ्कजपञ्जर—क्रीडातडागस्य = क्रीडासरोवरस्य पंकजानामेव—कमलानामेव पञ्जरम् = जालम् तस्मिन् । अवलोक्य = वीक्ष्य । त्वरया = द्रुतम् । आगत्य = एत्य । सरोरक्षिका = तडागपालिका । हंसदर्शनोत्सुकम् —हंसस्य दर्शनम्, तस्मै उत्सुकस्तम् हंसावलोकनोत्कण्ठितम् । राजानम्=भूपालम् । व्यजिज्ञपत्=असूचयत् ।

हिन्दी—तदनन्तर उनमें से एक राजहंसी को क्रीड़ा सरोवर के कमल जाल में देखकर शीघ्रता से आकर तडाग की रक्षा करने वाली ने हंस दर्शन के लिए उत्सुक राजा को सूचित किया ।

देव, हंसवार्त्तामनुदिनं पृच्छति देवस्तदद्य काचित् ।
कुरुते नालकवलनं दूरं विक्षिपति गर्भजम्बालम् ।
त्वदरिवधूरिव राजन्नुद्यानसरोगता हंसी ॥ ६ ॥

अन्वयः—राजन्, त्वद् अरिवधूः, इव उद्यान सरोगता हंसी नालकवलनम् कुरुते, गर्भजम्बालम् दूरम् विक्षिपति ।

सुधा— देव इति । देव = हे महाराज ! देवः = भवान् । अनुदिनम् = नित्यम् । हंसवार्ताम् = हंसवृत्तान्तम् । पृच्छति । तत् = अतः । अद्य = अस्मिन् दिने काचित्=कापि—राजन् = हे नृप । त्वत् = तव । अरिवधूः इव = शत्रु स्त्रीरिव । उद्यान सरोगता = उपवनतडागगता । हंसी = राजहंसी । नालकवलनम् = विसकाण्डग्रासम् । कुरुते =

विदधाति । गर्भजम्बालम्–गर्भोमध्ये यो जम्बालः = कर्दमः, तम् दूरम् विक्षिपति = परिक्षिपति । अरिवधूस्तु–उद्यानेन = पलायनेन सरोगता=रोगवत्ता यस्याः यथा अलकस्य = केशसमूहस्य वलनम् = बन्धनम् न करोति, गर्भजम् = उदरजातम् स्वपुत्रमपि दूरम् विक्षिपति । आर्यावृत्तम् ॥ ६ ॥

हिन्दी—हे देव, आप नित्य हंस समाचार पूछते रहते हैं सो आज कोई—

राजन् ! उद्यान तडाग में आई हुई हंसी कमलनाल खा रही है तथा अन्दर के कीचड़ को वैसे ही दूर फेंक रही है जैसे अरिपत्नी (भय से) जोर से भागने के कारण सरोगता (रोगावस्था प्राप्त कर) बालों को नहीं ठीक करती (बांधती) है तथा अपने गर्भ से उत्पन्न हुए बालक को भी फेंक देती है—उसका मोह नहीं करती है ॥६॥

अपि च—

अभिलषति नालमशनं स्वपिति नवाम्भोजपत्रशयनेऽपि ।
नीरागमना नृपते तव रिपुवनितायते हंसी ॥ ७ ॥

अन्वयः—नृपते, नीरागमना हंसी नालम् अशनम् अभिलषति, नवाम्भोजपत्रशयने स्वपिति अपि, तव रिपुवनितायते ॥ ७ ॥

सुधा—अभिलषतीति । नृपते = हे भूपाल । नीरागमना–नीरे–जले आगमनं यस्याः = जलागता । हंसी = राजहंसी । नालम् = विसकाण्डम् । अशनम् = आहारम् । अभिलषति = वाञ्छति । नवाम्भोजपत्रशयने–नवानाम् = नूतनानाम्, अम्भोजपत्राणाम् = कमलदलानाम् शयनम् = शय्या, तस्मिन् । स्वपिति अपि = शयनमपि करोति । सा तव = ते । रिपुवनितायते = शत्रुपत्नीवद् आचरति । यथा शत्रुपत्नी नीरागमना = नीराग = वैराग्योपेतम् मनः = चेतः यस्या । अतएव अलम् = अत्यर्थम् । अशनम् = आहारम् नाभिलषति = नेच्छति । न च = नापि अम्भोजशयने = कमलदलतल्पेऽपि । स्वपिति = शेते । आर्यावृत्तम् ॥ ७ ॥

हिन्दी—और भी—

हे राजन् ! जल में आई हुई राजहंसी कमलनाल के आहार की अभिलाषा करती है, नूतन कमलदलों की शय्या पर सोती भी है । (वह) तुम्हारे शत्रुओं की पत्नियों के समान आचरण कर रही है । शत्रु पत्नी पंथ वैराग्यपूर्ण चित्त होकर जी भरकर भोजन भी करना नहीं चाहती है अथवा कमलपत्र की शय्या पर भी उसे नींद नहीं आती है ॥ ७ ॥

राजापि तस्याः श्लिष्टार्थमिदमार्यायुगलमवधारयन्स्तोकस्मितसुधाधवलिताधरपल्लवः 'लवङ्गिके, यथा कथयसि तथा तेऽप्यागता हंसाः कथमन्यथा तस्याः खल्वेकाकिन्याः संभवः' इति तद्वार्त्तया यावदास्ते ।

सुधा—राजापीति । राजा अपि = नृपतिरपि । तस्याः = सरोवरपालिकायाः । श्लिष्टार्थम् = श्लेषात्मकम् । इदम् = एतत् । आर्यायुगलम् = आर्याद्वयम् । अवधारयन् = शृण्वन् स्तोकस्मितसुधाधवलिताधरपल्लवः—स्तोकम् = स्वल्पम् स्मितम् = मृदुहसितम्

इव सुधा = अमृतम्, तया धवलितौ अधरपल्लवौ = ओष्ठदलौ यस्य तथा। लवङ्गिके यथा = यथाप्रकारम्। कथयसि = वर्णयसि। तथा = तत्प्रकाराः ते हंसा अपि = हंसपक्षिणः अपि। आगताः = आयाताः। अन्यथा तस्याः = हंस्याः। खलु = नूनम्। एकाकिन्याः कथं सम्भवः = कथं सम्भाव्यते। इति = एवम्। तद् वार्तया = हंसीकथया। यावत् आस्ते = वर्तते।

हिंदी—कुछ मन्द मुस्कानरूपी सुधा से धवलित अधर पल्लवों वाला भी उसके श्लेषार्थक दो आर्याश्लोकों को सुनते हुए—हे लवङ्गिके जैसा तुम कह रही हो उसी प्रकार के हंस आ भी गये हैं। अन्यथा वास्तव में उस अकेली हंसी की सम्भावना कैसे की जा सकती है।" जिस समय यह वार्ता कर ही रहे थे कि—

तावन्नीलोत्पलदलदीर्घलोचना चन्द्रमुखी बन्धूककुसुमकान्तदन्तच्छदा नीलांशुकपटीं परिदधाना पक्वकलमञ्जरीगौराङ्गी प्रकाशहासा हंसैरनुगम्यमाना। मूर्त्तिमती शरदिव वनपालिका प्रविश्य।

सुधा—तावदिति। तावत् = तत्कालम्। नीलोत्पलदलदीर्घलोचना—नीलोत्पलदलमिव दीर्घे लोचने यस्यास्तथा = नीलकमलपत्रायताक्षी चन्द्रमुखी = विधुवदनी। बन्धूककुसुमकान्तदन्तच्छदा—बन्धूककुसुमस्य = बन्धूकपुष्पस्य कान्तिरिव दन्तच्छन्दम् दन्तकान्तिः यस्यास्तथा। नीलांशुपटीम् = नीलसाटिकाम्। परिदधाना = विभ्राणा पक्वकलमञ्जरीगौराङ्गी-पक्वशालिर्हि गौरः स्यात्, अतस्तन्मञ्जरीवद् गौरमङ्गं यस्यास्तथा। प्रकाशहासा—प्रवृद्धाः काशाः = काशपुष्पाण्येव हासो यस्यास्तथा। हंसैः = हंसपक्षिभिः अनुगम्यमाना = अनुयाता। मूर्तिमती = साकारा। शरद् इव = शरदृतुरिव। वनपालिका = उद्यानरक्षिका। प्रविश्य प्रवेशं कृत्वा।

हिन्दी—उसी समय नीलकमल दल के समान विशाल नेत्रोंवाली, चन्द्रमुखी, बन्धूक पुष्प की कान्ति के समान उज्ज्वल दांतों वाली, नीली साड़ी पहने हुए, पके सुन्दर धानों की बालियों के समान गौर वर्ण वाली विकसित काश पुष्प के समान हास युक्त, हंसों के पीछे-पीछे आती हुई मूर्तिमती शरद् ऋतु के समान वनपालिका ने प्रवेश कर—

'देव, सोऽयं कथमप्यागतो रणरणककारणमपराधी विहङ्गः' इत्यभिधाय तं राजहंसमुभयकरकमलाञ्जलिगतमुत्फुल्लपाण्डुपङ्कजार्धमिव पुरः पादारविन्दयोर्निधाय राज्ञः प्रणाममकरोत्।

सुधा—देव इति। देव = राजन्! रणरणककारणम् = उत्कण्ठोत्पादकः। अपराधी = अपराधशीलः। कथम् अपि = यथाकथम्। आगतः = आयातः। सः अयम् = स एषः। विहङ्गः = खगो राजहंसः अस्ति। इति = एवम्। अभिधाय = कथयित्वा। तम् = एतम्। राजहंसम् = हंसपक्षिणम्। उभयकरकमलाञ्जलिगतम् = उभयहस्तपद्माञ्जलिकृतम्। उत्फुल्लपाण्डुपङ्कजार्धम् इव—अर्द्धविकसितश्वेतकमलमिव। पुरः = समक्षम्! निधाय = धृत्वा राज्ञः = नृपस्य पादारविन्दयोः चरणकमलयोः। प्रणामम् अकरोत् = प्रणनाम।

हिन्दी—हे राजन् "उत्सुकता उत्पन्न करनेवाला अपराधी यह वही हंस है" यह कहकर दोनों करकमलों की अंजलि में रखे अर्द्ध उत्फुल्ल श्वेत कमल के समान उस राजहंस को सामने रखकर राजा के चरणकमलों में प्रणाम किया।

राजापि 'सारसिके, साधु कृतम्। तत्क्रियतामशून्यः स्वाधिकारः। गम्यतामिदानीं 'यथास्थानम्' इत्यभिधाय तुष्टिप्रदानपरितोषितां तां लवङ्गिकासहितां विसृज्य, विरलीकृतपरिजनः प्रत्युज्जीवनौषधमिव प्राणरक्षाक्षरमिव स्वस्थीकरणमणिमिवाश्वासनाभेषजमिवाह्लादनकन्दमिव तमग्रेस्थितमानन्दनिःस्पन्दपक्ष्मपालिना चिरं चक्षुषाऽवलोक्य बहुमानयन्मुग्धस्मितेन स्वागतमपृच्छत्।

सोऽपि 'देव' दर्शनामृतमनुभवतो ममाद्य स्वागतम्' इत्यभिधायोपश्लोकयाञ्चकार।

सुधा—राजेति। राजा अपि = नृपः अपि। सारसिके = तन्नाम्नि वनपालिके! साधु = शोभनम् कृतम् = विहितम्। तत् = अतः। स्वाधिकारः = स्वत्वम्। अशून्यः = पूर्णः। क्रियताम् = विधीयताम्। इदानीम् = साम्प्रतम्। यथास्थानम् = अभीष्टस्थानम्। गम्यताम् = प्रस्थानं क्रियताम्। इत्यभिधाय = एवं कथयित्वा। तुष्टिप्रदानपरितोषिताम् = उपयुक्तपुरस्कारतुष्टाम्। ताम् = एताम्। लवङ्गिकासहिताम् = लवङ्गिकापरिचारिकायुक्ताम्। विसृज्य = परित्यज्य। विरलीकृतपरिजन–विरलीकृताः = दूरीकृताः परिजनाः = सेवकाः येन तथा। प्रत्युज्जीवनौषधमिव = पुनर्जीवनदायिरसायनमिव। प्राणरक्षाक्षरमिव = जीवनरक्षावर्णमिव। स्वस्थीकरणमणिमिव = स्वास्थ्यकारकरत्नसदृशम्। आश्वासनाभेषजमिव - धैर्यौषधमिव। आह्लादनकन्दमिव = प्रसन्नतामूलमिव। अग्रेस्थितम् = पुरोवर्तिनं तम् = एतम्। आनन्दनिःस्पन्दपक्ष्मपालिना = प्रसन्नतानिःस्यन्दनिर्निमेषेण। चक्षुषा नेत्रेण। चिरम् = बहुकालम्। अवलोक्य = दृष्ट्वा। बहुमानयन् = अतिसम्मानयन्। मुग्धस्मितेन = मुग्धमृदुहासेन। स्वागतम् = स्वागतसत्कारवचनम्। अपृच्छत् = पप्रच्छ।

सः = हंसः अपि। देव = राजन्! दर्शनामृतम् = दर्शनरूपममृतम् = दर्शनसुधारसम्। अनुभवतः = अनुभवं कुर्वतः। मम = राजहंसस्य। अद्य = अस्मिन् दिने स्वागतम् अस्ति इति अभिधाय = कथयित्वा। उपश्लोकयाञ्चकार = प्रशंसयामास।

हिन्दी—राजा ने भी—"हे सारसिके! अच्छा किया। अतः अपने (पुरस्कार) अधिकार को पूरा करो। अब अपने स्थान को जाओ।" यह कहकर संतुष्टि के लिए पुरस्कार देकर लवङ्गिका सहित उसे विदा कर, सेवकों को भी वहाँ से हटाकर पुनः जीवनदायिनी औषधि के समान, प्राणरक्षावाले अक्षरों के समान, स्वस्थ बनाने वाली मणि के समान, आश्वासन भेषज सदृश आनन्दकन्द जैसे सम्मुख उपस्थित उस राजहंस को बहुत देर तक आनन्द से निर्निमेष दृष्टि से देखकर, बहुत प्रकार सम्मान करते हुए मुग्ध मन्द मुस्कान के साथ स्वागत (कुशल-क्षेम) पूछा।

उसने भी "हे देव! (आपके) दर्शनरूपी अमृत का अनुभव कर आज मेरा स्वागत हो गया है"- यह कहकर प्रशंसा करनी प्रारम्भ की।

देव—

प्रसृतकमलगन्धं नीरसंसक्तकण्ठं
धृतकुवलयमालं जातभङ्गोर्मिकं च ।
त्वयि कृतरुषि भीतास्तावदास्तां तडागं
निजमपि च कलत्रं शत्रवो नाद्रियन्ते ॥ ८ ॥

अन्वयः—प्रसृतकमलगन्धम् नीरसंसक्तकण्ठम् धृतकुवलयमालम् जातभङ्गोर्मिकम् च तडागम् त्वयि कृतरुषि शत्रवः न आद्रियन्ते । तावत् निजम् कलत्रम् अपि प्रसृतकमल-गन्धम् नीरसम् सक्तकण्ठम् धृतकुवलयमालम् जलभङ्गोर्मिकम् न आस्ताम् ॥ ८ ॥

सुधा—प्रसृतेति । प्रसृतकमलगन्धम्—प्रसृतः कमलानां गन्धो यत्र तत् = व्याप्तपद्म-सुरभिम् नीरसंसक्तकण्ठम्–नीरेण = जलेन, संसक्तो युक्तो कण्ठः पालिप्रान्तो यस्य तत् । धृतकुवलयमालम् = धृता कुवलयानां माला येन तत् = धृतनोलोत्पलपंक्तिम् जाता = उत्पन्ना भङ्गास्तरङ्गाः = ऊर्मयः कल्लोलं यत्र तज्जातभङ्गोर्मिकम् च तडागम् = सरोवरम् । त्वयि = भवति । कृतरुषि = कृतकोपे । भीताः = त्रस्ताः । शत्रवः = अरयः । तावत् । न आद्रियन्ते = न सत्कुर्वन्ति । यावत् कलत्रम् = स्त्रीजनम् । प्रसृतः के = मूर्ध्नि मलगन्धो यस्यास्ताम् नीरसम्–निर्गतो रसः = वक्त्रामृतकलाशृङ्गारादिर्वा यत्र । तथा सक्तः = अन्तर्लग्नः कण्ठो यस्य तत् । तथा धृता कुत्सित वलयानां=सुवर्णाद्यभावात्काचादि वलयानाम् माला येन तत् । तथा जातभङ्गा = भग्ना ऊर्मिका = अङ्गुलीयकम् यस्य तत् । न आस्ताम् । मालिनीवृत्तम् ॥ ८ ॥

हिन्दी—हे देव, व्याप्त कमल गन्धवाले किनारे तक जल से भरे हुए, कुवलय (कमल) की पंक्तियों को धारण किये हुए, टेढ़ी-मेढ़ी लहरों से तरङ्गित होने वाले तालाब को कौन कहे तुम्हारे क्रुद्ध हो जाने पर भयभीत बने हुए अपनी पत्नियों को भी आदर नहीं देते हैं । जैसे (आपके क्रोध करने पर) शत्रु शिर में फैली हुई दुर्गन्ध वाली, शृङ्गारादि से रहित, दुर्बल कण्ठ वाली तथा सुवर्णादि के अभाव में कांच के वलय धारण किये हुये तथा जिनके हाथों में ऊर्मिका (अंगूठी) भी नहीं रही हैं ऐसी अपनी पत्नी का भी आदर नहीं करते हैं ॥ ८ ॥

किं चान्यत्—

असमहरिततीरं विस्रजम्बालशेषं
स्फुटकुमुदपरागोल्लाससंपद्वियुक्तम् ।
वयमिह बहुशोकं दृष्टवन्तो वनान्ते
त्वदरियुवतिलोकं ग्रीष्ममासे सरश्च' ॥ ९ ॥

अन्वयः—इह असमहरिततीरम् विस्रजम्बालशेषम् स्फुटकुमुदपरागोल्लाससम्पद्वि-युक्तम् वनान्ते ग्रीष्ममासे वयम् त्वद अरियुवति लोकम्, सरः च बहुशोकम् दृष्टवन्तः ॥ ९ ॥

सुधा—असमेति । इह = अत्र । असमहरिततीरम्—हरितते: = सिंहपद्धतेः सका-शाद् ईरः = क्षेत्रत्रासो हरिततीरः, असमः = विषमः हरिततीरो यस्य । अथवा मा =

लक्ष्मीः, तया सह समम्, न सममसमम् = अश्रीकम्। यथा हरिततीः = वानरपङ्क्तीः ईरयति = क्षिपति यस्तम्, यत्तद्वा। विस्रजम्बालशेषम्—विगतस्रजं विस्रजम् = विगत-मालम्। तथा बालशेषं हतभर्त्रादित्वात्। स्फुटकुमुदपरागोल्लाससम्पद्वियुक्तम्—स्फुटं कु = कुत्सा यस्य तं स्फुटकम्, तथा उद्गतोपरागस्य = रागाभावस्योल्लासो यस्य। स चासौ सम्पदि युक्तश्च। अथवा स्फुटा कुत्सितोदरभरणादिमात्रजामुद्यस्य स स्फुटकमुत तथापगतो रागोल्लासो यस्य। स्फुटकुमुच्चासावपरागोल्लासश्च स्फुटकुमुदपरागोल्लासः। स चासौ सम्पद्वियुक्तश्च। वनान्ते = अरण्यप्रान्ते। ग्रीष्ममासे = उष्णकाले वयम्। त्वद् = तव अरियुवतिलोकम् = शत्रुपत्नीजनम्। तडागम् च बहुशोकम्—बहुः = अधिकम् शोकः = दुःखम् यस्य = अतिदुःखम्। दृष्टवन्तः = अवलोकितवन्तः। ईदृशं त्वच्छत्रुस्त्री-जनमपश्याम। ग्रीष्मे सर इव। तदपि कीदृक्। समं हरितं तीरं यस्य तत्समहरिततीरम्, न समहरिततीरमसमहरिततीरम् = विषमं शुष्कं च तीरं यस्य इत्यर्थः। विस्रजामगन्धिक-जम्बालः = कर्दम एव शेषो यत्र। तथा—विकसितकुमुदरेणूल्लाससमृद्धिशून्यम्। नास्तिकं = जलम् यत्र इत्येकम्। बहुशः इति क्रियाविशेषणम्॥ ९॥

हिन्दी—बल्कि और भी—विषय (भयंकर) सिंहसमूह से भयभीत की जा रही, परित्यक्त (पतिहीन) होने के कारण माला आदि श्रृङ्गाररहित, केवल जिसके बच्चे ही शेष रह गये हैं, और उदरभरणादि मात्र हो जाने से कुत्सित प्रसन्नता को प्राप्त हुई तथा अपगत रागोल्लास वाली व सम्पत्तिरहित, प्रान्त में अतिशोकाकुल तुम्हारी शत्रु-पत्नी तथा ग्रीष्मकाल में ऊँचे-नीचे एवं सूखे तटवाले जिसमें कीचड़मात्र शेष रह गयी हो, एवम् विकसित कुमुदपरागोल्लास की सम्पत्ति जिसकी नष्ट हो चुकी है ऐसे जलरहित तालाब को हमने बहुत बार देखा है॥ ९॥

राजापि 'श्लेषोक्तिनिधे, तथा गृहीत्वास्मन्मनो गतवानसि, यथा सुख-संवित्तिशून्याः संतापारम्भिणो रणरणकाङ्कुरप्ररोहकाः कथमप्यस्माकमेतेऽति-क्रान्ता दिवसाः।

सुधा—राजापीति। राजा अपि = नृपतिरपि। हे श्लेषोक्तिनिधे = अयि श्लिष्टवचन-सागर! अस्मन्मनः = मम चेतः। तथा गृहीत्वा = तेन प्रकारेण स्वाधीनं कृत्वा गतवान् असि = प्रयातवान् असि। यथा—सुखसंवित्तिशून्याः = सुखचेतनाहीनाः सन्तापरम्भिणः = खेदो-त्पादकाः। रणरणकाङ्कुर प्ररोहकाः = उत्कण्ठोत्पादकाः। अस्माकम् एते दिवसाः = इमे दिवसाः। कथम् अपि = केनापि प्रकारेण। अतिक्रान्ताः व्यतीताः।

हिन्दी—राजा भी (कहने लगे) हे श्लिष्टवचनों के सागर! तुम हमारे मन को इस प्रकार लेकर चले गये थे कि सुख और चेतना शून्य खेद उत्पन्न करने वाले तथा उत्कंठा प्रेरित करने वाले हमारे यह दिन किस प्रकार व्यतीत हुए।

तत्कथय। का नामाभिनन्दनीया सा दिक् यस्यां विहारमकरोः। के ते सफलचक्षुषो जनाः यैश्चिरमालोकितोऽसि। के लब्धसुभाषितामृतरसास्वादाः, यैः संभाषितोऽसि। के प्राप्तप्राणितव्यफलाः यैः सह गोष्ठीमनुष्ठितवानसि।

सुधा—तदिति । तत् = अतः । कथय = भण । सा = एषा । अभिनन्दनीया = स्वागतयोग्या का नाम दिक् = का दिशाऽस्ति । यस्यां = यद्दिशि (त्वम्) विहारम् = विचरणम् अकराः = कृतवान् असि । च ते सफलचक्षुषः = सफलनयनाः । के जनाः = के लोकाः यैः = जनैः । चिरकालम् = अतिकालम् । आलोकितः असि = दृष्टः असि । लब्धसुभाषितामृतरसास्वादाः = सुभाषितमेवामृतरसम्, तस्य स्वादम्, लब्धम् = प्राप्तम् सुभाषितामृतरसास्वादम् = सूक्तिसुधारसानन्दम् यैः तादृशाः जनाः के सन्ति । यैः जनैः सम्भाषितः = संकथितः असि । प्राप्त प्राणितव्यफलाः = लब्धासफलजीवितफलाः के जनाः । यैः सह = साकम् । गोष्ठीम् = समाम् । अनुष्ठितवान् असि = कृतवान् असि ।

हिन्दी—अत एव कहिये । वह कौन-सी अभिनन्दनीय दिशा है जिसमें तुमने विचरण किया । और वे सफल नेत्रों वाले लोग कौन हैं जिन्होंने बहुत समय तक देखा है । सूक्तिसुधारस का आस्वादन करने वाले वे कौन लोग हैं जिन्होंने तुम से बातचीत की है । किन लोगों ने अपने जीवन का फल प्राप्त किया है जिनके साथ तुमने गोष्ठी की है ।

स्पृहणीयसंगम, गते त्वयि तर्कशास्त्रमिव प्रस्तुतपरमोहम्, व्याकरणमिव भूतनिष्ठमिदमस्माकमासीन्मनः ।

सुधा—स्पृहणीयेति । हे स्पृहणीसंगम—स्पृहणीयः = आकाङ्क्षणीयः संगमः = संगतिः यस्य तत्सम्बुद्धौ । त्वयि गते त्वत्प्रयाते । तर्कशास्त्रम् इव = न्यायशास्त्रमिव । प्रस्तुतपरमोहम् उत्कृष्टमोहम्, परमः = विशिष्टः ऊहः = विचारो यत्र तथा । व्याकरणमिव = व्याकरणशास्त्रसदृशम् । इदम् = एतत् । अस्माकम् = मनः-चेतः । भूतनिष्ठम्—भूतः संजाता निष्ठा यत्र, भूतार्थे निष्ठाः = प्रत्ययः यत्र वा । आसीत् = अभूत् ।

हिन्दी—हे स्पृहणीय संगति वाले हंस ! तुम्हारे चले जाने पर मेरा मन तर्कशास्त्र में परम मोह (अथवा उत्कृष्ट विचार) के समान, व्याकरणशास्त्र में भूतार्थ निष्ठ (प्रत्यय) के समान भूतनिष्ठ (क्लेशयुक्त) हो गया ।

टिप्पणी—व्याकरणशास्त्र में भूत अर्थ में निष्ठा प्रत्यय होते हैं । क्त तथा क्तवतु प्रत्ययों को निष्ठा कहा जाता है ।

'तदेह्येहि' इत्यभिधाय स्वयं करकमलतलेनोत्क्षिप्य सस्नेहं परामृशत् ।

सुधा—तदिति । तत् = अतः । एहि एहि = आगच्छ, आगच्छ । इति अभिधाय = एवं कथयित्वा स्वयम् = आत्मना । करकमलतलेन = पाणिपद्मेन । उत्क्षिप्य = उत्थाय । सस्नेहम् । सप्रेम । परामृशत् = पस्पर्श ।

हिन्दी—अतः 'आओ, आओ । यह कहकर स्वयं करकमल से उठाकर सप्रेम स्पर्श किया ।

सोऽपि 'एष महान्प्रसादो यदेवमनुकम्पतेऽस्मान्देवः' इत्यभिधाय गमनादारभ्य दमयन्तीदर्शनालापव्यतिकरमशेषं हारलतार्पणपर्यन्तमाचचक्षे ।

सुधा—सोऽपीति । सः = हंसः अपि । एषः = अयम् महान् प्रसादः = अतिप्रसन्नताविषयः । यत् अस्मान् । देवः = प्रभुः । एवम् = इत्थम् । अनुकम्पते = कृपां करोति ।

इत्यभिधाय = एवं कथयित्वा । गमनात् = प्रस्थानात् । आरभ्य = प्रारभ्य । दमयन्ती दर्शनालापव्यतिकरम् = दमयन्त्याः = भीमपुत्र्याः दर्शनम् आलापश्च, तयोर्व्यतिकरम् = विषयकम् । अशेषम् = निखिलम् । हारलतार्पणपर्यन्तम् = मुक्तालतार्पणान्तम् आचचक्षे = अकथयत् ।

हिन्दी—उस हंस ने भी 'यह महती प्रसन्नता की बात है कि आप मुझ पर इस प्रकार कृपा कर रहे है ।' यह कहकर प्रस्थान से लेकर दमयन्ती-दर्शन तथा उससे वार्तालाप विषयक पूर्ण हारलता अर्पण पर्यन्त वृत्तान्त कह सुनाया ।

आख्याय च चरणेनैकेन ग्रीवाग्रादाकृष्य तां तथास्थितामेव मुक्तावलीमिदमवादीत् ।

सुधा—आख्यायेति । च = तथा । आख्याय = कथयित्वा । एकेन चरणेन = एकपादेन ग्रीवाग्रात् = ग्रीवायाः = कण्ठदेशस्य अग्रम् = अग्रभागस्तस्मात् । ताम् = एताम् । यथाविधाम् = उपर्युक्ताम् । मुक्तावलीम् = हारलताम् । आकृष्य = विकृष्य । इदम् = एतत् । अवादीत् = अभणत् ।

हिन्दी—यह कहकर एक चरण से ग्रीवा के अग्रभाग से उपर्युक्त (वर्णित) मुक्तावली को खींच (उतार) कर यह कहा ।

'उन्मादिनी मदनकार्मुकमण्डलज्या
सौभाग्यभाग्यपरवैभववैजयन्ती ।
मुक्तावली कुलधनं नरनाथ सैषा
कण्ठग्रहं तव करोतु भुजेव तस्याः ॥ १० ॥

अन्वयः—नरनाथ, उन्मादिनी मदनकार्मुकमण्डलज्या सौभाग्यभाग्यपरवैभववैजयन्ती कुलधनम् एषा सा मुक्तावली तव कण्ठग्रहम् तस्याः भुजा इव करोतु ॥ १० ॥

सुधा—उन्मादिनीति । नरनाथ = हे नरेन्द्र । मदनकार्मुकमण्डलज्या—मदनस्य = कामदेवस्य यत् कार्मुकम् = धनुः, तस्य मण्डलज्या = प्रत्यञ्चा, तादृशी । सौभाग्यभाग्यपरवैभववैजयन्ती—सौभाग्यस्य भाग्यस्य च परा = उत्कृष्टा या वैभववैजयन्ती = ऐश्वर्यपताका, तादृशी । कुलधनम् = कुलसम्पत्तिरिव । एषा = इयम् सा मुक्तावली = हारलता तव = ते । कण्ठग्रहम् = गलालिङ्गनम् । तस्याः = दमयन्त्याः । भुजा इव = बाहुरिव । करोतु = विदधातु । वसन्ततिलकावृत्तम् ॥ १० ॥

हिन्दी—हे नरनाथ ! उन्मत्त बना देने वाली, मदन के धनुर्मण्डल की प्रत्यञ्चा (डोरी) के समान, सौभाग्य तथा भाग्य की उत्कृष्ट ऐश्वर्यपताका जैसी कुलधनरूपिणी यह मुक्तावली तुम्हारे गले का आलिङ्गन उस (दमयन्ती) को भुजा के समान करे ॥ १० ॥

अपि च—

प्रेमप्रपञ्चनवनाटकसूत्रधारी मूर्त्ता मनोभवनृपस्य नियन्त्रणाज्ञा ।
तस्याः स्वयंवरपरिग्रहहेतुरेषा हारावली हृदि पदं भवतः करोतु ॥ ११ ॥

अन्वयः—प्रेमप्रपञ्चनवनाटकसूत्रधारी मनोभवनृपस्य नियन्त्रणाज्ञा मूर्ती तस्याः स्वयम्वरपरिग्रहहेतुः एषा हारावली भवतः हृदि पदम् करोतु ॥ ११ ॥

सुधा—प्रेमेति। प्रेमप्रपञ्चनवनाटकसूत्रधारी—प्रेम्णः = प्रीतेः प्रपञ्चनम् रूपं नः नाटकम्, तस्य सूत्रधारी = प्रीतिविस्ताररूपनूतननाटकारम्भकर्त्री। मनोभवः एव नृपस्तस्य = मदनराजस्य। नियन्त्रणाज्ञा = निरोधाज्ञा। मूर्त्ती = प्रतिमूर्तिरूपा। तस्याः = एतस्याः दमयन्त्याः। स्वयंवरपरिग्रहहेतुः—स्वयंवरे = स्वयंवरोत्सवे परिग्रहाय = परिपीडनाय हेतुः = कारणभूता। एषा = इयम्। हारावली = मुक्तावली। भवतः = श्रीमतः। हृदि = चेतसि। परं करोतु = स्थानं विदधातु। वसन्ततिलकावृत्तम् ॥ ११ ॥

हिन्दी—और भी—प्रेम के विस्तार रूपी नवीन नाटक के सूत्रधार के समान, सम्राट् मदन की निरोधाज्ञा, प्रतिमूर्ति उस (दमयन्ती) के स्वयंवर में पाणिग्रहण का कारण बनी हुई यह रत्नावली आपके हृदय में स्थान प्राप्त करे ॥ ११ ॥

राजा तु तमादाय निरूप्य च चिरं चिन्तयामास।

सुधा—राजेति। राजा तु = नृपस्तु। ताम् = रत्नावलीम्। आदाय = गृहीत्वा। निरूप्य च = निरीक्ष्य च। चिरम् = बहुकालम्। चिन्तयायास = अचिन्तयत्।

हिन्दी—राजा भी उस रत्नावली को लेकर और देखकर बहुत देरतक सोचते रहे।

'आनन्दिसुन्दरगुणामलकोपमान-
मुक्ताफलप्रचयमद्भुतमुद्वहन्ती।
एषा च सा च नयनोत्सवकारिकान्ति-
श्चेतोहरा हृदि पदं न करोति कस्य' ॥ १२ ॥

अन्वयः—अद्भुतम् आनन्दिसुन्दरगुणामलकोपमानमुक्ताफलप्रचयम् उद्वहन्ती, चेतोहरा नयनोत्सवकारिकान्तिः एषा, सा च कस्य हृदि पदम् न करोति ॥ १२ ॥

सुधा—आनन्दीति। अद्भुतम् = विचित्रम्। आनन्दिसुन्दरगुणामलकोपमानमुक्ताफलप्रचयम्—आनन्दि = आनन्ददायि। सुन्दरगुणः = सुष्ठुतन्तुः, शौर्यादिगुणश्च। आमलकोपमानानाम् = आमलकसदृशानाम् मुक्ताफलानाम्—मौक्तिकानाम् प्रचयम् = समवायम्। उद्वहन्ती = धारयन्ती। चेतोहरा = मनोरमा। नयनोत्सवकारिकान्ति—नयनयोः = नेत्रयोः उत्सवकारि = आनन्ददायिनी कान्तिः = दीप्तिः यस्यास्तथा। एषा = इयम् = मुक्तावली। सा = दमयन्ती च। कस्य = कस्य जनस्य। हृदि = चेतसि पदम् = स्थानम् न करोति = विदधाति। अर्थात् सर्वस्यापि करोत्येव। वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ १२ ॥

हिन्दी—अद्भुत, आनन्द देने वाली सुन्दर गुणों (सूत्रों—शौर्यादि) वाली तथा आमलक (आंवला) फल के समान मुक्ताफलसमूहवाली (मल कोप तथा मान से मुक्त एवम् फलों (पुण्य) के समूह को धारण किये हुये) मनोरम, नयनानन्ददायिनी, कान्तियुक्त यह (मुक्तावली) तथा वह (दमयन्ती) किसके हृदय में स्थान नहीं कर लेती है अर्थात् सभी को प्रिय लगती है ॥ १२ ॥

इति चिन्तयन्द्विगुणामेकगुणीकृत्य पुनः सस्पृहमैक्षत ।
हंसस्तु विहस्य परिहासमकरोत् ॥

सुधा—इति चिन्तयन्निति । इति = एवम् । चिन्तयन् = विचारयन् । द्विगुणाम् = द्विगुणीकृताम् एकगुणीकृत्य = सरलां कृत्वा । पुनः = भूयः (नृपः) सस्पृहम् = सोत्कण्ठम् । ऐक्षत् = अवालोकयत् । हंसस्तु = हंसपक्षीतु । विहस्य = हसित्वा । परिहासम् = प्रहसनम् । अकरोत् चकार ।

हिन्दी—यह सोचते हुए दोहरी की हुई मुक्तावली को एकहरा कर पुनः उत्कण्ठा सहित देखा । हँस-हँस कर परिहास करने लगा—

'तया दत्ता मयानीता स्वयमाह्लादिनी त्वया ।
इत्यनेकगुणाप्येषा कथमेकगुणीकृता' ॥ १३ ॥

अन्वयः—तया दत्ता मया आनीता स्वयम् आह्लादिनी इति अनेकगुणा एषा अपि त्वया एकगुणो कथम् कृता ॥ १३ ॥

सुधा—तयेति । तया = दमयन्त्या । दत्ता = समर्पिता । मया=राजहंसेन । आनीता = प्रापिता स्वयम् = आत्मना । आह्लादिनी = आनन्दाभिव्यञ्जिका । इति = एवम् । अनेकगुणाचारुतादिबहुगुणयुक्ता, तन्तुसारिका च । एषा=इयम् । अपि । त्वया = भवता । एकगुणा = सरला एकगुणयुता वा । कथम् कृता = किमिति विहिता ॥ १३ ॥

हिन्दी—उस (दमयन्ती) के द्वारा दी गई तथा मेरे (हंस) द्वारा लाई गई, स्वयम् आनन्द की अभिव्यञ्जिका इत्यादि अनेक गुणों वाली यह मुक्तावली आपने एकगुणवाली (एकहरी) कैसे कर ली है ॥ १३ ॥

राजापि परिहासेनान्तःसूत्रं दर्शयन् 'पक्षिपुङ्गव, किं न पश्यस्येकगुणैवेयम् ।

सुधा—राजेति । राजापि = नृपोऽपि । परिहासेन = हासेन । अन्तःसूत्रम् = मध्यतन्तुम् । दर्शयन् = प्रदर्शयन् । पक्षिपुंगव—पक्षिषु पुंगवस्तत्सम्बुद्धौ हे खगश्रेष्ठ ! किम् न पश्यसि = नावलोकयसि, इयम् = एषा मुक्तावली) एकगुणा एव = एकतन्तुरेव । (अस्ति) ।

हिन्दी—राजा ने भी परिहास से उसके भीतरी सूत्र को दिखलाते हुए (कहा) हे पक्षिवर क्या देखते नहीं हो यह तो एकगुणवाली ही है ।

अथवा—

कः करोति गुणवान्गुणसंख्यां श्लाघ्यजन्ममहसः स्फुटमस्याः ।
कुम्भिकुम्भपरिणाहिनि तस्याः स्वैरमास्यत यया कुचयुग्मे' ॥ १४ ॥

अन्वयः—श्लाघ्यजन्ममहसः अस्याः गुणसंख्याम् स्पष्टम् कः गुणवान् करोति । यया तस्याः कुम्भिकुम्भपरिहारिणि कुचयुग्मे स्वैरम् आस्यत् ॥ १४ ॥

सुधा—क इति । श्लाघ्यजन्ममहसः–श्लाघ्यम् = प्रशंसनीयम् जन्ममहः = जन्मोत्सवम् यस्यास्तस्याः । अस्याः = एतस्याः । गुणसंख्याम् = गुणाख्यानम् । स्पष्टम् = स्फुटम् । कः गुणवान् = गुणी पुरुषः कः । करोति । अर्थात् कोऽपि कर्त्तुं न शक्त इति ।

यया = यया मुक्तावल्या । तस्याः = दमयन्त्याः । कुम्भिकुम्भपरिणाहिणि—कुम्भिनः = गजस्य कुम्भम् = ककुद् इव परिणाहः = विशालता यस्य तादृशि । कुचयुग्मे = पयोधरयुगले । स्वैरम् = स्वच्छन्दम् । आस्यत = निवासमकरोत् ।

हिन्दी—अथवा—उत्पत्तिकाल से ही प्रशंसनीय इस मुक्तावली के गुणों का वर्णन कौन कर सकता है, जिसने उस (दमयन्ती) के हाथी के कुम्भ सदृश विशाल कुचयुगल में स्वच्छन्दता से निवास किया है ।। १४ ।।

इत्यभिधाय नीत्वा च निजकण्ठकन्दलम्, 'इहास्ते सा तव पूर्वप्रणयिनी' इत्यन्तःस्थितां दमयन्तीं दर्शयितुमिव हृन्मध्यवर्तिनीं तामकरोत् ।

सुधा—इत्यभिधायेति । इत्यभिधाय = एवमुक्त्वा । निजकण्ठकन्दलम् = आत्मगलमूलम् । नीत्वा = अग्रेकृत्वा च । सा = असौ । तव = ते । पूर्वप्रणयिनी = पूर्वप्रेमिका-मुक्तावली इह = अत्र कण्ठकन्दले । आस्ते = वर्तते । इति = एवम् । अन्तःस्थिताम् = अन्तर्वर्तिनीम् । दमयन्तीम् = भैमीम् । दर्शयितुम् इव = प्रकटितुमिव हृन्मध्यवर्तिनीम् = हृदयान्तर्गताम् । ताम् = एताम् । अकरोत् = चकार ।

हिन्दी—यह कहकर और अपने कण्ठमूल के आगे बढ़ाकर = वह तुम्हारी पूर्व प्रणयिनी यह है'' इस प्रकार मानो अपने हृदय के अन्दर बसी हुई दमयन्ती को दिखलाने के लिए हृदय के मध्य में ही (वक्षः स्थल पर) उस (मुक्तावली) को कर लिया (पहन लिया) ।

कृत्वा च किंचिदनुच्चस्मितं मधुरमधुरया वाचा 'विहंगपुंगव, पुनः कथ्यतां कीदृशी सा, कीदृग्रूपा, किं च वयः, कीदृशी लावण्यसंपत्, को विनोदः, कीदृशं वाग्वैदग्ध्यम्, किं प्रियम्, का गोष्ठी इति श्रुतामप्यपूर्वामिव तद्वार्तामादरेण पृच्छन्नागच्छंश्च चटुलकरकृतशरसंधानस्यानवरतविरचिताद्भुतभ्रमणकर्मकार्मुककुवलयस्य लक्ष्यतां मकरकेतोरविदितापक्रमानतिबहून्वेलालवानवतस्थे ।

सुधा—कृत्वेति । च = तथा । किञ्चित् = स्तोकम् । अनुच्चस्मितम् = मन्दहासम् । कृत्वा = विधाय । मधुरमधुरया = अतिमनोरमया । वाचा = वाण्या । विहंगपुङ्गव = हे पक्षिवर ! पुनः = भूयः । कथ्यताम् = ब्रूहि । सा = दमयन्ती कीदृशी = कथंविधा । कीदृग्रूपा = कीदृगाकारा । किंच वयः = आयुः । कीदृशी लावण्यसम्पत् = सौन्दर्यश्रीः । कः विनोदः = आह्लादनम् । कीदृशम् वाग् वैदग्ध्यम् = वाणीविलासः । किम् प्रियम् = रुचिरम् । का गोष्ठी चास्ति । इति श्रुताम् = आकर्णिताम् अपि अपूर्वाम् = अद्भुताम् इव । तद्वार्ताम् = तत्कथाम् । आदरेण = सम्मानेन । पृच्छन् = पृच्छां कुर्वन् । आगच्छन् = आचलंश्च चटुलकरकृतशरसन्धानस्य—चटुलाभ्याम् = चपलाभ्याम् कराभ्याम् = हस्ताभ्याम् कृतं शरसन्धानम् = वाणचालनम् येन तस्य । अनवरतविरचिताद्भुत भ्रमणकर्मकार्मुककुवलयस्य—अनवरतम् = निरन्तरम् विरचितम् = रचितम् अद्भुतम् = विचित्रम् भ्रमणकर्म येन तथा कार्मुककुवलयम् = पद्मधनुर्यस्य तस्य । मकरकेतोः = मदनस्य लक्ष्यताम् = उद्दिष्टताम् । अविदितापक्रमान् = अज्ञातापक्रमान् । अतिबहून् = बहुतरान् वेलालवान् = वेलाक्षणानि । अवतस्थे = स्थितवान् ।

हिन्दी—कुछ मन्द मुस्कराते हुए अतिमधुरवाणी से—हे पक्षिवर ! पुनः कहिये। वह कैसी है, किस रूप की है, क्या आयु है, कैसी सौन्दर्य की सम्पत्ति है, कैसा विनोद है कैसा वाग्विलास है, क्या प्रिय है, कैसी गोष्ठी है ? यह सुनकर भी मानों पहले कभी जिसे न सुना हो, इस प्रकार उसकी बात आदर से पूछते हुये, चञ्चल हाथों से शर सन्धान किये हुये निरन्तर अद्भुत कमलरूपी धनुष घुमाने का कार्य करने वाले मकर केतु (काम) का लक्ष्य बने हुये अविदित कालक्षेप से बहुत क्षणों तक (नृप नल) बैठे रहे।

स्थिते च विभूष्य मध्यमं नभोभागं भगवति भासुरभासि भास्वति, श्रवणपुटपथमवतरति च प्रहरावसानप्रहारभांकारिभेरीरवे, 'वयस्य, विश्रम्यतामिदानीममन्दारतरुपरिकरितरोधसि मन्दिरोद्यानारविन्ददीर्घिकायामेवं प्रार्थ्यसे च न गन्तव्यमविसर्जितेन त्वया पूर्ववत्, इति नियम्य तं राजहंसं स्वयमप्याह्निकायोदतिष्ठत्।

सुधा—स्थित इति। भासुरभासि = भासुरा = दीप्तिमती या = कान्तिर्यस्य तस्मिन्। भगवति भास्वति = सूर्यदेवे। मध्यम् = मध्यगतम्। नभोभागम् = गगनतलम्। विभूष्य= अलङ्कृत्य। स्थिते = गते सति। प्रहरावसानप्रहारभांकारिभेरीरवे—प्रहरावसाने = यामसमाप्तौ प्रहारेण = आघातेन भांकारि=ध्वनिकारि यत् भेरीरवम्=भेरीशब्दम् तस्मिन्। श्रवणपुटपथम् = कर्णकुहरमार्गम्। अवतरति च। वयस्य = सखे ! इदानीम् = साम्प्रतम्। मन्दारतरुपरिकरितरोधसि = मन्दारतरुभिः = मन्दारपादपैः परिकरितम् = परितः वृतम् रोधो यस्तस्मिन्। मन्दिरोद्यानारविन्ददीर्घिकायाम् मन्दिरोद्यानस्य = भवनोपवनस्य यारविन्ददीर्घिका = कमलवापी, तस्याम् विश्रम्यताम् = विश्रामं क्रियताम् एवम् = इत्थम् प्रार्थ्यसे = अवस्थातुं निवेद्यसे। तथा अविसर्जितेन = अपरित्यक्तेन। त्वया = भवता पक्षिणा। पूर्ववत् = पुरावत्। न गन्तव्यम् = अन्यत्र न यातव्यम्। इति=एवम्। तं राजहंसं=तं खगम्। नियम्य = नियमितं कृत्वा। स्वयम् अपि = आत्मनापि। आह्निकाय = दैनिककृत्याय। उदतिष्ठत् = प्राचलत्।

हिन्दी—कान्तिपूर्ण भगवान् भुवनभास्कर के आकाश तल को शोभित कर मध्यभाग में चले जाने पर तथा प्रहर समाप्त होने पर प्रहार से (बजने वाले नगाड़े की आवाज कानों में सुनाई पड़ने पर—हे मित्र ! अब मन्दार वृक्षों से घिरे तट वाले भवनोद्यान की कमल दीर्घिका में विश्राम कीजिये, यह मेरी प्रार्थना है तथा मेरी अनुमति (मुझसे विदा हुये) बिना पहले की भांति तुम कहीं चले न जाना। इस प्रकार उस राजहंस को नियंत्रित कर स्वयम् भी दैनिक कार्य करने के लिये (नृप नल) उठ खड़े हुये।

एवं च—

शिथिलितसकलान्यव्यापृतेस्तस्य राज्ञः
परिहृतनिजबन्धोर्यान्ति हंसेन सार्धम्।

दिनमनु दमयन्तीवृत्तवार्ताविनोदै-
रविदितपरिवर्त्ता वासराः शारदीनाः ॥ १५ ॥

अन्वयः—अनुदिनम् अव्यापृतेः निजबन्धोः तस्य राज्ञः हंसेन सार्धम् शिथिलितसकलानि । दमयन्तीवृत्तवार्ताविनोदैः शारदीनाः वासराः अविदितपरिवर्त्ताः यान्ति ॥ १५ ॥

सुधा—शिथिलितेति । अनुदिनम् = प्रतिदिनम् । अव्यापृतेः = अव्यस्तस्य । परिहृत निजबन्धोः—परिहृताः = सर्वतः निजबान्धवा येन तस्य । तस्य = एतस्य । राज्ञः = नृपस्य । हंसेन = हंस पक्षिणा । सार्धम = समम् । शिथिलितसकलानि = शिथिलितानि = श्लथितानि सकलानि = निखिलानि इति । दमयन्तीवृत्तवार्ताविनोदैः = दमयन्त्याः वृत्तवार्त्तायाः = समाचारकथायाः विनोदैः = मनोरञ्जनैः । शारदीनाः—शरदि भवम् शारदं रूपमुष्णत्वातिशयादि तद्विद्यते यस्यासौ शारदी इनो येषु ते शारदीनाः = शरत्कालीनाः । वासराः = दिवसाः । अविदितपरिवर्त्ताः—अविदितं परिवर्तनम् यत्र तादृशाः = अज्ञातपरिवर्तनदशाः । यान्ति = गच्छन्ति । मालिनीवृत्तम् ॥ १५ ॥

हिन्दी—प्रतिदिन किसी कार्य में मन न लगने के कारण उदासीन, अपने भाई बान्धवों को भी समीप रहने से मना किये हुये उस राजा के हंस के साथ रहने के कारण अन्य सभी कार्य शिथिल पड़ गये । दमयन्ती के समाचार वार्ता विनोदों से शरत्कालीन दिन इस प्रकार व्यतीत होने लगे जैसे पता नहीं कब दिन निकला और कब समाप्त हो गया ॥ १५ ॥

एकदा प्रस्फुरत्प्रभातारम्भप्रभया प्रभिद्यमाने नवनीलाञ्जनिकाकुसुमकान्तिनि तमसि, विलीनलाक्षाम्भोभिरिव सिच्यमानायां शनैः शचीदयितदिशि मन्दमुन्मिषत्कमलमुकुलोच्छलच्चटुलालिचक्रवालकलकले नोन्निद्रितेन तन्द्रामुद्रितोन्मिषच्चक्षुषा चलच्चञ्चूकोटिकण्डूयनविरामधुतपक्षरोमराजिना राजहंसकदम्बकेनानुगम्यमानो विहाय विहंगमः सरस्तीरम्, उपसृत्य किंनरमधुरगीतध्वनिविनिद्रितमावश्यकावसाने राजानम्, इदमवदीत् ।

सुधा—एकदेति । एकदा = एकस्मिन् दिने । प्रस्फुरत्प्रभातारम्भप्रभया स्फुरतः = स्फुटतः प्रभातस्य = प्रातःकालस्य आरम्भे=आदौ या प्रभा = कान्तिस्तया नवनीलाञ्जनिकाकुसुमानाम् = तापिच्छपुष्पाणाम् कान्तिः = दीप्तिरिवकान्तिर्यस्य तस्मिन् । तमसि = अन्धकारे । प्रभिद्यमाने = समाप्ते सति । विलीनलाक्षाम्भोभिः = विलीनैः = स्रस्तैः लाक्षाम्भोभिः = लाक्षारसैः । शनैः = मन्दम् शचीदयितदिशि = ऐन्द्रीदिशायाम् (पूर्वे) सिच्यमानायामिव = आर्द्रीक्रियमाणामिव । उन्मिषत्कमलमुकुलोच्छलच्चटुलालिचक्रवालकलकलेन—उन्मिषद्भिः = विकसद्भिः कमलमुकुलैः = कमलकलिकाभिः उच्छलन्तः = उत्पतन्तः ये चटुलाः = चञ्चलाः अलिचक्रवालभ्रमरसमूहवालाः, तेषां यत्कलकलम् = गुञ्जनम् तेनोद्रितम् = विनिद्रितम्, तेन । तन्द्रामुद्रितोन्मिषच्चक्षुषा—तन्द्रया मुद्रितम् उन्मिषता चक्षुषा = नेत्रेण । चलच्चञ्चूकोटिकण्डूयन विरामधुतपक्षरोमराजिना—चलता= चपलेन चञ्चूकोटिना = चञ्च्वग्रभागेन यत्कण्डूयनम्, तस्य विरामे = तदन्ते धुता = कम्पिता रोमराजिः = लोमपङ्क्तिः यस्य तादृशेन । राजहंसकदम्बेन = राजहंसपक्षिसमु-

दायेन। अनुगम्यमानः = अनु = पश्चात् गम्यमानः। सरस्तीरम् = तडागतटम्। विहाय= त्यक्त्वा विहंगमः = राजहंसः। किन्नरमधुरगीतध्वनिविनिद्रितम्——किन्नराणाम् = किंपुरुषाणाम् मधुरः = मृदुलः गीतध्वनिः = गायनशब्दः, तेन विनिद्रितः = निद्राशून्य-कृतस्तम्। आवश्यकावसाने = अनिवार्यनिद्रासमाप्तौ। राजानम् = नृपम्। उपगम्य = समीपं गत्वा। इदम् = एतत्। अवादीत् = अकथयत्।

हिन्दी—एक बार निकलती हुई प्रभात आरम्भ होने की कान्ति से नवीन तापिच्छ की कान्ति के समान अन्धकार के समाप्त हो जाने पर, गले हुये लाक्षारस (लाख) से मानो ऐन्द्री दिशा (पूर्वदिशा) धीरे-धीरे सींची जा रही थी, खिलती हुई कमल कलि-काओं से उछल कर निकलते हुये चञ्चल अलि समूह की गुञ्जार से विनिद्र, जम्हाई के कारण बन्द हुई आंखों को खोलते हुए, चञ्चल चोंच के अग्रभाग से खुल जाने के बाद फड़फड़ाते हुये पंखों की पंक्तियों वाले राजहंस वर्ग के आगे-आगे चलता हुआ सरोवर के तट को छोड़कर किन्नरों की मधुर गीत ध्वनि से उचित समय पर जगे हुये राजा के पास पहुँचकर राजहंस इस प्रकार बोला।

'देव, विज्ञापयामो देवस्य दर्शनम्, अनालेप्यं चन्दनम्, अस्पर्शं कर्पूरपांसुपट-लोद्धूलनम्, अपातव्यममृतम्। अनास्वाद्यं रसायनम्, अलेह्यं मधु। कुतः किलै-तदनुभवतामस्माकमपि वर्षसहस्रेणापि परितोषः। किं तु तिरयति स्वातन्त्र्यं प्राणिनां परपरिग्रहो दुस्त्यजाश्च जलजन्मोऽपि जन्मभूमयो भवति। अवगमिष्यति च विश्रब्धमेतत्सर्वमपि देवो यादृशा येन च जन्मान्तराराधनोपरोधेन प्रेषिता वयम्। अनवसरः खल्वयमस्य कथाप्रक्रमस्य। तथादिशतु देवोऽस्मान्गमनाय। न च प्रस्तुतानुचरालापेषु वयं विस्मरणीयः। किमन्यज्जन्म च जीवितं च तदेवं श्लाघ्यं मन्यामहे, यत्र प्रसङ्गेन भवादृशा अनुस्मृतिं कुर्वन्ति। तदेष प्रस्थान-प्रार्थनाप्रणामः' इत्युक्तवन्तमिममवनिपालः कथमपि विसर्जयामास।

सुधा—देव इति। हे देव = राजन्! देवस्य = भवतः। दर्शनम् = अवलोकनम्। विज्ञापयामः = कथयामः। (एतद्दर्शनम्) अनालेप्यम् = लेपनक्रियया विनैव। चन्दनम्। अस्पर्शम् = स्पर्शहीनम्। कर्पूरपांसुपटलोद्धूलनम् = कर्पूररजोराशिस्नानम्। अपातव्यम्= पातुं योग्यं पातव्यम् न पातव्यमपातव्यम् = अपेयम्। अमृतम् = सुधारसम्। अना-स्वाद्यम् = अखाद्यम्। रसायनम = ओषधम्। अलेह्यम् = लेह्यगुणरहितम् मधु = मधु-रसम्। किल = खलु एतदनुभवताम् = एतदनुभवक्तताम् अस्माकमपि = नः अपि। वर्ष सहस्रेण अपि = सहस्राब्द पर्यन्तम् अपि कुतः = कस्मात्। परितोषः = सन्तोषः। किं तु= किञ्च। परपरिग्रहः = विवाहः प्राणिनाम् = जीवानाम्। स्वातन्त्र्यम् = स्वच्छन्दताम्। तिरयति = तिरस्करोति, आच्छादयति पूरीकरोति वा। जलजन्मः अपि——जले = नीरे जन्म येषां तान् अपि जन्मभूमयः = उत्पत्तिभूमयः। दुस्त्यजाः = दुःखेन त्यागयोग्याः भवन्ति। यादृशा = यादृग्विधिना। येन च जन्मान्तरा = अन्यजन्मनः। आराधनोपरोधेन आराधनायाः फलेन पुण्येन वा वयम्। प्रेषिताः=प्रहिताः। एतत्सर्वम् = इदं संपूर्णमपि। देवः भवान्। विश्रब्धम् = सुस्थिरम्। अवगमिष्यति = ज्ञास्यति। खलु = किल। अयम्=

एषः। अस्य = एतस्य। कथाप्रक्रमस्य = वार्ताक्रमस्य। अनवसरः = उचितावसरो नास्ति। तथा = अतः। देव = भवान्। अस्मान् = अस्मज्जनान्। गमनाय = प्रस्थानाय। आदिशतु = आज्ञापयतु। तथा। प्रस्तुतानुचरालापेषु = प्रस्तुतसेवकचर्चासु। वयम् न विस्मरणीयाः = विस्मृति पथं न प्रापणीयाः। अन्यत् = अपरम्। जन्म = भवम्। जीवितम् = जीवनम् च। किम् तदेव जन्म जीवितञ्च। वयम्। श्लाघ्यम् = प्रशंसनीयम्। मन्यामहे। यत्र = यस्मिन्। भवादृशाः = भवत्समाः जनाः। अनुस्मृतम्-अनु = पश्चात् स्मृतिम् = स्मरणं कुर्वन्ति। तत् = अतः। एषः = अयम्। प्रस्थानप्रार्थनाप्रणामः—प्रस्थाने = प्रचलनकाले प्रार्थनाद्योतकः प्रणामः अस्ति। इति = एवम्। उक्तवन्तम् = कथयन्तम्। अमुम् = एतम्। अवनिपालः = भूपालः। कथम् अपि = कष्टेन विसर्जयामास = विससर्ज।

हिन्दी—देव! मैं आपका दर्शन चाहता हूँ जो कि एक प्रकार का लेपन करने योग्य चन्दन है, बिना छुए कर्पूर रज की राशि में स्नान है, न पीने योग्य अमृत है, न चखने योग्य औषधि है, न चाटने योग्य मधु है। निश्चय ही यदि हम हजारों वर्ष अनुभव करते रहें तब भी सन्तोष कहां से हो सकता है। किन्तु पर परिग्रह (विवाह) प्राणियों की स्वतन्त्रता को मिटा देता है। जल में रहनेवालों को भी जन्म भूमि छोड़ना कठिन होता है। जैसे और जिस दूसरे जन्म के पुण्य के कारण हमलोगों को आपने भेजा है यह सब भी सुस्थिर हो जायेगा। वास्तव में इस कथा-प्रक्रम का यह उचित अवसर नहीं है अच्छा, आप हमें जाने की आज्ञा दें। प्रस्तुत वार्तालापों में आप हमें भुलायेगें नहीं। अन्य जन्म तथा जीवन से क्या, हम उसी (जन्म एवं जीवन) को प्रशंसनीय मानते हैं जहां प्रसङ्ग वश आप जैसे लोग स्मरण कर लिया करते हैं। 'अतः यह चलते समय प्रार्थना द्योतक मेरा प्रणाम है' यह कहते हुये उस राजहंस को किसी प्रकार विसर्जित किया।

गते च तस्मिन्नविस्मरणीयोपकारे कादम्बकदम्बकेश्वरे, श्रवणप्रणालिकया प्रविश्य मानसं सरस्तरलयन्त्यां विदर्भराजहंससुतायां, प्रहरति प्रत्यङ्गमनङ्गधानुष्के, समीपवनविकासिकुन्दमकरन्दास्वादमदमेदुरगिरां गच्छति श्रवणपथमतिमधुरे मधुलिहां झंकारे, आकर्णपूरीकृतकार्मुकगुणे रणरणकारम्भिणि तत्रावसरे।

सुधा—गते चेति। च = तथा तस्मिन् = एतस्मिन्। अविस्मरणीयोपकारे = अविस्मरणीयः = स्मर्त्तुं न योग्यमुपकारो यस्य तस्मिन् = विस्मृतियोग्योपकारे। कादम्बकदम्बकेश्वरे-कादम्बानाम् = पक्षीणाम् कदम्बम् = समूहम्, तस्येश्वरः तस्मिन्। श्रवणप्रणालिकया = आकर्णमार्गेण। मानसम् = चेतसम् सरः = तडागम् एव। प्रविश्य = प्रवेशं कृत्वा। तरलयन्त्याम् = आन्दोलितायाम् विदर्भराजसुतायाम् = विदर्भराजपुत्र्यां दमयन्त्याम्। प्रत्यङ्गम् = अङ्गमङ्गम्। अनङ्गधानुष्के—मदनधनुर्धरे। प्रहरति = आघातं कुर्वति। समीपवनविकासिकुन्दमकरन्दास्वादमदमेदुरगिराम्—समीपस्य = पार्श्वस्थवनम् = अरण्यम्, तस्मिन् यत् विकासिकुन्दमकरन्दम् = बिकचकुन्दपुष्पमधुरसम्, तस्य। स्वादेन मदा = मत्ता मेदुर गिरश्च = कोमलवाण्यश्च येषां तेषाम्। मधुलिहाम् = भ्रमराणाम्। अतिमधुरे =

मधुरतमे । झंकारे = गुञ्जारवे । श्रवणपथम् = कर्णमार्गम् । गच्छति = प्रयाते सति आकर्णपूरीकृतकार्मुकगुणे—आकर्णम् = कर्णपर्यन्तम् पूरीकृतः कार्मुकस्य = धनुषः गुणः = ज्या यस्मिन् । रणरणकारम्भिणि = औसुक्यकारिणि । तत्रावसरे = तस्मिन्काले ।

हिन्दी—उस अविस्मरणीय उपकार वाले हंस समूह के चले जाने पर श्रवणरूपी नालिका से मन रूपी तड़ाग में प्रवेशकर व्याकुल विदर्भ राजपुत्री के अङ्ग प्रत्यङ्ग में धनुर्धारी अनङ्ग के प्रहार करने पर, समीपवर्ती वन में विकसित कुन्द पुष्प के मकरन्द के आस्वाद से मतवाली मधुरवाणी वाले भ्रमरों की अतिमधुर झङ्कार के श्रवण पथ पर पहुँचने पर कान पर्यन्त धनुष की डोर खींचे हुये उत्सुकता उत्पन्न करने वाले उस अवसर पर—

आविर्भूतविषादकन्दमसमव्यामोहमीलन्मन-
श्चिन्तोत्तानितनिर्निमेषनयनं निःश्वासदग्धाधरम् ।
जातं स्थानकमुत्सुकस्य नृपतेस्तत्तस्य यस्मिन्नभूत्
प्रेयान्पञ्चमराग एव रिपवः शेषास्तु सर्वे रसाः ॥ १६ ॥

अन्वयः—उत्सुकस्य तस्य नृपतेः स्थानकम् जातम् यस्मिन् आविर्भूतविषादकन्दम् असमव्यामोहमीलन्मनः, चिन्तोत्तानितनिर्निमेषनयनम्, निःश्वासदग्धाधरम् अभूत् । पञ्चमराग एव प्रेयान्, शेषाः सर्वे रसाः तु रिपवः ॥ १६ ॥

सुधा—आविर्भूतेति । उत्सुकस्य=उत्कण्ठितस्य । तस्य = एतस्य । नृपतेः = भूपतेः । स्थानकम् = अवस्थान्तरम् । जातम् = सम्भूतम् । यस्मिन् = यत्रस्थानके । आविर्भूतविषादकन्दम्—विषादस्य = खेदस्य कन्दम् = मूलम् इति विषादकन्दम् आविर्भूतम् जातम् यत् विषादकन्दम् तत् । असमव्यामोहमीलन्मनः—असमः = विषमः व्यामोहः तेनोन्मीलितम् = व्यथितम् यन्मनः = चेतस्तत् । चिन्तोत्तानितनिर्निमेषनयनम्—चिन्तया-उत्तानिते = विस्फारिते निर्निमेषे = निमेषरहिते नयने = चक्षुषी यत्र । निःश्वासदग्धाधरम्—निःश्वासैः = उच्छ्वासैः दग्धे = ज्वलिते अधरे = ओष्ठे यत्र । अभूत् = आसीत् । पञ्चमराग एव = कोकिलकूजनमेव । प्रेयान् = प्रियः । शेषाः=अवशिष्टाः सर्वे = निखिलाः रसाः तु रिपवः = शत्रवः (इव बभूवुः) । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ १६ ॥

हिन्दी—उत्कण्ठा युक्त उस भूपाल की ऐसी अवस्था हो गई कि जिसमें विषादरूपी कन्द निकल आया, विषमव्यामोह से मन व्यथित हो गया । चिन्ता के कारण नयन विस्फारित तथा अपलक रह गये, निःश्वासों से ओष्ठ जल गये । केवल कोयलों की मधुरकूक ही प्रिय लगती थी, शेष सभी रस शत्रु से बन गये ॥ १६ ॥

ततश्च वृश्चिकदंशदुःसहव्यथामवस्थामनुभवन्निव, कण्टकैश्चरणमर्मणि विध्यमान इव, मुहुर्मुहुर्मुर्मुरपुञ्जराजीवाङ्गानि धारयन्नुग्रग्रीष्मानिलोल्लोलैरालिङ्ग्यमानो, मनागपि न क्वापि शर्म लेभे ॥

सुधा—ततश्चेति । ततश्च = तदनन्तरञ्च । वृश्चिकदंशदुःसहव्यथाम् इव-वृश्चिकस्य = 'विच्छू' इति दंशविशिष्टस्य दंशेन दुःसहा = दुःखेनसहनीया व्यथा = पीडा तथेव ।

अवस्थाम् = दशाम् । अनुभवन् = अनुभवं कुर्वन् । कण्टकैः = शूलैः । चरणमर्मणि = कोमलपददेशे विध्यमानः इव = वेधयुतो यथा । मुहुर्मुहुः = बारंबारम् । मुर्मुरपुञ्ज-राजीवाङ्गानि–तापातिरेकात्प्रतिक्षणं क्षणमात्रशुष्कत्वात्–मुर्मुरः = तुषवह्निः, तस्य पुञ्जः = समूहः येषां तानि तथा भूतानि राजीवानि = कमलानि येष्वङ्गेषु तानि । ('मुर्मुरस्तुषवह्नौ स्यान्मन्मथे रविवाजिनि' इति विश्वप्रकाशः) । धारयन् = वहन् । उग्रग्रीष्मानिलोल्लोलैः = तीव्रग्रीष्मपवनवेगैः । आलिङ्ग्यमानः = आलिङ्गनम् क्रियमाणः (नृपः) मनाक् = किञ्चिदपि । क्वापि = कुत्रापि । शर्म = कल्याणम् = शान्तिम् वा न लेभे = नाप्नोत् ।

हिन्दी—तदनन्तर विच्छू के डंक मारने जैसी असह्य पीड़ा का अनुभव करता हुआ, काँटों से विंधे कोमल पद के समान बारबार भूसी की आग के ढेर के समान कमल जैसे कोमल अंगों को धारण करते हुये उग्रग्रीष्मपवन के झकोरों से आलिङ्गमान नृप थोड़ी भी कहीं शान्ति नहीं पा रहा था ।

तथापि—

श्च्योतच्चन्द्रमणिप्रणालशिशिराः सौगन्ध्यरुद्धाम्बरै-
र्निर्गच्छन्नवधूपधूमपटलैः संभिन्नवातायनाः ।
सौधोत्सङ्गभुवो विकीर्णकुसुमाः पूर्णेन्दुरश्मिश्रिया
रम्यायां निशि नो हरन्ति हृदयं हृद्यं किमुद्वेगिनाम् ॥ १७ ॥

अन्वयः—श्च्योतच्चन्द्रमणिप्रणालशिशिराः सौगन्ध्यरुद्धाम्बरैः निर्गच्छन्नवधूपधूम-पटलैः संभिन्नवातायनाः सौधोत्सङ्गभुवः विकीर्णकुसुमाः पूर्णेन्दुरश्मिश्रिया रम्यायां निशि हृद्यम् नो हरन्ति उद्वेगिनां हृद्यम् नो ॥ १७ ॥

सुधा—श्च्योतदिति । श्च्योतच्चन्द्रमणिप्रणालशिशिराः–श्च्योतता=स्खलता चन्द्रमणेः =चन्द्रकान्तमणेः प्रणालेन = प्रवाहेन शिशिराः = शीतलाः । सौगन्ध्यरुद्धाम्बरैः–सुगन्धित तमोभिः । निर्गच्छन्नवधूपधूमपटलैः—निर्गच्छद्भिः = निःसरद्भिः नवैः = नूतनैः धूपधूम-पटलैः = घर्मधूममण्डलैः । सम्भिन्नवातायनाः—सम्भिन्नाः = सम्यग् भरिताः वातायनाः= गवाक्षमार्गाः । सौधोत्सङ्गभुवः–सौधानाम् = प्रासादानाम् उत्सङ्गभुवः = प्राङ्गणभूमयः । विकीर्णकुसुमाः—विकीर्णानि = विकिरितानि कुसुमानि = पुष्पाणि यत्र तथा । पूर्णेन्दु-रश्मिश्रिया—पूर्णेन्दोः = पूर्णचन्द्रस्य रश्मयः = किरणाः, तेषां श्रीः = सुषमा, तया रम्यायाम् = रमणीयायाम् । निशि = निशायाम् । हृद्यम् = मनोरमम् = हृदयम् चेतः । नो हरन्ति = अपहरणं न कुर्वन्ति । उद्वेगिनाम् = उद्वेगपूर्णजनानाम् किम् हृद्यम् = हृदयहारि नो = नैव भवति । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् । अर्थान्तरन्यासालङ्कारः ॥ १७ ॥

हिन्दी—चन्द्रकान्त मणि के प्रवाह से शीतल, सुगन्धित आकाश मण्डलको अवरुद्ध किये हुए निकलती हुई नवीन धूप रूपी धूमपटलों से जिसके गवाक्ष भर गये हैं ऐसे भवनों की प्राङ्गणभूमि, जहां पुष्प विखरे हुए हैं, पूर्णचन्द्रमा की किरणों की सुषमा से रमणीय रात्रि में हृदय को. हरण नहीं करती (प्रिय नहीं लगती है क्योंकि उद्वेगपूर्ण व्यक्तियों के लिए कोई भी वस्तु मनोरम (हृद्य) नहीं होती है ॥ १७ ॥

अपि च—

हृद्योद्यानसरस्तरङ्गशिखरप्रेङ्खोलनायासिताः
संभोगश्रमखिन्नकिंनरवधूस्वेदोदबिन्दुच्छिदः ।
सायं सान्द्रविनिद्रकैरववनान्यान्दोलयन्तः शनै-
रङ्गेऽङ्गारसमाः पतन्ति पवनाः प्रालेयशीता अपि ॥ १८ ॥

अन्वयः—हृद्योद्यानसरस्तरङ्गशिखरप्रेङ्खोलनायासिताः सम्भोगश्रमखिन्नकिन्नरवधूस्वेदोदविन्दुच्छिदः सान्द्रविनिद्रकैरववनानि शनैः आन्दोलयन्तः सायम् प्रालेयशीता अपि पवनाः अङ्गारसमाः पतन्ति ॥ १८ ॥

सुधा—हृद्योद्यानेति । हृद्योद्यानसरस्तरङ्गशिखरप्रेङ्खोलनायासिताः—हृद्यस्य = रमणीयस्य उद्यानसरसः = वाटिकातडागस्य ये तरङ्गाः = वीचयस्तेषां-शिखरैः = अग्रमागैः प्रेङ्खोलेन आयासिताः = वेदिताः । संभोगश्रमखिन्नकिन्नरवधूस्वेदोदबिन्दुच्छिदः—संभोगस्य = सुरतस्य श्रमः = आयासस्तेन खिन्नाः = खेदयुक्ताः याः किन्नरवध्वस्तासां ये स्वेदोदविन्दवः स्वेदसीकराणि, तानि छिदन्तीति = सुरतश्रमखिन्नकिन्नरी स्वेदजलबिन्दुमुषः । सान्द्रविनिद्रकैरववनानि—सान्द्राणि = सघनानि विनिद्राणि = विकसितानि यानि कैरववनानि = कमलवनानि तानि । शनैः = मन्दम् । आन्दोलयन्तः = कम्पयन्तः । सायम् = सान्ध्यम् । प्रालेयशीताः = हिमशीतलाः । अपि पवनाः = वाताः अङ्गे = शरीरे अङ्गारसमाः = अङ्गारा इव । पतन्ति । शार्दूलविक्रीडितम् वृत्तम् । उपमालङ्कारः ॥ १८ ॥

हिन्दी—मनोरम उद्यानसरोवर की लहरों के अग्रभाग से टकराने के कारण थका हुआ, सुरतश्रम से खिन्न किन्नरियों के पसीने की बूदों को समाप्त करने वाला, घने विकसित कमलवनों को आन्दोलित करता हुआ सायंकालीन वर्फ के समान शीतल-पवन भी शरीर में अंगारों जैसा (गर्म) लगता है ॥ १८ ॥

तदाप्रभृति चास्य प्रायः प्रीतिरभूद्दाक्षिणात्यजनेष्वेव, पुलकमकरोन्नामापि विदर्भदेशस्य, श्रुतापि श्रवणयोः सुखमजोजनद्दक्षिणा दिक् ।

सुधा—तदेति । तदाप्रभृति = तत्कालादेव । च । अस्य = एतस्य । प्रायः । दाक्षिणात्यजनेषु दक्षिणदिक्निवासिलोकेषु एव । प्रीतिः = स्नेहः । अभूत् = बभूव । विदर्भदेशस्य = विदर्भनगरस्य । नाम अपि = अभिधानमपि । पुलकम् = रोमाञ्चम् । अकरोत् = चकार श्रवणयोः = कर्णयोः श्रुता = आकर्णिता अपि दक्षिणा दिक् = अवाची दिशा । सुखम् = आनन्दम् । अजीजनत् = उत्पादयामास ।

हिन्दी—तब से इसका स्नेह प्रायः दक्षिणदिशा में रहने वाले लोगों में ही हो गई । विदर्भ देश का नाम भी पुलकावलि करने लगी । कानों में सुनी हुई दक्षिण दिशा सुख उत्पन्न करने लगी ।

किं बहुना—

लिप्तेवामृतपङ्केन स्पृष्टेवानन्दकन्दलैः ।
आसीद्दिग्दक्षिणा तस्य कर्णयोर्मनसो दृशोः ॥ १९ ॥

अन्वयः—दक्षिणादिक् तस्य कर्णयोः मनसः दृशोः अमृतपङ्केन लिप्ता इव, आनन्द कन्दलैः स्पृष्टा इव आसीत् ॥ १९ ॥

सुधा—लिप्तेति । दक्षिणादिक् = अवाचीदिशा । तस्य = राज्ञः । कर्णयोः = श्रोत्रयोः । मनसः = चेतसः । दृशोः = चक्षुषोः । अमृतपङ्केन = सुधाकर्दमेन । लिप्ता = लेपयुता सदृशी । आनन्दकन्दलैः = आनन्दाङ्कुरैः । स्पृष्टा इव = स्पर्शकृतेव । आसीत् = अभूत् । उपमालङ्कारः ॥ १९ ॥

हिन्दी—अधिक क्या—दक्षिण दिशा उसके कानों, मन तथा नयनों में अमृत पङ्क से लिपी हुई सी एवम् आनन्दाङ्कुरों से स्पर्श की गई जैसी लगती थी ॥ १९ ॥

दमयन्त्यपि हंसदर्शनदिवसादारभ्य भ्रमद्भृङ्गकुलकलकलोन्नादितपर्यन्तेषु, प्रत्यग्रोल्लूनपुष्पपल्लवास्तरणेषु, विचलद्विनोदविहंगेषु विहरति नासन्नोद्यानलतामण्डपेषु, न च विकचकुवलयकह्लारकुशेशयसारवारिणि रणच्चटुलचञ्चरीकचक्रवाकचक्रे क्रीडति क्रीडासरसि न च स्पृशति पाणिनापि माणिक्यमालामण्डनानि, न च रचयति रुचिरालकवल्लरीभङ्गान्तरालेषून्मिषत्कुसुमविन्यासान्, न च क्वचिदुच्चहंसतूलिकातल्पेऽपि कोमलकपोलावष्टम्भभाजि निद्रासुखमनुभवति, केवलमधिपाण्डुगण्डस्थलस्थापितपाणिपल्लवा प्रेषयन्ती प्रतिक्षणमुत्तरस्यां दिशि दृशं तद्देशागतान्गगने पक्षिणोऽपि सस्पृहं पश्यन्ति, तत्रत्यानध्वगानपि बन्धुबुद्ध्यालापयन्ती, तन्मण्डलगताय मरुतेऽप्यपनीतोत्तरीयांशुका हृदयमर्पयन्ती दिनं दिनमनङ्गेनाभ्यभूयत ।

सुधा—दमयन्तीति । दमयन्ती अपि = भैमी अपि । हंसदर्शनदिवसात् = हंसावलोकनदिनात् । आरभ्य = प्रारभ्य आसन्नोद्यानलतामंडपेषु = निकटवर्तिवाटिकालताकुञ्जेषु भ्रमद्भृङ्गकुले कलकलोन्नादितपर्यन्तेषु—भ्रमतः = पर्यटतः भृङ्गकुलस्य = अलिवृन्दस्य यः कलकलः = कलकलरवः तेन उन्नादितपर्यन्तेषु = उन्नादितान्तेषु । प्रत्यग्रोल्लून पुष्पपल्लवास्तरणेषु—प्रत्यग्रम् = सद्यः उल्लूनानि = उच्छेदितानि पुष्पाणि = कुसुमानि पल्लवानि = दलानि एव आस्तरणानि, तेषु । विचलद्विनोदविहंगेषु = विचलन्तः = प्रचलन्तः विनोदाय मनोरञ्जनाय ये विहंगाः = पक्षिणस्तेषु । विहरति = भ्रमति । न = नैव । च = तथा विकचकुवलयकह्लारकुशेशयसारकारिणि—विकसितनीलरक्तश्वेतकमलयुक्तजले रणच्चटुलचञ्चरीक चक्रवाकचक्रे—रणन्तः = गुञ्जन्तः चटुलाः = चञ्चलाः चञ्चरीकाः = भ्रमराश्चक्रवाकाश्च, तेषां चक्रम् = दलम्, तस्मिन् । क्रीडासरसि = क्रीडातडागे । क्रीडति = खेलति । न = नैव (अक्रीडत्)। च माणिक्यमालामण्डनानि = मणिमालाशोभितानि अपि पाणिना = करेण न स्पृशति = स्पर्शं न करोति । रुचिरालकवल्लरीभृङ्गान्तरालेषु = मनोरमवेणीवल्लरीरुपभृङ्गन्मध्येषु उन्मिषत्कुसुमविन्यासान्—उन्मिषन्ति = विकचितानि यानि कुसुमानि = पुष्पाणि तेषां विन्यासान् । न रचयति-न कल्पयति । क्वचित् = क्वापि । उच्चहंसतूलिकातल्पे = उच्चे हंससदृशे शुभ्रे तूलिकासने अपि । कोमलकपोलावष्टम्भभाजि = मृदुगण्डस्थलशोभि । निद्रासुखम् = निद्रानन्दम् । नानुभवति = अनुभवं न करोति । केवलम् = मात्रम् । अधिपाण्डुगण्डस्थलस्थापितपानि

पल्लवा—अधिपाण्डुगण्डस्थले = पाण्डुरकपोलस्थलोपरि स्थापिते = धृते पाणिपल्लवे करपल्लवे यस्याः सा । प्रतिक्षणम् = प्रतिपलम् । उत्तरस्यां दिशि = उदीची दिशायाम् । दृशम् = चक्षुः प्रेषयन्ती = प्रहिती । तद्देशात् = तत्स्थानात् आगतान् = आयातान् । पक्षिणः = खगान् अपि । गगने = आकाशे । सस्पृहम् = सोत्कण्ठम् पश्यन्ती = अवलोकयन्ती । तत्रत्यान् = तत्रनिवासिनः । अध्वगान् = पथिकान् अपि । बन्धुबुध्या = भ्रातृमत्या । आलपंती = आलापं कुर्वन्ती । तन्मण्डलगताय = तद्दिग्गताय मरुते = पवनाय अपनीतांशुका = परित्यक्तवस्त्रा । हृदयम् = चेतः । अर्पयन्ती = समर्पयन्ती । दिनं दिनम् = प्रतिदिनम् । अनङ्गेन = मदनेन । अभ्यभूयत = अभिभूता अभवत् ।

हिन्दी—दमयन्ती भी हंस को देखने वाले दिन से लेकर निकटवर्ती उद्यानलतामण्डपों में घूमने लगी जहां घूमते हुए भौंरों के समूह की मधुर गुन्जार हो रही थी ताजे तोड़े गये फूलों एवं पल्लवों के बिछौने बने हुये थे, रखे गये मनोविनोदार्थं पक्षी विहार कर रहे थे। विकसित नील रक्त तथा श्वेत कमल युक्त जल में चञ्चल गुनगुनाते भौरों और चक्रवाक के समूह क्रीडा सरोवर पर क्रीडा कर रहे थे पर (दमयन्ती का मन नहीं लगता था। वह मणिमाणिक्य की मालाओं को हाथ से छूती तक नहीं थी। रुचिर केशों की वेणीरूपी भ्रमरों के मध्य भाग में खिले हुये फूलों की वह विन्यास रचना (गूंथना) नहीं करती थी। कहीं ऊँचे हंसों जैसे शुभ्र रुई के गद्दे पर भी कोमल कपोलों के भाग को रखकर निद्रा के सुख का अनुभव नहीं करती थी। केवल पीले गालों पर अपने कमल जैसे कोमल हाथ रखे हुए वह हर समय उत्तर ओर को ही देखती हुई, उस ओर से आते हुये आकाश में पक्षियों को उत्कण्ठा से अवलोकन करती हुई, उस दिशा के पथिकों को भी भाई समझकर आलाप (बातचीत) करती हुई, उस ओर को चलती हुई वायु के लिए ऊपर से वस्त्र उतार कर अपना हृदय अर्पण करती हुई प्रतिदिन कामदेव से पराजित हो रही थी।

तथाहि—

> लास्यं पांसुकणायते नयनयोः, शल्यं श्रुतेर्वल्लकी,
> नाराचाः कुचयोः सचन्दनरसाः कर्पूरवारिच्छटाः ।
> तस्याः काप्यरविन्दसुन्दरदृशः सा नाम जज्ञे दशा
> प्राणत्राणनिबन्धनं प्रियकथा यस्यामभूत्केवलम् ॥ २० ॥

अन्वयः—लास्यम् तस्याः नयनयोः पांसुकणायते, वल्लकी श्रुतेः शल्यम् कुचयोः सचन्दनरसाः कर्पूरवारिच्छटाः नाराचाः । अरविन्दसुन्दरदृशः सा कापि दशा नाम जज्ञे यस्याम् प्रियकथा केवलम् प्राण-त्राण निबन्धनम् अभूत् ॥ २० ॥

सुधा—लास्यमिति । लास्यम् = नृत्यम् । तस्याः = दमयन्त्याः । नयनयोः = नेत्रयोः । पांसुकणायते = रजःकणवत् पीडयति । वल्लकी = वीणा । श्रुतेः = कर्णस्य । शल्यम् = कण्टकवत् पीडाकरा । कुचयोः = पयोधरयोः । सचन्दनरसाः = चन्दनरसयुक्ताः । कर्पूरवारिच्छटाः—कर्पूरस्य वारि = कर्पूरजलम् तस्य छटाः = शोभाः । नाराचाः = वाण सदृशाः पीडकाः । अरविन्दसुन्दरदृशः = अरविन्दमिव सुन्दरम् दृक् । यस्यास्तस्याः =

कमलदृशः दमयन्त्याः । सा = एषा कापि दशा = काचिदवस्था नाम जले = उत्पन्नाभूत् यस्याम् = यद्दशायाम् । प्रियकथा = प्रियवार्ता । केवलम् प्राण-त्राण-निबन्धनम् = जीवन-रक्षाकरम् अभूत् = अभवत् । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ २० ॥

हिन्दी--क्योंकि—नृत्य उसके नयनों में धूल से समान खटकने लगा, वीणा कानों में कांटों की भांति चुभने लगी, पयोधरों पर चन्दन रसयुक्त कर्पूरजल की छटायें वाणों के समान छिदने लगी। अरविन्द के समान सुन्दर नयनों वाली उस दमयन्ती की कुछ विचित्र सी दशा हो गई जिसमें केवल प्रियतम की कथा वार्ता ही उसके प्राणों की रक्षा का निबन्ध रह गई ॥ २० ॥

एवमनयोरन्योन्यप्रेषितप्रच्छन्नदूतोक्तिर्वर्धितानुरागयोः चलन्त्यङ्गानि न मनोरथाः परिवर्त्तते चक्षुर्न हृदयम्, कृशतामेत्यङ्गयष्टिनोत्कण्ठा, मन्दतां यात्युत्साहो नाभिलाषः स्फारीभवति निःसहता न निद्रा, वर्धते चिन्ता न रतिः, शुष्यत्यधरपल्लवो नाग्रहरसः ।

सुधा—एवमिति । एवम् = इत्थम् । अन्योन्यप्रेषितप्रच्छन्नदूतोक्तिर्वर्धितानुरागयोः = अन्योन्येन प्रेषिता = पारस्परिकप्रहिता प्रच्छन्नदूतोक्तिः दूतसमाचारः, तया वर्धितः = एधितः अनुरागः = स्नेहः ययोस्तयोः । अनयोः = एतयोः । अङ्गाः = शरीरावयवाः चलन्ति = कम्पन्ते । मनोरथाः = अभिलाषास्तु न चलन्ति = प्रचलन्ति । चक्षुः = अक्षि । परिवर्तते = पुत्तलिका परिवर्तनं करोति । हृदयम् = चेतस्तु न परिवर्तते = स्नेहभिन्नम् न भवति । अङ्गयष्टिनोत्कण्ठा–अङ्गम् शरीरम् एव यष्टिलतिका = अङ्गलतिका । कृशताम् = क्षीणताम् । एति = गच्छति । उत्कण्ठा = उत्सुकता तु नैव क्षीणायते । उत्साहः मन्दताम् = शिथिलताम् । याति = गच्छति । अभिलाषः = कामस्तु नैव मन्दायते । निःसहता = असह्यता । स्फारीभवति = विस्तारयति निद्रा तु नैवायाति । चिन्ता=चिन्तनम् । वर्धते = एधते । रतिः = प्रेमतु न वर्धते । अधरपल्लवः = ओष्ठपल्लवः । शुष्यति = नीरसतां याति । आग्रहरसः पारस्परिक मिलनान्तरे आग्रहानन्दः न शुष्यति ।

हिन्दी—इस प्रकार एक दूसरे के द्वारा भेजे गये गुप्त दूत समाचार से बढ़े हुए अनुराग वाले उन दोनों के अङ्ग तो कांप रहे थे पर मनोरथ नहीं, नयन इधर-उधर चल रहे थे पर हृदय विचलित नहीं होता था, शरीर यष्टि दुर्बल हुआ जा रहा था पर उत्कण्ठ नहीं उत्साह मन्द पड़ रहा था पर अभिलाषा नहीं, असह्यता विस्तार ले रही थी पर नींद नहीं आती थी, चिन्ता बढ़ने लगी, रति नहीं, अधर पल्लव सूख गये परन्तु आग्रह रूपी रस (आनन्द) नहीं कम हुआ ।

किं बहुना—

कर्पूराम्बुनिषेकभाजि सरसैरम्भोजिनीनां दलै-
रास्तीर्णेऽपि विवर्त्तमानवपुषोः स्रस्तस्रजि स्रस्तरे ।
मन्दोन्मेषदृशोः किमन्यदभवत्सा काप्यवस्था तयो-
र्यस्यां [illegible]श्रेण्यादि वल्लीयते ॥ २१ ॥

अन्वयः—कर्पूराम्बुनिषेकभाजि, अम्भोजिनीनाम् सरसैः दलैः आस्तीर्णे अपि स्रस्तस्रजि स्रस्तरे विवर्तमानवपुषोः मन्दोन्मेषदृशोः तयोः सा कापि अवस्था अभवत् यस्याम् अन्यत् किम् चन्दनचन्द्रचम्पकदलश्रेण्यादि वह्नीयते ॥ २१ ॥

सुधा—कर्पूरेति । कर्पूराम्बुनिषेकभाजि—कर्पूरस्य यदम्बु = कर्पूराम्बु तस्य निषेकानि तानि भजतीति यत्र = कर्पूरजलविन्दुशोभि । अम्भोजिनीनाम् = कमलानाम् सरसैः = कोमलैः दलैः = पल्लवैः आस्तीर्णे अपि स्रस्तस्रजि-स्रस्ताः = आस्तीर्णाः स्रजः = मालाः यत्र तादृशे स्रस्तरे = विष्टरे । विवर्तमानवपुषोः = विवर्तमाने = परावर्तमाने वपुषी = शरीरे ययोस्तयोः । मन्दोन्मेषदृशोः—मन्दनिर्निमेषचक्षुषोः तयोः = दमयन्तीनलयोः । सा = एषा कापि = काचित् । अवस्था = दशा । अभवत् = बभूव । यस्याम् = तदवस्थायाम् । अन्यत् किम् = अपरम् किम् । चन्दनचन्द्रचम्पकदलश्रेण्यादि = चन्दनम् चन्द्रः = सुधाकरः चम्पकदलश्रेण्यादि च = चम्पकपत्रपुञ्जादि च । वह्नीयते = अग्निवत् प्रतीयते शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ २१ ॥

हिन्दी—अधिक क्या—कर्पूरजलबिन्दुओं से सिञ्चित, कमल के सरस दलों से बिछे हुए पुष्पमालाओं से बिछे बिछौने पर भी करवटें बदलते हुए मन्द निर्निमेष दृष्टि वाले उन दोनों की कुछ और ही दशा हो गई थी जिसमें और क्या कहें चन्दन, चन्द्रमा तथा चम्पे की दल पंक्तियों जैसे पदार्थ भी दुःखदायी प्रतीत हो रहे थे ॥ २१ ॥

आसीच्च तयोः कृतान्योन्यगुणप्रश्नालापजपयोः पुनरुक्तावर्तितनामधेयस्वाध्याययोः संकल्पसमागमाबद्धध्यानयोः स्मरानले स्वं हृदयं जुह्वतोस्तप्यमानयोरङ्गीकृतमौनव्रतयोरपि वियोग एव, न योगः ।

सुधा—आसीदिति । कृतान्योन्यगुणप्रश्नालापजपयोः = विहितपारस्परिकगुणप्रश्नवार्ताजपयोः । पुनरुक्तावर्तितनामधेयस्वाध्याययोः—पुनरुक्तम् = भूयः कथितम् आवर्त्तितम् नामैव स्वाध्यायः याभ्याम् तयोः । संकल्पसमागमावद्धध्यानयोः—संकल्पे = चित्तकर्मणि यः समागमः तम् आवद्धं ध्यानम् = अवधानम् ययोः । स्मरानले = कामाग्नौ स्वम् = आत्मानम् हृदयम् = चेतः । जुह्वतोः = हवनं कुर्वतोः । तप्यमानयोः=व्याकुलयोः । अङ्गीकृतव्रतयोः = अङ्गीकृतम् = स्वीकृतम् मौनव्रतम् मौन संकल्पम् याभ्यां तयोः । तयोः = एतयो अपि । वियोगः = विरतिः एव आसीत् योगस्तु नैवासीत् ।

हिन्दी—एक दूसरे के गुण प्रश्न वार्ता रूप जप में लगे हुए, बार-बार नाम ग्रहण रूपी स्वाध्याय करने वाले, चित्त में मिलन विषयक धारणा बनाये हुये, कामाग्नि में अपने हृदय को हुतते हुए व्याकुल मौन बने उन दोनों (दमयन्ती और नल) के लिए वियोग (विशेष प्रकार की योग साधना) ही था योग (मिलन) नहीं था ।

कदाचित्तु तरुणजननयनकुरङ्गवागुरामनङ्गगजेन्द्रमदप्रवाहढक्कामपहसितसुरासुरसुन्दरीरूपश्रियं शृङ्गाररसराजधानीमवलोक्य यौवनावस्थां दमयन्त्याः 'कोऽस्याः किलानुरूपः पतिर्भवेत्' इति, चिरं चिन्ताकुलो विदर्भेश्वरः स्वयं स्वयंवरधर्मंप्रारम्भाय समं मन्त्रिभिर्मन्त्रनिश्चयं चकार ।

सुधा—कदाचिदिति । कदाचित् = कदापि तु । तरुणजननयनकुरङ्गवागुराम्—तरुणजनानां = युवजनानाम् नयनानि एव तुरङ्गाः = मृगाः, तेभ्य वागुराम्=जालरूपाम् । अनङ्गगजेन्द्रमदप्रवाहढक्काम्—अनङ्ग एव गजेन्द्रः = कामगजराजः, तस्य मदस्य = क्षीवस्य यो प्रवाहः तस्य ढक्कारूपाम्=गर्जनरूपाम् । अपहसितसुरासुरसुन्दरीरूपश्रियम् = अपहसिता = तिरस्कृता सुराणाम् = देवानाम् असुराणाम् = राक्षसानाञ्च सुन्दरीणाम् = रमणीनाम् श्रीः = शोभा यया ताम् । शृङ्गाररसराजधानीम्—शृङ्गाररसस्य राजधानीमिव दमयन्त्याः यौवनावस्थाम्=तरुणदशाम् । अवलोक्य = दृष्ट्वा । किल = खलु । अस्याः= एतस्याः दमयन्त्याः अनुरूपः = अनुकूलः कः = को जनः पतिः = भर्त्ता । भवेत् = स्यात् । इति = एवम् । चिरम् = बहुकालम् । चिन्तातुरः = चिन्तया आतुरः = दुःखितः । विदर्भेश्वरः = विदर्भराजो भीमः । स्वयम् = आत्मना । स्वयंवरधर्मप्रारम्भाय = आत्मानुरूपपतिवरणारम्भाय । मन्त्रिभिः—अमात्यैः समम् = साकम् । मन्त्रनिश्चयम् = मन्त्रणाम् । चकार = अकरोत् ।

हिन्दी—कदाचित् युवक जनों के नयन रूपी मृगों को बांध लेने वाली जाल रूप मदन गजेन्द्र के मद प्रवाह की गड़गड़ाहट, देवताओं एवं दैत्यों की रमणियों के सौन्दर्य को तिरस्कृत करने वाली, शृङ्गार रस की राजधानी बनी हुई दमयन्ती की यौवनावस्था को देखकर वास्तव में इसके अनुरूप कौन पति हो सकता है'' यह बहुत देर तक सोचते हुये विदर्भराज भीम ने स्वयं स्वयंवर धर्म को प्रारम्भ करने के लिए मन्त्रियों के साथ विचार विमर्श किया ।

न चिराच्च प्राच्यप्रतीच्योदीच्यदाक्षिणात्यनरपतिनिमन्त्रणे सप्राभृतान्प्रगल्भप्रायान्प्रधानप्रेष्यान्प्रेषयामास ।

सुधा—नचिरादिति । च = तथा । न चिरात् = अविलम्बम् । प्राच्यप्रतीच्योदीच्यदाक्षिणात्यनरपतिनियन्त्रणे—पूर्व-पश्चिमोत्तरदक्षिणानिवासिनृपतिनिमन्त्रणे । सप्राभृतान् उपहारयुतान् । प्रगल्भप्रायान् = महच्चतुरान् । प्रधानप्रेष्यान्=प्रमुखदूतान् । प्रेषयामास= प्रेषितवान् ।

हिन्दी—शीघ्र ही पूर्व-पश्चिम उत्तर तथा दक्षिण दिशाओं में रहने वाले राजाओं को निमन्त्रण देने के लिये उपहार युक्त अति प्रगल्भ प्रमुख दूतों को भेजा ।

प्रस्थितं कंचिदुदीच्यनरपतिनिमन्त्रणाय प्रबुद्धवृद्धब्राह्मणमाप्तसखीमुखेन दमयन्ती श्लिष्टार्थमिदमवादीत् ।

सुधा—प्रस्थितमिति । दमयन्ती = भैमी उदीच्यनरपतिनिमन्त्रणाम् = उत्तरदिङ्नृपतिनिमन्त्रणाय । कञ्चित् = कमपि । प्रस्थितम् = प्रयातम् । प्रबुद्धवृद्धब्राह्मणम्—प्रबुद्धः = चतुरः वृद्धः = जठरश्च ब्राह्मणः = विप्रः, तम् । आप्तसखीमुखेन = विश्वस्तसखीजनेन । श्लिष्टार्थम् = श्लेषयुक्तम् । इदम् = एतत् । अवादीत् = प्राह ।

हिन्दी—दमयन्ती ने उत्तर दिशा को राजाओं को निमन्त्रण देने के लिए प्रस्थान करने वाले किसी चतुर वृद्ध ब्राह्मण से विश्वस्त सखी द्वारा श्लेष भरी भाषा में यह कहा—

'भूपालामन्त्रणे तात तथा संचार्यतां यथा।
नलोपागमबुद्धिः स्यात्प्रार्थ्यसे किमतः परम्' ॥ २२ ॥

अन्वयः—तात भूपालामन्त्रणे तथा संचार्यताम् यथा नलोपागम बुद्धिः स्यात्। अतः परम् किम् प्रार्थ्यसे ॥ २२ ॥

सुधा—भूपालेति। तात=हे विप्र! भूपालामन्त्रणे=भूपालानाम् आमन्त्रणे=नृपतिनिमन्त्रणे भवता तथा=तेन प्रकारेण सञ्चार्यताम्=संचरणं क्रियताम्। यथा=येन। नलोपागमबुद्धिः=लोपागमबुद्धिः=आगमावनतिः=शास्त्रप्रतीतिलोप्या न स्यात् इति वांद्यार्थः दृष्टार्थस्तु-यथा नलस्य=नलनृपस्य आगमबुद्धिः=आगमनाय विचारः स्यात्=भवेत् अतः परम्=अस्मादधिकम् किं प्रार्थ्यसे=निवेद्यसे ॥ २२ ॥

हिन्दी—हे तात! राजाओं को निमन्त्रित करने में ऐसा कीजियेगा कि जिससे आगमबुद्धि–शास्त्रीयपद्धति का लोप (उल्लंघन) न हो यही प्रार्थना है इससे अधिक क्या कहा जाय।

(दृष्टार्थ) हे तात राजाओं को निमन्त्रित करने में ऐसा कीजियेगा कि जिससे (इस स्वयंवर में) राजा नल भी आने का विचार बना सकें। इससे अधिक क्या निवेदन किया जाये॥ २२ ॥

सोऽप्यवगतश्लोकार्थस्तथाविधमेव प्रत्युत्तरमदात्।

सुधा—सोऽपीति। सः=वृद्धब्राह्मणः अपि। अवगतश्लोकार्थः=अवगतम्=ज्ञातम् श्लोकस्य=छन्दसः अर्थम् येन सः। तथाविधम्=तत्प्रकारकम् एव। प्रत्युत्तरम् तदुत्तरम्। अदात=दत्तवान्।

हिन्दी—श्लोक का अर्थ समझे हुये इस वृद्ध ब्राह्मण ने भी उसी प्रकार उत्तर दिया।

केनापि व्यवहारेण कयापि प्रौढलीलया।
करिष्याम्यागमस्यार्थे रभसेन न लङ्घनम् ॥ २३ ॥

अन्वयः—केन अपि व्यवहारेण कया अपि प्रौढलीलया आगमस्य अर्थे रभसेन नलम् घनम् करिष्यामि ॥ २३ ॥

सुधा—केनापीति। केनापि व्यवहारेण=कथमपि व्यवहारं कृत्वा। कया अपि प्रौढलीलया कयापि प्रौढकलया। आगमस्य=शास्त्रस्य, आगमनस्य वा अर्थे=हेतौ। रभसेन=त्वरितम्। न लङ्घनम् करिष्यामि=उल्लघनं न विधास्यामि। अथवा–नलम्=नलनृपम् घनम्=सुदृढ़विचारयुक्तम् (आगमाय) करिष्यामि=सम्पादयिष्यामि ॥२३॥

हिन्दी—किसी भी व्यवहार से और किसी भी प्रौढ कला के द्वारा मैं शास्त्र के विषय में शीघ्र उल्लंघन नहीं करूँगा (दृष्टार्थ) किसी भी व्यवहार या प्रौढ़ कला द्वारा इस स्वयंवर में आने के लिए मैं राजा नल को दृढ़ विचार युक्त बनाऊँगा ॥ २३ ॥

'तदायुष्मति सुखमास्ताम्' इत्यभिधाय गतवान्।

सुधा—तदिति। तत्=अतः आयुष्मति=चिरजीविनि! सुखम् आस्ताम्—आनन्देन स्थीयताम्। इति=एवम् अभिधाय=कथयित्वा। गतवान्=प्रस्थितवान्।

हिन्दी—अतः 'हे आयुष्मति ! सुख से रहिये' यह कहकर चला गया।

अथ नातिचिरेणागतस्तया रहः समाहूय स ब्राह्मणः सोमशर्मा नर्मालापलीलया दमयन्त्या बभाषे।

सुधा—अथेति। अथ = अनन्तरम्। नातिचिरेण = द्रुतम्। आगतः = आयातः। सः = असौ। सोमशर्मा ब्राह्मणः = सोमशर्माभिधः विप्रः। तया = एतया। दमयन्त्या = भैम्या। रहः = एकान्ते। समाहूय = आकार्य। नर्मापलीलया = कोमलवाचा। बभाषे = कथितम्।

हिन्दी—तदनन्तर देर किये बिना ही आये हुये उस सोमशर्मा ब्राह्मण को एकान्त में बुलाकर दमयन्ती ने कोमल वाणी द्वारा कहा—

'आहूतोदीच्यभूपेन तातादेशविधायिना।
नालीकापि त्वया वार्ता विद्वन्नावेदिता मम' ॥ २४ ॥

अन्वयः—विद्वन् ! तातादेशविधायिना आहूतोदीच्यभूपेन त्वया नालीका वार्ता अपि मम निवेदिता ॥ २४ ॥

सुधा—आहूतेति। विद्वन् ! पण्डित ! तातादेशविधायिना = तातस्य = पितुः आदेशविधायिना = आज्ञाकारकेण। आहूतोदीच्यभूपेन = आहूताः = आकारिताः उदीच्यभूपाः = उत्तरदिग्भूपालाः येन तेन। त्वया = भवता न = नैव। अलीकावार्ता = मिथ्या-समाचारः अपि। अथवा = नलस्येयं नालीका = नल सम्बन्धिनी वार्ता = कथा अपि मम = मे। न निवेदिता = मावेदिता ॥ २४ ॥

हिन्दी—हे विद्वन् ! पिताजी के आदेश का पालन करने वाले तथा उत्तर दिशा के राजाओं को बुलाने वाले आपने मुझसे-झूठी भी बात नहीं निवेदन की है ॥ २४ ॥

(द्वष्टार्थं) हे विद्वन् ! पिताजी के आदेश का पालन करने वाले तथा उतरी राजाओं को निमन्त्रण देने वाले अपने राजा सम्बन्धी वार्ता भी मुझे नहीं बतलाई है ॥ २४ ॥

सोऽपि 'एष कथयामि श्लेषोक्तिकुशले, श्रूयताम्' इत्यभिधाय विहसन्नाख्यातुमारब्धवान्।

सुधा—सोऽपि। सः = असौ विप्रः अपि। एषः = अयमहम्। कथयामि = ब्रवीमि श्लेषोक्तिकुशले–श्लेषोक्तौ = श्लिष्टभाषाकथने कुशला = दक्षा तत्सम्बुद्धौ = अयि श्लिष्टभाषिणि ! श्रूयताम् = आकर्ण्यताम्। इति = एवम्। अभिधाय = कथयित्वा विहसन् = मन्दं हसन्। आख्यातुम् = कथयितुम्। आरब्धवान् = प्रारभत।

हिन्दी—उसने भी—हे श्लेषभाषण में चतुर ! सुनो मैं कह रहा हूँ। यह कहकर मन्द मुस्कराते हुए कहना प्रारम्भ किया।

इतो निर्गत्य मया मण्डलेश्वरामन्त्रणक्रमेण परिभ्रमताऽभ्रंकषानेककूटकोटिस्थपुटितकटकस्य निषधनाम्नो महीध्रस्य दक्षिणारण्यस्थलीषु मृगया-सक्तः।

सुधा—इत इति। इतः = अस्मात् स्थानात्। निर्गत्य = निष्क्रम्य। मया = विप्रेण मण्डलेश्वरामन्त्रणक्रमेण–मण्डलेश्वरान् = मण्डलनृपान्। आमन्त्रणक्रमेण = निमंत्रणक्रमेण।

परिभ्रमता = चंक्रमता । अभ्रंकषानेककूटकोटिस्थपुटितकटकस्य = गगनचुम्ब्यनेकपर्वत-श्रेणिपुटितकटकस्य । निषधनाम्नः = निषधाख्यस्य । महीध्रस्य = पर्वतस्य । दक्षिणारण्य-स्थलीषु = अवाचीवनभूमिषु । मृगयासक्तः = आखेटलग्नः ।

हिन्दी—इस स्थान से निकल कर मैंने मण्डलेश्वरों (भूपालो) को निमन्त्रण देने के क्रम से घूमते हुये गगनचुम्बी अनेक पर्वत शिखरों से युक्त समुदाय वाले निषध नामक पर्वत की दक्षिणी वनस्थली में आखेट करने में संलग्न—

माद्यन्मांसलतुङ्गपुंगवककुत्कूटान्नतांसस्थलः
कालिन्दीजलकान्तिकुन्तलशिराः पूर्णेन्दुबिम्बाननः ।
एकः कोऽपि मनोहरः पथि युवा दृष्टः स यस्मिन्सकृद्-
दृष्टे नष्टनिमेषया मम दृशा लब्धं फलं जन्मनः ॥ २५ ॥

अन्वयः—माद्यन्मांसलतुङ्गपुङ्गवककुत्कूटोन्नतांसस्थलः, कालिन्दीजलकान्तिकुन्तल-शिराः पूर्णेन्दुबिम्बाननः कः अपि एकः मनोहरः युवा पथि दृष्टः । यस्मिन् सकृत् नष्ट निमेषया दृष्टे मम-दृशा जन्मनः फलम् लब्धम् ॥ २५ ॥

सुधा—माद्यन्निति । माद्यन्मांसलतुङ्गपुङ्गवककुत्कूटोन्नतांसस्थलः—माद्यत् = मत्तम् मांसलम् = मांसयुक्तम् तुङ्गम् = उन्नतम् पुङ्गवं = श्रेष्ठम् ककुत् = कुम्भम् इव तथा कूटम्-पर्वतमिवोन्नतम् = उच्चम् अंसस्थलम् = स्कन्धस्थानम् यस्य तथा । कालिन्दीजलकान्ति-कुन्तलशिराः—कालिन्द्याः = यमुनायाः जलम् = नीरम्, तस्य या कान्तिः = दीप्तिस्तथा कुंतलयुतम् = कचयुक्तम् शिरः = उत्तमाङ्गम् यस्य तथा । पूर्णेन्दुबिम्बाननः = पूर्णेन्दुः = पूर्णचन्द्रः, तस्य बिम्बमिवाननं-मुखं यस्य तथा । कःअपि = कश्चिदपि एकः मनोहरः = मनोरमः । युवा = तरुणः । पथि = मार्गे । दृष्टः = अवलोकितः । यस्मिन् = एतस्मि-न्युवके सकृत् = एकवारम् । नष्टनिमेषया = निर्निमेषया दृशा = चक्षुषा । दृष्टे = अवलो कने । मम = मे । जन्मनः = जीवनस्य । फलम् = साफल्यम् । लब्धम् = प्राप्तम् ॥२५॥

हिन्दी—मत्त मांसल, ऊँचे तथा उत्तम कोटि के पर्वतशिखरों के समान उन्नतकंधों वाले कालिन्दी जल की कान्ति के समान श्यामल केशों से युत शिर वाले, पूर्णमासी के चन्द्रमा के बिम्ब के समान सुन्दर मुख वाले किसी एक मनोहर युवक को मैंने मार्ग में देखा । जिसके एकबार ही अपलक दृष्टि से देख लेने पर मैंने अपने जन्म का फल पालिया (जन्म सफल हो गया) ॥ २५ ॥

तेनापि 'दाक्षिणात्योऽयम्' इति निश्चित्य साभिलषमाभाषितोऽस्मि । मयापि कृतोचितालापेनोक्तम् ।

सुधा—तेनेति । तेन = युवजनेन अपि । दाक्षिणात्यः = दक्षिणदिग्वासी । अयम् = एषः इति = एवम् । निश्चित्य = निश्चयं कृत्वा । साभिलाषम् = अभिलाषा सहितम् अहम् आभाषितः = कथितः अस्मि । मयापि = मामकेनापि । कृतोचितालापेन = कृतः = विहितः उचितः = उपयुक्तः आलापः = कथनम् येन तादृशेन । उक्तम् = भणितम् ।

हिन्दी—उसने भी 'यह दक्षिणदेश का निवासी है' यह निश्चय कर अभिलाषा सहित मुझसे बातचीत की । मैंने भी उचित ढंग से वार्तालाप कर लेने के पश्चात् कहा—

'यथेयमाकृतिर्लोकलोचनानन्ददायिनी ।
तव भद्र तथा सत्यं सत्यागोऽसि नलो भवान्' ॥ २६ ॥

अन्वयः—भद्र ! यथा इयम् तव लोकलोचनानन्ददायिनी आकृतिः, तथा सत्यम् सत्यागः नलो भवान् असि ॥ २६ ॥

सुधा—यथेति । भद्र ! हे कल्याणकर ! यथा = येन प्रकारेण । इयम् = एषा । तव= ते । लोकलोचनानन्ददायिनी = जननयनानन्ददात्री । आकृतिः = आकारः । तथा = तेनैव प्रकारेण सत्यम् = अवितथम् । सत्यागः—सत् = शोभनः त्यागो यस्य = सुत्यागयुक्तः, न लोभवान् = लोभयुक्तः नैव असि । अथवा नलः = नलाख्यः भवान् = श्रीमान् इति पृथग् वाक्यद्वयम् । एकवाक्यतायां तु भवान् असि इति मध्यम-पुरुषो दुर्लभः ॥ २६ ॥

हिन्दी—हे भद्र ! जैसी यह लोगों के नयनों का सुख देने वाला आपकी आकृति है वैसे ही सचमुच आप उत्तम त्याग गुण से युक्त हैं, लोभी नहीं है ॥ २६ ॥

टिप्पणी—नलो भवान् यह पृथक्पद मान लेने पर । 'आप नल हैं' यह श्लिष्टार्थ भी हो जाता है । वैसे 'असि' क्रिया पद मध्यम पुरुष होने के कारण उपर्युक्त अर्थ उचित नहीं है ।

एवमुक्तः सोऽपि मनाङ्मुग्धस्मितमेवोत्तरं कल्पितवान् ।

अथ प्रथमवयोविभूषिताङ्गस्तुङ्गतुरंगमारूढो गाढग्रथितपरिकरः करेण कोदण्डमाकलयंस्तद्‌द्वितीयो युवा तमेव देशमागतवान् ।

सुधा—एवमिति । एवम् = इत्थम् । उक्तः = कथितः । सः = असौ । अपि मनाक् = किञ्चित् मुग्धस्मितम् = मृदुहासयुतम् एव । उत्तरम् कल्पितवान् = उत्तरयामास ।

अथ = अनन्तरम् । प्रथमवयोविभूषिताङ्गः—प्रथमेन वयसा = कौमारावस्थया विभूषितम् = शोभितम् अङ्गम् शरीरम् यस्य सः । तुङ्गतुरङ्गम् = उच्चाश्वम् । आरूढः आरोहणकृतः । गाढग्रथितपरिकरः—गाढम् = घनम् ग्रथितम् परिकरम् = कटिभागम् येन तथा । करेण = हस्तेन । कोदण्डम् = धनुः । आकलयन् = गृह्णन् । तद्द्वितीयः = तदपरः युवा = तरुणः । तम् एव देशम् = तत्स्थानमेव । आगतवान् = आगच्छत् ।

हिन्दी—ऐसा कहने पर वह भी कुछ कुछ मधुर मुस्कान के साथ उत्तर सोचने लगा ।

तदनन्तर प्रथमावस्था (यौवन) से अलङ्कृत ऊँचे घोड़े पर सवार कमर में पेटी बांधे हुये, हाथ से धनुष लिये दूसरा युवक उसी स्थान पर आया ।

आगत्य च बालनीलनलशालिनि शिलोच्चयस्थलीप्रदेशे कांचित्काञ्चनकुम्भकान्तिकुचकण्ठलुठितकुसुममालिकामवलोकयन्निदमवादीत् ।

सुधा—आगत्येति । च = तथा । आगत्य = आगम्य । बालनीलनलशालिनि = नूतनश्यामनलशस्ययुते । शिलोच्चयस्थली प्रदेशे = पर्वतस्योच्चस्थलभागे । कांचित् = कामपि । काञ्चनकुम्भकान्तिकुचकण्ठलुठितकुसुममालिकाम्—काञ्चनकुम्भस्य = स्वर्णकलशस्य कान्तिः = प्रभा, ययोः तथा कुचौ = पयोधरौ कण्ठश्च = गलदेशश्च तेषु लुठिता =

लम्बिता कुसुममालिका = पुष्पस्रक् यस्यास्तादृशीम् सुन्दरीम् । अवलोकयन् = पश्यन् । इदम् = एतत् अवादीत् = अवोचत् ।

हिन्दी—आकर नवीन श्यामल नलघास से युक्त पर्वत के उच्च भाग पर स्वर्ण कुम्भ के समान कान्ति वाले पयोधरों पर तथा गले में पुष्पमाला पहने हुये किसी नायिका को देखते हुये कहा—

'युवराज, पश्य—

नद्यास्तीरे विदर्भायाः कापि गोपालबालिका ।
गाः समुच्चारयत्येषा क्षेत्रीकृत्य नलं वरम्' ॥ २७ ॥

अन्वयः—विदर्भायाः नद्याः तीरे कापि गोपालबालिका वरम् नलम् क्षेत्रीकृत्य गाः समुच्चारयति ॥ २७ ॥

सुधा—नद्याः इति । विदर्भायाः = विशिष्टाः दर्भाः यत्र तस्याः = बहुकुशयुक्तायाः नद्याः = सरितः = तीरे = तटे । एषा = इयम् कापि = काचित् गोपालबालिका = वरम् = श्रेष्ठम् । नलम् = तृणविशेषम् । क्षेत्रीकृत्य = केदारीकृत्य । गाः = धेनुः । समुच्चारयति = मुदा सहितम् समुत् । चारयति = चारणं करोति । नल पक्षे तु विदर्भायाः विदर्भाभिधायाः । नद्याः = सरितः । तीरे = तटे । एषा = इयम् । कापि = काचित् गोपालबालिका = गाम् = पृथ्वीम् पालयति = अवति इति गोपालः, तस्य = भूपतेः बालिका = पुत्री । वरम् = श्रेष्ठम् वरयितारम् । नलम् = नलाख्यं नृपम् । क्षेत्रीकृत्य = आश्रयीकृत्य गाः = गिरः । समुच्चारयति = कथयति ।

हिन्दी—हे युवराज ! देखो, विशेषरूप से कुशों से युक्त नदी के तट पर यह कोई ग्वाले की कन्या अच्छी 'नल' नामक घास को अपना खेत मानकर गायें चरा रही है ॥ २७ ॥

(नलपक्ष में) हे युवराज देखो विदर्भनदी के तट पर यह कोई राजकुमारी नल को वर मानकर प्रसन्नता से कह रही है ॥ २७ ॥

एतदाकर्ण्य मयाप्युक्तम्—'महानुभाव, न केवलमियमन्यापि क्वापि कापि' इति ।

इत्युक्तवन्तं मामवलोक्य भावितार्थः स पुनः सस्मितमवोचत् ।

सुधा—एतदिति । एतत् = इदम् । आकर्ण्य=श्रुत्वा । मया अपि उक्तम् = कथितम् । महानुभाव = महाशय । केवलम् इयम् = एषा न अन्या अपि = अपरापि । कापि = काचित् । क्वापि = कुत्रचिदपि । इति ।

इति = एवम् । उक्तवन्तम् = कथयन्तम् । माम् अवलोक्य = दृष्ट्वा । भावितार्थः = भावितम् = ज्ञातम् अर्थम् = तात्पर्यम् येन सः । सः = असौ । पुनः = भूयः सस्मितम् = हासयुतम् अवोचत् = अकथयत् ।

हिन्दी—यह सुनकर मैंने भी कहा—महानुभाव, केवल यही नहीं, और कोई दूसरी भी कहीं है ।

इस प्रकार कहते हुये मुझे देखकर तात्पर्य समझ कर मुस्कराते हुये उसने पुनः कहा।

'इयं च सा च—

अनुभवतु चिराय चञ्चलाक्षीरसपरिणामफलानि गोपपुत्री।
अपसरति महोद्यमेन यस्याः कथमपि संप्रति नैषधेऽनुरागः' ॥ २८ ॥

अन्वयः—चञ्चला गोपपुत्री क्षीरसपरिणामफलानि चिराय अनुभवतु, यस्याः महोद्यमेन नैषधे अनुरागः सम्प्रति कथम् अपि अपसरति ॥ २८ ॥

सुधा—अनुभवत्विति। इयम् च = एषा च। सा च = असौ च। चञ्चला=चपला। गोपमुखी = गोपालदारिका। क्षीरसपरिणामफलानि = दुग्धजातफलानि दधिसर्पिषादि। चिराय = बहुकालाय। अनुभवतु। यस्याः = एतस्याः। महोद्यमेन महत्प्रयासेन एषः = अयम् गोविषये अनुरागः = प्रेम ! सम्प्रति = इदानीम्। कथमपि = केनापि प्रकारेण न अपसरति = दूरं न गच्छति। अथवा। चञ्चलाक्षी = चपलनयना। गोपपुत्री = भूपालदारिका दमयन्ती। रसपरिणामफलानि = शृङ्गारादिरसपरिपाकफलानि। चिराय = बहुकालाय। अनुभवतु = उपभुङ्क्ताम्। यस्याः। महोद्यमे = महत्प्रयासे। नैषधे = नले। अनुरागः = प्रेम। सम्प्रति। कथम् अपि = केनापि प्रकारेण। न अपसरति दूरं न गच्छति ॥ २८ ॥

हिन्दी—यह और वह—

चञ्चल गोपाल कन्या दूध से सम्बन्ध रखने वाले दही घी आदि का बहुत समय अनुभव करे जिसके महान् उद्यम से यह धेनु सम्बन्धी अनुराग इस समय किसी प्रकार दूर नहीं हो रहा है ॥ २८ ॥

अथवा—चञ्चल नयनों वाली राजकुमारी शृङ्गारादि रसों को परिपक्वावस्था का बहुत समय तक अनुभव करे जिसका महान् उद्यम में नल पर प्रेम इस समय किसी प्रकार दूर नहीं हो रहा है ॥ २८ ॥

आस्तां तावदन्यत्। अध्वन्य, कथय कुतः प्रष्टव्योऽसि, किं च कियद्वाद्यापि वर्त्मातिक्रमितव्यम्' इति।

सुधा—तावदिति। तावत् = तावत्कालम्। अन्यत् = अपरम्। आस्ताम् = भवतु। अध्वन्य = अयि पथिक ! कथय = भण। कुतः = कस्मात् पृष्टव्यः असि = प्रष्टुं योग्यः असि। अद्यापि = इदानीमपि। किम् च कियद् वा = किम् कियद् दूरं वा। वर्त्म = मार्गम्। अतिक्रमितव्यम् = गन्तव्यम् इति।

हिन्दी—अन्य बातें छोड़िये। हे पथिक ! कहिये-किससे पूछा जाय, अभी क्या और कितनी दूर मार्ग चलना है।

अथ कथितस्ववृत्तान्तेन मयापि कोऽयमशेषमनुष्यमस्तकमणिः, कश्च भवानपि स्वप्रज्ञाप्राग्भारपराङ्मुखीकृतपुरंदरगुरुः' इति पर्यनुयुक्तः स पुनरुक्तवान्।

सुधा—अथेति। अथ=अनन्तरम्। यया अपि स्ववृत्तान्तेन=आत्मवृत्तेन। कथितः=उक्तः। सः=असौ। अयम्=एषः। अशेषमस्तकमणिः=निखिलजनशिरोमणिः कः अस्तिः। भवान् अपि=श्रीमान् अपि। स्वप्रज्ञाप्राग्भारपराङ्मुखीकृतपुरन्दरगुरुः स्वस्य=आत्मनः प्रज्ञायाः=बुद्धेः प्राग्भारेण=पूर्वंभारेण पराङ्मुखीकृतः=पश्चान्मुखीकृतः, विपरीतकृतो वा पुरंदरगुरुः=बृहस्पतिर्येन सः। कः अस्ति। इति=एवम् पर्यनुयुक्तः=परितः अनु पश्चाद युक्तः सः। पुनः=भूयः उक्तवान्=उवाच।

हिन्दी—अनन्तर मैंने भी उससे अपना समाचार कहा। यह समस्त जनों का शिरोमणि कौन है और अपनी बुद्धि बल से इन्द्र के गुरु बृहस्पति को भी पराजित करने वाले आप भी कौन हैं यह पूछने पर उसने पुनः कहा।

'अयमसौ सौम्य समस्तशस्त्रशास्त्रकोविदो विदारितवैरी वैरसेनिर्नलः। किमन्यदहमपि श्रुतशीलो नामास्यैवाज्ञाकारी, इत्यभिधाय विश्रान्तवान्।

सुधा—अयमिति। सौम्य=हे सुभग! समस्तशस्त्रशास्त्रकोविदः=समस्तानाम्=अखिलानाम् शस्त्राणाम्=आयुधानाम् शास्त्राणाम्=व्याकरणादिषट्शास्त्राणाम् च कोविदः=पटुः। विदारितवैरी=विदारिताः=नाशिताः वैरिणः=शत्रवः येन सः। वैरसेनिः=वीरसेनसुतः नलः=नलाख्यः अयम्=एषः असौ=सः अस्ति। अन्यत् किम्=अपरम् किम्। अहमपि श्रुतशीलः नाम=श्रुतशीलाख्यः। अस्य=नलस्य एव। आज्ञाकारी=आदेशपालकः अस्मि। इति=एवम्। अभिधाय=कथयित्वा। विश्रान्तवान्=विरराम।

हिन्दी—हे सौम्य! यह समस्त शस्त्र तथा शास्त्रों में पटु, शत्रुओं का विदारण करने वाले, वीरसेन के पुत्र नल हैं। अधिक क्या कहूँ मैं भी श्रुतशील नाम का इन्हीं का आदेशपालक हूँ। यह कह कर चुप हो गया।

नलोऽपि कृत्वा त्वदाश्रयास्तास्ताः प्रकटितप्रेमकन्दलाः कथाः, समर्थ्य च स्वयंवरामन्त्रणमुत्सुकतया तत्कालमेवोड्डीय गन्तुमीहमानः संभाषितेन स्मितेनालोकितेन च माममृतवर्षेणेवाह्लादयन्ननिच्छन्तमपि प्रतिग्राह्य च बलादनर्घ्याणि स्वाङ्गाभरणानि चिरादेव व्यसर्जयत्।

सुधा—नल इति। नलः अपि=नलाख्यः नृपः अपि। त्वदाश्रयाः=त्वदधीनाः ताः ताः प्रकटितप्रेमकन्दलाः—प्रकटितम्=प्रस्फुटितम् प्रेमकन्दलम्=अनुरागमूलम् याभिस्ताः कथाः=वार्ताः। कृत्वा=विधाय। स्वयंवरामन्त्रणम्=स्वयंवरनिमन्त्रणम् च। समर्थ्य=स्वीकृत्य। उत्सुकतया=उत्कण्ठया। तत्कालम्=तत्क्षणम् एव। उड्डीय=उत्पत्य। गन्तुम्=चलितुम्। ईहमानः=इच्छुकः। सम्भाषितेन=सम्भाषणेन। स्मितेन=मन्दहसितेन। आलोकितेन=अवलोकनेन च। माम्=ब्राह्मणम्। अमृतवर्षेण=सुधावर्षेण आह्लादयन् इव=प्रसन्नयन्निव। अनिच्छतम् अपि=अनभिलषितमपि। बलात्=हठात्। अनर्घ्याणि=बहुमूल्यानि। स्वाङ्गाभरणानि=आत्माङ्गभूषणानि प्रतिग्राह्य=ग्राहयित्वा। चिरादेव=विलंबादेव। व्यससर्ज=विसर्जयामास।

हिन्दी—नल ने भी तुम से सम्बन्धित उन उन प्रेम प्रकट करने की जड़ कथाओं को कह कर उत्सुकता से स्वयंवर के निमन्त्रण का समर्थन कर तत्काल ही मानों उड़ कर पहुँच जाने की इच्छा करते हुए, सम्भाषण, मन्द मुसकान तथा दर्शन के द्वारा मुझे अमृत वर्षा से प्रसन्न करते हुए न चाहते हुये भी जबर्दस्ती बहुमूल्य अपने शरीर से आभूषण उतार कर देकर बड़ी देर में विसर्जित किया।

स्वयं च मृगयाव्यसनितया मृगयालुभिः सह—

धीरं रङ्गन्तमारुह्य सारं रंहसि वाजिनम्।
हारं रम्यं गले बिभ्रत्स्वैरं रन्तुमगात्पुनः॥ २९॥

अन्वयः—धीरम् रङ्गन्तम् रंहसि सारम् वाजिनम् आरुह्य गले रम्यम् हारम् बिभ्रत् पुनः स्वैरम् रन्तुम् अगात्॥ २९॥

सुधा—स्वयमिति। च=तथा। मृगयाव्यसनितया—मृगयायाः=आखेटस्य व्यसनम् तस्य भावस्तया। मृगयालुभिः सह=आखेटकैः सह।

धीरमिति। धीरम्=अत्रासम्। रङ्गन्तम्=वल्गन्तम्। रंहसि=वेगे। सारम्=उत्कृष्टम्। वाजिनम्=अश्वम्। आरुह्य=आरोहणं कृत्वा। गले=कण्ठे। रम्यम्=रमणीयम्। हारम्=हाराभूषणम्। बिभ्रत्=धारयन्। पुनः=भूयः। स्वैरम्=स्वच्छन्दम् रन्तुम्=विचरितुम्। अगात्=अगच्छत्॥ २९॥

हिन्दी—शिकार का अभ्यासी होने के कारण स्वयम् शिकारियों के साथ (वह) धैर्यवान्, दौड़ने में उत्तम चाल में श्रेष्ठ घोड़े पर सवार होकर गले में सुनरहार पहने पुनः स्वेच्छा से विहार करने चला गया॥ २९॥

तदायुष्मति, स्वामिसुते यथा मया तत्कथाप्रश्नानुराग उपलक्षितस्तथा निश्चितमचिरादयमेष्यति' इत्यभिधाय स ब्राह्मणः स्वगृहमगात्।

सुधा—तदिति। तत=अतः। आयुष्मति=चिरजीविनि। स्वामिसुते=हे राजपुत्रि! मया=ब्राह्मणेन। यथा=यत्प्रकारः तत्कथाप्रश्नानुरागः—तस्य नलस्य कथायाम्=वार्तायाम् प्रश्ने च अनुरागः=प्रेम। उपलक्षितः=अवलोकितः। तथा निश्चितम्=असंदिग्धम्। अचिरात्=अविलम्बम्। अयम=एषः नलः। एष्यति=आगमिष्यति। इत्यभिधाय एवं कथयित्वा। सः=असौ ब्राह्मणः। विप्रः। स्वगृहम्=निजभवनम्। अगात्=अगच्छत।

हिन्दी—"अतः हे आयुष्मति, राजपुत्रि, जैसा मैंने उसके कथा और प्रश्नों में अनुराग देखा उससे निश्चित है कि वह शीघ्र ही आयेगा? यह कहकर वह ब्राह्मण अपने घर चला गया।

गते च तस्मिन्दमयन्ती 'श्लाघ्यः स कः कालः, धन्यः स कतमो वासरः, सलक्षणा सा का नाम वेला, यस्यामिदमिन्दुदर्शनेनैव कुमुदमस्मच्चक्षुस्तदालोकनेन कमप्यानन्दमनुभविष्यति, इति चिन्तयन्ती कान्यपि दिनानि कयाप्यवस्थया व्यनैषीत्।

सुधा—गत इति। च तस्मिन् गते=तत्प्रस्थानानन्तरम्। दमयन्ती=भैमी। सः=असौ। कः कालः=कः समयः। श्लाघ्यः=प्रशंसनीयः। सः=असौ। कतमः धन्यः=सफलः वासरः=दिवसः। सा=असौ। का नाम वेला=कतमः कालः यस्याम्=वेलायाम्। इन्दुदर्शनेन इव=चन्द्रावलोकन समम्। कुमुदम्=कुमोदिनीम् अस्मच्चक्षुः ममनयनम्। तदालोकनेन=तद्दर्शनेन। कम् अपि आनन्दम्=कमपि सुखम्। अनुभविष्यति=अनुभवं करिष्यति। इति=एवम्। चिन्तयन्ती=विचारयन्ती। कानि अपि दिनानि=केऽपि वासराः। कयापि अवस्थया=कयापि दशया व्यनैषीत्=यापितवती।

हिन्दी—उस ब्राह्मण के चले जाने पर दमयन्ती ने—कौन सा वह प्रशंसनीय समय होगा, कौन सा वह उत्तम दिन होगा, कौन सी वह धन्य वेला होगी जिसके कुमोदिनी के चन्द्र दर्शन के समान मेरी आँखें उस (नल) को देखने से किसी विशिष्ट आनन्द का अनुभव करेगी"। यह सोचते सोचते कुछ दिन किसी प्रकार व्यतीत किये।

अथ नलोऽप्यामन्त्रितस्तेन ब्राह्मणेन रणरणकेन च, प्रेरितो मन्त्रिणा मदनेन च, परिवृतः सेनयोत्कण्ठया च, तत्कालमेव विदर्भमण्डलाभिमुखमुदचलत्।

सुधा—अथेति। अथ=अनन्तरम्। नलः=नलाख्यः नृपः अपि। तेन=उक्तेन ब्राह्मणेन=विप्रेण। रणरणकेन च=उत्साहेन च आमन्त्रिमः=निमन्त्रितः। मन्त्रिणा=अमात्येन। मदनेन=कामेन च प्रेरितः। सेनया=वाहिन्या। उत्कण्ठया=उत्सुकतया च। परिवृतः=परिवेष्टितः। तत्कालम्=तत्क्षणम् एव। विदर्भमण्डलाभिमुखम्=विदर्भनगरदिशाम् उदचलत्=उच्चचाल।

हिन्दी—तदनन्तर नल भी उस ब्राह्मण द्वारा अधिक उत्साह से आमन्त्रित, अमात्य एवम् कामदेव से प्रेरित सेना तथा उत्कण्ठा से घिरा हुआ तत्काल ही विदर्भ नगर की ओर चल दिया।

चलिते च चतुरङ्गबलचलनचूर्णितशिलोच्चयचक्रवाले चक्रिचक्रचङ्क्रमणचीत्कारबधिरितिककुभिविषमवैरिवृन्दवनवैद्युतानले नले, चलन्तश्चटुलतरचरणप्रहाररणितधरणिमण्डलाः कान्तकाञ्चनरचनारोचिष्णवश्चकासांचक्रुश्चक्रवर्त्तिवाहोचिताः साश्चर्यमपर्यन्तपर्यायाः पर्याणितास्तुरङ्गाः, शृङ्गारिताश्च चलच्चारुचामरावधूलनालङ्कृतकपोलभित्तिभागसंलगितभृङ्गसंगीतमुखरितमुखमण्डलाः कथमप्याधोररणनिरुध्यमानशौर्यविकारस्फुरणाः स्फुरत्कुम्भभित्तिसिन्दूरा दूरापसारितस्यन्दनाः स्यन्दमानामन्दमदकर्दमितमेदिनीकाः कम्पयांबभूवुर्भुवं भूरिभारभुग्नाङ्गपन्नगशिरःशिथिलावष्टम्भामिभेन्द्राः।

सुधा—चलित इति। च=तथा। चतुरङ्गवलचलनचूर्णितशिलोच्चयचक्रवाले—चतुरङ्गवलस्य=चतुरङ्गिण्याः सेनायाः चलनेन=प्रयाणेन चूर्णितम्=पिष्टीकृतम् शिलोच्चयस्य=पर्वतोच्चभागस्य चक्रवालम्=समूहम् येन तस्मिन्। चक्रिचक्रचङ्क्रमण चीत्कारबधिरिति ककुभि—चक्रीणाम्=सर्पाणाम् चक्रम्=समूहम्, तस्य चङ्क्रमणेन=परिभ्रमणेन यो चीत्कारः=कोलाहलस्तेन बधिरीकृताः ककुभः=दिशाः यस्य तस्मिन्।

विषमवैरिवृन्दवनवैद्युतानले = विषमम् = कठिनम् यद् वैरिवृन्दम् = अरिदलम् रूपम् वनम् = विपिनम् तस्मिन् वैद्युतानलः = तडिदग्निरिव यस्तस्मिन् । नले = नलाख्ये नृपे । चटुलतरचरणप्रहाररणितधरणिमण्डलाः = चटुलतरैः = अतिचञ्चलैः चरणप्रहारैः पदाघातैः रणिताः = ध्वनिकृताः ये धरणिमण्डलाः = भूभागाः । चलन्तः = कम्पिताः अभवन् कान्तकाञ्चनरचनारोचिष्णवः = दीप्तस्वर्णाभूषणकान्तयः । चक्रवर्तिवाहोचिताः— चक्रवर्तिनाम = सम्राजाम् वाहोचिताः = वाहनयोग्याः । साश्चर्यम् = आश्चर्यसहितम् । अपर्यन्तपर्यायाः = अद्वितीयाः । पर्याणिताः = आसनयुताः । तुरङ्गाः = अश्वाः । चकासयांचक्रुः = शुशुभिरे । चलच्चारुचामरावधूलनालङ्कृतकपोलभित्तिभागसंलगितभृङ्गसङ्गीतमुखरितमुखमण्डलाः = चलताम् = प्रचलताम् चारुचामराणाम् = सुन्दरचमरव्यजनानाम् अवधूलनेन = कम्पनेन अलङ्कृताः = शोभिताः ये कपोलभित्तिभागाः = गण्डस्थलदेशास्तेषु संलगिताः ये भृङ्गाः = मधुपास्तेषांसङ्गीतेन = भृङ्गारवेण मुखरितानि = ध्वनितानि मुखमण्डलानि येषां ते । कथम् अपि = केनापि प्रकारेण । आधारेण निरुध्यमानशौर्यविकारस्फुरणाः—आधोरणैः = हस्तिपकैः निरुध्यमानः = अवरुध्यमानः यः शौर्यविकारः = पराक्रमः, तेन स्फुरणाः = स्फुरिताः । स्फुरत्कुम्भभित्तिसिन्दूराः=प्रकटत्ककुद्भित्तिसिन्दूराः । दूरापसारितस्यन्दनाः = दूरम् अपसारितानि=पृथक्कृतानि स्यन्दनानि = रथाः येभ्यस्ते । स्यन्दमानामन्दमदकर्दमितमेदिनीकाः—स्पन्दमानेन = सुवितेन अमन्देन = स्वच्छेन मदेन = मदजलेन कर्दमिता = पङ्कीकृतामेदिनी यैस्ते । इभेन्द्राः = गजेन्द्राः । भूरिभारभुग्नाङ्गपन्नगशिरः शिथिलावष्टम्भाम्—भूरिभारेण = पर्याप्तभारेण भुग्नाङ्गाः = संकुचितशरीराः ये पन्नगाः = नागास्तेषां शिरोभिः = उत्तमाङ्गैः शिथिलाः = श्लथीकृताः अवष्टम्भाः = स्तम्भाः यस्यास्तादृशीम् । भुवम् = भूमिम् । कम्पयाम्बभूवुः = कम्पयामासुः ।

हिंदी—चतुरङ्गिणी सेना के चलने से पर्वतों के उच्चभाग (शिला समूह) चकनाचूर हो गये । सर्पों के समूहों के चक्कर काटने से हुये चीत्कार के कारण दिशायें वधिर हो उठी विषय शत्रु समुदाय के लिये नृप नल विद्युतीय अग्नि के समान बन गये । सेना के चञ्चल चरणों के प्रहार से भूमण्डल ध्वनि करके काँप उठा । चमचमाते हुये स्वर्णाभूषणों के समान कान्तिमान, चक्रवर्ती सम्राटों की सवारी योग्य, आश्चर्ययुक्त, अद्वितीय जीन कसे हुये घोड़े उद्भासित हो उठा । चञ्चल सुन्दर चवरों के कम्पन से अलङ्कृत कपोलस्थलो में चिपटे हुये भौंरों की मधुर गुन्जार से हाथियों के मुख मण्डल शोभित हो उठे । किसी प्रकार फीलवानो (हस्तिपको) द्वारा रोके जा रहे शौर्य विकार को प्रकट कर रहे चमकते हुये सिन्दूर से युक्त कुम्भभित्ति वाले जिनसे रथ दूर हटा दिये गये थे तथा जिनके टपकते हुये स्वच्छमदजल से कीचड़युक्त पृथ्वी हो रही थी ऐसे गजेन्द्रों ने पर्याप्त भार से संकुचित अंगों वाली अङ्गों वाले सापों के शिरोभाग से शिथिल किये गये स्तम्भों वाली पृथ्वी को कंपा दिया ।

किंबहुना । तत्रावसरे—

पूर्वापरपयोराशिसीमासंक्रान्तसैनिके ।
तस्मिन्स्मरभूर्भारसहायवपुषो हरेः ॥ ३० ॥

अन्वयः—तस्मिन् पूर्वापरपयोराशिसीमासङ्क्रान्तसैनिके भरात् भूः वराहवपुषः हरेः सस्मार ॥ ३० ॥

सुधा—किमिति । किं बहुना=अधिकेन किम् । तत्रावसरे=तस्मिन् काले ।
तस्मिन्=एतस्मिन् । पूर्वापरपयोराशिसीमासंक्रान्तसैनिके–पूर्वापरयोः=पूर्वपश्चिमयोः पयोराशेः=समुद्रस्य सीमायाम् सङ्क्रान्ताः=व्याप्ताः सैनिकाः=भटाः यत्र तस्मिन् । भरात्=भारकारणात् । भू=धरा । वराहवपुषः=शूकरशरीरधारिणः । हरेः=भगवतः विष्णोः । सस्मार=स्मृतिं चकार ॥ ३० ॥

हिन्दी—अधिक क्या कहे । उस अवसर पर–उस पूर्व और पश्चिम समुद्रपर्यन्त सैनिको की व्यापकतामे भार के कारण भूमि वराहरूपधारी भगवान् विष्णु का स्मरण करने लगी ॥ ३० ॥

अपि च—

आसीत्पिण्डितपाण्डुपङ्कजवनं श्वेतातपत्रैः क्वचि
न्मायूरातपवारणैः क्वचिदभूद्‌नालनीलोत्पलम् ।
उन्मेघं क्वचिदूर्ध्वधूलिपटलैस्तस्य प्रयाणेऽभव
त्प्रोद्वीचि क्वचिदम्बरं सर इव प्रेङ्खत्पताकापटैः ॥ ३१ ॥

अन्वयः—तस्य प्रयाणे क्वचित्=अम्बरम् श्वेतातपत्रैः पिण्डितपाण्डुपङ्कजवनम्, क्वचित् मायूरातपवारणैः नालनीलोत्पलम् आसीत्, क्वचित् ऊर्ध्वधूलिपटलैः उन्मेघम् प्रेङ्खत्पताकापटैः प्रोद्वीचि सरः इव अभवत् ॥ ३१ ॥

सुधा—आसीदिति । तस्य=नृपनलस्य । प्रयाणे=प्रस्थाने । क्वचित्=क्वापि । अम्बरम्=नभः । श्वेतातपत्रैः=शुभ्रच्छत्रैः । पिण्डितपाडुपङ्कजवनम्–पिण्डितम्=मुकुलितम् पाण्डु=पाण्डुवर्णम् पङ्कजवनम्=कमलवनम् इव । क्वचित् मायूरातपवारणैः=मयूरपुङ्खच्छत्रैः । नालनीलोत्पलम्=नालदण्डयुक्तं नीलकमलमिव । आसीत्=अभूत् । ऊर्ध्वधूलिपटलैः—उपरिरजः पटलैः । उन्मेघम्=उन्नतमेघम् । प्रेङ्खत्पताकापटैः=चलद्ध्वजाञ्चलैः । प्रोद्वीचि=प्रवृद्धोर्ध्वं रङ्गम् । सरः=तडागम् इव । अभवत्=बभूव अत्रोपमालङ्कारः । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ३१ ॥

हिन्दी—और भी–उसके प्रस्थान के समय आकाश शुभ्र छत्रों से मुकुलित शुभ्र-कमल वन जैसा बन गया था । कहीं पर मयूर पंखों से बने छत्रों नालदण्डयुक्त नील कमलों का वन बन गया था, कहीं ऊपर ऊड़ती हुई धूल से उन्नत मेघ बन गये थे फड़-फड़ाते हुये ध्वज वस्त्रों से लहराता हुआ तालाब जैसा आकाश हो गया था ॥ ३१ ॥

जाताश्च जङ्घाजघनस्पृशो, वक्षःस्थलीलोलनलम्पटाः, ग्रीवाग्रहणाग्रहिण्यः, प्रसभं लगन्त्यो वस्त्रेषु, निस्त्रपाः स्त्रिय इव, नखपदाभिघातोद्यताः चुम्बन्त्यश्चि-बुककपोलाधरचक्षूंषि सैनिकानाम्, अतिप्रसरेण शिरोऽवलग्ना, प्रबला धूलयो, वियदावरणाश्च चक्रुरुच्चैरतिप्रसङ्गमासन्नवननिकुञ्जेषु ।

सुधा—जाता इति । जंघाजघनस्पृशः–जंघे जघने च स्पृशन्तीति ताः=जंघाजघन स्थलस्पर्शकराः । वक्षःस्थलीलोललम्पटाः=वक्षःस्थलमर्दनलोलुपाः । ग्रीवाग्रहणा-

ग्रहिण्यः—ग्रीवायाः ग्रहणम्, तस्मै आग्रहिण्यः = गलग्रहणायाग्रहकारिण्यः । प्रसभम् =
हठात् । वस्त्रेषु = वासःसु । लगन्त्यः=संल्लगन्त्यः । निस्त्रपाः=निर्लज्जाः स्त्रियः = नार्यः
इव । नखपदाभिघातोद्यताः—नखाः=अश्वादीनां खुराः पदम् = पादविन्यासस्तेसामभिघात-
स्तस्मादुत्थिताः । पक्षे—नखक्षतपदयोश्चाभिघाते उद्यताः = सोद्यमाः । सैनिकानाम् =
बलिनाम् । चिबुककपोलाधरचक्षूंषि चिबुकम् कपोलौ अधरौ चक्षुषी, तेषां समाहार-
स्तान् = चिबुकगण्डस्थलौष्ठनयनानि । चुम्बन्त्यः = चुम्बनं कुर्वन्त्यः । अतिप्रसरेण =
अतिविस्तरेण । शिरोऽवलग्नाः = शिरासु संलग्नाः । प्रबलाः = प्रकृष्टाः । धूलयः =
रजांसि । वियदावरणाश्च = नभश्छादिन्यः, विगच्छद्वस्त्राश्च । वियन्नभः । विपूर्वस्येणः
शतरि च वियदिति । आसन्नवननिकुञ्जेषु । उच्चैः = घोरम् । अतिप्रसङ्गम् = अति-
व्याप्तिम् । पक्षे—रतिप्रसङ्गम् = सुरतप्रवन्धम् । चक्रुः = अकुर्वन् ।

हिन्दी—जंघा तथा जघन को छूती हुई, वक्षःस्थल के मर्दन के लिये लोलुप ग्रीवा-
ग्रहण (गलबाहें डालने-गर्दन पकड़ने) के लिये आग्रह करने वाली, हठात् वस्त्रों में
लिपटती हुई निर्लज्ज स्त्रियों के समान नखपद (खुर, चरण) के अभिघात से ऊपर
उठी हुई, सैनिकों के चिबुक, कपोल अधर तथा नयन चूमती हुई, अधिक प्रसार के
कारण शिरों में लगी हुई प्रबल धूल तथा गगनावरण ने समीपवर्ती वनकुञ्जों में अति-
व्याप्ति कर ली ।

टिप्पणी—यहाँ पर धूल तथा निर्लज्जस्त्रियों में पूर्ण समानता दिखलाई गई है ।

कूजन्तश्च कोटिशः कोदण्डमण्डलाग्रव्यग्रपाणयः, पाणिनीया इवाधिकरण-कर्मकुशलाः समुल्लसन्तो विचेलुर्वल्गनपटवो लाम्पट्योल्लुण्ठितरिपुपुरः पुरः पदातयः ।

सुधा—कूजन्त इति । च = तथा । कोटिशः = शतसहस्रशः कूजन्तः = शब्दायमानाः
कोदण्डमण्डलाग्रव्यग्रपाणयः कोदण्डेन = धनुषा मण्डलाग्रेण चासिना व्याकुलाः पाणयो
येषां ते । अधिकरणकुशलाः—अधिकम् = बहुरणकुशलाः = रजकर्मणि दक्षाः । पक्षे अधि-
करण–कुशलाः—अधिकरणकर्मणिकारके दक्षाः पाणिनीयाः इव = वैयाकरणाः इव ।
समुल्लसन्तः = शोभन्तः । वल्गनपटवः = वल्गनकुशलाः । लाम्पट्योल्लुण्ठितरिपुपुरः—
लाम्पट्येन = धृष्टतया । उल्लुण्ठिताः अरिपुरः = शत्रुनगर्यो यैः ते । पदातयः = पदाति
सैनिकाः । पुरः = अग्रे । विचेलुः = प्राचलन् ।

हिन्दी—बहुत प्रकार शोर करते हुये धनुष तथा तलवार हाथों में धारण किये
हुये रणकार्य में कुशल सैनिक अधिकरण में कुशल वैयाकरणों के समान शोभित होते
हुये उछलने में कुशल तथा धृष्टता से शत्रुपुरों को लूटकर पैदल आगे बढ़े ।

तत्र च व्यतिकरे—

मन्दं मन्दरमन्दिरेषु शयितानुन्निद्रयन्किनरान्-
मेरोर्मस्तककन्दरे प्रतिरवानुत्थापयन्नुल्वणः ।
आध्वं धावत यात मुञ्चत पुनः पन्थानमेवंविध-
स्त्रैलोक्यं बधिरीचकार बहलः सैन्यस्य कोलाहलः ॥ ३२ ॥

अन्वयः—मन्दरमन्दिरेषु शयितान् किन्नरान् मन्दम् उन्निद्रयन्, मेरोः मस्तककन्दरे उल्वणः प्रतिरवान् उत्थापयन्–आध्वम्, धावत, यात, मुञ्चत पुनः पन्थानम् एवम् विधः सैन्यस्य वहलः कोलाहलः त्रैलोक्यम् बधिरीचकार ॥ ३२ ॥

सुधा—मन्दमिति । मन्दरमन्दिरेषु पर्वतभवनेषु । शयितान् = शयनकृतान् । किन्नरान् = किम्पुरुषान् । मन्दम् = शनैः । उन्निद्रयन् = निद्रारहितान् कुर्वन् । मेरोः = सुमेरुपर्वतस्य । मस्तककन्दरे = शिखरगुहायाम् । उल्वणः = ऊर्जितान् । प्रतिरवान् = प्रतिध्वनीन् । उत्थापयन् = कुर्वन् । आध्वम् = तिष्ठत । धावत = द्रुतं गच्छत । यात = चलत । मुञ्चत = त्यजत । पुनः = भूयः 'पन्थानम् = मार्गम्' एवम् विधः एतत्प्रकारः । सैन्यस्य = सेनायाः । बहलः = अत्यन्तः कोलाहलः = रवः । त्रैयोक्यम् = त्रिभुवनम् । बधिरीचकार = बधिरीकृतवान् । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ३२ ॥

हिन्दी—उस अवसर पर—पर्वतभवनों में सोते हुये किन्नरों को धीरे-धीरे जगाते हुये सुमेरु पर्वत की शिखर गुफा में गर्जती हुई प्रतिध्वनि को उठाते हुये—"ठहरो, दौड़ो जाओ, छोड़ो फिर इस मार्ग को" सेना के अत्यधिक कोलाहल ने त्रिभुवन को बधिर कर दिया ॥ ३२ ॥

एवमसौ क्रीडितानेकपामरान् गिरीन् ग्रामांश्च बहुतरङ्गोपशोभिताः सरितः सीम्नश्च व्यूढपत्त्ररथान् पथः पादपांश्च लङ्घयन्, सालसहिताः पुरीर्नारीश्च सेवमानः, पच्यमानगोधूमश्यामलाः क्षेत्रभुवो भिल्लपल्लीश्च परिहरन्, विधवाः शत्रुसीमन्तिनीरटवीश्चातिक्रामन्, परिवारीणि बन्धुकुलानि सरांसि च बहुमानयन्, नातिचिरेण रविरथतुरंगपरिहृतविषमशिरःशिखरसहस्रमजरूममरगणगन्धर्वसिद्धरुद्धस्कन्धमध्यं विन्ध्याचलमनुससार ।

सुधा—एवमिति । एवम् = इत्थम् । असौ = एषः । क्रीडितानेकपामरान् क्रीडिता अनेकपाः = गजाः अमराः = देवाश्च येषु तादृशान् पक्षे क्रीडितबहुग्राम्यान् । गिरीन् = पर्वतान् । ग्रामान् च = बहुतरङ्गोपशोभिताः—बहुभिः = बहलैः तरङ्गैः = वीचिभिः उपशोभिताः = अलङ्कृताः । सरितः = नद्यः । पक्षे—बहुतरम् = अधिकतरम् गोपैर्गोपालैः । शोभिताः = अलङ्कृता सीम्नः सीमानः = सीमाप्रदेशाः च ताम् व्यूढपत्त्ररथान्-विशेषेणोढानि व्यूढानि पत्त्राणि वाहनानि रथाश्च यैस्तान् । पथः = मार्गाणि । पक्षे—व्यूढाः = युक्ताः पत्त्ररथाः = पक्षिणः यैस्तादृशान् । पादपान् = वृक्षान् च । लङ्घयन् = पारयन् । सालसहिताः—सालेन = प्राकारेण सहिताः । पुरीः = नगरीः । पक्षे—सालसाः = अलस युताः हिताश्च : नारीः = स्त्रीः । सेवमानः = सेवाक्रियमाणः । पच्यमानगोधूमश्यामलाः—पच्यमानैः = पचेलिमैः गोधूमैः = शस्यविशेषैः श्यामलाः = हरिताः । क्षेत्रभुवः = क्षेत्रभूमीः । पक्षे—गोः = भूमेः धूमः गोधूमः । ततः पच्यमानः = परिपाकं गच्छन् बहुलीभवन् योऽसौ गोधूमस्तेन श्यामलः कृष्णायिताः । न तु पच्यमाना घासौ गौश्चेति टच् प्रसङ्गात् भिल्लीपल्लीः = भिल्लावासान् । परिहरन् = परित्यजन् । विधवाः = पतिवियुक्ताः शत्रुसीमन्तिनीः = शत्रुपत्नीः । पक्षे—वि = विशेषाः धवाः = धवाभिधाः यत्र तथा अटवीः = अरण्यानि । अतिक्रमन् = उल्लंघयन् । परिवारीणि—परि = समन्तात् वारि जलम् येषु

तानि बन्धुकुलानि = बन्धुपुष्पयुक्तानि । सरांसि = तडागानि । पक्षे—परिवारीणि = पारिवारिकाणि—परिवृण्यन्ति = परिवारीभवन्ति तानि । बन्धुकुलानि मातृकुलानि । बहुमानयन् बहुमानयन् बहुप्रशंसयन् सम्मानयन्वा । नातिचिरेण = अल्पकालेन रविरथतुरङ्ग परिहृतविषमशिरः शिखरसहस्रम्—रवेः = सूर्यस्य रथस्य ये तुरङ्गाः तैः परिहृतम् = वञ्चितम् विषमम् = भयङ्करम् शिरः शिखरसहस्रम् = शिरोरूपासंख्यशिखरयुक्तम् । अजस्रम् = निरन्तरम् । अमरगणगन्धर्वसिद्धरुद्धस्कन्धमध्यम् अमरगणैः = देवैः गन्धर्वैः सिद्धैश्च रुद्धम् = अवरुद्धम् स्कन्धमध्यम् = मध्यभागम् यस्य तादृशम् । विन्ध्याचलम् = विन्ध्यनामपर्वतम् । अनुससार = अनुचचाल ।

हिन्दी—इस प्रकार वह अनेक हाथियों तथा देवताओं से युक्त पर्वतों एवं ग्रामों में क्रीड़ा कर, अत्यधिक तरङ्गों से उपशोभित नदियों की सीमाओं तथा अधिकांश गोपों से अलंकृत पर्वतीय सीमाओं, विशेषरूप से पत्र (अश्व तथा रथ से युक्त मार्गों और पत्ररथ (पक्षियों) से युक्त पादपों को लांघते हुये, साल (चहार दीवारों) से युक्त पुरों तथा अलसाई स्त्रियों का सेवन करता हुआ, पकते हुये गेहूँ के पौधों के कारण श्यामल क्षेत्र भूमियों और जलती हुई आग के धुये से श्यामल भीलों के गांवों को छोड़ता हुआ, विधवा शत्रुस्त्रियों तथा विशेष रूप के धव नामक वृक्षों वाले वनों को लाँघता हुआ, चारों ओर से घेरकर रहने वाले भाई बान्धवों को सम्मानित करता हुआ, चारों ओर से जल से भरे तड़ागों की प्रशंसा करता हुआ, शीघ्र ही भगवान् सूर्य के रथों से भरे तड़ागों की प्रशंसा करता हुआ, शीघ्र ही भगवान् सूर्य के रथों के घोड़ों से वंचित हजारों उच्च शिखर रूपी शिरों को धारण करने वाले, निरन्तर देवताओं, गन्धर्वों तथा सिद्धों से घिरे हुये मध्य भाग वाले विन्ध्याचल की ओर चल दिया ।

ततश्च—

> दिशि दिशि किमिमानि प्रच्यवन्तेऽन्तरिक्षा-
> दविरतमुत देवी भूतधात्री प्रसूते ।
> इति शबरवधूभिस्तर्क्यमाणान्यवापुः
> सपदि विपुलविन्ध्यस्कन्धमध्यं बलानि ॥ ३३ ॥

अन्वयः—दिशि दिशि अन्तरिक्षात् इमानि किम् प्रच्यवन्ते, उत भूतधात्री देवी अविरतम् प्रसूते । इति शबरवधूभिः तर्क्यमाणानि बलानि, सपदि विपुलविन्ध्यस्कन्धमध्यम् अवापुः ॥ ३३ ॥

सुधा—दिशि दिशीति । दिशि दिशि = सर्वासु दिक्षु । अन्तरिक्षात् = आकाशात् । इमानि = एतानि किम् प्रच्यवन्ते = स्खलन्ति । उत = अथवा भूतधात्री—भूतान् धरतीतिभूतधात्री = जीवधारिणी देवी = पृथ्वी । अविरतम् = अजस्रम् इमानि किम् प्रसूते = सृजति । इति = एवम् शबरवधूभिः = भिल्लस्त्रीभिः । तर्क्यमाणानि = जल्पमानानि । बलानि = सेनाः सपदि = शीघ्रम् । विन्ध्यस्कन्धमध्यम् = विशालविन्ध्याचलस्य मध्यभागम् अवापुः = प्रापुः । मालिनीवृत्तम् ॥ ३३ ॥

हिन्दी—तदनन्तर—"सभी दिशाओं में आकाश से यह क्या टपक रहा है? अथवा प्राणियों को धारण करने वाली पृथ्वी देवी यह क्या उत्पन्न कर रही है। इस प्रकार शबर पत्नियों द्वारा तर्क वितर्क किये जाते हुये सेना शीघ्र ही विशाल विन्ध्याचल के मध्य भाग में पहुँची ॥ ३३ ॥

श्रुतशीलस्तु तुङ्गशृङ्गरङ्गत्सारङ्गाङ्गनासु नक्षत्रासन्नाकाशावकाशविशद्वंशजालजटिलासु चलच्चित्रचित्रककरिकलभकदम्बकसंचारशबलासु हारिहरिताङ्कुररमणीयासु वनस्थलीषु निक्षिप्तचक्षुरवलोक्य राजानमिदमवादीत्।

सुधा—श्रुतशील इति। श्रुतशीलः तु = तदभिधस्तस्याज्ञाकारी तु। तुङ्गशृङ्गरङ्गत्सारङ्गाङ्गनासु—तुङ्गेषु = उच्चेषु। शृंगेषु = शिखरेषु रङ्गन्त्यः = भ्रमन्त्यः सारङ्गाङ्गनाः = मृगवध्वः यत्र तासु। नक्षत्रासन्नाकाशावकाशविशद्वंशजालजटिलासु—तारकपार्श्वरिक्ताकाशप्रविशद्वंशजालयुक्तासु। चलच्चित्रचित्रककरिकलभकदम्बकसंचार शबलासु–चलन्तः = भ्रमन्तः चित्राः = अद्भुताः चित्रकाः = विविधवर्णाः ये करिकलभाः = गजशावकाः, तेषां कदम्बकेन = समूहेन संचारशबला = संचरणशबलाः यत्र तासु। हारिहरिताङ्कुररमणीयासु=सुन्दरहरिताङ्कुररम्यासु। वनस्थलीषु = वनभूमिषु। निक्षिप्तचक्षुषम्—निक्षिप्तम् = प्रक्षिप्तम् चक्षुः—नेत्रम् तेन तम्। राजानम् = नृपम्। अवलोक्य= दृष्ट्वा। इदम् = एतत्। अवादीत् = अवोचत्।

हिन्दी—श्रुतशील ने ऊँचे-ऊँचे पर्वत शिखरों पर घूमती हुई मृगवधुओं वाली, नक्षत्रों के समीप रिक्त आकाश में प्रवेश करते हुये बाँसों के झुरमुट से युक्त, चलते हुये विचित्र रङ्गबिरङ्गे हाथियों के बच्चों के झुण्ड के संचरण से परिपूर्ण, मनोरम हरे अङ्कुरों से रमणीक बनी वनस्थली की ओर देखते हुये राजा से यह कहा।

'देव'—

माद्यद्दन्तिकपोलपालिविगलद्दानाम्बुसिक्तद्रुमाः
क्रीडत्क्रोडकुलार्धचर्वितपतन्मुस्तारसामोदिताः ।
अन्तःसुस्थितपान्थमन्थरमरुल्लोलल्लतामण्डपाः
कस्यैता न हरन्ति हन्त हृदय विन्ध्यस्थलीभूमयः ॥ ३४ ॥

अन्वयः—माद्यद्दन्तिकपोलपालिविगलद्दानाम्बुसिक्तद्रुमाः—माद्यन्तः ये दन्तिनः = करिणः, तेषां कपोलपालिभिः = गण्डस्थलैः विगलद्भिः = स्रवद्भिः दानाम्बुभिः=मदजलैः सिक्ताः द्रुमाः = पादपाः यत्र। क्रीडत्क्रोडकुलार्धचर्वितपतन्मुस्तारसामोदिताः—क्रीडत् = खेलत् यत् क्रोडकुलम् = वराहयूथम्, तेनार्धचर्वितम् = अपूर्णखादितम् पतत् = स्रवत् यत् मुस्ता रसम् तेनामोदितम् = सुवासितम् यत्र ताः। अन्तःसुस्थितपान्थमन्थरमरुल्लोलल्लतामण्डपाः—अन्तः = मध्ये सुस्थिताः पान्थाः यासु। तथा मन्थरेण मरुता = मन्दपवनेन लोलन्तः = चलन्तः लतामण्डपाः—वीरुधमण्डपाः यासु ताः। विन्ध्यस्थलीभूमयः = विन्ध्याचलभूप्रदेशाः एताः = इमाः। हन्त। कस्य हृदयम् = चेतः न हरन्ति = न मोहयन्ति। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ३४ ॥

हिन्दी--देव-मतवाले हाथियों के कपोलस्थलों से बहते हुये मदजल से सिक्त वृक्षों वाली, खेलते हुये वराह यूथों के द्वारा अधचबाये गिरते हुए मुस्ता (विशेष प्रकार के कन्दा रस से सुगन्धित, अन्दर विश्राम करते हुये पथिकों से युक्त और धीमे चलती हुई लताओं के मण्डपवाली विन्ध्याचल की यह भूमि किसके हृदय को मोहित नहीं कर लेती हैं ॥ ३४ ॥

इतश्च पश्यतु देवः—

एषा सा विन्ध्यमध्यस्थलविपुलशिलोत्सङ्गरङ्गत्तरङ्गा
सम्भोगश्रान्ततीराश्रयशबरवधूशर्मदा नर्मदा च।
यस्याः सान्द्रद्रुमालीललिततलमिलत्सुन्दरीसंनिरुद्धैः
सिद्धैः सेव्यन्त एते मृगमृदितदलत्कन्दलाः कूलकच्छाः ॥ ३५ ॥

अन्वयः—च विन्ध्यमध्यस्थलविपुलशिलोत्सङ्गरङ्गत्तरङ्गासम्भोगश्रान्ततीराश्रयशबर-वधूशर्मदा एषा सा नर्मदा यस्याः एते मृगमृदितदलत्कन्दलाः कूलकच्छाः सान्द्रद्रुमाली ललिततलमिलत्सुन्दरी सन्निरुद्धैः सिद्धैः सेव्यन्ते ॥ ३५ ॥

सुधा--इतश्च = अस्यां दिशि। देवः = भवान् पश्यतु = अवलोकयतु—एषेति। विन्ध्यमध्यस्थलविपुलशिलोत्सङ्गरङ्गत्तरङ्गा—विन्ध्यस्य = विन्ध्याचलस्य मध्ये यत्स्थलम्, तस्य विपुलेषु। शिलोत्सङ्गेषु = शिलाक्रोडेषु रङ्गत्तरङ्गाः = चलद्वीचयः यस्यास्तथा। सम्भोगश्रान्ततीराश्रयशबरवधूशर्मदा--सम्भोगश्रमेण = सुरतायासेन श्रान्ताः = क्लान्ताः, तासाम् तीराश्रयः = तराश्रयाशवरवधूःशर्मदा = भिल्लस्त्रीसुखदा च या। एषा = इयम् सा नर्मदा = नर्मदाख्या नदीः (अस्ति) यस्याः = नद्याः नर्मदायाः। एते = इमे। मृग-मृदितदलत्कन्दला--मृगैः हरिणैः मुदिताः = सुकोमलाः दलन्तः = मर्दयन्तः कन्दलाः = अङ्कुराणि यत्र तथा। कूलकच्छाः = तटप्रदेशाः। सान्द्रद्रुमालीललिततलमिलत्सुन्दरी-सन्निरुद्धैः = सान्द्राणाम् = सघनानाम् द्रुमालीनाम् = वृक्षपंक्तिनाम् ललिततलेषु = मधुर-च्छायासु मिलद्भिः = लगद्भिः सुन्दरीभिः = कामिनीभिः सन्निरुद्धाः = सम्यग् अवरुद्धाः ये तैः। सिद्धैः = सिद्धजनैः। सेव्यन्ते = सेविताः भवन्ति। स्रग्धरावृत्तम् ॥ ३५ ॥

हिन्दी—इधर श्रीमान् जी देखें--

विन्ध्याचल के मध्यभाग की विशाल शिलाओं की गोद में थिरकती हुई, लहरों वाली, सम्भोग से थकी तट पर विश्राम करती हुई शबर स्त्रियों को आराम देने वाली यह वही नर्मदा नदी है जिसके यह मृगों से रौंदे गये अङ्कुरों वाली तटभूमि जहाँ कि द्रुमपंक्तियों की सुन्दर छाया में लिपटी हुई सुन्दरियों से रोके गये सिद्ध लोग (उसका) सेवन करते हैं ॥ ३५ ॥

अपि च। अन्तरेऽप्यस्याः—

मज्जत्कुञ्जरकुम्भमण्डलगलद्दानाम्बुनः सौरभाद्-
भ्राम्यद्भृङ्गकुलावलीः कुवलयश्रेणीः समाबिभ्रतः।
कल्लोलाः कलिकालकल्मषमुषः प्रोल्लीललीलाकृतः
स्वःसोपानपरम्परा इव वियद्वीथीमलंकुर्वते ॥ ३६ ॥

अन्वयः—मज्जत्कुञ्जरकुम्भमण्डलगलद्दानाम्बुनः सौरभात् भ्राम्यद्भृङ्गकुलावलीः कुवलयश्रेणी समाविभ्रतः प्रोल्लीलललीलाकृतः कलिकालकल्मषमुषः कल्लोलाः स्वः सोपान-परम्परा इव वियद्वीथीम् अलङ्कुर्वंते ।। ३६ ।।

सुधा—अपि च तथा । अस्याः = एतस्याः नर्मदायाः । अन्तरे = मध्ये अपि—मज्जदिति । मज्जत्कुञ्जरकुम्भमण्डलगलद्दानाम्बुनः—मज्जताम् = स्नानकृताम् कुञ्जराणाम् = करीणाम् कुम्भमण्डलानि = कुम्भस्थलानि, तैः गलतः = स्रवतः दानाम्बुनः = मदजलस्य । सौरभात् = सुगन्धेः । भ्राम्यद्भृङ्गकुलावलीः = भ्राम्यन्ति यानि भृङ्ग-कुलानि = अलिदलानि तेषाम् आवल्यः = पंक्त्यस्ताः । कुवलयश्रेणीः = कमलपंक्तीः । समाविभ्रतः = धारयतः । प्रोल्लीलललीलाकृतः = प्रकृष्टलीलाविलासकृतः कलिकालकल्मष-मुषः = कलिकालस्य = कलियुगस्य कल्मषम् पापम् मुष्णंति इति तथा कल्लोलाः = नर्मदायास्तरङ्गाः । स्वः सोपानपरम्परा इव = स्वर्गसोपानपरिपाटीसमाः वियद्वीथीम् = नभोमार्गम् । अलङ्कुर्वन्ति = भूषयन्ति । शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ।। ३६ ।।

हिन्दी—और भी । इसके अन्दर—

स्नान करते हुये हाथियों के कुम्भस्थल से बहते हुये मदजल की सुगन्ध मंडराते हुये भ्रमर कुल की पंक्तियों और कमलश्रेणियों को धारण करती हुई, उत्कृष्ट विलास लीला करती हुई कलिकाल के पापों को मिटाने वाली (नर्मदा जी) लहरें स्वर्ग सोपान की परम्परा के समान आकाश मार्ग को शोभित कर रही है ।। ३६ ।।

इतश्चास्यास्तीरे—

अंसस्रंसिजलार्द्रजर्जरजटाजूटैर्मनाङ्मन्थरा-
स्तिम्यत्तारवतन्तुनिर्मितकुथत्कौपीनमात्रच्छदाः ।
शीतोत्कण्टकितास्थिशेषतनवः स्नात्वोत्तरन्तः शनै-
रेते पश्य पतन्ति पिच्छिलशिलाजाले जरत्तापसाः ।। ३७ ।।

अन्वयः—पश्य, अंसस्रंसि जलार्द्रजर्जरजटाजूटैः मनाक् मन्थराः तिम्यत्तारवतन्तु निर्मितकुथत्कौपीनमात्रच्छदाः शीतोत्कण्टकितास्थिशेषतनवः एते जरत्तापसाः स्नात्त्वा तरन्तः शनैः पिच्छलशिलाजाले पतन्ति ।। ३७ ।।

सुधा—अंसेति । पश्य = अवलोकय । अंसस्रंसिजलार्दजर्जरजटाजूटैः—जलेन = वारिणा आर्द्राणि = क्लिन्नानि जर्जराणि = जीर्णानि जटाजूटानि—सटाजालानि, अंस स्रंसीनि = अंसयोः = स्कन्धयोः स्रंसीनि = अवलम्बितानि जलार्द्रजर्जरजटाजूटानि, तैः । मनाक् = किञ्चित् । मन्थराः = शिथिलाः । तिम्यत्तारवतन्तुनिर्मितकुथत्कौपीनमात्र-च्छदाः—तिम्यद्भिः = आर्द्रैः तारवतन्तुभिः वल्कलतन्तुभिः निर्मितानि कुथत्कौपीन-मात्राणि = जीर्णकौपीनमात्राणि छदानि = वस्त्राणि येषां ते । शीतोत्कण्टकितास्थिशेष-तनवः—शीतेन उत्कण्टितानि = रोमाञ्चितानि अस्थीनि, तैः शेषतनवः = अवशिष्ट-देहाः । एते = इमे जरत्तापसाः = वृद्धतपस्विजनाः । स्नात्वा = स्नानं विधाय । उत्तरन्तः = अवतरणं कुर्वन्तः । शनैः = मन्दम् । पिच्छिलशिलाजाले = पिच्छिलप्रस्तरसमूहे । पतन्ति = पतनं कुर्वन्ति । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ।। ३७ ।।

हिन्दी—और इधर इसके तट पर—

देखिये, जल से भीगा जर्जर जटाजूट कन्धे तक लटक रहा है, कुछ शिथिल आर्द्र वल्कल तन्तुओं से बने अत्यन्त जीर्णकौपीन मात्र वस्त्र धारण किये हुये, शीत के कारण रोमाञ्चित हड्डी मात्र शेष शरीर वाले यह वृद्ध तपस्वी स्नान कर उतरते हूये धीरे-धीरे फिसलने वाले शिलासमूह पर गिर रहे है ॥ ३७ ॥

इतोऽपि—

पश्यैताः करिकुम्भसंनिभकुचद्वन्द्वोल्लसद्वीचयः
क्रीडन्त्यब्जविकासभासि पयसि स्वैरं पुलिन्दस्त्रियः ।
उन्मीलन्नवनीलनीरजधिया पक्ष्मान्तरे नेत्रयो-
र्यासां हस्तलताहता अपि परिभ्राम्यन्ति भृङ्गाङ्गनाः ॥ ३८ ॥

अन्वयः—पश्य, करिकुम्भसन्निभकुचद्वन्द्वोल्लसद्वीचयः, एताः पुलिन्दस्त्रियः अब्जविकासभासि पयसि स्वैरम् क्रीडन्ति, यासाम् नेत्रयोः पक्ष्मान्तरे उन्मीलन्नवनीलनीरजधिया हस्तलताहताः भृङ्गाङ्गनाः परिभ्राम्यन्ति ॥ ३८ ॥

सुधा—पश्येति । पश्य = अवलोकय । करिकुम्भसन्निभकुचद्वन्द्वोल्लसद्वीचयः— करिणाम् = हस्तीनाम् कुम्भसन्निभेन = कुम्भस्थलसदृशेन कुचद्वन्द्वेन—पयोधरयुगलेन उल्लसन्त्यः = शोभयन्त्यः वीचीः = तरङ्गान् यास्तादृशाः । एताः = इमाः पुलिन्दस्त्रियः = शवरनार्यः । अब्जविकासभासि = अब्जानाम् = कमलानाम् = विकासेन = विकचेन भाः = कान्तिर्यस्मिन्, तादृशि । पयसि = अम्भसि । स्वैरम् = स्वच्छन्दम् क्रीडन्ति = विरहन्ति । यासाम् = पुलिन्दस्त्रीणाम् । नेत्रयोः = नयनयोः पक्षान्तरे = पक्ष्मपंक्तिमध्ये । उन्मीलन्नवनीलनीरजधिया—उन्मीलताम् = विकसताम् नवानाम् नूतनानाम् नीरजानाम् = कमलानां धिया = बुद्धया । हस्तलताहताः = करलताताडिताः अपि । भृङ्गाङ्गना ! = भ्रमरवध्वः । परिभ्राम्यन्ति—परि = परितः भ्राम्यन्ति = चङ्क्रमन्ति । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ३८ ॥

हिन्दी—इधर भी—देखिये, हाथियों के कुम्भस्थल सदृश कुच युगल से लहरों को शोभित करती हुई यह शबर स्त्रियां कमलों के विकास के कारण मनोरम जल में स्वच्छन्द क्रीड़ा कर रही है जिनके नेत्रों के पलकों को विकसित हो रहे कमल समझ कर हस्तलता से भगाये जाने पर भी भ्रमर वधुयें चारों ओर मंडरा रही हैं ॥ ३८ ॥

इतोऽप्यवलोकयतु देवः—

बालोन्मीलत्कुवलयवनं विस्तरद्गन्धरुद्ध-
भ्राम्यद्भृङ्गैरनुकृतपयःपूर्णमेघान्धकारम् ।
हर्षात्पश्यत्ययमतितरां तीरचारी मयूरो
मुग्धः पार्श्वे भ्रमति च भयाच्चक्रवच्चक्रवाकः ॥ ३९ ॥

अन्वयः—बालोन्मीलत्कुवलयवनम् विस्तरद् गन्धरुद्धभ्राम्यद्भृङ्गैः अनुकृतपयः पूर्णमेघान्धकारम् अयम् तीरचारी मयूरः अतितराम् हर्षात् पश्यति, मुग्धः चक्रवाकः च भयात् पार्श्वे चक्रवत् भ्रमति ॥ ३९ ॥

सुधा—बालोन्मीलदिति। बालोन्मीलत्कुवलयवनम्—बालम् = नूतनम् यदुन्मीलत् = विकसत् कुवलयवनम् = कमलवनम् तत्। विस्तरद्गन्धरुद्धद्भ्राम्यद् भृङ्गैः विस्तरता = प्रसरता गन्धेन = सौरभेण रुद्धाः, अत एव भ्राम्यन्तो भृङ्गाः = मधुपाः तैः। अनुकृतः पयः पूर्णमेघः = वारियुक्तवारिदः अन्धकारश्च = तमश्च येनेति वनविशेषणम्। मेघाद् हि मयूरस्य हर्षः। अयम् = एषः। तीरचारी-तीरे = तटे चरतीति = तटवर्ती मयूरः = केकी। अतितराम = अत्यन्तम्। हर्षात् = आमोदात् पश्यति = अवलोकयति। मुग्धः = माहयुतः। चक्रवाकः = चक्रवाकपक्षी। भयात् = त्रासात्। पार्श्वे = सन्निकटे। चक्रवत् भ्राम्यति = परिक्रमति। मन्दाक्रान्तावृत्तम्॥ ३९॥

हिन्दी—आप जब इधर भी देखें—

नवीन खिले हुये कमलवन वाले, फैलती हुई गन्ध से रोके गये मड़राते हुये भौंरों के द्वारा प्रतिबिम्बित जलपूर्ण मेघ तथा अन्धकार को यह तटवर्ती मयूर अत्यधिक हर्ष से देख रहा है, एवम् मुग्ध चक्रवाकपक्षी भय से समीप में चक्कर काट रहा है॥ ३९॥

इदं च—

कुररभरसहं सहंसमालं मुदितमयूरचकोरचक्रवाकम्।
क इह सुरुचिरं विलोक्य प्रवरमते रमते नरो न रोधः॥ ४०॥

अन्वयः—प्रवरमते, इह कुररभरसहम् सहंसमालम् मुदितमयूरचकोरचक्रवाकम् रोधः सुचिरम् विलोक्य कः नरः न रमते॥ ४०॥

सुधा—कुररभरेति। प्रवरमते—प्रवरा = अतिश्रेष्ठा मतिः = बुद्धिर्यस्य तत्सम्बुद्धौ अयि श्रेष्ठबुद्धे! राजन्! इह = अत्र। कुररभरसहम्—कुरराणाम् = कुररपक्षीणाम् भरमतिशयं सहते यद्वेति। तथा। मुदितमयूरचकोरचक्रवाकम्—मुदिताः = प्रसन्नाः मयूराश्चकोरचक्रवाकाश्च यत्र तथा। रोधः = तटम्। सुचिरम् = बहुकालम्। विलोक्य = दृष्ट्वा। कः नरः = कः जनः। न रमते = न मोदते यमकालङ्कारः।

हिन्दी—और यह—

हे प्रवरबुद्धिवाले नृप! यह कुरर पक्षियों के भार को सहने वाले हंस पंक्तियों से युक्त, प्रसन्न मयूरों तथा चकई चक्रवाक पक्षियों वाला तट चिरकाल तक देखकर कौन पुरुष प्रसन्न नहीं हो जाता है॥ ४०॥

इतश्च—

बककृतनिनदं नदं न दम्भात्कृतसवनं सवनं भजन्त एते।
निरुपमविभवं भवं स्मरन्तः प्रशमधना मुनयो नयोपपन्नाः॥ ४१॥

अन्वयः—प्रशमधनाः नयोपपन्नाः एते मुनयः निरुपमविभवम् भवम् स्मरन्तः कृतसवनम् बककृतनिनदम् सवनम् नदम् दम्भात् न भजन्ते॥ ४१॥

सुधा—बककृतेति। प्रशमधनाः—प्रशमः = शान्तिः धनम् = सम्पत्तिर्येषां ते। नयोपपन्नाः = नीतियुक्ताः। एते = इमे। मुनयः = महर्षयः। निरूपमविभवम् = अनुपमसाम-

र्थ्यम् । भवम् = ईश्वरम् । स्मरन्तः = स्मरणं कुर्वन्तः । कृतसवनम् कृतम् = सम्पादितम् सवनम् = स्नानम् यत्र । बककृतनिनदम्–वकैः = वकुलैः कृतनिनदम् = विहितशब्दम् यत्र । सवनम्=कानन्युतम् । नदम् = जलाधारविशेषम् । दम्भात्=आदरात् । न भजन्ते= न सेवन्ते । यमकालङ्कारः ।

हिन्दी—और इधर—शान्ति रूपी सम्पत्ति वाले नीति युक्त मुनिजन अनुपम सामर्थ्यं वाले भगवान् शिव को स्मरण करते हुये, स्नान किये हुए, बगुलों द्वारा निनादित तथा वन से युक्त नदी तट को आडम्बर से नहीं सेवन करते हैं ॥ ४१ ॥

विधूतपाप्मानः खल्वमी महानुभावाः ।

तथाहि—

मुहुरधिवसतां सतां मुनीनामपविपदां विपदाङ्कपङ्कभाञ्जि ।
तटनिकटवनानि नर्मदायाः कथमिभवन्ति भवन्ति कल्मषाणि ॥४२॥

अन्वयः—इभवन्ति विपदाङ्कपङ्कभाजि नर्मदायाः तटनिकटवनानि मुहुः अधिवसताम् सताम् अपविपदाम् मुनीनाम् कथम् कल्मषाणि भवन्ति ॥ ४२ ॥

सुधा—खलु = नूनम् । अमी = एते । महानुभावाः = महाशयाः । विधूतपाप्मानः— विधूतम् = क्षालितम् पापम् = कल्मषम् येभ्यस्ते । तथाहि—

मुहुरिति । इभवन्ति = गजवन्ति । तथा वीनाम् = पक्षिणाम् पदम् अङ्के यत्र तथोक्तम् पङ्कम् भजन्ते तानि = पक्षिचरणचिह्नितरजः शोभीनि । नर्मदायाः = नर्मदानद्याः । तट-निकटवनानि = तटसमीपकाननानि कर्मभूतानि । मुहुः = वारंवारम् अधिवसताम् = निवसताम् । सताम् = विदुषाम् । अपविपदाम्–अपगताः विपद्भ्यः तादृशाम् । मुनीनाम् = ऋषीणाम् । कथम् । कल्मषाणि = पापानि । भवन्ति अपितु भवन्त्येवेत्यर्थः ॥ ४२ ॥

हिन्दी—वास्तव में ये लोग सर्वथा पाप रहित हैं । क्योंकि—

हाथियों से युक्त तथा पक्षियों के चरण-चिह्नित पङ्क वाले नर्मदा नदी के तटवर्ती वनों में बार-बार निवास करने वाले विद्वानों एवं विपत्ति रहित मुनिजनों को पाप कैसे छू सकते हैं ॥ ४२ ॥

इतश्च—

क्वचित्प्रवरगैरिकासमसमुल्लसत्पल्लवं
लवङ्गलवलीलतातलचलच्चकोरं क्वचित् ।
क्वचिद्गिरिसरित्तटीतरुणविस्फुरत्कन्दलं
दलन्निचुलमञ्जरीमधुनिरुद्धभृङ्गं क्वचित् ॥ ४३ ॥

अन्वयः—क्वचित् प्रवरगैरिकासमसमुल्लसत्पल्लवम् क्वचित् लवङ्गलवलीलतातल-चलच्चकोरम्, क्वचित् गिरिसरित्तटीतरुणविस्फुरत्कन्दलम्, क्वचित् दलन्निचुलमञ्जरी-मधुनिरुद्धभृङ्गम् अस्ति ॥ ४३ ॥

सुधा—क्वचिदिति । क्वचित्=कुत्रापि । प्रवरगैरिकासमसमुल्लसत्पल्लवम्–प्रवरम्= उत्कृष्टम् गैरिकम् = गैरिकवर्णम् । असमम् = अप्रतिमम् । तथा समुल्लसन्तः = शोभन्तः

पल्लवाः = दलानि यत्र। क्वचित् = क्वापि। लवङ्गलवलीलतातलचलच्चकोरम्—लवङ्गानाम् लवलीलतानां च तलम्, तस्मिन् चलन्तः = चञ्चलाः चकोराः = चकोरपक्षिणः यत्र। क्वचित् = कुत्रचित्। गिरिसरित्तटीतरुणविस्फुरत्कन्दलम्—गिरिसरितः=पर्वतनद्यः, तासां तटेषु तरुणानि नूतनानि विस्फुरन्ति = दीप्यमानानि कन्दलानि = अङ्कुराणि यत्र। क्वचित् = क्वापि। दलन्निचुलमञ्जरीमधुनिरुद्धभृङ्गम्—दलितासु = विकसितासु निचुलमञ्जरीषु = वेतसीमञ्जरीषु मधुनिरुद्धाः = मधुरसार्थावरुद्धाः भृङ्गाः = मधुपाः यत्र।

हिन्दी—कहीं गहरे गैरिक (गेरुये) रङ्ग जैसे अद्वितीय शोभित हो रहे पल्लव हैं, कहीं लौंग तथा लवली लताओं के नीचे चञ्चल चकोर घूम रहे हैं, कहीं पर्वतीय नदियों के तट पर नवीन चमकते हुये अंकुर हैं और कहीं खिली हुई वेतों की मञ्जरियों के मधुरस में उलझे हुये भौंरे हैं ॥ ४३ ॥

क्वचिच्चटुलकोकिलाकुलितनूतचूताङ्कुरं
कुरङ्गकुलसेवितप्रबलसालमूलं क्वचित्।
क्वचित्प्रवरसंचरत्सुरवधूपदैः पावनं
वनं नयति विक्रियामिह मनो मुनीनामपि ॥ ४४ ॥

अन्वयः—क्वचित् चटुलकोकिलाकुलितनूतचूताङ्कुरम्, क्वचित् कुरङ्गकुलसेवितप्रबलसालमूलम् क्वचित् प्रवरसंचरत्सुरवधूपदैः पावनम् वनम् इह मुनीनाम् अपि मनः विक्रियाम् नयति ॥ ४४ ॥

सुधा—क्वचिदिति। क्वचित्=कुत्रचित्। चटुलकोकिलाकुलितनूतचूताङ्कुरम्—चटुलैः= चञ्चलैः कोकिलैः = कोकिलपक्षिभिः आकुलितम् = पूरितम् नूतम् = नूलम् चूताङ्कुरम् = आम्राङ्कुरम् यत्र। क्वचित् = क्वापि कुरङ्गकुलसेवितप्रबलकुरङ्गसालमूलम्—कुलैः = मृगवृन्दैः सेवितानि प्रबलानि = विशालानि शालमूलानि = सालवृक्षमूलानि यत्र। क्वचित् = कुत्रचित्। प्रवरसंचरत्सुरवधूपदैः—प्रवरैः—उत्कृष्टैः संचरद्भिः = चलद्भिः सुरवधूपदैः = देवाङ्गनाचरणैः। पावनम् = पवित्रम्। वनम् = अरण्यम्। इह = अत्र। मुनीनाम् = यतीनाम् अपि मनः = चेतः। विक्रियाम्—विगता क्रिया यत्र तादृशीम् दशाम् नयति = प्रापयति ॥ ४४ ॥

हिन्दी—कहीं चञ्चल कोयलों से भरे नवीन आम के पेड़ कहीं मृग समुदाय से सेवित विशाल शालवृक्षों से युक्त, उत्तम सुरसुन्दरियों के चलते हुये चरणों से पावन बना हुआ अरण्य मुनियों की भी चित्तवृत्तिको विकृत कर देता है ॥ ४४ ॥

तदिदमद्यतनं दिवसमस्य सैन्यस्याध्वश्रमापन्नखेदापनुत्तिनिमित्तमधिवसतु देवः।

सुधा—तदिति। तत् = अतः। इदम् = एतत्। अद्यतनम् दिवसम् = अद्य-दिनम्। अस्य = एतस्य। सैन्यस्य = सेनायाः। अध्वश्रमापन्नखेदापनुत्तिनिमित्तम् = मार्गश्रमयुक्तखेददूरीकरणहेतोः। देवः = प्रभुः। अधिवसतु = अत्रैवाधिवासम् करोतु।

हिन्दी—अतः आज के दिन इस सेना के मार्ग में चलने के कारण थकान से युक्त खेद को दूर करने के लिये महाराज यहीं निवास करें।

यत्र—

वायुस्कन्धमवष्टभ्य स्फारितैः पुष्पलोचनैः ।
वियद्विस्तारमेते हि वीक्षन्त इव पादपाः ॥ ४५ ॥

अन्वयः—वायुस्कन्धम् अवष्टभ्य स्फारितैः पुष्पलोचनैः एते पादपाः वियद्-विस्तारम् वीक्षन्ते इव हि ॥ ४५ ॥

सुधा—वायुस्कन्धमिति । यत्र = यस्मिन् स्थाने । वायुस्कन्धम् = पवनांसम् । अवष्टभ्य = आरुह्य । स्फारितैः = विस्तारितैः । पुष्पलोचनैः = पुष्पाण्येव लोचनानि, तैः = कुसुमनयनैः । एते = इमे । पादपाः = वृक्षाः । वियद्विस्तारम् वियतः=गगनस्य विस्तारम्=प्रसारम् वीक्षन्ते इव = अवलोकयन्तीव । हि पादपूर्तौ । उत्प्रेक्षालङ्कारः ॥ ४५ ॥

हिन्दी—यहां वायु के कन्धे पर सवार होकर पुष्प रूपी नयनों को फैला फैलाकर यह पादप मानों आकाश के विस्तार को देख रहे हैं ॥ ४५ ॥

अपि च येषाम्—

स्कन्धशाखान्तरालेषु पश्य जीमूतपङ्क्तयः ।
लम्बमाना विलोक्यन्ते चलद्वल्गुलिका इव ॥ ४६ ॥

अन्वयः—पश्य, स्कन्धान्तरालेषु लम्बमाना जीमूतपङ्क्तयः चलद्वल्गुलिका इव विलोक्यन्ते ॥ ४६ ॥

सुधा—अपि चेति । पश्य = अवलोकय । अपि च = तथा च । पश्य = अवलोकय येषाम स्कन्धान्तरालेषु = प्रमुखशाखामध्येषु । लम्बमानाः = प्रलम्बमानाः जीमूतपङ्क्तयः= = मेघमालाः । चलद्वल्गुलिका इव चलती = सरती वल्गुलिका समम् । विलोक्यन्ते = दृश्यन्ते । अत्रोपमालङ्कारः ॥ ४६ ॥

हिन्दी—और भी देखिये—जिनके तनों के मध्य झुके हुये बादलों की पंक्तियां रेंगती हुई वल्गुलिका जैसी मालूम पड़ती हैं ॥ ४६ ॥

येषां च—उच्चैः शाखाग्रसंलग्ना मन्ये नूनं वनौकसाम् ।
कुर्वन्ति पुष्पसंदेहं निशि नक्षत्रपङ्क्तयः ॥ ४७ ॥

अन्वयः—मन्ये, उच्चैः शाखाग्रसंलग्नाः । नक्षत्रपंक्तयः नूनम् वनौकसाम् पुष्पसन्देहम् कुर्वन्ति ॥ ४७ ॥

सुधा—उच्चैरिति । मन्ये = अनुमीये । येषाम् = पादपानाम् । शाखाग्रसंलग्नाः = शाखाशिखरलग्नाः नक्षत्रपंक्तयः = नक्षत्रमालाः । निशि = रात्रौ । नूनम् = खलु । वनौकसाम् = वनवृक्षाणाम् पुष्पसन्देहम् = कुसुमसंशयम् । कुर्वन्ति = विदधन्ति । अत्रोत्प्रेक्षालङ्कारः ॥ ४७ ॥

हिन्दी—अनुमान है कि यह वृक्षों की शाखाओं से लगी हुई नक्षत्रपंक्तियां वास्तव में वन वृक्षों के फूल होने का संदेह कर देती हैं ॥ ४७ ॥

इतश्च—

एतेषु प्रचण्डपवनाहततरुतलगलितसुगन्धिविविधविकचकुसुमप्रकरमकरन्द-

मापीय पुनः शिखरशाखाभिमुखमुत्पतन्त्यो विभान्ति दुरारोहतया कृताः केनापि निःश्रेणय इव श्रेणयो मधुलिहाम् ।

सुधा—एतेष्विति । एतेषु = अमीषु । प्रचण्डपवनाहततरुतलगलितसुगन्धिविविध विकचकुसुमप्रकरमकरन्दम्—प्रचण्डेन = महता पवनेन = वायुना आहतानि = ताडितानि तरुतलेषु = वृक्षाधःसु गलितानि = स्रस्तानि सुगन्धीनि = सुगन्धयुक्तानि विविधानि = विचित्राणि विकचकुसुमानि = विकसितपुष्पाणि, तेषां प्रकरम् = समूहम्, तस्य यन्मकरन्दम् = मधुरसम् तत् । आपीय = पीत्वा । पुनः = भूयः । शिखरशाखाभिमुखम् = उच्चवीरुधाभिमुखम् । उत्पतन्त्यः = उद्गच्छन्त्यः । मधुलिहाम् = भ्रमराणाम् श्रेणयः = पंक्तयः । दुरारोहतया = वृक्षाणामत्युन्नतत्वेन कष्टेन । रोहणयोग्यतया । केनापि जनेन । निःश्रेणयः इव = निष्पंक्तिबद्धा इव कृताः = विहिताः । विभान्ति = शोभन्ते ।

हिन्दी—और इधर—इनमें प्रचण्ड पवन से आहत वृक्षों के नीचे गिरे हुये सुगन्धित विभिन्न प्रकार के विकसित पुष्पों समूह का मकरन्द पान कर पुनः वृक्षों की शिखर शाखाओं की ओर उड़ते हुये भौंरों की पंक्तियां वृक्षों के दुरारोह होने के कारण मानो किसी के द्वारा पंक्तिहीन बनाई जैसी शोभित हो रहीं हैं ।

इतश्च—

निश्चलानां सैन्यभयेन तुङ्गतरुशिखरपञ्जरपुञ्जितगोलाङ्गूलमण्डलानां निर्यन्नवप्ररोहाङ्कुराकाराः कुर्वन्ति वनदेवतानां क्रीडान्दोलनदोलारज्जुशङ्कामधोविलम्बिलाङ्गूललतिकाः ।

सुधा—निश्चलानामिति । सैन्यभयेन = चमूत्रासेन । निश्चलानाम् = सुस्थिराणाम् । तुङ्गतरुशिखरपञ्जरपुञ्जितगोलाङ्गूलमण्डलानाम्—तुङ्गानाम् = उन्नतानाम् तरुशिखराणाम् = पादपशिरसाम् पञ्जरे = घनच्छायायाम् पुञ्जिताः = एकत्रिताः ये गोलाङ्गूलाः = लाङ्गूलवानराः, तेषाम् मण्डलानि = वृन्दानि, तेषाम् । निर्यन्नवप्ररोहाङ्कुराकारा—निर्यन्ति = निःसरन्ति नवप्ररोहानि = नूतनाङ्कुरितानि अङ्कुराणि तदाकाराः = तत्स्वरूपाः । अधोविलम्बिलाङ्गूललतिकाः = अधो विलम्बिन्यः—निम्नभागविलम्बिन्यः लाङ्गूल एव लतिका = पुच्छलतिकास्ताः । वनदेवतानाम् काननदेवीनाम् । क्रीडान्दोलन दोलारज्जुशङ्काम्—क्रीडान्दोलनस्य = खेलनस्य दोलारज्जुः = हिण्डोलरज्जुः, तस्य शङ्का, ताम् । कुर्वन्ति = विदधन्ति ।

हिन्दी—और इधर—सेना के भय से निश्चल बने ऊँचे ऊँचे वृक्षशिखरों की छाया में एकत्रित लाङ्गूल वानर समूहों की निकलते हुए नूतन अङ्कुरों के आकार वाली, नीचे को लटकती हुई पूछें वनदेवताओं के क्रीडा करने के लिये झूले की रस्सी की शङ्का उत्पन्न कर रही हैं ।

इतश्च—

चकासत्युड्डीयमानास्तरुशिरःशिखरशाखाग्रस्खलनविलग्नग्रहगणविमानपङ्क्तिपताका इव विहगावलयो निश्चलम् ।

सुधा—चकासतीति । उड्डीयमानाः = उत्पतन्त्यः । विहगावलयः = खगमालाः । तरुशिरःशिखरशाखाग्रस्खलनविलग्नग्रहगणविमानपंक्तिपताकाः—तरुशिरः शिखरशाखाग्रेषु = पादपोच्चशाखाग्रभागेषु स्खलनेन विलग्नाः = संलग्नाः ग्रहगणानाम् = नक्षत्रसमूहानाम् विमानपंक्तीनाम् = वायुयानमालानाम् पताकाः इव निश्चलम् = अविचलम् चकासति = शोभते ।

हिन्दी—और इधर—उड़ती हुई खग पंक्तियां वृक्षों की ऊँची ऊँची शाखाओं से टकराने के कारण नक्षत्रों के विमान समूह की पताकाओं के समान शोभित हो रहीं हैं ।

इतश्च—

विजृम्भमाणमञ्जरीजालेषु सर्वर्तुविकासिसहकारवनेषु वनदेवताभिरुद्दामदवंदहनप्रतीकारार्थमनागतमेव संगृहीतवारिगर्भाम्भोदपटलमिवालोक्यते कोकिलाकुलकदम्बकम् ।

सुधा—विजृम्भेति । सर्वर्त्तुविकासिसहकारवनेषु-सर्वासु ऋतुषु विकसितानि यानि सहकारवनानि तेषु = सकलर्तुविकासिचूतोद्यानेषु । विजृम्भमाणमंजरीजालेषु—विजृम्भमाणेषु = विकचमानेषु मञ्जरीजालेषु = मञ्जरीसमूहेषु कोकिलाकुलकदम्बकम् = कोकिलपक्षिणाम् घनसमुदायम् । वनदेवताभिः = काननदेवीभिः उद्दामदवदहनप्रतीकारार्थम् इव = पूरितजलगर्भघनपटल सदृशम् । अवलोक्यते = दृश्यते ।

हिन्दी—और इधर सभी ऋतुओं में विकसित होने वाले आम्रोद्यानों में कोयलों का घना समूह फूलती हुई मंजरियों के समुदाय में वनदेवियों द्वारा प्रचण्डदावानल को बुझाने के लिए बिना आये ही जल भरे हुये मेघपटल के समान दिखलाई पड़ता है ।

इतश्च—

विकसितसितपुष्पपिण्डपाण्डुरशिखराः सुधाधवलितोर्ध्वभूमयो विलासप्रासादा इव कुसुमसायकस्य जराधवलमौलयः कञ्चुकिन इव वनदेवतानाम्, उन्मादयन्ति मनोऽमन्दमुचुकुन्दपादपाः ।

सुधा—विकसितेति । विकसितसितपुष्पपिण्डपाण्डुरशिखराः—विकसितैः सितपुष्पपिण्डैः पाण्डुराणि = श्वेतानि शिखराणि येषां ते । अमन्दमुचुकुन्दपादपाः—अमन्दाः = कान्तिमन्तः मुचुकुन्दपादपाः = मुचुकुन्दवृक्षाः सुधाधवलितोर्ध्वभूमयः—सुधया = शुभ्रचूर्णेन धवलिता = शुभ्रा ऊर्ध्वभूमिः = उच्चभूमिः येषाम् तथा । विलासप्रासादा इव = आनन्दभवनसमाः । कुसुमसायकस्य = मदनस्य जराधवलमौलयः—जरया = वृद्धत्वेन धवलाः = उज्ज्वलाः शुभ्रवर्णा वा मौलयः = शिरोभागा येषां ते । कञ्चुकिनः इव = अन्तःपुरसेवकाः इव । वनदेवतानाम् = काननदेवीनाम् । मनः = चेतः । उन्मादयन्ति = मदयन्ति ।

हिन्दी—और इधर—विकसित श्वेतपुष्पों के कारण शुभ्र शिखरों वाले मुचुकुन्द वृक्ष चूने से पुती ऊर्ध्वं भूमि (छतों) वाले आनन्द भवनों के समान कामदेव के बुढ़ापे के कारण सफेद बालों वाले कञ्चुकि के समान वनदेवियों के मन मतवाले बना रहे हैं ।

तदेवंविधेषून्मुकुलविगलितबहलमकरन्दसीकरासारसुरभितभूतलेषु मुग्धमृगपरिहृतदावानलज्वालायमानोन्मदशबरसीमन्तिनीचरणप्रहारविकशिताशोककाननेषु नवजलधरनिकुरम्बकान्तितमालतरुशिरःस्थितशब्दानुमेयमाद्यन्मयूरमण्डलेषु मदनालसपुलिन्दराजसुन्दरीशिक्ष्यमाणवनकपोतकुक्कुटकुक्कुहकुलकुहरितेषु कूजत्कुररपरिवारितसरःपरिसरेषु चलच्चकोरसारसरवरमणीयेषु विहरतु देवः सह सैन्येन नर्मदोर्मिमन्दानिलान्दोलितलतापल्लवेषु वनेषु ।

सुधा—तदिति । तद् = अतः । एवंविधेषु = एतत्प्रकारेषु । उन्मुकुलविगलितबहलमकरन्दसीकरासारसुरभितभूतलेषु—उन्मुकुलस्य = विकसितस्य विगलितस्य = स्रवतः बहलमकरन्दस्य = अतिमधुरसस्य सीकरासारेण = विन्दुसमूहेन सुरभितम् = सुगन्धयुक्तम् भूतलम् = महीतलम् येषां तेषु । मुग्धमृगपरिहृतदावानलज्वालायमानोन्मदशवरसीमन्तिनीचरणप्रहारविकसिताशोककाननेषु—मुग्धैः मृगैः परिहृतम् मत्तहरिण परित्यक्तम् दावानलेन = वनदहनेन ज्वालायमानम् = वह्निवद्भूतम् उन्मदानाम् उन्मत्तानाम् शवरसीमन्तिनीनाम् = भिल्लस्त्रीणाम् चरणप्रहारैः = पदाघातैः विकसितम् प्रस्फुटितम् अशोककाननम् = अशोकपादपारण्यम् यत्र तादृशेषु । नवजलधरनिकुरम्बकान्तितमालतरुशिरःस्थितशब्दानुसेयमाद्यन्मयूरमण्डलेषु-नवानाम् = नूतनानाम् जलधराणाम् = पयोधराणाम् निकुरम्बम् = समूहम् तस्य कान्तिः = प्रभा इव कान्तिर्येषाम् तेषाम् तमालतरूणाम् = तमालवृक्षाणाम् शिरःसु = शिखरेषु स्थितानि = अवस्थितानि शब्दानुमेयेन= ध्वनिमात्रेण माद्यन्तानि = मत्तानि मयूरमण्डलानि = केकीवृन्दानि यत्र तादृशेषु । मदनालसपुलिन्दराजसुन्दरी शिक्ष्यमाणवनकपोतकुक्कुटकुक्कुहकुलकुहरितेषु—मदनेन = कामेन अलसाः = आलस्ययुक्ताः पुलिन्दराजसुन्दर्यः = शवरपतिस्त्रियः, ताभिः शिक्ष्यमाणाः = पाठ्यमानाः येन वनकपोताः = अरण्यकपोताः कुक्कुटाः = ताम्रचूडाः कुक्कुहाश्च = पिकाश्च तेषां कुलम् = वृन्दम् तस्य कुहरितेषु = कूजितेषु । कूजत्कुररपरिवारितसरःपरिसरेषु—कूजद्भिः=क्वणद्भिः कुररैः = कुररपक्षिभिः परिवारितानि = आवृतानि= सरसाम् = तडागानाम् परिसराणि = तटानि यत्र तेषु । चलच्चकोरसारसरवरमणीयेषु—चलन्तः = चपलाः चकोराः सारसाश्च तेषां रवैः = ध्वनिभिः रमणीयाः ये तेषु । नर्मदोर्मिमन्दानिलान्दोलितलतापल्लवेषु—नर्मदायाः = नर्मदानद्याः उर्मिभिः = तरङ्गैः मन्दानिलः = मन्दपवनः, तेनान्दोलिताः = तरलिताः लताः पल्लवाश्च = वीरुधदलानि येषां तादृशेषु = काननेषु । सैन्येन सह = बलेन साकम् । देवः = स्वामी । विहरतु = विचरतु ।

हिन्दी—अतः आप ऐसे वनों में सेना सहित विहार करें जहां की भूमि खिलती हुई कलियों के गाढ़े मकरन्द बिन्दुओं की वर्षा से सुरभित है । मतवाले हरिणों के द्वारा परित्यक्त, दावानल से अग्नि के समान प्रतीत होने वाले, मत्त शबर युवतियों के पद प्रहारों से विकसित होने वाले अशोक वन हैं । नूतन घन समूह की कान्ति के समान कान्ति वाले तमाल वृक्षों की चोटियों पर बैठे मतवाले मयूरों के झुण्ड केवल ध्वनि (आवाज) करने से ही पहिचाने जा पाते हैं । मदन से अलसाई हुई शवरपतिसुन्द-

रियों के द्वारा सिखाये जाते वनकपोत, कुक्कुट तथा पिकसमूह जहां कलकूजन कर रहे हैं। कूजन करते हुये कुररपक्षियों से घिरे हुये जहां तडागों के तट हैं। चंचल चकोर तथा सारस पक्षियों की ध्वनि से जो रमणीक बने हुये हैं एवम् नर्मदा नदी की लहरों से बोझिल होने के कारण मन्द बने हुये पवन से जहां लता और पल्लव आन्दोलित हो हो रहे हैं।

राजापि श्रुतशीलेन दर्शितांस्तांन्तान्देशानवलोक्य चिन्तितवान्।

सुधा—राजेति। राजापि = नृपोऽपि। श्रुतशीलेन = श्रुतशीलाभिधेन ब्राह्मणेन। दर्शितान् = प्रदर्शितान्। तान् तान् = उपरिनिर्दिष्टान्। देशान् = भूभागान्। अवलोक्य = दृष्ट्वा। चिन्तितवान् = विचारयामास।

हिन्दी—राजा ने भी श्रुतशील के द्वारा दिखाये गये उन उन देशों को देखकर विचार किया—

'कृतक्रीडाः क्रोडैर्मदकलकुरङ्गीहृतमृगाः
परिभ्राम्यद्भृङ्गाः परभृतकुलाक्रान्ततरवः।
वनोद्देशाः पौष्पैः सुरभितदिगन्ताः परिमलै-
र्न चेतः कस्यैते विलसितविकारं विदधति॥ ४८॥

अन्वयः—क्रोडैः कृतक्रीडाः मदकलकुरङ्गीहृतमृगाः, परिभ्राम्यद्भृङ्गाः, परभृतकुलाक्रान्ततरवः, पौष्पैः परिमलैः सुरभितदिगन्ताः एते वनोद्देशाः कस्य चेतः विलसितविकारम् न विदधति॥ ४८॥

सुधा—कृतक्रीडा इति। क्रोडैः = शूकरैः। कृतक्रीडाः—कृता = सम्पादिता क्रीडा-खेलनम् यत्र तथा। मदकलकुरङ्गीहृतमृगाः—मदेन कलकुरङ्गीभिः = मनोरमहरिणीभिः हृताः = आकर्षिताः मृगाः - हरिणा यत्र तथा। परि = परितः भ्राम्यन्तः = चङ्क्रमन्तः भृङ्गाः = अलयः यत्र तथा। परभृतकुलाक्रान्ततरवः—परभृतकुलेन = कोकिलवृन्देना-क्रान्ताः = आपूरिताः तरवः=वृक्षाः यत्र तथा पुष्पजातैः पौष्पैः परिमलैः = सुगन्धिभिः। सुरभितदिगन्ताः—सुरभितानि = सुगन्धयुक्तानि दिगन्तानि = दिशाप्रान्तानि यत्र तथा। एते = इमे। वनोद्देशाः वनभागाः। कस्य = कस्यापि जनस्य। चेतः = मनः। विलसित विकारम् = विलसितः = शोभितः विकारः - कामविकारो यस्मिस्तत्। न विदधति = न कुर्वन्ति। शिखरिणीवृत्तम्॥ ४८॥

हिन्दी—जहां शूकर क्रीडा कर चुके हैं, मत्तमनोरम मृगियों द्वारा हिरण जहां अपनी ओर आकृष्ट कर लिये गये हैं, चारो ओर भौंरे जहाँ मड़रा रहे हैं, कोकिल वृन्द से वृक्ष भरे हुये हैं तथा फूलों की सुगन्ध से दशों दिशायें सुरभित हो रही हैं ऐसे वन भाग किसके मन को विकारयुक्त नहीं कर देते हैं?॥ ४८॥

इतश्च—वीचीनां निचयाः स्पृशन्ति जलदानुद्गन्धिसौगन्धिका
नृत्यत्केकिकदम्बकानि विकसद्वीरुन्धि रोधांसि च।
धत्ते सैकतमुन्नदन्मदकलक्रौञ्चावलीसारसा-
नस्याः पद्मपरागपिङ्गपयसः सेव्यं च सिन्धोर्न किम्॥ ४९॥

अन्वयः—उद्गन्धिसौगन्धिकाः वीचीनाम् निचयाः जलदान् स्पृशन्ति, नृत्यत्केकिकदम्बकानि विकसद्वीरुन्धि रोधांसि, सैकतम् उन्नदन्मदकलक्रौञ्चावलीसारसान् धत्ते। पद्मपरागपिङ्गपयसः अस्याः सिन्धोः किम् सेव्यम् न (अस्ति) ॥ ४९ ॥

सुधा—वीचीनामिति। उद्गन्धिसौगन्धिकाः = उत्कृष्टसौरभयुक्ताः। वीचीनाम् = तरङ्गाणाम् निचयाः = राशयः। जलदान् = घनान्। स्पृशन्ति = स्पर्शं कुर्वन्ति। च = तथा। नृत्यत्केकिकदम्बकानि—नृत्यन्ति केकिकदम्बानि = मयूरवृन्दानि। विकसद्वीरुन्धि-विकसन्ति वीरुधानि = लताः यत्र तथा। रोधांसि = तटानि। सैकतम् = सिकतायुक्तम्-प्रदेशम्। उन्नदन्मदकलक्रौञ्चावलीसारसान्—उन्नदता = कूजतामदेन कला = मनोरमा क्रौञ्चावली = क्रौञ्चपंक्तिः सारसाश्च = सारसपक्षिणश्च तान्। धत्ते = धारयति। पद्मपरागपिङ्गपयसः—पद्मपरागेण = कमलपरागेन पिङ्गम् = पीतम् पयः = जलम् यस्यास्तस्याः। अस्याः = एतस्याः सिन्धोः = नद्याः। किम् = तटादिकम्। सेव्यम् = सेवनयोग्यम्। नास्ति। अपितु सर्वमेव सेव्यमस्तीति भावः। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥४९॥

हिन्दी—उत्कृष्ट सुगन्धवाले तरङ्ग समूह, बादलों का स्पर्श कर रहे हैं। नाचते हुये मयूरवृन्द, विकसित होती हुई लतावाले तट, रेतीली भूमि, कलरव करती हुई क्रौंचावली तथा सारसों को धारण कर रहे हैं। पद्मपराग से पीले बने हुए जलवाली इस नदी की कौन सी चीज सेवनीय नहीं है ? ॥ ४९ ॥

तदुचितमिहाद्य दिवसमावासं कर्तुम्' इति विचिन्त्य भ्रूकोणसंज्ञाज्ञापितसेनासन्निवेशस्तत्कालमेव 'विरचयत तुरङ्गममन्दुराः सरसदीर्घदूर्वानलनीलनिम्नस्थलीषु, कुरुत कायमानानि सरित्सेव्यसैकतेषु, उन्नमयत पटकुटीः कूलकाननेषु, आलानयत मदमत्तमतङ्गजान् मदकण्डूकपोलकाषसहेषु सरलसालसल्लकीसर्जार्जुनस्कन्धेषु, दूरमुत्सारयत शैवलशिलाजालकाष्ठकूटकण्टकपटलानि, समीकुरुत विषमभूभागान्' इति सेनापतिप्रमुखमुखरलोककलकलमुत्तालमुत्थितमसहमानस्तद्विरामावसरं प्रतिपालयन्नेकान्तेऽन्यतमप्रदेशे तस्याः सरितः सूक्ष्ममुक्ताफलक्षोदधवलबालुकापुलिनपृष्ठ एवास्थानगोष्ठीं बबन्ध।

सुधा—तदिति। तत् = अतः। अद्यदिवसम् = अद्यदिनम्। इह = अत्र। आवासम् कर्तुम् = स्थातुम्। उचितम् = उपयुक्तम्। इति = एवम्। विचिन्त्य = चिन्तयित्वा। भ्रूकोणसंज्ञाज्ञापितसेनासन्निवेशः—भ्रूकोणयोराज्ञया = संकेतेन ज्ञापितः = प्रकटितः सेनायाः = सैन्यस्य सन्निवेशः = विश्रामः येन तथा सः। तत्कालमेव = तत्क्षणमेव। सरसदीर्घदूर्वानलनीलनिम्नस्थलीषु—सरसेन = मृदुलेन दीर्घेण दूर्वा तथा नलघासेन नीलाः = हरिताः निम्नस्थल्यस्तासु। तुरङ्गममन्दुराः—तुरङ्गमाणां = वाजिनाम् मन्दुराः = शालाः। विरचयत = निर्मायत। सरित्सेव्यसैकतेषु सरिताम् = नदीनाम् सेव्येषु = सेवनयोग्येषु सैकतेषु = वालुकामयप्रदेशेषु। कायमानानि कायो यात्यत्रेति कायमान लोकप्रसिद्धचारोहितादितृणविशेषकुटीराणि। कुरुत = सम्पादयत। कूलकाननेषु = तटवर्तिवनेषु पटकुटीः = वस्त्रकुटीः (रावटियां इति भाषायाम्) उन्नमयत = उत्तानयत। मदकण्डूकपोलकाषसहेषु = बहुकण्डूकपोलघर्षणसहेषु। सरलसालसल्लकीसर्जार्जुनस्कन्धेषु—

सरलाः = ऋजवः सालाः सल्लक्यः सर्जाः अर्जुनाभिधाः पादपाः, तेषां स्कन्धेषु = स्कन्धभागेषु मदमत्तमतङ्गजान् = मदेन मत्ताः = मदक्षीबाः ये मतङ्गजा गजास्तान् आलानयत = नियन्त्रयत । शैवलशिलाजालकाष्ठकूटकण्टकपटलानि—शैवालाः शिलाजालानि = प्रस्तरसमूहानि काष्ठकूटानि दारूणि कण्टकपटलानि = शूलानि च दूरम् उत्सारयत = दूरमपसारयत । विषयभूभागान् = नीचोच्चभूप्रदेशान् । समीकुरुत = समानम् कुरुत । इति = एवम् । सेनापतिप्रमुखमुखरलोककलकलम् = सेनापत्यादिमुख्य वार्तालापेन लोककलकलम् = जनकोलाहलम् । उत्तालम् = महद्ध्वनिकरम् । उत्थितम् = सञ्जातम् । असहमानः = सहितुमसमर्थः । तद्विरामावसरम् = तच्छान्त्यवसरम् । प्रतिपालयन् = प्रतीक्षन् । तस्याः = एतस्याः । सरितः = नद्याः । एकान्ते = निर्जने । अन्यतमप्रदेशे = अन्यतमस्थले । सूक्ष्मयुक्ता फलक्षोदधवलवालुकापुलिनपृष्ठे—सूक्ष्ममुक्ताफल क्षोदेन = चूर्णितमुक्ताफलमयेन धवलम् = उज्ज्वलम् यत् वालुकापुलिनपृष्ठम् = सिकताभूतलम् तस्मिन् एव । स्थानभूतलम्, गोष्ठीम् = निवासगोष्ठीम् । बवन्धः = व्यरचयत् ।

हिन्दी—'अतः आज के दिन यहीं आवास बनाना उचित है' यह सोचकर भौहों के छोर से इशारा करके सेना के ठहरने की सूचना दी । तत्काल ही सरस लम्बी दूब तथा नल नामक घास वाली निचली भूमि पर घोड़ों को ठहरने के स्थान बनाओ, नदी के रेतीले स्थानों पर घास की झोपड़ियां तैयार करो, तटवर्ती वनभाग में राउटियां तान दो, अधिक खुजलाहट प्रकट करने वाले कपोलों के घर्षण को सहन करने में समर्थ सरल साल, सल्लकी, सर्ज तथा अर्जुन के वृक्षों के तनों में मदमत्त गजों को बांध दो, शिवाल, शिलाओं, कण्ठों तथा कांटों को दूर कर दो, ऊंची नीची भूमि को बराबर करो ।'' इस प्रकार सेनापतियों आदि के बोलने से जनसामान्य से उठी हुई जोर की कलकल ध्वनि को सहन करता हुआ उस कोलाहल के बन्द होने के अवसर की प्रतीक्षा कर उसी नदी के एकान्त स्थान पर जहां मुक्ता मणियों के चूर्ण के कारण रेतीली भूमि शुभ्र बन गई थी अपनी निवास गोष्ठी की रचना की ।

अथ नातिदूरे पुरोऽस्य शीतशैवलचक्रवाले चरतश्चक्रवाककदम्बकस्य मध्ये कोऽप्युत्क्षिप्य रक्षपुटम्, उन्नमय्य ग्रीवाग्रम्, अनङ्गपरवशो दूरादुपसर्पन्ननुरागिणीं काञ्चिच्चक्रवाकीं, दर्शितचाटुचातुर्यश्चक्रवाकयुवा दृष्टिपथमवातरत् ।

सुधा—अथेति । अथ = अनन्तरम् । नातिदूरे = समीप एव । अस्य = एतस्य । पुरः = सम्मुखम् । शीतशैवालचक्रवाले = शीतलशैवालपुञ्जे । चरतः = विचरतः । चक्रवाककदम्बकस्य = चक्रवाकवृन्दस्य । मध्ये = मध्यभागे । कः अपि = कश्चित् रक्षपुटम् = पक्षयुगलम् । उत्क्षिप्य = उत्क्षेपणं कृत्वा । ग्रीवाग्राम = कण्ठाग्रदेशम् उन्नमय्य = ऊर्ध्वं कृत्वा । अनङ्गपरवशः = कामातुरः । दर्शितचाटुचातुर्यः = दर्शितम् = प्रदर्शितम् चाटुचातुर्यम् = चाटुकारितायाश्चतुरता येन तथा । चक्रवाकयुवा = तरुणश्चक्रवाकः । अनुरागिणीम् = अनुरागयुताम् । काञ्चित् = कामपि । चक्रवाकीम् = चक्रवाकस्त्रियम् । दूरात् उपसर्पन् = दूरादुपगच्छन् । दृष्टिपथम् अवातरत् = दृष्टिगोचरमभवत् ।

हिन्दी—तदनन्तर समीप ही इसके समक्ष शीतल शैवाल समूह में विचरण करते

हुआ चक्रवाक समुदाय के मध्य में पंख फड़फड़ाकर, गर्दन के अग्रभाग को उठाकर कामातुर, चाटुकारिता की चतुरता दिखलाता हुआ कोई युवा चक्रवाक अनुरागिणी किसी चक्रवाकी की ओर जाता हुआ दूर से दिखलाई पड़ा।

अपरे च चत्वारो राजहंसास्तामेव चक्रवाकीं कामयमानास्तमापतन्तमन्तरान्तरा निपत्य स्खलयाम्बभूवुः।

सुधा—अपर इति। च = तथा। अपरे = अन्ये। चत्वारः = चतुःसंख्यकाः। राजहंसाः = राजहंसपक्षिणः। ताम् एव = उपरिनिर्दिष्टामनुरागिणीम् चक्रवाकीम्। कामयमानाः = अभिलषमाणः। तम् आपतन्तम् = एतम् आगच्छन्तम् चक्रवाकम्। अन्तरान्तरा = मध्ये मध्ये। निपत्य = पतित्वा। स्खलयाम्बभूवुः = स्खलितं चक्रुः।

हिन्दी—दूसरे चार राजहंस उसी चक्रवाकी को चाहते हुये, आते हुये उस युवा चक्रवाक के बीच बीच में आक्रमण कर गिराने लगे।

तांश्चावलोक्य राजा विहसन्नासन्नवर्तिनं श्रुतशीलमाबभाषे—वयस्य, विलोक्यतामिदमसमञ्जसम्।

सुधा—तानिति। च तान् = एतान्। अवलोक्य = दृष्ट्वा। राजा = नृपः। विहसन् = आसन्नवर्तिनम् = निकटवर्तिनम्। श्रुतशीलम् = श्रुतशीलनामानम्। आबभाषे = उक्तवान्। वयस्य = मित्र। इदम् = एतत्। असमञ्जसम् = वैषम्यम्। अवलोक्यताम् = दृश्यताम्।

हिन्दी—उन्हें देखकर राजा ने हंसते हुये समीपवर्ती श्रुतशील से कहा—मित्र! यह विषमता तो देखिये।

अमी राजहंसाः सतीष्वपि स्वजात्युचितानुचरीषु कथमन्यासक्तामपीमां चक्रवाककामिनीं कामयन्ते।

न खल्वेषामियमनङ्गभूमिः।

सुधा—अमीति। अमी = एते। राजहंसाः = राजहंसपक्षिणः। स्वजात्युचितानुचरीषु-स्वजातेः = आत्मवंशस्य उचितम् = उपयुक्तम् अनुचरीषु = अनुचरणकृतासु। सतीषु अपि = साध्वीष्वपि। अन्यासक्ताम् = अपरासक्ताम् अपि। इमाम् = एताम् चक्रवाककामिनीम् = चक्रवाकस्त्रियम्। कथम् = किमर्थम्। कामयन्ते = अभिलषन्ति। यथा चक्रवाकी चक्रवाकस्य सजातीया, एवं मनुष्यजातेर्नलस्य मानुषी दमयन्त्युचिता। यथा हंसानां सानुचिता, एवं लोकपालानामपि दमयन्तीत्याशयः। न = नहि। खलु = निश्चयेन। एषाम् = देवानाम्। इयम् = एषा दमयन्ती। अनङ्गभूमिः = कामभूमिरिति। दमयन्ती लोकपालानामनुचितेत्यर्थः।

हिन्दी—यह राजहंस इन्हीं की जाति वाली इनके पीछे चलने वाली अन्य चक्रवाक पर अनुरक्त इस चक्रवाकी को अन्य राजहंसियों के होते हुये भी क्यों चाह रहे हैं? निश्चय ही इन देवताओं के लिये यह (मानुषी) दमयन्ती कामभूमि नहीं हो सकती है।

अथवा—किमु कुवलयनेत्राः सन्ति नो नाकनार्य-
स्त्रिदिवपतिरहल्यां तापसीं यत्सिषेवे।
हृदयतृणकुटीरे दीप्यमाने स्मराग्ना-
वुचितमनुचितं वा वेत्ति कः पण्डितोऽपि ॥ ५० ॥

अन्वयः—कुवलयनेत्राः नाकनार्यः नो सन्ति किमु, यत् त्रिदिवपतिः अहिल्याम् तापसीम् सिषेवे। हृदयतृणकुटीरे स्मराग्नौ दीप्यमाने पण्डितः अपि कः उचितम् अनुचितम् वा वेत्ति ॥ ५० ॥

सुधा—किमिति। कुवलयनेत्राः—कुवलयमिव नेत्रे यासाम् ताः = कमलनयनाः। नाकनार्यः देवाङ्गनाः। नो सन्ति = न वर्तन्ते किमु इत्याश्चर्यम्। यत् त्रिदिवपतिः = सुरेन्द्रः अहिल्याम् = गोतमपत्नीम्। तापसीम् = तपस्विनीम्। सिषेवे = भेजे। हृदयतृणकुटीरे = हृदयरूपवह्निभोज्यकुटीरे। स्मराग्नौ = कामवह्नौ। दीप्यमाने = प्रज्वलिते सति। पण्डितः अपि = विद्वानपि। कः = कश्चित्। उचितम् = युक्तम्। अनुचितम् = अयुक्तम् वा। वेत्ति = जानाति। अर्थान्तरन्यासालङ्कारः मालिनी वृत्तम् ॥ ५० ॥

हिन्दी—अथवा—क्या नीलकमल के समान सुन्दर नेत्रों वाली देवाङ्गनायें नहीं थी जो कि देवराज इन्द्र ने गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या तपस्विनी के साथ रमण किया? हृदयरूपी तृण कुटीर में कामाग्नि के प्रज्वलित होने पर विद्वान् भी उचित अथवा अनुचित का विचार नहीं कर पाता है ॥ ५० ॥

एवंवादिनि राजनि, अकस्मात्कोमलकण्ठकुहरप्रेङ्खोलनालंकारसुन्दरोऽमन्दमूर्च्छनावच्छिन्नसरसस्वरस्वरूपः प्रसन्नप्रयुज्यमानतानविशेषाभिव्यक्तिस्पष्टश्रुतिसुभगो गगने गान्धारग्रामगामी गीतध्वनिरुदचरत्।

सुधा—एवमिति। एवम् वादिनि = इत्थमुक्तवति। राजनि = नृपे। अकस्मात् = सहसा। कोमलकण्ठकुहरप्रेङ्खोलनालङ्कारसुन्दरः—कोमलेन = मृदुना कण्ठकुहरेण = कण्ठरन्ध्रेण प्रेङ्खोलनेन = निःसरणेनालङ्कारमिव सुन्दरः = रुचिरः। अमन्दमूर्च्छनावच्छिन्नसरसस्वरस्वरूपः = अमन्दाभिःमूर्च्छनाभिः अविच्छिन्नम् = अनवरतम् सरसः = मधुरःस्वरस्वरूपः = स्वरूपः। प्रसन्न प्रयुज्यमानतानविशेषाभिव्यक्तिस्पष्टश्रुतिसुभगः—प्रसन्नेन प्रयुज्यमानेन तानेन = प्रयुक्तेन तानेन विशेषाभिव्यक्तिः = विशिष्टप्रकटनम् तथा श्रुतिसुभगः = कर्णसुखदः। गान्धारग्रामगामी = गान्धारपद्धत्यनुरूपः। गीतध्वनिः = गायनरवः। गगने = नभसि। उदचरत् = उच्चचाल।

हिन्दी—इस प्रकार राजा के कहते ही अकस्मात् (सहसा) मृदु कण्ठ नलिका से निःसृत होने के कारण अलङ्कार तुल्य रुचिर एव शीघ्र निकलने वाली मूर्च्छनाओं तथा माधुर्ययुक्त स्वर से संयुक्त सुप्रयुक्त तानों के द्वारा कर्णसुखद गान्धारपद्धति (संगीतशास्त्र में प्रयुक्त) की गीतध्वनि आकाश में व्याप्त हो गयी (गुञ्जायमान होने लगी)।

अवाहीच्च चलदलिपटलपीयमानापूर्वपरिमलोद्गारिपारिजातमञ्जरीमकरन्दबिन्दुवर्षवाही वायुः।

सुधा—अवाहीदिति। च = तथा। चलदलिपटलपीयमानापूर्वपरिमलोद्गारिपारिजातमञ्जरीमकरन्दविन्दुवर्षवाही—चलद्भिः = भ्रमद्भिः अलिपटलैः मधुपवर्गैः पीयमानानां = आस्वाद्यमानानाम् अपूर्वपरिमलोद्गारीणाम् = अद्भुतपरागपातिनाम् पारिजातानाम् = पारिजातपुष्पाणाम् मञ्जरी, तस्याः मकरन्दविन्दुवर्षवाही = मधुरससीकरवर्षवाही। वायुः = पवनः। अवाहीत् = प्राचलत्।

हिन्दी—चक्कर काटते हुये भ्रमरों के झुण्डों द्वारा पिये जाते हुये अपूर्व पराग बरसाने वाले पारिजात पुष्पों की मञ्जरी के परागविन्दुओं की बरसा करनेवाली वायु चलने लगी।

अथ कौतुकौत्तानिताननेन नरपतिनाप्यदृश्यत, शातकुम्भभङ्गपिशङ्गप्रभामण्डलमध्यवर्तिनः प्रधानपुरुषस्याग्रे गृहीतजात्यजाम्बूनददीर्घदण्डः कुण्डलालङ्कारवानुन्मिषन्मन्दारमुकुलमालामण्डितमौलिरवतरन्नम्बरान्निर्निमेषः सुवेशः पुरुषः।

सुधा—अथेति। अथ = अनन्तरम्। कौतुकौत्तानिताननेन–कौतुकेन = आश्चर्येण औत्तानितम् ऊर्ध्वंकृतम् आननम् = मुखं येन तेन। नरपतिना = भूपतिना अपि। शातकुम्भभङ्गपिशङ्गप्रभामण्डलमध्यवर्तिनः—शातकुम्भस्य = स्वर्णस्य भङ्गम् = खण्डम्, तेन पिशंगं यत् प्रभामण्डलम् = कान्तिमण्डलम्, तस्य मध्यवर्ती, तस्य। प्रधानपुरुषस्य = प्रमुखजनस्य। अग्रे = समक्षम्। गृहीतजात्यजाम्बूनददीर्घदण्डः—गृहीतम् जात्यम् जाम्बूनदस्य दीर्घं दण्डम् येन तथा = गृहीतोत्तमस्वर्णलम्बयष्टिः। कुण्डलालङ्कारवान् = कुण्डलाभूषणयुक्तः। उन्मिषन्मन्दारमुकुलमाला मण्डितमौलिः = निर्निमिषन्मन्दार कलिकामालाविभूषितोत्तमाङ्गः। निर्निमेषः = अपक्ष्मपंक्तिः। सुवेशः = शोभनवेशः पुरुषः = जनः। अम्बरात् = नभसः। अवतरन् = अधः आगच्छन्। अदृश्यत = ददृशे।

हिन्दी—तदनन्तर आश्चर्य से मुख ऊपर उठाये नरपति ने स्वर्ण खण्ड से पीले कान्ति मण्डल के बीच प्रधान पुरुष के आगे उत्तम स्वर्ण के लंबे दण्ड को लिये हुये, कुण्डल आभूषण पहने, अपलक मन्दारकलिकाओं की माला से शिरोभाग को अलंकृत किये निर्निमेष उत्तमवेश धारण किये किसी पुरुष को आकाश से उतरते हुये देखा।

अवतीर्य च सोऽतिविस्मयविस्फारितविलोचनमवनिपालमवादीत् निषधेश्वर, त्वरितमुत्तिष्ठ। अर्घाय सज्जो भव। किं न पश्यसि—

सुधा— अवतीर्येति। च = तथा। अवतीर्य = अवतरणं विधाय। सः = असौ। अतिविस्मयविस्फारितविलोचनम्—अतिविस्मयेन = महदाश्चर्येण विस्फारिते = विकसिते लोचने = नेत्रे यस्य तम्। अवनिपालम् = भूपतिम्। अवादीत् = अकथयत्। निषधेश्वर = अयि निषधपते! त्वरितम्-द्रुतम्। उत्तिष्ठ = उत्थितो भव। अर्घाय = अर्घदानाय सज्जोभव = प्रस्तुतो भव। किम् न पश्यसि = किन्नावलोकयसि।

हिन्दी—उतर कर वह अति विस्मय से आंखें फैलाये हुये भूपति से कहने लगा—हे निषधराज! शीघ्र उठो, अर्घ (पूजन) के लिये तैयार हो जाओ। क्या देखते नहीं हो—

अवतरति घृताचीस्कन्धविन्यस्तहस्तः
श्रुतिसुखकृतगीते किंनरे दत्तकर्णः।
किमपि सपरिरम्भं रम्भयारभ्यमाण-
व्यजनविधिरधीशः स्वर्गिणामेष देवः॥ ५१॥

अन्वयः—एषः घृताचीस्कन्धविन्यस्तहस्तः श्रुतिसुखकृतगीते किन्नरे दत्तकर्णः किमपि सपरिरम्भम् रम्भया आरभ्यमाणव्यजनविधिः स्वर्गिणाम् अधीशः देवः अवतरति ॥ ५१ ॥

सुधा—अवतरतीति । एषः = अयम् । घृताचीस्कन्धविन्यस्तहस्तः—घृताच्याः स्कन्धे विन्यस्तो हस्तो येन तथा = घृताच्यप्सरास्कन्धधृतकरः । श्रुतिसुखकृतगीते = कर्णप्रिय कृतगायने । किन्नरे = किम्पुरुषजने । दत्तकर्णः—दत्ते कर्णे येन सः = आकृष्टश्रुतिः । किमपि = किञ्चिदपि । सपरिरम्भम् = आलिङ्गनसहितम् । रम्भया—रम्भासरस्या । आरभ्यमाणव्यजनविधिः = आरभ्यमाणः = कृतारम्भः व्यजनविधिः = व्यजनचालनम् येन सः । स्वर्गिणाम् = सुराणाम् । अधीशः = प्रभुः । देवः = सुरेन्द्रः । अवतरति = अवतरणं करोति । मालिनीवृत्तम् ॥ ५१ ॥

हिन्दी—यह घृताची नामकी अप्सरा के कन्धे पर हाथ रखे हुये कानों को सुख देने वाले गीत को गाने वाले किन्नरों की ओर कान लगाये, अपूर्व आलिंगन के साथ रम्भा अप्सरा द्वारा पंखा झले जाते हुये देवताओं के प्रभु इन्द्रदेव अवतरण कर रहे हैं ॥५१॥

अपि च—

विरचितपरिवेषाः स्वाभिरङ्गप्रभाभि-
भुवनवहनभारोद्धारधुर्यांसपीठाः ।
उरसि परिविलोलद्दीर्घदामान एते
यमवरुणकुबेराः स्वामिनो लोकपालाः ॥ ५२ ॥

अन्वयः—भुवनवहनभारोद्धारधुर्यांसपीठाः स्वाभिः अङ्गप्रभाभिः विरचितपरिवेषाः, उरसि परिविलोलद् दीर्घदामानः एते लोकपालाः स्वामिनः यमवरुणकुबेराः ॥ ५२ ॥

सुधा—विरचितेति । भुवनवहनभारोद्धारधुर्यांसपीठाः—भुवनवहनस्य यद् भारम् तस्योद्धाराय या धुरी अंसेषु पीठेषु च येषां ते लोकवहनभारोद्धारार्थस्कन्धपीठाः । स्वाभिः अङ्गप्रभाभिः = निजाङ्गकान्तिभिः । विरचितपरिवेषाः = कृतपरिवेषाः । उरसि = वक्षसि । परिविलोलद् दीर्घदामानः—परितश्चलल्लम्बमालाः । एते=इमे । लोकपालाः= दिक्पालाः । स्वामिनः = प्रभवः । यमवरुणकुबेराः—यमः = यमराजः, वरुणः = वारिपतिः, कुबेरः = धनाधीशश्च देवाः सन्ति ॥ ५२ ॥

हिन्दी—और त्रिभुवन का भार वहन करने में समर्थ स्कन्ध तथा पृष्ठभाग वाले, अपनी अंग कान्ति से छटामण्डल बनाये हुये, वक्षःस्थल पर लटकती हुई लम्बी मालायें पहने यह लोकपाल स्वामी यम, वरुण तथा कुबेर हैं ॥ ५२ ॥

राजा तु तदाकर्ण्य ससंभ्रमोत्थानवशवलिगतोत्तरीयाञ्चलस्खलत्कनककङ्कणरणत्कारमुखरितमाधाय मूर्ध्नि संपुटितपाणिपल्लवयुगलमाश्चर्यरसरभवशमुच्छ्वास्यमानसर्वाङ्गपुलकः कतिपयपदान्यभिमुखं सह परिजनेनोच्चचलितवान् ।

सुधा—राजेति । राजा तु = नृपस्तु । तत् = एतत् । आकर्ण्य = श्रुत्वा । ससंभ्रमोत्थानवशवलिगतोत्तरीयाञ्चलस्खलत्कनककंकणरणत्कारमुखरितम्—ससम्भ्रमेण=सभयेनोत्थानेन वशवलिगतम् यदुत्तरीयांचल = आवारकवस्त्रम् तस्मात् स्खलतां कनककंकणानाम् =

स्वर्णकंकणभूषणानाम् रणत्कारम् = क्वणत्कारम् मुखरितम् = ध्वनिकरणं यस्मिन्-तादृशम्। सम्पुटितपाणिपल्लवयुगलम्—सम्पुटितम् = संजुष्टम् पाणिपल्लवम् = करदलम् युगलम् = युगम्। मूर्ध्नि = शिरसि। आधाय = धृत्वा। आश्चर्यरसरभवशम् = कौतुकावेशवशम्। उच्छ्वास्यमानसर्वाङ्गपुलक = उच्छ्वास्यमानः = उच्छ्वासं नीयमानः। सर्वाङ्गेषु = सकलशरीरावयवेषु पुलकं = पुलकावलिः यस्य तथा! परिजनेन सह = सेवकजनेन साकम्। कतिपयपदानि = किञ्चित् अभिमुखम् = सम्मुखम्। उच्चलितवान् = उच्चचाल।

हिन्दी—राजा तो यह सुनकर घबराहटके साथ उठने के कारण उड़ते हुये उत्तरीय वस्त्र (दुपट्टे) के अञ्चल के स्पर्श से स्वर्ण कंकण बजते हुये ध्वनि कर रहे थे ऐसे जुड़े हुये दोनों सुन्दर हाथों को माथे से लगा कर कौतुक के आवेशवश लम्बा लम्बी सांसे खींचता हुआ सर्वाङ्ग पुलकित सेवक जनों के साथ कुछ कदम सामने की ओर बढ़ गया।

अथ सकलसुरशिरःशेखरायमाणचरणरेणुरनेकनाककामिनीकुचकुम्भकुङ्कुममञ्जरीमुद्राङ्कितविपुलवक्षः स्थलीदृश्यमानमहानीलमणिमण्डननिभभव्यवृत्रशस्त्रव्रणः, श्रवणशिखरारोपितप्रत्यग्रपारिजातमञ्जरीगलद्बहलकिञ्जल्ककणानुपान्ते गायतस्तुम्बुरोः साक्षादमृतायमानगीतरसतुषारानिव परिपूर्णकर्णोद्गीर्णान् कपोलपालिलग्नानुद्वहन्, अनवरतशचीचुम्बनसंक्रान्तताम्बूललाञ्छनायमानाच्छाच्छहरिचन्दननिरुद्धबन्धुरस्कन्धसंधिः, अन्धक इव हारयष्ट्यास्फालितवक्षःस्थलः, विन्ध्यगिरिरिव सहस्राक्षः, पन्नगेन्द्र इव कुण्डली पातालमुद्धासमानश्च, कलिकालशापावतीर्णसरस्वतीगीतप्रवाह इव मत्तमातङ्गगामी, दिशि दिशि विकीर्णकनककपिशांशुरंशुमानिवाविकृतपद्मरागारुणप्रभामण्डलमण्डनः, सह लोकपालैर्भगवान्पुरंदरः पूर्वदिग्भागाम्बरादवातरत्।

सुधा—अथेति। अथ = अनन्तरम्। सकलसुरशिरःशेखरायमाणचरणरेणुः—सकलानाम् = निखिलानाम् सुराणाम् = देवानाम् शिरःसु = उत्तमाङ्गेषु शेखरायमाणा = ऊर्ध्वगता चरणरेणुः = पदधूलिर्यस्य सः। अनेकनाककामिनीकुचकुम्भकुङ्कुममञ्जरीमुद्राङ्कितविपुलवक्षः—अनेकानाम् = बहूनाम् नाककामिनीनाम्—सुरवधूनाम् कुचकुम्भानि = उन्नतपयोधराणि तेषां कुङ्कुममञ्जरी = केसरमञ्जरी चिह्नैरङ्कितम् विपुलम् = विशालम् वक्षः = वक्षःस्थलं यस्य तथा। स्थलीदृश्यमानमहानीलमणिमण्डननिभभव्यवृत्रशस्त्रव्रणः—स्थल्यां = स्थले दृश्यमानम् महानीलमणिमण्डननिभम् महनीलमणिशोभासदृशम् भव्यम् = दिव्यम् यद् वृत्तशस्त्रम् = वृत्रासुरशस्त्रम् तस्य व्रणः आघातः यस्य तथा। श्रवणशिखरारोपितप्रत्यग्रपारिजातमञ्जरीगलद्बहलकिञ्जल्ककणानुपान्ते = श्रवणशिखरे = कर्णोपरि आरोपिता = स्थापिता या प्रत्यग्र पारिजातमञ्जरी = सद्यो विकसितपारिजातकुसुममञ्जरी, तस्याः गलद्भिः स्खलद्भिः बहलैः किञ्जल्ककणैः = परागबिन्दुभिः अनुपान्ते = कपोलभागे पार्श्वे वा गायतः = गायनं कुरुतः। तुम्बुरोः साक्षात् = समक्षम्। अमृतायमानगीतरसतुषारान् इव = सुधासदृशगीतरसबिन्दून् इव। परिपूर्णकर्णोद्गीर्णान्—

सर्वतः पूर्णैश्रोत्रोद्गीर्णान् । कपोलपालिलग्नान् = गण्डस्थलसंलग्नान् । उद्वहन् = धारयन् । अनवरतशचीचुम्बनसंक्रान्तताम्बूललाञ्छनायमानाच्छाच्छहरिचन्दननिरुद्ध वन्धुरस्कन्धसन्धिः—अनवरतम् = निरन्तरम् शच्या = इन्द्राण्याश्चुम्बनेन संक्रान्तम् = संलग्नम् यत् ताम्बूललाञ्छनम् = ताम्बूलचिह्नम् तथा अच्छाच्छम् = अतिसुन्दरम् हरिचन्दनम्, तेन निरुद्धः = अवरुद्धः बन्धुरः स्कन्धसन्धिः = अंससन्धिभागः यस्य तथा । अन्धकः = दैत्यविशेष इव । सहस्रयष्ट्या = मुक्तालतया, अन्यत्र हरस्येयं हारो यष्टिः शूललक्षणा तया । आस्फालितवक्षःस्थलः—आस्फालितं वक्षःस्थलं यस्य सः = विस्तृतवक्षोभागः । विन्ध्यगिरिरिव = विन्ध्याचलसमः । सहस्राक्षः = प्रचुररुद्राक्षपादपयुक्तः । सहस्राक्षः = सहस्रनयनः । पन्नगेन्द्र इव = नागराजसमः कुण्डली कुण्डलीकृतः, कुण्डलम् = कर्णाभूषणम् तद्वान् । पातालम् = पाताललोकम् । उद्भासमानः = शोभमानः, पाता = रक्षिता अलम् = अत्यर्थम् रोचमानः । कलिकालशापावतीर्णसरस्वती गीतप्रवाह इव—कलिकाले = कलिसमये शापात् अवतीर्णायाः = धृतावतारायाः सरस्वत्याः = सरस्वती देव्याः गीतप्रवाह इव = गायनगतिसमः । मत्तमातङ्गगामी-मत्तस्य क्षीबस्य मतङ्गस्य = गजस्य इव गच्छतीति = गमनशीलः । दिशि दिशि = सर्वासु दिक्षु । विकीर्णकनकपिशांशुरंशुमान् इत्र-विकीर्णाः = प्रसृताः कनकसदृशकपिशांसव स्वर्णपीतरश्मयः येन तथा अंशुमान् = सूर्य इव । अविकृतपद्मरागारुणप्रभामण्डलमण्डनः अविकृतम् = विकारशून्यम् यत् पद्मरागमणेः = अरुणम् = रक्तम् प्रभामण्डलम् = कान्तिमण्डलम्, तद्वन्मण्डनम् = शोभनं यस्य सः । अंशुमांस्तु अविकृतः पद्मानां रागोऽरुणस्य प्रभामण्डलम् = बिम्बम्, एतानि मण्डनं यस्य सः । भगवान् पुरन्दरः = भगवान् इन्द्रः । लोकपालैः सह = सलोकपालः पूर्वं दिग्भागात् = प्राचीदिशातः अम्बरात् = गगनात् । अवातरन् = अवतरणं चकार ।

हिन्दी—तदनन्तर अपनी चरणरज से समस्त देवताओं के शिरःशिखरों को शोभित करने वाले भगवान् इन्द्र लोकपालों के साथ पूर्व दिशा से आकाश से अवतरित हुये । उनका विशाल वक्षःस्थल अनेक सुररमणियों के उन्नतपयोधरों के कुङ्कुममंजरी मुद्राओं से चिह्नित था तथा उस पर वृत्तासुर के शस्त्रों के घाव के चिह्न महानीलमणि के आभूषणों के सदृश शोभित हो रहे थे । कानों पर चढ़ाई गई नूतन पारिजातमञ्जरी से निकलते हुए गाढ़े पराग विन्दु कपोल भाग पर अटके हुये थे । समीप में गाते हुये तुम्बुरुओं के साक्षात् अमृत तुल्य गीत रस के कण कानों में भर जाने पर बाहर निकलकर बह रहे थे । निरन्तर इन्द्राणी के चुम्बन से लगे हुए ताम्बूल चिह्न सदृश अत्युत्तम हरिचन्दन के लेप से ऊँचे नीचे कन्धों के जोड़ भर गये थे । अन्धकासुर के वक्षःस्थल पर हार यष्टि (शिव जी के त्रिशूल) के समान हारयष्टि (मोतियों की माला) लगी हुई थी । विंध्य पर्वत पर खड़े सहस्राक्ष (रुद्राक्ष) के पेड़ों के समान वह सहस्राक्ष (हजार नेत्रों वाले) थे । सर्पराज जैसे कुण्डली (गोल डड़री) बनाये रहते हैं और पाताल को उद्भासित करते हैं वैसे हो वह भी कुण्डली (कुण्डल आभूषण धारण किये हुये) पूर्ण रूप से पाता तथा रुचिर कान्तिवाले थे । कलिकाल में शाप वश अवतीर्ण हुई सरस्वती का गीत

प्रवाह जिस प्रकार मत्तमातङ्गगामी (मतवाले चाण्डालों का साथ करने वाला) है वैसे ही वह भी मत्तमातङ्गगामी (मतवाले हाथियों पर बैठ कर चलने वाले) थे। प्रत्येक दिशा में सुनहरी पीली किरणें बिखेरने वाले अंशुमान् सूर्य के समान विशुद्ध पद्मराग मणि की अरुण कान्तिमण्डल से वह अलंकृत हो रहे थे।

टिप्पणी—पुराणादि में कहा गया है कि प्राचीन काल में एक बार महर्षि दधीचि से सरस्वती का विवाद हुआ और क्रुद्ध होकर दधीचि ने सरस्वती को कलिकाल में चाण्डाल कुल में जन्म लेने का शाप दे दिया। इसीलिए कलिकाल में चाण्डाल ही मधुर गीत प्रवाह वाले दिखलाई पड़ते हैं।

अवतीर्य चक्षुषां सहस्रेणोन्मीलन्नीरजवनानुकारिणा निरूप्य पादयोः पुरः पतितमष्टाङ्गाश्लिष्टभूतलमिमम्, ऐरावतकुम्भकूटास्फालनकर्कशाङ्गुलिना, दुर्दान्तदैत्यदानववधूवैधव्यदानशालामूलस्तम्भेन, शचीकुचकलशसंस्पर्शसंक्रान्तकुङ्कुमपत्रवल्लीकेन, दक्षिणपाणिना, सहेलमुन्नमय्य मूर्ध्नि पस्पर्श।

सुधा—अवतीर्येति। अवतीर्य=अवतरणं कृत्वा उन्मीलननीरजवनानुकारिणः=विकचकमलवनसदृशेन। चक्षुषीसहस्रेण=नयनसहस्रेण। पादयोः=चरणयोः। पुरः=समक्षम्। पतितम् अष्टाङ्गाश्लिष्टभूतलम्—साष्टाङ्गम् पृथ्वीतलम्। इमम्=एतम्। निरूप्य=दृष्ट्वा। ऐरावतकुम्भकूटास्फालनकर्कशाङ्गुलिना—ऐरावतस्य इन्द्रगजस्य यत्कुम्भकूटम् = यत्कुम्भस्थलम् तस्य स्फालनेन = स्पर्शेन कर्कशाः = कठिनाः अङ्गुल्यः यस्य तादृशेन। दुर्दान्तदैत्यदानववधूवैधव्यदानशालामूलस्तंभेन दुर्दान्तानाम् = दुर्धर्षाणाम् दैत्यदानवानाम् = राक्षसानाम् वध्वः = पत्न्यः, ताभ्यः वैधव्यदानस्वरूपा = विधवाकरणरूपायाः शालाः = भवनानि तासां स्तम्भसदृशेन शचीकुचकलशसंस्पर्शसंक्रान्तकुंकुमपत्रवल्लीकेन शच्याः = इन्द्राण्याः कुचकलशयोः = पयोधरकुम्भयोः संस्पर्शः = सम्यक् स्पर्शः, तेन संक्रान्तम् मुद्रितम् कुङ्कुमपत्रवल्लीकम् = कुङ्कुमपत्राङ्कनम् यस्मिन् तादृशेन दक्षिणपाणिना = सव्यकरेण। सहेलम् = हेलया सहितम् = सक्रीडम्। मूर्ध्नि = शिरसि। उन्नमय्य = उत्थाप्य। पस्पर्श= स्पर्शं चकार।

हिन्दी—उतर कर विकसित कमल वन के समान सुन्दर हजार नेत्रों से देख कर चरणों के समक्ष साष्टाङ्ग पृथ्वी पर पड़े हुये उसको (राजा को) देख कर ऐरावत हाथी के कठोर कुम्भस्थल को स्पर्श करने के कारण कठोर उंगलियों वाले, दुर्दान्त दैत्यों राक्षसों की पत्नियों को वैधव्य दान करने वाले भवनों के स्तम्भों के समान, इन्द्राणी के कुचकुम्भों का स्पर्श करने के कारण कुङ्कुम पत्रावली से चिह्नित दाहिने हाथ से हँसते हुए उठा कर उसके सिर पर हाथ से स्पर्श किया।

कृत्वा च कुशलप्रश्नालापव्यवहारानुच्चैः काञ्चनासनं समुल्लसन्मणिमयूखमञ्जरीजालजटिलमवनिभुजास्वभुजोपनीतमध्यतिष्ठत्।

सुधा—कृत्वेति। च = तथा। कुशलप्रश्नालापान् = कुशलक्षेमवार्ताः। कृत्वा = विधाय। अवनिभुजा = नृपेण। स्वभुजोपनीतम् = आत्मबाह्वाहृतम्। समुल्लसन्मणिमयूखमंजरीजालजटिलम्—समुल्लसत् = शोभमानम् मणिमयूखमंजरीजालम् = मञ्जरीसदृश-

मणिकिरणसमूहम्, तेन जटिलम् = युक्तम् । उच्चैः = अत्युच्चम् । काञ्चनासनम् = स्वर्णसिंहासनम् । अध्यतिष्ठत् = अधिष्ठितवान् ।

हिन्दी—कुशल प्रश्न वार्तालाप करके अवनिपाल (राजा) अपनी भुजाओं से अर्जित किये हुये विकसित होती हुई मञ्जरी के समान मणियों की किरण जाल से युक्त ऊँचे स्वर्णसिंहासन पर आसीन हुये ।

उपविष्टेषु यथोचितासन्नमासनेषु यमवरुणकुबेरप्रमुखेषु देवेषु क्रमेण कृतोचिताचारः पुरः पृथ्वीपृष्ठ एव विनयान्निषद्य निषधेश्वरपुरंदरमवादीत् ।

सुधा—उपविष्टेष्विति । यथोचितासन्नम् = यथायोग्यसमीपम् । आसनेषु = पीठेषु । उपविष्टेषु आसीनेषु । यमवरुणकुबेरप्रमुखेषु = यमवरुणादिमुख्येषु । देवेषु = सुरेषु । क्रमेण = क्रमशः । कृतोचिताचारः = विहितोपयुक्ताचरणः । पुरः = समक्षम् । पृथ्वीपृष्ठ एव = भूतल एव । निषद्य = स्थित्वा । निषधेश्वरः = निषधराजः नलः । विनयात् = नम्रतया पुरन्दरम् = शक्रम् अवादीत् = अवोचत् ।

हिन्दी—यथायोग्य समीप ही आसनों पर यम वरुण कुवेरादि प्रमुख देवताओं के बैठ जाने पर क्रमशः उचित पूजा सत्कार कर सामने पृथ्वी पर ही बैठ कर निषधराज नल ने नम्रता से इन्द्र से कहा ।

दिष्ट्या दिवौकसां नाथ जातो युष्मत्समागमात् ।
आकल्पं कीर्तनीयानां श्रेयसामस्मि भाजनम् ॥ ५३ ॥

अन्वयः—दिवौकसां नाथ, दिष्ट्या युष्मत्समागमात् आकल्पम् कीर्तनीयानाम् श्रेयसाम् भाजनम् जातः अस्मि ॥ ५३ ॥

सुधा—दिष्ट्येति । दिवौकसाम् = देवानाम् । नाथ = स्वामिन् । दिष्ट्या = सौभाग्येन । युष्मत्समागमात् = भवतां समागमनकारणात् । आकल्पम् = युगान्तम् । कीर्तनीयानाम् = प्रशंसनीयानाम् । श्रेयसाम् = मङ्गलानाम् । भाजनम् = पात्रम् । अहम् जातः = संजातः अस्मि ॥ ५३ ॥

हिन्दी—हे देवताओं के स्वामी ! सौभाग्य से आपके आगमन से मैं सदा सर्वदा के लिए प्रशंसनीय मङ्गलों का भाजन बन गया हूँ ॥ ५३ ॥

अपि च—

दृष्ट्वा क्रतून्युगशतानि तपश्चरित्वा
वाञ्छन्ति सङ्गमसुखं मुनयोऽपि येषाम् ।
तेषामनुग्रहकृतां स्वयमेत्य मेऽद्य
युष्माकमादिशत किं प्रियमाचरामि ॥ ५४ ॥

अन्वयः—युगशतानि क्रतून् इष्ट्वा, तपः चरित्वा मुनयः अपि येषाम् संगमसुखम् वाञ्छन्ति तेषाम् अनुग्रहकृताम् युष्माकम् स्वयम् एत्य मे आदिशत, किम् प्रियम् आचरामि ॥ ५४ ॥

सुधा—दृष्ट्वेति। युगशतानि = युग युगान्तराणि। क्रतून् = यज्ञान्। इष्ट्वा = यजनं कृत्वा। तपः = तपश्चरणम्। चरित्वा = कृत्वा। मुनयः = महर्षयः अपि। येषाम् = यद् देवानाम्। सङ्गममुखम् = संमिलनं दर्शनं च। वाञ्छन्ति = अभिलषन्ति। तेषाम् = तथाविधानाम् अनुग्रहकृताम् = कृपाकारिणाम्। युष्माकम् = भवतां देवानाम्। स्वयम् = आत्मनः। एत्य = आगत्य। मे = मह्यम्। आदिशत् = आज्ञापयत। किम् प्रियम् = किं रुचिरम्। आचरामि आचरणं सम्पादयामि। वसन्ततिलकावृत्तम्॥ ५४॥

हिन्दी—और भी—युगों तक यज्ञ करके तथा तपश्चरण कर मुनिजन भी जिसके मिलने एवम् दर्शन करने की कामना करते हैं, वह कृपा करने वाले आप स्वयं ही पधारे हैं। मुझे, आज्ञा दीजिये आपका क्या प्रिय (अभीष्ट सत्कारादि) करूँ॥ ५४॥

इति प्रकाशितप्रश्रयालापे पार्थिवपुङ्गवे पुरंदरो दरदलितकुन्दकलिकाकान्त-दन्तद्युतिद्योतिताधरदलमीषद्विहस्य लीलावलितकंधरः कुबेरमुखमवलोकयाञ्च-कार।

सुधा—इति प्रकाशितेति। इति—इत्थम्। पार्थिवपुङ्गवे = नृपश्रेष्ठे। प्रकाशित-प्रश्रयालापे–प्रकाशितः = प्रकटितः प्रश्रयेण = नम्रतया आलापः = वार्ताकथनम् येन तस्मिन्। लीलावलितकंधरः–लीलया = लीलापूर्वकम् वलितः = वक्रीभूतः कंधरः = स्कन्धदेशः यस्य सः। पुरन्दरः = पुरुहूतः। दरदलितकुन्दकलिकाकान्तदन्तद्युतिद्योतिता-धरदलम् दरदलितस्य = अर्धविकसितस्य कुन्दस्य = कुन्दपुष्पस्य कलिकाकांतिसदृशा= मुकुलप्रभा तया या दन्तद्युतिः = रदकान्तिस्तया द्योतिते = प्रकाशिते अधरदले = ओष्ठ-पल्लवे यस्य तत्। कुबेरमुखम् = कुबेराननम्। ईषत् = किञ्चित्। विहस्य = स्मित्वा। अवलोकयाञ्चकार = ददर्श।

हिन्दी = इस प्रकार नृप श्रेष्ठ नल के द्वारा नम्रवार्तालाप व्यक्त करने पर अधखिली कुन्दकली की कान्ति के समान दन्तकान्ति से प्रकाशित ओष्ठदलों वाले कुबेर के मुख को पुरन्दर ने कुछ हंसकर देखा।

सोऽपि 'निषधेश्वर, श्रूयतामस्मदागमनकारणम्।

सुधा—सोऽपीति। सः अपि = कुबेरः अपि। निषधेश्वर != अयिनिषधराज! अस्मदा-गमनकारणम् = अस्माकम् अत्रागमनहेतुम्। श्रूयताम् = आकर्ण्यताम् इत्याह।

हिन्दी—वह भी—हे निषधराज! हमारे आने का कारण सुनिये (यह कहने लगे)

'अस्ति विदर्भाधिपतेर्भीमभूमिपालस्य सुता सुतारनयननिर्जितेन्दीवरा वरा-र्थिनी निजकान्तितिरस्कृतत्रिदिवनारीरूपसम्पत्तिः कुन्ददन्ती दमयन्ती नाम।

सुधा—अस्तीति। विदर्भाधिपतेः = विदर्भराज्यनृपस्य। भीमभूमिपालस्य = भीमा-ख्यस्य राज्ञः। सुतारनयननिर्जितेन्दीवरा–सुताराभ्याम् = सुष्ठुतारकयुक्ताभ्याम् नयना-भ्याम् = नेत्राभ्याम् निर्जितम् = विजितम् इन्दीवरम् = नीलकमलम् यया सा। वरार्थिनी = वराकांक्षिणी। निजकान्तितिरस्कृतत्रिदिवनारीरूपसम्पत्तिः = निजकान्त्या = आत्म-प्रभया तिरस्कृता = दूरीकृता त्रिदिवनारीणाम् = स्वर्गरमणीनाम् रूपसम्पत्तिः = स्वरूप-

वैभवम् यया तथा। कुन्ददन्ती—कुन्द इव दन्तो = दन्तपंक्तिर्यस्यास्तथा। वरा = श्रेष्ठा। दमयन्ती = दमयन्ती नाम्नी। सुता = दुहिता। अस्ति = वर्तते।

हिन्दी—विदर्भराज भीम की अपनी सुन्दर कनीनिका से नीलकमल को पराजित करने वाली सुनयना, वर चुनने की अभिलाषिणी, अपनी कान्ति से स्वर्गलोक की रमणियों को तिरस्कृत करनेवाली कुन्द के समान उज्ज्वल दांतों वाली श्रेष्ठ दमयन्ती नाम की सुता है।

तस्याश्च चम्पकदलावदातदेहायाः किल स्वयंवरमहोत्सवः साम्प्रतं प्रस्तुतः' इति नारदादधिगम्य वयमपि विदर्भाधिपतिपुरं प्रस्थिताः।

सुधा—तस्या इति। च = तथा। चम्पकदलावदातदेहायाः—चम्पकदलम् = चम्पक-पुष्पपत्रम् इव अवदातः = प्रकाशितः देहः = शरीरम् यस्यास्तस्याः। तस्याः = एतस्याः। किल = नूनम्। साम्प्रतम् = सम्प्रति। स्वयंवरमहोत्सवः—स्वयंवरस्य पतिवरणस्य महोत्सवः = समारोहः। प्रस्तुतः = समुपस्थितः इति = एवम्। नारदात् = देवर्षिनारदमुखात् अधिगम्य = प्राप्य, श्रुत्वेति। वयम् अपि = वयं सर्वे यमकुवेरादिदेवाः अपि। विदर्भाधिपतिपुरम् = विदर्भनृपस्य नगरम्। प्रस्थिताः = चलनोद्यताः स्म।

हिन्दी—"चम्पक पुष्प के दल सदृश कान्तियुक्त शरीरवाली उस दमयन्ती का निश्चित रूप से इस समय पतिवरण विषयक स्वयंवर महोत्सव होने जा रहा है" यह नारद से समाचार पाकर हम सब ने भी विदर्भराज के नगर के लिये प्रस्थान किया है।

किंतु लघयति पुरुषं स्वमुखेनार्थिभावो यतस्तत्र गत्वापि दमयन्तीं किं ब्रूमो वयमिन्द्रादयो लोकपालास्त्वामर्थयामह इत्यसदृशं महिम्नोऽस्मद्विधेषु स्पृहणीयरूपासि कं नोत्सुकयसीत्यनुचितमपरिचितेषु चाटुचातुर्यम्, अजरसः खल्वमरा वयमिति ग्राम्यः स्वप्रशंसोपक्रमः, प्राप्नुहि त्रयाणामपि लोकानामाधिपत्यमस्मत्सङ्गमादिति महत्प्रागल्भ्यप्रलोभनम्, अल्पायुषो मनुष्यास्तदस्माकं देवानां मध्ये कञ्चिद्वृणोष्वेति पापीयः परदोषोदाहरणद्वारेणाभ्यर्थनम्।

सुधा—किन्त्वति। किन्तु = परन्तु। स्वमुखेन = निजाननेन। पुरुषम् = मानवम्। अर्थिमानः याचकत्ववर्णनम्। लघयति = न्यूनतां प्रापयति। यतः = यस्मात् कारणात्। तत्र = तत्स्थानम् गत्वा = यात्वा अपि। दमयन्तीम् = भीमपुत्रीम्। किं ब्रूमः = किं कथयामः। वयम् इन्द्रादयः = वयं शक्रवरुणादिसुराः। लोकपालाः = लोकेशाः। त्वाम् = दमयन्तीम्। अर्थयामहे = कामयामहे। इति = इत्थम् कथनम्। महिम्नः = गौरवस्य असदृशम् = विपरीतम्। अस्मद्विधेषु = अस्मादृशेषु = देवेषु। (अस्ति)। स्पृहणीयरूपा असि = काम्यसुन्दर्यसि। कम् न उत्सुकयसि = कं पुरुषं न उत्सुकतां जनयसि। इति = एवम्। अपरिचितेषु। चाटुचातुर्यम् = चाटुकारित्वम् अनुचितम् = अनुपयुक्तम्। खलु = किल। वयम् अमराः = देवाः। अजरसाः = वृद्धत्वरहिताः इति = एवम्। स्वप्रशंसोपक्रमः = आत्मप्रशंसनम्। ग्राम्यः = ग्राम्यत्वम्। अस्मत्सङ्गमात् —सुरसाहचर्यात्। प्राप्नुहि = त्रयाणाम् अपि लोकानाम् = त्रिभुवनानामपि। आधिपत्यम्—स्वामित्वम्।

लमस्व । इति = इत्थम् । महत्प्रागल्भ्यप्रलोभनम् = अतिधाष्ट्यं पूर्णप्रयोजनम् । मनुष्याः = नराः । अल्पायुषः = अल्पजीविनः । तत् = अतः । अस्माकं देवानाम् = अस्मत्सुराणाम् । मध्ये = अन्तः । कञ्चित् = कमपि देवम् । वृणीष्व = वरय । इति = एवम् । परदोषोदाहरणद्वारेण अन्यदोषदानेन । अभ्यर्थनम् = प्रशंसनम् । पापीयः = पापकार्यम् भविष्यतीति ।

हिन्दी—किन्तु अपने मुख से मांगना मनुष्य को ओछा बना देता है जिससे वहां जाकर भी क्या हम दमयन्ती से यह कहें कि हम इन्द्रादि देवता (लोकपाल) तुम्हें चाहते हैं । यह कहना हम जैसे देवताओं की महिमा के विरुद्ध है । तुम अत्यन्त आकर्षक रूप वाली हो, किसको उत्सुक नहीं बना देती हो । इस प्रकार अपरिचित व्यक्ति के समक्ष चाटुकारिताकी बात कहना अनुचित है । वास्तव में हम देवता कभी वृद्ध नहीं होते हैं यह अपनी प्रशंसा करना गँवारूपन है । हमारे साथ से तुम तीनों लोकों का अधिपतित्व पा सकोगी यह कहना अत्यन्त धृष्टतापूर्ण प्रलोभन होगा । मनुष्य अल्पायु होते हैं अतः हम देवताओं में से किसी को भी चुन लो इस प्रकार दूसरों में दोष दिखाकर याचना करना पापकार्य है !

अहो देशकालकार्योक्तिकुशलस्त्वमुच्यसे । गच्छाग्रे, भव दूतो देवानामशेषवैदग्ध्यविशेषोक्तिकोविद, किमन्यदिह शिक्ष्यसे, तैस्तैरुपायैः ताभिस्ताभिः कलाभिः, तैस्तैः प्रलोभनप्रकारैः, क्रियतां देवकार्यम्, आर्याणां प्रायः परोपकारकरणार्थमेव जन्म च जीवितं च, न च भवन्तमस्मदनुभावादन्यः कोऽपि कन्यान्तःपुरे रहस्यपि वर्त्तमानां विदर्भेश्वरसुतामुपसर्पन्तमुपलक्षिष्यते' इत्यभिधाय व्यरंसीत् ।

सुधा—अहो इति । त्वम्—नृपः नलः । देशकालकार्योक्तिकुशलः = देशकालकार्योचितकथने चतुरः (असि, अत एव) उच्यसे = कथ्यसे । अग्रे = प्राक् । गच्छ = प्रयाहि । देवानाम् = सुराणाम् । अशेषवैदग्ध्यविशेषकोविद = निखलचातुर्यविशेषवाचकः । दूतः = संदेशहरः भव । इह = अत्र विषये । अन्यत् = अपरम् । किम् शिक्ष्यसे = उपदिश्यसे । तैस्तैः उपायैः = तत्तत्प्रयत्नैः । ताभिस्ताभिः कलाभिः = तैस्तैश्चातुर्यैः । तैः तैः प्रलोभनप्रकारैः = तैः तेः प्रलोभनोपायैः । देवकार्यम् = सुरकृत्यम् = विधीयताम् । आर्याणाम् = श्रेष्ठजनानाम् । जन्म = उत्पत्तिः । च । जीवितम् = जोवनम् । च । प्रायः = परोपकारकरणार्थम् एव = परहितसाधनार्थमेव । च = तथा । भवन्तम् = श्रीमन्तम् अस्मदनुभवात् = अस्माकमनुभवात् । अन्यः = अपरः कः अपि = कश्चिदपि । कन्यकान्तःपुरे = कन्यकानामान्तरिकभवने । रहसि अपि = एकान्तेऽपि । वर्तमानम् = विद्यमानम् विदर्भेश्वरसुताम् = विदर्भराजपुत्रीम् । उपसर्पन्तम् = उपयातम् । न उपलक्षिष्यते—नावलोकयिष्यति । इत्यभिधाय = एवं कथयित्वा । व्यरंसीत् = विरराम ।

हिन्दी—तुम देश काल कार्योचित कथन में चतुर हो । अतः आगे जाओ । हम देवताओं के समस्त चातुर्य युक्त विशिष्ट कथन के जानकार दूत बनो । इस विषय में तुम्हें और क्या समझाया जाय, उन-उन उपायों से, उन-उन कलाओं से, उन-उन प्रलोभन विषयक उपायों से देवताओं का कार्य कीजिये । आर्यजनों का प्रायः जन्म तथा जीवन परोपकार करने के लिये ही होता है । आपको हम लोगों के प्रभाव से कन्याओं के अन्तः

पुर में एकान्त में विदर्भराज दुहिता के पास जाने पर भी अन्य कोई नहीं देख सकेगा। यह कह कर चुप हो गये।

नलोऽप्येतदाकर्ण्य तदिदं सङ्कटम् 'इतो व्याघ्र इतस्तटी, इतो दवाग्निरितो दस्यवः, इतो दुष्टदन्दशूक इतोऽप्यन्धकूपः' इति न्यायात्। इतः कर्णान्तकृष्टशरासनो मर्मप्रहारो प्रहरति मकरध्वज इतश्चायमेतेषामलङ्घनीय आदेशः। तन्न जानीमः किमत्रोत्तरम्। एकत्रार्थेऽस्माकं भवतां च प्रवृत्तिरिति प्रणयप्रार्थनाभङ्गकारिणी विहतविनया प्रतिकूलोक्तिः, अनभिज्ञोऽस्मि दूतोक्तीनामिति शाठ्यम्, असमर्थोऽस्मि संदिग्धक्रियाकारितायामित्याज्ञालङ्घनम्, आज्ञालङ्घनं च सेतुबन्धनमिव स्खलयति श्रेयःस्रोतः, षण्ढमुखदर्शनमिव वर्धयत्यलक्ष्मीम्, रजस्वलाभिगमनमिव हरत्यायुः, इत्यनेकविधमवधार्य 'न नाम दुरधिगमाः क्वेऽपि पदार्थास्तत्रभवतामशेषजगदीश्वराणाम्, न च न जानीथ ममापि प्रसिद्धमध्यवसायम्, एवं स्थितेऽप्येष वः करोम्यादेशम्, आदिष्टपरामर्शो न श्रेयानादेशकारिणः, किंतु बलीयान्परतो विधिः प्रमाणम्' इत्यभिधाय भक्त्या भयेन च देवानां दौत्यादेशं समर्थितवान्।

सुधा—नल इति। नलः = नलाख्यः नृपः अपि। एतत् = इदम्। आकर्ण्य=श्रुत्वा। तद् इदम् = तदेतत्। सङ्कटम् = महद् विपत्। इतः = एकतः। व्याघ्रः इतः = अपरतः। तटी = परिखा। इतः = एकतः। दवाग्निः = दावानलः। इतः = अपरतः दस्यवः = लुण्ठकाः। इतः = एकतः। दुष्टदन्दशूकः = दुष्टसर्पः। इतः = अपरतः अन्धकूपः = अज्ञातकूपः। इति न्यायात् = न्यायकारणात्। इतः = एकतः। कर्णान्तकृष्टशरासनः = श्रोत्रपर्यन्तकृष्टचापः। मर्मप्रहारी = मर्मघातकः। मकरध्वजः = कामदेवः। प्रहरति = आघातं करोति। इतश्च=अपरतश्च। अयम् एषः। एतेषाम्=एषां देवानाम्। अलंघनीयः= अलंध्यः। आदेशः = आज्ञा। तन्न जानीमः = तन्न विद्मः। अत्र = विषयेऽस्मिन्। किम् उत्तरं स्यात्। एकत्रार्थे = एकस्मिन्नेव वस्त्वर्थे। अस्माकम् = मामकीनाम्। भवताम् = श्रीमताम् च। प्रवृत्तिः = अनुरक्तिः। इति = एवम्। प्रणयप्रार्थनाभङ्गकारिणी = प्रेमप्रार्थनानाशिनी। विहतविनया = विनयहीना। प्रतिकूलोक्तिः = विपरीतोक्तिः। दूतोक्तीनाम् = सन्देशवाहककथनानाम्। अनभिज्ञः = अपरिचितः। अस्मि। इति शाठ्यम् = धाष्टर्यम्! असमर्थः अस्मि = सामर्थ्यहीनः अस्मि। सन्दिग्धक्रियाकारितायाम् = संदिग्ध कर्मकरणे। इति = एवम्। अनालंघनम् = अवज्ञाकरणम्। आज्ञालंघनम् = अवज्ञाकरणम् श्रेयश्रोतः = कल्याणनिर्झरम्। सेतुबन्धनम् इव = सेतुनिर्माण समम्। स्खलयति = अवरोधयति। षण्ढदर्शन इव = क्लीवावलोकनसदृशम्। अलक्ष्मीम् = दरिद्रताम् वर्धयति= वृद्धि करोति। रजस्वलाभिगमनम् इव = ऋतुमतीसहवाससमम्। आयुः = वयः। हरति= नाशयति। इति = इत्थम्। अनेकविधम् = बहुप्रकारम्। अवधार्य = निश्चित्य भवताम् = श्रीमताम्। अशेषजगदीश्वराणाम् = निखिलस्वामिनाम्। दुरधिगमा नाम = दुष्प्राप्यानाम। पदार्थाः = वस्तूनि। केऽपि न सन्ति। मम = मे। प्रसिद्धम् = विख्यातम् अध्यवसायम् = उद्यमम्। न च। न जानीथ = न वेत्थ। एवं स्थितेऽपि = एतदवस्थायामपि।

वः = युष्माकम् । आदेशम् = शासनम् । करोमि = विदधामि । आदिष्टपरामर्शः = प्रदत्ताज्ञोपरिविचारणम् । आदेशकारिणः = आज्ञापालकान् । श्रेयान् = कल्याणकरः । न = न भवति । किन्तु = परञ्च । परतः = महत्तः । विधिः = आदेशः । प्रमाणम् । बलीयान् = गुरुतरः इत्यभिधाय = इति कथयित्वा । भक्त्या = श्रद्धया । भयेन = भीत्या च । देवानाम् = सुराणाम् दौत्यादेशम् = सन्देशहार्याज्ञाम् । समर्थितवान् = अनुमोदितवान् ।

हिन्दी—नलनेभी यह सुन कर—"यह तो बड़ा संकट आ गया है। इधर व्याघ्र है तो उधर खाई है, एक ओर दावानल है तो दूसरी ओर लुटेरे हैं। एक ओर दुष्ट सर्प है तो दूसरी ओर अन्धा कुंआ है। इस न्याय से एक ओर तो कानों तक धनुष खींच कर मर्माघात करने वाला कामदेव प्रहार कर रहा है तो दूसरी ओर यह इन देवताओं का अलंघनीय आदेश है। इस प्रकार नहीं मालूम पड़ता कि इसका उत्तर क्या है! एक ही वस्तु के लिए हमारी तथा आपकी भी प्रवृत्ति है। इस प्रकार प्रणय प्रार्थना को भंग करनेवाली विनय का नाश करनेवाली यह प्रतिकूल उक्ति है। मैं दूत के समान बोलना नहीं जानता हूँ यह कहना शठता है, सन्दिग्ध कर्म करने में मैं असमर्थ हूँ, इस प्रकार कहना आज्ञा उल्लंघन करना है और आज्ञोल्लंघन करना कल्याण कर श्रोत को सेतुबन्धन के समान रोक देता है। नपुंसक के दर्शन के समान वह दरिद्रता को बढ़ाता है। रजस्वला सहवास के समान आयु को हरता है।-इस प्रकार बहुत भांति निश्चय करके—आप सरीखे समस्त जगत् के स्वामियों में कोई भी पदार्थ दुर्लभ नहीं हैं। और न ही हम यह समझते हैं कि आप मेरे प्रसिद्ध (प्रेम) उद्यम को नहीं जान रहे हैं ऐसी दशा में भी यह आपका आदेश पालन कर रहा हूँ। दिये हुए आदेश सोच विचार करना आदेश पालन करनेवाले को हितकर नहीं होता है। किन्तु बड़ों की आज्ञा ही प्रबल प्रमाण होता है।" यह कह कर भक्ति और भय से देवताओं के दूत बनने वाले आदेश का समर्थन किया।

स्थित्वा च कञ्चित्क्षणमुचितालापलीलया कृत्वा च कांश्चिदन्योन्यप्रस्तुतप्रियव्यवहारान्, आपृच्छ्य, यथागतं गतेष्वथ तेषु देवेषु निषधेश्वरश्चिरं चिन्तयाञ्चकार।

सुधा—स्थित्वेति च = तथा। कञ्चित्क्षणम्=किञ्चित्कालम्। स्थित्वा = अवस्थाय उचितवार्तालापलीलया=उपयुक्त वार्ताप्रसंगक्रीडया। कांश्चित् अन्योन्यप्रस्तुतप्रियव्यवहारान् = पारस्परिकोपस्थितप्रियवार्तालापान्। कृत्वा = विधाय। आपृच्छ्य = पृष्ट्वा। यथागतम् = यथायातम्। अथ = अनन्तरम्। तेषु देवेषु = इन्द्रादिसुरेषु गतेषु=प्रयातेषु अपि। निषधेश्वरः = निषधनृपतिः। चिरम् = अतिकालम्। चिन्तयाञ्चकार = चिन्तयामास।

हिन्दी—कुछ क्षण ठहर कर उचित ये वार्तालाप क्रीड़ा के द्वारा कतिपय पारस्परिक प्रस्तुत प्रिय व्यवहारों को कर के प्रतीत के सम्बन्ध में कुछ पूछताछ कर उन देवताओं के चले जाने पर निषधराज बहुत देर तक सोचते रहे।

तदिदम्, अनुच्छ्वासविरामं मरणम्, अमोहं मूर्च्छनम्, अरोगमङ्गव्यथनम्, अशल्यप्रवेशमन्तःशूलम्, अदारिद्र्यो निद्राविघातः।

सुधा—तदिति । तत् = अतः । इदम् = एतत् । अनुच्छ्वासविरामम् = श्वासावरोधं विनैव । मरणम् = मृत्युः । अमोहम् = मोहेन विनैव । मूर्च्छनम् = अचेतनम् । अरोगम् = रुजरहितम् । अङ्गव्यथनम् = शरीरपीडनम् । अशल्यप्रवेशम् = शल्यप्रवेशेन विनैव । अन्तःशूलम् = आन्तरिकी पीड़ा । अदारिद्रयः = दरिद्रताहीनः । निद्राविघातः = निद्राया अभावः अस्ति ।

हिन्दी—सो यह श्वास चलते रहते ही मरना है, मोह के बिना ही बेहोशी है, बिना रोग की अङ्ग पीड़ा है । शल्यप्रवेश (सूला आदि छेदे बिना) ही आन्तरिक वेदना है । दरिद्रता के बिना ही निद्रा का अभाव है ।

किमन्यत्—

तस्यामाकर्णितानुरागायां यन्ममाद्य दीर्घदौर्जन्यदोहदिना दैवेनाकस्मिकमौत्सुक्यानुरागव्यवसायं वन्ध्यमध्यवसितं कर्तुम् ।

सुधा—किमिति । अन्यत्=अपरम् । किम् आकर्णितायाम्=श्रुतायाम् । अनुरागायाम् = संजातप्रीत्याम् । तस्याम् = एतस्याम् । यत् अद्य = सम्प्रति । मम = मे आकस्मिकम्= सहसोत्पन्नम् । औत्सुक्यानुरागव्यवसायम् = उत्कण्ठानुरागप्रयासम् । दीर्घदौर्जन्यदोहदिना = विशालदुष्टताकष्टदायिना । दैवेन = भाग्येन वन्ध्यम् = नष्टम् । कर्तुम् = विधातुम् । अध्यवसितम् = प्रयत्नं विहितम् ।

हिन्दी—और क्या—सुन लेने मात्र से उस (दमयन्ती) में अनुराग उत्पन्न हो गया है । जिसे कि आज मेरे आकस्मिक उत्पन्न हुये उत्कण्ठापूर्ण अनुराग विषयक प्रयत्न को विशाल दुष्टता से दुःख देने वाले भाग्य के द्वारा नष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है ।

इदानीं किमत्र श्रेयो यस्माद्, अनुपयोगं गमनम्, श्लाघ्यं निवर्तनम्, अपार्थकमासनम्, असाधीयानध्यवसायः ।

सुधा—इदानीमीति । इदानीम् = साम्प्रतम् । अत्र = अस्मिन् । किम् श्रेयः=कल्याणकरम् । यस्मात्, गमनम् = प्रयाणम् । अनुपयोगम् = उपयोगरहितम् । निवर्तनम् = परावर्तनम् । श्लाघ्यम् = प्रशंसनीयम् । आसनम् = स्थितिः । अपार्थकम् = व्यर्थम् । अध्यवसायः = प्रयासः । असाधीयान् = असफलः स्यात् ।

हिन्दी—इस समय यहाँ क्या करना हितकर होगा जिससे जाना अनुपयोगी, लौटना प्रशंसनीय, बैठना व्यर्थ तथा प्रयत्न करना असफल हो जाये ।

इति चिन्ताकुले नले भयान्मूकीभूतेष्वासन्नवर्तिषु परिजनेषु प्रणयात्प्रावरणप्रान्तप्राच्छादितवदनभागं किमप्यासन्नमुपसृत्य शनैस्तत्कालयोग्यालापैरनुशीलयञ्शीलज्ञः श्रुतशीलो नलमाबभाषे ।

सुधा—इति चिन्ताकुल इति । इति = एवम् । चिन्ताकुले = चिन्तातुरे । नले = नलनृपे । भयात् = त्रासात् । आसन्नवर्तिषु = समीपवर्तिषु । परिजनेषु = सेवकेषु । मूकीभूतेषु = मौनधारितेषु । प्रणयात् = प्रेम्णः । प्रावरणप्रान्तप्राच्छादितवदनभागम्—प्रावर-

णस्य = उत्तरीयवस्त्रस्य प्रान्तेन प्राच्छादितम् = प्रावरितम् वदनभागम् = शरीरभागम् येन तम् । किमपि किञ्चित् । आसन्नम्=पार्श्वम् । उपसृत्य = उपगत्य । शनैः = मन्दम् । तत्कालयोग्यालापैः = तत्कालोचितवार्ताभिः । अनुशीलयन् = अनुरञ्जयन् । शीलज्ञः = शीलवान् । श्रुतशील: = तदभिधः । नलम् = नलनृपम् । आबभाषे = उक्तवान् ।

हिन्दी—इस प्रकार नल के चिन्ता से व्याकुल हो जाने पर, तथा भय से समीपवर्ती परिजनों के मौन हो जाने पर प्रेम से चादर के छोर से शरीर भाग को ढके हुये राजा नल के पास कुछ खिसक कर धीरे से तत्कालोचित वार्तालाप के द्वारा शीलवान् श्रुतशील अनुरञ्जन करते हुये (नल से) इस प्रकार बोला—

'देव, जानामि देवस्य देहं दहति दहन इव दारु दारुणो दौत्यचिन्ताभारः । को नाम सामान्योऽपि स्वयमभिलषितेऽर्थे दूतत्वदासभावमङ्गीकुर्यात् । विशेषतोऽनुरागिण्यङ्गनाजने । तथापि किं न जानाति देवो, यथा याचको ब्राह्मण इव निर्वेदः कस्य संतोषाय, विषवैद्य इव विषादः संदेहकारी शरीरस्य, भीमाभिमन्युनिरुद्धं कुरुबलमिव मनो महान्तं संतापमनुभवति ।

सुधा—देव इति । देव = अयि नृप । जानामि = अहं वेद्मि । देवस्य = भवतः । देहम् = शरीरम् दहनः = अग्निः दारु इव = काष्ठसमम् । दारुणः = कठिनः । दौत्यचिन्ताभारः सन्देशवाहनचिन्ताभारः । दहति = ज्वलयति । सामान्यः = साधारणः अपि । कः नाम कः समर्थः । स्वयम् = आत्मना । अभिलषिते = काम्यमाने । अर्थे = हेतौ । दूतत्वदासभावम् = दौत्यदासत्वम् । अङ्गीकुर्यात् = स्वीकुर्यात् । विशेषतः = वैशिष्ट्येन । अनुरागिणि = प्रीतियुक्ते । अङ्गनाजने = नारीजने । तथापि किम् देवः = स्वामी न जानाति= न वेत्ति । यथा याचकः = भिक्षुकः ब्राह्मण इव = विप्र इव । निर्वेदः = खेदम् । कस्य = कस्य जनस्य । सन्तोषाय = सन्तुष्टिहेतवे । विषादः = विषभक्षकः विषवैद्य इव = विषचिकित्सक इव । शरीरस्य = देहस्य । सन्देहकारी = संशयकारी । भीमाभिमन्युनिरुद्धम्—भीमेनाभिमन्युना च निरुद्धम् = अवरुद्धम् । कुरुबलम् = कौरवदलम् इव । भीमम् = भयङ्करम् अभिमन्यु = क्रोधश्च ताभ्यां निरुद्धम् = अवरुद्धम् । मनः—चेतः इव । महान्तम्= अत्यन्तम् । सन्तापम् = खेदम् । अनुभवति = अनुभवं करोति ।

हिन्दी—हे महाराज ! जानता हूँ कि आपका शरीर यह दारुण दौत्य चिन्ता का भार उसी प्रकार जला रहा है जैसे अग्नि काष्ठ को जला देता है । साधारण व्यक्ति भी ऐसा कौन है जो स्वयम् अभिलषित वस्तु के सम्बन्ध में दूत बनने का दासकर्म स्वीकार कर सके । फिर विशेष रूपसे अनुरागयुक्त नारी विषय में ! फिर भी क्या आप नहीं जानते हैं कि जैसे निर्वेद (वेद विहीन) भिखारी ब्राह्मण के समान निर्वेद (खेद) किसके लिए सन्तुष्ट करने वाला होता है । विष खाने वाले को विषवैद्य के समान विषाद (पश्चाताप में डालने वाला) शरीरको संदेह करने वाला, भीम तथा अभिमन्यु के द्वारा घेरी गई कौरव सेना के समान भयानक तथा उत्कृष्ट क्रोध से घिरा हुआ मन घोर सन्ताप का अनुभव करता है ।

तदलमनेन वातूलीभ्रमेणेव मीलयता चक्षुरुद्वेगेन ।

सुधा—तदिति । तत् = अतः । वातूलीभ्रमेण इव = उद्ध्र्ववेगेन इव । उद्वेगेन चक्षुः = नयनम् उन्मीलयता = उन्मीलनेन । अनेन = एतेन । अलम् इति निषेधेऽव्ययम् ।

हिन्दी—अतः इस प्रकार वातूली भ्रम (ऊपर को उठने वाले हवा के वण्डरे) के समान उद्वेग से आंखे बन्द करना व्यर्थ है ।

किं देवेन न श्रुतम्, अमृतमथनावसरे सुरासुरकरपरिवर्त्यमानमन्दरमन्थाननिर्घोषबधिरितसमस्तरोदःकंदरादिवापि दूरोच्छलितदुग्धतुषारासारतारकितनभसः, समुत्पन्नानेककौस्तुभादिवस्तुविस्तारादुद्गच्छदप्सरोमुखमण्डलैः क्षणमिव विहितविकचनलिनखण्डशोभाद्, अनेकाश्चर्यकुक्षेः क्षीरसागरादजनि जनितजगद्विस्मया स्मरजननी हस्तस्थिततरुणारविन्दा देवी देदीप्यमानपुण्यलक्ष्मा लक्ष्मीः ।

सुधा—किमिति । किम् देवेन = प्रभुणा । न श्रुतम् = नाकर्णितम् । अमृतमथनावसरे = सुधामथनकाले । सुरासुरकरपरिवर्त्यमानमन्दरमन्थाननिर्घोषवधिरितसमस्तरोदकन्दरादिवापि–सुरासुराणाम् = देवदानवानम् करैः = हस्तैः परिवर्त्यमानम् = परिचाल्यमानम् मन्दरमन्थानम् = मन्दराचलस्य मन्थानम् = मथनदण्डम्, तस्य निर्घोषेण = गर्जनेन वधिरितः = वधिरीकृतः समस्तः = सम्पूर्णः रोदः कन्दरः = क्षितिजकन्दराभागः यस्य तस्मात् इवापि । दूरोच्छलितदुग्धतुषारासारतारकितनभसः = दूरात् = दूरस्थलात् उच्छलितम् = ऊर्ध्वंछलितम् यत् दुग्धतुषारासारम् = पयः कणवर्षणम् तेन तारकितम् ताराङ्कितम् यन्नभः = आकाशम् यस्य तस्मात् ! समुत्पन्नः = सञ्जात अनेककौस्तुभादिवस्तूनां = कौस्तुभमण्यादिपदार्थानाम् विस्तारः = प्रसारः यस्मात तस्मात् । उद्गच्छद्भिः = ऊर्ध्वंकृतैः अप्सरसाम् मुखमण्डलैः = आननमण्डलैः । क्षणमिव = निमिषमिव । विहितविकचनलिनखण्डशोभात् विहिता = कृता विकचानाम् = विकसितानाम् नलिनखण्डानाम् = कमलखण्डानाम् शोभा = सुषमा यस्य तस्मात् । अनेकाश्चर्यकुक्षेः = अनेकानाम् आश्चर्याणाम् कुक्षिर्यस्तस्मात् = अतिकौतुकगर्भात् । क्षीरसागरात् = पयोनिधेः । जनितजगद्विस्मया जनितः = उत्पन्नः जगद्विस्मयः = लोकविस्मयः यस्यास्तथा । स्मरजननी = कामोत्पादिनी हस्तस्थिततरुणारविन्दा–हस्तयोः = करयोः स्थिते = अवस्थिते तरुणे = नूतने अरविन्दे = पङ्कजे यस्यास्तथा देदीप्यमाना = शोभमाना पुण्यलक्ष्मा = शुभलक्षणा लक्ष्मीः देवी = रमा-देवी । अजनि = अजायत ।

हिन्दी—क्या आपने नहीं सुना—अमृतमन्थन के अवसर पर मानो देवताओं तथा दानवों के हाथों से चलाये जाते हुये मन्दराचल के मन्थन (मन्थनीदण्ड) के निर्घोष से समस्त क्षितिज कन्दराओं के बधिर बनाने वाले दूर से ऊपर को उछलने वाले दुग्ध कणों की वर्षा आकाश को ताराङ्कित करने वाले, उत्पन्न हुये अनेक कौस्तुभमणि आदि पदार्थों के विस्तार से जहाँ मुखमण्डल ऊपर उठाकर अप्सरायें देख रहीं हैं तथा क्षण भर में विकसित कमलखण्ड की शोभा उत्पन्न करने वाले, अनेक कौतुकों की कोख बने क्षीरसागर से संसार भर में विस्मय उत्पन्न करनेवाली, मदनजननी, हाथों में नूतन अरविंद धारण किये हुये शोभायुक्त पुण्य लक्षणों वाली देवी लक्ष्मी उत्पन्न हुई ।

यस्याः सर्वाङ्गलावण्यमधु विकचलोचनचषकैरापीयपीयूषजुषो मदनमदपरवशाः, परस्परमेवेर्ष्यन्तश्चक्रुश्चक्रपाणिना समं सङ्गरम्।

सुधा—यस्या इति। यस्याः = एतस्याः लक्ष्म्याः। सर्वाङ्गलावण्यमधु = निखिलांग सौन्दर्यमधु। विकचलोचनचषकैः = विकचैः = विकसितैः लोचनचषकैः = नयनचषकैः। आपीय = पीत्वा। पीयूषजुषः = सुधास्नेहिनः देवाः। मदनमदपरवशाः = कामोन्मादपराधीनाः। परस्परम् एव = अन्योन्यमेव। ईर्ष्यन्तः = ईर्ष्यां कुर्वन्तः। चक्रपाणिना = चक्रं पाणौ यस्य तेन = विष्णुना। समम् = साकम्। सङ्गरम् = युद्धम् चक्रुः = अकुर्वन्।

हिन्दी—जिसके सर्वाङ्गसौन्दर्यरूपी मधु को विकसित नयनरूपी प्यालों से पानकर सुधास्नेही देवता कामोन्माद के पराधीन होकर आपस में ही ईर्ष्या करते हुये चक्रपाणि भगवान् विष्णु के साथ युद्ध करने लगे।

अथ सा सर्वानप्यन्तरान्तरापततस्तानुल्लङ्घ्य मन्दरगिरिशिखरशातकुम्भनिकषोपलायितबाहोर्भगवतश्चिक्षेप क्षेपीयः कण्ठे वैकुण्ठस्य स्वयंवरकुसुममालाम्।

सुधा—अथेति। अथ = अनन्तरम्। सा = असौ लक्ष्मीः। अन्तरान्तरा = मध्यमध्ये। आपततः = आस्खलतः। सर्वान् = अखिलान् अपि। तान् = एतान् देवान्। उल्लंघ्य = लंघयित्वा। मन्दरगिरिशिखरशातकुम्भनिकषोपलायितबाहोः—मन्दरगिरेः = मन्दराचलस्य। शिखरशातकुम्भस्य = स्वर्णमयशिखरस्य निकषोपलायितौ = निकषप्रस्तरसदृशौ बाहू = भुजे यस्य तस्य। भगवतः = विष्णोः। कण्ठे = गलदेशे। वैकुण्ठस्य = स्वर्गस्य स्वयंवरकुसुममालाम् = स्वयंवरपुष्पस्रजम्। क्षेपीयः = अतिशयेन क्षिप्रम्। चिक्षेप = प्राक्षिपत्।

हिन्दी—अनन्तर उस (लक्ष्मी) ने बीच में गिरते हुये उन सभी देवताओं को लांघ कर मन्दरपर्वत के स्वर्णमय शिखर के कसौटीपत्थर सदृश (नोली) भुजा वाले भगवान् विष्णु के गले में वैकुण्ठ की स्वयंवर कुसुममाला अतिशीघ्रता से डाल दी।

एवं साऽपि कदाचिच्चम्पककलिकाकलापगौराङ्गी रागिणि त्वयि वञ्चयिष्यति देवान्। वञ्चितो यतः पूर्वमात्ममुखमण्डलश्रिया शशी, तिरस्कृतो मदनः सौभाग्येन। सकृत्प्रनृत्तायाश्च किमवगुण्ठनेन। विधेरिव वामभ्रुवामचिन्त्यानि चरितानि भवन्ति।

सुधा—एवमिति। एवम् = इत्थम्। सापि = लक्ष्मीरपि। चम्पककलिकाकलापगौराङ्गी = चम्पककलिकासदृशगौरवर्णा त्वयि = भवति रागिणी = अनुरक्ता। देवान् = सुरान् वञ्चयिष्यति = छलिष्यति। यतः = हि। पूर्वम् = प्राक्। आत्ममुखमण्डलश्रिया = आत्मनः मुखमण्डलस्य श्रीस्तया = निजाननशोभया। शशीः = चन्द्रः। वञ्चितः = छलितः। सौभाग्येन = सौन्दर्येण। मदनः = मन्मथः। तिरस्कृतः = अपहसितः। सकृत्प्रनृत्तायाः—सकृत् = एकवारमपिप्रनृत्तायाः = प्रकर्षेणनर्तितायाः तस्याः। अवगुण्ठनेन = शिरोवेष्टनेन। किम् = को लाभः। विधेरिव = ब्रह्मण इव। वामभ्रुवाम् = नारीणाम्। चरितानि = चरित्राणि। अचिन्त्यानि = अविचारणीयानि। भवन्ति।

हिन्दी—इस प्रकार चम्पे की कली के समान शुभ्रवर्ण वाली वह (लक्ष्मी) भी तुम में अनुरक्त हो देवताओं को वञ्चित कर देगी। क्योंकि पहले (वह) अपने मुख-मण्डल की शोभा से चन्द्रमा को वञ्चित कर चुकी है तथा सौन्दर्य से कामदेव का तिरस्कार किया है। एकबार (थोड़ा भी) नाच चुकी स्त्री के घूंघट काढने से क्या लाभ है। ब्रह्मा के समान स्त्रियों का चरित्र विचारगम्य नहीं होता है।

किमु न स्मरति देवो दिवि विश्रुतमर्थसारं स्वर्लोकादवतीर्य पुरा गीतं गन्धर्व-गायनैर्गीतगोष्ठीस्थितस्याग्रे युगलमिदमार्ययोर्देवस्य।

सुधा—किम्विति। किमु = किमिति। देवः = भवान्। न स्मरति यत् पुरा = प्राक् दिवि = स्वर्गलोके। गीतगोष्ठीस्थितस्य = संगीतपरिषदिस्थितस्य। देवस्य = भवतः अग्रे= समक्षम्। स्वर्लोकात् = स्वर्गात्। अवतीर्य = अवतरणं कृत्वा। गन्धर्वगायनैः गन्धर्व-गायकैः। विश्रुतम् = प्रसिद्धम्। अर्थसारम् = अर्थतत्वयुक्तम् आर्ययोः = आर्याछन्दसोः युगलम् = युग्यम् गीतम् = गायनपथम् नीतम्।

हिन्दी—क्या आप को याद नहीं है कि स्वर्ग में गीतगोष्ठी में बैठे हुये आपके समक्ष-पहले स्वर्ग लोक से उतरकर किन्नरगायकों ने विख्यात अर्थतत्ववाले आर्याछन्द के जोड़े को गाया था।

क्वचिदपि कार्यारम्भेऽकल्पः कल्याणभाजनं भवति।
न तु पुनरधिकविषादान्मन्दीकृतपौरुषः पुरुषः॥ ५५॥

अन्वयः—अकल्पः पुरुषः अपि क्वचित् कार्यारम्भे कल्याणभाजनम् भवति, पुनः अधिकविषादात् तु मन्दीकृतपौरुषः कल्याणभाजनम् न भवति॥ ५५॥

सुधा—क्वचिदपीति। अकल्पः = असमर्थः। पुरुषः = जनः अपि। क्वचित् = कुत्रचित्। कार्यारम्भे = कार्यादौ। कल्याणभाजनम् = कल्याणपात्रम् भवति। पुनः = भूयः अधिकविषादात् = अतिखेदात्। मन्दीकृतपौरुषः = शिथिलितशक्तिः पुरुषः तु कल्याणभाजनम् = कल्याणपात्रम् न भवति॥ ५५॥

हिन्दी—असमर्थ व्यक्ति भी कहीं तो कार्य के आरम्भ में कल्याण के पात्र बन जाता है और समर्थ (शक्तिशाली) व्यक्ति अत्यन्त विषाद से पौरुष मन्द पड़ जाने के कारण कल्याणभाजन नहीं बन पाता है॥ ५५॥

अपहस्तितान्तरायानर्थानुररीकृतान्प्रसाधयतः।
विधिरपि बिभेति तस्मान्निरतिशयं साहसं यस्य॥ ५६॥

अन्वयः—अपहस्तितान्तरायान् अर्थान् उररीकृतान् प्रसाधयतः यस्य निरतिशयम् साहसम्, तस्मात् विधिः अपि बिभेति॥ ५६॥

सुधा—अपहस्तीति। अपहस्तितान्तरायान्—अपहस्तितानि = दूरीकृतानि अन्तरायाणि विघ्नानि येभ्यस्तादृशान् उररीकृतान् = स्वीकृतान्। अर्थान् = कार्याणि प्रसाधयतः = कुर्वतः। यस्य = पुरुषस्य। अतिशयम् = अत्यन्तम्। साहसम्। तस्मात् = तथापुरुषात् विधिः अपि = ब्रह्मापि। बिभेति = भयं करोति॥ ५६॥

हिन्दी—समस्तविघ्नों को दूर कर स्वीकृत अर्थों को करते हुये अत्यन्त साहसी पुरुष से ब्रह्मा भी डरते है ॥ ५६ ॥

एकमनेकधा प्रस्तुतपुराणपुरुषाख्यानप्रपञ्चप्रक्रमेणातिक्रान्ते भूम्नि दिवसे मङ्गलोद्गार इव वाञ्छितार्थसिद्धेः, तर्जनहुङ्कार इवान्तरायाणाम्, ओंकार इवोत्साहस्मृतेः, पुण्याहध्वनिरिव हृदयप्रसादप्रासादस्य पुनर्नवीकृतानुरागस्तम्भोत्तम्भनस्य तस्य नरपतेः शिश्राय श्रुतिं श्रुतशीलेन श्रावितमिममेवार्थं समर्थयन्निव मध्याह्नशङ्खध्वनिः ।

सुधा—एवमिति । एवम् = इत्थम् । अनेकधा = बहुधा । प्रस्तुतपुराणपुरुषाख्यान प्रपञ्चप्रक्रमेण—प्रस्तुतम् पुराणपुरुषस्य = भगवतः विष्णोः यदाख्यानम् = वर्णनम्, तस्य यः प्रपञ्चप्रक्रमस्तेन । भूम्नि = विशिष्टभागे । दिवसे = दिने । अतिक्रान्ते = व्यतीते सति । वाञ्छितार्थसिद्धेः = अभीष्टसिद्धेः । मङ्गलोद्गार इव = कल्याणसूचकोद्गार समम् अन्तरायाणाम् = विघ्नानाम् । तर्जनहुङ्कार इव = तर्जनस्य हुङ्कारसमः । उत्साहस्मृतेः= उत्साहस्मरणस्य । ओङ्कार इव = तर्जनसमः । हृदयप्रसादप्रासादस्य—हृदयस्य प्रसादः, स एव प्रासादस्तस्य = चित्ताह्लादभवनस्य । पुण्याहध्वनिः इव = स्वस्तिवाचनध्वनिसमः पुनर्नवीकृते = भूयः नूतनीकृतेन अनुरागस्तम्भेन = अनुराग एव स्तम्भस्तेन = प्रेमस्थण्डिलेन उत्तम्भनम् = उत्थानम् यस्य तस्य । तस्य = एतस्य । नृपस्य = भूपतेः श्रुतशीलेन = श्रुतशीलाभिधेन जनेन । श्रावितम् श्रावणकर्म । इमम् = एतम् एव । अर्थम् = भावम् । समर्थयन् इव = प्रतिपादयन् इव मध्याह्नशंखध्वनिः = मध्याह्ने = मध्यदिनसमये यः शंखशब्दः । श्रुतिम् = कर्णम् । शिश्राय = आश्रयं चकार ।

हिन्दी—इस प्रकार विविध भांति प्रस्तुत भगवान् विष्णु के चरित्र वर्णन करते हुये दिनका बहुत भाग समाप्त हो जाने पर वाञ्छित अर्थ सिद्धि के मंगलोद्गार के समान, विघ्नों को दूर करने के लिये डांट की हुङ्कार के समान, उत्साहस्मृति की ओङ्कार (ललकार) के समान हृदय की प्रसन्नतारूपी भवन के स्वस्त्याह वचनों के समान पुनः पुनः नूतन किये गये अनुराग स्तम्भ से उठी हुयी उस नृपति के श्रुतशील के द्वारा सुनाये गये इस अर्थ का मानो समर्थन करते हुये दोपहर को शङ्खध्वनि कानों में पड़ी ।

राजा तु तमाकर्ण्य विसर्जितपरिजनस्तत्रैव पुलिनमध्ये मध्याह्नसमयसमुचितव्यापारमकरोत् ।

सुधा—राजेति । राजा तु = नृपस्तु । तम् = तद्ध्वनिम् । आकर्ण्य = श्रुत्वा । विसर्जितपरिजनः—विसर्जितः = परित्यक्तः परिजनः = सेवकवर्गः येन सः । तत्र एव = तत्स्थान एव । पुलिनमध्ये = तटमध्ये । मध्याह्नसमयसमुचितव्यापारम् मध्यन्दिनयोग्यसान्ध्यादिकार्यम् । अकरोत् = चकार ।

हिन्दी—राजा ने तो वह शंखध्वनि सुनकर सभी परिजनों (सेवकों) को छोड़कर वहीं तट पर मध्याह्नकालोचित सान्ध्यवन्दनादि क्रिया सम्पादित की ।

अनन्तरमतिक्रान्तेषु केषुचिन्मुहूर्तेषु गगनमध्यतलाद्विलम्बमाने मनाङ्मार्तण्डमण्डले चण्डवात्याहतशुष्कपत्त्रमिव दण्डप्रान्तप्रचलितकुलालचक्रमिव तेन पुरंदरादेशभ्रमेण भ्रान्तमात्मनो मनः क्वाप्येकान्तकमनीयनर्मदाप्रदेशदर्शनविनोदेन स्वस्थीकर्तुमिच्छन्निच्छानुकूलकतिपयाप्तपरिजनपरिवृतः श्रुतशीलस्कन्धावष्टम्भविहारो विहाय दूरमिव शिविरसंनिवेशम्, इतस्ततस्तरुणतमालमण्डपमण्डलितमयूरहारिणा चलच्चकोरचक्रवाकचक्रवालवलयितेन स्नानागततापसपदपंक्तिखर्वितदूर्वाङ्कुरेणापसरत्पयःपूरतरङ्गितवालुकेन पुलिनप्रान्तेन प्राचीं दिशमयासीत्।

सुधा—अनन्तरमिति। अनन्तरम् = तत्पश्चात्। अतिक्रान्तेषु = व्यतीतेषु। केषुचिन्मुहूर्त्तेषु = कतिपयक्षणेषु। गगनमध्यतलात् = आकाशमध्यतलात्। मनाक् = किञ्चित् मार्त्तण्डमण्डले = सूर्यमण्डले। विलम्बमाने = प्रलम्बमाने सति। चण्डवात्याहतशुष्कपत्रम् इव–तीव्रपवनाहतनीरसदलम् इव। दण्डप्रान्तप्रचलितकुलालचक्रम् इव–दण्डप्रान्तेन = यष्टयग्रभागेन प्रचलितम् = सञ्चलितम् कुलालचक्रम् इव = कुम्भकारचक्रसदृशम्। तेन = एतेन। पुरन्दरादेशभ्रमेण = पुरन्दरस्य = शक्रस्यादेशरूपं यद्भ्रमम् = आज्ञाभ्रमन्तिस्तेन। भ्रान्तम् = चङ्क्रमितम्। आत्मनः = स्वस्य। मनः = चित्तम्। क्वापि = कुत्रापि। एकान्तकमनीयनर्मदाप्रदेशदर्शनविनोदेन दर्शनस्यविनोदः=दर्शनविनोदः = अवलोकनानन्दः, एकान्ते = एकस्थले कमनीयस्य = रमणीयस्य नर्मदाप्रदेशस्य = नर्मदानदीभागस्य दर्शन विनोदस्तेन स्वस्थीकर्तुम् नीरुजीकर्तुम्। इच्छन् = वाञ्छन्। इच्छानुकूलकतिपयाप्तपरिजनपरिवृतः–इच्छानुसारकतिपयप्राप्तसेवकजनपरिवृतः। श्रुतशीलस्कन्धावष्टम्भविहारः—श्रुतशीलस्य = तदाख्यस्य स्कन्धे = अंसदेशे अवष्टम्भः = स्तब्धः, धृतहस्तो वा विहरतीति तथा शिविरसन्निवेशम् = शिविरपार्श्वम्। दूरम् इव = अनिकटमिव। विहाय = त्यक्त्वा। इतस्ततः = सर्वदिक्षु। तरुणतमालमण्डपमण्डलितमयूरहारिणा–नूतनतमालवृन्दे मण्डलितैः = एवत्रितैः मयूरैः = केकीभिः हारी = मनोरमस्तेन। चलच्चकोरचक्रवाकचक्रवालवलयितेन चलद्भिः = गच्छद्भिः चकोरैः=चकोरपक्षिभिः चक्रवाकैः = चक्रवाकपक्षिभिः चक्रवालैश्च बलयितम् = रेखाङ्कितम्, तेन। स्नानागततापसपदपंक्तिखर्वितदूर्वाङ्कुरेण—स्नानाय = मज्जनाय आगताः = आयाताः ये तापसाः = तपस्विजनास्तेषां पदपंक्तिभिः = चरणततिभिः खर्वितानि = नाशितानि दूर्वाङ्कुराणि = दूर्वाग्रभागानि यत्र तेन अपसरत्पयःपूरतरङ्गितवालुकेन–अपसरता = अपसरणं कुर्वता पय.पूरेण = वारिणा तरङ्गिता = कम्पिता वालुका यत्र तादृशेन। पुलिनप्रान्तेन = तटभागेन। प्राचीम् = पूर्वाम् दिशम् = ककुमम् अयासीत् = अगच्छत्।

हिन्दी—तदनन्तर कुछ क्षण बीतने पर गगन के मध्य तल से कुछ कुछ सूर्यमण्डल के लटक (ढल) जाने पर तेज आंधी से आहत सूखे पत्ते के समान, डण्डे के छोर से घुमाये गये कुम्भकार के चक्र के समान उस इन्द्र के आदेश रूपी भ्रान्ति के द्वारा भ्रान्त अपने मन को कहीं एकान्त में सुरम्यनर्मदानदी को देखने के द्वारा स्वस्थ बनाने की इच्छा करते हुये, इच्छानुसार कतिपय प्राप्त परिजनों से घिरे हुए श्रुतशील के कन्धों पर हाथ रख कर घूमते हुये शिविर की सन्निकटता को मानो दूर छोड़कर इधर उधर

नूतन तमालवृक्षसमूह से मण्डलित मयूरों के द्वारा मनोरम, चलते हुये चकोर चक्रवाक तथा चक्रवालों से घिरे स्नानार्थ आये तपस्वियों की चरणपंक्ति से टूटी दूवघास के अङ्कुरों वाले, खिसकते हुये जल के पूर से तरङ्गित वालुका वाले तटभाग से पूर्वदिशा को (नृपनल) चला गया।

तत्र च चटुलचञ्चरीककुलाकुलितविविधवीरुधां तलेषु विचरतोऽस्य रसातलविनिर्गताः पन्नगाङ्गना इव नागमदहारिण्यस्तमालकन्दलीकोमलाङ्गयष्टयः श्रोणीभरालसगमनास्त्रिवलीतरङ्गिततनुमध्यलतिकाः, काश्चित्कण्ठकन्दलावलम्बितमातङ्गमौक्तिकलताः स्फुरन्नक्षत्रवलयाः कृष्णपक्षरात्रय इव कृतक्रीडाशरीरपरिग्रहाः, काश्चिदुभयश्रवणावसक्तदन्तिदन्तपत्त्रप्रभाधवलितमुखमण्डलाः सुरसरित्सलिलसंवलितकालिन्दीजलदेवता इव नर्मदयामन्त्रिताः, काश्चित्परिधानीकृतरक्तपल्लवास्तडिल्लतालेखामेखलाश्चलदम्बुवाहपङ्क्तय इव विन्ध्यस्कन्धानुबन्धिन्यः, काश्चिन्मातङ्गमदमण्डलमिलन्मधुकरकरालिताः सकलनीलोत्पलवनलक्ष्म्य इवान्यजलाशयेभ्यो महानदीमवतरन्त्यः काश्चिल्लोहिताशोककुसुमस्तबककृतकर्णावतंसोत्तंसास्त्रिपुरपुरन्ध्र्य इव हरशरानलज्वालाकुलितशिरसो धूमध्यामलाः सलिलमनुसरन्त्यः काश्चिल्ललितलीलामृगैरनुगम्यमानाः शरीरवत्योऽञ्जनशैलस्थलाधिदेवता इव तीर्थावगाहनानुरागिण्यः, काश्चिज्जराजर्जरशबरकञ्चुकिकरावलम्बलीलागामिन्यः स्फुरदिन्द्रनीलशिलापुत्रिका इवेन्द्रजालिकैः सञ्चार्यमाणाः कृष्णाञ्जनिकाकुसुमकान्तयः काश्चिच्चिपिटमासाः कुन्दकान्तदन्तपङ्क्तयो मायूरपिच्छगुच्छावनद्धकर्बुरकबरीकलापाश्चलद्वलयमूखरकरतलोत्तालतालिकारम्भरमणीयरसिकरासकक्रीडानिर्भराः कादम्बमधुपानघूर्णितदृशो दृष्टिपथमवतेरुरपराह्णमज्जनागतास्तरुणकिरातकामिन्यः।

सुधा—तत्रेति। च = तथा। तत्र = तत्स्थाने। चटुलचञ्चरीककुलाकुलितविविधवीरुधाम् चटुलैः = चञ्चलैः चञ्चरीककुलैः = अलिवृन्दैः आकुलिताः परिपूर्णाः विविधाः = विभिन्नाः वीरुधः = वृक्षास्तेषां तलेषु मूले। विचरतः = भ्रमतः। अस्य = नृपस्य। रसातलविनिर्गताः = पाताललोकादायाताः। नागमदहारिण्यः = नागानाम् = गजानाम् मदेन = मदजलेन हारिण्यः = शोभिन्यः। पक्षे नागानाम् = वासुकिप्रभृतीनाम् सर्पाणाम् = अभिमानम् हरन्ति = मुष्णन्तीति ताः। पन्नगाङ्गना इव = सर्पपत्न्यः इव। तमालकन्दलीकोमलाङ्गयष्टयः = तमाल कन्दल्यः इव कोमलाः अङ्गयष्टयः यासां ताः = तमालाङ्कुरमृदुलाङ्गिन्यः। श्रोणीभरालसगमनाः—श्रोणीभरेण अलसं गमनं यासां ताः = श्रोणीभारशिथिलगत्यः = त्रिवलीतरङ्गित तनुमध्यलतिकाः—तनु = क्षीणम् मध्यम् = मध्यभागः कटिः, ताः एव लतिकाः = क्षीणकटिलताः यासां ताः। काश्चित् = काः अपि। कण्ठकन्दलावलम्बितमातङ्गमौक्तिकलताः—कण्ठमेव कन्दलम् = गलाङ्कुरम् तस्मिन्नवलम्बिताः मातङ्गमौक्तिकलताः = गजमुक्तालताः यासां ताः। स्फुरन्नक्षत्रवलयाः—स्फुरन्ति दीप्तिमन्ति नक्षत्राणि = तारकाः एव वलयानि = कङ्कणाभूषणानि यासां ताः। कृष्णपक्षरात्रयः = असितपक्षनिशाकृतक्रीडाशरीरपरिग्रहाः इव — धृतक्रीडाशरीराः इव। काश्चित्—का अपि।

उभयश्रवणावसक्तदन्तिदन्तपत्रप्रभाधवलितमुखमण्डला:—उभयोः श्रवणयोः = युगलकर्णयोः अवसक्तानि = संलग्नानि दन्तीनाम् = करिणाम् दन्तपत्राणि = दन्तभूषणानि, तेषां प्रभा= कान्तिः तया धवलितानि = शुभ्रकृतानि मुखमण्डलानि यासां ताः सुरसरित्सलिलसंवलित कालिन्दीजलदेवताः—सुरसरितः = गङ्गायाः सलिलेन = वारिणा सम्वलिताः परावृताः कालिन्दी जलदेवताः = यमुनाजलदेव्यः। नर्मदाया = नर्मदानद्या। आमन्त्रिता इव = आहूता इव। काश्चित् = काः अपि। परिधानीकृतरक्तपल्लवाः परिधानीकृता = वस्त्रवद्-धारिताः रक्तपल्लवाः = किसलयदलानि याभिस्तथा रक्तपल्लवाः रक्तकराः। तडिल्लता-मेखला:—तडिल्लताः = विद्युल्लताः इव मेखलाः यासां ताः। विन्ध्यस्कन्धानुबन्धिन्यः— विन्ध्यस्य = विन्ध्याचलस्य स्कन्धे=ऊर्ध्वस्थाने अनुबन्धिन्यः=कृतानुबन्धाः। चलदम्बुवाह-पंक्त्यः इव = चलताम्=गच्छताम् अम्बुवाहानाम्=घनानाम् पंक्त्यः=तत्यः इव। काश्चित् = काः अपि। मातङ्गमदमण्डल मिलन्मधुकरकरालिताः—मातङ्गानाम् = गजानाम् मद-मण्डेन = क्षीवपुञ्जेन मिलद्भिः = लगद्भिः मधुकरैः = भ्रमरैः करालिताः = कृष्णीकृताः सकलनीलोत्पलवनलक्ष्म्यः इव = सकलानाम् = निखिलानाम् नीलोत्पलवनानाम् = नील-कमलवनानाम् लक्ष्म्यः = श्रियः इव। अन्यजलाशयेभ्यः = अपरतड़ागेभ्यः महानदीम् = नर्मदानाम्नीं सरिताम्। अवतरन्त्यः अवतरणं कुर्वन्त्यः। काश्चित् = काः अपि। लोहिता-शोककुसुमस्तवककृतकर्णावतंसोत्तंसाः—लोहिताशोककुसुमानाम् = रक्ताशोकपुष्पाणाम् स्तव-कानि = गुच्छाः कृतकर्णावतंसोत्तंसानि = कृतश्रोत्राभरणानि याभिस्ताः। त्रिपुरपुरन्ध्रयः इव=त्रिपुरासुरसुन्दर्यः इव। हरशरासनज्वालाकुलितशिरसः-हरस्य=शिवस्य शरासनम्= धनुः, तस्य ज्वालया = अग्निना आकुलितानि=पोडितानि शिरांसि = उत्तमाङ्गानि यासां ताः। धूमश्यामलाः—धूमेन श्यामीकृताः। सलिलम् = जलम् अवतरन्त्यः = अवगाहनं कुर्वन्त्यः। काश्चित्=काः अपि। ललितलीलामृगैः=सुन्दरक्रीडाहरिणैः। अनुगम्यमानाः= अनुचलन्त्यःशरीरवत्यः=सशरीराः। तीर्थावगाहनानुरागिण्यः—तीर्थस्नानप्रियाः। अञ्जन-स्थलाधिदेवताः इव = कृष्णपर्वताधिष्ठातृदेव्यः इव। काश्चित्। जराजर्जरशवरकञ्चुकि-करावलम्बलीलागामिन्यः—जराजर्जरस्य = अतिवृद्धस्य शवरकञ्चुकिनः = भिल्लकञ्चुकिनः करावलम्बेन = हस्तसाहाय्येन लीलया = कौतुकेन गामिन्यः = गच्छन्त्यः। इन्द्रजालकैः— इन्द्रजालकारिभिः संचार्यमाणाः परिचाल्यमानाः। कृष्णाञ्जनिका कुसुमकान्तयः— कृष्णाञ्जनिका = तापिच्छलता तस्य कुसुमानाम् = पुष्पाणाम् कान्तिरिव क्रान्तिः = दीप्तिः यासां ताः। काश्चित्। चपिटनासाः = चपिटाः नासाः यासां ताः। कुन्दकान्तदन्त-पंक्त्यः—कुन्दमिव कुन्दपुष्पसदृशम् कान्ताः = दीप्ताः दन्तपंक्त्यः = रदपंक्त्यः यासां ताः। मायूरपिच्छगुच्छावनद्धकर्बुरकवरीकलापाः—मयूरस्येदं मायूरं पिच्छम् तस्य गुच्छैः = स्तवकैः अवनद्धाः = पिनद्धाः कर्बुरकवरीकलापाः = कृष्णकचकलापाः यासां ताः। चलद् वलयमुखरकरतलोत्तालतालिकारम्भरमणीयरसिकरासकक्रीडानिर्भराः—चलद्भिः = चञ्चलैः वलयैः = कङ्कणैः मुखराणि = ध्वनितानि यानि करतलानि = हस्ततलानि तेषामुत्ताल-तालिकाभिः = महत्तालिकाभिः अरम्भाः = प्रारब्धाः रमणीयाः = मनोहराः रसिकरास-क्रीडाः = आनन्दरासखेलनानि तासु निर्भराः=व्याप्ताः यास्ताः। कादम्बमधु पानघूर्णित-दृशः—कदम्बस्येदं मधु=कादम्बं मधु, तस्य पानेन घूर्णिताः दृशः = चक्षूंषि यासां

ताः । अपराह्णमज्जनागताः = अपराह्णे = मध्यदिनान्तरे मज्जनाय = स्नानार्थम् आगताः = आयाताः । तरुणकिरातकामिन्यः = युवतिभिल्लनार्यः । दृष्टिपथम् = अक्षिमार्गम् । अवतेरुः = अवातरन् ।

हिन्दी—यहां दोपहर के बाद स्नान करने के लिए तरुण किरातस्त्रियां आई हुई चंचल अलिवृन्द से व्याप्त विविध वृक्षों के तले घूमते हुये इस (राजा नल) को दिखलाई पड़ी । वे रसातल से निकली हुई नागमदहारिणी (हाथियों के मदको लेप करने वाली-सर्पों के मद को हरने वाली पन्नगस्त्रियों के समान थीं । उनके अङ्ग तमाल कन्दली के समान कोमल थे । वे श्रोणी भार के कारण धीरे धीरे चल रहीं थी । उनका पतला मध्यभाग (कटिभाग-कमर) त्रिवली (नाभि पर पड़ी तीन रेखाओं) से तरङ्गित हो रहा था । कोई अपने अङ्कुर सदृश कण्ठ में गजमुक्ताहार पहने हुये थीं अतः चमचमाते हुये नक्षत्रों से युक्त क्रीडाशरीर धारण किये हुये कृष्णपक्ष की रात्रियों के समान लग रही थी । कोई दोनों कानों पर चढ़ाये हुये हाथी दांत के आभूषणों की कान्ति के समान उज्ज्वलमुखमण्डलवाली थी, मानो वे देवनदी गङ्गा के जल से घिरी कालिन्दी (यमुना) नदी की जलदेवियाँ नर्मदा नदी के बुलाने पर आई हों । कोई रक्तपल्लवों तथा विद्युल्लता के समान करधनी पहने हुये थी, अतः विन्ध्याचल की चोटियों से सम्बन्ध रखनेवाली चञ्चल मेघपंक्ति सदृश लग रही थीं । कोई हाथियों के मदपुञ्ज से लिप्त भ्रमरों द्वारा काली बना दी गई थी अतः अन्य जलाशयों से महानदी (नर्मदा) में उतरती हुई समस्त नीलकमल वन की लक्ष्मी जैसी मालूम पड़ती थीं । कोई रक्ताशोकपुष्पों के गुच्छों द्वारा बनाये गये कर्णाभूषणों को कानों पर चढ़ाये थीं अतः शिवजी के बाणरूपी अग्निज्वाला से आकुलित पानी में उतरती हुई धुयें से श्यामल बनी त्रिपुरासुर की स्त्रियां जैसी लग रही थी । कोई सुन्दर क्रीड़ामृगों को साथ में लिये तीर्थस्नान में अनुराग रखनेवाली कृष्ण पर्वत पर रहनेवाली सशरीरा देवियां लग रहीं थी । कोई अत्यन्त बूढ़े शबर कञ्चुकी के हाथ पकड़ क्रीड़ागमन (टहलना) करती हुई जादूगरों द्वारा चलाई जाती हुई (नचाई जाती) इन्द्रनीलमणि से बनी पुतलियों के समान कृष्णाञ्जन पुष्प के समान कान्ति वाली मालूम पड़ती थीं । कोई चिपटी नाकवाली थीं जिनकी दन्तपंक्तियां कुन्दकली जैसी उज्ज्वल थी । वे मयूरपिच्छ (मोरपंख) के गुच्छों से केश कलाप को श्यामल बनाये थीं । चञ्चल वलयों (कङ्कणों) से ध्वनित हथेलियों द्वारा जोर-जोर से तालियां बजाती हुई रमणीक रसिक रासक्रीड़ा कर रही थीं । कदम्बरस पान किये होने के कारण उनकी आंखें चढ़ी हुई थीं ।

ततश्च ताः सूक्ष्ममुक्ताफलधवलवालुकापुलिनपृष्ठे लब्धपदभागाः स्वैरं स्वैरमनुच्चचरणचलनक्रमात्क्रेंकारितनूपुररवाकृष्टकलहंसकुलमनाकुलकलगीततरङ्गासन्नरङ्गितकुरङ्गमनङ्गभावभूयिष्ठमनुभय तीरविहारसुखम्, अनन्तरमक्रूरजलचरमवेगवहत्सलिलमुत्फुल्लविविधविकसिताम्बुजजातिजीवितजीवंजीवकमुत्कूजितकुररमारसितसारसमुन्मदहासिहंसावतंसमुरःप्रमाणाच्छोदकमतिरमणीयं ह्रदमवातरन् ।

सुधा—ततश्चेति । ततश्च = तत्पश्चाच्च । ताः = तरुणकिरातस्त्रियः । सूक्ष्ममुक्ताफलधवलवालुकापुलिनपृष्ठे—सूक्ष्ममुक्ताफलैः = मुक्ताफलचूर्णैः धवले = शुभ्रे वालुकापुलिनपृष्ठे = सैकततटे । लब्धपदभागाः = धृतचरणाः । स्वैरं स्वैरम् = स्वच्छन्दं स्वच्छन्दम् । अनुच्चचरणचलनक्रमात् = अल्पपदगमनक्रमात् । क्रेङ्कारितनूपुरवाकृष्टकलहंसकुलम्—क्रेङ्कारितेन = क्रेङ्कारध्वनियुक्तेन नूपुररवेण = नूपुरशब्देनाकृष्टम् कलहंसकुलम् = हंसपक्षिवृन्दम् येन तत् । अनाकुलकलगीततरङ्गासन्नरङ्गितकुरङ्गम्—अनाकुलानाम् = धैर्ययुतानाम् कलगीतानाम् = मधुरगायनानाम् तरङ्गैः = लहरीभिः आसन्नाः = निकटायाताः रङ्गिताः = अनुरागयुताः मृगाः = हरिणाः यत्र तत् । अनङ्गभावभूयिष्ठम्—कामभावसम्पन्नम् । तीर-विहार-सुखम् = तटभ्रमणानन्दम् । अनुभूय = अनुभवं कृत्वा । अनन्तरम् = पश्चात् । अक्रूरजलचरम् = दुष्टजलजीवरहितम् । अवेगवहत्सलिलम् = वेगहीनप्रवहज्जलम् । उत्फुल्लविविधविकसिताम्बुजजातिजीवितजीवंजीवकम्—उत्फुल्लैः = विकसितैः विविधैः = विभिन्नैः विकसिताम्बुजजातिभिः = विकचकमलैः जातिभिः एव जीविताः = सजीवाः जीवंजीवकाः = पक्षिविशेषाः यत्र तत् । उत्कूजितकुररम् = कूजितकुररखगम् । आरसितसारसम्—आरसिताः = आनन्दिताः सारसाः = सारसपक्षिणः यत्र तत् । अमन्दहासिहंसावतंसम्—अमन्दहासिनः = पूर्णहासयुक्ताः हंसाः = हंसपक्षिणः एव अवतंसम् = विभूषणम् यत्र तत् । उरः प्रमाणाच्छोदकम् = वक्षोऽन्तजलम् यस्मिन्, तत् । अतिरमणीयम् = सुन्दरतमम् ह्रदम् = सरोवरम् । अवातरन् = अवतरिताः अभवन् ।

हिन्दी—तदन्तर वे मुक्ता चूर्ण जैसी शुभ्र बालू वाले तट पर पांव रखकर स्वच्छन्दता से कम (थोड़ा) उठा उठाकर पांव रखने के कारण बिछुओं को मधुर ध्वनि से कलहंस वृन्द को आकृष्ट किये हुये, धीरज के साथ मधुर गीतों की तरङ्गों से मृगों को तरङ्गित करते हुये अत्यधिक कामभाव का अनुभव कर, तत्पश्चात् तट पर विहार करने के सुख से युक्त, क्रूरताहीन जलपक्षियों आदि वाले, वेगहीन जलप्रवाह वाले उत्फुल्ल विविध विकसित कमल जाति पर ही जीवित रहने वाले जीवंजीव नाम के पक्षिविशेष से युक्त, कुरर पक्षियों से कूजित, सारस पक्षियों की मधुर ध्वनि वाले, पूर्ण प्रसन्न हंस ही जिसका आभूषण बने हुये थे, ऐसे छाती पर्यन्त जल वाले अति रमणीय तालाब पर उतर गयीं ।

अवतीर्य च ताः काश्चित्पन्नगपतिपुरन्ध्र्य इवोद्गीर्णविषगण्डूषाः, काश्चिद्राक्षसप्रमदा इव रक्तोत्पलाकृष्टिव्यसनिन्यः, काश्चिद्गोपालाङ्गना इव गृहीतपुण्डरीकाक्षाः, काश्चित्कार्तिकेयशरपङ्क्तय इव विश्लेषितक्रौञ्चाः, काश्चित्कुरुसेना इव धार्तराष्ट्रशकुनिमार्गणानुधावमानाः, काश्चिद्रात्रय इव विघटितचक्रवाकमिथुनाः, काश्चिच्चकोराङ्गना इव चञ्चूकृतदीर्घकमलनालैः शशधरकरनिर्मलजलमास्वादयन्त्यः, काश्चित्करिण्य इव सरसबिसाग्राणि ग्रसमानाः काश्चिज्जलयन्त्रपुत्रिका इव संपुटितमुखपाणिपल्लवयुगलाग्ररन्ध्रोन्मुक्तसूक्ष्मवारिधाराः, काश्चिद्गौरीरुनार्यं इव प्रियवारितरणाः स्तनगण्डशैलशिखरास्फालनोल्ललत्तरङ्गान्तरतरत्तरुणतामरसरसमधुरिमाविलसत्सरसताश्चिरं चिक्रीडुः ।

सुधा—अवतीर्येति । अवतीर्य = ह्रदावतरणं कृत्वा च । ताः = एताः । काश्चित् = काः अपि । पन्नगपतिपुरन्ध्रयः = नागराजपत्न्यः । उद्गीर्णविषगण्डूषा इव = उद्गीर्णम् = वमनकृतम् विषस्य = गरलस्य जलस्य वा गण्डूषम् याभिस्ताः तथा । काश्चित् राक्षसप्रमदाः = राक्षसतरुण्यः । रक्तोत्पलाकृष्टिव्यसनिन्यः इव—रक्तेनोत्कृष्टं पलम् = मांसम्, रक्ताब्जम् वा तस्य आकृष्टेः=त्रोटनस्य व्यसनम् यासां ताः यथा । काश्चित् गोपालाङ्गनाः= गोरक्षकस्त्रियः । गृहीतपुण्डरीकाक्षाः = इव गृहीतपुण्डरीके = अवलोकितसिताम्बुजे अक्षिणी यासाम् ताः यथा । काश्चित् । कार्तिकेयशरपंक्तयः—कार्तिकेयस्य = षाण्मुखस्य शराणाम् = वाणानाम् पंक्तयः यथा । विश्लेषितक्रौञ्चाः—विश्लेषिताः = छिन्नः क्रौञ्चः = क्रौञ्चनामपर्वतः, क्रौञ्चपक्षी च याभिस्ताः । कुरुसेनाः = कौरवचम्वः, इव यथा । धार्तराष्ट्रशकुनिमार्गेण = धृतराष्ट्रः = दुर्योधनस्य पिता, शकुनिः = दुर्योधनमातुलः पक्षे धृतराष्ट्रः = हंसः, शकुनिः = पक्षी च तेषां मार्गम् = वर्त्म, तेन । अनुधावमानाः = अनुपश्चात् धावमानाः = धावनं कुर्वाणाः । विघटितचक्रवाकमिथुनाः = चक्रवाकयुगलवियुक्ताः रात्रयः इव = निशाः यथा । काश्चित् चकोराङ्गनाः = चकोरस्त्रियः इव = यथा । चञ्चूकृतदीर्घकमलनालैः—अचञ्चूनि चञ्चूनि कृतानि चञ्चूकृतानि दीर्घकमलनालानिलम्बनलिननालानि, तैः शशधरकरनिर्मलजलम्—शशधरस्य = चन्द्रस्य करम् इव किरणसमम् निर्मलम् = स्वच्छम् जलम् = नीरम् । आस्वादयन्त्यः = आस्वादनं कुर्वन्त्यः । चकोर्यः हि चन्द्रकिरणान् पिबन्ति । काश्चित् । सरसविसाग्राणि-रसयुक्तविसतन्त्वग्रभागान् । ग्रासमानाः । करिण्यः इव = हस्तिन्यः समाः । काश्चित् । जलयन्त्रपुत्रिका इव—वारिस्थित 'फव्वारा' नाम यन्त्रपुत्रिका समाः । सम्पुटितमुखपाणिपल्लवयुगलाग्ररन्ध्रोन्मुक्तसूक्ष्मवारिधाराः—सम्पुटितम् यन्मुखे = आनने पाणिपल्लवयुगलाग्रम् = करपल्लव युग्माग्रभागम्, तस्य रन्ध्रैः = छिद्रैः उन्मुक्ताः = त्यक्ताः सूक्ष्मवारिधाराः = तनुजलधाराः याभिस्ताः । काश्चित् । प्रियवारितरणाः—प्रियम् = रुचिकरम् वारितरणम् = जलावगाहनम् यासां ताः । भीरुनार्यः = कातरस्त्रियः इव अथवा प्रियात् = स्वामिनः वारिताः = पृथक्कृताः रणात् = युद्धात् याभ्यस्ताहृश्यः कातरनार्य इव । स्तनगण्डशैलशिखरास्फालनोल्ललत्तरङ्गान्तरतररक्तरुणतामरससुरभिसलिलम्—स्तनगण्डशैलशिखरैः = पयोधरशिलाशिखरेभ्यः आस्फालनेनोल्ललन्तः = उल्लसन्तः, ये तरङ्गाः = वीचयः, तेषामन्तरे = तन्मध्ये तरताम् अरुणतामरसानाम् = रक्तकमलानाम् रससुरभिः = मधुगन्धिः, तदयुक्तं सलिलम् जलम् । अवगाहमानाः = विगाहन्त्यः । चिरम् = बहुकालम् चिक्रीडुः = क्रीडयामासुः ।

हिन्दी—सरोवर में घुसकर कुछ तो सर्पराज को पत्नियों के समान वे विष के कुल्ले कर रही थीं, कुछ राक्षस स्त्रियों के समान रक्तोत्पला कृष्टिव्यसनिनी (रुधिर पूर्वमांस को खींचने की आदत वाली) (लाल कमलों को खींचकर तोड़ रही थीं । कुछ गृहीत पुण्डरीकाक्ष (कृष्ण को पकड़े हुये गोपियों के समान कमल सदृश सुन्दर नयनों वाली थीं कुछ स्वामिकार्तिकेय के वाणों की पंक्तियों से क्रौञ्चपर्वत को काटकर अलग करने के समान ही क्रौंचपक्षियों को अलग हटा रहीं थीं । कुछ दुर्योधन शकुनि के पीछे

भागती हुई कुरु सेनाओं के समान हंसपक्षियों के पीछे-पीछे भाग रहीं थीं कुछ चकई चकवों को अलग करने वाली रातों के समान अत्यन्त काली थीं कुछ चकोर स्त्रियों के समान चोंचों से लम्बे कमल नालों से चन्द्रमा की किरणों रूपी निर्मल जल की भांति ही निर्मल जल का आस्वादन कर रहीं थी। कुछ जिस प्रकार हथिनियाँ सरस बिस-तन्तुओं को खाती हैं उसी प्रकार सरस बिसतन्तु खाती हुई जलयन्त्रपुत्रिका (जलमें पुतली के आकार में बने फव्वारे) जैसी मुखों पर सम्पुटित कर दलों के अग्रभाग में छिद्रों से महीन जलधारायें निकाल रही थीं। कुछ अपने पतियों को युद्ध में जाने से मना करने वाली भीरु स्त्रियों के समान जल में तैरने का आनन्द ले रहीं थी। पयोधर शिला शिखरों से टकराने से उछलती हुई तरङ्गों के मध्य हिलते हुये अरुण कमलरस को गन्ध से सुगन्धित जल में अवगाहन करती हुई वे बहुत देर तक क्रीड़ा करती रहीं।

अवनिपतिरपि विस्मयविस्मृतनिमेषोन्मेषनयनस्ताश्चिरमवलोक्य चिन्तयाञ्चकार।

सुधा--अवनीति। अवनिपतिः = नृपः नलः अपि। विस्मयविस्मृतनिमेषोन्मेषनयनः-विस्मयेन विस्मृतं निमेषोन्मेषं नयनाभ्यां यस्य तथा = आश्चर्यविस्मृतक्षणोन्मेषचक्षुः। चिरम् = बहुकालम्। अवलोक्य = दृष्ट्वा चिन्तयाञ्चकार = विचारयामास।

हिन्दी—आश्चर्य से थोड़ी देर के लिये अपलक नयनों से राजा भी सोचने लगे।

जातिर्यत्र न तत्र रूपरचना नेत्रोत्सवारम्भिणी
रूपश्रीरपि यत्र तत्र सुलभः श्लाघ्यो न जन्मोदयः।
इत्येकस्थसमस्तसुन्दरगुणप्रद्वेषमभ्यस्यतो
धातस्तात वृथाश्रमस्य भवतः सृष्टिक्रमो दह्यताम् ॥ ५७ ॥

अन्वयः—यत्र जातिः तत्र नेत्रोत्सवारम्भिणी रूपरचना न, यत्र रूपश्रीः अपि तत्र श्लाघ्यः जन्मोदयः सुलभः न हे तातधातः एकस्थसमस्तसुन्दरगुणप्रद्वेषम् अभ्यस्यतः वृथाश्रमस्य भवतः सृष्टिक्रमः दह्यताम् ॥ ५७ ॥

सुधा—यत्रेति। यत्र = यस्मिन्। जातिः = शोभनजातिः अस्ति तत्र = तस्मिन् नेत्रोत्सवारम्भिणी = नयनानन्दकारिणी। रूपरचना = सौन्दर्यनिर्माणम् नास्ति। यत्र = यस्मिन् रूपश्रीः = सुरूपत्वम् अपि अस्ति। तत्र। श्लाघ्यः प्रशंसनीयः। जन्मोदयः = अन्वयः। सुलभः = सुप्राप्यः न भवति। हे तात धातः = अयि तातब्रह्मन्! एकस्थसमस्त सुन्दरगुणप्रद्वेषम्—एकस्थम् = एकत्र समस्ताः निखिलाः सुन्दरगुणाः = सुगुणास्तेषु प्रद्वेषम् प्रकर्षेण विरोधम्। अभ्यस्यतः = अभ्यासं कुर्वतः। वृथाश्रमस्य = वृथा = व्यर्थं श्रमः = आयासः यस्य, तस्य। भवतः = श्रीमतः। सृष्टिक्रमः = सृजनकार्यस्य क्रमः। दह्यताम् = दग्धो भवतु। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ५७ ॥

हिन्दी—जहाँ जाति है वहाँ नयनानन्दकारिणी रूपरचना नहीं, और जहाँ रूपश्री भी है वहां प्रशंसनीय वंश नहीं। हे तात ब्रह्मन्! एक ही जगह 'समस्त सुन्दर गुण रहें' इससे द्वेष का अभ्यास करनेवाले एवं व्यर्थ परिश्रम करनेवाले आप की सृष्टि के क्रम में आग लग जाये ॥ ५७ ॥

तथाहि—

ग्रीवालम्बितपद्मनाललतिकाः कर्णावतंसीकृत-
प्रत्यग्रोन्मिषतासितोत्पलदलैः संदिग्धनेत्रद्वयाः ।
कस्यैता जलदेवता इव कुचप्राग्भारभुग्नोर्मयः
स्नानासक्तपुलिन्दराजवनिताः कुर्वन्ति नोत्कं मनः ॥ ५८ ॥

अन्वयः—ग्रीवालम्बितपद्मनाललतिकाः कर्णावतंसीकृतप्रत्यग्रोन्मिषतासितोत्पलदलैः सन्दिग्धनेत्रद्वयाः कुचप्राग्भारभुग्नोर्मयः स्नानासक्तपुलिन्दराजवनिता एताः जलदेवताः इव कस्य मनः उत्कम् न कुर्वन्ति ॥ ५८ ॥

सुधा—ग्रीवेति । ग्रीवालम्बितपद्मनाललतिकाः—ग्रीवासु = गलदेशेषु लम्बिताः लम्बमानाः पद्मानाम् = कमलानाम् नाललतिकाः = नालदण्डरूपलतिकाः यासां ताः । कर्णावतंसीकृतप्रत्यग्रोन्मिषतासितोत्पलदलैः—कर्णावतंसीकृतैः श्रोत्राभूषणकृतैः प्रत्यग्रैः = सद्यः त्रोटितैः उन्मिषतैः = विकसितैः असितैः=नीलैः उत्पलदलैः = कमलपत्रैः । सन्दिग्ध-नेत्रद्वयाः—नेत्रयोः द्वयोः समाहारः इति नेत्रद्वयम्, सन्दिग्ध-नेत्रद्वयम् यासां ताः = सन्देहयुक्तद्विनयनाः । कुचप्राग्भागभुग्नोर्मयः—कुचयोः = पयोधरयोः, प्राग्भागेन = अग्र-भागेन भुग्नाः = चूर्णिताः = ऊर्मयः = वीचयः यासां ताः । एताः = इमाः । स्नानासक्त-पुलिन्दराजवनिताः = स्नाने = मज्जनकार्ये आसक्ताः = अनुरक्ताः पुलिन्दराजवनिताः = किरातराजपत्न्यः । कस्य = कस्य जनस्य । मनः=चेतः । उत्कम्=उत्कण्ठितम् । कुर्वन्ति= न विदधन्ति । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ५८ ॥

हिन्दी—क्योंकि—गले में कमलनाल की मालायें पहने नूतन विकसित नीलकमल दल के कर्णभूषण बनाये जो कि दोनों के समान प्रतीत हो रहे हैं, कुचों के अग्रभाग से लहरों को तोड़ने वाली, स्नान में व्यस्त यह किरातराजपत्नियां किसके मन को उत्कण्ठित नहीं कर देती हैं ॥ ५८ ॥

अपि च—

एतस्याः करिकुम्भसंनिभकुचप्राग्भारपृष्ठे लुठद्-
गुञ्जागर्भगजेन्द्रमौक्तिकसरश्रेणीमनोहारिणि ।
दूरादेत्य तरङ्ग एष पतितो वेगाद्विलीनः कथं
को वान्योऽपि विलीयते न सरसः सीमन्तिनीसङ्गमे ॥ ५९ ॥

अन्वयः—एतस्याः लुठद् गुञ्जागर्भगजेन्द्रमौक्तिकसरश्रेणीमनोहारिणि करिकुम्भसन्निभ कुचप्राग्भारपृष्ठे दूरात् एत्य पतितः वेगात् एषः तरङ्गः कथम् । विलीनः । अन्यः अपि सरसः कः सीमन्तिनीसङ्गमे न विलीयते ॥ ५९ ॥

सुधा—एतस्याः इति । एतस्याः = अस्याः । लुठद्गुञ्जागर्भगजेन्द्रमौक्तिकसरश्रेणी मनोहारिणि—लुठद्भिः गुञ्जागर्भैः = गुञ्जाग्रथितैः गजेन्द्रमौक्तिकसरश्रेणीभिः गजमुक्ता-मालपंक्तिभिर्यन्मनोहारि, तस्मिन् । करिकुम्भसन्निभकुचप्राग्भारपृष्ठे—करिकुम्भसन्निभे = गजकुम्भसदृशे कुचप्राग्भारपृष्ठे = कुचाग्रभारयुक्ते पृष्ठदेशे दूरात् = दूरस्थानात् । एत्य = आगत्य । पतितः = अधोगतः वेगात् = द्रुतगत्या । एषः = अयम् । तरङ्गः = वीचिः ।

कथम् = कीदृक् । विलीनः = अन्तर्लीनः जातः । अन्यः = अपरः । अपि । सरसः = रसिकः, कः = जनः सीमन्तिनीसङ्गमे = नारीसङ्गमे । न विलीयते = विलीनो न भवति । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ।। ५९ ।।

हिन्दी—इसके बीच-बीच में गुञ्जा से युक्त गज मुक्ताओं की माला की लड़ियों के कारण मनोहर, गजकुम्भसदृश उन्नत पयोधरों के अग्रभाग में दूर से आकर गिरा हुआ यह तीव्र प्रवाह कैसा विलीन हो गया । अन्य भी कौन ऐसा सरस व्यक्ति है जो सभी संगम की दशा में विलीन नहीं हो जाता है ।। ५९ ।।

इयं तु—

निजप्रियमुखभ्रान्त्या हर्षेणाचुम्बदम्बुजम् ।
दष्टाधरा तु भृङ्गेण सीत्कारमकरोन्मृदु ।। ६० ।।

अन्वयः—निजप्रियमुखभ्रान्त्या हर्षेण अम्बुजम् अचुम्बद् । भृङ्गेण दष्टाधरा तु मृदु सीत्कारम् अकरोत् ।। ६० ।।

सुधा—निजप्रियेति । निजप्रियमुखभ्रान्त्या—निजस्य = स्वस्य प्रियस्य रुचिकरस्य, प्रियतमस्य मुखस्य = वनस्य भ्रान्तिः = भ्रमस्तया । हर्षेण = मोदेन । अम्बुजम् = कमलम् अचुम्बत् = चुचुम्ब । भृङ्गेण = अलिना । दष्टाधरा = दष्टे = खादिते अधरे = ओष्ठे यस्याः सा । तु मृदु = कोमलम् । सीत्कारम् = 'सी–सी' इति शब्दम् । अकरोत् = चकार ।। ६० ।।

हिन्दी—अपने प्रिय के मुख के भ्रम से इसने ही प्रसन्नता से कमल को चूम लिया । कमल के अन्दर बैठे भौरें ने उसके दोनों ओठों काट खाया (जिससे) वह कोमलता से सी-सी करने लगी ।। ६० ।।

अनयापि—

अविरतमिदमम्भः स्वेच्छयोच्छालयन्त्या
विकचकमलकान्तोत्तानहस्तद्वयेन ।
परिकलित इवार्घः कामबाणातिथिभ्यः
सलिलमिव वितीर्णं बाल्यलीलासुखाय ।। ६१ ।।

अन्वयः—विकचकमलकान्तोत्तानहस्तद्वयेन स्वेच्छया अविरतम् इदम् अम्भः उच्छालयन्त्या (अनया अपि) कामबाणातिथिभ्यः अर्घः इव परिकलितः बाल्यलीला सुखाय सलिलम् इव वितीर्णम् ।। ६१ ।।

सुधा—अविरतमिति । विकचकमलकान्तोत्तानहस्तद्वयेन—विकचम् कमलं विकचकमलम् विकसितपद्मम्, तस्य कान्तिरिव कान्तिर्यस्य तत् तथा उत्तानम् = ऊर्ध्वंप्रसारितम् यद् हस्तद्वयम् = करयुगलम्, तेन । स्वेच्छया = स्वच्छन्देन । अविरतम् = अनवरतम् । इदम् = एतत् । अम्भः = जलम् । उच्छालयन्त्या = ऊर्ध्वं प्रक्षिपन्त्या अनया = एतया अपि । कामबाणातिथिभ्यः = कामबाणानाम् = मदनशराणाम् अतिथयस्तेभ्यः । अर्घः = सपर्या इव परिकलितः = आकलितः । बाल्यलीलासुखाय = बाल्यक्रीडानन्दाय । सलिलम् इव = तिलांजलिः इव । वितीर्णम् = विकीर्णम् । अनेकोत्प्रेक्षालङ्कारः ।। ६१ ।।

हिन्दी—विकसित कमल की कान्ति के समान कान्तिवाले अपने दोनों हाथों को ऊपर फैलाकर स्वेच्छया निरन्तर इस जल को उछालती हुई वह भी मदन के बाण के मानों अतिथियों (कामियों) के लिए अर्घ दे रही थी (तथा) शैशव सुलभ सुख के लिए मानो तिलाञ्जलि दे रही थी ॥ ६१ ॥

अस्याश्च—

> कर्णमूलविषये मृदु गुञ्जन्पाणिपल्लवहतोऽपि हठेन।
> एष षट्पदयुवा हरिणाक्ष्याश्चुम्बति प्रिय इवास्य सरोजम् ॥ ६२ ॥

अन्वयः—पाणिपल्लवहतः एष षट्पद युवा अपि प्रियः इव कर्णमूलविषये मृदु गुञ्जन् हठेन हरिणाक्ष्याः आस्यसरोजम् चुम्बति ॥ ६२ ॥

सुधा—कर्णमूलेति। पाणिपल्लवहतः = करकञ्जताडितः। एषः = अयम्। षट्पद युवातरुणभ्रमरः अपि। प्रिय इव = प्रियतमसमः। (अस्याः) कर्णमूलविषये = श्रोत्र-रन्ध्रपार्श्वे। मृदु = मधुरम्। गुञ्जन् = गुञ्जारवं कुर्वन्। हठेन = बलेन। हरिणाक्ष्याः = मृगाक्ष्याः। आस्यसरोजम् = मुखकमलम्। चुम्बति = चुम्बनं करोति ॥ ६२ ॥

हिन्दी—कर कमल से ताडित तरुण भ्रमर भी प्रिय के समान इसके कान के समीप गुञ्जार करता हुआ हठ करके इस मृगनयनी के मुख कमल को चूम रहा है ॥ ६२ ॥

इतोप्येषा—

> भ्रमकरं मकरं मकरन्दिनीं कमलिनीमलिनीमलीनीकृताम्।
> तरलयन्तमवेक्ष्य महाभयादुदतरत्सरितस्त्वरितैः पदैः ॥ ६३ ॥

अन्वयः—मकरन्दिनीम् अलिनीमलिनीकृताम् कमलिनीम् तरलयन्तम् भ्रमकरं मकरम् अवेक्ष्य महाभयात् त्वरितैः पदैः उदतरत् ॥ ६३ ॥

सुधा—भ्रमकरमिती। मकरन्दिनीम् = मकरन्दम् = मधुरसम् अस्त्यस्यामिति = मधुरसयुताम्। अलिनीमलिनीकृताम्—अलिनीभिः = मधुकरीभिः मलिनीकृताम्=अस्वच्छ-कृताम् कमलिनीम् = नलिनीम्। तरलयन्तम् = क्षिपन्तम्। भ्रमकरम् = भ्रान्तिकारकम् आवर्तकरं वा। मकरम् = यादो विशेषम्। अवेक्ष्य = अवलोक्य महाभयात्=अतिभयात्। त्वरितैः पदैः = द्रुतचरणैः। एषा = इयम् शबरसुन्दरी। सरितः = नद्याः। उदतरत्— उत्तीर्णा जाताः। यमकालङ्कारः। द्रुतविलम्बितं वृत्तम् ॥ ६३ ॥

हिन्दी—इधर—मधुरसयुक्त, भ्रमरियों के द्वारा मलिन बनाई गई कमलिनी को तरलित करते हुये, आवर्त उत्पन्न करते हुये मकर को देखकर यह शबरसुन्दरी अत्यन्त भय से तेज कदमों से नदी बाहर निकल गई।

एताश्च—

> मन्दायते दिनमिदं मदनोऽपि सज्ज-
> स्तत्किं न गच्छत गृहानिति पद्मिनीभिः।
> मीलत्सरोजगतभृङ्गरुतैरिवोक्ताः
> स्नात्वा शनैरनुरसन्ति तटं तरुण्यः ॥ ६४ ॥

अन्वयः—'इदम् दिनम् मन्दायते, मदनः अपि सज्जः, तत् गृहान् किम् नगच्छत्' इति मीलत्सरोजगतभृङ्गरुतैः पद्मिनीभिः उक्ता तरुण्यः स्नात्वा शनैः तटम् अनुसरन्ति ॥ ६४ ॥

सुधा—मन्दायत इति । इदम् = एतत् । दिनम् = दिवसम् । मन्दायते = क्षीणायते । मदनः = कामः अपि सज्जः = सज्जितो भवन्नास्ते । तत् = अतः । गृहान् = भवनानि किम् न गच्छत = किमर्थं न प्रयात । इति = एवम् । मीलत्सरोजगतभृङ्गः रुतैः=मीलत्सु सरोजेषु = मुकुलितपद्मेषु गताः = याताः भृङ्गाः = भ्रमरास्तेषां रुतम् गुञ्जनम् तैः । पद्मिनीभिः = कमलिनीभिः । उक्ताः = कथिताः इव तरुण्यः = युवत्यः । स्नात्वा = स्नानं कृत्वा । शनैः = मन्दम् । तटम् = कूलम् । अनुसरन्ति अनुसरणं कुर्वन्ति । उत्प्रेक्षालङ्कारः । वसन्ततिलकावृत्तम् ॥ ६४ ॥

हिन्दी—"यह दिन ढल रहा है, कामदेव ने भी अपनी तैयारी कर ली है, अतः तुम लोग घर क्यों नहीं जा रहीं है ।" इस प्रकार मुकुलित कमलों में गुनगुनाते भौरों के शब्दों से युक्त कमलिनियों द्वारा मानों कहे जाने पर शबरयुवतियाँ स्नान कर धीरे-धीरे तट की ओर आ रही हैं ॥ ६४ ॥

एवमनेकविधविलासासक्तशबरसुंदरीदर्शनाह्लादपुलकिते विविधवितर्ककारिणि पङ्कनिमग्नजरत्करेणुकायमाननिःस्पन्ददृशि तत्कालमुत्पन्नया मनाङ्मन्मथव्यथया धीरतया च स्पृहया च विचिकित्सया च जिघृक्षया च जिहासया च समकालमाकुलिते हृदये संकीर्णभावभाजि राजनि, राजीववनविराजिते तस्मिन्नर्मदाह्रदे सलिलक्रीडासुखमतिचिरमनुभूय तीरभुवि सेव्यसितसैकतस्थलीमलंकुर्वाणासु च तासु शबरराजसुन्दरीषु श्रुतशीलश्चिन्तितवान्—

सुधा—एवमिति । एवम् = इत्थम् । अनेकविधविलासासक्तशबरसुन्दरीदर्शनाह्लाद पुलकिते—अनेकविधैः = बहुप्रकारैः विलासैः = आनन्दैः आसक्ताः = अनुरक्ताः याः शबरसुन्दर्यः = शबरनार्यस्तासां दर्शनेन = अवलोकनेनाह्लादेन पुलकितः = रोमाञ्चयुक्तः, तादृशि । विविधवितर्ककारिणि = विभिन्नशङ्काकारिणि । पङ्कनिमग्नजरत् करेणुकायमाननिःस्पन्ददृशि—पङ्के = कर्दमे निमग्ना जरत्करेणुकायमाना = जठरहस्ती इव निःस्पन्दे = निर्निमीलिते दृशे = चक्षुषी यस्य तस्मिन् । तत्कालम् = तत्क्षणम् उत्पन्नया = जातया । मनाक् = किञ्चित् । मन्मथव्यथया = कामपीडया । धीरतया = धैर्येण च । स्पृहया = इच्छया च । विचिकित्सया = संशयेन च । जिघृक्षया–गृहीतुमिच्छया च । जिहासया = हातुं—त्यक्तुमिच्छया च । समकालम् = युगपदेव । आकुलिते = व्यथिते । हृदये=चेतसि । सङ्कीर्णभाजि = सङ्कीर्णभावयुक्ते। राजनि = नृपे । राजीवधनविराजिते = राजीववनेन = कमलकाननेन विराजिते = शोभिते । तस्मिन् = एतस्मिन् नर्मदाह्रदे = नर्मदासरोवरे । सलिलक्रीडासुखम् = जलावगाहनानन्दम् । अतिचिरम् = बहुकालम् । अनुभूय = अनुभवं कृत्वा । तीरभुवि = तटभूमौ । सेव्यसितसैकतस्थलीम् सेवनीयवालुकामयीभूमिम् । अलङ्कुर्वाणासु = शोभितकुर्वाणासु । तासु=एतासु । शबरराजसुन्दरीषु=भिल्लस्त्रीषु । श्रुतशीलः= श्रुतशीलाभिधः । चिन्तितवान् = विचारयामास ।

हिन्दी—इस प्रकार विभिन्नविलासों में लगी हुई शबर सुन्दरियों को देखने से उसे आनन्दपुलक हो गया। अनेक प्रकार के तर्कवितर्क मन में उठने लगे। कीचड़ में फंसी बूढी हथिनी के समान आँखे निर्निमेष रह गईं। तत्क्षण उत्पन्न हुई थोड़ी काम पीड़ा धीरज चाह आकर्षण ग्रहण करने की कामना एवं त्याग से एक साथ आकुलित हृदय में विभिन्न भावों से युक्त राजा के हो जाने पर कमल वन से शोभित उस नर्मदा सरोवर में जलक्रीडा का बहुत समय तक सुखानुभव कर शबरराज सुन्दरियाँ सुन्दर शुभ्र वालुकामयी समीप वाली भूमि पर आकर उसे शोभित करने लगीं। तब श्रुतशील सोचने लगा।

'उन्मादि यौवनमिदं शबराङ्गनानां
देवोऽप्ययं नववयाः कमनीयकान्तिः।
रेवातटं चलचकोरमयूरहारि
किं स्यान्न वेद्मि जयिनी च मनोभवाज्ञा ॥ ६५ ॥

अन्वयः—शबराङ्गनानाम् इदम् उन्मादि यौवनम्, अयम् देवः अपि नववयाः कमनीय कान्तिः रेवातटम् चलचकोरमयूरहारि च मनोभवाज्ञा जयिनी। किम् स्यात्, न वेद्मि ॥ ६५ ॥

सुधा—उन्मादीति। शबराङ्गनानाम् = शबरसुन्दरीणाम्। इदम् = एतत्। उन्मादि= उन्मादकम् यौवनम् = तारुण्यम्। अयम् = एषः। देवः = नृपः अपि। नववयाः = नवं = नूतनम् वयः = आयुर्यस्य सः। कमनीयकान्तिः—कमनीया = रमणीया कान्तिः = दीप्तिर्यस्य सः। रेवातटम् = नर्मदाकूलम्। चलच्चकोरमयूरहारि—चलैः = चपलैः चकोरैः = चकोरपक्षिभिः मयूरैः = केकीभिश्च हारि = हारकम्। च = तथा। मनोभवाज्ञा = मदनादेशः जयिनी = विजयशीलः अस्ति। किम् स्यात्=किं भवेत्! इति न वेद्मि = न जानामि वसन्ततिलकावृत्तम् ॥ ६५ ॥

हिन्दी—शबर सुन्दरियों का यह उन्मादी यौवन है। यह राजा भी नव अवस्था एवं कमनीय कान्ति वाला है। रेवातट चञ्चल चकोरों एवं मयूरों से मनोहर तथा काम देव की आज्ञा विजयिनी है। क्या होगा, यह समक्ष में नहीं आ रहा है ॥ ६५ ॥

तथाहि—

विकलयति कलाकुशलं, हसति शुचिं, पण्डितं विडम्बयति।
अधरयति धीरपुरुषं, क्षणेन मकरध्वजो देवः ॥ ६६ ॥

अन्वयः—मकरध्वजः देवः क्षणेन कलाकुशलम् विकलयति, शुचिम् हसति, पण्डितम् विडम्बयति, धीरपुरुषम् अधीरयति ॥ ६६ ॥

सुधा—विकलयतीति। मकरध्वजः देवः = मदनदेवः। क्षणेन = निमिषेण। कलाकुशलम् = कलासु कुशलस्तम् = कलानिपुणम् जनम्। विकलयति = व्याकुलीकरोति। शुचिम् = पवित्रताम्। हसति = उपहासं करोति। पण्डितम् = विद्वांसम्। विडम्बयति = विडम्बनां करोति। धीरपुरुषम् = धैर्यवन्तम्। अधीरयति = धैर्यहीनं करोति। आर्यावृत्तम् ॥ ६६ ॥

हिन्दी—क्योंकि—कामदेव कलाकुशल व्यक्ति को व्याकुल कर देता है, पवित्र व्यक्ति का उपहास करता है, विद्वान् की विडम्बना करता है तथा धैर्यवान् पुरुषको अधीर बना देता है ॥ ६६ ॥

अपि च—

मध्ये त्रिवलीत्रिपथे पीवरकुचचत्वरे च चपलदृशाम् ।
छलयति मदनपिशाचः पुरुषं हि मनागपि स्खलितम् ॥ ६७ ॥

अन्वयः—हि चपलदृशाम् मध्ये, त्रिवलीपथे पीवरकुचचत्वरे च मदनपिशाचः मनाक् अपि स्खलितम् पुरुषम् छलयति ॥ ६७ ॥

सुधा—मध्य इति । हि = यतः ! चपलदृशाम् = चञ्चलनेत्रीणाम् । मध्ये = कटयाम । त्रिवलीपथे = त्रिवलीरूपत्रिमार्गे । पीवरकुचचत्वरे—स्थूलपयोधररूपचतुष्पथे । च मदन-पिशाचः = दुष्टः मदनः मनाक् अपि = किञ्चिदपि स्खलितम् = विचलितम् । पुरुषम् = जनम् । छलयति = वञ्चयति । आर्या वृत्तम् ॥ ६७ ॥

हिन्दी—चञ्चलनयनों वाली सुन्दरियों की कमर, त्रिवली रूप तिराहे तथा स्थूलपयोधर रूपी चौराहे पर मदन पिशाच थोड़ा भी विचलित हुये पुरुष को छलने लगता है ॥ ६७ ॥

तदस्तु प्रस्तुतरसानुनयेनैव प्रभूणां मतयो निवर्त्यन्ते निषिद्धनिषेवणात्, न प्रतिकूलतया' इत्यवधारयन्नवनिपतिमवादीत् ।

सुधा—तदिति । तत् = अतः । अस्तु = भवतु । प्रभूणाम्-स्वामिनाम् । मतयः = बुद्धयः । प्रस्तुतरसानुनयेन एव = प्रकृतरसानुमत्यैव । निषिद्धनिषेवनात्—निषिद्धस्य = वर्जितस्य निषेवणम् = सेवनम् आग्रहस्तस्मात् सकाशात् । निवर्त्यन्ते = व्यावर्त्यन्ते । न प्रतिकूलतया = विपरीततया हठात् निषिद्धस्याभिजातसङ्गमादेराग्रहं कुर्वाणः प्रभुः सहारा सम्पदानुजीविनानिवार्यः । परं तदभिमतं प्राक् पुरस्कृत्य दोषं च दर्शयित्वा । सहसा निवार्यमाणो हि पराभवमिव मन्येत । इति = एवम् । अवधारयन् = निश्चयन् । अवनि-पतिम् = भूपतिम् । अवादीत् = अकथयत् ।

हिन्दी—अस्तु, स्वामियों की बुद्धि को प्रकृत चर्चा द्वारा ही वर्जित पदार्थ के सेवन से हटाया जा सकता है प्रतिकूल चर्चा द्वारा नहीं । यह निश्चय करते हुये राजा से बोला—

'देव' रमणीयः खल्वयं प्रदेशः ।

सुधा—देव इति । देव = स्वामिन् । अयम् = एषः प्रदेशः = भूभागः । खलु=नूनम् । रमणीयः = सुरम्यः अस्ति ।

हिन्दी—हे देव ! यह स्थान निःसन्देह सुरम्य है ।

तथाह्यत्र—

आह्लादयन्ति मृदवो मृदितारविन्द-
निष्यन्दिमन्दमकरन्दकणानिकराः ।

एते किरातवनितास्तनशैलगण्ड-
संघट्टजर्जररुचः सरितः समीराः ॥ ६८ ॥

अन्वयः—मृदितारविन्दनिस्यन्दिमन्दमकरन्दकणान् किरन्तः किरातवनिता स्तनशैलगण्डसंघजर्जररुचः सरितः एते मृदवः समीराः आह्लादयन्ति ॥ ६८ ॥

सुधा—आह्लादयन्तीति । मृदितारविन्दनिस्यन्दिमन्दमकरन्दकणान्–मृदितैः = मृदुलैररविन्दैः = कमलैः निस्यन्दिनः ये मन्दाः मकरन्दमधुरसविन्दवस्तान् । किरन्तः = विकिरन्तः किरातवनितास्तनशैलगण्डसंघट्टजर्जररुचः–किरातवनितानाम् = किरातस्त्रीणाम् स्तनान्येव शैलगंडाः = पयोधरशैलास्तैः संघट्टेन = संघर्षेण जर्जराः जीर्णाः रुचिः = कान्तिर्यस्याः । सरितः = नद्याः । एते = इमे । मृदवः = मन्दाः । समीराः = पवनाः । आह्लादयन्ति = प्रसादयन्ति । वसन्ततिलकावृत्तम् ॥ ६८ ॥

हिन्दी—क्योंकि यहाँ—कुचले हुये अरविन्दों से टपकते मकरन्द बिन्दुओं को बिखेरती हुई किरातस्त्रियों के स्तनरूपी शैलों से टकराने के कारण जर्जरकान्तिवाली नदी की यह मृदुल हवायें आह्लादित कर रही हैं ॥ ६८ ॥

एताश्च—

उपनदि पुलिने पुलिन्दवध्वः स्तनपरिणाहविनिर्जितेभकुम्भाः ।
शिथिलितसलिलार्द्रकेशबन्धाः किमपि मनोभववैभवं वहन्ति ॥ ६९ ॥

अन्वयः—स्तनपरिणाहविनिर्जितेभकुम्भाः शिथिलितसलिलार्द्रकेशबन्धाः पुलिन्दवध्वः उपनदि पुलिने किमपि मनोभववैभवम् वहन्ति ॥ ६९ ॥

सुधा—उपनदीति । स्तनपरिणाहविनिर्जितेभकुम्भाः—स्तनानाम् = पयोधराणाम् परिणाहेन = विस्तारेण विनिर्जिताः = पराजिताः इभकुम्भाः = गजकुम्भाः याभिस्ताः । शिथिलितार्द्रकेशबन्धाः–शिथिलितानि = (श्लथीकृतानि आर्द्रकेशबन्धनानि = जलार्द्रवेणीबन्धनानि याभिस्ताः । पुलिन्दबध्वः=किरातसुन्दर्यः । उपनदि = नद्याः समीपे । पुलिने= तटप्रदेशे । किमपि = किञ्चित् मनोभववैभवम् = कामदेवैश्वर्यम् । वहन्ति = धारयन्ति । आर्यावृत्तम् ॥ ६९ ॥

हिन्दी—और यह—स्तनों के विस्तार से हाथियों के कुम्भस्थलों को पराजित करने वाली, गीले वेणीबन्धनों को शिथिल किये हुये किरातस्त्रियां नदी के समीप तटभूमि पर कामदेव के अपूर्व ऐश्वर्य को धारण कर रही है ॥ ६९ ॥

इतश्चावलोकयतु देवः—

सरसिजमकरन्दामोदमत्तालिगीत-
श्रवणसुखनिमीलच्चक्षुषः किंचिदेते ।
अपि दिवसमशेषं निश्चलाङ्गाः कुरङ्गाः
पुलिनभुवि विहाराहारबन्ध्या वसन्ति ॥ ७० ॥

अन्वयः—सरसिजमकरन्दामोदमत्तालिगीतश्रवणसुखनिमीलच्चक्षुषः निश्चलाङ्गाः एते कुरङ्गा, इति विहाराहारबन्ध्या। पुलिनभूमिम् सम् वसन्ति ॥ ७० ॥

सुधा—सरसिजमकरन्दामोदमत्तालिगीतश्रवणसुखनिमीलच्चक्षुषः—सरसिजानाम् = कमलानाम् मकरन्दामोदेन = मधुरसगन्धेन मत्ताः = क्षीबाः ये अलयः = भ्रमराः तेषां गीतस्य = गुञ्जारवस्य श्रवणेन = आकर्णनेन सुखेन = आनन्देन निमीलन्ति चक्षूंषि = नेत्राणि येषां ते । निश्चलाङ्गाः = निश्चलशरीराः । एते = इमे कुरङ्गाः = मृगाः । अपि विहाराहारबन्ध्याः = विहारात् = विचरणात् आहाराच्च = अशनाच्च बन्ध्याः = हीनाः । पुलिनभुवि = तटवर्तिभूमौ । अशेषम् = पूर्णम् दिवसम् = दिनम् । किञ्चित् = किमपि । वसन्ति = निवसन्ति । मालिनीवृत्तम् ॥ ७० ॥

हिन्दी—कमल की मधुर सुगन्ध तथा भौरों की गुञ्जाररूपी गीत सुनकर मतवाले बने हुये आँखे बन्द किये हुये तथा निश्चल बने मृग विहार एवं भोजन छोड़कर तटवर्ती भूमिपर सम्पूर्ण दिन बड़े कष्ट के साथ रह रहे है ॥ ७० ॥

इतोऽपि—

पद्मान्यातपवारणानि नलिनीपत्राणि पर्यङ्किका
दोलान्दोलनदोहदोऽपि च चलद्वीचीचयैः पूर्यते।
आहारो बिसपल्लवं पुलिनभूर्लीलाविहारास्पदं
रेवावारिणि राजहंसशिशवस्तिष्ठन्ति धन्याः सुखम् ॥ ७१ ॥

अन्वयः—आतपवारणानि पद्मानि, पर्यङ्किकाः नलिनीपत्राणि, चलद्वीचीचयैः दोलान्दोलनदोहदः अपि पूर्यते । आहारः विसपल्लवम् पुलिनभूः लीलाविहारास्पदम्, रेवावारिणि धन्याः राजहंसशिशवः सुखम् तिष्ठन्ति ॥ ७१ ॥

सुधा—पद्मानीति । आतपवारणानि = छत्राणि । पद्मानि=कमलानि । पर्यङ्किका= शय्या । नलिनीपत्राणि = कमलदलानि । चलद्वीचीचयैः—चलताम्—चपलानाम् वीचीनाम् = तरङ्गाणाम् चयाः = समूहानि, तैः । दोलान्दोलनदोहदः अपि दोलान्दोलनस्य = हिण्डोलचालनस्य दोहदः = इच्छा । पूर्यते = पूर्ति गच्छति आहारः = अशनम् । विसपल्लवम् = मृणालदलम् । पुलिनभूः = तटभूमिः । लीलाविहारास्पदम् = क्रीडाविचरणाहंम् । रेवावारिणि = रेवानद्याः जले । धन्याः = प्रशस्याः । राजहंसशिशवः = राजहंसपक्षिशावकाः । सुखम् = आनन्दम् । तिष्ठन्ति=निवसन्ति । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥७१॥

हिन्दी—और इधर—धूप निवारण करने वाले छातों के समान कमल हैं, विश्राम करने के लिए शय्याएँ नलिनीपत्र हैं, चञ्चल समूहों द्वारा झूला झूलने की इच्छा भी पूर्ण हो रही है । आहार मृणाल पल्लव हैं तथा तटप्रदेश क्रीडाविहार करने का स्थान है । इस प्रकार रेवा नदी के जल में भाग्यवान् राजहंस पक्षियों के बच्चे सुखपूर्वक रहते हैं ॥ ७१ ॥

इहापि—

चिरविरचितचाटुश्चन्द्ररेखायमाणः
प्रथमरसबिसाग्रग्रासलीलार्पणेन ।
इह रमयति हंसीं राजहंसो रिरंसुः
पुलकयति च चञ्चूकोटिकण्डूयनेन ॥ ७२ ॥

अन्वयः—इह चिरविरचितचाटुः चन्द्ररेखायमाणः हंसीम् रिरंसुः राजहंसः प्रथमरसविसाग्रग्रासलीलार्पणेन—इह रिरंसुः राजहंसः हंसीं रमयति चञ्चूकोटिकण्डूयनेन च पुलकयति ॥ ७२ ॥

सुधा—चिरविरचितेति । इह = अत्र । चिरविरचितचाटुः = चिरम् = बहुकालम् विरचितः = कृतः चाटुः = चाटुकारिता येन सः । चन्द्ररेखायमाणः=चन्द्ररेखा समाकारः । हंसीम् = हंसस्त्रीम् । रिरंसुः = रंतुमिच्छुः = रमणेच्छुकः । राजहंसः = राजहंसपक्षी राजा च । प्रथमरसविसाग्रग्रासलीलार्पणेन—प्रथमरसेन = उत्कृष्टप्रेम्णाविसाग्रग्रासस्य = मृणालाग्रकवलस्य यदर्पणम्, तेन रमयति = अनुरञ्जयति चञ्चूकोटिकण्डूयनेन = चञ्चूकाटचा = चञ्च्वग्रभागेन कण्डूयनम्, तेन च पुलकयति = पुलकितं करोति । मालिनीवृत्तम् ॥ ७२ ॥

हिन्दी—इधर भी—यहाँ बहुत समय तक चाटुकारिता करता हुआ चन्द्ररेखा के समान आकृति बनाने वाले हंसी से रमण करने का इच्छुक राजहंस तथा राजा नल उत्कृष्ट प्रेम से मृणालाग्र भाग की कवल बनाने की क्रीडा से समर्पण करने के द्वारा मनोरञ्जन कर रहा है तथा चोंच के अग्रभाग से खुजलाकर पुलकित कर रहा है ।३७२।

अपि च—इह चरति चकोरः कोरकं पङ्कजाना-
मिह चलदलिचक्राच्चक्रवाको बिभेति ।
इह रमयति जीवंजीवको जीवितेशा-
मिह वहति विकारं हारि हारितकोऽपि ॥ ७३ ॥

अन्वयः—इह चकोरः पङ्कजानाम् कोरकम् चरति, चक्रवाकः चलदलिचक्रात् बिभेति । इह जीवंजीवकः जीवितेशाम् रमयति इह हारि हारीतकः अपि विकारम् वहति ॥ ७३ ॥

सुधा—इहेति । इह = अत्र । चकोरः = चकोरपक्षी । पङ्कजानाम् = पद्मानाम् कोरकम् = कलिकाम् । चरति = भक्षयति । चक्रवाकः = चक्रवाकपक्षी चलदलिचक्रात्—चलताम् = चपलानाम् अलीनाम् = भ्रमराणाम् चक्रम् = समूहम्, तस्मात् । बिभेति = भयं करोति । इह अत्र । जीवं जीवकः = पक्षिविशेषः । जीवितेशाम् = प्रियां जीवं जीवकीम् । रमयति = रञ्जयति । इह = अत्र । हारि हारीतः = मनोरमो हारीतपक्षी अपि । विकारम् = विकृतिम् वहति = धारयति । मालिनीवृत्तम् ॥ ७३ ॥

हिन्दी—और भी—यहाँ चकोर कमलों को चर रहा है, चक्रवाक पक्षी चञ्चल भ्रमर दल से भयभीत हो रहा है जीव जीवक पक्षी अपनी प्रियतमा को प्रसन्न कर रहा है तथा मनोहर हारीत (तीतल) भी विकृति का अनुभव कर रहा है ॥ ७३ ॥

एवमसौ निषधेश्वरः श्रुतशीलेन प्रज्ञापूर्वमपरमणीयप्रदेशान्तरदर्शनव्याजेनान्तरितशबरसुन्दरीदिदृक्षाग्रहो गृहान्प्रति प्रत्यावृत्तः ।

सुधा—एवमिति । एवम् = इत्थम् । असौ = एषः । निषधेश्वरः = विदर्भराजः श्रुतशीलेन = तन्नाम्ना जनेन । प्रज्ञापूर्वम् = बुद्धिसहितम् । अपररमणीयम् देशान्तरदर्शन-

व्याजेन = अन्यकमनीयस्थानावलोकनमिषेण । अन्तरितशबरसुन्दरीदिदृक्षाग्रहः—अन्तरिता= प्रच्छन्नीकृता शबरसुन्दरीणाम् = किरातनारीणाम् दिदृक्षा = द्रष्टुमिच्छा, तस्याः आग्रहः = हठः येन सः । गृहान् = आवासस्थानानि प्रति प्रत्यावृत्तः = प्रत्यागच्छत् ।

हिन्दी—इस प्रकार वह निषधेश्वर श्रुतशील के द्वारा बुद्धिमत्तापूर्वक अन्य रमणीक स्थानों को देखने के बहाने से नहाते शबरसुन्दरियों को देखने की इच्छा से आग्रह किए जाने पर घर को ओर लौट आया ।

चिन्तितवांश्च—

कथं नु सा दमयन्ती पुरंदरप्रमुखेषु लोकपालेष्वर्थिषु मया मनुष्यजन्मना लब्धव्येति निवारयिष्यन्ति च तां खलु दिव्यसम्बन्धार्थिनो बान्धवाः । तत्किमिह शरणम्' इति विमुक्तदीर्घनिःसहनिःश्वासमसकृच्चिन्तयति राजनि 'राजन्, रामाजनः पद्म इव वारितः सुतरां प्रवर्तते । नाललस्य दीर्घमनुरक्तस्य जायतेऽपरागो नाप्यलीकाभिनिवेशोऽस्य हीयते । किंचान्यदन्यपरिग्रहवर्तिनीनामपि स्त्रीणामन्यत्रापि रागाग्रहो भवति । यतः पश्य वरुणप्रतिग्रहेऽपि प्रतीचीयं मयि रागिणी भविष्यति' इत्येवमिममाश्वासयन्निव भगवान्भानुरुत्तुङ्गतरुशिखराणि करैः पतनभयादिवावलम्बमानः शनैर्गगनतलादवतीर्य प्रतीचीं दिशमयासीत् ।

सुधा—चिन्तितवानिति । च = तथा । चिन्तितवान् = विचारयामास । नु = खलु सा = असौ । दमयन्ती = भैमी । पुन्दरप्रमुखेसु—पुरन्दरः = इन्द्रः प्रमुखः = मुख्यः येषु तेषु । अर्थिषु = अभिलाषिषु लोकपालेषु = दिक्पालेषु मनुष्यजन्मना = मानवयोनिना । मया = नलेन । कथम् = प्रकारेण । लब्धव्या = प्राप्तव्या । इति । ताम् = दमयन्तीम् । खलु = नूनम् । दिव्यसम्बधार्थिनः=देवसम्बधकामिनः । बान्धवाः = बन्धुजनाः । निवारयिप्यन्ति = बारयिष्यन्ति । तत् = अतः । कथम् = किमिति इह = अत्र । शरणम् = रक्षणोपायः । इति = एवम् । विमुक्तदीर्घनिःसहनिःश्वासम् = त्यक्तात्यसह्यनिःश्वासम् । असकृत् = वारंवारम् । राजनि = नृपे । चिन्तयति=विचारयति । राजन्=हे नृप । रामाजनः=नारीजनः । पद्म इव = कमलमिव । वारितः = जलात् सुतराम्=नितराम् वारितः= निषिद्धः । प्रवर्तते । अस्य = स्त्रीजनस्य । दीर्घम् = बहुकालम् । अनुरक्तस्य = सानुरागस्य सतः । अलम् = अत्यर्थम् । न अपरागः जायते = रागापायः न स्यात् । तथा अस्य = एतस्य अलीकाभिनिवेशः अपि = मिथ्यानुरागप्रवृत्तिः अपि । न हीयते । किं पुनः याहक्त्वय्यभिनिवेशः । किञ्च = किन्तु । अन्यदन्यपरिग्रहवर्तिनीनाम् अपि—अपरापरानुरागवर्तिनीनाम् अपि । स्त्रीणाम् = नारीणाम् । अन्यत्र अपि = अन्यजनेऽपि । अनुरागः = प्रेम । भवति = जायते । यतः यस्मात् पश्य = अवलोकय । वरुणप्रतिग्रहेऽपि = वरुणस्वीकृतेऽपि । इयम् = एषा । प्रतीची = पश्चिमाशा । मयि = ममापि विषये । रागिणी = अनुरक्ता भविष्यति । इति एवम् = इत्थम् । इमम् = एतम् आश्वासयन् इव = धैर्यं धारयन्निव भगवान्भानुः = सूर्यभगवान् । पतनभयात् = स्खलनभिया उत्तुङ्गतरुशिखराणि = उन्नतपादपशिरांसि । करैः = किरणैः अवलम्बमानः अवलम्बनम् क्रियमाणः । शनैः =

मन्दम् । गगनतलात् = नभस्तलात् । अवतीर्य = अवतरणं कृत्वा । प्रतीचीम् दिशम् = पश्चिमाशाम् । अयासीत् = अगच्छत् ।

हिन्दी—तथा सोचने लगा—इन्द्र आदि लोकपाल जिस दमयन्ती के याचक हैं उसे मनुष्ययोनि में जन्म लेने वाला मैं क्यों न प्राप्त करूँ।' उस दमयन्ती को दिव्य सम्बन्ध चाहने वाले बान्धव अवश्य मना करेंगे। अतः मुझे क्या उपाय करना चाहिये। इस प्रकार लम्बी-लम्बी असह्य सांसें खींचते हुये बार-बार राजा के चिन्तित होने पर मानो यह कहता हुआ—हे राजन्! स्त्रियाँ कमल के समान निषेध किये जाने पर निरन्तर प्रवृत्त होती है पूर्ण अनुरक्त होने पर इनके अनुराग का अपराग (अभाव) नहीं किया जा सकता है तथा मिथ्या अनुराग प्रवृत्त को दूर भी नहीं किया जा सकता है बल्कि दूसरों को ब्याही गई स्त्रियों का भी दूसरों से हठपूर्वक प्रेम हुआ देखा जाता है। क्योंकि देखो—वरुण के द्वारा ग्रहण की गई यह प्रतीची (पश्चिम) दिशा भी मुझमें अनुराग रखती है। इस प्रकार आश्वासन देते हुए सूर्य भगवान् पतन भय से ऊँचे-ऊँचे वृक्षों की चोटियों का अपने किरणरूपी करों से सहारा लेते हुये धीरे-धीरे गगन तल से उतरकर पश्चिम दिशा की ओर चले गये।

अम्बरान्तःप्रसारितकरे रागिणि रक्तया परियुक्ते तु पश्चिमककुभाऽम्भोजिनीजीवितेश्वर।

सुधा—अम्बरान्त इति। अम्बरान्तः प्रसारितकरे—नभोऽन्तः प्रसारितांशौ। रागिणि = रक्तान्विते। रक्तया = रागपूर्णया। पश्चिमककुभा = प्रतीचीदिशा परियुक्ते = संयुक्ते सति। अम्भोजिनीजीवितेश्वरे = कमलिनीजीवनेश्वरे रवौ (प्राच्या चिन्तितमिति)।

हिन्दी—अम्बर (गगन, वस्त्र) के अन्दर कर (किरण, हाथ) फैलाकर अनुरागपूर्ण पश्चिम दिशा के साथ कमलिनी जीवनेश्वर सूर्य के पश्चिम दिशा को चले जाने पर—

पूर्वाहं विहितोदयाहमसकृत्तन्मां विहायाधुना
यस्यामस्तमुपैति तां कथमयं रागी जघन्यामगात्।
इत्येवं श्लथितांशुके दिनपतौ याते दिशं पश्चिमा-
मीर्ष्यारोषविषादिनीव तमसा प्राची ककुब्लक्ष्यते ॥ ७४ ॥

अन्वयः—पूर्वा अहम्, असकृत् विहितोदया अहम्। ततः माम् अधुना विहाय यस्याम् अस्तम् उपैति अयम् रागी ताम् जघन्याम् कथम् अगात्। इति एवम् श्लथितांशुके दिनपतौ पश्चिमायाम् दिशम् याते प्राची ककुभ् तमसा ईर्ष्यारोषविषादिनी इव लक्ष्यते ॥७४॥

सुधा—पूर्वेति। पूर्वा आद्या। अहम् असकृत् = बहुवारम्। विहितोदया विहितः = कृतः उदयो यथा तथा अहम्। तत् = अतः माम् पूर्वाम् यस्यां दिशायाम् प्रियायां वा अस्तम् = समाप्तिम्। उपैति = उपगच्छति। अयम् = एषः सूर्यः नलो वा रागी = रक्तः, अनुरक्तो वा। ताम् = एताम्। जघन्याम् = निकृष्टायाम् कथम् = केन प्रकारेण। अगात् = अगच्छत्। इति। एवम् = इत्थम्। श्लथितांशुके—शिथिलितम् अंशुकम् = वस्त्रम् = किरणसमूहम् वा यस्य तस्मिन्। दिनपतौ = रवौ नले वा। पश्चिमाम् = प्रती-

चीम् । दिशम् = आशाम् । याते = प्रस्थिते । प्राचीककुम् = प्राग्दिशा । तमसा = अन्धकारेण ईर्ष्यारोषविषादिनी इव = ईर्ष्याक्रोधव्याकुलेव । लक्ष्यते = दृश्यते । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ।। ७४ ।।

हिन्दी—पहली मैं हूँ । मैंने अनेक बार उसका उदय किया है । पर इस समय मुझे छोड़कर वह जिसमें अस्त हो रहा है तथा जिस पापिनी के साथ कैसे बडे प्रेम से चला गया है । इस प्रकार शिथिल किरणों वाले (ढीले वस्त्रों वाले सूर्य (राजा नल) के पश्चिम दिशा (पीछे) को चले जाने पर प्राचो दिशा अन्धकार काल ईर्ष्या तथा क्रोध से व्याकुल जैसी दिखलाई पड़ती है ।। ७४ ।।

विश्लेषाकुलचक्रवाकमिथुनैरुत्पीडमाक्रन्दिते
कारुण्यादिव मीलितासु नलिनीष्वस्तं च मित्रे गते ।
शोकेनेव दिगङ्गनाभिरभितः श्यामायमानैर्मुखै-
र्निःश्वासानलधूमवर्तय इवोद्गीर्णास्तमोराजयः ।। ७५ ।।

अन्वयः—विश्लेषाकुलचक्रवाकमिथुनैः उत्पीडम् आक्रन्दिते, कारुण्यात् इव नलिनीषु मीलितासु मित्रे अस्तंगते च, शोकेन इव अभितः दिगङ्गनाभिः श्यामायमानैः मुखैः निःश्वासानलधूमवर्तय इव तमोराजयः उद्गीर्णाः ।। ७५ ।।

सुधा—विश्लेषेति । विश्लेषाकुलचक्रवाकमिथुनैः—विश्लेषेण = वियोगेन आकुलानि = विक्लवानि चक्रवाकानाम् = चक्रवाकपक्षिणाम् मिथुनानि = युगलानि तैः । उत्पीडम् = उत्कृष्टापीडा यत्र तत् = सदुःखम् । आक्रन्दिते = करुणरुदिते सति । कारुण्यात् करुणाभावात् इव । नलिनीषु = कमलिनीषु । मीलितासु = मुकुलितासु । मित्रे = सूर्ये । अस्तंगते = अस्ताचलप्रस्थिते च । शोकेन इव = दुःखेन इव । अभितः = परितः दिगङ्गनाभिः = दिग्वधूभिः । श्मामाययानैः = कृष्णायमानैः मुखैः = आननैः । निश्वासानलधूमवर्तय इव = निःश्वासरूपाग्निधूमपंक्तिसदृशम् । तमोराजयः = तमसः = अन्धकारस्य राजयः = पंक्तयः । उद्गीर्णाः प्रसृताः । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ।। ७५ ।।

हिन्दी—वियोग के भय से व्याकुल चकई चकवे मानो उत्कृष्ट पीडा युक्त हो करुण क्रन्दन करने लगे । मानों करुणाभाव से कमलिनीदल के मुकुलित हो जाने तथा सूर्य के अस्ताचल चले जाने पर, शोक से मानो चारो ओर दिग्वधुओं के मुख काले पड़ जाने पर निःश्वास रूपी अग्नि के धुयें की पंक्तियों जैसी अन्धकार श्रेणियां फैल गई ।। ७५ ।।

तथाविधे च वेलाव्यतिकरे राज्ञः संध्यावसरमावेदयितुमस्यासन्नविहारि हारि लीलाकिन्नरमिथुनमिदमगायत्—

सुधा—तथेति । च = तथा तथाविधे = तादृशे । वेलाव्यतिकरे = सान्ध्यकाले । अस्य राज्ञः नृपस्यास्य । सन्ध्यावसरम् = सान्ध्यपूजनकर्मावसरम् । आवेदयितुम् निवेदयितुम् । आसन्नविहारि = समीपे विचरणशीलम् । हारि = मनोरमम् । लीलाकिम्पुरुषयुगलम् । इदम् = एतत् । अगायत् = गायनमकरोत् ।

हिन्दी—इस प्रकार सन्धि के अवसर पर उस राजा के सन्ध्यावन्दनकाल को बतलाने के लिए समीप में विचरण करने वाला मनोरम किन्नरमिथुन उस प्रकार गाने लगाः—

'रक्तेनाक्तं विनिहितमधोवक्त्रमेतत्कपालं
तारामुद्राः किमु कलयता कालकापालिकेन ।
संध्यावध्वाः किमु विलुठिता कौकुंमी शक्तिरेवं
शङ्कां कुर्वञ्जयति जलधावर्धमग्नार्कबिम्बम्' ॥ ७६ ॥

अन्वयः—अधोवक्त्रम् रक्तेनाक्तम् एतत् कपालम् तारामुद्राः विनिहितम् कालकापालिकेन कलयता किमु । सन्ध्यावध्वाः कौंकुमी शुक्तिः विलुठिता किमु इत्थम् उदधौ अर्धमग्नार्कबिम्बम् शङ्काम् कुर्वन् जयति ॥ ७६ ॥

सुधा—रक्तेनेति । अधोवक्त्रम् अधस्तात् वक्त्रम् = मुखम् यस्य तदधो वक्त्रम् = अधोमुखम् । तथा रक्तेनाक्तम् = रुधिरेण लिप्तम् । एतत् = इदम् । कपालम् = पानपात्रम् । तारमुद्राः—ताराः = नक्षत्राणि एव मुद्राः = रुचिकाख्यानि हस्तपादादीनामस्थ्याभरणाति । विनिहितम् = विधृतम् । कापालेन—कपालं कालएव कापालिकस्तेन । कलयता = विभ्रता । किमु । सन्ध्यावध्वाः = सन्ध्यासुन्दर्यः । कौङ्कुमी शुक्तिः । विलुठिता = अधोमुखी लुठिता किमु इति वितर्कः । एवम् = इत्थम् । उदधौ = सिन्धौ । अर्धमग्नम् = अपूर्णं निमग्नम् । अर्कबिम्बम् = सूर्यप्रतिबिम्बम् । शङ्काम् = सन्देहम् । कुर्वन् = उत्पादयन् । जयति ॥ ७६ ॥

हिन्दी—रुधिर भरे खप्पर का मुख नीचे किये हुये तारकमुद्राओं को कालकापालिक धारण कर रहा है क्या ? सन्ध्यावधुओं की कुङ्कुम सम्बन्धी (सेन्दुरी) शुक्ती क्या उलट गई है ? इस प्रकार समुद्र में अर्धमग्न सूर्यबिम्ब शंका उत्पन्न कर रहा है ॥ ७६ ॥

टिप्पणी—औघड़ सन्त हाथ में खप्पर लिये हुये अपने शरीर पर भस्म से विभिन्न प्रकार के चित्र बनाया करते हैं । वे रक्त पान भी करते हैं । अतः यहाँ सन्ध्याकाल में अधडूबे सूर्यबिम्ब की तुलना एक ऐसे कापालिक से की है जिसने अपने कपाल में रक्त भर कर उड़ेल दिया हो तथा आकाश में बिखरे हुये तारे ही उसके शरीर पर बनने वाले भस्म चिह्न हों ।

अथ क्रमेण गगनमन्दाकिनीतीरतापसैर्विकीर्यमाणेषु संध्यार्घाञ्जलिजलबिन्दुबुद्बुदेष्विव किंचिदुन्मीलत्सु विरलतरतारास्तबकेषु, वासरविरामवादितवाद्येष्वमरसदनेषु, दह्यमानबहलधूपधूममञ्जरीष्विव वियति विहरन्तीषु तनुतिमिरवल्लरीषु, स्वपत्पतत्त्रिकुलकोलाहलेन वासार्थिश्रान्तागताध्वगस्वागतालापमिव कुर्वाणासु वनराजिषु, अन्यत्र परिभ्रमणपरिहारार्थमिव पद्मिनीनां कोशपानमाचरत्सु चञ्चलचञ्चरीकेषु, रत्युत्सवोत्साहावेशमहामन्त्राक्षरेष्विव श्रूयमाणेषु महासरित्कूलकुलायनिलीनजलकुक्कुहकुहरितेषु, रामायणव्यतिकरेस्विव मन्दोदरीप्रहस्तप्रबोधितोत्सिक्तदशाननेषु संध्याप्रदीपेषु जाते जरत्कुम्भकारकुक्कुटकुटुम्बपक्षपिच्छविच्छाये मनाक्तमोनुविद्धे संध्यारागे राजा विषादविस्मृतसंध्याह्निकः परिजनानुबन्धात्संध्यां ववन्दे ।

सुधा—अथेति । अथ = अनन्तरम् । क्रमेण = क्रमशः । गगनमन्दाकिनीतीरतापसैः—गगनमन्दाकिन्याः = आकाशगङ्गायाः तीरम् = तटम्, तत्र ये तपस्विनः =

तापसजनाः तं । विकीर्यमाणेषु = प्रसार्यमाणेषु । सन्ध्यार्घाञ्जलिजलबिन्दुबुद्बुदेषु इव— सन्ध्यार्घाय = सान्ध्यकालीन अर्घजलदानाय अञ्जलेः यानि जलबिन्दूनि वारिसीकराणि, तेषां बुद्बुदेषु इव । किञ्चित्=किमपि । विरलता तारास्तबकेषु = यत्र तत्र नक्षत्रगुच्छेषु । मीलत्सु = मुकुलवत्सु । वासरविरामवादितवाद्येषु वासरविरामे = दिनसमाप्तौ वादितेषु = नदत्सु वाद्येषु = वाद्ययन्त्रेषु इव । अमरसदनेषु = देवगृहेषु । दह्यमानवहलधूपधूममञ्जरीषु इव = ज्वलत्सु बहुधूपधूमकलिकासु समम् । वियति = विहायसि । तनुतिमिरवल्लरीषु = क्षीणान्धकारलतासु । विहरन्तीषु = विचरन्तीषु । स्वपत्पतत्रिकुलकोलाहलेन— स्वगताम् निद्रितानाम् पतत्रिणाम् = खगानाम् यत् कुलम् = समूहम्, तस्य कोलाहलः = कलरवस्तेन । वासार्थिश्रान्तागताध्वगस्वागतालापमिव—वासार्थिनाम् = निवासकामिनाम् श्रान्तानाम् = क्लान्तानाम् अध्वगानाम् = पथिकानाम् स्वागतालापम् इव = सत्कारवार्तालापमिव । वनराजिषु काननपंक्तिषु । कुर्वाणासु = विदधानासु । अन्यत्र = अन्यस्थानम् । परिभ्रमणपरिहारार्थम्=चङ्क्रमणत्यागार्थम् । पद्मिनीनाम्=कमलिनीनाम् । कोशपानम् = कणिकापानम्, शपथ ग्रहणम् च आचरत्सु = कुर्वत्सु । चञ्चलचञ्चरीकेषु इव = चपलभ्रमरेषु इव । महासरित्कूलकुलायनिलीनजलकुक्कुहकुहरितेषु—महासरितः = महानद्याः कूले = तटे कुलायेषु = गुहासु निलीनानि = अन्तरितानि यानि कुक्कुहानि = जलध्वनयः, तेषां कुहरितेषु = कर्णरन्ध्रगतेषु । रत्युत्सवोत्साहावेशमहामन्त्राक्षरेषु— रत्युत्सवस्य = कामोत्सवविषयकस्योत्साहावेशस्य=उत्तेजनायाः महामन्त्रस्याक्षराणि तेषु । श्रूयमाणेषु आकर्ण्यमानेषु इव । रामायणव्यतिकरेषु = रामायण-प्रसङ्गेषु । मन्दोदरीप्रहस्तप्रबोधितोत्सिक्त दशाननेषु—मन्दोदर्याः = मन्दोदरी नाम्न्याः पत्न्याः प्रहस्तेन = सेनान्या प्रकर्षेण बोधितः उत्सिक्तः = उद्रिक्तः सन् दशाननः = रावणो येषु तथाभूतेषु । सन्ध्याप्रदीपेषु इव = सान्ध्यदीपकेषु इव । जरत्कुम्भकारकुक्कुटकुटुम्बयक्षपिच्छविच्छाये—जरत्कुम्भकारः = वृद्धः कुक्कुटः पक्षिविशेषः तस्य कुटुम्बस्य = समुदायस्य पक्षाणाम् = पुंखानाम् पिच्छविच्छायः = स्तबकसदृशस्तस्मिन् । मनाक् = किञ्चित् । तमोनुविद्धे = अन्धकारमिश्रिते सन्ध्यारागे = सान्ध्यारुणे जाते । राजा = भूपतिः । विषादविस्मृतसंध्याह्निकः विषादेन = खेदेन विस्मृतः संध्याह्निकः = सान्ध्यदिनकर्म येन सः । परिजनानुबन्धात् परिजनानाम् = सेवकानाम् अनुबन्धः = आग्रहः, तस्मात् सन्ध्याम् ववन्दे = सन्ध्यावन्दनं चकार ।

हिन्दी—तदनन्तर क्रमशः आकाशगङ्गा के तट पर तपस्विजनों के द्वारा दी गई सन्ध्या की सूर्यार्घ-अञ्जलि के जल के बुलबुलों के समान कहीं नक्षत्रों के गुच्छे निकल रहे थे । दिवस की समाप्ति पर देवताओं के सदनों में बाजे बज रहे थे । जलती हुई पर्याप्त धूप के धुये की मञ्जरी के समान आकाश में क्षीण अन्धकार लतायें फैल रहीं थीं । सोते हुए पक्षियों के कलरव के बहाने निवास की इच्छा से आये हुए थके पथिकों के लिए वन पंक्ति स्वागतवार्ता कर रही थी । अन्यत्र परिभ्रमण करने के लिए चञ्चल भौंरों के द्वारा कमलिनियों का कोश पान (शपथ ग्रहण) किया जा रहा था । मदनोत्सव की उत्तेजना के महामन्त्र के अक्षरों के समान महानदी के तट पर बनी गुफाओं में घुसी

हुई जल की आवाजें कानों में सुनाई पड़ रही थीं । रामायण के प्रसङ्गों में मानो मन्दोदरी और प्रहस्त नामक सेनापति द्वारा प्रबोधित उत्सिक्त (घमण्डित तेल से भरे) रावण रूपी सन्ध्या दीपकों को जलाया जा चुका था । वृद्ध कुम्भकार जाति के विशेष प्रकार के कुक्कुटपक्षियों के समुदाय के पंखों के गुच्छों के समान थोड़ी सान्ध्यलालिमा के अन्धकार मिश्रित हो जाने पर राजा विषाद के कारण सन्ध्यावन्दनादि कार्य भूल गया था, अत एव अनुचरों के द्वारा निवेदन किये जाने पर उसने सन्ध्यावन्दन कार्य किया ।

ततश्च क्रमेण—

रजनिमवनिनाथः सांध्यकर्मावसाने
हरचरणसरोजद्वन्द्वसेवां विधाय ।
मृदुकलितविपञ्चीपञ्चमप्रायगीत–
श्रवणसुखविनोदैस्तां स तस्मिन्ननैषीत् ॥ ७७ ॥

इति श्रीत्रिविक्रमभट्टविरचितायां दमयन्तीकथायां हरचरण-
सरोजाङ्कायां पञ्चम उच्छ्वासः समाप्तः ।

अन्वयः—स। अवनिनाथः तस्मिन् सान्ध्यकर्मावसाने हरचरणसरोजद्वन्द्वसेवाम् विधाय ताम् रजनिम् मृदुकलितविपञ्चीपञ्चमप्रायगीतश्रवणसुखविनोदैः अनैषीत् ॥ ७७ ॥

सुधा—रजनिमिति । सः = तथोक्तः । अवनिनाथः = भूपतिः । तस्मिन् = तथाविधे सान्ध्यकर्मावसाने—सन्ध्यायाम् भवम् = सान्ध्यम् सन्ध्याकालीनम् कर्म = कृत्यम्, तस्य अवसाने = समाप्तौ । हरचरणसरोजद्वन्द्वसेवाम् = शिवपादपद्मयुगलसेवायम् । विधाय = सम्पाद्य । ताम् = एताम् । रजनिम् = निशाम् । मृदुकलितविपञ्चीपञ्चमप्रायगीतश्रवणसुखविनोदैः—कलितविपञ्च्याः=सुन्दरवीणायाः पञ्चमप्रायगीतम्=पञ्चमस्वरयुक्तं गायनम्, मृदु = कोमलम् यत् कलितं विपञ्चीपञ्चमप्रायगीतम्, तस्य श्रवणस्य = आकर्णनस्य ये सुखविनोदाः = आनन्दमनि, तैः । अनैषीत् = अव्यवाहृत् । मालिनीवृत्तम् ॥ ७७ ॥

हिन्दी—तदनन्तर क्रमशः राजा ने उस सन्ध्यावन्दनादि कार्य के समाप्त होने पर शिवजी के चरण-कमल-युगल की सेवा कर वह रात्रि सुन्दर वीणा के प्रायः पञ्चमस्वर युक्त गीत सुनने के सुख विनोदों द्वारा व्यतीत की ।

इति शाहजहांपुर-मण्डलान्तर्वर्तिनो 'नाहिल' वास्तव्यस्याचार्यपरमेश्वर-
दीनपाण्डेयस्य कविश्रीस्त्रिविक्रमभट्टस्य नलचम्पूकृतौ सुधा
संस्कृतहिन्दी-टीकाद्वयोपेतः पञ्चम उच्छ्वासः ॥

श्लोकानुक्रमणिका

प्रथम उच्छ्वास

द्वितीय उच्छ्वास

तृतीय उच्छ्वास

चतुर्थ उच्छ्वास

पञ्चम उच्छ्वास

षष्ठ उच्छ्वास

सप्तम उच्छ्वास

टीकाकर्तृ-परिचयः

अस्त्युत्तर प्रदेशोऽत्र, राज्येषु भारतस्य वै ।
हृदयमिव सुराष्ट्रस्य, तत्राऽऽस्ते 'शाहजी पुरम्' ।। १ ।।
कठिनी-गोमती-गङ्गाः, देवहूत्यादिभिः सह ।
पुनन्ति सरितो यस्य, भूमिममृतोपमैः जलैः ।। २ ।।
यत्र देवो 'विश्वनाथो' 'दुर्गा' दुर्गार्तिहारिणी ।
'वनखण्डीनाथ'-रूपोऽसौ शङ्करः शन्तनोति नः ।। ३ ।।
तस्मिन्मण्डले लोक-विश्रुतो 'नाहिला'भिधः ।
ग्रामो विप्र-प्रमुखानाँ विदुषां व्यापारिणामपि ।। ४ ।।
पाण्डित्ये कर्मकाण्डे च, ज्योतिष्कर्मणि वैद्यके ।
वयने च विदुर्लोकाः 'लघुकाशी'ति प्रागमुम् ।। ५ ।।
यस्योत्तरस्यां दिशि तोयराशी राशीकृता कीर्तिरिव द्विजानाम् ।
महोर्मिभिः पूत पतत्रिपद्मैरशेष-शोभां विकचीकरोति ।। ६ ।।
सनाढ्येषु च तत्रैव, सत्सु पाराशरान्वये ।
पाण्डेयोपाह्वविप्रोऽभू'च्छिवचरण' इतीरितः ।। ७ ।।
तत्सूनुः पार्वती-जानी 'रेवती-राम'-विश्रुतः ।
रेवती-रमणे यस्य, मानसं नितरां ह्यभूत् ।। ८ ।।
चत्वारश्चाभवंस्तस्य, पुत्राः पङ्क्ति-पावनाः ।
'जगन्नाथो'ऽथ 'जयलालो' 'रामलाल'स्तथैव च ।। ९ ।।
'प्यारेलाल' इति ख्यातो गीतवाद्य-विशारदः ।
द्वितीयश्च तुरीयश्च, तेषु यातावपुत्रिणौ ।। १० ।।
तृतीये 'विदुरो' जातः कथा-कीर्त्तन-कोविदः ।
'सुदामादेवि'-गर्भाद्यस्या भवतां सुतौ ।। ११ ।।
ज्येष्ठो ज्येष्ठ-गुणोपेतः रामचन्द्रः प्रतापवान् ।
परमेश्वरदीनश्च, कनिष्ठो वागुपासकः ।। १२ ।।
यस्य च 'श्यामा'ऽश्यामाऽवामा हृदयाभिरामा सुगृहणी ।
यस्याः सुधीः 'सुधीरः' 'अवनिकुमार'श्चापि सुतौ जातौ ।। १३ ।।
सप्त-त्रिंशत्युत्तर युग-सहस्रयिते विक्रमे वर्षे ।
भौमे रक्षापर्वणि, 'सुधा' पूरिता मया टीका ।। १४ ।।
शिशुमतिविकासशीला, बुध जन-मनसां विलासलीला च ।
नलदमयन्त्याख्याने, भातु सुधा-युता नल-चम्पूः ।। १५ ।।
शं भूयात् ।